पर्यटन
विशेषांक

पश्चिम अर्ध भारत
40 पर्यटन स्थलों की
संपूर्ण जानकारी

सरिता
पर्यटन
विशेषांक
पश्चिम अर्ध भारत
40 पर्यटन लों की
संपूर्ण ज कारी
112799
लिक कलर्स
आर्ट पेंटिंग के लिए
काम मजेदार
OBM/2759/HN

जिस घड़ी वह पहले-पहल कैम्प में जाये, उसका मन खुशी से
न समाये
एचएमटी!"
HTA 9693

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ

अंक : 794 मई (द्वितीय) 1988

कथा साहित्य

पर्यटन परिशिष्ट

लेख

स्तंभ

कविताएं

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी. 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016, मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008., लखनऊ : 9, दुर्गा भवन, कपूर लेन, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ-226001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 240 रु., (हवाई डाक से) 636 रु.

मूल्य एक प्रति 5.00 रुपए, वार्षिक 120 रुपए, यह प्रति 6.00 रुपए

सरित प्रवाह/अप्रैल/प्रथम

राजीव गांधी और दांडी यात्रा पर आप का संपादकीय सटीक लगा.

गांधीजी ने सत्य, अहिंसा को अपनाया था. विदेशी वस्त्रादि का परित्याग कर वह सादा वस्त्र पहनते थे और सादा भोजन करते थे. वह झोंपड़ी में रहते थे.

यदि राजीव गांधी और उन के अनुयायी भी अपनी दांडी यात्रा में गांधीजी के आदर्शों का पालन करते तो इस यात्रा को कुछ सार्थक माना जा सकता था.

—श्याम

*

इस में कोई दो मत नहीं हैं कि राजीव सरकार की दोहरी नीतियों ने गांधीजी के सिद्धांतों को कुंठित कर दिया है. सरकार की कथनी और करनी में जमीन आसमान का अंतर है.
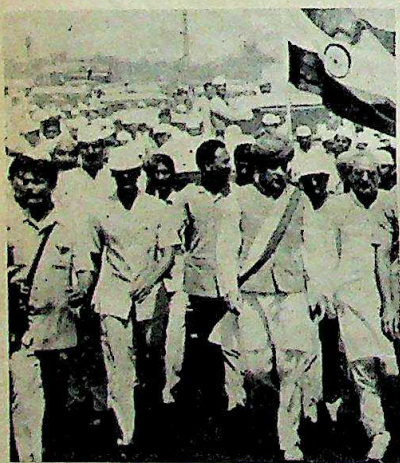
एक ओर तो गरीबी दूर करने के लिए लंबेलंबे भाषण दिए जाते हैं और दूसरी ओर दैनिक उपभोग की वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे हैं. लगता है, सरकार गरीबी नहीं, गरीबों को हटाना बेहतर समझती है. गांधीजी के आदर्शों का ढिंढोरा पीटना वैसा ही है जैसा कि रोते हुए बच्चे को प्रलोभन दे कर चुप कराना.

—कुमार श्रीवास्तव

'विवाह और परिवार विशेषांक' (अप्रैल/द्वितीय) एक संग्रहणीय विशेषांक है.

यदि विवाहित दंपती विशेषतः स्त्रीपुरुष इस अंक में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों पर गंभीरतापूर्वक अमल करें तो निश्चय ही उन का परिवार खुशहाल हो सकता है.

—अब्दुल अजीज मंसूरी

*

यह विशेषांक परिवार की नींव—पतिपत्नी के संबंधों को मजबूत करने में सक्षम है.

—सी. एल. छाजेड़ 'पीयूष'

*

बजट की पोल

लेख 'केंद्रीय बजट: एक छलावा' (अप्रैल/प्रथम) ने केंद्रीय बजट की वास्तविकता उजागर कर दी है.

वस्तुतः सरकार हर साल बीचबीच में 'मिनी बजट' ला कर करों में वृद्धि करती रहती है. और वर्ष के अंत में नाम मात्र की राहत दे कर नागरिकों को बेवकूफ बनाती है.

—भरत जैन

*

मांबेटी विशेषांक

'मांबेटी विशेषांक' (अप्रैल/प्रथम) में मांबेटी के संबंधों और समस्याओं के संदर्भ में ज्ञानवर्द्धक एवं रुचिकर रचनाएं पढ़ीं.

यह विशेषांक मां और बेटी दोनों के लिए उपयोगी है.

—इंद्रजीत शेखावत 'टाइगर'

*

इस विशेषांक में मांबेटी के नाजुक रिश्ते के हर पहलू को छुआ गया है. इस से हर मांबेटी को एक नई दिशा मिलेगी.

—विनय असावा

*

बेटी की देखभाल

लेख 'क्या आप की कुंआरी बेटी गर्भवती हो गई है?' (अप्रैल/प्रथम) एक सचाई को प्रस्तुत करता है.

अभिभावकों को चाहिए कि वे अपनी बेटियों की उचित देखभाल करते रहें, ताकि उन की बेटी कोई गलत कदम न उठा सके.

—योगेंद्रलाल भारती

*

मां का कर्तव्य

लेख 'किशोर उम्र की बेटी और मां का व्यवहार'
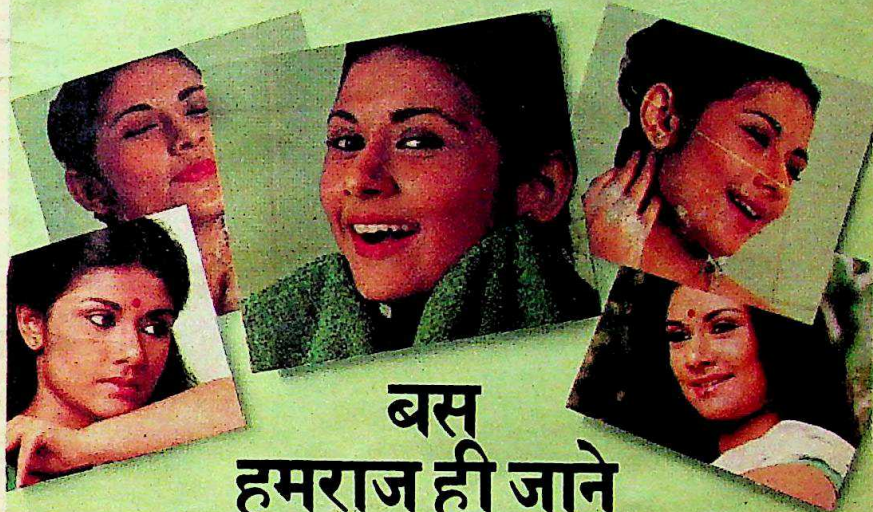
कि मां को चाहिए कि बेटी की भावनाओं को समझें और उसे अपने विचारों के द्वारा इस ढंग से प्रोत्साहित करें कि वह अच्छेबुरे को भलीभांति समझ सके. यही मां का कर्तव्य है.

—सरोज शर्मा

*

बेटी की नाराजगी

कहानी 'भरोसा बेटी का' (अप्रैल/प्रथम) के अंत में बेटी का मां के प्रति नाराज होना ठीक नहीं लगा

क्योंकि किसी भी हादसे की भुक्तभोगिनी मां अपनी बेटी को उस हादसे की शिकार नहीं बनने देगी.

—रेणु रोबिन

*

बेटी को आत्मविश्वासी बनाएं

लेख 'बेटी को अंधविश्वासों के जाल से मुक्त रखें?' (अप्रैल/प्रथम) अनुकरणीय है.

आज भी अनेक परिवारों में बेटी को बचपन से ही व्रतों और उपवासों के चक्कर में डाल दिया जाता है. आवश्यकता इस बात की है कि बेटी को आत्मविश्वासी बनाया जाए, रूढिवादी या अंधविश्वासी नहीं.

—प्रकाशचंद्र कनेरिया

यह अंक
आप को कैसा लगा?

सरिता आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरीपूरी कोशिश करते हैं कि सरिता का प्रत्येक अंक आप की रुचि के अनुसार रहे और उस से आप को अधिक से अधिक संतोष हो और वह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे.

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिए. कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई. आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना करेंगे. हम आप की आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे. अपनी आलोचनाएं व सुझाव निम्न पते पर भेजें :

सरिता, ई-3, दिल्ली प्रेस,
झंडेवालान एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

लेख 'बच्चों को पढ़ाई के लिए कैसे प्रेरित करें?' (मार्च/द्वितीय) पढ़ कर लगा कि लेखक यह लेख लिखते समय आदर्श की दुनिया में भटक रहा था.

लेख की कुछ बातें व्यावहारिकता की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं.

—सुरेंद्र वैद्य

*

दहेज का समाधान

लेख 'दहेज के लिए उत्तरदायी कौन?' (मार्च/द्वितीय) सामयिक एवं सटीक है.

अभिभावकों को अपने स्तर एवं लड़की के गुणदोषों के अनुकूल ही लड़का ढूंढ़ना चाहिए. इस संबंध में लड़की के विचारों को भी महत्त्व देना चाहिए. साथ ही स्वयं दहेज न देने के लिए दृढ़संकल्प रहना चाहिए.

यदि इन बातों को ध्यान में रखते हुए लड़की का पिता अपनी लड़की का विवाह करेगा तो उस की लड़की को दहेज के लिए प्रताड़ित नहीं किया जाएगा क्योंकि हर अभिभावक अपने बेटेबेटी को सुखी देखना चाहता है. दहेज को तो मात्र बहाना बना दिया जाता है. इसलिए दहेज की प्रथा को समाप्त करने के लिए लड़की वालों को ही आगे आना होगा और दहेज के लोभियों को बहिष्कृत कर के सबक सिखाना होगा.

—एस.के. शुक्ल

*

समय का सच

लेख 'विवादों के घेरे में तमस' (मार्च/द्वितीय) पढ़ कर लगा कि लेखक 'तमस' के साथ इंसाफ नहीं कर सका है.

'तमस' हमें शिक्षा देता है कि हमें ऐसे जनूनी लोगों को पहचानना चाहिए, जो आम जनता को धर्म और जाति के नाम पर गुमराह कर के अपनी चौधराहट बनाए रखना चाहते हैं.

'तमस' समय का सच है. हमें इस कड़वे सच को स्वीकारना चाहिए.

—रामस्वर्ण सिंह आजाद

*

लेख 'रामानंद सागर की रामायण: आलोचनाओं और आपत्तियों के उत्तर' (दिसंबर/प्रथम) में लिखा है: ''इस धारावाहिक में पात्रों की पोशाक भी रामायण काल की न हो कर सामंती युग जैसी है. वैसे सामंती युग में भी ऐसी जर्कबर्क नाइलोन की साड़ियां और रेशमी परिधान देखने को कहां मिलते थे.''

क्या आप बता सकते हैं कि दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के चित्रों या मूर्तियों पर पहनाए गए रेशमी परिधान उन के काल में थे या नहीं?

—संजीवसिंह यादव

प्राचीन हिंदू काल में स्त्रियां कैसे वस्त्र पहनती थीं, इस के लिए अजंताएलौरा की मूर्तियां व चित्र देखिए. आप का भ्रम दूर करने के लिए इतना ही काफी है.

—संपादक

आपके केयो·कार्पिन बालों के इस स्टाइल को तो सब देखते ही रह जायेंगे!

देख लीजिए, बालों का यह स्टाइल कैसे बनता है:

बीच में मांग काढ़कर बालों को अलग कीजिए। रंगीन फीते से दोनों ओर दो पॉनिटेल बनाइए।

प्रत्येक पॉनिटेल के दो-दो भाग कीजिए — एक भाग दूसरे से थोड़ा मोटा हो।

सिर के दोनों ओर पॉनिटेल के मोटे भाग से दो गोलाकार खोंपा बनाइए। पिन लगा दीजिए।

पॉनिटेल के पतले भाग में रंगीन फीते को लपेटिए। अब फीते सहित बाल को गोल खोंपे के चारों ओर लपेट दीजिए। पिन से कस दीजिए। ठीक इसी तरह दूसरी ओर भी कीजिए।

बालों की संपूर्ण देखभाल के लिए हर रोज इस्तेमाल कीजिए चिपचिपाहट-रहित भीनी-भीनी खुशबूवाला केयो-कार्पिन केश तेल। यह आपके बालों को स्वस्थ, सजा-सँवरा और सुन्दर बनाये रखेगा। और फिर बालों को मनचाहे स्टाइल में सजाइए-सँवारिए। हर रूप में आपका रूप मनभावन लगेगा।

केयो·कार्पिन

भीनी-भीनी सुगंधयुक्त चिपचिपाहट-रहित केश तेल।

स्वस्थ केश। सुन्दर केश। केयो·कार्पिन केश।

Dey's दे'ज मेडिकल की संभाल, आपका भरोसा
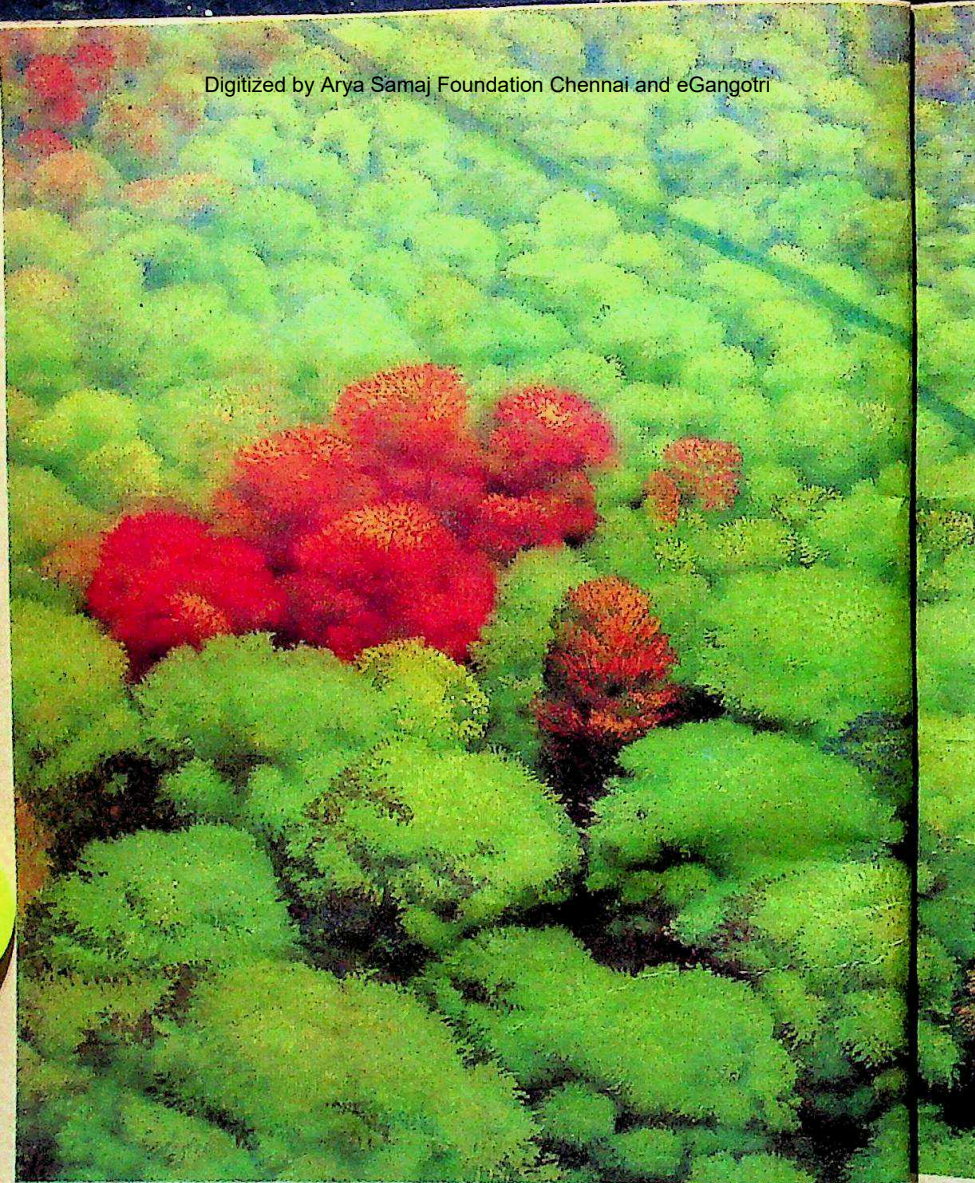
DMHO 15

पंखों पे चली आएं...ताज़ी ठंडी हवाएं!

यह भी खूब रही

हमारे पड़ोस में एक दुकानदार से जब भी कोई व्यक्ति किसी चीज का भाव पूछता था तो वह कह देता था, "एक रुपया बाजार से कम दे देना."

एक दिन मैं उस से सौदा लेने गया. भाव पूछने पर उस ने हमेशा की तरह कह दिया, "बाजार से एक रुपया कम दे देना."

मैं ने उस से एक रुपए का सौदा लिया और बिना पैसे दिए चल दिया.

जब दुकानदार ने पैसे मांगे तो मैं ने कह दिया, "तुम ने बाजार से एक रुपया कम देने के लिए कहा था. सौदा एक रुपए का है, इसलिए आप को रुपया नहीं दिया."

यह सुन कर दुकानदार का चेहरा उतर गया. उस के बाद उस ने 'एक रुपया कम दे देना' कहने की आदत छोड़ दी.

—अरशद ख़ान 'खुर्रम'

*

मेरे मामाजी सवेरे ही जंगल में स्थित एक प्राचीन मंदिर में पूजा करने के लिए जाया करते थे. एक दिन समय का अंदाज न होने के कारण वह आधी रात को ही उठ कर चल दिए. रास्ते में जब उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ तो वह एक पेड़ पर चढ़ कर सुबह होने का इंतजार करने लगे.

सुबह होने पर 2 व्यक्ति उधर से मंदिर की ओर जाने के लिए गुजरे. मामाजी ने उन्हें देख कर आवाज लगाई, "मंदिर जा रहे हो, मैं भी चलूं क्या?" दोनों व्यक्तियों ने घबरा कर इधरउधर देखा, मगर उन्हें कोई नहीं दिखाई दिया तो वह और घबरा गए और उसी पेड़ के नीचे छिपने लगे जिस पर मामाजी बैठे थे. मामाजी यह कहते हुए पेड़ से कूदे, "ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं."

लेकिन उन के पेड़ से कूदते ही दोनों व्यक्ति भूतभूत चिल्लाते हुए भाग खड़े हुए. जब मामाजी उन्हें रोकने के लिए दौड़े तो वह और भी घबरा गए और सामने कीचड़ में गिर गए. मामाजी ने उन्हें निकाल कर जब वस्तुस्थिति बताई तो वे दोनों बहुत शरमिंदा हुए.

—जीवनसिंह वर्मा

*

मेरे चाचाजी की आदत थी कि जब भी कोई उन से किसी काम को कहता था तो वह मेरी ओर इशारा कर के कह देते, "भाई, यह काम तो अपने बस का नहीं है. यह काम तो अपना सहायक ही करेगा."

एक दिन हम सभी बैठे गप्पें मार रहे थे कि चाचाजी के एक मित्र ने उन से कहा, "यार, अब हनीमून मनाने कब जा रहे हो?"

चाचाजी ने अपनी आदत के अनुसार पूरे जोश से कहा, "यार, कितनी बार कहा है. यह अपने बस की बात नहीं है. यह काम तो अपना सहायक ही करेगा."

यह सुन कर हम सब हंसी से लोटपोट हो गए और चाचाजी का चेहरा देखने लायक हो गया.

—सुनील बिसपतिया

*

एक बार हम किसी रिश्तेदार की लड़की की शादी पर गए. जब फेरों का समय आया तो दुलहन की एक सहेली भी फेरों में उस के साथ चलने लगी. इस पर पंडित बोला, "भई, शादी एक ही की करवानी है या दोनों की एक से ही करवानी है."

उन की इस बात पर सभी ठहाके लगा कर हंस पड़े.

—सरिता ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

ड़े हुए.
तो वह
वड़ में
र जब
बहुत
 वर्मा

ब भी
था तो
भाई,
 काम

रहे थे
कहा,
हो?"
नुसार
 कहा
म तो

टपोट
ायक
तिया

ड़की
समय
रों में
ंडित
नी है

लगा
ा ●

भव
की
पर
ाला

रिता

हलो कहने का नया अन्दाज़

नेस्कैफ़े कॉफी

दुनिया भर की मनपसन्द कॉफ़ी

संग होने की उमंग, जगाए तरंग ऐसे लम्हों में **नस्कैफ़े.**

शत प्रतिशत शुद्ध, ताज़ा कॉफी का आनन्द लीजिए.
नैस्कैफ़े का खास स्वाद-आपके लिए खास तौर से लाए हैं
वो लोग, जिनसे बेहतर कॉफी के बारे में और कोई नहीं जानता.

जब सब संग साथ हो ऐसे लम्हों में-**नैस्कैफ़े**
ऐसा स्वाद जिस पर दुनिया करे नाज़.
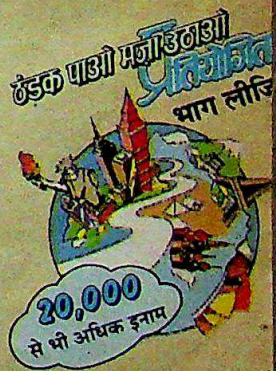
अपने डीलर से सम्पर्क कीजिए।
प्रतियोगिता की अन्तिम तारीख: 30 जून 19

आप जब घर पेन्ट कराते हैं तो अच्छा ख़ासा ख़र्चा तो होता ही है.
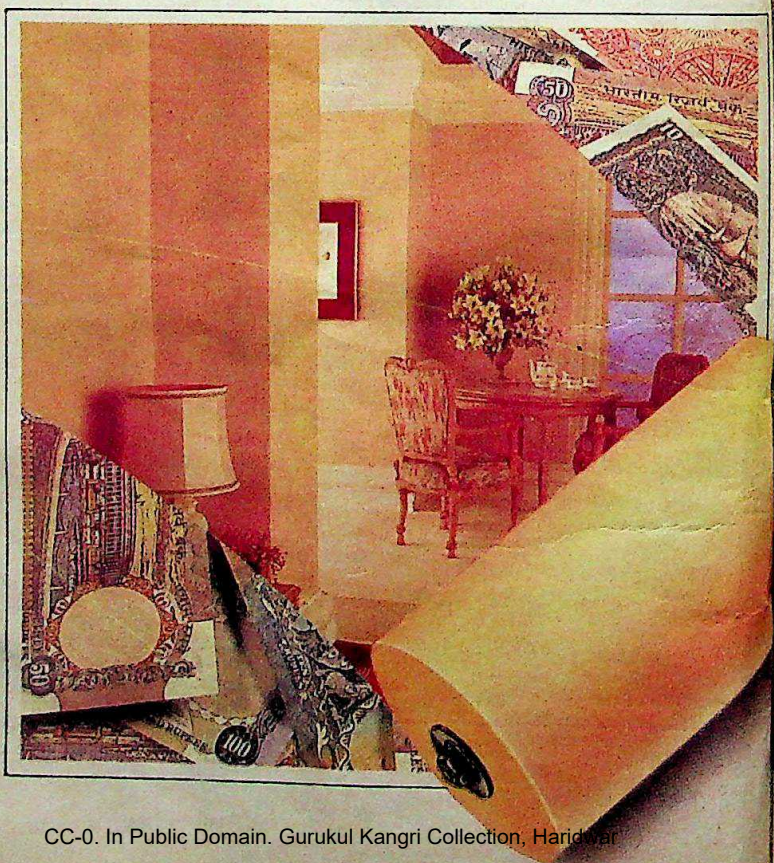
पर अब जानिए अपने पैसों की पूरी क़ीमत पाने का तरीक़ा.

घर पेन्ट करने का इरादा बनाते समय खर्चे का सही अन्दाज़ा लगाना आपके लिए आसान नहीं होता. पर आप इतना ज़रूर जानते हैं कि ज़रूरत से ज़्यादा खर्च नहीं करना है–क्योंकि पैसा आपका अपना है. और आप यह भी जानते हैं कि सिर्फ़ पैसा बचाने के लिए आप कोई ऐसा सस्ता पेन्ट नहीं ख़रीदेंगे जो कि जल्द ही चिटक कर निकलने लगे.

सिर्फ़ एशियन पेन्ट्स में ही आपको मिलता है भरोसेमन्द मेलजोल, क्वालिटी और क़ीमत का – लाजवाब क्वालिटी और पैसों की पूरी क़ीमत.

आपकी दीवारों के लिए, एप्कोलाइट १००% शुद्ध एक्रिलिक इमल्शन, एक बेहतर और ज़्यादा चलनेवाली फ़िनिश. या ट्रैक्टर डिस्टेम्पर, एक किफ़ायती पेन्ट, जिसके अनेक गुणों ने इसे भारत का सबसे ज़्यादा बिकनेवाला पेन्ट बनाया है.

एप्कोलाइट सिन्थेटिक इनैमल आपके खिड़की, दरवाजों और लोहे की चीज़ों को ऐसी चमक देता है जो और कोई पेन्ट नहीं दे सकता. टचवुड क्लीयर वुड फ़िनिश आपके फ़र्नीचर को इस तरह चमकाती है और उसकी हिफ़ाजत करती है जैसे साधारण पॉलिश नहीं कर सकती.

बरसों खिलने वाले अनेक मनपसन्द शेड्स

जब आप घर पेन्ट करा रहे हों तो सही शेड मिल जाने से बहुत फ़र्क पड़ता है. एशियन पेन्ट्स में आपको अपना मनपसन्द शेड मिलेगा.

और तो और हर शेड ज़्यादा दिन खिला रहता है. हर शेड का ताल-मेल कम्प्यूटर से होता है. तो जो शेड आप चाहेंगे वही मिलेगा.

इसलिए ये आश्चर्य की बात नहीं कि एशियन पेन्ट्स पिछले बीस वर्षों से पेन्ट के क्षेत्र में पहले स्थान पर है. १९६७ से आज तक, सबसे ज़्यादा घरों ने चुना है एशियन पेन्ट्स. क्योंकि सभी को मिली है पैसों की पूरी क़ीमत.

पैसों की पूरी क़ीमत.

सरित प्रवाह

स्वीडिश बोफोर्स तोपों के 1,427 करोड़ रुपए के सौदे में 64 करोड़ रुपए की रिश्वत दिए और लिए जाने के आरोप की जांच करने के लिए जो संयुक्त संसदीय समिति बनाई गई थी, उस की रिपोर्ट 26 अप्रैल को लोकसभा में पेश कर दी गई.

इस रिपोर्ट में वह सब कुछ है जिस की शुरू से ही आशंका थी. राजीव सरकार को दूध की धुली साबित करना, और यह जोरदार शब्दों में कहना कि किसी भारतीय को यह रिश्वत नहीं दी गई.

जब से स्वीडन के रेडियो ने इस रिश्वतखोरी के बारे में पोल खोली, तभी से विपक्ष, समाचारपत्रों व राजीव गांधी में बराबर कशमकश चल रही है. राजीव गांधी ने पहले तो कहा कि रिश्वत का नाम लेना भी गुनाह है. हमारे यहां, हमारी सरकार में तो ऐसा हो ही नहीं सकता, यह सब विपक्ष और सरकार के दुश्मनों की कारस्वाई है जो विदेशों की शह पर काम कर रहे हैं और सरकार को गिराने की साजिश में संलग्न हैं.

पर जब और भेद खुले और दैनिक 'इंडियन एक्सप्रेस' ने अमिताभ बच्चन के भाई अजिताभ बच्चन के स्विटजरलैंड में खरीदे हुए मकान के चित्र छापे, और यह सवाल किया कि उस के पास यह रुपया कहां से आया, जब कि वह और उस का भाई दोनों यह शपथपूर्वक कहते रहे कि अजिताभ केवल स्विटजरलैंड में नौकरी कर रहा है, और उस के पास अपना कुछ नहीं है, तो राजीव गांधी के पास सिवाए यह कहने के कि सरकार इस मामले की जांच करेगी और कुछ नहीं था. यह जांच अभी तक न शुरू हुई है, न होगी, क्योंकि पक्के मकान को आप किसी भी तांत्रिक या खुफिया पुलिस या गुप्तचर के करिश्मे से गायब नहीं कर सकते.

जब विपक्ष ने संसद में संसदीय जांच समिति बनाने की मांग उठाई तो पहले तो रोजमर्रा के नियमित फार्मूले के अनुसार इस मांग को अस्वीकार कर दिया गया. पर जब दरबारियों ने यह बतलाया कि हुजूर बहुमत तो आप का है, आप को क्या चिंता है, बस इस की कार्यसूची और कार्य परिधि ऐसी बनाइए कि यह लंगड़ीलूली रहे, तो समिति बन गई. विपक्ष को तो इस का बायकाट करना ही था. ऐसी जगह सम्मिलित होने से क्या लाभ जहां आप के हाथपांव बंधे हुए हों और मुंह पर ताला लगा हो.

समिति ने अपनी कारस्वाई पूरी की. औपचारिक ढंग से पूर्वनिश्चित उत्तर देने के लिए बोफोर्स कंपनी के प्रतिनिधियों से वही सवाल पूछे गए, जिन से कोई जानकारी नहीं मिल सकती थी. पत्रकारों को इन प्रतिनिधियों से दूर रखा गया. विन चड्ढा को, जो बोफोर्स का एजेंट था, पहले तो अमरीका भगा दिया गया, पर जब उस का
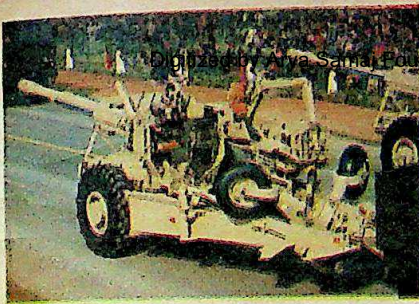
नाम रोज अखबारों में उछला तो उसे भारत बुला कर सिखापढ़ा कर उस से वही कहलवा दिया जो वांछित था.

इस सब नाटकबाजी के बाद समिति के सदस्यों के सामने 360 पृष्ठों की बनीबनाई रिपोर्ट रख दी गई और कहा गया कि बिना पढ़े इस पर हस्ताक्षर कर दो—वह रिपोर्ट जिस के लिखने में किसी सदस्य का कोई हाथ या हस्तक्षेप नहीं था.

पर संयोग से तमिलनाडु के मुख्य मंत्री रामचंद्रन की मृत्यु हो गई. उन की उत्तराधिकारिणी बनी उन की दो पत्नियां जय ललिता और जानकी, और इन दोनों में शुरू दिन से ही झगड़ा हो गया. राजीव गांधी ने पहले तो जानकी का पक्ष लिया और उसे मुख्य मंत्री बना दिया. बाद में बात बिगड़ गई और उसे निकाल फेंका गया. इस पर रामचंद्रन अन्ना द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम के संसदीय दल का विभाजन हो गया और जानकी गुट कांग्रेस का शत्रु हो गया. इस नए शत्रुदल के एक सदस्य अलादि अरुणा ने इस रिपोर्ट पर न केवल हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया, बल्कि अपने मतभेद की एक लंबी रिपोर्ट भी पेश कर दी.

सरकार ने यहां भी इस 'मतभेद' को दबाना चाहा, न मालूम अरुणा पर कितना जोर डाला गया, क्याक्या प्रलोभन दिए गए, पर वह डिगे नहीं, और वह रिपोर्ट जो सर्वसम्मत होनी थी, उस की पूंछ में एक बिच्छू का डंक लग गया. सरकार की एक और चाल, रिश्वत पर परदानशीनी, विफल हो गई.

जहां बहुमत की यानी कांग्रेसी रिपोर्ट पूर्व निश्चय के अनुसार यह कहती है कि किसी भारतीय को रिश्वत मिलने का कोई सुबूत नहीं है, और इस बात को ढकने के लिए 360 पृष्ठों का प्रयोग किया गया है, वहां मतभेद की रिपोर्ट साफ कहती है कि एक या कई भारतीयों को 64 करोड़ रुपए रिश्वत में दिए गए हैं, पर नाम अभी तक पता नहीं चला है.

उधर इस संसदीय रिपोर्ट के लोकसभा के पटल पर रखे जाने के साथसाथ मद्रास के अंगरेजी दैनिक हिंदू ने कुछ गोपनीय कागजात प्रकाशित किए हैं, जिस से मालूम होता है कि लंदन स्थित हिंदूजा ब्रदर्स की फर्जी कंपनियों की मार्फत यह रुपया दिया गया है.

हिंदूजा बंधु नेहरू कुनबे और अमिताभ बच्चन के खास दोस्त हैं. अमिताभ बच्चन ने अपना लाखों रुपया हिंदूजाओं द्वारा स्थापित हस्पतालों इत्यादि को दिया, ऐसा उस ने अपनी आयकर विवरणी में दिखाया है.

भूतपूर्व वित्त व रक्षा मंत्री व जन मोरचा अध्यक्ष विश्वनाथप्रताप सिंह का कहना है कि इस तिगड़े की—राजीव गांधी, अमिताभ बच्चन और हिंदूजा, की जांच की जाए तो यह भेद अपनेआप खुल जाएगा कि रिश्वत कहां पहुंची.

एक झूठ को छिपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं, और तब भी काम नहीं बनता:

यह मसल बोफोर्स रिश्वत कांड पर पूरी तरह लागू होती है. जल्दी ही कुछ न कुछ सनसनीखेज प्रकट होने की पूरी संभावना है. यद्यपि उस में सनसनी कुछ नहीं होगी क्योंकि लोगों को एहसास तो है ही कि इस रिश्वत का असली प्राप्तकर्ता कौन है. अब तो केवल सफेद कागज पर स्याही में सुबूत की जरूरत है.

*

हमारे यहां राजनीतिक दल भी मठमंदिरों से किसी हालत में कम नहीं हैं. मठों और

की नेतागीरी भी शक्ति, पैसे और जनपूजा का स्रोत है. इसी लिए एक बार कोई किसी दल का नेता बन जाता है, वह जनतंत्रात्मक विधा की मुंहजबानी लल्लोचप्पो करता हुआ भी अपनी गद्दी पर अपनी पकड़ जरा भी ढीली नहीं करना चाहता.

यह परंपरा कांग्रेस में राष्ट्र के पिता कहे जाने वाले गांधीजी ने प्रारंभ की थी. अपने जीतेजी उन्होंने कांग्रेस में किसी प्रतिद्वंद्वी को उभरने नहीं दिया. जहां कोई सुभाषचंद्र बोस या नरीमन जैसा व्यक्ति खड़ा हुआ, तुरंत उस को निकाल बाहर किया. अपने चारों ओर उन्होंने 'बापूबापू' कहने वालों को ही जमा कर के रखा.
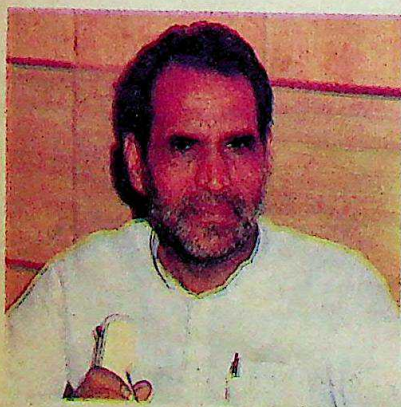
यही हाल गांधीजी के बाद हुआ. जवाहरलाल नेहरू ने अव्वल तो चुनाव कराए ही नहीं. कराए भी तो जिस किसी ने उन के विरुद्ध चुनाव लड़ने की पेशकश की, तत्काल उसे बाहर निकाल दिया गया. उन की बेटी ने भी यही किया और धेवता भी यही कर रहा है.

इधर जनता पार्टी पर चंद्रशेखर 11 वर्षों से कब्जा जमाए बैठे हैं. पहले स्वामी अग्निवेश ने सिर उठाया तो उन का बोरियाबिस्तर उठा कर बाहर फेंक दिया गया.सुब्रह्मण्यम स्वामी उठे तो धक्का दे कर बाहर. अब कर्नाटक के मुख्य मंत्री रामकृष्ण हेगड़े ने जरा सिर उठाया है तो चंद्रशेखर ने है और कर्नाटक जनता पार्टी में बगावत पैदा करा दी, ताकि हेगड़े अपनी जान बचाने के लिए केंद्र में चंद्रशेखर को हटाने की बात ही भूल जाएं.

चंद्रशेखर को इस की परवाह नहीं कि जनता पार्टी की एक मात्र राज्य सरकार इस प्रकार बदनाम हो कर, आपसी झगड़ों में पड़ कर टूट जाएगी. सरकार टूटे तो टूटे, चंद्रशेखर महोदय की महंताई तो बनी रहेगी.

यह वही भारतीय इतिहास वाली बात है जब भारत के राजा अपनी गद्दी बनाए रखने के प्रयत्न में पड़ोसी राज्य को मिटाने के लिए विदेशी आक्रामकों को स्वयं न्योता देते थे, बिना यह सोचे कि जब विदेशी आएगा तो उन का पड़ोसी तो बचेगा ही नहीं, वे स्वयं भी नेस्तनाबूद हो जाएंगे.

इस विषय में भारतीय जनता पार्टी की सराहना करनी चाहिए कि वह अपने यहां द्विवर्षीय चुनाव बराबर कराती है और अपने अध्यक्ष पद पर दो बार से ज्यादा किसी व्यक्ति को टिकने नहीं देती.

भारतीय जनता पार्टी ने अपने आगरा में हुए वार्षिक सम्मेलन में घोषणा की है कि वह किसी अन्य राजनीतिक दल में नहीं मिलेगी. अपना अलग अस्तित्व बनाए रखेगी. हां, वह राजीव सरकार को हटाने के प्रयास में अन्य राजनीतिक दलों के साथ समझौता, तालमेल अवश्य कर लेगी.

यह निर्णय ठीक ही है क्योंकि प्रथम तो चार आदमी मिलबैठ कर काम कर लें, हमारे यहां यह परंपरा ही नहीं रही है. हमारे यहां परंपरा रही है विभाजन की और विभाजन के विभाजन की, जिस का सब से प्रमुख उदाहरण है. जातिवाद.

हमारे हिंदुओं के जातिवाद में, जिसे भगवान द्वारा आदेशित बताया जाता है, जनता को केवल चार जातियों में बांट कर ही संतोष नहीं किया गया बल्कि इन चार जातियों से हजारों उपजातियां, उपउपजातियां

बना डाली गई, और इन सब में रोटीबेटी का व्यवहार धर्म विरोधी करार दे दिया गया और सब से नीची जाति को तो कुत्तेबिल्ली, सूअर से भी नीचे का दर्जा दे कर कीड़ेमकोड़ों की तरह रहने पर मजबूर कर दिया गया.

इस प्रकार जब यह अछूत जाति पैदा कर दी गई तो इस का मिलन किस से और कैसे हो सकता था. डा. भीमराव अंबेडकर को इसलिए हिंदू धर्म छोड़ कर बौद्ध धर्म अपनाना पड़ा, ताकि रोज अपमानित, जलील होने से बचा जा सके.

भारतीय जनता पार्टी वैसे तो ब्राह्मणवादी, ब्राह्मणों द्वारा स्थापित, संचालित है, पर उसे भी राजनीति में कम्यूनिस्टों और समाजवादियों ने ब्राह्मणों द्वारा हिंदू समाज के एक विशाल अंग को अछूत बनाने जैसा मजा चखा दिया भाजपा को अछूत बना कर.

जनता पार्टी में जब जनसंघ का विलय हुआ तो समाजवादियों ने यह कह कर इन के साथ उठनेबैठने से इनकार कर दियाः पहले अपना जनसंघ से संबंध तोड़ो. इस के बाद भी कम्यूनिस्टों ने अपना अभियान जारी रखा और पिछले वर्ष जब विपक्ष की एकता का प्रश्न आया तो भाजपा को अछूत मानते हुए उस के साथ मिलनेबैठने या बात करने से इनकार कर दिया.

अब अगर भाजपा को डा. अंबेडकर की नीति अपना कर अपने अछूतपने पर गर्व करना पड़ रहा है तो ठीक ही है. मजबूरी का नाम हरहर महादेव.

इस वर्ष जाड़े में दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में ओलंपिक खेल होने वाले हैं पिछले कई ओलंपिकों में और अन्य अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी भारत ने हमेशा मुंह की खाई है. पदकों की संख्या में तो भारत विश्व में कहीं ठहरता ही नहीं. एथलेटिक्स/दौड़ में लेदे कर एक पी. टी. ऊषा है, जो मरागिरा एकाध मेडल ले आती है. हाकी, जिस में भारत पहले कभी सर्वोच्च स्थान पर रहा करता था, आज भारत के हाथ से निकल कर पाकिस्तान या अन्य यूरोपीय देशों के कब्जे में पहुंच गई है.

इन अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का ऐसा कलुषित रिकार्ड बहुत कुछ भारतीय खेल अधिकारियों की खेल के प्रति उदासीनता व भ्रष्टाचार के कारण है. अन्य कारणों में हमारे देश में गुलामों के खेल क्रिकेट पर अत्यधिक जोर देना भी है. सरकार का सारा धन और ध्यान क्रिकेट पर लग गया है, और हाकी व अन्य खेल विधाएं अनुसूचित जातियों की तरह लावारिस और घृणित क्षेत्र में ला पटक दी गई हैं. सभी अच्छे प्रतिभाशाली, शारीरिक रूप से संपन्न लोग क्रिकेट खिलाड़ी बनना चाहते हैं क्योंकि वहीं मान है, सम्मान है, धन है.

खबर है कि अपनी बराबर हार से लज्जित हो कर सरकारी अधिकारी हाकी के खिलाड़ियों को अभी से तैयार करने में लगे हैं. हाकी आज बहुत प्रतिस्पर्धा और शारीरिक दृढ़ता का खेल हो गया है, विशेषतः जब से खेल बजाए प्राकृतिक घास के प्लास्टिक टर्फ पर खेला जाने लगा है. इस पर खेलने के लिए जीवट चाहिए, जो भारतीय खिलाड़ियों में नहीं होता है. कहा जाता है कि सरकार द्वारा खिलाड़ियों के खानपान के लिए दिया गया रुपया अधिकारी बीच में ही डकार जाते हैं और खिलाड़ी सूखी रोटियां तोड़ने पर मजबूर रहते हैं.

यदि भारत में खेल और खिलाड़ियों को उचित प्रोत्साहन देना है तो सरकार को रेडियो, टीवी द्वारा व पत्रपत्रिकाओं और जनमत बनाने वाले अन्य व्यक्तियों को गुलामों के खेल क्रिकेट से जनता का ध्यान, प्रेम, आकर्षण हटा कर अन्य खेलों की तरफ मोड़ना होगा. यह जानने योग्य बात है कि ब्रिटेन व उस के भूतपूर्व गुलाम देशों के अथक प्रयत्न के बाद भी ओलंपिक कमेटी ने क्रिकेट को ओलंपिक खेलों में कोई स्थान नहीं दिया है. न यह खेल सिवाए ब्रिटेन और उस के भूतपूर्व गुलाम देशों के अन्यत्र कहीं खेला जाता है.

महाभारत के संबंध में सारे भारत में यह कहावत सी प्रचलित रही है कि जो महाभारत में नहीं है, वह कहीं नहीं है. यह शायद इस श्लोक का ही लौकिक अनुवाद है.

धर्मे चार्थे च कामे
च मोक्षे च भरतर्षभं
यदिहास्ति तवन्यत्र
यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्.

यानी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के क्षेत्र में जो इस में है, वही दूसरी जगह मिलेगा और इस में जो नहीं मिलेगा, वह कहीं नहीं मिलेगा. महाभारत को पंचम वेद भी कहा गया है.

हाल ही में राजधानी में साहित्य अकादमी के परमोत्साही कर्मठ सचिव के तत्त्वावधान में जो अखिल विश्व महाभारत संगोष्ठी हुई, उस में मुख्य वक्ता अध्यापक आर.एन. डांडेकर ने दावा किया, "महाभारत में मनुष्य के सामूहिक सज्ञान, अज्ञान तथा

महाभारत पर प्रखर क्रांतिकारी

लेख • मन्मथनाथ गुप्त
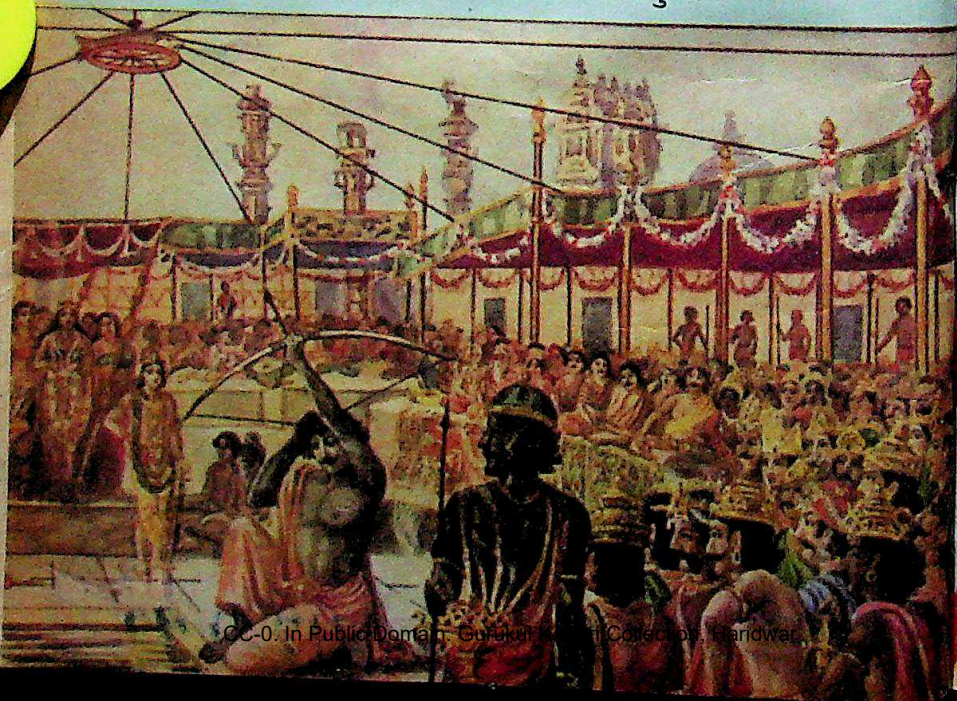
मग्नज्ञान का लेखाजोखा प्रस्तुत है. इस महाकाव्य में मनुष्य के शायद ही किसी चिंतन या भावुकता की अभिव्यक्ति छूट गई हो और मानव जीवन की कोई स्थिति इस में चित्रित होने से रह गई हो. महाभारत का एक विशिष्ट गुण यह है कि हर पाठक को इस में कुछ न कुछ ऐसा मिलता है, जो लगता है उसी को संबोधित कर के केवल उसी के लिए लिखा गया है. इस अर्थ में महाभारत न केवल हर भारतीय का है बल्कि विश्व के हर नागरिक के लिए है." यह महाभारत के इस श्लोक का ही विस्तार है.

महाभारत के मुख्य पात्र कृष्ण अर्जुन के साथ : नायक भी, खलनायक भी.
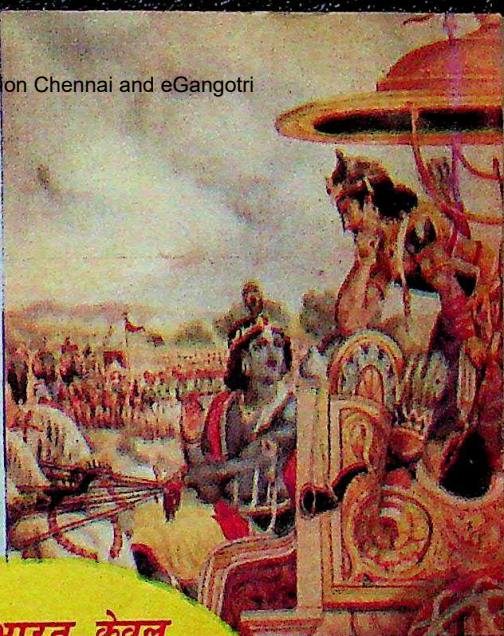
चित्र इंडियन प्रेस के महाभारत से

दृष्टि

महाभारत केवल विकसनशील इतिहास काव्य ही नहीं, भारतीय धर्म और संस्कृति का आधारभूत आख्यान भी माना जाता है, जिस में जन-कल्याणकारी राष्ट्र का प्रतिपादन किया गया है. किंतु क्या हजारों वर्षों से भारत में किसी जनकल्याणकारी राज्य की स्थापना हो सकी?

अर्थशास्त्रमिदं प्रोक्तम्
धर्मशास्त्रमिदं महत्
कामशास्त्रमिदं प्रोक्तम्
व्यासेनामितबुद्धिना !

ऐसे दावे हर धर्म में हैं

उक्त प्रकार के दावे हर धर्मग्रंथ के संबंध में उन के अनुयायियों के द्वारा किए गए हैं, फिर भी यह मानना पड़ेगा कि महाभारत में जितनी कहानियां और गपोड़े हैं, उतने किसी धर्मग्रंथ में नहीं हैं. बल्कि सारे मुख्य धर्मों में पाई जाने वाली कहानियों से इस में अधिक कहानियां हैं. कहानियों में इतिहास का पुट भी है, नीति भी है. एक तरफ यह अजीबोगरीब अलिफलैलानुमा कहानियों का स्तवक है तो दूसरी तरफ इस में नीति (राजनीति, कूटनीति), धर्म की गुत्थियां

सुलझाने का प्रयास है.

विंटरनित्ज आदि पाश्चात्य वैदिक विद्वानों के अनुसार महाभारत की जड़ें वैदिक युग की घटनाओं, विवादों, युद्धों में हैं. पर प्रश्न यह है कि महाभारत में कितना इतिहास है? स्वयं डांडेकर का कहना है कि महाभारत की ऐतिहासिक जड़ें बहुत पतली, अपरिभाषित और मुशकिल से पकड़ में आने वाली हैं. एक बहुत मामूली रोजमर्रा के पारिवारिक झगड़े को आधार बना कर उसे महाकाव्य के तानेबाने में बुना गया है और अतिशयोक्तियों, चामत्कारिक घटनाओं, प्रतीकवादों, रहस्यों, आदर्शीकरणों और विश्व स्तर पर सिद्धांतीकरणों से गुंफित किया गया है.

आंख खोलने वाली बात

उक्त कथन में एक मामूली रोजमर्रा के पारिवारिक झगड़े वाली बात बहुत आंख खोलने वाली है. यदि इस झगड़े पर से यह पलथन या प्रलेप दूर कर दिया जाए, जो सदियों से उस पर चिपकाया जाता रहा है कि यह धर्म और अधर्म, सत्य और मिथ्या के बीच युद्ध है, तो उस का असली रूप सामने आ जाता है.

गांधीजी भी मानते थे कि "गीता ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं है. परंतु इस में भौतिक युद्ध के वर्णन को निमित्त बना कर प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निरंतर चलने वाले द्वंद्वयुद्ध का ही वर्णन किया गया है. मानव योद्धाओं की रचना हृदय के भीतर के युद्ध को रसप्रद बनाने के लिए की गई कल्पना है. मन में उत्पन्न यह प्राथमिक स्फुरण, धर्म का और गीता का विशेष चिंतनमनन करने के बाद पक्का हो गया. महाभारत पढ़ने के बाद मेरा यह विचार और भी दृढ़ हो गया. महाभारत ग्रंथ को मैं आधुनिक अर्थ में इतिहास नहीं मानता. इस के प्रबल प्रमाण आदिपर्व में ही हैं. पात्रों की अमानुषी और अतिमानुषी उत्पत्ति का वर्णन कर के व्यास ने राजा और प्रजा के इतिहास को मिटा दिया है. महाभारत में वर्णित पात्र मलतः ऐतिहासिक भले ही हों, लेकिन महाभारत में तो व्यास ने उन का उपयोग केवल धर्म का दर्शन कराने के लिए ही किया है.

"महाभारतकार ने भौतिक युद्ध की आवश्यकता सिद्ध नहीं की है; बल्कि उस की निरर्थकता सिद्ध की है. विजेताओं से उन्होंने रुदन कराया है, पश्चात्ताप कराया है और दुख के सिवा दूसरा कुछ उन के जीवन में रहने नहीं दिया है."

(अनासक्तियोग–गांधी पृ. 14-15)

सचमुच कथा सिर्फ इतनी ही है: वयोज्येष्ठ को, यानी उम्र में सब से बड़े को सिंहासन मिलना चाहिए या और किसी को? औरंगजेब ने राजाओं में मान्य इस सिद्धांत को तोड़ कर अपने पिता सम्राट शाहजहां को कैद किया और भाइयों का वध किया. सारा महाभारत उसी सिद्धांत के इर्दगिर्द घूमता है. पर खैरियत यह है कि अंततोगत्वा ऋषियों, मुनियों, महाभारत के अनगिनत लेखकों के शताब्दियों से चालू प्रचार कार्य के कारण उसे सत और असत के बीच युद्ध का रूप प्राप्त हो गया है. वैन बुइटनेज आदि कई विद्वान मानते हैं कि महाभारत एक सुग्रथित रचना है, और गीता उस का अंग है, न कि जबरदस्ती घुसेड़ा हुआ अंश. महाभारत में ही यह आता है कि कौरव वयोज्येष्ठ के सिंहासन पर अधिकार के सिद्धांत से छुटकारा प्राप्त करने के लिए यह कहते हैं कि पांडव सिंहासन के अधिकारी नहीं हैं, क्योंकि वे नियोग से उत्पन्न हैं, यानी अपने बाप के बेटे नहीं हैं.

पांडव अपने बाप के बेटे नहीं

सचमुच पांडव अपने बाप के बेटे नहीं थे. प्राचीन जातियों में, जैसे यहूदियों में, नियोग की प्रथा प्रचलित थी. वर्तमान युग में स्वामी दयानंद ने इस प्राचीन नियोग प्रथा की वकालत की थी. अब पाश्चात्य देशों में समर्थ व्यक्ति के वीर्य से पतिपत्नी की राय से संतान उत्पन्न करने की चर्चा चल रही है.

महाराज पांडु नपुंसक थे. बताया गया कि वह शाप के कारण ऐसे थे क्योंकि उन्होंने
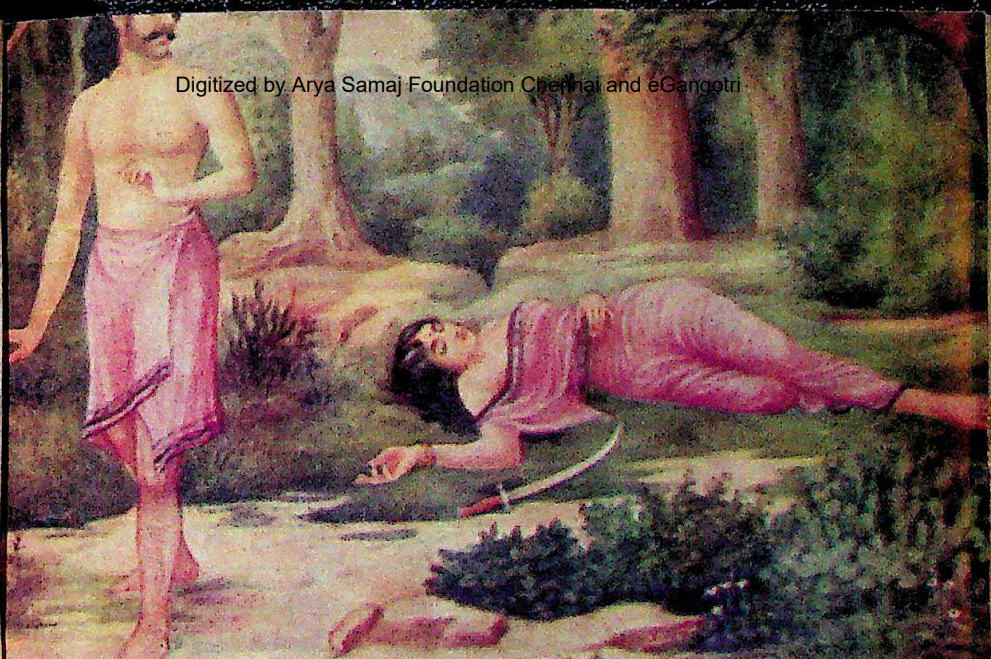
मैथुन में रत प्राणी का वध किया था. शाप यह था कि ज्यों ही वह मैथुन की चेष्टा करेंगे, मर जाएंगे.

पांडु की सम्मति से उन की पत्नियों कुंती और माद्री ने धर्मराज, इंद्र, वायु और अश्विनीकुमारों से पुत्र प्राप्त किए. पर कुंती कुमारी अवस्था में भी कर्ण की माता बन चुकी थी. इस प्रकार कथा के अंदर कथा, गुत्थी के अंदर गुत्थी मौजूद है, जिस से महाभारत की हर पंक्ति रोचक और विचित्र बन गई है.

द्रौपदी के पंचपति के पीछे भी कथा है कि जब पांडव द्रौपदी को लाए, तो माता कुंती ने बिना देखे कहा कि जो कुछ प्राप्त हुआ है उसे बांट लो. तदनुसार द्रौपदी के पांच पति हुए. इस प्रकार हर घटना के पीछे एक समर्थक रोचक कहानी है. ऐसा लगता है कि महाभारत में जो भी घटना लीक से कुछ हटी होती थी, उस के साथ उस के समर्थन में एक कहानी लगा दी जाती थी. प्रश्न यह है कि क्या यह कहानी फौरन कल्पित होती थी या किसी पुरानी कहानी

महाभारत में मूल कहानी के अतिरिक्त कई अन्य कहानियां भी हैं जैसे नलदमयंती की कथा.

को आवश्यकता के अनुसार काटछांट कर यह पैबंदबाजी से प्रस्तुत होती थी? इस का कोई उत्तर विद्वानों के पास नहीं था, होता तो वह कपोलकल्पना मात्र होती.

शताब्दियों तक रचना कार्य जारी

इस संबंध में यह स्मरण रखना चाहिए कि महाभारत में मूल रूप में सात या आठ हजार श्लोक थे. स्वयं महाभारत यानी एक लाख श्लोक वाले वर्तमान महाभारत के अनुसार, महाभारत की रचना में तीन स्तर आए. कई शताब्दियों तक रचना का यह क्रम जारी रहा. दूसरे शब्दों में शताब्दियों का ज्ञान (साथ ही अज्ञान) इस में जुड़ता रहा. यह जोड़ने का काम द्वितीय शताब्दी तक हो चुका था. हा बाद में भी कुछ गड़बड़ चलती रही. यह लेख लिखतेलिखते यह समाचार मिला है कि पुणे के वेद विद्वानमंडल के डा. पी.वी. वतेक ने महाभारत की घटनाओं पर

का युद्ध 16 अक्तूबर 5562 ई.पू. के दिन शुरू हुआ था. उन का यह भी दावा है कि व्यास को युरेनस, नेपच्यून और प्लूटो ग्रहों का पता था.

कुछ विद्वानों, जैसे विद्यानिवास मिश्र का मत है कि महाभारत एक बीज से उत्पन्न एक विशाल वृक्ष है और इस की शाखाएं हर दिशा में तथा जड़ें नीचे फैलती रही हैं. उन का कहना है कि काव्य के सौध का बीज एक है, तना एक है, मुख्य शाखाएं सुपरिभाषित और सुविकसित हैं. वह कहते हैं कि शताब्दियों के दौरान जो कुछ जोड़ा गया, केंद्रीय विचार के द्वारा अनुप्राणित हो कर जोड़ा गया. विद्यानिवास मिश्र के अनुसार, जनता किसी प्रक्षिप्त सामग्री को, जब तक कि वह मूल सामग्री से मेल न खाती हो, बरदाश्त नहीं कर सकती थी या पचा नहीं सकती थी.

क्योंकि वह हर समय कथा सुनती रहती थी और उस में यह तमीज थी कि क्या सही है और क्या गलत है.

इस संबंध में यह द्रष्टव्य है कि शताब्दियों तक (लगभग एक हजार वर्ष तक) जो लोग अपने श्लाकों को महाभारत में घुसेड़ते रहे, उन्हें इतने से ही संतोष रहा कि उन की रचना राष्ट्रीय स्तर के महाग्रंथ में चालू रहे. वे अपने वैयक्तिक अमरत्व के प्रत्याशी नहीं थे. वे अपने नाम को नहीं, अपनी रचना को अमर देखना चाहते थे. विंटरनित्ज से ले कर हाल ही में एकत्रित हुए विद्वानों में से किसी ने इस पर रोशनी नहीं डाली कि ऐसा लोगों ने क्यों किया. उन्हें इस से कौन सा सुख मिला. एक कारण तो यह हो सकता है कि उन्होंने इस तरह महाभारत की समसामयिकता कायम रखी.

विद्यानिवास मिश्र का यह अनुमान है कि केवल प्रासंगिक सामग्री ही जोड़ी और पचाई जाती थी, यह सही नहीं लगता. महाभारत वर्तमान रूप में भानमती का पिटारा या कल्पवृक्ष है, जिस में चतुर व्यक्ति किसी भी स्थिति के लिए समर्थन या विरोध के श्लोक निकाल सकता है. यह एक मिथक है कि महाभारत से एक ही आवाज निकलती है. इसीलिए बहुत से पाश्चात्य चिंतक यह कहते हैं कि हिंदू धर्म कोई धर्म ही नहीं है. यह एक तरफ शायद हिंदू धर्म की ताकत है तो दूसरी तरफ कमजोरी भी है. 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी.' वह कुछ बात क्या है? हर स्थिति को पचा कर चालू रहना, यह एक गुण है.

जहां सब मानते हैं कि महाभारत एक व्यास की रचना नहीं है, शताब्दियों तक इस की रचना जारी रही, वहीं एक प्रबल मत यह भी है कि अंततोगत्वा इसे एक व्यक्ति ने कलात्मक और उपदेशात्मक दृष्टि से संपादित किया. सिलवां लवी, सोरेनसेन, बार्थ इसी मत के हैं, तो दूसरी तरफ ओल्डेनबुर्ग ने इसे साइंटिफिक मांस्ट्रोसिटी यानी वैज्ञानिक लगने वाली किंभूतकिमाकार रचना माना है.

महाभारत की विचारधारा भी गड़बड़

डाक्टर डांडेकर बड़े जोर के साथ यह कहते हैं कि वर्तमान रूप में महाभारत कतई एक एकीभूत, सुसंन्यस्त, तारतम्ययुक्त रचना नहीं है. एक अजीब तथ्य यह है कि महाभारत के पर्वों के नाम कौरव सेनापतियों के नाम पर हैं. यह भी कहा गया है कि मूल रूप में महाभारत में कौरवों की विजय दिखाई गई थी. बाद में बदल गया. कौरववंश पुराना है. फिर भी पांडव आगे आते हैं क्योंकि वे कृष्ण के धर्म, कृष्णवाद को ब्रह्मैकत्वज्ञानकर्मयोग की जगह लोकसंग्रह को ले कर सामने आते हैं.

कृष्णवाद का व्यावहारिक रूप भीष्म, द्रोण, कर्ण, दुर्योधन के वध में प्रकट हो जाता है. कृष्ण की हिदायत से वे जिस रूप में मारे जाते हैं, वह स्पष्ट रूप से क्षात्र धर्म नहीं है. अवीरजनोचित है. यह डांडेकर को भी मानना पड़ा. कृष्ण का यह धर्म मोक्षकेंद्रिक उतना नहीं जितना अर्थकामकेंद्रिक यानी ऐहिक है. महाभारत के अंदर (घुसेड़ी गई) गीता में कृष्ण का सार, दर्शनशास्त्र आ

जाता है, पर क्या गीता में एक ही मतवाद की वकालत है या कई मतवादों का कोशीय विवेचन है? यह भी एक प्रश्न है.

हिंदी भाषी क्षेत्रों में रामायण (तुलसीकृत) का खूब प्रचार हुआ, पर भारत के अन्य प्रदेशों की तरह यहां महाभारत उतना लोकप्रिय नहीं हुआ. क्या उस के पीछे यह विश्वास है कि महाभारत घर में रहे तो लड़ाई होगी? यह भी एक प्रश्न है जिस का उत्तर चाहिए.

महाभारत में मूल कहानी के अतिरिक्त कई संयोजित कहानियां हैं, जिन्हें येनकेन प्रकारेण कौरवपांडव युद्ध के साथ पिरोया गया है. परशुराम द्वारा संसार को निःक्षत्रिय करने की कहानी एक मजेदार कहानी है. ययाति के उपाख्यान में देवयानी और ययाति की कहानी है. च्यवनसुकन्या की कहानी भी रोचक है. सुकटकर के अनुसार ये कहानियां मूल कहानी से बिलकुल कटी हुई हैं. अन्य ऐसे उपाख्यानों में शकुंतलादुष्यंत (जिसे बाद में कालिदास ने अमरत्व दिया), नलदमयंती, सत्यवानसावित्री, मत्स्योपाख्यान हैं. महाभारत में पंचतंत्र की कई कहानियां हैं. राजा शिवि द्वारा कबूतर की रक्षा एक लोकप्रिय कहानी है.

शांत रस की रचना

फिर भी नौवीं शताब्दी के कशमीरी आलोचक आनंदवर्धन यह मानते थे कि हरिवंश सहित महाभारत शांत रस के द्वारा एकीभूत महाकाव्य है. उन का कहना है यद्यपि महाभारत के प्रारंभ में सब रसों का समन्वय है, पर शांत रस ही मुख्य रस है और पुरुषार्थ के रूप में मोक्ष ही प्रतिपादित विषय है. महाभारत को जिन लोगों ने निष्पक्ष हो कर पढ़ा है, वे शांत रस वाली व्याख्या नहीं मान सकते. महाभारत को इस तरह सीमित कठघरे के रूप में देखना एक अंधभक्त के लिए भले ही संभव हो, सत्य इस के विपरीत है. इस में सभी रसों की स्थितियां हैं. तभी शताब्दियों से भास, कालिदास, जयदेव से ले कर रवींद्र, मैथिलीशरण तक उस में से न मालूम क्याक्या निकाल कर पाठकों को परोसते रहे हैं.

त्याग

हथियारों का सच्चा त्याग तब तक संभव नहीं हो सकता, जब तक दुनिया के राष्ट्र एकदूसरे का शोषण करना बंद नहीं करते. —महात्मा गांधी

डा. मुकुंद माधव शर्मा के अनुसार महाभारत में जनकल्याणकारी राज्य प्रतिपादित है, पर यह भी एकदेशीय अत्युक्ति है. महाभारत में विशुद्ध सामंतवाद प्रतिपादित है. ऐसे एकाध श्लोक से कुछ नहीं बनता, जैसे,

प्रजा यस्य विवर्धन्ते सरसीव महोत्पलम्,
स सर्वफलभाग् राजा स्वर्गलोके महीयते.

यानी जिस राजा की प्रजा सरोवर में कमल की तरह खिलती है, वह राजा सब फलों का भागी हो कर स्वर्ग में जाता है.

भीष्म अपनी शरशय्या से ऐसा उपदेश देते हैं कि राजा प्रजा का हित करे, उस तरह जैसे गर्भिणी अपनी गर्भस्थ संतान का हित चाहती है. महाभारत में यह भी कहा गया है कि राष्ट्र में न तो भिखमंगे हों न दस्यु हों. एक श्लोक में कहा गया हैं.

संविभाज्य यदा भुंक्ते
नृपतिर्दुर्बलम् नरान्
तदा वंति बलिना
स राज्ञः धर्म उच्यते.

यानी जब राजा दुर्बल नरों के साथ बांट कर भोग करता है, तभी राजा धर्म पर चलने वाला समझा जाता है. पर जैसा हम कह चुके हैं, यह केवल कथन तक सीमित है. कसौटी तो यह है कि व्यवहार में क्या होता रहा. वसुधैव कुटुंबकम् की डफली बजाते हुए भी छुआछूत और जातपांत पौराणिक हिंदू धर्म के अंग बने रहे, स्त्रियों के साथ अन्याय जारी रहा, सतीप्रथा कायम रही, मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण होता रहा.

क्रमशः

एक बेचारी की जीत

कहानी • आदर्श मलगूरिया

दरवाजे पर होता धीमा सा 'ठकठक' का स्वर सुन कर निधि चौकन्नी हो उठी.

पंखे की एकरस 'घूंघूं' से अम्मां की आंख लग गई थी. वैसे भी वह सवेरे से काम में जुटी रहतीं, दोपहर को सोने को न मिलता तो शाम तक उन का सिर दुखने लगता था. भैया, दीदी अपनेअपने कमरों में बंद थे. पंजों के बल चलती वह दरवाजे तक जा पहुंची.

फिर हलका सा अस्पष्ट संकेत आया. उस ने सावधानी से पीछे घूम कर देखा और फिर दरवाजे की कुंडी खोल कर बाहर आ गई. किसी की भी नींद में खलल न पड़ा था.
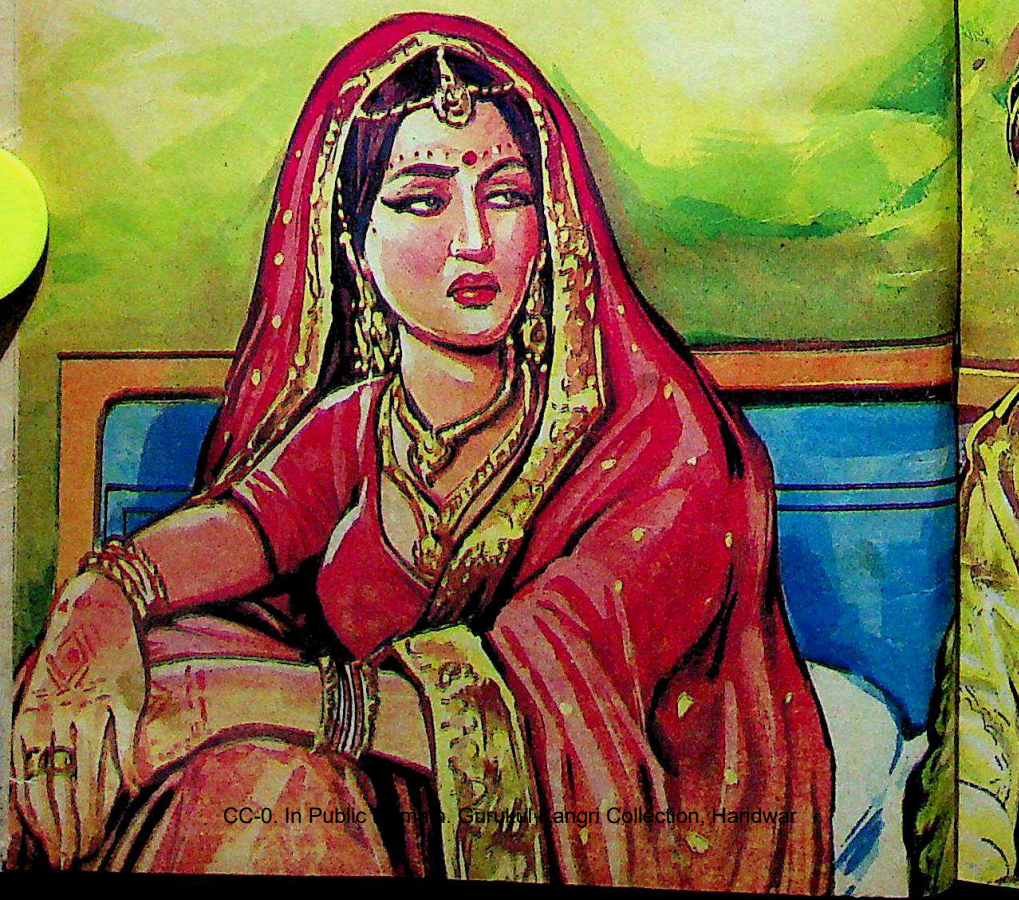
दरवाजे के बाहर की अंधेरी सीढ़ियां. सभी बच्चे चोरों की तरह उतर आए. बाहर सड़क पर आ कर चिलचिलाती धूप में आंखें चौंधिया गईं. ठीक दोपहर के दो बजे की तपती लू भरी गरमी, सभी बच्चे मौका पा कर पूर्वनिश्चित योजना के अनुसार अपनेअपने घरों से निकल आए थे. कुछेक तो

बिना कुछ कहेसुने कालीकलूटी निधि का विवाह ऐसे आदमी से कर दिया गया जिस से उस की बहन की शादी होनी थी. घर में जबरदस्ती बहू बन कर आई निधि सब के ताने सहती रही. लेकिन एक दिन उस ने अपनी उजली छवि दिखा ही दी.
पति का प्रेम भी निधि के हिस्से में न आया. एक कमरे में रात बिताने पर भी दोनों अजनबी थे.
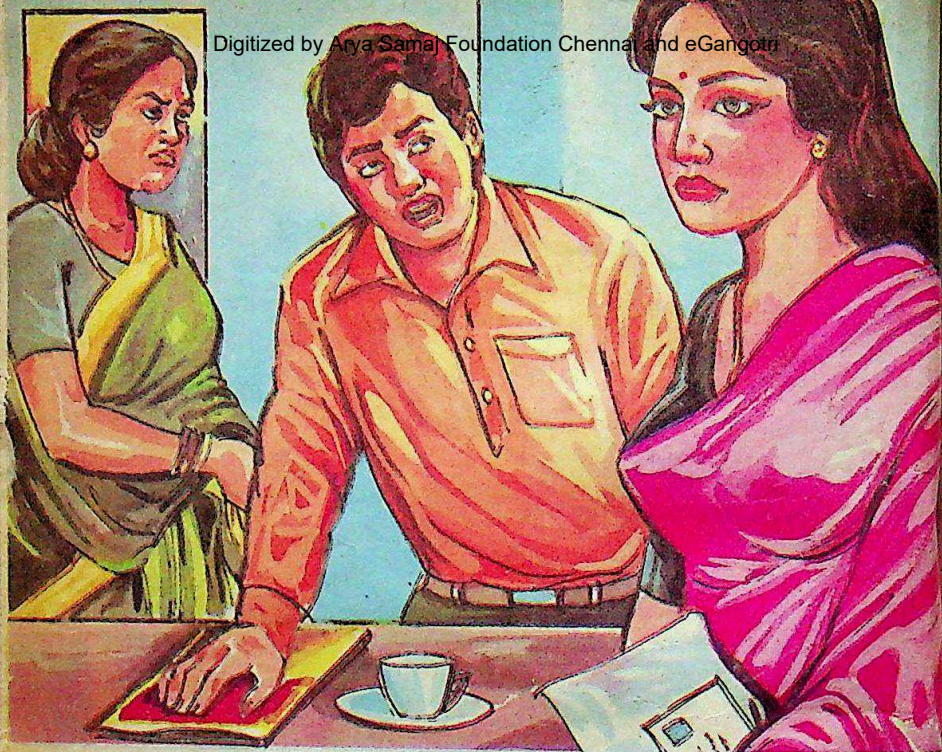
"जब स्वयं ही तय कर लिया है तो हम से क्यों पूछ रही हो." निधि द्वारा नौकरी के साक्षात्कार के लिए बुलावा आने पर पूछे जाने पर वीरेंद्र ने कहा तो सास ने भी मुंह बनाया.

पकड़े जाने के डर से नंगे पांव ही भाग आए थे. अब तपती जमीन पर पैर जलते तो चट से एक उठा कर दूसरा नीचे रखते, पर जब वह भी जलने लगता तो तड़प कर पहला ही नीचे रख देते. इस पर भी वे कितने प्रसन्न व उत्साहित थे.

मिलिटरी बैरकों के पीछे वाले आम के घने पेड़ों के नीचे खेलेंगे, टपकी हुई कच्ची अमियां इकट्ठी कर के चटनी बनाएंगे, नदी में नहाएंगे. कितने ही ऐसे अनगिनत खेल, जिन के लिए बड़ों की अनुमति मिलना कभी भी संभव नहीं थी.

आम के पेड़ों की छांव में खेलते कब समय बीत गया, पता ही न चला. अमियां उठा कर सब ने अपनीअपनी झोलियों में भर लीं. नदी किनारे जा कर साफ पत्थरों पर पीसेंगे.

जमीन जल रही थी, पर रावी का पानी फिर भी ठंडा था. कपड़ों समेत ही सभी पानी में कूद पड़े. उस बंदर टोली में पांच से दस वर्ष की आयु तक के नमूने रहते थे, जो मौका पा कर दोपहर को ऐसे ही दुस्साहस के काम किया करते थे. कपड़े भीगने की किसी को चिंता न थी क्योंकि वे तो पानी से बाहर निकलते ही गरमी व हवा से सूख जाते थे.

तभी आंधी आने के आसार दिखाई देने लगे. हवा, रेत भरे हाथों को झुलाती पगलाई सी दौड़ने लगी. दूर नदी के पार, धूल का बवंडर तेजी से गोलगोल घूमता ऊपर को उठ रहा था.

"भागो, भागो, बगूला भूत भुताना"

चिल्लाते सभी बच्चे सिर पर पांव रख कर भागे. उन के अंधविश्वास के अनुसार

उस गोल घूमते घेरे के अंदर कथित भूतनी रहती थी.

निधि बीच धार में तैर रही थी. जब तक वह तट पर पहुंची, सभी बच्चे दूर जा चुके थे. "विपिन, बबली...जरा मेरे लिए ठहरो..." रुंधे से स्वर में निधि ने आवाज लगाई.

"तुझे क्या डर है, कालटो? चुड़ैल तो तुझ से भी डर जाएगी," पिंकी पलट कर चिल्लाई.

निधि की रुलाई फूट पड़ी. माना उस का रंग काला था पर इस का मतलब यह तो नहीं था कि उसे चुड़ैल को खाने को अकेला छोड़ दिया जाए. आंसू भरी आंखों से रास्ता भी न सूझ रहा था. कांटों भरी कीकर की झाड़ी से उलझ कर वह तपती रेत में गिर पड़ी और जलन से बिलबिला उठी.

तभी जलती धरती पर ठंडी धार सा गिरता मृदु स्वर आया और उसे खींच कर उठाता वह हाथ बढ़ा, "उठो निधि, जल्दी करो... तेज आंधी आ रही है."

पनीली आंखों को झपका कर उस ने देखा, वह रवि था उन के ऊपर वाले घर में रहने वाला.

उस ने भय से कांपते हुए आशंका व्यक्त की, "कहीं भूत हमें पकड़ न ले?"

"धत्त पगली, भूतवूत कहां होते हैं. वह तो गरम हो कर हवा तेजी से ऊपर को उठ रही है और हवा के जोर से धूल गोलगोल घूम रही है."

"सच?" निधि की जान में जान आई.

हाथ पकड़े दौड़तेदौड़ते वे हलवाई की दुकान तक आ पहुंचे थे.

"फिर मुझे सब भूतनी सी काली क्यों कहते हैं, भूतनी तो होती नहीं?" निधि ने भोला सा प्रश्न किया.

"छोड़ यह सब बहस, ले बरफी खा." रवि ने दुकान से बरफी खरीद कर उसे खाने को दी.

सूखे खोए की कड़ी बरफी दांत से दबा कर तोड़नी पड़ रही थी, पर उस की मिठास अब तक कायम थी.

निधि आंसुओं में भी मुसकुरा उठी.

उस का सारा बचपन इसी तरह कभी तिरस्कार, कभी मां के दुलार व रवि के स्नेह का भार ढोते बीता था. छोटी व कमजोर होने के कारण मां उस का ध्यान भी ज्यादा रखती थी. ऊपर से करमजली काली. ब्याह भी कैसे होगा? बड़ी बेटी तो थी ही चांदनी रात में दूध का कटोरा. उस की क्या चिंता थी?

स्कूल में कैशोर्य भी इसी अपमान से आहत होता रहा, परंतु मेधावी व मेहनती होने के कारण अध्यापिकाओं में उस के प्रति जो स्नेह था, वही उसे उस कच्ची उम्र के झंझावात का सामना करने का साहस प्रदान करता रहा.

इस बीच निधि के घर पर एक ऐसी गाज गिरी जो सब का भविष्य और भी अंधकारमय कर गई. दीदी का रिश्ता पिताजी ने पक्का कर दिया था. वैसे भी इस बार वह बी.ए. में फेल हो गई थी. अम्मां खीजतीं, "पढ़ने का नाम नहीं, हर समय फिल्मी पत्रिकाओं और उपन्यासों में सिर घुसाए रखती है. फेल तो होना ही था."

जीजी का मन वाकई पढ़ने में कम,

तूफान

मेरी हर सांस में
संघर्ष का तूफान है,
उदधि की हर लहर में
गर्त का अरमान है,
जिंदगी में जयपराजय
की कोई बात नहीं,
शलभ की मौत तो
जीवन से महान है.

—नरेश गुप्त नीरस

फिल्मी नायिकाओं की तरह सजनेसंवरने में अधिक लगता था. कभी आशा पारेख की तरह बाल संवारती तो कभी सायरा बानो जैसे कपड़े बनवाती. केवल निधि को ही मालूम था कि वह छत पर पढ़ने के बहाने बैठती और सामने वाले शास्त्रीजी का बेटा कंकड़ पर चिट्ठी लपेट कर फेंक देता था.

पिताजी दीदी का रिश्ता अपनी जातिबिरादरी के घर में, अच्छी नौकरी पर लगे लड़के से पक्का कर के आए थे. खूब प्रसन्न थे क्योंकि सुंदरी कन्या के कारण उन्हें दहेज के दानव से भी छुटकारा मिल गया था. लड़के वालों ने गोराचिट्टा रंग देखा और शगुन में केवल चांदी का एक रुपया लिया.

शादी का दिन तय कर दिया गया. मां कपड़ों, गहनों की खरीदारी में मशगूल हो गई. गोटाकिनारी लगाने में उन्हें कहां होश रह गया कि बेटी रातों को तारे गिनगिन कर आहें भर रही है और सस्ते रोमांटिक उपन्यास की नायिका सी तकिए में मुंह छिपाछिपा कर रोती रहती है. कभी रोते देखा भी तो समझा कि मां का नैहर छूटने के दुख से मुरझा रही है.

उस गहमागहमी में किसी को होश न था, पता करे कि निधि का बी.एससी. का नतीजा निकल आया है. उसे बहुत अच्छे अंक मिले थे, पर घर में किसी ने उसे पूछा तक नहीं. कालिज तक ही उस की प्रशंसा व जयजयकार सीमित रह गई.

निधि छत पर उदास सी बैठी थी. मां ने चावल बीनने के लिए उस के सामने ढेर लगा दिया था. तभी छत फांद कर रवि आया. हाथ में मिठाई का डब्बा था. निधि का परीक्षाफल उसे पता चल गया था. आते ही उस ने उसे जोरदार बधाई दी. निधि के आंसू बह निकले. रवि ने उसे धीरज बंधाया, "रोती क्यों है पगली, यह तो खुशी का मौका है."

"मेरी खुशी से किसी को वास्ता ही कहां है?"

पासा पलट गया

एक बार मैं बस द्वारा दिल्ली जा रहा था. एक जगह जब बस रुकी तो बाहर से एक सज्जन ने मुझ से पूछा. "अंदर सीट है क्या?" उन का मतलब खाली सीट से था. लेकिन मैं ने मजाक के मूड में कह दिया, "जनाब, सीट तो है लेकिन खाली नहीं है." यह सुन कर वह एकदम झेंप गए.

किसी तरह अंदर आने पर भीड़ के बावजूद संयोग से उन्हें मेरे पास वाली सीट मिल गई. मैं ने उन से समय पूछा. वह बोले, "भाई साहब, आजकल बहुत खराब समय चल रहा है. किसी को किसी की फिक्र ही नहीं है."

अब झेंपने की बारी मेरी थी.

—अभय सिन्हा

*

कुछ दिन पहले हम सपरिवार रेलगाड़ी से आगरा जा रहे थे. रास्ते में एक सांवले रंग के सज्जन हमारे सामने वाली सीट पर आ कर बैठ गए. मेरे पति हिंदी का एक समाचारपत्र पढ़ रहे थे.

थोड़ी देर बाद औपचारिकतावश उन्होंने उन की ओर पत्र बढ़ाया तो वह अंगरेजी में बोले, "नहीं धन्यवाद. मैं हिंदी का समाचारपत्र नहीं पढ़ता." यह कह कर वह हिंदी भाषा और हिंदुस्तानियों पर व्याख्यान देते रहे.

मेरे पति तो यह सुन कर चुप हो गए. लेकिन सामने की सीट पर बैठे हुए दो नवयुवकों से राष्ट्रभाषा और राष्ट्र का यह अपमान बरदाश्त नहीं हुआ. उन में से एक युवक दूसरे से बोला, "यार, बड़े आश्चर्य की बात है. ये अंगरेज लोग काले कब से होने लगे हैं?"

दूसरे ने नहले पर दहला मारते हुए कहा, "इस में आश्चर्य की कौन सी बात है? क्या तुम ने हिंदुस्तानी गायों को अमरीकन बछड़े देते नहीं देखा है."

—सरोज भारद्वाज

किसी के दोस्त का स्वयं को मुहताज क्यों बनाती हो? अपने पैरों पर खड़ी होना सीखो. तुम्हारे कालिज में तो बी.एससी. को डिमांसट्रेटर की नौकरी भी मिल जाती है. तुम कोशिश कर के देखो. आर्थिक सहायता भी हो जाएगी. साथसाथ एम.एससी. भी कर लेना. मेहनत तो करनी पड़ेगी, पर फल मीठा मिलेगा.'' रवि ने सुझाया.

निधि को भी उस की बात अच्छी लगी. अगले ही दिन उस ने कालिज के प्रिंसिपल व प्रबंधक से बात की. उन्होंने उसे आवेदन पत्र देने को कह कर नौकरी देने का आश्वासन दिया.

शादी का दिन भी आ पहुंचा. सवेरे ही दीदी को हलदीचंदन का उबटन मल कर 'सांद' की रस्म की गई. गोरा रंग निखर कर कुंदन सा दमकने लगा. शाम को जब उसे गोटे जड़ा लाल जोड़ा पहनाया गया तो लगा जैसे कोई राजरानी हो. केवल निधि जानती थी कि मेहनत से किया गया बनाव शृंगार आंसुओं से धुल जाना है.

दरवाजे पर बरात का भंगड़ा नाच किया जा रहा था. शोरशराबा, नाचगाना, पानसुपारी, पेय, काजू आदि पेश किए जा रहे थे. दहेज से बची रकम बाबूजी बरात की खातिरदारी पर खर्च कर रहे थे.

आदमियों की मिलनी की रस्म हो गई, सेहरा भी पढ़ा गया. घर की सारी लड़कियां, औरतें दुलहन को छोड़ कर छत से बरात का तमाशा देख रही थीं.

'जयमाला' का समय आ पहुंचा. दुलहन को लेने जब औरतें कमरे में पहुंचीं तो वह खाली था. घर का कोनाकोना छान मारा गया. छत, सीढ़ी, स्नानघर कहीं भी तो नहीं थी. मां को बेहोशी का दौरा पड़ गया.

काफी खोज के बाद छत की मुंडेर के पास चांदी की एक पायल मिली, जो शायद दीवार फांदते समय दुलहन के पैरों से निकल गई होगी.

मौसी ने अंदर अकेले में बुला कर निधि के पिता को सारी बात बताई. वह वहीं सिर पकड़ कर ढेर हो गए.

''जीजाजी, हौसला रखो. इस वक्त कुछ न किया तो उम्र भर सिर उठाना कठिन हो जाएगा.''

मौसी ने धीरज बंधाया. उस पिता के दुख का कहां अंत, जिस की बेटी ऐन शादी के समय भाग जाए. मौसी ने ही हल बताया, ''समधी को अंदर बुला कर सलाह कर लो. निधि तो है ही घर में. दे दिला कर बात तय हो जाए तो अच्छा है.''

मौसी की बात सुन कर पिता को संभालती निधि चौंक पड़ी, ''यह कैसे हो सकता है?''

पर उस समय निधि की कौन सुनता. वर पक्ष के बड़ेबूढ़ों को भीतर बुलाया गया. पूरी बात मालूम होने पर वे भड़क उठे. वर के पिता तो उसी समय बरात लौटा ले जाने पर उतारू हो गए.

घर के बड़ों ने ही समझाया, ''अब दुलहन के बिना बरात ले जाने पर हमारी भी कम खिल्ली नहीं उड़ेगी. लड़के ने कितनी लड़कियां देखदेख कर अस्वीकार की हैं, अब उन लोगों को शहर में क्या मुंह दिखाओगे? उम्र भर का उपहास सहना पड़ेगा. फिर दूसरी जगह बात जमती भी नहीं.''

वर के पिता सहज हो कर बैठ गए. बात तो ठीक थी. विवाह टूटने पर लड़के वालों का भी कम अपमान नहीं होता. तय किया गया कि चुपचाप 50 हजार की रकम तय कर के निधि को ही भांवरे डलवा दिए जाएं. फिर बाद की बाद में देखी जाएगी. अभी तो नाक बचे.

वासना

विषय वासना नीति, ज्ञान और संकोच किसी से रोके नहीं रुकती. उस के नशे में हम सब बेसुध हो जाते हैं.

—प्रेमचंद

मौसी दहेज के कपड़ों में से एक भारी साड़ी निकाल लाई. "चल तो, निधि. आज तेरे दिन फिर गए. नहीं तो तेरा पार भी लगना कठिन था."

मौसी ने सजाने का उपक्रम किया.

"नहीं, मुझे अपने दिन खुद फेरने है. इस तरह किसी के बदले में बिक कर उम्र भर जलते रहने की मेरी कतई इच्छा नहीं."

निधि का उत्तर सुन सभी अवाक रह गए, 'दिमाग तो सही है इस छोकरी का.'

मौसी ने समझायाबुझाया पर, निधि अपनी बात पर अड़ी रही. 'शादी करेगी तो दहेज के बिना, नहीं तो कुंआरी रह कर जीवन बिता देगी. वर के पिता भी सिर खुजा रहे थे.

आखिरकार दहेज की रकम लिए बिना ही शादी के लिए राजी हो गए. वैसे भी 50 हजार की रकम थी किस के पास?

लाल साड़ी पहनते समय निधि सोच रही थी, 'एक लचुका था. द्वाराचार कर के उसे भीतर ले जाया गया. बहू के रूप के चर्चे तो पहले ही काफी हो चुके थे. इसी लिए लगभग सारे शहर की औरतें दुलहन की डोली की अगवानी को पहुंची हुई थीं. देहरी पर तेल चुआ कर उसे लाड़ से ननद व सास भीतर ले गई.

जब तक निधि का बस चला, उस ने लंबा घूंघट खींचे रखा, पर कब तक? वेदी पर बैठा कर घूंघट खुलवाने की रस्म पूरी की गई.

"गरमी में हलकान हो रही होगी, भाभी अब सब मर्द चले गए, घूंघट हटा लो," कहते हुए ननद ने गोटे की किनारी का जाल हटाया. पल भर में सब को जैसे बिच्छू डंक मार गया. बाहर की औरतों का मन खुशी से बागबाग हो गया. निधि की सास रामप्यारी अपने दबंगपने के लिए मशहूर थी. सैकड़ों लड़कियां साधारण सूरत के कारण अस्वीकृत कर चुकी थी. 'चांद सा टुकड़ा' बहू लाने की बात कह कर उस ने अपने कई आलोचक भी पैदा कर लिए थे. अब औरतें मौका क्यों चूकतीं. दबे स्वर में किसी ने फब्ती कसी, "दुलहन आई, देखने का चाह, घूंघट उठाया तो काली स्याह."

सब शगुन दे कर हंसती, ठिठोली करती चली गईं. घर में जैसे मातम सा छा गया. विस्तार से पूरी बात सुन कर रामप्यारी ने माथा पीट लिया, "हमारा तो मुंह काला हो गया. ऐसा जगमगाता घर और ऐसी काली लड़की. कई घरों से भारी दहेज के साथ प्रस्ताव आ रहे थे, पर अब गोबर के ढेर पर ही गिरे."

बहू भी बिना तिलकदहेज के धौंस से आई थी, वह भी अपनी शर्तों पर. अब 'होनी' को मान कर संतोष कर लेने के सिवा दूसरा क्या रास्ता था? आंचल उघाड़ने से अपना ही पेट नंगा होता है. बिरादरी में अपना मानसम्मान तो बचाना था.

शादी की दावत में सारे शहर को बुलाया गया और रामप्यारी ने बढ़चढ़ कर सब के सामने कहा, "रंगरूप तो चार दिन का खेल है, गुण ही जीवन भर साथ देते हैं."

शादी की गहमागहमी समाप्त हुई. रिश्तेदार विदा होने लगे. पर जबरदस्ती थोपी गई दुलहन को कौन स्वीकार करता है.

मछलियों का मानव प्रेम

पिछले दिनों जोहांसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) में तीन व्यक्ति समुद्र तट से एक किलोमीटर की दूरी पर नौका चलाने का आनंद ले रहे थे, तभी मौसम की खराबी की वजह से उन की नाव पानी में डूब गई. दो व्यक्ति समुद्र में डूबनेउतराने लगे तथा तीसरा व्यक्ति नाव पकड़े रहा. पानी के अंदर रह रही शार्क मछलियों ने उन के प्राण लेने की बहुत कोशिश की परंतु डालफिन मछलियों के मानव प्रेम के कारण वे व्यक्ति समुद्र तट तक पहुंचने में सफल हो गए.

निधि के पति वीरेंद्र ने नैनीताल के एक होटल में आरक्षण करा रखा था, वह भी रद्द करा दिया. हनीमून उपहास का विषय बन कर रह गया.

दस दिन बाद नई बहू से खाना बनवाने की रस्म थी. निधि ने शौक से सारा खाना बनाया, मटरपनीर, गुझियां, पुलाव, रायता व कचौरी. साथ में सेंवई की खीर भी. सब ने उंगलियां चाट के खाया. बड़ी बूआजी ने उदार हो कर टिप्पणी भी कर दी, "रामप्यारी, बहू का रंगरूप जो भी हो, अब उम्र भर बनाबनाया स्वादिष्ट खाना मिलेगा तुम्हें."

सास नाकभौं सिकोड़ कर रह गई, "हमें कौन बावर्चिन लानी थी."

खाने के बाद खीर परोसी गई. पर एक चम्मच मुंह में डालते ही सब थूथू करने लगे. नमक से कड़वी जहर हो रही थी. सब किया कराया मिट्टी में मिल गया. निधि की ननद सुधा मुंह में आंचल ठूंस कर जोरों से हंसने लगी, "लो अम्मां, चीनी की बचत हो गई."

निधि की समझ में नहीं आ रहा था कि अच्छीभली खीर में नमक किस ने झोंक दिया. रोआंसी सी हो कर बोली, "मैं ने तो चख ली थी."

"लो और सुनो, अब हमें अपना जूठा खिलाएगी. दूध, मेवों की भी बरबादी हुई. जाने किस कुघड़ी में इन के घर नाता जोड़ने गए थे," सास बड़बड़ाती रही.

सुधा ही रसोई में मसाले, नमक देने बारबार आती जाती रही थी. जरूर यह उसी की करतूत थी, पर सुबूत क्या था?

घर में निधि जबरदस्ती आई थी, कहीं न कहीं बदला तो निकलना ही था. पर वह अपनी सेवा के बल पर उन सब को बस में कर लेगी. सुधा यहां और साल दो साल रहेगी. बूढ़े सासससुर व पति एक दिन अवश्य उस के गुणों को सराहेंगे.

पति का वह प्रेम भी निधि को नहीं मिला, जिस के बल पर लड़कियां मायके को भी भुला कर नए परिवेश में रम जाती हैं. एक कमरे में रात बिताने पर भी दोनों अजनबी बने रहे थे. वीरेंद्र ने कभी उस की ओर हाथ बढ़ाया भी तो केवल दैहिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए. उस के बाद उस की पीठ ताकते ही निधि ने कई रातें काटीं. वह प्रेम नहीं, समझौता भी नहीं, केवल स्वार्थ था. साथ ही साथ एहसान की भावना भी.

कई बार इस तरह अपमानित हो कर निधि ने निश्चय कर लिया कि वह इस प्रकार अपना शोषण न होने देगी. रात को पलंग पर सोने के स्थान पर वह जमीन पर चादर बिछा कर सोने लगी. वीरेंद्र के हाथ कभी उस की ओर बढ़े भी तो उस ने उन्हें झटक दिया.

बहू के सारे कर्तव्य वह पूरे कर रही थी. तड़के ही जब सब सोए रहते थे, वह घर का कार्य समाप्त कर लेती. फिर ससुर के सैर कर के लौटने पर चायनाश्ता तैयार कर देती. बुढ़ापे में मृत्यु के भय से तथा वास्तविकता से समझौता कर के वह निधि के प्रति उदार भी हो चले थे. मायके में निधि ने कभी अपने प्रति दुर्व्यवहार की चर्चा तक न की.

एक बार अखबार में विज्ञापन देख कर निधि ने स्थानीय कालिज में साइंस डेमोंसट्रेटर की नौकरी की अर्जी दे दी. जब साक्षात्कार के लिए बुलावा आया तो उस ने सास व पति से पूछा.

"जब सब स्वयं ही तय कर लिया है तो हमें क्यों पूछ रही हो?" वीरेंद्र ने शुष्क स्वर में कहा.

"जाने दे, दिन भर इस की काली सूरत तो न देखनी पड़ेगी. साथ ही सुधा का दहेज भी जुट जाएगा." सास ने दबे स्वर में बेटे को समझाया.

बात ठीक भी थी. बाबूजी सेवानिवृत्त होने वाले थे. वीरेंद्र के वेतन से घर चलता था. बेटे के ब्याह में दहेज नहीं लिया, पर अब बेटी को तो देना ही पड़ेगा.

निधि को नौकरी मिल गई. स्वयं 50

रुपए रख कर वह सारा वेतन सास को सौंप देती. सवेरे कालिज जाने से पहले वह घर का काम निबटा कर दोपहर के लिए एकदो सब्जी बना देती. फिर सब को चायनाश्ता करा के कालिज जाती. सुधा के दहेज का सामान खरीदा जाने लगा था. इसी लिए सास अब कुछकुछ पिघलने लगी थी.

उस साल सुधा नईनई कालिज में गई थी. कई बार आतेजाते निधि ने उसे एक आवारा लड़के मदन के साथ आतेजाते देखा.

कई बार उस ने उसे समझाना चाहा, पर निधि की बात वह क्यों सुनती. घर में किसी से जिक्र करने का अर्थ था झूठी तोहमत लगाने का दोषी होना. इसी लिए निधि चुप ही रही.

अमावस्या की रात, आधी से अधिक जा चुकी थी. कमरे में धीमी आवाज सुन कर निधि की नींद टूट गई. कोई उस का सूटकेस खोल रहा था. शायद कोई चोर. निधि ने चिल्लाने का उपक्रम किया, पर तभी सड़क के लैम्प की धीमी रोशनी में उस ने सुधा को पहचान लिया. क्या वह उस के गहने चुरा रही है, जो 'लाकर' न मिलने के कारण अब तक घर में रखे थे.

सूटकेस बंद कर के सुधा दबे पांव बाहर चली गई. निधि उठ कर उस के पीछे हो ली. मां के कमरे में जा कर उस ने घर में रखी नकदी समेटी और फिर सब सामान छोटे बक्से में रख कर आंगन पार कर के ड्योढ़ी में आ गई. निधि के अनुमान के अनुसार मदन वहीं उस की प्रतीक्षा कर रहा था. वह फुसफुसाया, "ले आई सब. अब बंबई चल कर फिल्म बनाएंगे. तुम प्रसिद्ध हीरोइन बन कर लाखों में खेलना."

तभी निधि ओट से निकल आई. निधि को सामने देख कर सुधा सहम गई. वह गिड़गिड़ाई, "मुझे जाने दो भाभी, पिताजी कभी भी मदन से मेरी शादी न होने देंगे."

"शादी तो यह भी घर से भागी लड़की से न करेंगे," निधि ने कहा.

"हां, आप से ज्यादा इस बात को और कौन जानता होगा." मदन ने निधि की बहन पर व्यंग्य कसा, "आप चुपचाप चली जाइए, वरना मैं शोर मचा दूंगा कि मैं आप से बराबर मिलने आता हूं और अभी भी इसी लिए आया था."

निधि के पांव तले से जमीन खिसक गई. सुधा के सामने उस की बात कौन मानेगा. रोकना व्यर्थ था, पर फिर भी एक बार चेष्टा करने में क्या हर्ज था.

"देखो, तुम लोगों के जाते ही मैं पुलिस में खबर कर दूंगी. तुम पकड़े ही जाओगे. यदि रुपयागहने चाहते हो तो ले जाओ. सुधा को छोड़ दो. मैं किसी से कुछ न कहूंगी."

मदन कुछ देर तक सोचता रहा. फिर बक्सा ले कर दरवाजे की ओर बढ़ा,

सुधा ठगी सी रह गई. क्या यही था मदन का सच्चा प्यार, जो जरा सी दौलत पर ही बिक गया था.

"मुझे माफ कर दो, भाभी. तुम्हारे समझाने पर भी मेरी आंखें न खुलीं. आज तुम्हारे सब गहने भी चले गए."

"गहने फिर भी बन जाएंगे. तुम तो गलत रास्ते पर जाने से बच गईं."

निधि ने उसे ढाढ़स बंधाया. तभी ड्योढ़ी का दरवाजा भड़ाक से खुला और गहनों का बक्सा लिए वीरेंद्र भीतर आया. वह कुंडी बंद कर के हांफते स्वर में बोला, "दुष्ट भागा चला जा रहा था. मैं दीवार से कूद कर उस से छीन लाया. पुलिस के डर के मारे वह चूं तक न कर सका."

फिर सुधा व निधि को दोनों बाहों में घेर कर भीतर ले आया.

"मैं ने सब सुन लिया था. इसी लिए दीवार पर घात लगा कर बैठा रहा. अम्मांबाबूजी को कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है. चुपचाप जा कर सो रहो."

कमरे में आ कर निधि जमीन पर पड़ी अपनी चादर ठीक करने लगी. वीरेंद्र ने पलंग पर खींच कर उसे बाहों में भर लिया, "तुम्हारी जगह वहां नहीं, मेरे दिल में है. आज मैं ने जान लिया कि तुम्हारा दिल कितना सुंदर है." •

बहन
जाइए,
आप से
ी इसी
खिसक
कौन
ी एक
पुलिस
जाओगे.
. सुधा
ूंगी."
. फिर
ही था
नत पर
तुम्हारे
. आज
ुम तो
तभी
और
आया.
बोला,
वार से
डर के
ाहों में
लिए
रहा.
यकता
र पड़ी
ेंद्र ने
लिया,
में है.
दिल
•

अंत्येष्टि

कहानी • उमेशकुमार वार्सनिक
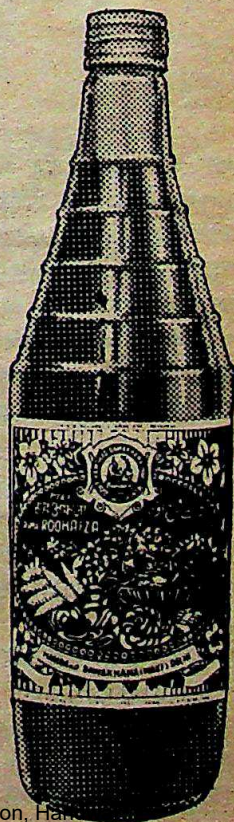
पहियों की घड़घड़ाहट में अचानक ठहराव आ जाने से शैला की ध्यान समाधि टूट गई. अपने घर, अपने पुराने शहर, अपने मातापिताजी के पास चार बरस बाद लौट कर आ रही थी. घर तक की तीन सौ किलोमीटर की दूरी, अपने अतीत के बनतेबिगड़ते पहलुओं को गिनते हुए कुछ ऐसे काट दी कि समय का पता ही न चला.

पूरे दिन गाड़ी की घड़घड़ और डब्बे में कुछ बंधेबंधे से परिवेश में बैठे विभिन्न मंजिलों की दूरी तय करते उन सहयात्रियों में शैला को कहीं कुछ ऐसा न लगा था कि उन की उपस्थिति से वह जी को उबा देने वाली नीरस यात्रा के कुछ ही क्षणों को सुखद बना सकती. हर स्टेशन पर चाय, पान और मौसमी फलों को बेचने वालों के चेहरों पर उसे जीवन में किसी तरह झेलते रहने वाली मासूम मजबूरी ही दिखाई देती थी.

शैला घर जा रही थी. यह भी शायद उस की एक आवश्यक मजबूरी ही थी. चार साल से हर लंबी छुट्टी में वह किसी न किसी पहाड़ी स्थान पर चली जाती थी. इसलिए नहीं कि वह उस की आदी हो गई थी, पर शायद इसलिए कि उसी बहाने वह अपने घर न जाने का एक बहाना ढूंढ़ लेती थी क्योंकि घर पर सब के साथ रह कर भी तो वह अपने मन के रीतेपन से मुक्ति नहीं पा सकती थी. घर के लोगों के लिए भी शायद वह अपने में ही मगन, किसी तरह जिंदगी का भार ढोए जाने वाली एक सदस्या बन कर रह गई थी.

25 वर्ष पहले एम.एससी. की पढ़ाई पूरी कर के शैला एक वर्ष के लिए विदेश में रह कर प्रशिक्षण भी ले आई थी. भारत लौटते ही उस की मेधा में डा. रजत जैसे

पति की मृत्यु के बाद शैला के सूने जीवन में आशा की किरण बन कर आया परेश, उस के बड़े भाई का बेटा. शैला ने परेश के लाड़प्यार में कोई कमी नहीं की लेकिन क्या परेश उसे मां का सम्मान दे सका?

होनहार सर्जन की मेधा का मेल विवाह के पावन बंधन ने कर दिया था. सब कुछ मिला शैला को— प्यार, अपनत्व, विश्वास, सम्मान और रजत पर अपना संपूर्ण एकाधिकार.

27 वर्ष की आयु में ही डाक्टरी की कई उपाधियां ले कर रजत विदेश से लौटा था.

शैला साल भर भी अपने जीवन के उन सुखद क्षणों को अपनी खाली झोली में भर कर संजो न पाई थी कि डाक्टर हरीश के यहां से डिनर से लौटते हुए रास्ते में कार दुर्घटना, और फिर अंतिम क्षणों में रजत का शैला के हाथ को मुट्ठी में जकड़ कर चिरनिद्रा में सो जाना शैला कभी भी नहीं भूल सकती थी.

परेश का पत्र पढ़ कर शैला की आंखों से आंसू गिरने लगे, उस ने महसूस किया कि परेश की इन भावनाओं के लिए वह स्वयं जिम्मेदार है.

हर सफल आपरेशन के बाद रजत के चेहरे की चमक और स्नेहसिक्त आंखों से शैला को देख कर कहना, "शैला, तुम मेरी प्रेरणा हो," शैला के मन को कहां भिगो जाता, उस कोने को शैला शायद स्वयं अपनी खुशी के छिपे ढेर में ढूंढ़ न पाती.

तब से ले कर अब तक अपने सेवारत समय के 25 वर्ष शैला ने अपने हिसाब से तो बड़ी अच्छी तरह बिता दिए थे. इतना अवश्य था कि अपनी कठोर अनुशासन-प्रियता या कुछ व्यक्तिगत आदर्शों की आलोचना, कभी अपने ऊपर लगाए कुछ झूठे सामाजिक आरोप (जो कभी उस के चरित्र से जोड़ कर लगाए जाते थे) वह सुनती थी. फिर समय ही सब स्पष्ट कर के कहने वालों के मुंह पर पछतावे की छाप छोड़ देता था.

शैला का सब सुनना और सब झेल जाना, अब उस का स्वभाव बन गया था. घर पर कभीकभी आना आवश्यक भी हो जाता था.

चार बरस पहले छोटी बहन सोनी की शादी में आई थी. वह भी बरात आने के दो दिन पहले. सोनी की शादी के मौके पर ही छोटी भाभी ने पूछा था, "खूब पैसा जोड़ लिया होगा तुम ने तो शैला. क्या करोगी इतने धन का?"

शैला मुसकराई थी, "जोड़ा तो नहीं, हां जुड़ गया है सब अपनेआप."

किसी चीज की कमी नहीं थी उसे. उस के पास सभी भौतिक सुख के साधन थे और उस से बढ़ कर उस की सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मान था. पर जो कभी उस के रीते मन पर निरंतर हथौड़े की चोट करती थी.

उसे वह 'कभी' कह भी तो नहीं सकती थी. बचपन से ही उस ने बचपन का वह मस्त और आनंदपूर्ण रूप नहीं देखा था, जो अन्य भाईबहनों में था. कुछ ऐसे हालात रहे कि वह शुरू से ही हंसना चाह कर भी खुल कर हंस न सकी. नियमित, सीमित, अपनेआप से बंधा हुआ एक जीवन. कालेज में पढ़ती थी तो कभी अगर छोटा भाई उस की पेंसिल ले लेता था या 'डिसेक्शन बाक्स' से छुरी निकाल लेता था तो कभी दीदी का और कभी मां का यही स्वर सुनाई देता था, "देबू देख, अभी शैला आएगी, कैसी हायहाय मचा देगी."

शायद शैला की गंभीरता ने ही उस घर में आतंक फैला दिया था. देबू के मन में शैला के प्रति पहले भय उपजा और फिर वही भय पलायन और कालांतर में आंशिक घृणा में बदल गया था. ऐसा शैला कभीकभी अब महसूस करती थी.

देबू अब डा. देवेंद्र था. पर कभी उस ने शैला से खुल कर बातें नहीं की थीं. शैला चाहती थी कि देबू उस का पल्ला पकड़ कर उस से अपना अधिकार जताए और कहे, "दीदी, इस बार कशमीर घुमा दो."

"ऐसा सूट बनवा दो."

"कुछ खिलातीपिलाती नहीं." आदि.

फिर अब तो देबू भी बीवी वाला हो गया था. सुंदरसलोनी बड़े ही सरल मन की सुनंदा उस की पत्नी थी. शादी के कुछ दिनों बाद ही देबू ने सुनंदा से कहा था, "नंदा, दीदी की खातिर यही है कि इन का कमरा बिलकुल ठीक रहे, इन की कोई चीज इधरउधर न हो."

शैला के मन में कहीं चोट लगी थी. ठीक रहने को तो उस का खूबसूरत बंगला सवेरे से रात तक कई बार झाड़ापोंछा जाता था. उस के बगीचे के बराबर और कोई बगीचा पास में नहीं था. पर हर साल 'पुष्पप्रदर्शनी' में प्रथम पुरस्कार पाने वाले बगीचे के फूल क्या कभी उस के सूनेपन को महका सके थे?

ससुराल से उजड़ी मांग और सूने माथे पर सादी धोती का पल्ला डाल कर रोते वृद्ध ससुर के साथ जब वह मातापिताजी के सामने अचानक आ कर तांगे से उतरी थी तो उस के सारे आंसू सूख चुके थे. चेहरा गंभीर था. निस्तेज ठहरी हुई आंखें थीं और शैला

"क्यों रे परेश, मैं क्या इतनी बुरी हूं जो तू ने मेरी बहू को मुझ से छिपा कर रखा." शैला ने परेश से पूछा.
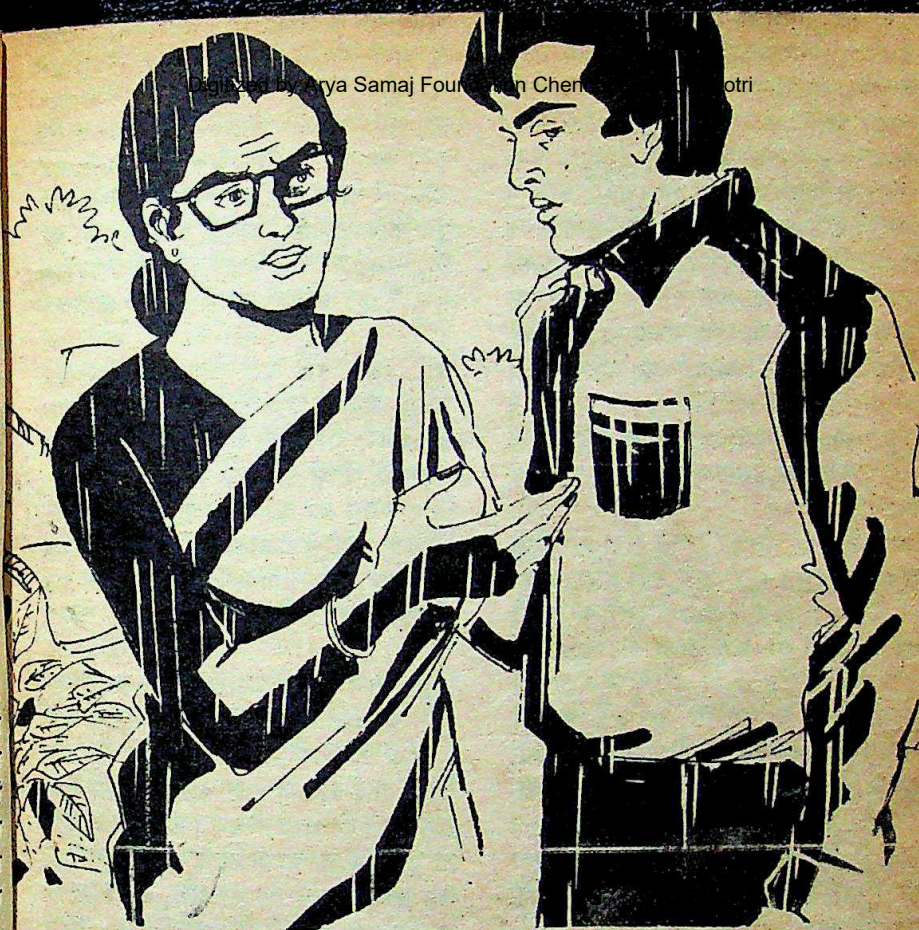
अपने कमरे में आ गई थी. वह एक वर्ष पहले छोड़े चिरपरिचित स्थान पर आ कर शांत हो कर बैठ गई थी, बस, ऐसे ही, जैसे एक यात्रा पर गई हो. उसी यात्रा में अपनी चिरसंचित निधि गंवा कर लौट आई हो.

फिर दूसरे वर्ष नैनीताल में साइंस कालिज की प्रिंसिपल हो कर चली गई थी. कुछ जीवन का खोखलापन और जीवन के प्रति विरक्तिपूर्ण उदासीनता में अगर कहीं आनंद की आशा और अपनत्व का कोई अंश था तो परेश.

परेश उस के बड़े भैया का बड़ा बेटा था. जबजब घर आई, परेश का आकर्षण उसे खींच लाया. जीवन के इतने मधुर कटु अनुभव ले कर भी अगर कहीं शैला ने अपने पूर्ण अधिकार का प्रयोग किया था तो वह परेश पर. घर वह आए या न आए, पर दूसरे क्लास की प्रगति रिपोर्ट से ले कर मेडिकल कालिज के तीसरे वर्ष तक का परिणाम उसे परेश के हाथों का लिखा निरंतर मिलता रहा था. उसी के साथ लगी हर पत्र में एक सूची होती थी—कभी सूट, कभी घड़ी और कभी पिताजी से छिपा कर दोस्तों को पिकनिक पर ले जाने के लिए रुपयों की मांग.

परेश का इस प्रकार मांगना और अंत में "बुआजी, अब्दुल के हाथ जल्दी भिजवा

देना' वाक्य शैला को अपनत्व की कौन सी सुखानुभूति दे जाता था, वह स्वयं नहीं जानती थी. मातापिताजी को अगर कहीं शैला के प्रति संतोष था तो वह परेश और शैला के इस ममतापूर्ण संबंध को देख कर.

घर जाती थी तो इधरउधर के हाल ले कर फिर भैयाभाभी और उस की परेश को ले कर विविध समस्या समाधान की वार्त्ता. वह क्या खाता था; क्यों उस के साथ घर के अन्य बच्चों सा व्यवहार होता था, जब वह शैला का एकमात्र वारिस था आदि.

कभीकभी मजाक में भाभी कहती थी "परेश तो बूआ का हकदार है, बूआ का बेटा है."

सुन कर शैला कितनी खुश होती थी खून का रिश्ता कभी झूठा नहीं होता, न ही हो सकता है. उस के गंभीर चेहरे पर खुशी की एक रेखा सी खिंच जाती थी, जिस साल परेश का जन्म हुआ था, उस के तीन साल के अंदर शैला ने घर के चारपांच चक्कर लगाए थे, कुछ अनुभवी प्रौढ़ महिलाएं दबी जबान से शैला से हंसहंस कर कहती थीं, "दीदी, भतीजा ऐसी जंजीर ले कर पैदा हुआ है, जिस का फंदा बूआ के गले में है. जरा सी जंजीर कसी और बूआजी चल पड़ती हैं घर की ओर."

और शैला के चेहरे पर आ जाता था गर्वीला ममत्वपूर्ण भाव. वह हलके से मुसकरा कर कहती, "बहुत प्यारा है मेरा भतीजा. घर जाती हूं तो पल्ला पकड़ कर पीछेपीछे घूमता रहता है." इस वाक्य के साथ ही शैला एक आनंद मिश्रित तृप्ति का अनुभव करती थी. तीन बरस के बच्चे को उस से कितना प्यार था!

जब से परेश बड़ा हो कर सफर करने लायक हुआ था, शैला उसे छुट्टियों में लगभग हर वर्ष अपने पास बुला लेती थी और भूल जाती थी कि वह अकेली है.

कभी परेश कहता, "बूआजी, आज तो पिक्चर चलना ही है, चाहे जो हो." तब शैला परेश को टाल न पाती.

अब तो परेश पूरे 24 साल का हो गया था. डाक्टरी के अंतिम वर्ष में था. शैला शुरू से जानती थी कि अगर वह मुंह खोल कर कह देती तो बड़े भैया व भाभी परेश को स्वयं आ कर उस के पास छोड़ जाते. पर कहने से पहले जाने क्यों मन के कोने में कहीं एक बात उठती, "अपनी गोद तो सूनी थी ही. भाभी से परेश जैसा प्यारा और होनहार बेटा ले कर उस के मन में सूनापन कैसे भर दूं."

इधर कई बार वह तैयार हो कर आती, भैया से कुछ कहने को. पर जहां बात का आरंभ होता, वह सब के बीच से हट कर स्नानघर में जा कर खूब रो आती. एक बार फिर रजत का वाक्य कानों में गूंज उठता, "शैला, कभी बेटा होगा तो उसे ऐसा अव्वल दरजे का सर्जन बनाऊंगा कि बाल चीर कर दो टुकड़े कर देगा."

कल्पना में ही दोनों जाने कितने नाम दे चुके थे अपने अजन्मे बेटे को. उन्हीं नामों में से एक नाम 'परेश' भी था. यह शैला के सिवा कोई नहीं जानता था. पर शैला के ये सब सपने तो शैला के रजत की मृत्यु के साथ ही टूट गए थे. भाभी को जब बेटा हुआ था, तब हस्पताल में ही भरे गले, भारी मन से अतीत के घावों को भुला कर, शैला मुसकराते चेहरे से भतीजे का नाम रख आई थी 'परेश'.

इस बार चार वर्ष बाद आई तो परेश में बड़े परिवर्तन पा रही थी. कुछ आधुनिकता का प्रभाव, कुछ बदलते समय को जानते हुए भी शैला ने परेश पर अपना वही अधिकार और अपनी पसंद के अनुसार परेश को ढलने के प्रयासों में कोई कमी न की. लंबाचौड़ा, खूबसूरत युवक के रूप में परेश शैला को स्टेशन लेने आया तो बस "हाय बुआ" कह कर उस के हाथ से सूटकेस ले लिया. भविष्य की कल्पना में खोई शैला को परेश का वह व्यवहार कहीं भीतर तक साल गया. कार पर बैठते ही बोली, "क्यों रे परेश, अब ऐसा आधुनिक हो गया कि बूआ

कर तेरी क्या खबर लेती हूं."

और शैला [illegible]पूर्ण अव्वल की गरिमा से खिलखिला कर हंस पड़ी थी. पर शायद वह परेश के चेहरे पर आतेजाते भावों को देख न पाई थी.

15 दिन की छुट्टी पर आई थी शैला इस बार. भैयाभाभी हर खुशी उसे देने को उतावले नजर आते थे. मातापिता थके हुए, पर संतुष्ट मालूम होते थे. शैला दिन भर मातापिता के साथ बगीचे में बैठ कर, कभी पीछे नौकरों के क्वार्टरों में जा कर बूढ़े माली, चौकीदार, महाराज सब का हाल पूछती तो कभी परेश से घंटों बातें करती.

परेश पास बैठता था, पर शाम होते ही अजीब सी बेचैनी महसूस करता था और किसी न किसी बहाने वहां से उठ जाता था.

जाने से पांच दिन पहले यों ही घूमतेघूमते शैला परेश के कमरे में पहुंच गई. पढ़ने की मेज पर तमाम किताबों, कागजों के बीच सिगरेट के अधजले टुकड़ों से भरी ऐश ट्रे थी. उस के नीचे एक मुड़ा रंगीन कागज रखा था. शैला ने उसे यों ही उत्सुकतावश उठा लिया. पत्र था किसी के नाम. लिखा था:

"सोनाली, तुम्हें मैं कितना चाहता हूं, शायद मुझे अब यह लिखने की कोई जरूरत नहीं. मैं जानता हूं, मेरे उत्तर न देने पर तुम कितना नाराज होगी. कारण बस यही है कि आजकल मेरी बूआजी आई हुई हैं, जो आज भी शायद 18 वीं शताब्दी के कायदेकानूनों की कायल हैं. उन के सामने अभी तुम्हारा जिक्र नहीं करना चाहता. बेकार में आफत उठ जाएगी. मातापिता की कोई चिंता नहीं. वह तो आखिरकार मान ही जाएंगे. अंत में अपनी ही जीत होगी. पर बूआजी के सामने कुछ कहने की अभी हिम्मत नहीं है मेरी.

"अब तुम ही समझ लो, ऐसे में कैसे तुम्हें घर ले जाऊं. पर वादा करता हूं कि उन के जाते ही मांपिताजी के पास तुम्हें ला कर उन्हें सब बता दूंगा और तुम्हें मांग लूंगा.

मुसकराहट

साल जाते रहें
साल आते रहें
आप गुलाबों की तरह
सदा मुसकराते रहें.
—शरदकुमार वर्मा

बूआजी के रहते हुए ऐसा संभव नहीं है. समझ रही हो न? फिर यों भी मुझे कुछ तो आदर दिखाना ही चाहिए. आखिर वह मेरी बूआजी हैं. मैं क्षत्रिय और तुम ब्राह्मण, वह जमीनआसमान एक कर देंगी."

और शैला वहीं पसीने में भीग गई थी. वह आंखों के सामने घिरते अंधेरे को ले कर कुरसी पकड़ कर किसी तरह बैठ गई थी. उस की आंखों के सामने, साड़ी का पल्लू पकड़ कर पीछेपीछे घूमने वाला परेश, फिर भविष्य की कल्पना में घोड़े पर चढ़ा दूल्हा परेश और जीवन की अंतिम घड़ियों में शैला की मृत्यु शैय्या के पास बैठा परेश अपने विभिन्न रूपों में घूम गया.

शैला वर्षों बाद स्नानघर में खड़ी हो कर रो रही थी. ऐसे ही, जैसे बड़े अरमानों और त्यागों से जीवन की सारी संचित निधि से बनाया अपना घर कोई ईंटईंट के रूप में गिरता देख रहा हो. दिमाग पर बारबार लोहे की गरम सलाखें चोटें कर रही थीं.

'आखिर, वह मेरी बूआजी हैं... बूआजी... बस, और कुछ नहीं.'

तभी शैला के मन का एक कोना प्रश्नवाचक चिह्न बन कर सामने आ गया.

उन भावनाओं के लिए? ठीक था, वह स्वयं अपने लिए अब [illegible] की रीतियों और कहींकहीं खोखले आदर्शवाद को भी स्वीकारती आई थी. पर इस का अर्थ यह तो नहीं था कि वह उन्हें इस पीढ़ी पर भी थोपती रहेगी. क्यों वह इतनी उम्मीदें रखती थी परेश से? क्या हुआ जो वह आधुनिक ढंग से पहनताघूमता था.

शैला अब सोचती थी कि शायद उस का उन छोटीछोटी बातों को गंभीर रूप देना ही उसे परेश से इतना दूर ले आया था वह क्यों नहीं सोचती थी कि समाज बहुत आगे आ चुका है. ब्राह्मण, क्षत्री जैसे जातीय भेदभाव को सोचना क्या शैला जैसी पढ़ीलिखी, अच्छे संस्कारों में पलीबढ़ी स्त्री को शोभा देता था? शैला समझौता करेगी उस स्थिति से. वह उस नई पीढ़ी पर हावी होने का प्रयास नहीं करेगी. पुरानी लकीरों पर चलती आई जिंदगी को नया मोड़ दे कर, वह परंपरागत रूढियों व मान्यताओं की अंत्येष्टि स्वयं करेगी.

रात को खाने के बाद उस ने परेश को बगीचे में बुलाया. ओस से भीगी घास पर टहलती शैला का मन प्रफुल्लित था. परेश आया और चुपचाप खड़ा हो गया. शैला का हाथ उठ कर सहज ढंग से परेश के कंधे पर टिक गया. आंखों में सारा लाड़ उमड़ आया. बोली, "क्यों रे, परेश, मैं क्या इतनी बुरी हूं जो तू ने मेरी बहू को मुझ से छिपा कर रखा? यह बता, क्या मुझ से अलग हो पाएगा? मैं जानती हूं, अपनी बूआजी के लिए तेरा सीना फिर धड़केगा. बता, कहां रहती है सोनाली? यों ही ले आएगा उसे? बेटे, मेरे मन की आग तभी ठंडी होगी, जब तू मुझे सोनाली के पास ले चलेगा. पहला आशीर्वाद तो मैं ही दूंगी उसे. तू शायद नहीं जानता कि मैं ने कितने अरमान संजोए हैं इन दिनों के लिए. मैं तेरी खुशी के बीच में कहीं भी ब्राह्मण, क्षत्री जैसी घटिया बात नहीं लाऊंगी."

और दूसरे दिन मेजर विक्रम के ड्राइंगरूम में भैयाभाभी और परेश के साथ बैठी शैला के सामने सौम्य, शालीन और सुंदर सी सोनाली ने प्रवेश किया. उस की मां ने उसे भाभी के सामने करते हुए उन के पैर छूने को कहा ही था कि भाभी ने सोनाली को बड़े प्यार से पकड़ कर शैला की तरफ करते हुए कहा, "इन का आशीर्वाद पहले लो. भले ही मैं ने परेश को जन्म दिया है, पर बेटा तो यह बूआ का ही है."

और शैला की आंखों से खुशी की ज्यादती से बहती आंसुओं की धारा उस के बरसों से जलते दिल को शीतलता देती चली गई.

परेश ने अपने पुराने दुलार भरे भाव से शैला को पकड़ते हुए इतना ही कहा, "बुआजी, आशीर्वाद दो कि तुम्हारे और अपने सब स्वप्न साकार कर सकूं."

शैला की सारी उदासी छिटक कर कहीं दूर जाने लगी. और दूर होतेहोते उस की छाया तक विलीन हो गई. वह देख रही थी. उस की कल्पना में मृतक पति डा. रजत की धुंधली छाया उभर आई. वह मुसकरा रहे थे. शायद कह भी रहे थे, "पुत्रवधू मुबारक हो शैली." ●

ल्त था.
हो गया.
परेश के
रा लाड़
, मैं क्या
मुझ से
से अलग
आजी के
ता, कहां
ा उसे?
गी, जब
. पहला
यद नहीं
ए हैं इन
में कहीं
त नहीं

क्रम के
के साथ
न और
की मां
के पैर
ली को
करते
तो. भले
बेटा तो

शी की
उस के
देती

भाव से
कहा,
और

क कर
ते उस
रही
रजत
सकरा
त्रवधू

मैं ने कहा सो गए?

कहानी • लाज ठाकुर

"अजी, सुनते हो. मैं ने कहा, सो गए हो?" लीना का स्वर हमारे कानों में किसी भोंपू की भांति गूंजा.

हम ने नींद से बोझिल पलकों को उठाने का असफल प्रयास किया. दफ्तर में छुट्टी के बाद जब हम घर के लिए चलने को थे तो साहब का बुलावा आ गया था. फिर उन का हुक्म मिला, "चूंकि कल लेखा परीक्षा दल आने को है, इसलिए दफ्तर का रेकार्ड संभाल कर रखना है."

रात को 8.30 बजे तक रेकार्ड को संभालतेसंभालते हम बेहाल हो गए थे. दफ्तर से बाहर आए तो सड़क पर जाने कितने घंटे स्कूटर, बस की प्रतीक्षा करते रहते, यदि कोई राहगीर हमें यह न बता देता कि बस तथा स्कूटर वालों में झगड़ा हो जाने के कारण 7 बजे से ही बस व स्कूटर वालों की हड़ताल हो गई थी.

एक तो काम की ज्यादती के कारण बेहाल, उस पर दफ्तर से घर तक पैदल सफर से हम थक कर चूर हो गए थे. सारा बदन दर्द कर रहा था. रोटी का ग्रास मुंह तक ले जाने को बारबार हिम्मत जुटानी पड़ रही थी. जी चाह रहा था कि खाने की थाली में ही लेट जाएं और सोतेसोते खाते रहें, बड़ी मुशकिल से भोजन समाप्त कर के हम ऊंघतेढलते पलंग पर गिर पड़े थे.

"मैं ने कहा, सो गए? लगता है आप पर कुंभकर्ण की परछाईं पड़ी है. लेटते ही खर्राटों की मशीन चला देते हैं."

लीना की आवाज ने हमें उस की ओर गरदन घुमाने पर मजबूर कर दिया, "क्या है भई, सोने दो. बता चुका हूं कि दफ्तर से

हम ने आंखें जरा सी खोल कर देखा तो लीना मेज पर लैंप जलाए, कागज और कलम लिए अपने पलंग पर बैठी थी.
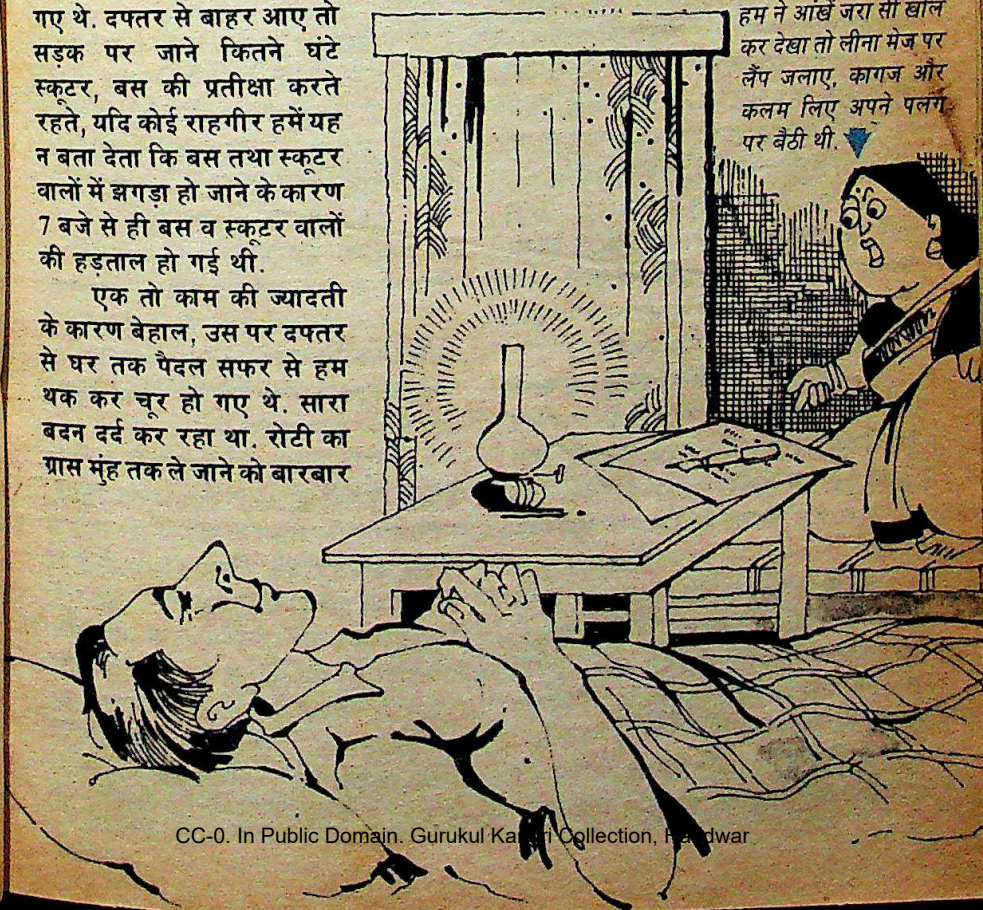
दफ्तर से थकमांदे घर पहुंचते ही हम मीठी नींद लाने के तरहतरह [illegible] मैं ने कहा (?) के बाण छोड़ते हुए हमारी दिलेरी को परखने का जो नुस्खा अपनाया उस ने हमारी आंखों से नींद ही उड़ा दी.

पैदल चल कर आ रहा हूं. बिलकुल कचूमर निकला हुआ है,'' हम ने नम्रता से कहा.

''दफ्तर से आप टांगों से चल कर आए हैं या जबान से?'' लीना ने तुनक कर कहा, ''मेरी बातों का उत्तर जबान से देना है न कि टांगों से.''

''अच्छा बाबा, जल्दी से पूछो क्या पूछना है?'' हम ने बेजारी से कहा.

''आज आप को मुकंद बड़ियों की सब्जी कैसी लगी.'' लीना ने अपनी बड़ीबड़ी आंखों को और बड़ा किया.

''मुकंद बड़ियां, कौन सी?'' हम ने मिचमिचाती आंखों से लीना को देखा.

''वही, जो आप ने थोड़ी देर पहले खाई हैं. मैं ने आज वे नए तरीके से बनाई हैं. पहले मैं मूंग की धुली दाल को रात को भिगोती थी और सुबह पीसती थी,'' लीना अपने पलंग पर बैठ गई. मगर उस की जबान चलती रही, ''मगर आज, पहले मिक्सी में जीरा, धनिया, लौंग और इलायची को पीसा. फिर मूंग की धुली दाल को मिक्सी में पीस लिया और उस के बाद मुकंद बड़ियों को...''

''उस के बाद मुकंद बड़ियों को खाने वाले घर के सदस्यों को मिक्सी में डाल कर पीस लिया.'' हम ने जलभुन कर कहा, ''मेरा जिस्म टूट रहा है और यह बड़ियां बनाने की नई विधि मुझे समझा रही हैं. अब मुझे सोने दो.''

लीना ने घूर कर हमें देखा और अपने पलंग पर लेट कर मुंह फेर लिया. हम ने आंखें बंद कर लीं और सोने की कोशिश की. एक तो थकावट थी, ऊपर से लीना की बड़बड़ से हमारा भेजा गरम हो गया था. इसलिए नींद दूर भाग रही थी.

हम ने सोने की तरकीब आजमाई. पहले दिमाग को ढीला छोड़ा. फिर जबड़े ढीले छोड़ दिए. उस के बाद पेट, टांगों और धीरेधीरे पैरों की उंगलियों को ढीला छोड़ कर हम ने नींद की नदी में डुबकी लगा दी.

''मैं ने कहा सो गए क्या?'' सहसा लीना ने हमें हिला कर रख दिया.

ऐसे लगा जैसे किसी ने बालों से पकड़ कर हमें नींद की नदी से खींच लिया हो. हम ने आंखें जरा सी खोल कर लीना के पलंग की ओर देखा. लीना मेज का लैंप जलाए हाथ में कापी और कलम लिए अपने पलंग पर बैठी थी.

''देखिए, 50 मीटर ऊंचे खंभे पर एक बंदर 5 मिनट में 7 फुट ऊंचा चढ़ रहा है और 4 मिनट में 3 फुट नीचे खिसकता आ रहा है. वह कितनी देर में खंभे की चोटी पर पहुंचेगा?

''कहां है बंदर?'' हम ने बौखला कर खिड़की के पास पहुंच कर इधरउधर के बिजली के खंभों पर नजर डालते हुए पूछा.

''वह तो इस प्रश्न में है जो समीता भाभी ने आज मुझ से पूछा था और जिस का उत्तर कल तक मुझे देना है,'' लीना ने माथे पर कलम बजाते हुए कहा.

''तुम्हें मालूम है कि आज मैं पूरा दिन दफ्तर में गधे की तरह काम करता रहा हूं. फिर दफ्तर के समय के बाद दो घंटे फाइलों के ढेर को खंगालते, लेखा परीक्षा के लिए रेकार्ड को संभालते कमर दोहरी हो गई. दफ्तर से घर तक पैदल घिसटता आया और अब जरा झपकी आई तो आप बंदर को खंभे पर चढ़ानेउतारने लगीं.'' हम ने बिस्तर पर गिरते हुए कहा, ''मुझे सोने दो. सवाल कहीं भागा नहीं जाता, सुबह हल निकल आएगा.''

कोई भी व्यापक तापमान हो मेरे लिए अनुकूल है

बिजली के उतार-चढ़ाव सहन करने वाला अन्दरूनी प्रोटेक्टर !

वोल्टेज स्टेबिलाइज़र की कोई आवश्यकता नहीं!
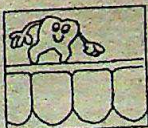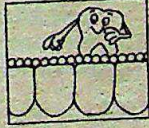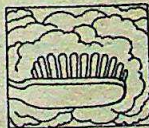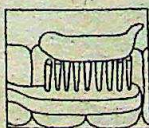
सम्राट पेंगविन के पंख उत्तम इन्सूलेशन प्रदान करते हैं। उसे तीव्र एन्टार्कटिक शरद्-ऋतु में अण्ड-सेवन अवधि में भी जीवित रहने में सहायता देते हैं।

संदर्भ : रीडर्स डाइजेस्ट की एन्टार्कटिका

केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर कार्यकुशलता का दूसरा नाम। सभी प्रतिकूल परिस्थितियों में इसके ठंडा करने की क्षमता के कारण, यह घर घर में लोकप्रिय है।

इसका श्रेय, इसके विश्वविख्यात "पावर-सेवर" कम्प्रैसर को प्राप्त है। जो उच्च व्यापक तापमान में भी कुशलता से कार्य करता है। शीघ्र ठंडा करता है, उससे भी शीघ्रता से बर्फ़ बनाता है। "पावर-सेवर" कम्प्रैसर, विस्तृत वोल्टेज उतार चढ़ाव सहन करता है तथा इसे वोल्टेज स्टेबिलाइज़र की कोई आवश्यकता नहीं। और फिर यह न्यूनतम बिजली की खपत करता है।

विशेष खूबियां :

* पूर्ण इन्सूलेशन, कैबिनेट तापमान को बेहतर बनाती है।
* मज़बूत ए बी एस लाईनर।
* सर्विस में विश्वसनीय।
* बिजली की खपत में अत्यंत किफ़ायती।
* विशाल स्टोरेज क्षमता।
* टिकाऊ।
* सुन्दर एवं सुदृढ़।
* विभिन्न बाहरी फ़िनिश तथा मनभावन अन्दरूनी रंगों में उपलब्ध।
* अनेक मॉडल।

Mutual-4510E/HN

केल्विनेटर
रेफ़्रिजरेटर
"इसकी ठण्डक...बेमिसाल!"

बिक्री एवं सर्विस के लिए :
एक्सपो मशीनरी लिमिटेड
प्रगति टावर, 26 राजिन्द्रा प्लेस,
नई दिल्ली-110 008
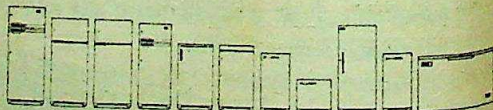
केल्विनेटर
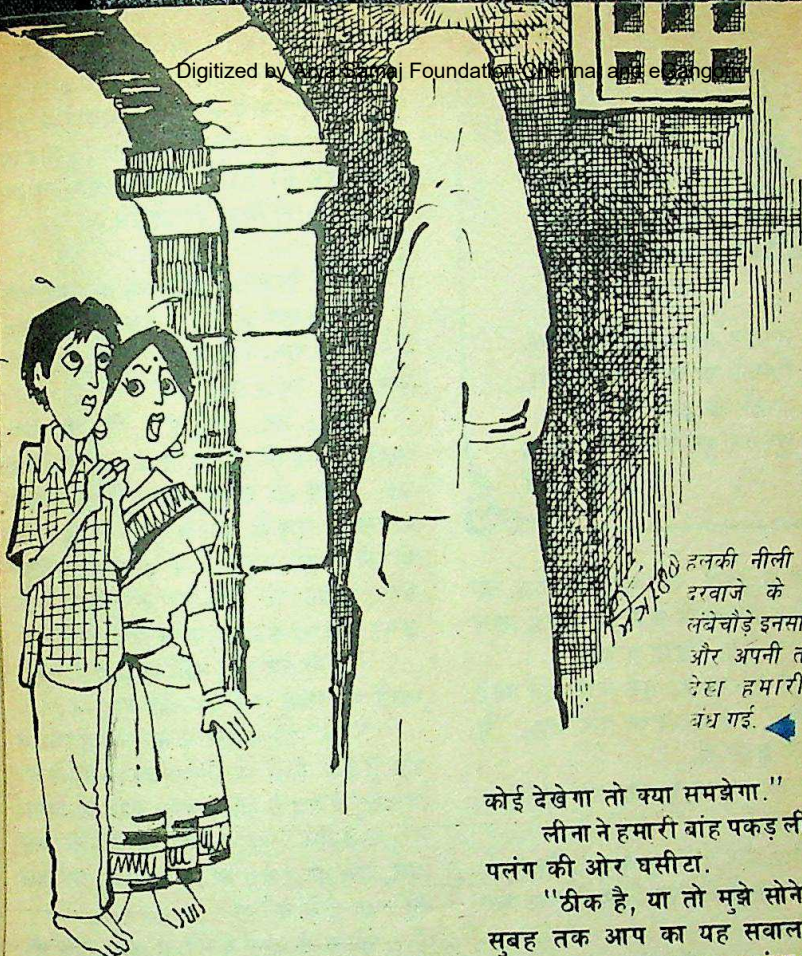
हलकी नीली रोशनी में दरवाजे के पास एक लंबेचौड़े इनसान को खड़ा और अपनी तरफ घूरता देख हमारी घिग्घी बंध गई.

"सुबह आप दफ्तर भाग जाएंगे. यदि इस प्रश्न का उत्तर मैं ने समीता भाभी को न दिया तो सारे महल्ले की औरतों के सामने मेरी खिल्ली उड़ेगी." लीना ने ठुनक कर कहा.

"नहीं, नहीं, तुम्हारी खिल्ली न उड़ेगी. ऐसा करते हैं कि मैं उस सामने वाले बिजली के खंभे पर बंदर की गति के हिसाब से चढ़ता हुआ खिसकता हूं. तुम घड़ी ले कर टाइम नोट करो."

हम ने सिरहाने को दूर फेंका, बिस्तर से उठ खड़े हुए और बाहर के दरवाजे की कुंडी पर हाथ रखा ही था कि लीना चिल्ला पड़ी, "अरे, अरे, यह आप क्या कर रहे हैं? कोई देखेगा तो क्या समझेगा."

लीना ने हमारी बांह पकड़ ली और हमें पलंग की ओर घसीटा.

"ठीक है, या तो मुझे सोने दो या मैं सुबह तक आप का यह सवाल खंभे पर चढ़उतर कर हल करता रहूंगा."

"अच्छा बाबा, सो जाइए." लीना ने अपने पलंग पर लेट कर पीठ फेर ली.

हम बिस्तर पर ढेर हो गए. सोने के लिए एक और नुसखा आजमाने लगे. आंखें बंद कर लीं और मन के कानों से सहगल साहब की लोरी 'सो ज़ा राजकुमारी सो जा' सुनने लगे.

हमें ऐसा महसूस होने लगा कि दूरदूर तक चांदनी छिटक रही थी. हर ओर सन्नाटा था. झील से आ रही ठंडी हवा के झोंकों के परों पर 'सो जा राजकुमारी सो जा' की लोरी मीठे सपने लिए आ रही थी और फिर हम उन मीठे सपनों में खो गए.

नूर

तुम्हारे कोमल से चेहरे पर
शिकन के भाव नहीं सुहाते,
उतार दो इन्हें तुम
तुम्हारे नूर पर ये नहीं भाते.

—देवदत्त शर्मा

"मैं ने कहा, सो गए?" लीना की आवाज ने हमारे कानों में सीटी बजाई. साथ ही हमारे कंधे को झिंझोड़ा गया.

"मुझे लगता है, तुम मुझे यहां सोने नहीं दोगी," हम ने झुंझला कर कहा, "मैं चला दूसरे कमरे में."

हम तकियाचादर उठा कर पलंग से उठ खड़े हुए.

"शी...धीरे बोलिए. घर में चोर घुसा हुआ है." लीना ने होंठें पर उंगली रख कर हमें समझाया.

"चच...चोर..." तकिया हमारे हाथ से छूट कर फर्श पर गिरा और हम फर्श से उछल कर पलंग पर चढ़ गए.

हम ने मरीमरी आवाज में लीना से पूछा, "कहां है चोर?"

"वह सामने दरवाजे के पास." लीना ने बाहर वाले दरवाजे की तरफ उंगली उठा दी.

हम ने देखा, हलकी नीली रोशनी में दरवाजे के पास एक लंबाचौड़ा इनसान खड़ा था. बड़ा सा सिर, काली कमीज पहने वह हमें अपनी ओर घूरता नजर आया. हमारी घिग्घी बंध गई. हाथपैर कांपने लगे, जिस्म पसीने का फौहारा बना हुआ था. दिल की धड़कन रेलगाड़ी के इंजन की शोर को मात दे रही थी. हमें चोर धीरेधीरे अपनी तरफ बढ़ता महसूस हुआ. बस, कुछ पलों में वह हम पर जाने कौन से हथियार से वार करने वाला था. हमें लग रहा था कि चोर के वार करने की तकलीफ दिए बिना ही हम इस दुनिया से विदा हो जाएंगे.

"अरे, खिड़की में से चिल्ला कर पड़ोसियों को बुलाओ," हम ने कांपती आवाज में लीना से कहा और खुद अधमरे से हो कर पलंग पर लुढ़क गए.

"हा... हा... हा..., ही... ही... ही... डर गए?" लीना की हंसी रात के सन्नाटे में गूंज गई. "आप तो अपनी बहादुरी के बड़े बड़े कारनामे सुनाया करते थे. अजी, वह चोरवोर कुछ नहीं, मैं ने आप की पतलून और गाउन को बांस पर टांग दिया और ऊपर ऊन का बड़ा सा गोला टिका दिया है."

"यानी वह चोर नहीं खड़ा है?" हम ने सांसों पर काबू पाने की कोशिश की.

"जी नहीं, आज मैं ने एक पत्रिका में पढ़ा है कि पत्नी को अपने जीवनसाथी की दिलेरी, बहादुरी आदिआदि का समयसमय पर इम्तहान लेना चाहिए ताकि उसे पता चले, उस का रखवाला समय पड़ने पर उस की रक्षा कैसे करेगा."

लीना के दांत कमरे में लगे बल्ब की हलकी नीली रोशनी में चमक उठे. वह उठ कर दरवाजे तक गई. उस ने गाउन, पतलून, ऊन का गोला बांस पर से अलग कर दिए. हम मुंहफाड़े लीना को घूर रहे थे.

"मुझे आप की हिम्मत का पता चल गया है. आप आराम से सो जाइए," लीना ने कहा और अपने पलंग पर लेट गई. और थोड़ी देर बाद उस के खर्राटे गूंजने लगे.

हमारी नींद अब बिलकुल उड़ चुकी थी. जी चाहता था कि लीना का पलंग उलट दें और कोने से उस बांस को उठा कर सीधे उस पत्रिका के संपादक के घर पहुंच जाएं. फिर उस के घर के दरवाजे पर 'दनादन' लठ बरसा कर उस की नींद हराम कर दें.

सांस सरगम हो गई

धूप सी खिलने लगी
रूप की रानाइयां,
सांस सरगम हो गई
स्वप्न भी शहनाइयां.

मंद सी मुसकान पर
तिरछी निगाहें कह गईं,
मौन आमंत्रण लगी तुम
भावना बन बह गईं.

झील सी लहराने लगती
आंखों की गहराइयां.

आंसुओं से तुम को कितने
चोरी चुपके खत लिखे,
चांदनी रातों में जब
सागर किनारे हम मिले.

प्यार की वसीयत मेरी
यादें हुई तनहाइयां.

—कन्हैयालाल भ्रमर

इन गर्मियों में अण्डे के बारे में ज़रा ठण्डे दिमाग से सोचिए.
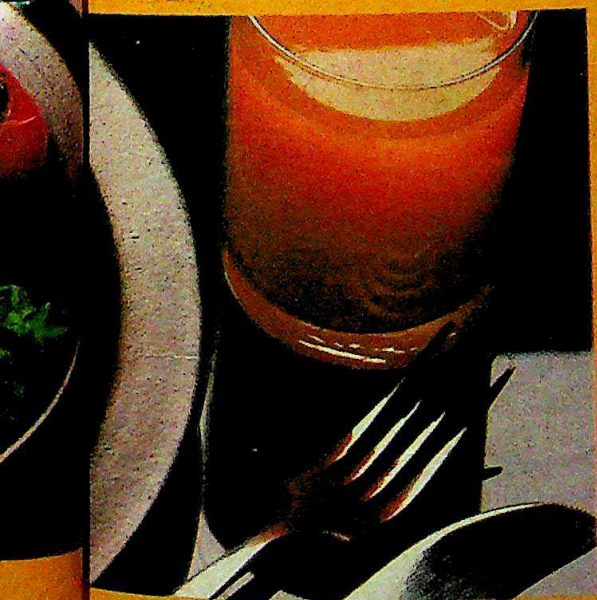
क्या अण्डे वाकई में गर्मियों में हानिकारक हैं?

इस मत का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है. बिलकुल कोई नहीं. अच्छे डॉक्टर तो बताएँगे कि वह पूरे साल भर आपके लिए बहुत फायदेमंद हैं.

उदाहरण, एक अण्डे में है ७ ग्राम प्रोटीन, जो बच्चों के विकास और बड़ों के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, गर्मी हो या सर्दी.

और अण्डे में प्रोटीन की संपूर्ण मात्रा होती है: इसमें आपके लिए आवश्यक सारे प्रकार के प्रोटीन शामिल हैं.

इतना ही नहीं. अण्डों में विटामिन 'ए' होता है जो त्वचा को स्वस्थ रखने के साथ साथ रात्रि के दृष्टि दोष (रतौंधी) से भी मुक्त रखता है. और विटामिन 'बी$_2$' जो स्वच्छ दृष्टि के लिए ज़रूरी है. अण्डों में मौजूद लोहा ख़ून को स्वस्थ रखता है और फास्फ़ोरस दांत और हड्डियों को मज़बूत बनाता है. आपके शरीर को इनकी ज़रूरत है पूरे साल भर.

और आप इन्हें पा रहे हैं इतनी कम क़ीमत पर.

साल भर का कोई दिन, न जाए अण्डे बिन.

संडे हो या मंडे, रोज़ खाएं अण्डे.

नेशनल एग कोऑर्डिनेशन कमेटी

निराले अचार

ये चटपटे अचार आप को या आप के परिवार वालों को ही नहीं मेहमानों को भी मजेदार लगेंगे.

भरवां लाल मिर्च का अचार

सामग्रीः 1 किलोग्राम, मोटी लाल मिर्च, 100 ग्राम नमक, 1 चम्मच हल्दी, 1 चम्मच पिसी लाल मिर्च, 1 चम्मच अमचूर, 3 चम्मच पिसी राई, चुटकी भर भुनी पिसी हींग. 1½ प्याला सरसों का तेल, 100 ग्राम सौंफ भुनी पिसी.

विधिः मिर्च की डंडी तोड़ कर पतले चाकू से मिर्च के अदंर के बीज कुरेद कर बाहर निकालें. ध्यान रहे कि मिर्च टूटे नहीं. सारे मसाले को एक साथ मिला कर आधा प्याला तेल के साथ घोल लें. मिर्च के अंदर मसाले को पतले चम्मच या तीली की सहायता से अच्छी तरह भर दें. एक बरनी को तेल लगा कर चिकना करें और मिर्चों को एकदूसरी पर दबादबा कर भर दें. और बचा हुआ तेल मिर्चों के ऊपर डाल कर ढक्कन लगा कर अचार को चारपांच दिन के लिए धूप में रखें. यह अचार वर्षों खराब नहीं होता.

भरवां लाल मिर्च का अचार

भरवां प्याज का अचार

सामग्रीः 3 किलोग्राम मध्यम आकार के प्याज, 24 नीबू, 250 ग्राम नमक, 100 ग्राम सफेद जीरा पिसा हुआ, 50 ग्राम लाल मिर्च पाउडर, 50 ग्राम हलदी, 500 ग्राम तेल.

विधिः प्याज को छील कर चाकू से मध्य भाग पर दो गहरे काटे लगाएं. ध्यान रहे कि प्याज नीचे की तरफ से जुड़ा रहे. प्याज को एकदम उबलते पानी में डाल कर निकाल लें और धूप में पानी सूखने तक फैला दें. सब मसाले एकसाथ मिला लें. इन पर 12 नीबू का रस निचोड़ कर नमक मिला दें. जब मसाला गीला हो कर नर्म हो जाए तो दो चम्मच तेल मिला दें. प्याज का पानी पूरी तरह सूख जाएगा तो प्याज की फांकें चार भागों में खुल जाएंगी. इस खुले भाग में मसाला भर कर तेल लगी बरनी के अंदर रखती जाएं. प्याज भरते समय ध्यान रखें कि कम से कम स्थान रिक्त रहे जब पूरे

दिन कर चा स्वाद ह

भरते नमक, पिसी मसाला किलोग्र तपा लें को थो घोल दरदरा

बैंगन अचार

भरवां प्याज का अचार

प्याज भर दें, तब शेष नीबू का रस मिला कर बरनी को अच्छी तरह से हिला दें, जिस से नीबू का रस प्याजों में अच्छी तरह से मिल जाए. अब बरनी को ढक्कन लगा कर दोतीन दिन धूप दिखाएं. फिर शेष तेल मिला कर चारपांच दिन धूप में रखें इस अचार का स्वाद ही निराला है.

बैंगन का अचार

सामग्रीः 2.5 किलोग्राम बैंगन बड़े भरते वाले, 200 ग्राम सिरका, 100 ग्राम नमक,100 ग्राम गुड़ 25ग्राम लाल मिर्च पिसी हुई 100 ग्राम राई, 20 ग्राम गरम मसाला, 50 ग्राम लहसुन, अदरक,1½ किलोग्रार्म सरसों का तेल

विधिः सरसों के तेल को अच्छी तरह तपा लें, जिस से गंध शेष न रहे. सिरके को थोड़ा गरम कर के उस में गुड़ घोल दें. लहसुन व अदरक को दरदरा पीस लें.
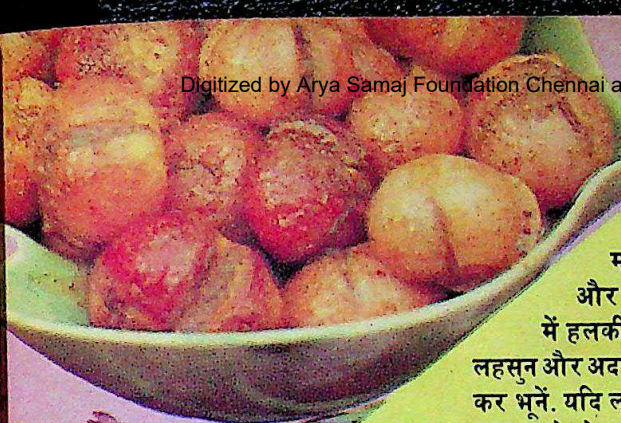
कड़ाही में तलने लायक तेल भर कर गरम करें. बैंगनों के मध्यम आकार के टुकड़े करें और नर्म होने तक तलें. शेष तेल में हलकी आंच पर गीला पिसा हुआ लहसुन और अदरक भूनें. फिर लाल मिर्च डाल कर भूनें. यदि लाल मिर्च का रंग खूब गहरा लाल न हो तो अचार में रतन जोत के पाउडर की एक चुटकी डाल दें. आधा प्याला सिरके व गुड़ का घोल इस में डाल कर गरम मसाला व नमक डालें. जब मसाला घुल जाए तब बैंगन के टुकड़े डाल दें और कुछ देर भूनने के बाद गुड़ व सिरके का पूरा घोल मिला कर थोड़ी देर पका कर आंच से उतार लें. बैंगन हिलाने में सावधानी से पलटें, नहीं तो बैंगन के टुकड़े टूट जाएंगे. जब अचार ठंडा हो जाए तो राई मिला कर बरनी में भर दें. दोतीन दिन धूप दिखाएं. बस अचार तैयार. यह अचार हर मौसम में बन सकता है क्योंकि बैंगन वर्ष भर उपलब्ध होते ही हैं.

—विजया वासुदेव

बैंगन का अचार

मुक्ति

मैं ने छुट्टियां लेली हैं. अब हम दिल्ली की धूल और उमसभरी गर्मी से दूर किसी पर्वतीय क्षेत्र में घूमने चलेंगे.
वाह!

मेरे भाई भाभी आ रहे हैं. हम उन के जाने के बाद ही चलेंगे.

अगले दिन
अरे! चाचाजी भी शिलांग से आ रहे हैं. वह भी कुछ दिन हमारे पास रहेंगे.
ट्रिन
ट्रिन
तार

आपके मामाजी का फोन है.
हैलो
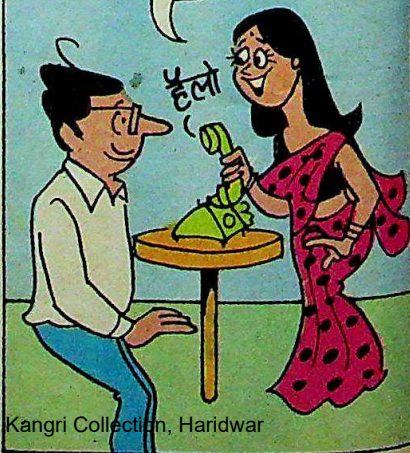
बेटा जब तुम सब पिछली बार यहां आए थे तो हमें दिल्ली बुला गए थे. अब तुम्हारी मामी मान गई हैं.

पत्र

अरे वाह! मेरी सहेली कंचन आ रही है. कितना मजा आएगा! हम पूरे दस वर्ष बाद मिलेंगे.

हाय! इस बार छुट्टियां ले कर भी दिल्ली की गर्मी से मुक्ति नहीं मिली.
दिल्ली दर्शन टूर कार्यक्रम

एन् फ्रेंच हेयर रिमूवर
नर्माई से बालों की सफ़ाई
एन् फ्रेंच क्रीम हेयर रिमूवर की नर्माई और सुविधाजनक सफ़ाई आज़मा लीजिए और अब अलविदा कीजिए रेज़र से कटने छिलने और वैक्सिंग से होनेवाली असुविधा और त्वचा की तकलीफ़ को.
एन् फ्रेंच में मौजूद विशेष बेबी आयल आपकी त्वचा मुलायम बनाए. और एन् फ्रेंच त्वचा की तह में जाए, बड़ी नर्माई से अनचाहे बालों की सफ़ाई कर दिखाए, आपकी त्वचा हफ़्ता-ब-हफ़्ता इतनी कोमल बनाए, जिसे बार बार छूने को जी चाहे.
एन् फ्रेंच क्रीम हेयर रिमूवर प्रयोग करने में कितनी सुविधाजनक है. आप इसे बगलों, बाहों और पांवों पर इस्तेमाल कर सकती हैं... आप जब भी चाहें.
तीन भीनी भीनी सुगंधों में से अपनी मनपसंद चुनिए. फ़्लोरल, लेमन और संदल और पाइए अधिक साफ़ और अधिक खूबसूरत त्वचा.
लेमन और
सुगंधों में भी
Anne French
CREME
HAIR REMOVER
एन् फ्रेंच क्रीम हेयर रिमूवर
अंग अंग सफ़ाई और खूबसूरती का एहसास

पर्यटन परिशिष्ट

छुट्टियों को सुखद और मनोरंजक बनाने के लिए इस परिशिष्ट में पश्चिमी अर्ध भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पहुंचने, रहने, घूमनेफिरने की संपूर्ण जानकारी दी जा रही है. अगर आप कहीं नहीं भी जा रहे तो इस परिशिष्ट के द्वारा आप घर बैठे ही पूरे देश का भ्रमण कर सकेंगे.
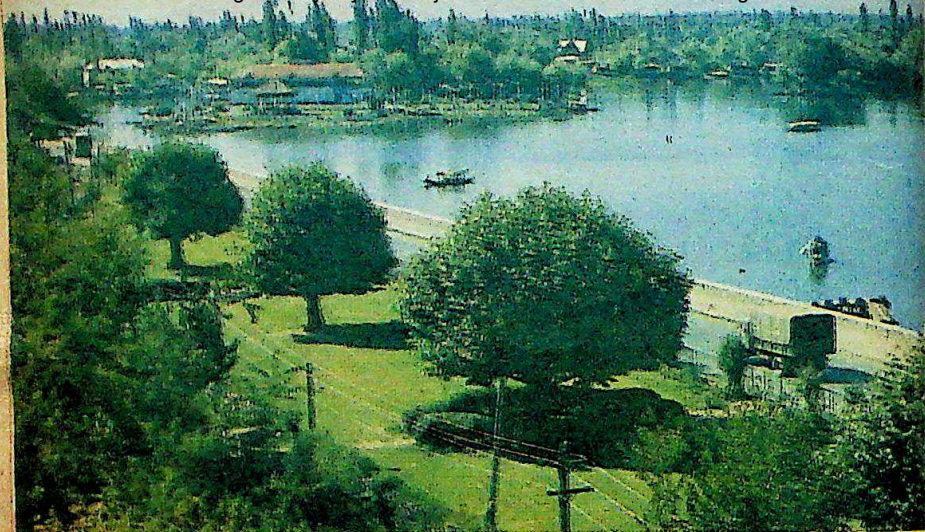
श्रीनगर

श्रीनगर कशमीर की राजधानी है. जम्मू से लगभग 300 किलोमीटर दूर झेलम नदी के किनारे बसा यह शहर चश्माशाही, निशात बाग, शालीमार बाग और डल झील के सौंदर्य को अपने भीतर समाए हुए है. डल झील का सौंदर्य और उस में चांदनी रात में तैरते शिकारे बरबस ही यहां पर्यटकों का ध्यान खींचते हैं.

कैसे जाएं?

श्रीनगर की दूरी दिल्ली मद्रास और कलकत्ता से क्रमशः 878, 3,060 और 2,331 किलोमीटर है. श्रीनगर पहुंचने के लिए रेलमार्गों, बस और अन्य साधनों का प्रयोग आसानी से किया जा सकता है. जम्मू जा कर वायुमार्ग से भी श्रीनगर आसानी से पहुंचा जा सकता है.

जम्मू के लिए इंडियन एअरलाइंस की नियमित सेवा है.

श्रीनगर जाने के लिए आमतौर से अप्रैलमई से जून जुलाई तक का समय बेहतर रहता है.

कहां ठहरें?

आमतौर पर श्रीनगर में ओबराय पैलेस, होटल ब्राडवे और पार्क होटल आदि में ठहरा जा सकता है. जो लोग डल झील में तैरते शिकारों पर ठहरना चाहें तो वहां उन के लिए पूरी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाती हैं. लेकिन उन का किराया पहले से तय करना जरूरी है. इन का किराया 200 से 500 रुपए प्रतिदिन तक पड़ता है.

होटलों के किराए: श्रीनगर में उच्च स्तर के होटलों में पर्यटक कम से कम 300 रुपए और मध्यस्तर के होटलों में ज्यादा से ज्यादा 100 रुपए तक प्रतिदिन के किराए के

हिसाब से ठहर सकते हैं.

हाउस बोटों के किराए: यहां कई तरह के हाउस बोट हैं, जिन के किराए उन के स्तर के हिसाब से होते हैं. इन का अधिक से अधिक 405 रुपए और कम से कम 54 रुपए प्रतिदिन का किराया है.

इन के अलावा टूरिस्ट स्वागत सेंटर, टूरिस्ट बंगले और टूरिस्ट होटलों में भी क्रमश: 80 से 100 और 15 से 20 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से ठहरा जा सकता है.

आरक्षण के लिए संपर्क करें:

पर्यटन निदेशक, जम्मू और कशमीर का पर्यटन विभाग, टूरिस्ट स्वागत केंद्र, श्रीनगर.

क्या देखें?

डल झील: कोई समय था जब डल झील सुंदरतम झीलों में से एक मानी जाती थी. लेकिन आज डल झील का सौंदर्य खत्म सा हो गया है. शिकारों से निरंतर प्रवाहित की जा रही गंदगी से इस का सौंदर्य नष्ट होता जा रहा है. यह झील वैसे तो 18 कि.मी. लंबी है, लेकिन अब यह आहिस्ता-आहिस्ता सिमटती जा रही है. इसी झील में चार चिनार एक दर्शनीय स्थल है. नौका द्वारा वहां जाया जा सकता है. मुगल बादशाह द्वारा रोपे गए चारचिनार के वृक्ष ऐसे लगते हैं मानो प्रहरी खड़े झील की रक्षा कर रहे हों.

नेहरू पार्क: नेहरू पार्क डल झील में ही बनाया गया है. चारों ओर फूलों से घिरा यह टापूनुमा स्थान काफी महंगा है. यही नहीं, शिकारे वाले बख्शीश के लिए भी काफी परेशान करते हैं.

चश्माशाही बाग: शाहजहां द्वारा 1632 में बनाया गया यह बाग श्रीनगर से 9 किलोमीटर की दूरी पर है. यहीं से यह रास्ता कुछ ही ऊंचाई पर स्थित परीमहल को जाता है. इस बाग में प्रवेश शुल्क केवल 50 पैसे है. यहां बाग की पहाड़ी से निकलने वाला छोटा झरना बरबस ही पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन जाता है.

निशात बाग: श्रीनगर से 11 कि.मी. दूर डल झील के तट पर बने इस मुगलकालीन बाग को 1633 ई. में नूरजहां के भाई आसफखां ने बनवाया था. यहां से पीर पंजाल की हिमाच्छादित पर्वत शृंखलाओं व डल झील की सुंदरता का पर्यटक निःशुल्क आनंद उठा सकते हैं.

दर्शकों के आकर्षण का केंद्र चश्माशाही ▼

डल झील के तट पर बने निशातबाग में पहुंच कर पर्यटक सारी थकान भूल जाते हैं.
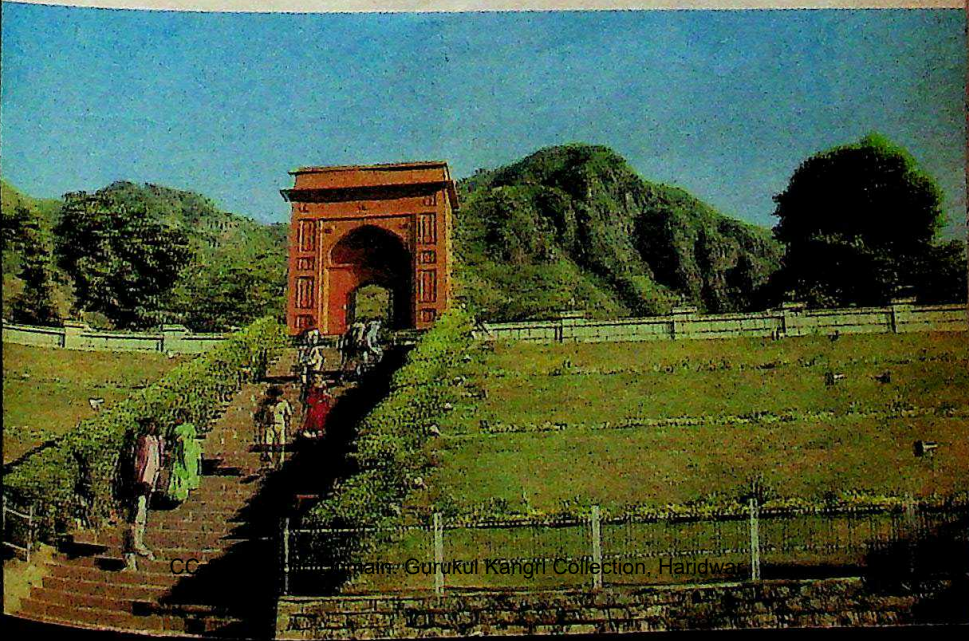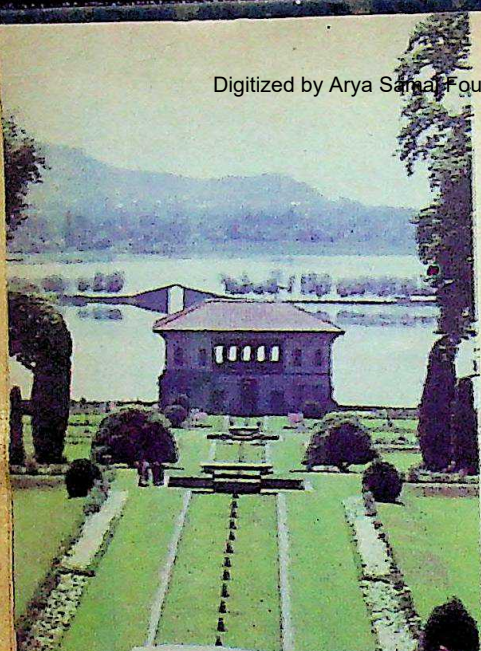
शालीमार बाग: 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस बाग को जहांगीर ने नूरजहां के लिए बनवाया था. यहां देवदार और चिनार के पेड़ों के नीचे रंगबिरगे फूल और बाग के बीचोबीच एक नहर है. यहां नहर के बीच में लगे फव्वारे ही नहीं बल्कि टूरिस्ट विभाग द्वारा आयोजित मई से अक्तूबर तक 'साउंड एंड लाइट शो' का आयोजन भी काफी मन लुभाने वाला रहता है.

शंकराचार्य मंदिर: श्रीनगर से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर यह मंदिर 1 हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित है. ईसा से 200 वर्ष पूर्व अशोक के पुत्र द्वारा बनाए गए और जहांगीर काल में पूरे हुए इस मंदिर में एक बड़ा शिवलिंग स्थापित है. मंदिर के ऊपर से पर्वतीय सौंदर्य का आनंद लिया जा सकता है. इस के अतिरिक्त प्रताप सिंह संग्रहालय भी निःशुल्क देखा जा सकता है. हां, नगीन, वूलर और मांसाबल झीलें भी देखना न भूलें.

क्या खरीदें?

यहां के बड़शाह चौक पर कई दुकानें हैं जहां उचित मोलभाव कर के मनपसंद चीजें खरीदी जा सकती हैं. फिर भी सरकारी विक्रय केंद्रों से खरीदारी करें तो अच्छा रहेगा.

गुलमर्ग- सोनमर्ग

श्रीनगर से 51 कि.मी. दूर गुलमर्ग को यदि फूलों की घाटी कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी. वसंत ऋतु में पूरी घाटी फूलों से लद जाती है. वैसे यह स्थान पूरे वर्ष पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना रहता है.

कैसे जाएं?

श्रीनगर के लाल चौक से यहां के लिए नियमित बस सेवा है. यदि आप सीधे ही गुलमर्ग तक जाना चाहते हैं तो बस आप के लिए ठीक रहेगी. यदि आप घुड़सवारी का आनंद लेना चाहते हैं तो गुलमर्ग से 5 कि.मी. पहले तनमर्ग उतर कर वहां से घोड़ों पर बैठ कर या स्लेज गाड़ी द्वारा गुलमर्ग पहुंचें. लेकिन इस से पहले आप घोड़े वालों या स्लेट गाड़ी वालों से भाड़ा जरूर तय कर लें.

कहां ठहरें?

वैसे तो गुलमर्ग बहुत छोटी सी जगह है. एक दिन में देखी जा सकती है. फिर भी अगर वहां एक दिन ठहरा जाए तो अच्छा रहता है. वहां रहने के लिए टूरिस्ट हट्स हैं. होटलों में गुलमर्ग इन, वुडलैंड आदि अच्छे होटल हैं. होटल हाइलैंड पार्क महंगे होटलों में से हैं.

क्या देखें?

गोल्फ का मैदान: गुलमर्ग का गोल्फ का
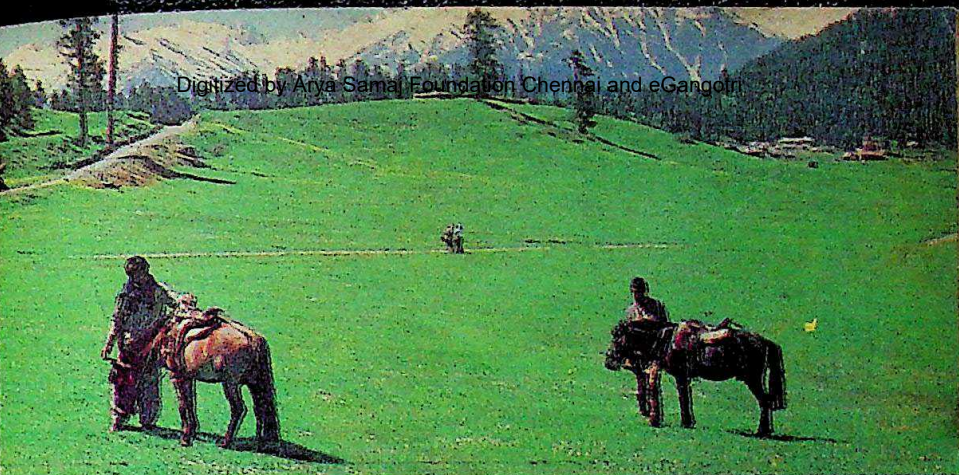
हरेभरे घास के मैदान, दूर हिमाच्छादित पर्वत चोटियां गुलमर्ग की आभा को और भी बढ़ाती हैं. ▲

मैदान विश्व का सब से ऊंचा गोल्फ मैदान है. यहां लोग स्कीइंग का आनंद भी उठाते हैं. चारों ओर देवदार के पेड़ों से घिरा यह मैदान पर्यटकों को सहज ही आकर्षित करता है. भारत के फिल्म निर्माताओं के लिए यह एक उत्तम स्थान है. यहां अनेक फिल्मों की शूटिंग हुई है. गुलमर्ग से खिलनमर्ग तक स्की लिफ्ट की सुविधा भी उपलब्ध है.

गुलमर्ग से 6 कि.मी. दूर खिलनमर्ग पहुंचने में 40 मिनट लगते हैं. खिलनमर्ग जाते समय एक बात का ध्यान अवश्य रखें कि खाना अवश्य साथ ले जाएं अन्यथा वहां के महंगे होटल आप का दीवाला निकाल सकते हैं.

यहां का मौसम एकदम बदल सकता है. बर्फीले तूफानों का आना यहां आम बात है. यहां रुकने के लिए होटल ज्यादा नहीं हैं, इसलिए लोग अपने साथ तंबू ले जा सकते हैं. खिलनमर्ग से 7 कि.मी. दूर अल्पथर झील में तैरते बड़ेबड़े हिमखंड यहां का अद्वितीय आकर्षण हैं.

श्रीनगर से 81 कि.मी. दूर और समुद्र तल से 9000 फुट ऊंचाई पर स्थित सोनमर्ग में रुकने की व्यवस्था नहीं है.

सोनमर्ग जाने के लिए गादरबल तक तो बस से लेकिन उस के बाद का रोमांचक सफर घोड़ों पर बैठ कर तय किया जा सकता है. सोनमर्ग स्थित ग्लेशियर यहां के आकर्षण का केंद्र हैं, जहां चलने के लिए विशेष किस्म के जूते किराए पर लेने पड़ते हैं. यहां बर्फ पिघल कर जब झरनों के रूप में बहती है तो एक मनोरम दृश्य बनता है.

पहलगाम

श्रीनगर से 96 कि.मी. दूर लिद्दर एवं शेषनाग नदियों के संगम स्थल पर बसे पहलगाम की यात्रा श्रीनगर से बस द्वारा की जा सकती है. श्रीनगर के रिसेप्शन सेंटर के पास बने बस अड्डे से यहां के लिए नियमित बसें चलती हैं. वैसे तो सुबह पहलगाम जा कर शाम तक लौटा जा सकता है परंतु यदि पर्यटक वहां रुक कर प्रकृति का मजा लूटना चाहें तो रहने की अच्छीखासी व्यवस्था है.

पहलगाम कश्मीर का सब से अच्छा

पहलगाम की ताजी हवा, लिद्दर नदी की कलकल, ऊंचे पहाड़ और घने पेड़ पर्यटकों को आमंत्रित करते प्रतीत होते हैं.
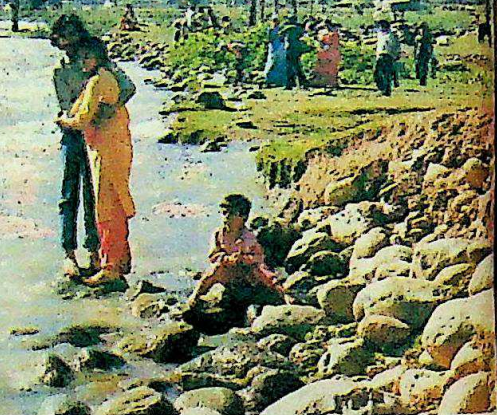
रहने का स्थान है. श्रीनगर तो डल झील के बावजूद एक धूल भरा शहर हो गया है. पहलगाम में ही आप को ताजी हवा, नदी की कलकल, ऊंचे पहाड़ और घने पेड़ दिखाई देंगे. लिद्दर नदी के किनारे आप घंटों बैठ भी सकते हैं और उस के किनारेकिनारे मीलों तक घूमफिर भी सकते हैं.

कहां ठहरें ?

पहलगाम में रहने के लिए टूरिस्ट बंगला अधिक उपयुक्त है, लेकिन इस के लिए आप को पहले आरक्षण कराना पड़ेगा. वैसे पहलगाम में कुछ होटल भी हैं, जिन में ठहरा जा सकता है. होटलों के नाम इस प्रकार हैं : होटल नटराज, माउंट व्यू, ग्रांड व्यू, हिल पार्क आदि. पहलगाम व वुडस्टार होटल महंगे हैं, पर हर सुविधा से सुसज्जित हैं.

क्या देखें ?

श्रीनगर से पहलगाम जाते समय रास्ते में दर्शनीय स्थलों की भरमार है. रास्ते में पड़ने वाले कुछ दर्शनीय स्थलों पर पर्यटन विभाग की बसें रुकती भी हैं. रास्ते में पड़ने वाले स्थलों में पामपुर व अवंतीपुर प्रमुख हैं. अवंतीपुर के प्राचीन मंदिरों [को] देखा जा सकता है तथा पामपुर के केसर [के] बाग देखे जा सकते हैं.

गोल्फ का मैदान : पहलगाम में गुलम[र्ग] की तरह ही गोल्फ का मैदान भी है. गोल[्फ] खेलने के शौकीन पर्यटक अपना यह शौ[क] यहां पूरा कर सकते हैं.

इस के अलावा लिद्दर नदी के प[ास] महेश्वर मंदिर भी देखने लायक स्थान [है.] पहलगाम के निकट ही अच्छबल मुग[ल] उद्यान दर्शनीय है. यहां के मुख्य बाजार से [...] कि.मी. दूर बैसरन घाटी और बैसरन घा[टी] से 12 कि.मी. दूर तुलियान घाटी भी देख[ने] लायक जगह है.

पहलगाम से ही अमरनाथ को [...] मार्ग जाता है. यहां से यात्री अपनी [...] व्यवस्था कर के अमरनाथ की यात्रा को [...] सकते हैं.

क्या खरीदें ?

गरम और सस्ते शाल यहां आसानी [से] खरीदे जा सकते हैं. पहलगाम से ही आ[प] पामपुर का केसर भी खरीद सकते हैं.

जम्मू

18वीं शताब्दी से पहले के कुछ धुंधले और अस्पष्ट इतिहास वाले शहर जम्मू को राजा जांबुलोचन के नाम पर एक पहाड़ी पर बसाया गया था. यहां का शांत वातावरण और घने मंदिर इस की शोभा को दोगुना करते हैं. मंदिरों के शहर के नाम से ख्यातिप्राप्त यह शहर श्रीनगर जाते समय रास्ते में पड़ता है.

कैसे जाएं?

दिल्ली से जम्मू तक विमान से जाने के अलावा जम्मू दिल्ली, कलकत्ता, पठानकोट, बंबई, चंडीगढ़ आदि शहरों से रेलमार्गों से जुड़ा हुआ है. इस के अलावा जम्मू पहुंचने के लिए दिल्ली, अमृतसर और चंडीगढ़ आदि से बस द्वारा भी जाया जा सकता है.

कहां ठहरें?

तवी नदी के तट पर बसे इस शहर में पूर्वी और पश्चिमी शैली के कई होटल जिन में ठहरने के लिए उचित सुविधा मिलती हैं. प्रतिदिन के किराए के हिसाब मिलने वाले इन आवासगृहों के बारे में भार सरकार के पर्यटन कार्यालय से पूर्व जानका भी ली जा सकती है. इस के अलावा रेल स्टेशन और शहर में आवश्यक जानका लेने के लिए टूरिस्ट रिसेप्शन की सेवाएं उपलब्ध हैं.

होटल जम्मू अशोक, एशिया होट प्रीमियर होटल, कास्मो होटल, नटरा होटल अच्छे हैं. इस के अला अप्सरा, अंबर, रचना, सिटी सेंट हो आदि भी रिसेप्शन सेंटर से ए किलोमीटर की दूरी पर हैं. रघुनाथ मंदि की धर्मशाला और बस अड्डे पर कम किरा में भी ठहरा जा सकता है. टूरि रिसेप्शन सेंटर पर भी ठहरा जा सकत है.

जम्मू शहर के बीचोबीच स्थित रघुनाथ मंदिर भव्य है

क्या देखें?

रघुनाथ मंदिर: जम्मू शहर बीचोबीच राम का भव्य रघुनाथ मंदिर है जिसे राजा गुलाब सिंह ने बनवाना शु किया था और राजा रणवीर सिंह ने इ पूरा करवाया.

रणवीरेश्वर मंदिर : यह एक शिवमंदि है, जिस में 12 पारदर्शी शिवलिंग देख लायक हैं. इस के अलावा जम्मू के आसपा डोगरा आर्टगैलरी, अखनूर, बटोट, मानस झील भी यहां देखने लायक हैं. प्रसिद्ध वैष्ण देवी मंदिर की गुफा के लिए भी यहीं से ब उपलब्ध हो जाती हैं.

कशमीर आने वाले पर्यटकों के लि जम्मू एक पड़ाव स्थल है. यहां पहुंच क आप कशमीर जाने से पहले ही वापसी आरक्षण करवा लें अन्यथा बाद में परेशा हो सकती है.

कुल्लू मनाली

कुल्लू घाटी हिमाचल प्रदेश के मनोरम और खूबसूरत पर्यटन स्थलों में से एक है. यहां की फूलों की घाटियां और दशहरा विख्यात है. हिमालय की गोद में बसे कुल्लू की हिमाच्छादित चोटियां, सौंदर्य से पूर्ण हरे भरे मैदान, पहाड़ी रास्ते और आबोहवा ही नहीं बल्कि व्यास नदी के किनारे बसे इस रमणीय स्थल की स्वास्थ्यवर्धक जलवायु भी प्रतिवर्ष हजारों पर्यटकों को खींच कर ले जाती है.

वसंत ऋतु में रंगबिरंगे फूल, देवदारों से घिरे रास्ते, खुबानी और बेर से लदे वृक्षों से तो कुल्लू का सौंदर्य और भी बढ़ जाता है. पैदल यात्रा के शौकीन लोगों के लिए कुल्लू काफी उपयुक्त जगह है. बहुत से पैदल यात्री कुल्लू से ही अपनी पर्यटन यात्राएं आरंभ करते हैं.

कब जाएं?

अप्रैल से जून और सितंबर से नवंबर तक का समय कुल्लू जाने के लिए उपयुक्त रहता है.

कैसे जाएं?

80 कि.मी. लंबी और समुद्र की सतह से 1,219 मीटर की ऊंचाई पर बसे कुल्लू के लिए प्रमुख शहरों से बस, रेल और वायु मार्ग से जाया जा सकता है.

वायु मार्ग से: कुल्लू वायुदूत सेवाओं द्वारा दिल्ली और चंडीगढ़ से जुड़ा हुआ है. ये सेवाएं कुल्लू से 10 कि.मी. दूर भुंतार हवाई अड्डे पर उतारती हैं, जहां से बसों और टैक्सियों द्वारा कुल्लू पहुंचा जा सकता है. वैसे वायुदूत की इस सेवा का कोई भरोसा नहीं. यह गांव की बस सेवाओं से भी बदतर है. जब मर्जी हो उड़ान रद्द कर दी जाती है.

रेल द्वारा: निकटतम रेलवे स्टेशन पठानकोट है. पठानकोट देश के सभी प्रमुख नगरों से रेल द्वारा जुड़ा हुआ है. चंडीगढ़ से कुल्लू की 270 कि.मी. की दूरी बस द्वारा तय की जा सकती है. चंडीगढ़ से चलने वाली बसें सुबह ही चल देती हैं और शाम तक पहुंच जाती हैं.
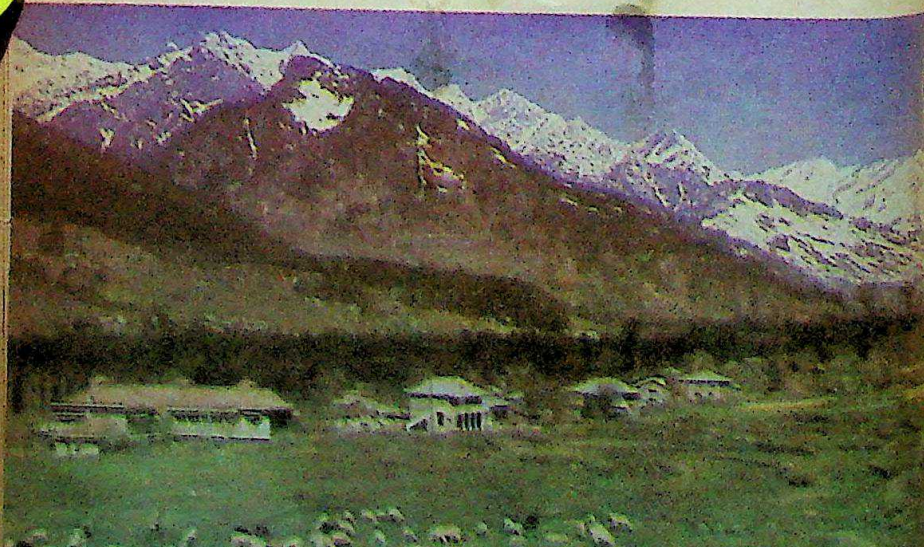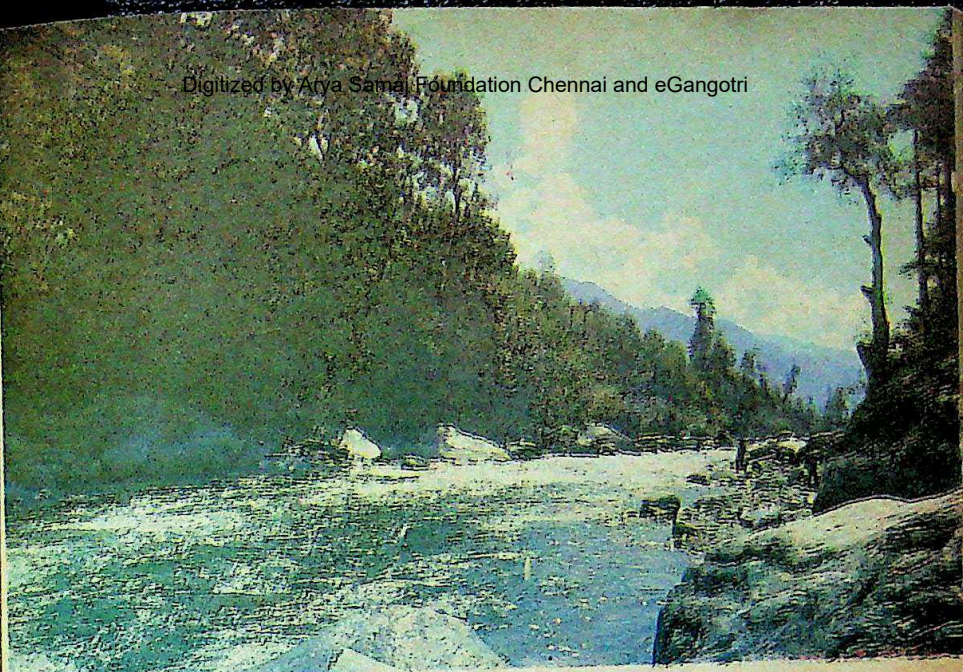
देवदार के पेड़ों से घिरा मनाली शांत और सुरम्य पर्यटन स्थल है. ▲

कहां ठहरें?

कुल्लू में आर्थिक स्थिति के अनुसार ठहरने के लिए सस्ते और महंगे होटल हैं. इन के अलावा भारतीय पर्यटन विकास निगम के पर्यटक लाजों और हिमाचल प्रदेश पर्यटक विकास निगम के टूरिस्ट बंगलों में भी सुविधानुसार ठहरा जा सकता है. इन टूरिस्ट बंगलों में प्रति शय्या के हिसाब से भी जगह मिल जाती हैं. यहां कई प्राइवेट होटल हैं, जो अखरा बाजार और ढालपुर में स्थित हैं. कैंप लगाने की पूरी सुविधाएं भी यहां उपलब्ध हैं.

क्या देखें?

रघुनाथजी मंदिर: कुल्लू से लगभग 1 कि.मी. दूर यह कुल्लू निवासियों का एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थल है.

वैष्णो देवी मंदिर: 4 कि. मी. की दूरी पर एक छोटी गुफा में स्थित इस मंदिर में वैष्णो देवी की आराधना की जाती है.

बिजली महादेव मंदिर: कुल्लू से 14 कि. मी. दूर व्यास नदी के पार इस मंदिर का अधिकांश भाग पहले ढह चुका था. बाद में इस का पुनरुद्धार किया गया है. कुल्लू का यह सब से आकर्षक मंदिर है.

यहां पहुंचने के लिए 11 कि. मी. की कठिन चढ़ाई चढ़नी पड़ती है. इस मंदिर से कुल्लू घाटी का मनोरम दृश्य दिखाई पड़ता है. इस मंदिर पर सूर्य की किरणें पड़ते ही यह चांदी की तरह चमकने लगता है.

कैंपिंग साइट: 16 कि. मी. की दूरी और समुद्र सतह से 1,433 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह स्थान एक मनोरम पिकनिक स्थल है. जहां अधिकांशतः युवाओं के शिविर और रैलियां आयोजित की जाती हैं. घाटी के इस क्षेत्र में फलों के बागान दूरदूर तक फैले हुए हैं.

कैटरेन: कुल्लू से 20 कि. मी. दूर कैटरेन कुल्लू का एक सब से चौड़ा और रमणीक स्थल है. मनाली जाते समय यह रास्ते में पड़ता है. यहां से 2 कि. मी. की दूरी पर मछलियों का फार्म है जहां ट्राउट जाति की मछलियां भी पाई जाती हैं. यहां सेबों के बाग भी बहुतायत में है. यह स्थान
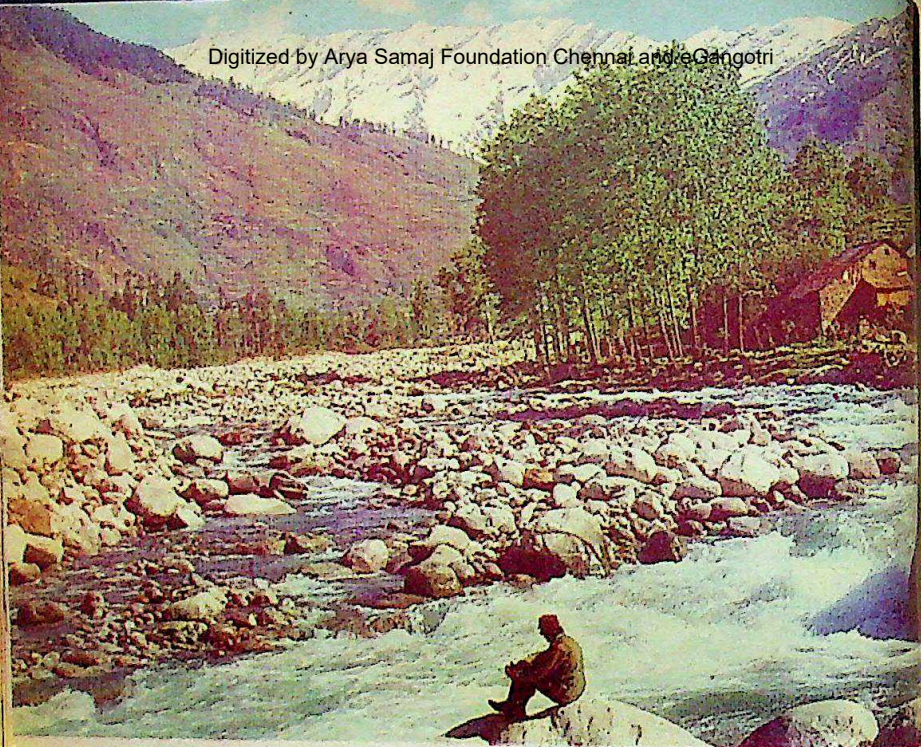
बर्फ से लदे पहाड़, पहाड़ों से बहते झरने मनाली का मुख्य आकर्षण हैं. ▲

मधुमक्खियों के पालन के लिए भी प्रसिद्ध है.

नग्गर: व्यास नदी के किनारे यह स्थान पर्यटकों को अधिक समय तक रोकने वाला स्थान है. नगर 1,400 वर्ष पहले कुल्लू के राजा की राजधानी थी. यहां कई आकर्षक मंदिर देखने लायक हैं. इस जगह पर कारें व जीपें आसानी से जा सकती हैं.

बजौरा: कुल्लू से 15 कि.मी. दूर इस स्थान पर बशेश्वर महादेव का मंदिर है. पिरामिडनुमा इस मंदिर की उत्तम उत्कीर्णता ने उस के पत्थरों को जीवंत बना दिया है. शिल्पकला का यह एक अद्वितीय नमूना है, जो 18 वीं शताब्दी के मध्य में बनाया गया था.

कसौल: पार्वती नदी के किनारे और कुल्लू से 42 कि. मी. दूर इस स्थान को छुट्टियां मनाने का बेहतर स्थान कहा जा सकता है. यहां नदी का जल इतना स्वच्छ है कि नदी की सतह भी देखी जा सकती है. यही नहीं, यहां ट्राउट मछली के शिकार की भी सुविधा है.

मणिकरन: पुलगा और पिन पार्वती दर्रे को पैदल जाने वाले मार्ग पर कुल्लू से 45 कि.मी. दूर गरम पानी के स्रोत हैं, जहां हजारों पर्यटक स्नान करते हैं. यह पानी इतना गरम होता है कि दाल और चावल के दाने आसानी से उबाले जा सकते हैं.

मनाली

मनाली कुल्लू घाटी का अंतिम पर्यटन स्थल है. कुल्लू जा कर हर पर्यटक मनाली जाना चाहेगा. कुल्लू और मनाली के मध्य की दूरी 40 किलोमीटर है. देवदार के पेड़ों से घिरा और खामोश पर्वतों के बीच बसा मनाली समुद्र की सतह से लगभग 6,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है. बर्फ से लदेलदे पहाड़, कलकल करते पहाड़ी झरने,

Prestige
प्रेस्टीज
ttk उत्पादन
Prestige
25
SILVER JUBILEE
1959-85

जलकुंड, दूरदूर तक फैली हरी घास के मैदान और सैकड़ों किस्म के खिले हुए फूल यहां के मुख्य आकर्षण हैं. मनाली लाहौल और स्पीति घाटियों का प्रवेश द्वार है.

कहां ठहरें?

मनाली में बस अड्डे के पास कई सस्ते और महंगे होटल और लाज हैं, जिन में स्तर के अनुसार ठहरा जा सकता है. स्काईलार्क गेस्ट हाउस, काठमांडू गेस्ट हाउस, सनफ्लावर गेस्ट हाउस, माउंट व्यू हाउस आदि कुछ अच्छे आवासगृह हैं. सरकारी आवासों में हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम, टूरिस्ट लाज, टूरिस्ट रेस्ट कैंप, यूथ होस्टल, पी. डब्ल्यू. डी. का रेस्ट हाउस भी ठहरने की उत्तम जगहें हैं.

क्या देखें?

वशिष्ठ मंदिर: 1,800 वर्ष पुरानी वशिष्ठ की प्रतिमा वाले इस मंदिर का निर्माण राजा तक्षपाल द्वारा कराया गया था. कहा जाता है कि कभी यहां वशिष्ठ ने तपस्या की थी. यहां गरम पानी के स्रोत हैं जहां नहाने की विशेष व्यवस्था है.

हिडिंबा देवी का मंदिर: मनाली में यों तो कई आकर्षण हैं, लेकिन पैगोडा शैली में बना भीम की पत्नी हिडिंबा देवी का यह डूंगरी मंदिर ऐतिहासिक वास्तुकला की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण आकर्षण है. 16 वीं सदी में राजा बहादुर सिंह द्वारा बनवा गए इस मंदिर के चारों ओर घने देवदार के वृक्ष हैं. यहां मई माह में बहुत बड़ा मेला भी लगता है.

नेहरू कुंड: मनाली से 5 किलोमीटर दूर प्रिनी गांव के पास यह एक अर्जुन नामक गुफा के पास रमणीय जगह है. यहां की ठंडी हवाओं और ठंडे पानी का आकर्षण पर्यटकों को रोकने में पूर्णतः सक्षम है.

रोहतांग दर्रा: मनाली से 51 किलोमीटर दूर केलौंगमनाली राजमार्ग पर स्थित यह स्थान बर्फीले पहाड़ों का अवलोकन करने के लिए एकदम उपयुक्त है. इस के पास ही सोनापानी ग्लेशियर भी देखने लायक है. यह दर्रा ही लाहौल और स्पीति घाटी को कुल्लू घाटी से अलग करता है. यही व्यास नदी का उद्गम स्थान भी है. गरमी के मौसम में मनाली से केलौंग के लिए नियमित बसें भी चलती हैं.

कोठी: मनाली से 13 किलोमीटर दूर कोठी एक शांत लेकिन मनोरम स्थल है. यहां पी.डब्ल्यू.डी.का एक विश्रामगृह भी है, जहां से घाटी का सौंदर्य निहारा जा सकता है.

यहां के बने पहाड़ी आभूषण, ऊनी कंबल और शाल सस्ते मिलते हैं. लेकिन सब से प्रसिद्ध कुल्लू मनाली के लाल सेब हैं, जिन की पेटियां खरीदी जा सकती हैं.

डलहौजी

बालुन, कथलोग, पोटरीन, तेहरा और बकरौता नामक पांच पहाड़ियों पर बसा डलहौजी 13 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हिमालय प्रदेश का एक मनोरम और सस्ता पर्वतीय पर्यटन स्थल है. यह पर्यटन स्थल पठानकोटचंबा मार्ग पर स्थित है.

लार्ड डलहौजी के नाम पर समुद्र तट से 2,036 मीटर की ऊंचाई पर बसा डलहौजी अपने नैसर्गिक सौंदर्य के लिए खासा चर्चित है. यहां की हरीभरी पहाड़ियां, चीड़ और बलूत के ऊंचेऊंचे वृक्ष तथा उन से गुजरने वाली पगडंडियां हर वर्ष कई हजार देशी और विदेशी पर्यटकों को यहां खींच लाती हैं. पहाड़ियों के बीच से कलकल बहती चिनाब, व्यास और रावी नदियों की धाराएं भी पर्यटकों का मन लुभाती हैं.

कब जाएं?

डलहौजी जाने के लिए मार्च से जुलाई और सितंबर से नवंबर तक का समय उपयुक्त रहता है.

प्रमुख नगरों से दूरी

पठानकोट से डलहौजी 80 कि.मी., दिल्ली से डलहौजी (वाया पठानकोट) 566 कि.मी., बंबई से डलहौजी (वाया पठानकोट) 2,108 कि.मी., हावड़ा से डलहौजी (वाया पठानकोट 1,949 कि.मी., मद्रास से डलहौजी (वाया दिल्ली, पठानकोट) 2,760 कि.मी..

वायु मार्ग से: डलहौजी में कोई हवाई अड्डा नहीं है, इसलिए किन्हीं भी प्रमुख हवाई अड्डों से पहले अमृतसर जाना होगा. वहां से बसों और टैक्सियों द्वारा डलहौजी पहुंचा जा सकता है.

रेल द्वारा: निकटतम रेलवे स्टेशन पठानकोट डलहौजी से 80 कि.मी. की दूरी पर है. जहां बंबई, कलकत्ता और दिल्ली से रोज नियमित ट्रेनें आती हैं. अमृतसर जाने वाली कई ट्रेनें भी यहां से गुजरती हैं. वहां से आगे का रास्ता बसों और टैक्सियों द्वारा तय किया जा सकता है.

बस द्वारा: पठानकोट और चंबा से डलहौजी के लिए नियमित बस सेवाएं हैं, जो धर्मशाला से चलती हैं. इसके अलावा हि.प्र. निगम की बसों में पर्यटन विकास विभाग द्वारा आयोजित यात्राओं का आनंद भी उठाया जा सकता है.

कहां ठहरें?

डलहौजी में ठहरने की उचित व्यवस्था है. यहां के सरकारी आवासों में भी संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर आरक्षण करवाया जा सकता है. बस अड्डे के निकट माउंट व्यू, ग्रांड व्यू, ग्लोरी और लाल होटलों में आसानी से रुका जा सकता है. क्योंकि यहां सस्ते और महंगे दोनों तरह के होटल हैं, इसलिए कोई खास कशमकश नहीं करनी पड़ती. इस के अलावा हेमकुंड, मेहर, न्यू मेट्रो, अरोमा, कलैरिज और सुभाष चौक एवं जी.पी.ओ. चौक के पास डलहौजी क्लब में भी पर्यटक रुक सकते हैं. वैसे सरकारी बंगलों और यूथ होस्टल में रहना ज्यादा सस्ता पड़ता है, जिन के आरक्षण के लिए डलहौजी में डिप्टी पर्यटन विकास अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है. हां, खानेपीने की सामग्री का इंतजाम खुद ही करना होगा. वैसे अब स्थानीय बाजार में काफी दुकानें खुल गई हैं.

क्या देखें?

डलहौजी और इस के आसपास प्राकृतिक सौंदर्य व पिकनिक के लिए आकर्षक स्थलों में सतधारा, पंजपुला, कालाटोप, खजियार, झंदरी घाट आदि विशेष रूप से देखने के लायक हैं.

सतधारा: यह डलहौजी पंजपुला मार्ग पर एक जलप्रपात है, जिस का पानी अत्यंत स्वच्छ और रोगों को खत्म करने वाला कहा जाता है. अभ्रक के पहाड़ों से एक मोटी धारा के रूप में गिरने वाला यह झरना कभी छोटीछोटी 7 धाराओं में गिरता था, जिस के कारण इसे सतधारा कहा जाता है.

पंजपुला: डलहौजी के अजीत सिंह रोड पर प्रमुख डाकघर से लगभग 2 कि.मी. की दूरी पर कलकल झरनों से घिरा यह एक रमणीय स्थल है. यह एक प्राकृतिक जलकुंड है, जिस से बहती एक धारा बरबस ही पर्यटकों का मन मोहती है. इस के अलावा यहां के चमकते पत्थर भी एक अलग महत्त्व रखते हैं. पांच छोटे पुलों के नीचे बहती जलधारा के कारण इस का नाम पंजपुला पड़ा. यहीं पर क्रांतिकारी शहीद भगतसिंह के चाचा अजीत सिंह की समाधि भी है.

झंदरी घाट: पुरातात्त्विक स्थलों में रुचि रखने वाले पर्यटक झंदरी घाट जरूर जाना चाहेंगे, जहां पुराने महलों के खंडहर और अन्य पुरानी इमारतें देखी जा सकती हैं. पिकनिक के लिए यह अच्छा स्थान है.

कालाटोप: यह मुख्य डाकघर से 8.5 कि.मी. की दूरी पर है, जहां जीप द्वारा पहुंचा जा सकता है. यहां स्थित फारेस्ट रेस्ट हाउस में आरक्षण के लिए डलहौजी के वन क्षेत्रीय अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है.

खजियार: चारों ओर जंगलों से घिरा यह क्षेत्र प्राकृतिक सुषमा से भरपूर है. इस क्षेत्र के बीचोबीच तश्तरीनुमा एक झील है जो 1.5 कि.मी. लंबी है. यहां के लिए डलहौजी से प्रत्येक सुबह बसें जाती हैं और शाम को लौट आती हैं. इस क्षेत्र में ऊंचाई पर विशेषकर बर्फ लाइन के नजदीक चीते, तेंदुए, जंगली सूअर, कस्तूरी मृग, भालू आदि दूर से यदाकदा नजर आ जाते हैं. कोई पर्यटक यदि यहां रात गुजारना चाहे तो यहां स्थित डाक बंगले तथा रेस्ट हाउसों में आसानी से जगह मिल जाती है.

डैनकुंड: डलहौजी से 8 किलोमीटर दूर इस स्थान से प्राकृतिक छटा के साथसाथ रावी, व्यास और चिनाब को सांप की तरह बल खा कर बहते हुए भी देखा जा सकता है.

इस के अलावा 56 कि.मी. की दूरी पर स्थित चंबा मंदिर को देख कर पर्यटक अपनी ऐतिहासिक पसंद को पूरा कर सकते हैं.

क्या खरीदें?

गांधी बाजार और बाबू बाजार यहां के विशेष लेकिन छोटे बाजार हैं, जहां से हाथ की बनी शालें और आलूबुखारा और खूबानी जैसे फल आसानी से खरीदे जा सकते हैं.

चंबा

डलहौजी से 56 किलोमीटर दूर और सुमद्र की सतह से 996 मीटर की ऊंचाई पर बसा चंबा रावी नदी के किनारे पर एक समतल पहाड़ी पर स्थित है, जो अपने विशाल और पुराने मंदिरों के लिए प्रसिद्ध हैं.

चारों ओर घनी बर्फ से ढकी पहाड़ियों पर स्थित चंबा में शिवपार्वती के छः मंदिर हैं, जिन की बेजोड़ नक्काशी और कला के नमूने पर्यटकों को काफी देर रोके रहते हैं. चंपा के वृक्षों से घिरा चंबा 10 वीं सदी में राजा साहिल वर्मा की बेटी चंपावती के नाम पर बसा है. पहले इस का नाम चंपावती ही था.

अमजद अली परिवार
लिप्टन 'घराने' के
सच्चे जानकार
सरोद के जादूगर अमजद अली खां और उनकी पत्नी शुभलक्ष्मी चाय के मामले में बिल्कुल एकमत हैं। दोनों को पसन्द है—लिप्टन। वे इसके ताज़गी भरे फ़्लेवर और मनमोहक स्वाद के दीवाने हैं। एक बात और—यह उन्हें हर जगह मिलती भी है...विदेशों में भी। तभी तो अगर उस्ताद एक के बाद दूसरी कप की फरमाइश करते हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं!
LIPTON YELLOW
TIGER
Sterling
RICHBRU
GREEN LABEL
CLARION C-LIP

चंबा में वर्षपर्यंत रौनक रहती है. जगहजगह मेले आयोजित किए जाते हैं. सब से प्रसिद्ध यहां का भिंजार का त्योहार मेला है, जो हर साल सावन के तीसरे रविवार को लगता है. इस के अलावा हर वर्ष अप्रैल में लगने वाला 'सूही मेला' भी पर्यटकों के आकर्षण का खास केंद्र है.

कब जाएं?

चंबा जाने के लिए फरवरी से जून तक का समय उपयुक्त रहता है क्योंकि इस दौरान पर्यटक चंबा में लगने वाले वसंत मेले का आनंद भी ले सकते हैं.

कैसे जाएं?

पठानकोट से चंबा की दूरी 118 किलोमीटर है, जो देश के सभी प्रमुख नगरों से बस और रेल मार्गों द्वारा जुड़ा हुआ है. पठानकोट से चंबा के लिए नियमित बसें मिलती हैं. इस के अलावा डलहौजी से भी प्राइवेट टैक्सियां और जीपें किराए पर मिल जाती हैं. दिल्ली से चंबा के लिए हर रात 10 बजे बसें मिलती हैं, जो अगले दिन शाम को वहां पहुंचा देती हैं. शिमला से भी चंबा के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है.

कहां ठहरें?

चंबा में ठहरने के लिए आरक्षण कराना जरूरी है, क्योंकि सीजन में यहां जगह मिलना बहुत मुशकिल होता है. चंबा में सस्ते और महंगे दोनों तरह के होटल हैं जहां पर्यटक जेब के अनुसार रुक सकते हैं. इस के अलावा सर्किट हाउस, पी. डब्ल्यू. डी. रेस्ट हाउस, फारेस्ट रेस्ट हाउस, म्यूनिसिपल रेस्ट हाउस, टूरिस्ट इन और टूरिस्ट लाज में भी पूर्व आरक्षण के आधार पर ठहरा जा सकता है. चौगान में बहुत से होटल और धर्मशालाएं हैं, जो पर्यटन विभाग द्वारा संचालित किए जाते हैं.

क्या देखें?

चारों ओर बर्फ से ढके चंबा में गिरते झरनों और फुसफुसाती प्रकृति के बीच पर्यटकों को देखने के लिए यों तो सारा चंबा ही आकर्षण का केंद्र है, लेकिन चौगान, लक्ष्मी नारायण मंदिर, भूरीसिंह संग्रहालय, चौमुंडा मंदिर, सरोल, मनीमहेश झील,

चंबा के स्थानीय निवासी पर्यटकों का ध्यान बरबस ही आकृष्ट कर लेते हैं. ▼

रंगमहल और पंगी यहां के विशेष आकर्षण हैं.

लक्ष्मीनारायण मंदिर: यह प्राचीन मंदिर शिव और विष्णु की कलात्मक मूर्तियों और बेजोड़ नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है.

चौगान: चौगान अपने मेलों के लिए पर्यटकों की नजर में खास स्थान रखता है. यह एक आम व्यापारिक स्थल है, जहां होने वाली विशेष सांस्कृतिक गतिविधियां पर्यटकों को रोमांचित करती हैं.

भूरीसिंह संग्रहालय: प्राचीन इतिहास के साक्षी इस संग्रहालय में कांगड़ा और बशोली के प्राचीन चित्र और शिलालेखों की धरोहरें सुरक्षित हैं.

सरोल: चंबा से 11 किलोमीटर दूर घाटी में बसा सरोल एक सुंदर पर्यटन एवं पिकनिक स्थल है, जो रावी नदी के दाएं किनारे पर है. यहां पर्यटक, कृषि, फार्म और अन्य वन्य जानकारियां भी ले सकते हैं.

मनीमहेश झील: भरमौर से 35 किलो-मीटर की दूरी पर बनी इस झील में हर वर्ष जन्माष्टमी के अवसर पर हजारों लोग स्नान करने आते हैं.

रंगमहल: चंबा में स्थित रंगमहल बाग-बगीचों से सुसज्जित एक किले रूपी आवास गृह जैसा है. इस रंगमहल के भित्ति चित्रों का निर्माण 18 वीं शताब्दी में किया गया था.

पंगी: चंबा से 137 किलोमीटर दूर पंगी घाटी समुद्र तल से 8,000 फुट ऊंचे स्थान पर रमणीय सौंदर्य से भरा स्थान है. अपनी आकर्षक पर्वत शृंखलाओं और बल खा कर बहती चंद्रभागा नदी के कारण यह पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण है. पंगी की एक अन्य विशेषता यहां के रमते लोग और हर अवसर पर होने वाले नृत्य हैं, जो पुरुष और स्त्रियां दोनों मिल कर करते हैं. पर्वतारोहियों और ट्रेकिंग करने वालों के लिए यह रोमांचकारी जगह है.

क्या खरीदें ?

चंबा को दूध और शहद की घाटी कहा जाता है. पर्यटक चाहें तो यहां से अच्छा शहद खरीद सकते हैं. इस के अलावा, चप्पलें, गरम शालें और चमड़े की अन्य चीजें भी यहां से उचित मोलभाव कर के खरीदी जा सकती हैं. लेकिन इस के लिए जरूरी है कि आप अपने को अजनबी साबित न होने दें. अन्यथा ठगे जाने का डर है.

पर्यटन कार्यालय का पता :

क्षेत्रीय प्रबंधक, हिमाचल प्रदेश. पर्यटन विकास निगम, पर्यटन सूचना कार्यालय, डलहौजी.

शिमला

हिमालय की चंद्राकार पहाड़ी पर लगभग 2,213 मीटर (लगभग 7,000 फुट) की ऊंचाई पर बसा शिमला हिमाचल प्रदेश की राजधानी होने के साथसाथ भारत का एक पुराना पर्वतीय पर्यटन स्थल भी है.

18 वर्ग कि.मी. में फैला शिमला 1948 से पहले भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी था. यह अगरेजों के काल में वायसराय का ग्रीष्मकालीन निवास स्थान भी था. पहले शिमला नेपाल के अधीन था, जिसे अंगरेजों ने नेपाल के महाराज से लड़ाई में जीत लिया था. 1819 में लेफ्टीनेंट रोस ने शिमला में रहने के लिए लकड़ी का एक छोटा सा मकान बनाया. 1821 में मेजर कैनेडी ने वहां एक कोठी बनवाई और 1829 में लार्ड एमहर्स्ट के बाद तो यहां बहुत से यूरोपियन रहने लगे.

1947 से 1953 तक शिमला पूर्वी पंजाब का मुख्यालय रहा. 1966 में पंजाब और हरियाणा के बंटने के बाद से शिमला हिमाचल की राजधानी के रूप में विकसित हुआ है, जहां प्रति वर्ष हजारों पर्यटक वहां

की शीतल आबोहवा, मनोहारी प्राकृतिक दृश्यों, घास के हरेभरे मैदान और देवदार एवं ओक के ऊंचेऊंचे वृक्षों से घिरे लाल रंग की छतों वाले मकानों को देख कर रोमांचित होते रहे हैं.

कब जाएं?

शिमला जाने के लिए यों तो कभी भी जाया जा सकता है, लेकिन हर मौसम में वहां का अलग ही नजारा होता है. सर्दी के मौसम में धुली सफेद चादर सी बर्फ और रिमझिम पड़ती बरसात शिमला का एक अलग आकर्षण है. लेकिन अत्यधिक सर्दी में बर्फ ज्यादा पड़ने से सारे रास्ते अवरुद्ध हो जाने के कारण पर्यटकों को परेशानी उठानी पड़ती है. इसलिए अप्रैल से अक्तूबर तक का समय शिमला जाने के लिए उपयुक्त रहता है. इस मौसम में शिमला की सुहावनी छटा और भी बढ़ जाती है.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली से 590 कि.मी., कलकत्ता से 2,031 कि.मी, बंबई से, 2,132 कि.मी., कालका से 88 कि.मी., चंडीगढ़ से 117 कि.मी., अमृतसर से 741 कि.मी.

रेलमार्ग: रेल द्वारा जाने वाले पर्यटकों को शिमला के सब से नजदीकी रेलवे स्टेशन कालका में गाड़ी छोड़नी पड़ेगी. इस के बाद वहां से शिमला तक का 6 घंटे का लंबा रास्ता खिलौना ट्रेन से तय करना पड़ेगा, जिस के दौरान पर्यटक लगभग 103 छोटीमोटी सुरंगों को पार करेंगे. और इसी दौरान वहां के मनोहारी दृश्यों का आनंद उठा सकेंगे.

बस द्वारा: शिमला, दिल्ली, चंडीगढ़, अंबाला, कालका और पंजाब व हरियाणा के सभी प्रमुख शहरों से बस मार्गों द्वारा जुड़ा हुआ है. यहां से कुल्लूमनाली, कसौली, धर्मशाला और चैल के लिए भी आसानी से बस सुविधाएं उपलब्ध हो जाती हैं.

इस के अलावा हिमाचल पर्यटन की साधारण और डीलक्स बसों से जाने के लिए भी, हिमाचल टूरिस्ट आफिस, 210, 21 कनिष्क शापिंग प्लाजा, 19 अशोक रोड नई दिल्ली से संपर्क किया जा सकता है.

अन्य संपर्क सूत्र: हिमाचल टूरिस्ट आफिस, सेक्टर 11, चंडीगढ़.

वायु मार्ग द्वारा: हवाई जहाज से शिमला जाने वाले पर्यटकों को नजदीकी हवाई अड्डे चंडीगढ़ पर उतरना पड़ेगा. चंडीगढ़ देश के सभी बड़े नगरों से हवाई मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. चंडीगढ़ से शिमला तक का सफर रेल, बस या टैक्सी द्वारा तय किया जा सकता है.

कहां ठहरें:

शिमला में महंगे और सस्ते दोनों तरह के होटल हैं. अधिकांश होटल माल रोड और कोर्ट रोड पर हैं.

महंगे होटलों में डिप्लोमेट, ओबराय, सिसिल, क्लार्क, हिमलैंड और ब्राइटलैंड कुछ सुविधाजनक होटल हैं. इसलिए मयूर, फ्लोरा, न्यू गुलमर्ग, कशमीर होटल उन पर्यटकों के लिए भी बनाए गए हैं जो महंगे होटलों का खर्चा नहीं उठा सकते. होटलों के अलावा लाज, धर्मशालाओं और रेस्तोरां भी ठहरने के लिए उपयोग में लाए जा सकते हैं. अधिक जानकारी के लिए स्थानीय पर्यटन कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है.

शिमला का भीड़भाड़ वाला इलाका माल रोड
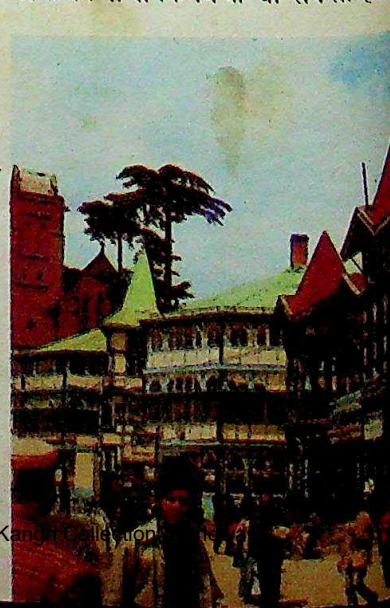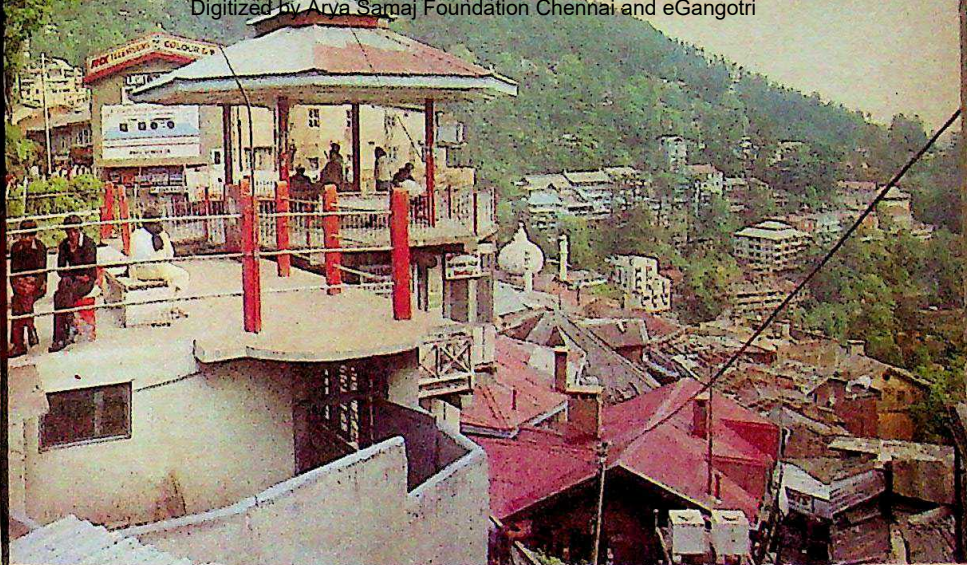
...मला का रिज. यहीं से जाखू मंदिर को एक ...र्ग जाता है.

...या देखें?

शिमला में दर्शनीय स्थलों पर जाने के ...ए हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम ...रा संचालित बसों की सहायता ली जा ...कती है, जिस के लिए पहले से आरक्षण ...रा लेना उचित रहता है.

पहाड़ी पर बसे शिमला के मुख्य ...जार माल रोड पर शाम के समय पर्यटकों ...ी खासी चहलपहल रहती है. यहां कई ...टल, थिएटर, क्लब और मनोरंजन के ...धन हैं. घुड़सवारी के शौकीन लोगों के ...ए शिमला एक उत्तम स्थान है. यहां ...ल्फ और बर्फ स्केटिंग की सुविधा भी है.

जाखूहिल: शिमला से 2 किलोमीटर ...र जाखू शिमला की सर्वोच्च पहाड़ी है. ...हां एक तरफ से पूरे शहर का भव्य नजारा ...जर आता है तो दूसरी तरफ हिमालय ...र्वत शृंखलाओं की भव्य झांकी नजर आती ... यहां हनुमान का एक मंदिर है. जाखू में ...दर बहुतायत से मिलते हैं जो खानेपीने का ...मान देखते ही छीनने के लिए दौड़ पड़ते हैं. ये बंदर इतने चालाक होते हैं कि अगर आप उन के सामने हाथ हिला कर कहेंगे कि आप के पास कुछ नहीं है तो भी वे आप की जेबें टटोलने के लिए आगे बढ़ आएंगे.

चाडविक जलप्रपात: 7 किलोमीटर की दूरी पर स्थित चाडविक जलप्रपात शिमला का एक बहुत ही मनोरम पिकनिक स्थल है. घनी झाड़ियों के बीच घिरे झरने के आसपास यहां हर समय पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है.

राज्य संग्रहालय: माल रोड पर स्थित इस संग्रहालय में समूचे हिमाचल प्रदेश की कला और संस्कृति एकत्रित है, जो राज्य के विभिन्न हिस्सों से लाई गई है. यह संग्रहालय सोमवार को बंद रहता है.

प्रोसपेक्ट हिल: शिमला से 5 किलोमीटर दूर और 2,145 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस स्थान पर कामना देवी का मंदिर है. बालूगंज से 15 मिनट की चढ़ाई के बाद यहां पहुंचा जा सकता है. यहां से शिमला, जतोग, समरहिल, तारादेवी और सोलन का भव्य नजारा नजर आता है. यहां से सूर्यास्त और चंद्रोदय का दृश्य एकसाथ देखा जा सकता है.

खूबसूरती से भरपूर चैल पैलेस
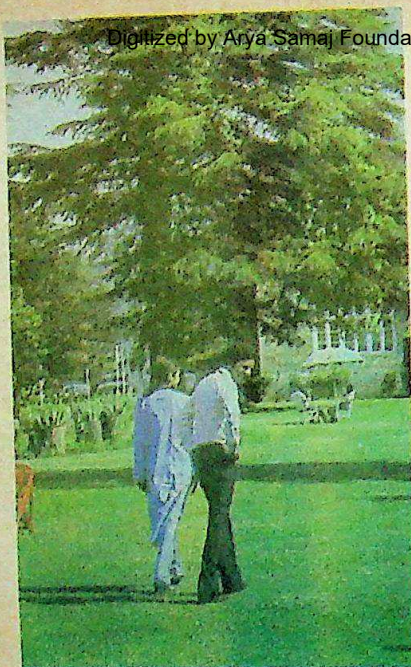
ग्लेन: शिमला से 4 किलोमीटर पर ग्लेन भी शिमला का एक मशहूर पर्यटन एवं पिकनिक स्थल है. गर्मी में यहां पिकनिक मनाने आए लोगों की काफी चहलपहल रहती है. यहां पहुंचने के सुविधाजनक दो मार्ग हैं. एक तो होटल सिसिल के नजदीक और दूसरा कैनेडी हाउस के बराबर में.

तारादेवी: 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस मंदिर को देखने के लिए रेलगाड़ी या बस दोनों से आयाजाया जा सकता है. यहीं स्काउट का मुख्यालय भी है.

क्रेगनानो: पिकनिक के लिए मशहूर यह स्थान घास के मैदानों और बगीचों से घिरा हुआ है. यहां ठहरने के लिए पहाड़ी के ऊपर एक विश्रामगृह भी है.

तत्तापानी: शिमला से 43 किलोमीटर की दूरी पर स्थित तत्तापानी में झुरमुटों से घिरा गंधक के गरम पानी का स्रोत है, तत्तापानी में पर्यटक सार्वजनिक निर्माण विभाग के विश्रामगृह में ठहर सकते हैं.

नालडेरा: नालडेरा की शिमला से दूरी 22 किलोमीटर है. यहां देवदार तथा चीड़ के वृक्षों से घिरे गहरे ऊंचेऊंचे टीले हैं. सतलुज नदी के प्रवाह ने इस स्थान पिकनिक के लिए मनोरम बना दि भारत का सब से प्राचीन नौ छिद्र गोल्फ का मैदान भी यहीं है. महंग मंदि इस के समीप है. यहां काफी चहल रहती है.

चैल: खूबसूरती से लबालब चैल मनोरम स्थल है. यहां से कुछ ही दू बर्फ से ढका हिमालय है. चैल के नी सतलुज नदी घाटियों में से हो कर बह विश्व का सब से ऊंचा क्रिकेट मैदान भी है. एक पुराने राजमहल में बने एक हो यहां सुविधानुसार ठहरने के साथ ही म मारने का आनंद भी लिया जा सकता

कुफरी: कुफरी शिमला से किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक अ सुंदर स्थान है. फरवरीमार्च में यहां वाले शीतकालीन खेल, उत्सव पर्यटक आकर्षित करते हैं. स्कीइंग के शौकीन के लिए कुफरी बहुत ही उपयुक्त जग यहीं एक आलू संस्थान भी है.

वाइल्ड फ्लावर हाल: देवदार ओक के वृक्षों के बीच से गुजर कर 'वा फ्लावर' नामक इस जगह पर वायसराय का निवास स्थान था. लेकिन उसे होटल बना दिया गया है. शिमला किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस स्था जाते समय पर्यटक विभिन्न पक्षियों किलकिलाहटें सुन सकता है.

नारकंडा: शिमला से 64 कि.मी. नारकंडा से बर्फ से ढका हिमालय पर्वत दिखाई देता है. सर्दियों में यहां स्कीइं की जा सकती है. यहां का घना क्षेत्र आ की खेती के लिए उपयुक्त है.

ज्यादा जानकारी के लिए लिखें:

हिमाचल टूरिस्ट आफिस, क शापिंग प्लाजा, 19, अशोक रोड दिल्ली.

पराशर झील

हिमाचल प्रदेश के मंडी जिला की उतरशाला पर्वत श्रृंखला की करीब आठ हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित है पराशर झील... जिस की मनोरम दृश्यावली पर्यटक के मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ जाती है.

पराशर झील तक जाने के लिए दो रास्ते हैं. एक कुल्लू से ज्वालापुर होते हुए और दूसरा मंडी मुख्यालय से कटोला होते हुए बागी और वहां से पैदल चल कर. बागी से पराशर तक की यात्रा काफी थकानपूर्ण है. यहां तक पहुंचने के लिए टेढ़ीमेढ़ी पगडंडियों से गुजरना पड़ता है, लेकिन ज्योंज्यों पर्यटक ऊपर चढ़ता जाता है त्योंत्यों उसे लगता है कि प्रकृति एक नव यौवना की तरह सजधज कर बाहें पसारे उस के स्वागतार्थ खड़ी है. ऐसे में वह अपनी थकान को भूल कर प्रकृति की मनमोहक अदाओं में खो सा जाता है. विशालकाय चीड़, बान व देवदार के घने जंगलों से गुजरते हुए भय और रोमांच की मिलीजुली अनुभूति होती है. छोटेछोटे पहाड़ी झरनों का कर्णप्रिय संगीत, वन फूलों की भीनीभीनी महक, पक्षियों का मधुर कलरव सब पर्यटकों को आत्म विभोर कर देते हैं.

घने जंगलों का सिलसिला खत्म होते ही, वनस्पति रहित छोटीछोटी पहाड़ियां शुरू हो जाती हैं, जहां हृष्टपुष्ट गूजर युवक और कद्दावर गौरवर्णी सुंदर गूजरियों की मोहक मुसकान सारी थकान को दूर कर देती है. चूंकि पराशर एक बहुत बड़ी चरागाह भी है, इसलिए गर्मियां शुरू होते ही मैदानी इलाकों से मुसलमान गूजर अपनी भैंसों के साथ यहां पहुंच जाते हैं. गर्मियां और बरसात वे यहां गुजारते हैं. छोटेछोटे झुंडों में चरती हुई भैंसें और गूजरों के दड़वे बहुत सुंदर दिखाई देते हैं.

पराशर एक धार्मिक स्थल भी है. कहा जाता है कि महर्षि पराशर ने इस शांत और सुरम्य पावन स्थली को अपनी तपोभूमि के रूप में चुना था. उन्हीं की स्मृति में यहां एक मंदिर की स्थापना की गई. यह मंदिर लगभग सात सौ वर्ष पुराना है. इस का निर्माण मंडी के राजा बाणसेन ने किया. इस के साथ ही यहां एक खूबसूरत झील है. नाव के आकार की यह झील यहां के अलौकिक सौंदर्य में बढ़ोतरी करती है.

जून के महीने में यहां भारी मेला लगता है, जिसे 'संरनाहुली' के नाम से पुकारा जाता है. इस दिन लोग झील के पानी से स्नान करते हैं. वन विभाग द्वारा निर्मित नवीन विश्राम गृह और देव पराशर की सराय पर्यटकों के ठहरने के लिए सुविधापूर्ण हैं.

—मुरारी शर्मा

"गायब!"

ग़ायब!

दर्द और पीड़ा बस ग़ायब!

दस प्राकृतिक तत्व आराम पहुंचाने वाले एक बाम में मिलाए गए हैं - जिसे कहा जाता है अमृतांजन. ९० वर्ष से अधिक समय से विश्वसनीय.

सिरदर्द हो, बदनदर्द या मोच, इनके पहले लक्षण दिखते ही अमृतांजन हल्के हल्के मलिए. इसके पहले कि आप इसे महसूस कर पाएं, दर्द... ग़ायब!

अमृतांजन

जल्द लौटा लाए-आपकी मुस्कान!

OBM 824 HIN

अमृतांजन लिमिटेड

दिल्ली

जिस रफ्तार से समय दौड़ रहा है उसी रफ्तार से दिल्ली का नाम इतिहास के पन्नों पर अंकित होता जा रहा है. उसे ऐतिहासिक नगर भी कहा जाता है क्योंकि दिल्ली का हर पत्थर अपने पास एक अलग कहानी रखता है.

कहते हैं जिस समय बंबई और मद्रास छोटे व्यावसायिक केंद्र थे तथा कलकत्ता का विकास एक गांव के रूप में हुआ था, उस के 500 वर्ष पूर्व से दिल्ली को राजधानी के रूप में जाना जाता था. खास तौर पर दिल्ली को हासिल करने के लिए वर्षों पूर्व हिंदू तथा मुसलिम राजाओं में युद्ध हुआ है, लेकिन दिल्ली पर अधिकांशतः मुगलों का ही अधिकार रहा है.

अब ऐतिहासिक दिल्ली और वर्तमान दिल्ली में बहुत बड़ा अंतर आ गया है. पहले दिल्ली का परिक्षेत्र जामा मसजिद और चांदनी चौक के आसपास तक ही सीमित था, लेकिन अंगरेजी राज्य के प्रतिस्थापित होने के बाद दिल्ली को नए सिरे से बसाया गया और निकटवर्ती पहाड़ी इलाकों को भी पुरानी दिल्ली के समतल कर दिया गया, जो वर्तमान समय में नई दिल्ली के नाम से जानी जाती है.

दिल्ली में मकानों तथा चौड़ी सड़कों के निर्माण के बावजूद दर्शनीय स्थलों को खत्म नहीं किया गया, बल्कि उन के रखरखाव आदि की अच्छी व्यवस्था की गई. दिल्ली के पुराने दर्शनीय स्थलों की अपेक्षा बहुत से नए दर्शनीय स्थल भी उभर कर आए हैं.

कैसे पहुंचें?

राजधानी होने के कारण दिल्ली पहुंचने के लिए सभी प्रकार की यातायात सुविधाएं हैं.

वायु मार्ग: इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से नियमित रूप से राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों की व्यवस्था है. शहर से 13 कि.मी. दूर होने के कारण आनेजाने में भी कोई असुविधा नहीं होती. दिल्ली के लिए सभी महानगरों से नियमित उड़ानें होती हैं.

रेल मार्ग: दिल्ली उत्तर रेलवे का मुख्यालय है तथा दिल्ली पहुंचने के लिए देश के सभी हिस्सों से रेलें चलती हैं. दिल्ली के मुख्य रेलवे स्टेशन नई दिल्ली रेलवे स्टेशन, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन,

दिल्ली का लाल किला : हिंदूमुसलिम वास्तुकला का अच्छा नमूना.
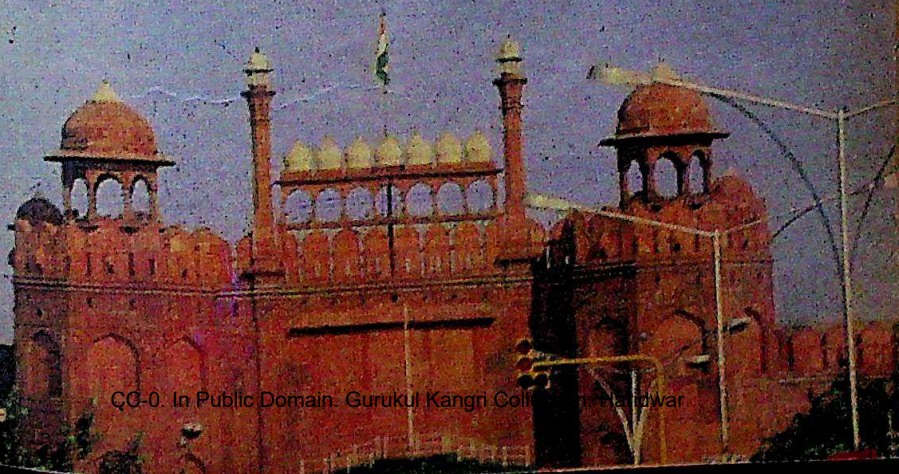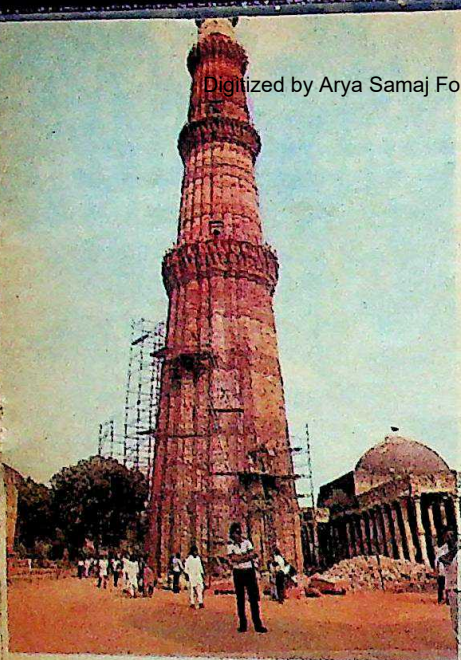
निजामुद्दीन, सराय रोहिल्ला तथा दिल्ली कैंट हैं.

सड़क मार्ग: दिल्ली के कशमीरी गेट के निकट अंतर्राज्यीय बस अड्डा है, जहां देश के अधिकतर हिस्से में जाने के लिए बसों की अच्छी व्यवस्था है.

कहां ठहरें?

दिल्ली में ठहरने के लिए सभी प्रकार के छोटे तथा बड़े होटल और लाज हैं, जहां कम से कम 25 रुपए तथा अधिकतम 2,000 रुपए में ठहरा जा सकता है. रेलवे स्टेशनों तथा बस अड्डे के पास होटलों की भरमार है.

होटल अशोक, हयात रीजेंसी, ओबराय, ताजमहल होटल, मौर्या शेरेटन, ताज पैलेस, संतूर, इंपीरियल, कुतुब, सिद्धार्थ, सम्राट, मेरेडियन महंगे होटलों में से हैं तथा होटल एंबेसडर, डिप्लोमेट, हंस, प्लाजा, जनपथ, मरीना, राजदूत, कनिष्क, अलका, ब्राडवे, निरूला, प्रेसीडेंट, रंजीत, साप्ती, विक्रम, यार्क, फ्लोरा, लोधी, मेट्रो, रीगल, भागीरथ पैलेस आदि मध्यम श्रेणी के होटल हैं.

होटल फिफ्टी फाइव, नीरू, दि नेस्ट, शीला, अशोक यात्री निवास सस्ते और अच्छे होटलों में से हैं.

इन के अतिरिक्त अन्य होटल, लाज तथा धर्मशालाएं इस तरह हैं: ब्रिज, सेंट्रल कोर्ट, सिटी, राजदीप, होस्ट इन, नटराज साउथ इंडियन, विश्व युवक केंद्र, यूथ होस्टल, टूरिस्ट, कैंपिंग पार्क, पारसी अंजुमन धर्मशाला, गुजरात समाज सदन धर्मशाला, काली बाड़ी, भूपिंदर हाल, लक्ष्मीनारायण धर्मशाला, रेलवे रिटायरिंग रूम, पी.सी.एफ. गेस्ट हाउस, आदि.

क्या देखें?

यों तो पूरी दिल्ली ही देखने योग्य है. लेकिन पूरी दिल्ली देख पाना आसान नहीं है. अगर आप पूरी दिल्ली के दर्शनीय स्थल देखना चाहते हैं तो नई दिल्ली स्थित सिंधिया हाउस से दिल्ली परिवहन निगम की विशेष बसों द्वारा यात्रा कर के सभी दर्शनीय स्थल देख सकते हैं. ये बसें पहला टूर सुबह 7 बजे से दोपहर 1 बजे तक करती हैं. तथा दूसरा टूर दोपहर 1 बजे से शाम 7 बजे तक होता है. इस के अलावा रेलवे स्टेशन के बाहर प्राइवेट बसों वाले भी दिल्ली भ्रमण करा देते हैं. बेहतर यही होगा, इन्हीं विशेष बसों द्वारा ही दिल्ली भ्रमण करें, अन्यथा टैक्सी या स्कूटर द्वारा घूमने में कई गुना अधिक खर्च आएगा.

प्रमुख दर्शनीय स्थल

पुराना किला: कहा जाता है कि दिल्ली शहर महाभारत के नायक पांडवों ने बसाया था. पुराना किला उन के रहने के लिए बनाया गया था. उस समय यह बड़ा चमत्कारी किला माना जाता था. लेकिन पुरातत्त्व विभाग द्वारा की गई खोजों के अनुसार इसे मुगल सम्राट हुमायूं ने बनवाया और अफगान शासक शेरशाह सूरी ने इसे पूरा करवाया. इस किले के भीतर जाने पर हिंदूमुसलिम

वास्तुकला का अच्छा नमूना देखा जा सकता है. 1541 में शेरशाह द्वारा निर्मित एक मसजिद 'किला ए कुहना मसजिद' और एक स्तंभ 'शेर मंडल' भी यहां देखे जा सकते हैं, जो उस समय की वास्तुकला के अद्भुत नमूने हैं. इस के निकट ही चिड़ियाघर भी है. यह शुक्रवार को बंद रहता है.

कुतुब मीनार: कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित यह विजय स्तंभ कनाट प्लेस से 18 कि.मी. दूर है. 72.55 मीटर ऊंची और 14.40 मीटर घेरे वाली यह मीनार लाल रंग के पत्थरों से बनाई गई है. वैसे तो यह पांच मंजिल की है लेकिन एक दुर्घटना की वजह से केवल पहली मंजिल तक ही जाया जा सकता है. पहले यह सात मंजिली थी लेकिन इस की दो मंजिलें ढह चुकी हैं.

लाल किला: कनाट प्लेस से 9 कि.मी. की दूरी पर स्थित शाहजहां द्वारा बनवाया गया यह किला लाल पत्थरों से निर्मित होने के कारण लाल किला कहलाता है. लाल किले में जाने के दो रास्ते हैं. एक लाहौरी गेट, जो चांदनी चौक के सामने है और दिल्ली गेट जो दरियागंज के सामने है. हर वर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस का महान आयोजन भी यहीं किया जाता है. लालकिले में दीवाने आम, दीवाने खास, मुमताज महल, रंगमहल, खासमहल आदि यहां के मुख्य आकर्षण हैं, जिन्हें अब संग्रहालयों का रूप दे दिया गया है. इस के अलावा यहां 'प्रकाश और ध्वनि' पर आधारित शो भी आयोजित होते हैं, जिन्हें देखना एक अद्भुत अनुभव है.

जामा मसजिद: लाल किले के एकदम सामने विश्व की यह सब से बड़ी मसजिद है, जिसे शाहजहां ने बनवाया था. उस्ताद खलील खां के नेतृत्व में यह 6 वर्ष में पूरी की गई थी. लाल रेतीले पत्थर और सफेद संगमरमर से बनी इस मसजिद में एक बड़ा प्रार्थना हाल और तीन ऊंचे बल्बनुमा 'डूमस' हैं

जंतरमंतर: कनाट प्लेस स्थित यह मापक यंत्र महाराजा सवाई जय सिंह (जयपुर) द्वारा 1719 में बनवाया गया था, जिस से मुगल शासक समय के खगोलिक तंत्र का पता लगाते थे. सूर्य घड़ी के नाम से प्रसिद्ध जंतरमंतर नामक यह वेधशाला 6 बराबर स्तंभों में बंटी हुई है, जो एकदूसरे के समरूप हैं.

इंडिया गेट: इस दर्शनीय स्थल का निर्माण प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए 90,000 भारतीय सिपाहियों की याद में किया गया था. 42 मीटर ऊंचे इस द्वार का उद्घाटन 1931 में किया गया था. वर्ष 1971 में भारत और पाकिस्तान के मध्य हुए युद्ध के दौरान शहीद हुए सिपाहियों की याद में गेट के सामने एक स्तंभ की स्थापना की गई थी तथा कभी न बुझने वाली अमरज्योति भी प्रज्ज्वलित की गई थी, जो हर वक्त जलती रहती है.

सचिवालय परिसर: हरबर्ट बैकर ने रायसीना पर्वत तथा विजय चौक के मध्य के हिस्से में सचिवालय परिसर की स्थापना की थी. उत्तर और दक्षिण ब्लाक में विभाजित

इंडिया गेट : इस दर्शनीय स्थल का निर्माण प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए भारतीय सिपाहियों की याद में किया गया था.
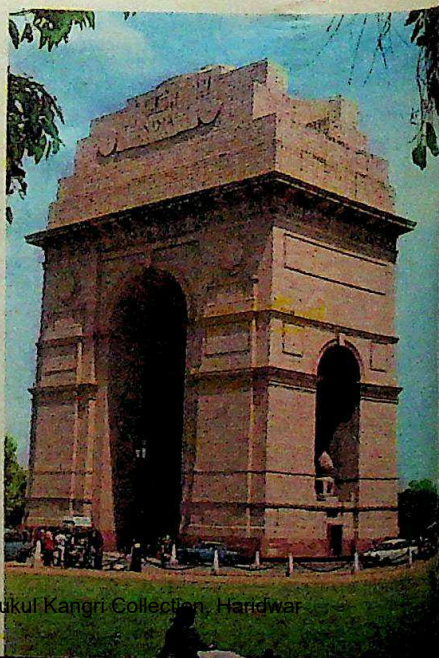
कनाट प्लेस : गोल घेरों में बना व्यावसायिक केंद्र.

सचिवालय के निकट रक्षा मंत्रालय, केंद्रीय मंत्रालय, वित्त मंत्रालय तथा प्रधान मंत्री के कार्यालय बने हैं. दोनों ब्लाकों में बनी चार मंजिली इमारतों में अन्य मंत्रियों के कार्यालय हैं.

राष्ट्रपति भवन: **रायसीना पर्वत के शिखर को तराश कर राष्ट्रपति भवन के प्रारूप का सुझाव और निर्माण एडविन लटैन ने किया था. 1929 में पहली बार इस में भारत के पहले गर्वनर जनरल रहे थे. तीन एकड़ के घेरे में बने भव्य गुंबद वाले इस भवन में नक्काशी द्वार, पत्थर के खंभों पर आधारित गलियारे, बगीचे तथा फव्वारों से होते हुए दरबार अशोक हाल हैं, जहां कार्यक्रमों का आयोजन होता है. इस भवन में नवगठित केंद्रीय मंत्रिमंडल को शपथ दिलाई जाती है. भवन के बाहर पूरब की तरफ मुगल गार्डन है जो वर्ष में एक बार आम जनता के देखने लिए खोला जाता है. फरवरी में यहां जाया जा सकता है.**

संसद भवन: **यह वह भवन है जहां लोक सभा तथा राज्य सभा के सदस्यों की अलगअलग बैठने की व्यवस्था है. जब संयुक्त सत्र होता है तो दोनों सभाओं के सदस्य एक साथ सेंट्रल हाल में बैठते हैं.**

तीन मूर्ति भवन: **इस भवन का निर्माण भारत में प्रवास करने वाले ब्रिटिश कमांडर इन चीफ के लिए किया गया था. इस भवन में पंडित जवाहरलाल नेहरू रहा करते थे. उन के निधन के बाद इसे संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया गया है.**

कनाट प्लेस: **इस व्यापारिक केंद्र का निर्माण 1931 में भारत यात्रा पर आए कनाट के. ड्यूक के लिए किया गया था. दो गोल घेरों में बना यह व्यावसायिक केंद्र आज भी दिल्ली में रहने वालों और बाहर वालों के लिए आकर्षण का केंद्र है.**

राजघाट: **इस स्थान पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि है तथा काले पत्थरों के बीच समाधि के पास कभी न बुझने वाली ज्योति प्रज्ज्वलित है. समाधि के चारों तरफ बगीचा है.**

शांति वन: **इस स्थान पर भारत के प्रथम प्रधान मंत्री दिवंगत पंडित जवाहरलाल नेहरू की समाधि बनाई गई है. यहां संजय गांधी तथा इंदिरा गांधी की समाधियां भी हैं, जिन्हें 'संजय समाधि स्थल' तथा 'शक्ति स्थल' कहा जाता है.**

इन के अलावा बिड़ला मंदिर, हुमायूं का मकबरा, सफदरजंग का मकबरा आदि भी दर्शनीय हैं.

क्या खरीदें?

दिल्ली में हर चीज खरीदी जा सकती है. यहां बड़ेबड़े व्यावसायिक केंद्र हैं. चांदनी चौक, खारी बावली, अजमल खां रोड, सदर बाजार, साउथ एक्सटेंशन, लोदी रोड, कनाट प्लेस, पालिका बाजार तथा विभिन्न सुपर बाजारों से मनचाही खरीदारी की जा सकती है.

जयपुर

जब मन कहीं घूमने को आतुर हो तो गुलाबी नगरी जयपुर की ओर निगाह केंद्रित हो जाती है. गुलाबी महलों, रंगबिरंगे बाजारों और नाचते मयूरों से जयपुर का सौंदर्य अनायास ही बांध लेता है. ढेर सारे घूमते पर्यटक आश्चर्य से यहां के भव्य महल व विहंगम दृश्य देखते रह जाते हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली	310 किलोमीटर
उदयपुर	435 किलोमीटर
आगरा	230 किलोमीटर
ग्वालियर	349 किलोमीटर
खजुराहो	608 किलोमीटर

कब जाएं?

जयपुर जाने का सर्वोत्तम समय शीतकाल के आरंभ से हो जाता है. यों तो तमाम वर्ष ही जयपुर जाया जा सकता है किंतु शीतकाल में थोड़ा गरम मौसम होने से राहत मिलती है और सैरसपाटे का आनंद भी बढ़ जाता है.

कैसे जाएं?

दिल्ली और बंबई से जयपुर के लिए प्रतिदिन दो उड़ानें हैं. इस के अतिरिक्त उदयपुर, जोधपुर, अहमदाबाद तथा देश के अन्य प्रमुख नगरों से भी जयपुर हवाई मार्ग द्वारा जुड़ा है. जयपुर का हवाई अड्डा नगर से करीब 15 किलोमीटर दूर है. इस दूरी को टैक्सी आदि से तय किया जा सकता है.

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से जयपुर के लिए प्रतिदिन प्रातः 'पिंक सिटी एक्सप्रेस' जाती है. इस रेलगाड़ी से लगभग पांच घंटों में जयपुर पहुंचा जा सकता है. इसी प्रकार आगरा, अजमेर, उदयपुर आदि नगरों से भी जयपुर के लिए नियमित रेल सेवाएं उपलब्ध हैं. दिल्ली से जयपुर जाने वाली सभी रेलगाड़ियां पुरानी दिल्ली रेलवे

महाराजा जयसिंह द्वारा बनवाया गया जंतरमंतर एक अनोखी जगह है. ▼
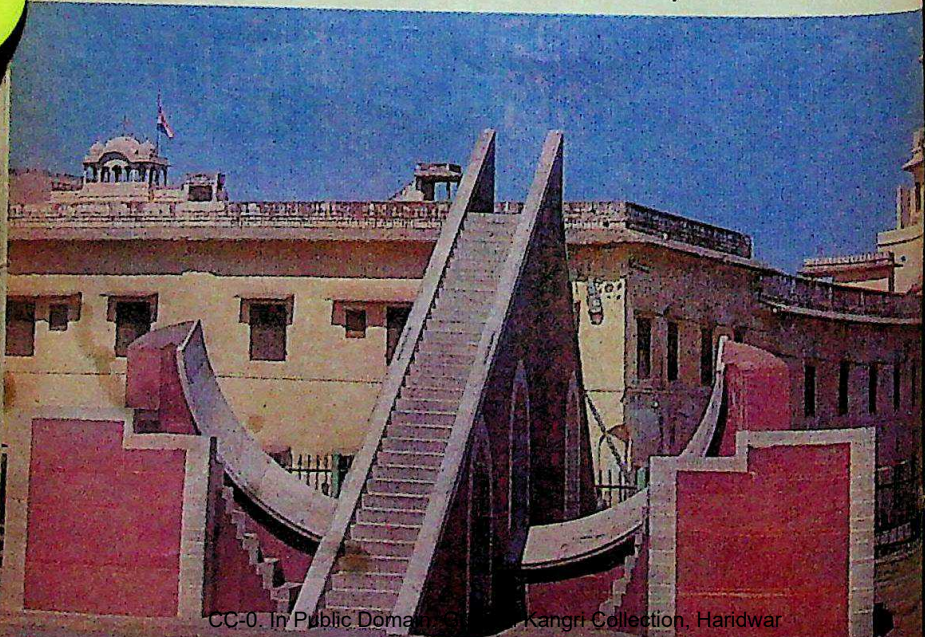
"मेरे घर में मच्छर और कॉकरोच...! हूं...!!

फ़िनिट का वार. कीड़ों की मार."

फ़िनिट शक्ति, सुरक्षित है और प्रभावी. घर के कोने कोने और खिड़की दरवाज़ों की दरारों तक में पहुंच कर उड़ने और रेंगने वाले तमाम कीड़े-मकोड़ों को मार डालता है. फ़िनिट इस्तेमाल कीजिए और निश्चिंत हो जाइए.

फ़िनिट शक्ति
सुरक्षित और प्रभावी.

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

CLARION/B/HP/39/173 HIN
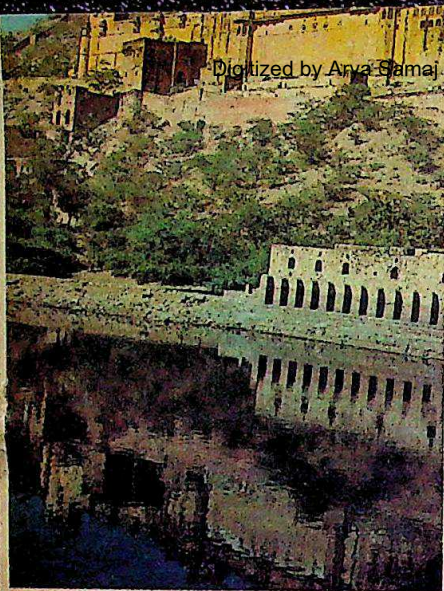
ऊंचा पहाड़ी पर स्थित आमेर के किले का अपना आकर्षण है.

स्टेशन से ही जाती हैं. उल्लिखित स्थानों के अतिरिक्त भी देश के अन्य भागों से रेल मार्ग द्वारा जयपुर तक पहुंचा जा सकता है.

जयपुर के लिए रेल व वायु मार्गों की अपेक्षा बस मार्ग की यात्रा अधिक सुविधाजनक है. दिल्ली, आगरा, आदि नगरों से जयपुर तक सुपर डीलक्स बसों का अच्छा आवागमन होता है.

कहां ठहरें?

जयपुर में ठहरने के लिए अनेक प्रकार के होटलों की सुविधा है. रामबाग पैलेस होटल, वैलकम होटल, मानसिंह होटल, जयपुर अशोक, होटल क्लार्क्स आमेर आदि होटल विविध आधुनिक सुविधाओं से संपन्न हैं. इन में ठहरना महंगा पड़ता है. अपेक्षाकृत सस्ते होटलों में राजस्थान स्टेट होटल, होटल इंपीरियल, होटल शालीमार आदि प्रमुख हैं.

टूरिस्ट कैंप तथा अन्य लाजों में भी ठहरने की उचित व्यवस्था है.

क्या देखें?

नवाब सा. की हवेली : जयपुर देखने का सफर शुरू करने से पूर्व सब से पहले जयपुर का विहंगम दृश्य देखने के लिए एक सुप्रसिद्ध स्थान है नवाब सा. की हवेली. त्रिपोलिया बाजार स्थित नवाब सा. की हवेली जयपुर की कई कहानियों को अपने आगोश में समेटे जैसे पर्यटकों को आमंत्रित करती प्रतीत होती है. गुलाबी नगर के नगर निर्माता विद्याधर का यह आवास था. उस के बाद इस हवेली ने कई रंग देखे, आजकल यह एक सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री त्रिलोकीदास खंडेलवाल की अमूल्य धरोहर है. इस की छत पर जा कर समस्त जयपुर का विहंगम दृश्य नजर आता है, पहले यहां से तमाम शहर का जायजा ले कर आगे जयपुर की अन्य जगहें देखने का आकर्षण है.

रात के समय समस्त दृश्य बहुत आकर्षक हो उठता है. दिन में समस्त शहर जैसे फुसफुसा कर आमंत्रित करता है एक बार देखने को.

सिटी पैलेस : सिटी पैलेस यहां का एक भव्य महल है. हाथी दांत और पीतल के भारी दरवाजे इस के सौंदर्य को बढ़ा देते हैं. राजपूती राजाओं की राजसी पोशाकें और हाथ के लिखे गए ग्रंथ यहां की अमूल्य धरोहर हैं. उस समय के हथियार आदि भी विभिन्न प्रकार के हैं.

जंतरमंतर:

महाराजा जयसिंह द्वारा निर्मित जंतरमंतर एक अनोखी जगह है. सितारों की स्थिति व सूर्य ग्रहण आदि को मापने के यंत्र इस में लगे हैं. इस का प्रभाव देखते ही बन पड़ता है और अपने यहां की उन्नत तकनीक को देख कर गर्व होता है.

म्यूजियम : सेंट्रल म्यूजियम में प्राचीन कालीन वस्तुओं का भंडार है. 300 साल पुराने कालीन, बरतन, गहनों और कपड़ों का अच्छा संकलन है.

किले : अरावली पहाड़ियों पर स्थित जयगढ़ और नाहरगढ़ के किले हैं. नीचे दूर तक फैले मैदान हैं. कहा जाता है कि जयपुर के अमीर महाराजा अपने पारिवारिक

खजाने को यहां छिपा कर रखते थे.

जयपुर से करीब 11 किलोमीटर दूर आमेर के किले व महल का जयपुर के इतिहास में एक प्रमुख स्थान है. बहुत ऊंची पहाड़ी पर स्थित आमेर के किले का अपना आकर्षण है. ऊंची पहाड़ी पर चढ़ने के लिए पहाड़ी पर पैदल तो जा ही सकते हैं किंतु रंगबिरंगे सजे हाथियों पर बैठ कर जाने में कुछ अनोखा ही मजा आता है. साथ में संगीत सुनाने के लिए लोग भी चलते हैं. जल्दी ऊपर पहाड़ी पर जाने के लिए जीप की व्यवस्था भी है.

पोलो खेल मैदान : जयपुर का पोलो नामक खेल विश्व प्रसिद्ध है. जयपुर के अंतिम महाराजा अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के पोलो खिलाड़ी थे. विशेष मौकों पर हाथी पर बैठ कर भी पोलो खेला जाता है. पोलो का मैदान भी पर्यटन स्थल है.

हवा महल : जयपुर की सुप्रसिद्ध व हैरतअंगेज जगह है यहां का पांच मंजिला बना हुआ हवा महल. शाही घराने की स्त्रियां यहां से जुलूस और विजय परेड आदि देखने का आनंद लिया करती थीं.

हलके गुलाबी रंग से रंगे तमाम शहर की अपनी खूबसूरती है. गुलाबी बाजार हैं और उन में यहां के प्रमुख काम बंधेज और सांगानेरी रंगबिरंगे कपड़े मिलते है. यहां की दुकानों पर एक बात अवश्य नजर आई कि दुकानदार जमीन पर ही गद्दा व सफेद चादर बिछा कर बैठते हैं. सड़क पर चलते ऊंट व ऊंट गाड़ियों की छटा देख कर लगता है कि राजस्थान का सौंदर्य बढ़ा रहे हैं.

यहां के पारंपरिक बंधेज के काम की पगड़ी बांधे पुरुष और बंधेज की घाघरा चोली पहने महिलाएं चांदी के भारी गहने पहनती हैं. यद्यपि एक विशेष पढ़ालिखा वर्ग का पहनावा बदल गया है, फिर भी उत्सवों पर सिर पर बोढ़ला लगाया जाता है. यहां की मेहंदी की कला विश्व प्रसिद्ध है.

—रजनी माथुर

आबू

राजस्थान का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल माउंट आबू समुद्र की सतह से 1,220 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. मैदानी इलाकों से आने वाले पर्यटकों के अलावा यहां विदेशी पर्यटकों का भी खासा जमाव रहता है. गुजरात और राजस्थान के बीच का यह एक विशेष पर्यटन स्थल है. असल में आबू ग्रेनाइट चट्टानों का एक समूह है, जिसे बनास नदी की लगभग 5 कि.मी. लंबी घाटी पर्वत शृंखलाओं से विभाजित करती है.

अपने ऐतिहासिक स्मारकों, कलात्मक मंदिरों, शिल्पों और मनोरम चित्रात्मक सौंदर्य के लिए आबू राजस्थान में अन्य दर्शनीय स्थलों से अपने लिए अलग स्थान रखता है.

कब जाएं?

आबू जाने के लिए मार्च से जून और सितंबर से अक्तूबर तक का समय उपयुक्त रहेगा.

कैसे जाएं?

माउंट आबू देश के अन्य नगरों से मुख्यतः सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन आबू रोड रेलवे स्टेशन है, जहां से आबू के लिए बसें और टैक्सियां उपलब्ध रहती हैं. स्टेशन से आबू की दूरी 32 किलोमीटर है. जोधपुर, जयपुर आदि नगरों से आबू के लिए रेलगाड़ियां मिल जाती हैं.

हवाई जहाज से जाने वाले पर्यटकों को उदयपुर हवाई अड्डे उतर कर रेलगाड़ी या बस द्वारा आबू पहुंचना पड़ेगा.
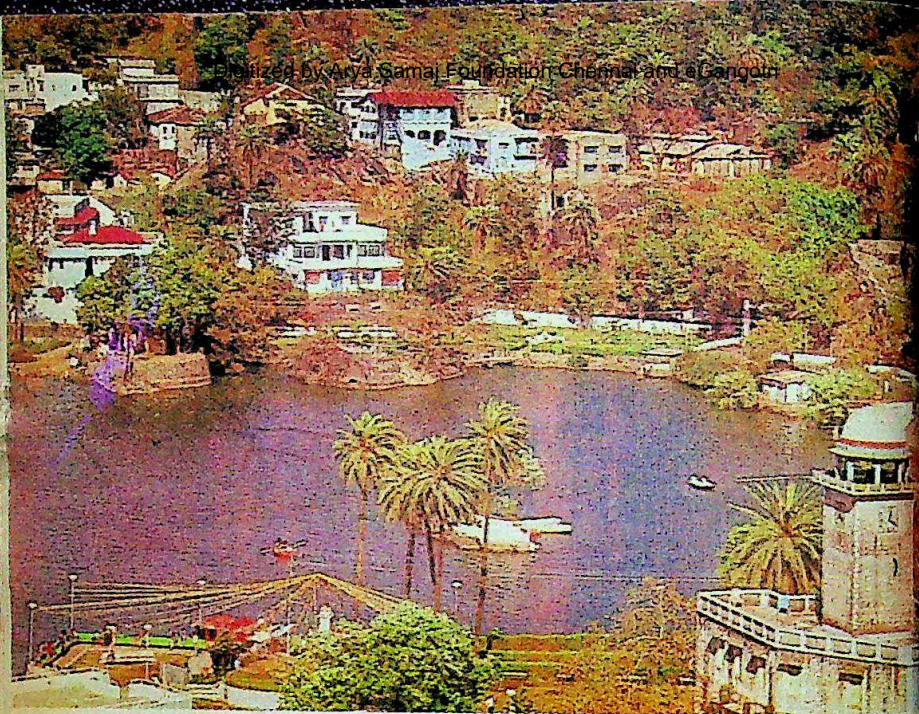
ऊंचे पर्वतों और लंबे घने वृक्षों से घिरी नक्की झील ▲

कहां ठहरें?

माउंट आबू में ठहरने का उचित प्रबंध है. यहां होटलों, लाजों और धर्मशालाओं में स्तरानुसार ठहरा जा सकता है. बीकानेर पैलेस होटल, धौलपुर हाउस काटेज, होटल हिलटोन, जयपुर हाउस होटल, माउंट होटल, नवजीवन लाज, राजेंद्र होटल, शांति सदन गेस्ट हाउस, शांतिदेव निवास, शिखर टूरिस्ट बंगला, होलीडे होम, भारती होटल, सिरोही पैलेस होटल आदि में 75 रुपए से ले कर 250 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से ठहरा जा सकता है.

रघुनाथ मंदिर और धूलेश्वर आदि अच्छी धर्मशालाएं हैं.

क्या देखें?

नक्की झील: ऊंचे पर्वतों और लंबे घने वृक्षों से घिरी नक्की झील आबू का एक खास आकर्षण है. इस के किनारे ही आबू का बाजार भी है. यहां पर्यटक किराए पर नौका ले कर नौकाविहार का आनंद भी ले सकते हैं.

व्यू पाइंट: शहर के आसपास कई व्यू पाइंट हैं, जिन में सनसेट पाइंट प्रसिद्ध है. इन्हीं में एक हनीमून पाइंट भी है.

संग्रहालय और आर्ट गैलरी: शुक्रवार को छोड़ कर बाकी सब दिन खुलने वाला यह निशुल्क संग्रहालय राजभवन रोड पर स्थित है.

दिलवाड़ा के जैन मंदिर: दिलवाड़ा के जैन मंदिर आबू के विशेष आकर्षण और जैन वास्तुकला के अद्भुत उदाहरण हैं. मकराना के सफेद संगमरमर में तराश कर बनाए गए ये पांच मंदिर आबू से 5 कि.मी. दूर हैं.

अपनी नक्काशी के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध इन मंदिरों में जैनियों के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का मंदिर गुजरात के प्रथम सोलंकी शासक राजा भीमदेव के मंत्री

दिलवाड़ा के जैन मंदिर : जैन वास्तुकला के अद्भुत उदाहरण.

इसी स्थान पर ब्रह्म खड्ड नामक एक बड़ा गड्ढा भी है.

गुरु शिखर: आबू से 15 कि.मी. दूर 772 मीटर ऊंचा गुरु शिखर अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं में सब से ऊंचा शिखर है.

विमलशाह ने 1031 में दिलवाड़ा गांव में बनवाया था. उस समय 19 करोड़ रुपए की लागत से बनाए गए इस मंदिर में नक्काशी से पूर्ण, सुंदर 98 खंभे हैं. मंदिर के बीच के गुंबद के सौंदर्य को आभासित करती भव्य शिल्पकृतियां उकेरी गई हैं. ऋषभ देव मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर और महावीर स्वामी मंदिर 13 वीं सदी में निर्मित हुए थे.

अचलगढ़: कहते हैं, यहां बना अचलेश्वर महादेव का मंदिर सब से पुराना है. यहां अचलेश्वर महादेव की प्रतिमा स्थापित है. आबू से करीब 11 कि.मी. दूर यहां एक गुफा में दत्तात्रेय और गणेश की कलात्मक सुंदर मूर्तियां हैं. यहां से आबू के आसपास का सुंदर और मनोरम नजारा भी देखा जा सकता है.

अर्बुदा देवी का मंदिर: दिलवाड़ा से लगभग 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित इस मंदिर को एक ही शिला काट कर बनाया गया है और इस में 500 सीढ़ियां हैं.

क्या खरीदें?

राजभवन रोड पर राजस्थान एंपोरियम है, जहां से कलात्मक राजस्थानी वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं.

उदयपुर

गरमी की छुट्टियां बिताने के लिए राजस्थान में स्थित झीलों की नगरी उदयपुर एक श्रेष्ठ स्थान है. दिल्लीअहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग पर बसे इस खूबसूरत शहर में मनभावनी अनेक झीलें, भव्य ऐतिहासिक महल तथा उत्कृष्ट उद्यान हैं.

कैसे जाएं:

उदयपुर रेल, सड़क व वायु मार्ग के द्वारा भारत के सभी प्रमुख नगरों से जुड़ा है. वर्ष भर पर्यटकों के आवागमन के कारण यहां स्थानस्थान पर होटल बन गए हैं. इन होटलों में उचित मूल्य पर आसानी से कमरे उपलब्ध हो जाते हैं. राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग का विश्राम स्थल भी पर्यटकों के लिए कम मूल्य पर ठहरने के लिए श्रेष्ठ स्थान है.

चारों ओर ख़ूबसूरत झीलों, रंगबिरंगे फव्वारों और दूरदूर तक फैले सुंदर, सुरम्य उद्यानों के कारण उदयपुर में आप गरमियों में भी सावन का सा आनंद प्राप्त कर सकेंगे.

कहां ठहरें?

उदयपुर में ठहरने के लिए अनेक होटल हैं. कजरी टूरिस्ट बंगला, डाक बंगला, रेलवे रिटायरिंग रूम आदि सरकारी आवास हैं, जिन में ठहरने के लिए संबंधित अधिकारियों की अनुमति जरूरी है

अन्य होटलों में उल्लेखनीय हैं— अजंता, अप्सरा, अशोक, भगवती, चंद्रप्रकाश, चंद्रलोक, आइसलैंड पैलेस, लेक पैलेस, लक्ष्मी विलास पैलेस आदि.

क्या देखें?

फतेहसागर झील: उदयपुर के दर्शनीय स्थलों में फतेहसागर झील प्रमुख है. रेलवे स्टेशन से करीब पांच कि.मी. दूर नगर के उत्तरपश्चिम में स्थित यह सुंदर, सुरम्य झील सन 1678 में महाराणा जयसिंह ने बनवाई थी. इस झील का बांध लगभग 2,800 फुट लंबा है तथा इस की सामान्य गहराई लगभग तीस फुट है.

उद्यान: इस झील के मध्य स्थित टापू पर एक मनमोहक बाग नेहरू उद्यान है. झील के तट से नेहरू उद्यान जाने के लिए नियमित नौका सेवाएं उपलब्ध हैं. इस उद्यान में दूब के अनेक मैदान, फव्वारे तथा नाव के आकार का एक आकर्षक विश्राम स्थल है. झील के बीचोबीच स्थित 779 फुट लंबा व 292 फुट चौड़ा यह बाग पूरे देश में अपनी किस्म का अकेला ही है.

जेट फव्वारा: फतेहसागर झील में एक विशाल जेट फव्वारा है. एक सौ अश्व शक्ति की मोटर से चलने वाला यह फव्वारा लगभग 150 फुट की ऊंचाई तक जाता है. रात्रि में रंगीन प्रकाश की व्यवस्था से फव्वारे का दृश्य अत्यंत आकर्षक लगता है.

सौर वेधशाला: इसी झील में स्थित एक अन्य टापू पर भारत सरकार की सौर वेधशाला है. इस वेधशाला में सूर्य से संबंधित अध्ययन किए जाते हैं. पूर्व अनुमति प्राप्त कर यह वेधशाला देखी जा सकती है.

मोतीमगरी: फतेहसागर झील के किनारे महाराणा प्रताप स्मारक है, जिसे मोतीमगरी के नाम से भी जाना जाता है. मोतीमगरी एक विशाल पहाड़ी है, जिस के शीर्ष पर राजस्थान के इतिहास पुरुष महाराणा प्रताप की अपने प्रिय घोड़े चेतक पर सवार विभिन्न धातुओं के मिश्रण से बनी अद्वितीय भव्य मूर्ति है. पहाड़ी के ऊपर बने महाराणा प्रताप स्मारक तक कार या किसी वाहन द्वारा पहुंचने के लिए पक्की सड़क है. पैदल जाने वालों के लिए पृथक छोटा मार्ग है. पूरी पहाड़ी मोतीमगरी को आकर्षक पेड़पौधों से ढक दिया गया है. इसी पहाड़ी पर एक 'सन सेट पाइंट' बनाया गया है, जहां से सूर्यास्त अत्यंत लुभावना लगता है.

सहेलियों की बाड़ी: फतेहसागर झील से कुछ ही दूर उदयपुर का सुंदरतम उद्यान सहेलियों की बाड़ी है. इस मनमोहक उद्यान में संगमरमर की अनेक आकर्षक छतरियां हैं. इन छतरियों में इस तरह फव्वारे लगाए

पिछोला झील के बीच में बना लेक पैलेस उदयपुर का मुख्य आकर्षण है. ▼
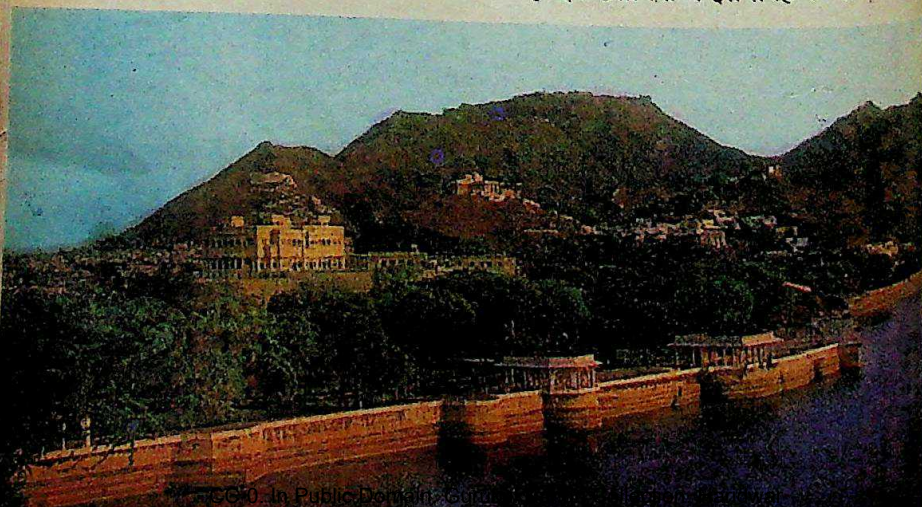
अशोक ग्रुप के सप्ताहांत पैकेज
से
जिंदगी की भागदौड़
को भूल जाइये.
रोमांच, मनोरंजन, आराम और मौज-मस्ती – इन सबको है आप का इंतजार। सप्ताहांत के दिनों को खूबसूरत बनाने के लिए तैयार हो जाइए – अशोक ग्रुप की सैर सपाटे की एकमुश्त योजना की मदद से। खर्च मात्र प्रति व्यक्ति प्रति रात रु. 125* आएगा।
यह योजना दंपत्तियों, परिवारों तथा ग्रुपों के लिए आदर्श है। 12 वर्ष से कम आयु के दो बच्चों के रहने का खर्च निःशुल्क (बिना अतिरिक्त बिस्तर के)।
हमारे रेस्टोरेण्ट में आपको स्वाद और परिवेश का शानदार संगम मिलेगा। सप्ताहांत बिताते हुए शानदार व्यंजनों का स्वाद लीजिए।
मीनू कार्ड पर लिखे दामों पर 10% की विशेष छूट।
शुक्रवार रात्रि 8 बजे आइये और सोमवार प्रातः 8 बजे तक ठहरिये। 15 अप्रैल से 31 अक्तूबर '88 के बीच किसी भी सप्ताहांत में इस अवसर का लाभ उठाइये।
* सभी कर अतिरिक्त
The Ashok Group
HOTELS • TRAVEL SERVICES • DUTY FREE SHOPS
India Tourism Development Corporation
यह योजना निम्नांकित अशोक ग्रुप होटलों में उपलब्ध है:
* आगरा अशोक * औरंगाबाद अशोक * होटल अशोक, बंगलौर * भरतपुर फारेस्ट लॉज * कलिंगा अशोक, भुवनेश्वर * अशोक ट्रैवलर्स लॉज, बोधगया * एयरपोर्ट अशोक, कलकत्ता * हसन अशोक * जयपुर अशोक * जम्मू अशोक * खजराहो अशोक * कोवलम अशोक बीच रिसोर्ट * मदुरै अशोक * टेम्पल बे अशोक बीच रिसोर्ट, ममल्लापुरम * ललिता महल पैलेस होटल, मैसूर * लोधी होटल * होटल रंजीत (विशुद्ध शाकाहारी), नयी दिल्ली * पाटलिपुत्र अशोक, पटना * वाराणसी अशोक
जानकारी और बुकिंग के लिए किसी भी अशोक ग्रुप होटल या अशोक नेटवर्क सर्विस के इन केन्द्रों से संपर्क करें – बम्बई (फोन: 2026481, 2026022); कलकत्ता (फोन:435208,435264); दिल्ली (फोन:600121); मद्रास(फोन:473078,472186) बंगलौर (फोन: 79411,73494)
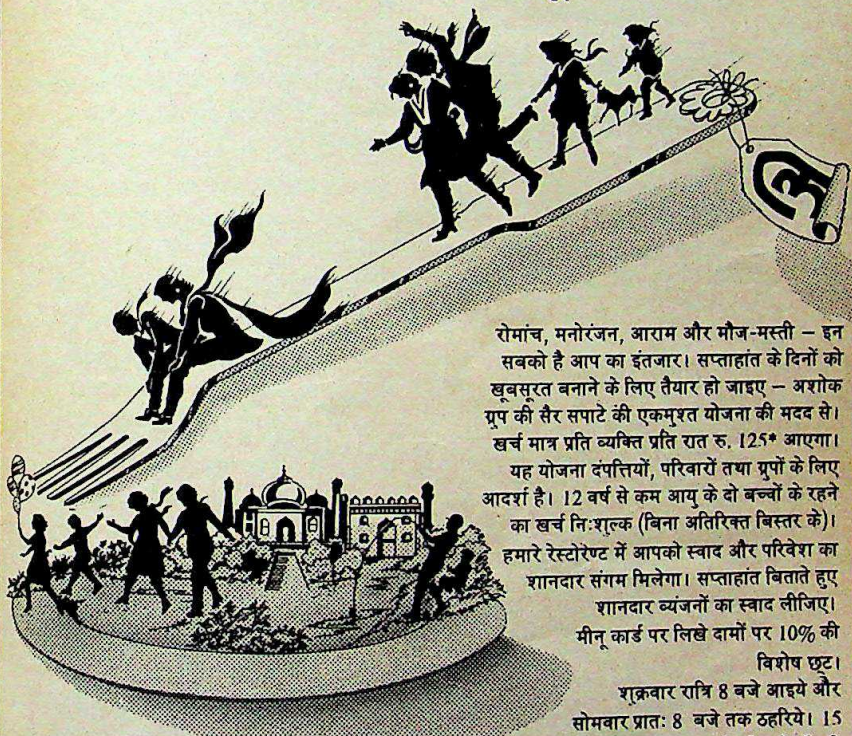
उदयपुर का सिटी पैलेस.
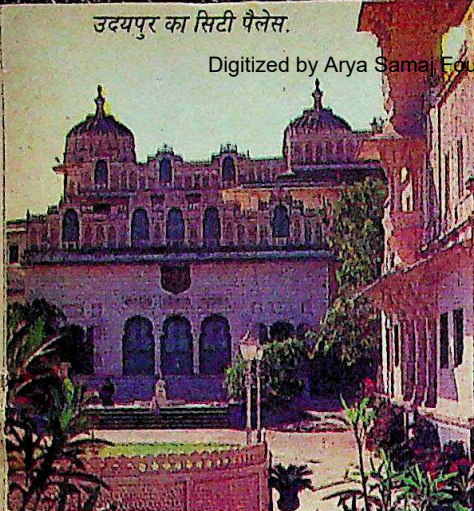
गए है कि फव्वारे चलने पर बरसात होने जैसा दृश्य उपस्थित हो जाता है. प्राचीन समय में राजकुमारियां अपनी सहेलियों के साथ यहां मनोरंजन हेतु आती थीं, अतः इस उद्यान का नाम सहेलियों की बाड़ी पड़ गया.

भारतीय लोक कला मंडल का भवन: सहेलियों की बाड़ी से करीब दो कि. मी. दूर भारतीय लोक कला मंडल का भवन है. इस भवन में राजस्थान के परंपरागत वाद्य यंत्रों, आभूषणों, पोशाकों, मिट्टी के माडलों तथा राजस्थान की संस्कृति व लोककलाओं से संबद्ध अन्य विभिन्न वस्तुओं, चित्रों व मूर्तियों का संग्रहालय है. इसी संग्रहालय में राजस्थान का कठपुतली नृत्य भी दिखाया जाता है. कठपुतली नृत्य देखने में बड़ा आनंद आता है.

सज्जन निवास बाग: उदयपुर में स्थित सज्जन निवास बाग भी दर्शनीय है. इस बाग को लोग गुलाब बाग भी कहते हैं. लगभग एक सौ एकड़ भूमि में फैले इस उद्यान में बच्चों के लिए एक रेलगाड़ी चलाई जाती है. इस रेलगाड़ी में घूम कर बच्चे बाग के प्राकृतिक सौंदर्य का भी आनंद उठा लेते हैं. इसी उद्यान में पशुपक्षियों का संग्रहालय भी है, जिस में अनेक खूबसूरत पक्षियों के अलावा शेरचीते भी हैं.

पिछोला झील: गुलाब बाग से लगभग एक कि.मी. दूर पिछोला झील है. यह झील चारों ओर से पर्वत श्रेणियों, नहाने के घाटों, महलों और मंदिरों से घिरी हुई है. लगभग पांच कि.मी. लंबी व डेढ़ कि.मी. चौड़ी यह झील सामान्यतया 25 फुट गहरी है. इस झील से जुड़ी अन्य झीलें रंग सागर, स्वरूप सागर व दूध तलाई इस के सौंदर्य में अभिवृद्धि करती हैं.

लेक पैलेस: पिछोला झील के बीच में बना लेक पैलेस उदयपुर का एक मुख्य आकर्षण है. यह नयनाभिराम महल सन 1746 में महाराणा जगतसिंह द्वितीय ने बनवाया था. चारों ओर जल से घिरे होने के कारण यह महल विश्व के सुंदरतम महलों में गिना जाता है. इस महल की दीवारों पर की गई चित्रकारी बड़ी सुंदर व ऐतिहासिक है. इस पैलेस में देश के श्रेष्ठ व महंगे होटलों में से एक 'लेक पैलेस होटल' स्थित है. तट से लेक पैलेस पहुंचने के लिए नियमित नौका सेवाएं उपलब्ध हैं.

जगमंदिर महल: पिछोला झील के दक्षिणी छोर पर स्थित एक टापू में जगमंदिर नामक महल है. कहा जाता है कि इस महल को देख कर ही शाहजहां को विश्व प्रसिद्ध ताजमहल बनाने की प्रेरणा मिली थी.

राज महल: पिछोला झील के तट पर राजमहल बने हुए हैं. इन विशाल व आकर्षक महलों में प्राचीन काल की दुर्लभ कलाकृतियां, मूर्तियां, अस्त्रशस्त्र, रंगीन चित्र तथा राजामहाराजाओं के प्रयोग में लाई जाने वाली अनेक वस्तुएं हैं. तीन रुपए का टिकट ले कर पर्यटक इन सभी राजमहलों को भीतर से देख सकते हैं. ये भव्य महल उस समय की स्थापत्य कला के अदभुत उदाहरण हैं.

दूध तलाई झील: इन राजमहलों से लगभग दो कि.मी. दूर स्थित दूध तलाई झील के निकट पहाड़ों को काट कर बनाया गया माणिक्य लाल वर्मा उद्यान भी दर्शनीय है.

अहमदाबाद

गुजरात में अहमदाबाद को पर्यटन का केंद्र बनाया जा सकता है. अहमदाबाद पहुंचने के लिए दिल्ली, राजकोट, पोरबंदर, बंबई, जयपुर आदि नगरों से नियमित हवाई सेवाएं उपलब्ध रहती हैं. यह नगर देश के सभी प्रमुख नगरों जैसे दिल्ली, बंबई, जयपुर, मद्रास, कलकत्ता आदि से रेलमार्ग द्वारा भी जुड़ा हुआ है. अतः आप किसी भी मार्ग से अहमदाबाद जा सकते हैं. साथ ही आप व्यक्तिगत साधनों तथा बस सेवाओं का भी उपयोग कर सकते हैं.

कहां ठहरें?

अहमदाबाद में कामा, कैपिटल, सपाली, अलंकार, मेघदूत, कर्णवती, नटराज, सिद्धार्थ आदि होटलों में ठहरने की समुचित व्यवस्था है.

क्या देखें?

अहमदाबाद में ऐतिहासिक व पुरातात्त्विक महत्त्व के कई सुंदर स्मारक हैं. यहां मुसलिम वास्तुकला और हिंदू वास्तुकला का सुंदर सम्मिश्रण देखा जा सकता है.

अहमदाबाद के सब से लोकप्रिय स्मृति चिह्नों में सीदी बशीर की मसजिद है, जिसे हिलती मीनारों वाली मसजिद कहा जाता है. यह सारंगपुर द्वार के निकट है. ऐसी ही हिलने वाली मीनारें राजपुरगोमतीपुर क्षेत्र में राज बीवी की मसजिद में हैं. शुद्ध स्फटिक का नक्काशीदार हठीसिंह मंदिर दिल्ली द्वार के निकट है. भद्रगढ़ 43 एकड़ में फैला था और इस में 14 प्राचीर थे. एक अन्य द्वार, त्राण दरवाजा भी उत्कृष्ट वास्तुशिल्प का उदाहरण है.

इन के अलावा रानी सिपरी की मसजिद, सरखेज रोजा, शाहआलम रोजा, जामा मसजिद व रानी रूपमती की मसजिद भी दर्शनीय हैं. अहमदाबाद से 19 किलोमीटर पर वीरसिंह (1499 ई.) की रानी रूदाबाई का बनवाया अदलज वाव है, जिस के उत्कृष्ट वास्तुशिल्प का उदाहरण गुजरात से बाहर कहीं नहीं मिलता.

अहमदाबाद का प्रसिद्ध जैन मंदिर

गुजरात के पश्चिमी तट पर द्वारका नगरी है. यह नगरी अहमदाबाद से 511 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. अरब सागर की लहरें इस के चरण पखार रही हैं. इसे पौराणिक युग में कुशस्थली या द्वारावती भी कहा जाता था. मथुरा छोड़ने के बाद कृष्ण अपने भाई बलराम तथा यादवों के साथ द्वारका आए और यहीं उन्होंने अपनी नई राजधानी की स्थापना की. पुरातत्त्व की खुदाइयों से पता चलता है कि वर्तमान द्वारका छठी नगरी है, जबकि अन्य पांच नगर सागर के गर्भ में समा गए हैं.

समुद्रविज्ञान के राष्ट्रीय संस्थान ने अरब सागर में डूबी द्वारका नगरी की चारदीवारी ढूंढ़ निकाली है. इस से महाभारत युग की पौराणिक नगरी, उस युग की सभ्यतासंस्कृति तथा भारतीय इतिहास के अंधकारपूर्ण अध्याय पर प्रकाश डालने की संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त हो गया है. प्राचीन ग्रंथों में द्वारका नगरी का जो विवरण मिलता है उस की वर्तमान खोजों से बहुत हद तक पुष्टि हो गई है. पुरातत्त्वविदों को प्राचीन किले की 250 मीटर लंबी दीवार मिली है, जो साढ़े तीन हजार वर्ष पुरानी है. इस से पूर्व प्राचीन युग के बरतन और सिक्के प्राप्त हुए थे, पर हाल की खोज से तो महाभारत की वास्तविकता प्रमाणित हो जाती है.

कैसे जाएं?

द्वारका के निकटतम हवाई अड्डे जामनगर तथा पोरबंदर हैं, जो द्वारका से क्रमशः 140 कि.मी. तथा 220 कि.मी. दूर हैं. जामनगर से द्वारका तक रेल या बस किसी भी मार्ग से पहुंचा जा सकता है.

कहां ठहरें?

द्वारका में ठहरने के लिए मुरलीधर लाज, बंसीधर लाज, बजरंग लाज आदि में उचित व्यवस्था है. इस के अलावा तालुका पंचायत रेस्ट हाउस, पी. डब्ल्यू डी. रेस्ट हाउस, रेलवे रिटायरिंग रूम में भी पूर्वानुमति ले कर ठहरा जा सकता है.

द्वारकाधीश मंदिर (जगत मंदिर) के गर्भगृह (निजमंदिर) की प्राचीनता 2,500 वर्ष आंकी गई है. जगत मंदिर तीन भागों में बंटा है. निजमंदिर, सभागृह और शीर्ष पर कोण बनाता हुआ शिखर. सभागृह 60 स्तंभों पर टिका है. मुख्य मंदिर 5 मंजिलों वाला है और इस की ऊंचाई 33 मीटर है. शिखर वाला भाग 50 मीटर की ऊंचाई तक चला गया है और पूरे ओखामंडल में कहीं से भी दिखाई पड़ता है. शिखर भाग में सर्वाधिक नक्काशी की गई है. निकट का खुला समुद्र इस की सुंदरता में चार चांद लगा देता है.

प्राचीन काल में अरब सागर के पार देशों से संपर्क का भारत का द्वार द्वारका ही था. विदेशों से व्यापार के क्रम में यहां काफी संपदा एकत्र हो गई थी. तभी इसे द्वारका के बदले 'स्वर्ण द्वारका' कहा जाता था.

द्वारका और इस के आसपास कई मंदिर

द्वारकाधीश मंदिर : पुरातत्त्व की दृष्टि से बेजोड़ ▼
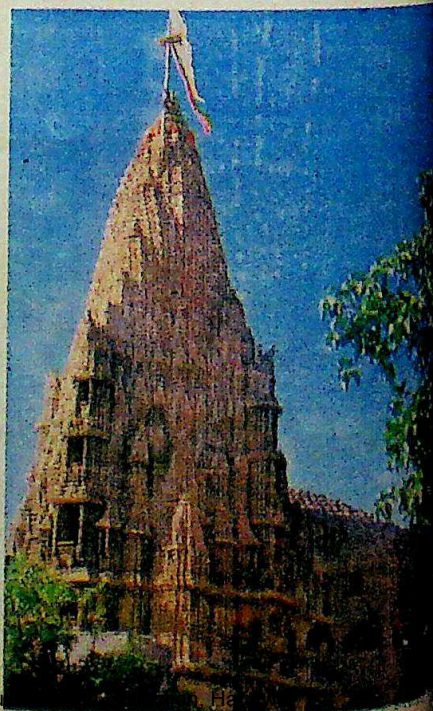
1kg=10½ Lts

एक किलो सागर स्किम्ड मिल्क पाउडर आपको देता है
साढ़े दस लीटर स्किम्ड मिल्क.
इतना स्वादिष्ट है कि आप इसे यूं ही पीना पसंद करेंगे.
या फिर आप इससे गुलाबजामुन, आइसक्रीम, दही,
खीर, रसगुल्ला, कस्टर्ड, मिल्कशेक भी बना सकते हैं.
और हां, चाय और कॉफ़ी भी.
सागर. दूध का सागर.

SAGAR SKIMMED MILK POWDER

सागर
स्किम्ड मिल्क
पाउडर
५०० ग्राम के
पैक में
उपलब्ध.

बिक्री व्यवस्था - गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड, आणंद, गुजरात.

OPERATION FLOOD

ASP SSMP 357/88 HN

है. इन में प्रत्येक का पौराणिक अथवा कृष्ण की गाथाओं से जुड़ी अपनी अलग महत्ता है. द्वारका से 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बेट शंखोधर को रमण द्वीप भी कहा जाता है. ऐसी मान्यता है कि राजधानी द्वारका होते हुए भी कृष्ण सपरिवार यहीं निवास करते थे.

सोमनाथ मंदिर

अहमदाबाद से 370 तथा द्वारका से 180 किलोमीटर दूर स्थित सोमनाथ का विशिष्ट स्थान है. अहमदाबाद से यहां तक रेल या बस मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है.

अरब सागर की लहरों से घिरे होने के कारण सोमनाथ मंदिर की शोभा देखते ही बनती है. आसपास का समुद्र तट दर्शनीय है. यहां सूर्योदय और सूर्यास्त के मनमोहक दृश्य देखते हुए आप सांस लेना तक भूल जाएंगे. सोमनाथ के मंदिर का सात बार जीर्णोद्धार हो चुका है.

शिव की पूजा करने वाले भार्षव और वाकाटक सम्राटों के काल में प्रभास पाटन अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व का बंदरगाह था. अरब वासियों के हमले और लूटपाट के बाद नागभट्ट द्वितीय ने मंदिर का पुनर्निर्माण किया. उन दिनों यह देश के सब से बड़े निर्माण कार्यों में से एक था. गजनी के महमूद ने चढ़ाई कर के सप्ताह भर के संघर्ष के बाद इस पर कब्जा कर लिया. उस ने मंदिर और इस में प्रतिष्ठापित मूर्ति को ध्वस्त कर दिया और बहुत बड़ा खजाना लूट कर ले गया. मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ लेकिन अगली बार अलाउद्दीन खिलजी ने इसे ध्वस्त कर दिया. एक बार फिर पुनर्निर्माण के बाद इसे औरंगजेब के इशारे पर ध्वस्त किया गया. भग्नावशेषों के निकट ही, इस बार इंदौर की अहल्याबाई होल्कर ने मंदिर का पुनर्निर्माण कराया.

सोमनाथ का वर्तमान मंदिर भारत की स्वाधीनता के बाद बनाया गया है. इस का एक और नाम महामेरु प्रासाद है. इस के निकट के महत्त्वपूर्ण स्थान हैं माल्का तीर्थ, जहां किसी शिकारी ने भूल से मृग समझ कर कृष्ण के पैर में तीर मारा था. देहोत्सर्ग, जहां उन्होंने प्राण त्यागे, और त्रिवेणी घाट, जहां उन का दाह संस्कार किया गया.

पालिताना

अहमदाबाद से 214.7 किलोमीटर दूर स्थित है पालिताना. यह मंदिरों का भव्य नगर तथा प्रसिद्ध जैन तीर्थ है. समुद्र की सतह से 635 मीटर ऊंचे शेत्रुंजा पहाड़ी की पहले दो चोटियां थीं. पर एक समृद्ध जैन ने
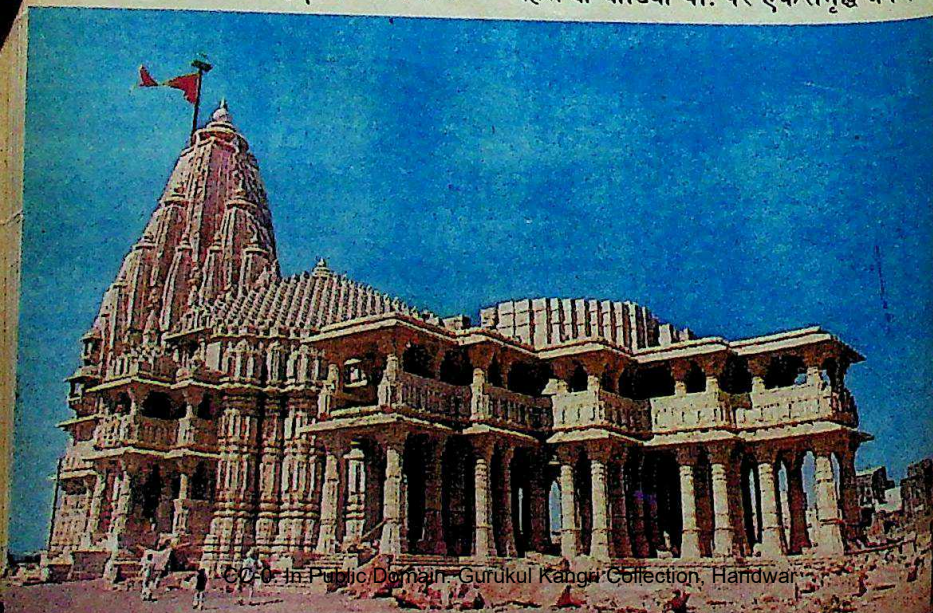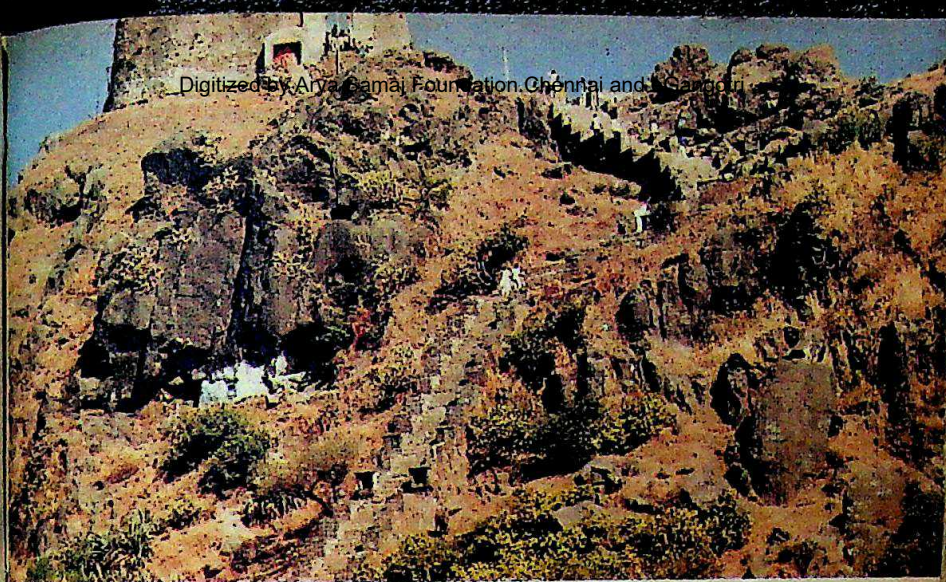
दोनों चोटियों के बीच की घाटी को भरवा दिया. अब शेत्रुंजा पर 863 मंदिर हैं, जिन में कुछ ईसा के बाद ग्यारहवीं सदी में बनाए गए थे. इन पर नक्काशी का काम इतना खूबसूरत हे मानो हाथी दांत का काम किया गया हो.

महान शिल्पियों द्वारा निर्मित इन मंदिरों में सर्वाधिक महत्त्व प्रथम तीर्थंकर के मंदिर श्री आदीश्वर का है. देखने में यह चौमुख से ज्यादा आकर्षक नहीं, पर इस का वास्तुशिल्प अधिक उन्नत है. अन्य दर्शनीय मंदिर हैं: कुमारपाल, विमलशाह संप्रीति राजा और चौमुखी. कुमारपाल का निर्माण संभवतः जैनियों के महान संरक्षक कुमारपाल सोलंकी ने कराया था. मंदिर में रखे हीरेजवाहरात बहुमूल्य हैं और विशेष अनुमति प्राप्त कर देखे जा सकते हैं.

पावागढ़

गुजरात में पावागढ़ प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है. यह अहमदाबाद से 211 किलोमीटर दूर है. पावागढ़ पंचमहाल जिला के हलोल तालुका में स्थित ऐतिहासिक किला है. इस की कथा चंपानेर के शासक पटाई रावलों की कथा से जुड़ी है. इस के अतिरिक्त किंवदंतियां

पावागढ़ स्थित कालिकामंदिर : महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल. ▲

इस गढ़ को ऋषि विश्वामित्र तथा रामायण से भी जोड़ती हैं. पावागढ़ का अर्थ चौथाई पहाड़ी भी है.

ऐसा विश्वास किया जाता है कि जब लक्ष्मण को होश में लाने के लिए हनुमान संजीवनी बूटी वाला पर्वत ले कर लंका जा रहे थे तो उस पर्वत का एक भाग टूट कर यहां गिर पड़ा था. वनराज चावडा द्वारा स्थापित चंपानेर का प्राचीन ऐतिहासिक नगर इस पहाड़ी से सटा है.

पहाड़ी पर बना महाकाली का मंदिर महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल माना जाता रहा है. मंदिर के पीछे की नौलखा कोठार के भग्नावशेष विद्यमान हैं. इस कोठार का प्रयोग पटाई रावल अनाज के गोदाम के रूप में करते थे. भद्रकाली मंदिर जाते हुए पटाई रावलों के आलीशान महल के भग्नावशेष देखे जा सकते हैं.

पाटन

पाटन की स्थापना वनराज चावडा ने की थी . यहां सिद्धराज जयसिंह ने सहस्र लिंग

बनी मूर्ति तीर्थयात्रियों व सामान्य पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करती है.

पाटन के शिव मंदिर में उत्कीर्ण मूर्तियां.

तालाब बनवाया था, जिस में 1,008 शिव मंदिर निर्मित किए गए थे. अब वहां मंदिरों के भग्नावशेष मात्र हैं. पास में ही प्रवेश योग्य वह कुआं है जो मूर्तिशिल्प, वास्तुशिल्प तथा पुरातत्त्व के आश्चर्य का विषय है. यहां खुदाई जारी है और साथ ही साथ अनुसंधान कार्य भी. हाल की खुदाई में एक से एक खूबसूरत मूर्तियां मिली हैं जिन में कुछ 28 प्रकार की हस्तमुद्राएं प्रदर्शित करती हैं. इस कुएं का निर्माण उदयमती ने कराया था और इसी नाम से यह जाना जाता है. अब तक भूगर्भ में 7 मंजिलें खोदी जा चुकी हैं.

अजितनाथ का मंदिर

तारंग नाम की उत्पत्ति बौद्धों की आराध्या तारादेवी से हुई है. तारंग 385 मीटर ऊंची पहाड़ी है, जो जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थ है. पहाड़ी पर बना अजितनाथ का मंदिर 40 मीटर ऊंचा है. इस में एक ही पत्थर से

गिरनार

गिरनार में हिंदुओं व जैनियों के प्रसिद्ध मंदिर हैं. यहां 642 मीटर की ऊंचाई पर अति प्राचीन 5 जैन मंदिर हैं. सब से बड़ा नेमिनाथ मंदिर 12वीं सदी का है. कुछ दूरी पर हिंदू मंदिर भी हैं. जूनागढ़ के अन्य दर्शनीय स्थल हैं: अपर कोट का किला, अशोक के शिलालेख, जूनागढ़ के नवाब का मकबरा. अपर कोट से गिरनार जाने वाले मार्ग में वागेश्वरी का अति प्राचीन मंदिर तथा 6 मीटर लंबी और 1 मीटर चौड़ी वह प्रसिद्ध शिला भी मिलती है, जिस पर सम्राट अशोक के 14 आदेश खुदे हैं. शिलालेख पाली भाषा में हैं और ईसा से 250 वर्ष पूर्व का है. बाद में रुद्रदमन और स्कंदगुप्त ने भी संस्कृत में अपने लेख खुदवाए. पास में ही दामोदर कुंड नामक पवित्र सरोवर है.

सिद्धपुर

मेहसाना जिले के सिद्धपुर में 10 वीं शती के राजा मूलराज ने रुद्रमल का निर्माण कराया. इस के पुनरुद्धार में सिद्धराज ने 14 करोड़ रुपए खर्च किए. मुसलमानों ने इसे ध्वस्त कर दिया. ऐसा विश्वास किया जाता है कि पास की मसजिद रुद्रमल के कुछ भाग समेटे हुए हैं. बताया जाता है कि रुद्रमल में 1,600 स्तंभ, रत्नजड़ित 18,000 मूर्तियां, 30,000 स्वर्णकलश तथा 1,700 ध्वजाएं थीं.

चंपानेर

अहमदाबाद से 160 तथा बड़ौदा से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित चंपानेर भी एक रमणीय पर्यटन स्थल है. चंपानेर बारिया सड़क पर चंपानेर से लगभग 2 किलोमीटर दूर वह तालाब है, जहां मुहम्मद बेगड़ा के महल के खंडहर मौजूद हैं. वास्तुशिल्प की दृष्टि से चंपानेर की जामा मसजिद भी अद्भुत है. यहां के अन्य दर्शनीय स्थान हैं : नगीना मसजिद, केवड़ा मसजिद, लाल गुबंद

आज़ादी "आनन्द की चरम सीमा" का एहसास है

इसका अनुभव कीजिए!

आज़ादी बिना रुकावट के
आजादी बिना चिन्ता के
किसी भी दिन. किसी भी समय
इसका अनुभव कीजिए!
"आनन्द की चरम सीमा"
के एहसास के लिए।
सुपर डीलक्स निरोध
सब से पतला कॉन्डोम सुपर
फाइन लेटैक्स से निर्मित.
तथा 100% इलैक्ट्रानिक
विधि से जाँचा परखा
स्वाभाविक मुलायम एवं लुब्रीकेटेड
अब आप की रूचि के अनुकूल
स्किन टोन (त्वचा के रंग) में उपलब्ध

Super Deluxe
NIRODH

महसूस कीजिए इसकी आदत डालिए

Super Deluxe
NIRODH
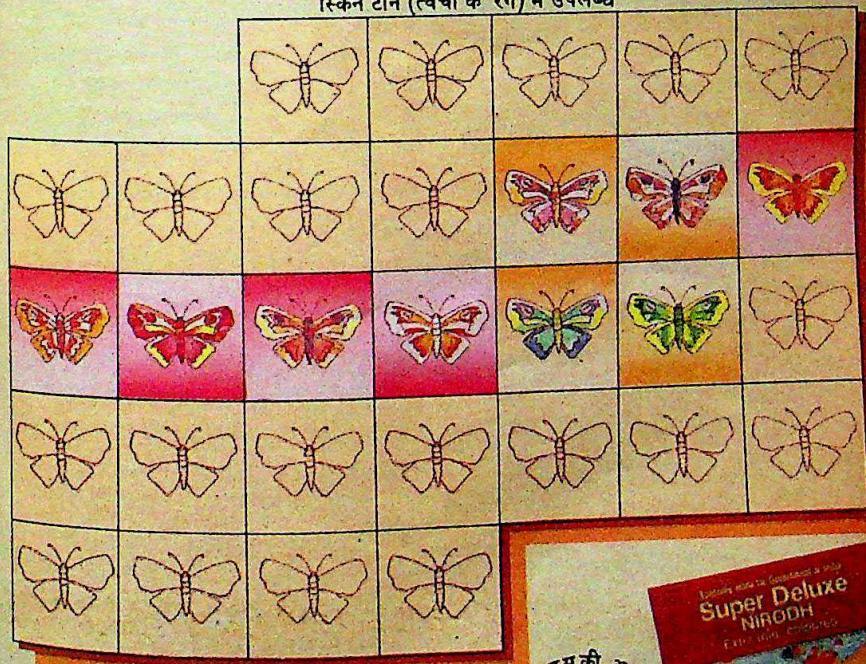
आप जितनी आज़ादी चाहें

विश्व में कण्डोम्स के सब से बड़े निर्माता
हिन्दुस्तान लेटैक्स लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन

सुपर डीलक्स निरो

की मस्जिद और शेर खां की दरगाह.

अंबाजी

अहमदाबाद के उत्तर में लगभग 200 किलोमीटर दूर अहमदाबाद पालमपुर रेलमार्ग पर स्थित अंबाजी का देश के शक्तिपीठों में विशिष्ट स्थान है. यह बनासकांठा जिले में है. पश्चिमी सीमा के आरासुर पहाड़ी क्षेत्र में स्थित अंबाजी का मंदिर मनोहारी प्राकृतिक दृश्यों से घिरा है. ऐसा समझा जाता है कि इसी क्षेत्र में सरस्वती नदी का उद्गम हुआ था. मंदिर के प्रांगण में लोक नाट्य 'भवाई' खेले जाने का प्रचलन है. इस में सिर्फ पुरुष कलाकार भाग लेते हैं. अंबाजी के निकट के क्षेत्र में (लगभग 3 किलोमीटर) कुंभरिया जैन मंदिर है जो अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है.

कच्छ

गुजरात की पश्चिमी सीमा पर स्थित कच्छ जिले में भद्रेश्वर 52 प्राचीन जैन मंदिरों और शिल्प व नक्काशी के काम के लिए प्रसिद्ध हैं. भद्रेश्वर का पूर्व नाम भद्रावती नगरी था. यहां के प्रसिद्ध दानी झगडूशा ने जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया. यहां के मंदिरों में सब से मुख्य है महावीर स्वामी का मंदिर, जिस के चारों ओर यक्ष, किन्नर, पशुओं और मनुष्यों की मूर्तियां लगी हैं. यहां के अन्य आकर्षण हैं– भद्रकाली का मंदिर, पुराना किला तथा प्रवेश योग्य कुआं.

शामलाजी का मंदिर

अहमदाबाद से हिम्मतनगर हो कर करीब 200 किलोमीटर आगे जाने पर साबरकांठा जिले में शामलाजी का मंदिर छोटीछोटी पहाड़ियों से घिरे रम्यक्षेत्र में स्थित है. पौराणिक युग में इसे गदाधर क्षेत्र कहा जाता था. शामलाजी का मंदिर 800 वर्ष पुराना है. जबकि इस में प्रतिष्ठापित मूर्तियां 1,000 से ले कर 2,000 वर्ष तक पुरानी हैं. मंदिर सुंदर मूर्तियों और सुंदर नक्काशी से भरा है. यहीं बौद्धस्तूप भी मिला था. यहां सूर्य मंदिर, काशीविश्वनाथ मंदिर आदि भी है.

साबरकांठा जिले में ही इडर से विजयपुर के मार्ग में पड़ने वाले जंगलों में कई मंदिरों के भग्नावशेष हैं. घने जंगलों में छिपा यह एक अति प्राचीन नगर है. यहां का मूर्तिशिल्प व नक्काशी का काम 15 वीं सदी का लगता है. यहां के मंदिर उच्च कलात्मक शिल्प के प्रतीक हैं. अंतरसुंब ग्राम में शिवपंचायतन का भग्नावशेष मिला है. इस में गर्भगृह में अत्यंत सुंदर मूर्ति हैं. अन्य दो मंदिरों के भग्नावेषों में भी सुंदर मूर्तियां हैं. अंतरसुंब ग्राम के पश्चिम में कुछ अन्य भव्य मंदिर हैं. इन में शरणेश्वर नामक शिव मंदिर तथा जैन मंदिर भी हैं.

डभोई

अहमदाबाद से करीब 120 किलोमीटर दूर है बड़ौदा. बड़ौदा एक रमणीक पर्यटन स्थल है. बड़ौदा से 25 किलोमीटर की दूरी पर डभोई ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक विरासतों के लिए प्रसिद्ध है. मूर्तिशिल्प तथा वास्तुशिल्प के क्षेत्र में इस का महत्त्वपूर्ण स्थान है.

दर्भावती या डभोई का किला सोलंकी काल का है. इस की संरचना स्वस्तिक के आकार में हुई है. इस की विशेषता यह है कि यदि शत्रु एक द्वार से प्रवेश पा ले तो उसे दूसरे द्वार पर भीतर की काररवाई से ही रोका जा सकता है. अहमदाबाद के भद्र किले में भी ऐसी ही व्यवस्था है.

डभोई किले में चार द्वार हैं–पूर्व में हीरा द्वार, पश्चिम में बड़ौदा द्वार, उत्तर में चांदोद द्वार तथा दक्षिण में चंपानेरी द्वार. ऐसा समझा जाता है कि हीरा द्वार बनाने वाले शिल्पी हीरा को जीवित ही जला दिया गया था, ताकि इस प्रकार का द्वार अन्यत्र न बन सके.

मोढेरा

गुजरात में मंदिर निर्माण की कला सोलंकी काल में अपने उच्चतम शिखर पर

गुजराती वास्तु शिल्प का नमूना : मोढेरा का सूर्यमंदिर ▲

पहुंच चुकी थी. इस काल में माउंट आबू के प्रसिद्ध दिलवाड़ा मंदिर और सिद्धपुर के रुद्रमहालय का निर्माण हुआ. उन दिनों गुजरात की राजधानी अनाहिलपत्तन अपने विशाल मंदिरों, भव्य प्रासादों और सुंदर भवनों के लिए प्रसिद्ध था.

अहमदाबाद से 106 किलोमीटर दूर मोढेरा का सूर्य मंदिर उसी काल का निर्माण है. यह गुजराती वास्तुशिल्पियों की कुशल कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना है. मंदिर का गूढ़मंडप (गर्भगृह), सभा मंडप व कुंड भीमदेव प्रथम के शासनकाल, 11वीं सदी के पूर्वार्द्ध में बनाए गए थे. इस की गणना गुजरात के गौरवशाली स्मृति चिह्नों में होती है. **यह मंदिर आज भी अपनी वर्तमान दशा में भारतीय कला व शिल्प के सर्वोत्तम प्रतीकों में है.**

मुख्य मंदिर, जो आयताकार है, लगभग 16 मीटर लंबा और 8 मीटर चौड़ा है. मंदिर के शिखर, गूढ़मंडप की छत जैसे निर्माण कार्य का अब कोई चिह्न नहीं बचा है. मंदिर का द्वार पूर्व दिशा में कुछ इस बारीक कारीगरी से तैयार किया गया है कि जिन दिनों सूर्य विषवत रेखा पर होता है (21 मार्च तथा 23 सितंबर) तो उस की किरणें मुख्य द्वार व मंडपों के द्वार से हो कर गर्भगृह में प्रवेश करती हैं, जिस से वहां अपने ढंग का आध्यात्मिक वातावरण तैयार हो जाता है. सूर्य की किरणें मूर्तियों व पूरे भवन को प्रकाशमान करती हुई सूर्य मंदिर का नाम सार्थक करती हैं.

सभा मंडप के भीतर और बाहर सुंदर नक्काशी की गई है. कभी इस के किनारे भव्य तोरण बने थे. आज कीर्ति तोरण के स्तंभ मात्र देखे जा सकते हैं.

गूढ़मंडप

इस की बाहरी दीवार पर सूर्य की 12 बड़ी प्रतिमाएं हैं. दीवार के ऊपरी और निचले भागों में रिक्त स्थानों की पूर्ति विभिन्न **मुद्राओं में नर्तकियों के चित्रों से की गई है. स्तंभों पर टिके मेहराब व उत्कृष्ट नक्काशी, सब मिल** कर दर्शकों या पर्यटकों पर महान कारीगरों की कार्य कुशलता का गंभीर प्रभाव डालती हैं.

—वरेश सिन्हा

हिन्दुस्तानी चपाटाज़ द्वारा बदमाश वॉंग टॉंग का पर्दाफ़ाश!

बदमाश वॉंग-टॉंग चपाटाज़ के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर झूठी बातें कह रहा है.

"अभी-अभी आया, जापान से लाया, आला चपाटाज़, निराला चपाटाज़."

उसके पैर में पहनी हुई चपाटाज़ गुस्से से लाल हो रही हैं, पर वह बेखबर बोले जा रहा है.
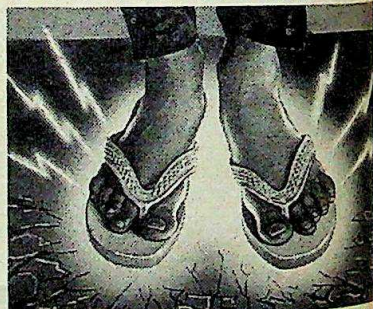
"इनका नहीं कोई सांनी, तक्नॉलोजी जापानी, ये जापानी चपाटाज़..".

आखिर चपाटाज़ ये झूठ सह नहीं पातीं और उसे उछाल फेंकती हैं.

अब चपाटाज़ गर्व से अपनी असलियत बताती हैं.
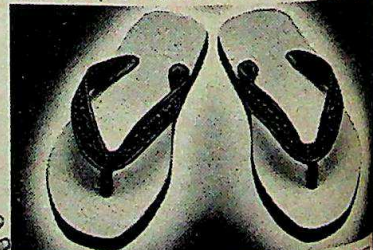
"इस बदमाश की बातों में न आइये. हम अस्सल हिन्दुस्तानी चपाटाज़ हैं. करोना की चपाटाज़. दम रबड़ से बनी. जापान क्या, दुनिया में कहीं भी चलने के लिये लाजवाब. आखिर यह हमारी इज़्ज़त का सवाल है."

मारा वाँग-टाँग का पर्दाफ़ाश हो चुका है. वह
सिया कर कहता है...

रे अपनी इज़्ज़त का तो फ़ालूदा बना दिया ना!"
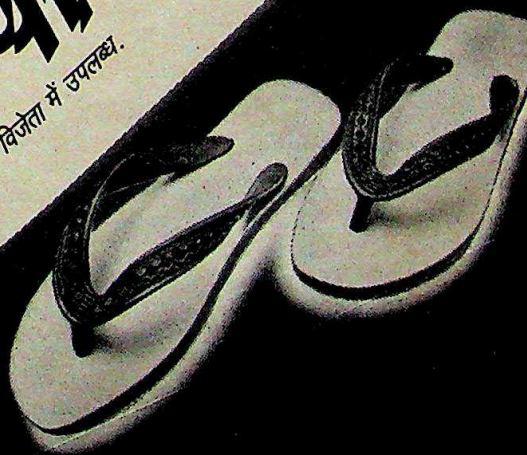
अजंता एलौरा

सह्याद्रि पहाड़ियों की गोद में स्थित अजंता की गुफाएं औरंगाबाद से लगभग 110 कि.मी. दूर हैं. औरंगाबाद से यहां के लिए विशेष बसें चलती हैं, जो सांझ ढले तक वापस औरंगाबाद पहुंचा देती हैं. यदि पर्यटक अजंता में ठहर कर इन गुफाओं के चित्रों को देखना चाहें तो विश्रामगृह, यात्री बंगला, रेस्ट हाउसों में पहले ही औरंगाबाद में संबंधित विभाग से आरक्षण करवा लें.

यहां ठहरने के लिए कैलाश होटल, गेस्ट हाउस व यात्री बंगले हैं.

अजंता में ईसा से 200 साल पहले से ले कर 650 ईसवी तक की गुफाएं हैं. गुफाएं जिस पहाड़ में खोदी गई हैं, उस पहाड़ का प्राकृतिक आकार घोड़े की नाल के समान है. सुबह नौ बजे से सायं साढ़े पांच बजे तक इन गुफाओं में जाया जा सकता है. एक गुफा में आप केवल 25 मिनट ही ठहर सकते हैं. रोशनी की विशेष व्यवस्था के लिए अतिरिक्त शुल्क देना पड़ता है.

ये सब गुफाएं बौद्ध धर्म से संबंधित हैं. यहां के बौद्ध भित्तिचित्र कला की कोमलता के लिए विख्यात हैं. 2,000 वर्ष पूर्व जो रंग उन चित्रों को बनाने के लिए प्रयोग में लाए गए थे, उन्हें उसी रूप में अब नहीं देखा जा सकता है. अजंता की गुफाओं में शुक्रवार के दिन प्रवेश निशुल्क है. सप्ताह के शेष दिनों में प्रवेश के लिए टिकट लेना पड़ता है.

अजंता की गुफाओं के पास ही व्यू पाइंट है जो औरंगाबादअजंता मार्ग पर 8[illegible] कि.मी. दूर है. यहां से गुफाओं को स्पष्ट देखा जा सकता है. 1819 में यहीं से ब्रिटिश सेना को इन गुफाओं के बारे में पता लगा था.
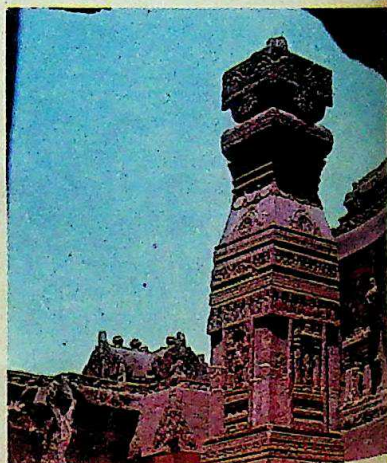
एलोरा की गुफाएं औरंगाबाद से 30 कि.मी. की दूरी पर स्थित हैं. एलोरा में 34 अलगअलग गुफाएं हैं. बौद्ध, जैन तथा हिंदुओं की सांस्कृतिक चेतना को इन गुफाओं में लगे नक्काशी वाले खंभे, सुंदर मूर्तियां और कलात्मक भित्तिचित्र पूरी तरह से प्रस्तुत करते हैं. कई गुफाओं के कलात्मक सौंदर्य को देख कर तो दर्शक दांतों तले उंगली दबाने लगते हैं. इन में सब से अधिक अद्‌भुत कला वाला कैलास मंदिर है, जो 5[illegible] मीटर लंबा, 33 मीटर चौड़ा और 30 मीटर ऊंचा है. इसे एक ही चट्टान को तराश कर बनाया गया है.

मांडू
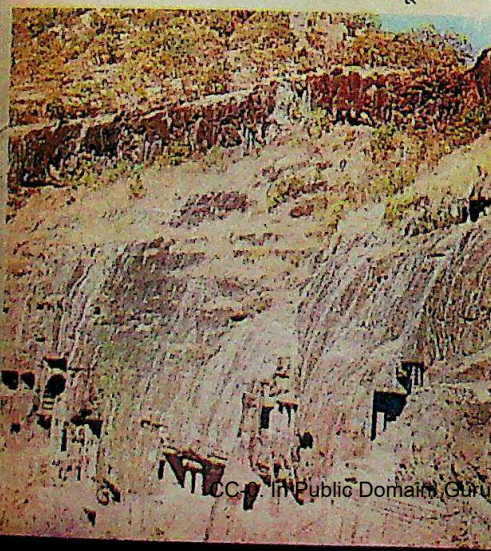
मध्य प्रदेश के इंदौर शहर से लगभग 100 कि.मी. दूर राजा भोज की नगरी धार से 32 कि.मी. दक्षिण में चारों ओर खाइयों से घिरा प्रकृति का एक अनुपम उपहार मांडू है. प्राचीन वास्तुकला की दृष्टि से मांडू दर्शनीय है.

विंध्याचल के एक ऊंचे पठार पर बसा मांडू मध्य काल के पश्चात से सुव्यवस्थित बसा है. यह अपने सौंदर्य के कारण मुसलिम शासन काल में राजधानी बना. सम्राट जहांगीर भी इस की खूबसूरती पर मुग्ध था. वह 6 माह मांडू रहा और उस ने कई महलों की मरम्मत करवाई एवं नए महल भी बनवाए. अकबर ने यहां नीलकंठ प्रासाद बनवाया. शाहजहां भी यहां दो बार आया और उस ने यहां के महलों से प्रेरणा ले कर अपने महल बनवाए.

मांडू की मुख्य विशेषता यह है कि यहां हिंदू और मुसलिम काल के यश और गौरव की गाथा के चिह्न अभी भी देखे जा सकते हैं. यहां के शिलालेखों से यह स्पष्ट है कि परमार राजा मुंज तथा भोज के काल में मांडू अस्तित्व में था. 1732 में मुगल साम्राज्य के पतन के बाद यह धार के मराठा शासकों के कब्जे में आ गया.

मांडू एक और मुख्य कारण से जाना जाता है. मालवा के अंतिम सुलतान संगीत प्रेमी बाजबहादुर और गायिका रानी रूपमती के प्रेम के किस्से अभी भी प्रसिद्ध हैं. मांडू में रूपमती और बाजबहादुर के विशाल महल, जहां संगीत की कड़ी प्रतिस्पर्धाएं होती थीं, आज भी स्थित हैं. रानी रूपमती और बाजबहादुर की प्रेम कहानी अभी भी वहां गूंजती सी लगती है.

बाजबहादुर ने रानी रूपमती के लिए विशेष महल का निर्माण किया, जहां से निमाड़ की नर्मदा नदी के दर्शन होते हैं. यहां से नर्मदा नदी धागे के समान दिखाई पड़ती है. कहा जाता है कि रानी रूपमती जब तक नर्मदा के दर्शन नहीं कर लेती थी, अन्नजल ग्रहण नहीं करती थी.

कैसे पहुंचें?

मांडू के लिए निकटस्थ हवाई अड्डा इंदौर है. इंदौर से मांडू जाने के लिए नियमित बस सेवा उपलब्ध है. लेकिन निजी बस सेवा ही अधिक उपयुक्त है क्योंकि इस में गाइड की व्यवस्था होती है और ये बसें पूरे मांडू (यानी अंदर तक) घुमाती हैं जब कि सरकारी बसें केवल मांडू स्टैंड तक ही जाती हैं. उस के बाद गाइड करना, टांगेटैंपो करना बहुत महंगा होता है. कभीकभी पर्याप्त सवारी के अभाव में ये साधन भी नहीं मिलते हैं. लेकिन निजी बसें केवल रविवार को ही चलती हैं और लगभग 8 दिन पूर्व आरक्षण कराना होता है. यद्यपि निजी बसों में अपेक्षाकृत अधिक पैसा लगता है और गाइड भी पूर्ण प्रशिक्षित नहीं होते हैं.

यहां अधकचरे गाइड भ्रांति फैलाते हैं, तथ्यों को तोड़मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं. इस से पर्यटकों को वास्तविक जानकारी नहीं मिल पाती है. यदि सुबह से भ्रमण हेतु निकला जाए तो एक दिन में पूरा मांडू देखा जा सकता है. भोजन के लिए साधारण स्तर के होटल हैं. ट्रेवलर्स लाज, टूरिस्ट बंगले, तवेली महल रेस्ट हाउस में ठहरने की भी सुविधा है.

मांडू के लिए वर्षा ऋतु के बाद जाना उपयुक्त है क्योंकि उस समय हराभरा प्राकृतिक वातावरण मन को मोह लेता है. बादलों एवं वादियों की अठखेलियां पर्यटकों का आनंद बढ़ा देती हैं.

दर्शनीय स्थल :

मांडू तीन ओर गहरी खाइयों से घिरा हुआ है. मांडू के लिए प्रवेश द्वार उत्तर दिशा में है. विशाल महल, हरित गहरी घाटियां,
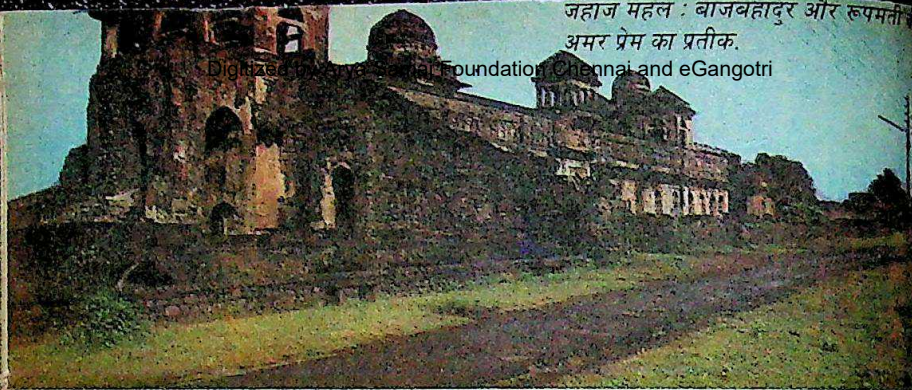
जहाज महल : बाजबहादुर और रूपमती के अमर प्रेम का प्रतीक.

तालाब और पर्वत मन को छू लेते हैं.

हिंडोला महल: हिंडोला महल उत्कृष्ट कलाकारी का बेजोड़ नमूना है. हिंडोला जैसा दिखने के कारण ही इस का यह नाम पड़ा. इस की मोटी दीवार 77 अंश के कोण पर झुकी हुई बनाई गई है.

जामा मसजिद : जामा मसजिद 1450 में बनाई गई है, जो अपने भव्य निर्माण और आकार के कारण देश की विशालतम मसजिदों में से एक है. यह मसजिद यवनकालीन कारीगरी का अद्वितीय नमूना है.

जहाज महल : यह 15वीं शताब्दी के मध्य में सुलतान गयासुद्दीन खिलजी द्वारा बनवाया गया है. यह महल पानी के दो बड़े तालाबों के बीच बना हुआ है. इस की आकृति जहाज के समान है. संभवतः इसी कारण इसे जहाज महल कहते हैं.

होशंगशाह का मकबरा : पूरा मकबरा संगमरमर का बना हुआ है और पुरातत्त्व की दृष्टि से यह बहुत महत्त्व का है. कहा जाता है कि शाहजहां ने ताजमहल बनवाने से पहले अपने कारीगरों को इस मकबरे की वास्तुकला के अध्ययन हेतु भेजा था.

मांडू के संबंध में बहुत सी दंतकथाएं प्रचलित हैं. इन की सत्यता तथा तथ्यता चाहे जो हो लेकिन मांडू के महलों की कलाकारी, भव्यता, बनावट और सौंदर्य देखने योग्य है.

—अनंत श्रीमाली

लोनावला खंडाला

महाराष्ट्र स्थित लोनावला और खंडाला की पहाड़ियां बंबई से 128 किलोमीटर तथा पूना से 64 किलोमीटर की दूरी पर अपनी खूबसूरती तथा स्वास्थ्य लाभ के लिए काफी विख्यात हैं. वैसे इन दोनों पहाड़ियों के बीच की दूरी लगभग 5 किलोमीटर है, लेकिन आमतौर पर लोग इन्हें एक ही नाम से पुकारते हैं. जब बंबई की गरमी झुलसाने लगती है तो बचने के लिए लोग इन पहाड़ों में शरण लेते हैं.

इन पहाड़ियों को पर्यटन स्थल का सेहरा सर्वप्रथम 1871 में ब्रिटिश गवर्नर सर एलफिंस्टन ने पहनाया था. भारत के दक्षिणी पश्चिमी हिस्से के इस पर्वतीय पर्यटन स्थल का विकास तभी शुरू हो गया था. इन दोनों पहाड़ियों के आसपास बिखरा प्राकृतिक सौंदर्य अपने लुभावने दृश्यों के कारण पर्यटकों को वहां आने के लिए आमंत्रित करता प्रतीत होता है.

कब जाएं?

अक्तूबर से मई तक का समय यहां के लिए बेहतर रहेगा.

कैसे जाएं?

लोनावला खंडाला जाने के लिए पहले बंबई या पुणे पहुंचना पड़ता है. ये दोनों शहर देश के सभी मार्गों से जुड़े हुए हैं. खंडाला जाने के लिए नियमित बसें, टैक्सियां और जीपें उपलब्ध हो जाती हैं, जो हर आधे घंटे बाद जाती हैं.

खंडाला और लोनावला मध्य रेलवे की बंबईपूना वाली बड़ी रेलने लाइन से भी जुड़े हुए हैं. पूना से लोनावला के लिए कुछ स्थानीय रेलें भी जाती हैं. हवाई मार्ग से जाने वाले पर्यटक बंबई और पूना दोनों जगह उतर सकते हैं, जहां से बसों द्वारा पहुंचा जा सकता है.

कहां ठहरें?

महाराष्ट्र का प्रमुख पर्यटन स्थान होने के कारण यहां ठहरने की उचित व्यवस्था है. यहां भारतीय और पश्चिमी शैली के महंगे और सस्ते होटल एवं धर्मशालाएं भी हैं, जहां पर्यटकों को सभी सुविधाएं मिल जाती हैं.

लोनावला में अशोक, अन्नपूर्णा, रीगल, गिरिकुंज, आदर्श, वुडलैंड तथा खंडाला में मयूर, खंडाला, गिरिजा, मयूर, पाइंट व्यू और अलताज होटल आदि हैं, जिन में कम से कम 75 रुपए और ज्यादा से ज्यादा 350 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से ठहरा जा सकता है. इन के अलावा म्यूनिसिपल रेस्ट हाउस में भी ठहरा जा सकता हैं, पर उस के लिए पहले से आरक्षण करवाना जरूरी है.

क्या देखें?

राजमची पाइंट: लोनावला स्टेशन से 7 किलोमीटर दूर राजमची पाइंट (शाही छत) शिवाजी द्वारा बनाया गया भव्य किला पुरातत्त्व दृष्टि से एक अद्वितीय मिसाल है. यह स्थल किले तथा घाटी के इर्दगिर्द के सौंदर्य की भव्यता को समेटे हुए है.

तुनगरली झील: स्टेशन से 3 किलोमीटर दूर बनी इसी झील से शहर में पानी पहुंचाया जाता है. यहां का रमणीय दृश्य पर्यटकों को लुभाता है. कैवल्य धाम योग केंद्र झील के पास स्थित है यहां पर योग प्रशिक्षण तथा शोधकार्य के अलावा योग हस्पताल भी है, जहां रोगियों का योग द्वारा उपचार किया जाता है.

मुमुज चिड़ियाघर: राजमची पाइंट से लगभग 1 किलोमीटर दूर इस चिड़ियाघर में विभिन्न प्रकार के जीवजंतुओं को देखा जा सकता है.

लोहागढ़ किला: एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित इस किले पर चढ़ कर पर्यटक ऊंचीऊंची पहाड़ियों और नीचे बसे गांवों को देख कर अपने मन में स्मृतियां संजो सकते हैं. छत्रपति शिवाजी द्वारा दो बार जीता गया यह किला पुरातत्त्व दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है.

ड्यूक्स नोज: खंडाला की यह सब से प्रसिद्ध पहाड़ी है, जो पर्यटकों के आकर्षण का अच्छाखासा केंद्र है. पहाड़ की चोटी पर चट्टान नाक की तरह उभरी हुई है, जो 'आयरन ड्यूक' के नाम से मशहूर वैलिंगटन के ड्यूक की नाक से मेल खाती थी. तभी यह स्थान ड्यूक की नाक के नाम से चर्चित हो गया.

भाजा की गुफाएं: लोनावला से 3 किलोमीटर दूर इन गुफाओं की नक्काशी देख पर्यटक मुग्ध हुए बिना नहीं रहते. ये संख्या में 18 हैं.

बेडसा की गुफाएं: अपनी दीवारों पर तथा खंभों पर हुई नक्काशी के लिए विख्यात इन गुफाओं तक पहुंचने के लिए कामशेत से बस बदल कर बेडसा गांव तक पहुंचना पड़ता है, जहां से कुछ ही दूर ये गुफाएं स्थित हैं.

कारला की गुफाएं: खंडाला से 10 किलोमीटर दूर और बंबईपूना मार्ग पर मालावली स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर ये गुफाएं स्थित हैं.ये गुफाएं ईसा पूर्व से 160 वर्ष से भी अधिक पुरानी हैं. इन गुफाओं की कलाकृतियां शिल्पकला का एक अद्भुत उदाहरण पेश करती हैं. गुफाओं के द्वार पर स्तंभ हैं जिन पर तीन सिंहों की आकृतियां खुदी हैं और दूसरी ओर वीर देवी का मंदिर है. खंभे पर बने मिथुन जोड़े वाली चौखट काफी विख्यात है.
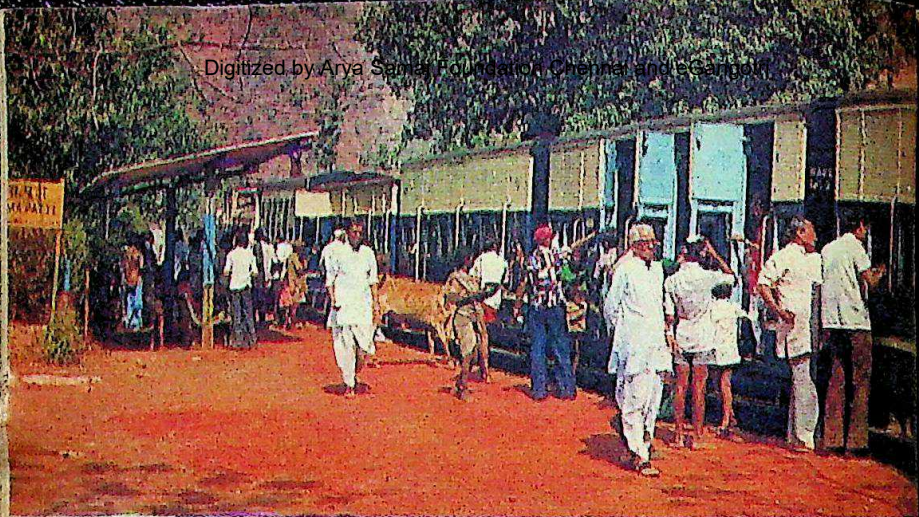
माथेरान

1880 में ठाणे के कलक्टर मैलेट द्वारा खोजा गया माथेरान बंबई से 104 कि.मी. दूर समुद्र की सहत से 803.47 मीटर की ऊंचाई पर महाराष्ट्र का एक सुंदर पर्वतीय पर्यटन स्थल है. खंडाला के बाद माथेरान बंबई के समीपतम पर्वतीय स्टेशनों में से एक है. पहाड़ी वनों से घिरी पर्वतीय चोटियां और ढलावदार ऊंचीनीची पहाड़ियां बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं. यहां का मुख्य आकर्षण लंबी पैदल सैर का मजा है यहां ऐसे कई स्थान भी हैं, जहां से विभिन्न कोणों से इन पहाड़ों के मनोरम दृश्य और खूबसूरती को निहारा जा सकता है.

बंबई से नेराल दो घंटे में पहुंच जाते हैं. नेराल से माथेरान के लिए रंगीन खिलौना गाड़ी खड़ी मिलेगी. जब यह गाड़ी सघन जंगलों से कई सुरंगें पार करते हुए पैने मोड़ पर से बल खाती हुई घुमावदार रास्ते से गुजरती है तो झूले सा मजा आता है. रास्ते में गाड़ी के ऊपर से कूदतेफांदते काले मुख वाले बंदर माथेरन तक आप का साथ देंगे.

माथेरान की विशिष्टता है यहां का निस्तब्ध वातावरण और धीमी गति. यहां मोटरकारें नहीं हैं. सवारी के लिए सिर्फ घोड़े, खच्चर तथा रिकशा ही साधन हैं. ज्यादातर दर्शनीय स्थल पास ही हैं. आप वहां तक पैदल जा सकते हैं. नेराल और पैनोरमा पाइंट पर मिलने वाले मार्ग तथा गेरबट पाइंट पर तराशे हुए शिलाखंड हैं, जो कभी नरबलि के लिए प्रयोग में लाए जाते थे. लुइसा और ईको पाइंटों से बंबई के तेलशोधक कारखाने, एलीफैंटा टापू, समुद्र आदि पृष्ठभूमि से निकलते हुए दिखाई देते हैं.

वन ट्री हिल से घाटी में जाने वाले रास्ते पर तीन लिंग मंदिर हैं. यहां संत पिसारनाथ (जो शिवाजी के काल में थे) की समाधि है.

घाट रोड सड़क से आप 2,000 फुट की ऊंचाई पर दक्षिणी पठार पर पहुंचते हैं जो सयादरी पर्वत भृंखला या पश्चिमी घाटों का छोर है. दाईं तरफ नाक की तरह उभरी

एक चट्टान ड्यूक नोज के नाम से प्रसिद्ध है. घाट के शिखर से तटीय घाटी का वह दृश्य दिखाई पड़ता है, जिसे आप पीछे छोड़ आए हैं. दूसरे छोर पर फैले पहाड़, जंगल और बहते झरने सप्ताहांत बिताने आए शहरी लोगों को बरबस आकर्षित करते हैं. यही घाट रोड खंडाला तथा लोनावला से हो कर जाती है.

माथेरान जाने के लिए अक्तूबर से मई तक का समय उपयुक्त होगा. क्योंकि जून से सितंबर तक यहां वर्षा के कारण खासी परेशानी उठानी पड़ती है.

कैसे जाएं?

माथेरान बंबई से 104 कि.मी. की दूरी पर स्थित है तथा पुणे से इस की दूरी 232 कि.मी. है. वायुमार्ग, रेल मार्ग और बस मार्ग द्वारा यहां पहुंचा जा सकता है.

वायु मार्ग से: निकटतम हवाई अड्डा बंबई है, जहां से माथेरान के लिए नियमित बसें और टैक्सियां मिलती हैं.

रेल मार्ग से: नेराल माथेरान का सब से नजदीकी रेलवे स्टेशन है, जहां से छोटी खिलौना गाड़ी द्वारा माथेरान पहुंचा जा सकता है. नेराल रेलवे स्टेशन बंबईपुणे लाइन पर स्थित है, जहां पूना एक्सप्रेस द्वारा पहुंचा जा सकता है, लेकिन बरसात में नेराल से माथेरान की ट्रेन सर्विस स्थगित कर दी जाती है. नेराल से माथेरान के लिए यात्रा करने वाले यात्रियों को अपना सामान ब्रेक वैन में बुक करवाना जरूरी है. अन्यथा जुरमाना देना पड़ेगा क्योंकि डब्बे में अपने साथ सिर्फ हैंडबैग, ... सामग्री, छाता, घड़ियां ले जाने की ही अनुमति है.

बस मार्ग से: बंबई और पूना से माथेरान की नियमित बस सेवाएं मिलती हैं. लेकिन माथेरान पहुंचने के बाद पर्यटक पैदल, रिकशों और खच्चरों पर ही घूम सकेंगे. यहां चलने वाले रिकशों को एक आदमी खींचता है, दो पीछे से धकेलते हैं.

कहां ठहरें?

माथेरान में पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सस्ते, महंगे और देशीविदेशी दोनों तरह के होटल और लाज बनाए गए हैं. लाड, सेंट्रल होटल, वेस्टएंड होटल, रायल होटल आदि पश्चिमी शैली यानी विदेशी शैली के होटल हैं, जहां पर्यटक 250 रुपए से 450 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से ठहर सकते हैं. इन में ब्राइटलैंड्स थोड़ा सस्ता लेकिन आरामदेह है.

भारतीय शैली को पसंद करने वाले पर्यटकों के लिए यहां अशोक होटल, अलंकार होटल, होप हाल होटल, जनता हैपी होम, अलेक्जेंडर गेस्ट हाउस, लक्ष्मी होटल, प्रसन्न होटल आदि में कम से कम 45 रुपए और ज्यादा से ज्यादा 150 रुपए तक में ठहरा जा सकता है. इन के अलावा हालीडे कैंप, स्काट बंगला, निरीक्षण गृह, म्यूनिसिपल रेस्ट हाउस और कई सैनेटोरियम भी माथेरान में रुकने के अच्छे पड़ाव हैं. लेकिन यहां ठहरने के लिए संबंधित अधिकारियों से पहले अनुमति ले कर आरक्षण करवा लेना अति आवश्यक है.

क्या देखें?

ओलंपिया घुड़दौड़: हर वर्ष मई के माह में माथेरान में एक घुड़दौड़ तथा अन्य खेलों का आयोजन होता है. घुड़दौड़ के शौकीन पर्यटक यहां घुड़सवारी भी कर सकते हैं.

ढलावदार ऊंचीनीची पहाड़ियां, पहाड़ी वनों से घिरी पर्वत चोटियां पर्यटकों को आकर्षित करती हैं
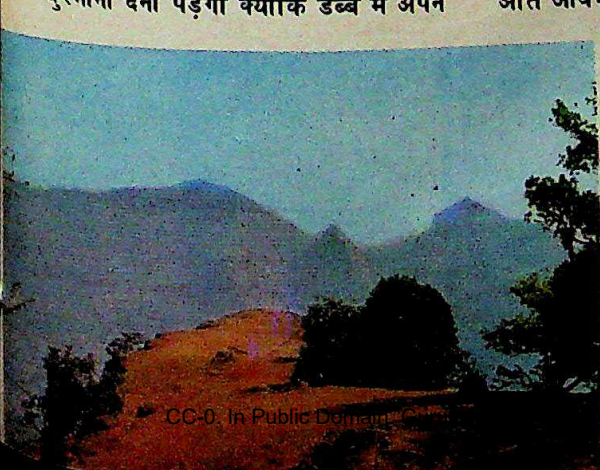
पर्यटकों में विशेष लोकप्रिय है.

रामबाग: इस ऐतिहासिक गांव में शिवाजी की प्रयोग की हुई सीढ़ी और आसपास के मनोरम दृश्य पर्यटकों को आकर्षित करते हैं. नौरोजी लार्ड गार्डन, महात्मा गांधी रोड पर स्थित खूबसूरत बाग है.

चारलेह झील: संपूर्ण माथेरान को पानी उपलब्ध कराने वाली यह झील एक अति रमणीय पिकनिक स्थान भी है. यहां ऊंचीनीची पहाड़ियां और झुका हुआ नीला आसमान आकर्षण का खासा केंद्र है. केथेड्रल राक से सूर्यास्त के समय बंबई शहर की जगमगाती रोशनियां नजर आती हैं.

मंकी पाइंट: यहां से रात में बंबई शहर को जगमगाता हुआ देखा जा सकता है.

पे मास्टर पार्क: सैरगाह के रूप में पर्यटकों में विशेष लोकप्रिय है.

पैनोरमा पाइंट: यहां से सूर्यास्त का सुंदर दृश्य पर्यटकों को खासा लुभावना लगेगा.

इस के अलावा, पांडे खेल मैदान, बरमुख पार्क आदि भी देखने लायक स्थान हैं.

माथेरान के आसपास लगभग 33 पाइंट स्थल हैं, जहां से माथेरान का समूचा सौंदर्य स्मृतियों में संजोया जा सकता है.

क्या खरीदें?

न्यू शापिंग केंद्र और कापड़िया बाजार से पर्यटक अपनी पसंदानुसार चीजें खरीद सकते हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता:

पर्यटन सूचना केंद्र, माथेरान, रेलवे स्टेशन के सामने, महाराष्ट्र.

बंबई

बंबई नगरी. इसे कुछ लोग अपने सपनों की रानी मानते हैं तो कुछ लोग इसे छलावे की नगरी समझते हैं. वैसे कुछ भी हों, लगभग सभी लोगों के हृदय में कम से कम एक बार इसे देखने की तमन्ना जरूर रहती है. तो इसी मोहिनी बंबई की सैर करने को आप भी तैयार हो जाइए.

मौसम:

बंबई यात्रा से पहले यहां के मौसम के बारे में भी कुछ जानकारी रखनी जरूरी है. बंबई घूमने का सब से अच्छा समय अक्तूबर से ले कर मार्च तक रहता है. जब यहां न तो अधिक गरमी रहती है न अधिक सर्दी. इसी कारण यदि किसी वर्ष बहुत अधिक सर्दी पड़ती है प्रायः जनवरी/फरवरी में तो एक स्वेटर या हलके कंबल की जरूरत पड़ सकती है. किंतु यहां पर अधिकतर लोग सूती कपड़ों में ही गुजारा कर लेते हैं.

बंबई में मार्च से ले कर जून तक गरमी का मौसम रहता है. इस समय यहां गरमी तो बहुत नहीं होती है, किंतु हवा में नमी के कारण पसीना जल्दी सूखता नहीं है,

बंबई का विक्टोरिया टर्मिनल रेलवे स्टेशन. हर वक्त यहां भीड़ रहती है
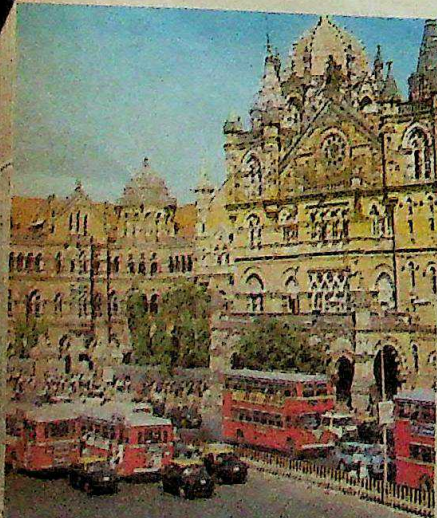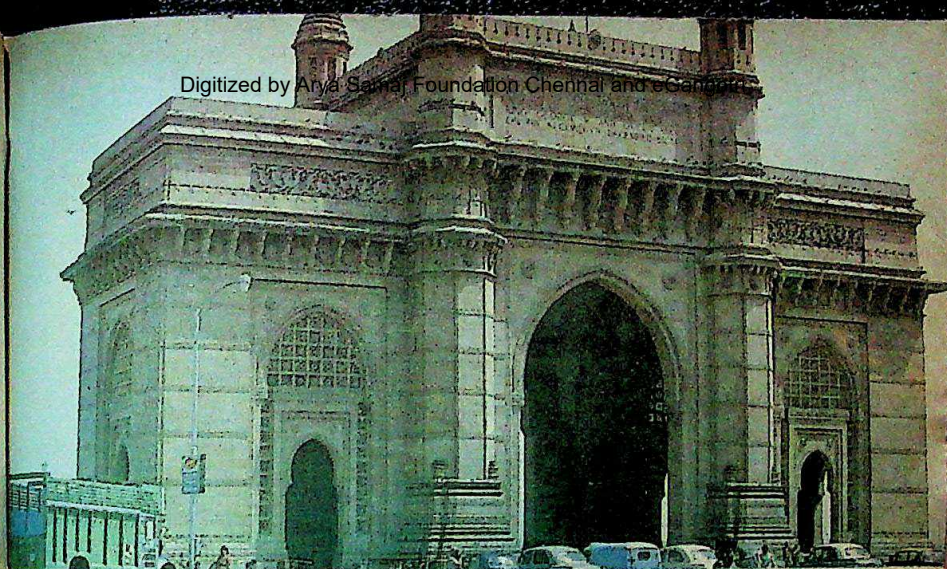
गेटवे आफ इंडिया : शाम के समय घूमने के लिए उपयुक्त जगह

इसलिए चिपचिपापन बना रहता है. किंतु इस गरमी के मौसम में भी जब आप बंबई के सागर तट पर घूमते हैं तो शिमला, नैनीताल का मजा आ जाता है.

जून से ले कर अक्तूबर तक तो बंबई में जम कर बारिश होती है. इसलिए इन दिनों घूमने में थोड़ी परेशानी होती है. लेकिन यदि एक छाते या हलके रेनकोट का प्रबंध कर लिया जाए तो यह समस्या भी सुलझ सकती है.

होटल तथा रेस्तरां

बंबई पहुंचने के लिए देश के कोनेकोने से रेलों, बसों तथा वायुयानों का जाल सा बिछा है. रेल से यहां मध्य रेलवे अथवा पश्चिम रेलवे द्वारा पहुंचा जा सकता है. इस के लिए या तो दादर रेलवे स्टेशन (पश्चिम रेलवे तथा मध्य रेलवे) पर उतर सकते हैं अथवा बंबई वी.टी. (मध्य रेलवे) या बंबई सेंट्रल (पश्चिम रेलवे) पर उतरा जा सकता है. बसों का प्रमुख अड्डा बंबई सेंट्रल के पास है.

इन सभी स्टेशनों के आसपास कई होटल हैं. वहां ठहरने का इंतजाम किया जा सकता है. लेकिन अधिकतर बंबई के होटल यात्रियों से भरे रहते हैं, इसलिए कईकई होटलों का चक्कर लगाने के बाद ही जा कर कहीं जगह मिल पाती है. इसलिए इन होटलों में कुछ समय पहले से ही आरक्षण करा लेना अच्छा रहता है.

बंबई में भारतीय शैली के होटल जैसे अरोमा (दादर), मनोरा (फोर्ट), रीगल पैलेस (आपेरा हाउस), मीराबेल (बंबई सेंट्रल), अनुकूल (ग्रांट रोड) आदि हैं, जिन के किराए प्रति व्यक्ति 40 रुपए से ले कर 80 रुपए तथा डबल रूम का 70 से 150 रुपए प्रतिदिन तक है. इन के अलावा बंबई सेंट्रल तथा वी.टी. स्टेशनों पर रेलवे के रिटायरिंग रूम भी हैं. बंबई में कुछ रैनबसेरे की शैली के लाज भी हैं, जहां सोने के लिए एक कमरे में 10-12 चारपाइयां तक रहती हैं. इन चारपाइयों का किराया 5-10 रुपए प्रतिदिन तक होता है. यहां पर सामान रखने के लिए एक अलमारी दी जाती है, लेकिन फिर भी कीमती सामान इन लाजों में रखना ठीक नहीं है.

पश्चिम शैली के होटलों में एंबेसेडर (चर्चगेट), एयरपोर्ट प्लाजा (विले पार्ले),

अजंता (सांताक्रूज), हॉलीडेइन (जुहू), ग्रांड इंटरनेशनल (चर्चगेट) तथा नटराज (चर्चगेट) आदि हैं, जिन के किराए 300-600 (सिंगल) या 500 से 800 (डबल बेड) प्रतिदिन तक हैं.

खाने के लिए बंबई में अधिकतर दक्षिण भारतीय शैली के उडिपी रेस्तरां हैं अथवा कुछ पंजाबी होटल हैं. उडिपी होटलों में 5-6 रुपए में थाली (जिसे यहां राइस प्लेट भी कहते हैं) मिल जाती है, जिन में पूरियां, चावल, दाल या सांभर, सब्जी, चटनी, रसम, दही आदि रहता है. ये होटल अधिकतर शाकाहारी होते हैं. इन के अलावा उत्तर भारत से आए लोगों को पंजाबी होटलों के खाने पसंद आते हैं, जिस में तंदूरी रोटी, दाल, सब्जी, मांसाहारी आहार आदि रहता है. इन होटलों में एक थाली का दाम लगभग 6-7 रुपए तक होता है.

यात्रा के साधन

बंबई में यात्रा के प्रमुख साधन स्थानीय विद्युत रेल, बी.इ.एम.टी. बस तथा टैक्सियां हैं. स्थानीय रेलें सब से सस्ती तथा शीघ्रगामी होती हैं. इन गाड़ियों की आवृति प्रति 2-3 मिनट होती है. लेकिन इन में भीड़ बहुत अधिक होती है तथा स्टेशनों पर ये 20-30 सेकंड से अधिक नहीं रुकती हैं. अतः इन गाड़ियों में यात्रा करने में बहुत कुशलता की जरूरत पड़ती है. इस के अलावा भीड़भाड़ तथा धक्कमधक्के के कारण जेबकतरों तथा असामाजिक तत्त्वों का भी खतरा बना रहता है. अतः जहां तक हो सके स्थानीय रेल यात्राओं को प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए.

यात्रा के लिए यहां बी.ई.एम.टी. बसों का उपयोग अधिक सुविधाजनक होता है. वैसे ये बसें यात्रा में समय कुछ अधिक लगाती हैं तथा इन की आवृत्ति भी रेल की अपेक्षा कम रहती हैं. किंतु इन में यात्रा करना सहज तथा अधिक सुरक्षित रहता है. लेकिन बस की यात्रा इन के प्रस्थान स्थल से ही प्रारंभ करनी चाहिए, नहीं तो बस यात्रा में भी काफी परेशानी होती है.

टैक्सियां यहां मीटर के रेट से किराया

जुहू का समुद्री तट : यहां हरदम पर्यटकों का मेला सा लगा रहता है ▼
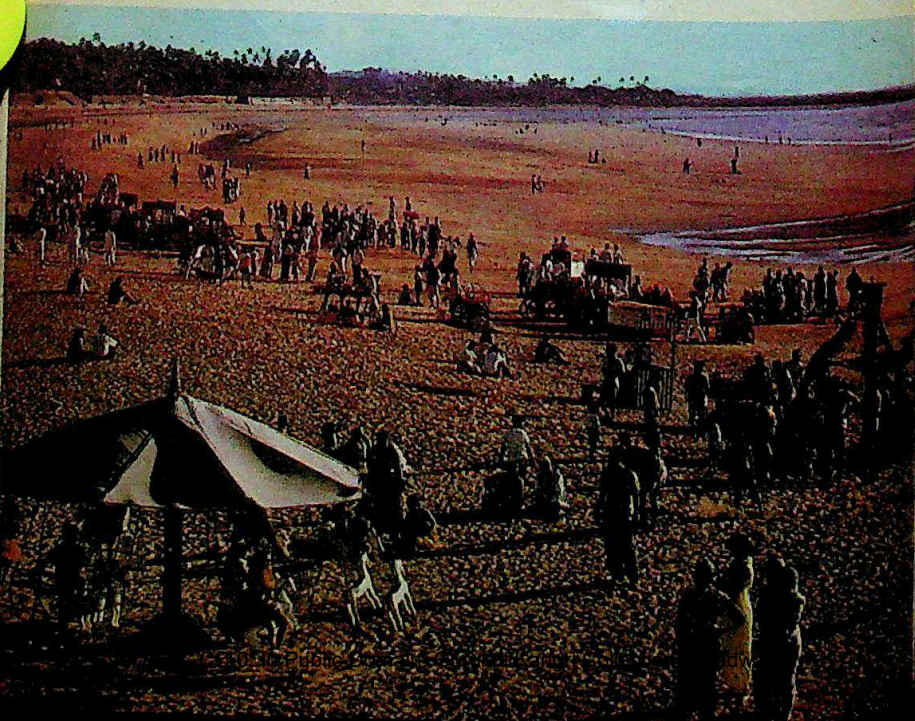
लता है. (जितना मीटर दर्शाता है उस का साढ़ेतीन गुणा कर दिया जाता है) टैक्सी का प्रथम 1½ कि.मी. का किराया 3.75 रुपए तथा उस के बाद प्रति कि.मी. 3 रुपए लगता है. सामान का अलग से प्रति नग 1 रुपए की दर से भाड़ा लगता है. एक टैक्सी में अधिक से अधिक चार यात्रियों की मंजूरी है. वैसे तो टैक्सी से यात्रा करना यहां रेल या बस से कई गुना महंगा पड़ता है. किंतु फिर भी यदि कम दूरी की यात्रा है (तीन चार कि.मी. तक की) अथवा यदि आप के साथ सामान है तो टैक्सी से यात्रा करना ही ठीक रहता है.

यहां के टैक्सी ड्राइवर सामान्य तौर पर ईमानदार हैं. उत्तर भारत के स्कूटर व टैक्सी वालों की तरह लूटने की कोशिश काफी कम करते हैं. आप टैक्सी में बैठ जाएं तो बताइए कहां जाना है. शाम के समय ही कई बार जाने के अभिप्राय से आप को ले जाने से मना कर सकते हैं.

दर्शनीय स्थल

बंबई की सैर के लिए सब से सुविधाजनक वाहन भारत सरकार तथा महाराष्ट्र शासन द्वारा चलाई गई टूरिस्ट बसें हैं, जो सोमवार को छोड़ कर अन्य सभी दिन चलती हैं. (वैसे यहां पर यह भी उल्लेखनीय है कि बंबई के प्रमुख दर्शनीय स्थल सोमवार को बंद रहते हैं). इन टूरिस्ट बसों के टिकट चर्चगेट स्टेशन के पास स्थित भारत सरकार के टूरिस्ट आफिस तथा सचिवालय के पास के महाराष्ट्र शासन के एम.टी.डी.सी. आफिस से मिलते हैं तथा ये बसें वहीं से चलती भी हैं.

ये टूरिस्ट यात्राएं दो प्रकार की होती हैं. उपनगरीय सैर के लिए बस का किराया 50 रुपए प्रति व्यक्ति है. यह यात्रा प्रातः 10 बजे से आरंभ हो कर शाम 6 बजे तक चलती है. रास्ते में यह जुहू, आरे मिल्क कालोनी, तुलसी झील, कन्हेरी गुफाएं, बोरीवली नेशनल पार्क, बिहार झील, पवाई झील तथा हवाई अड्डा हो कर जाती हैं.

नगर की सैर के लिए बसें दिन में दो
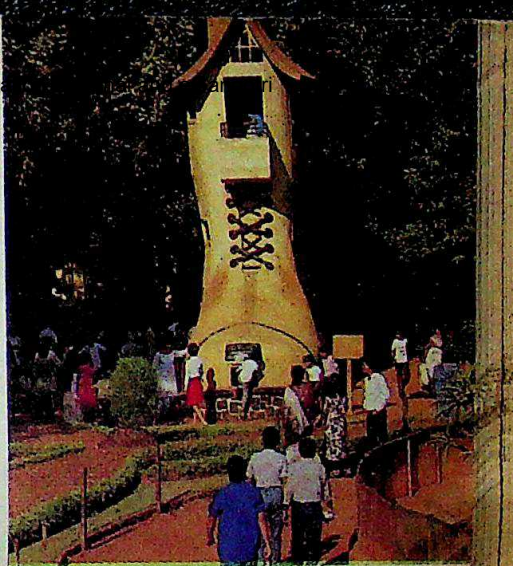
हैंगिंग गार्डन में बूट के आकार की यह इमारत दर्शकों को आकर्षित करती है ▲

बार, सुबह 9 से 1 बजे और 2 बजे दोपहर से शाम 6 बजे तक चलती हैं. बस का किराया 25 रुपए प्रति व्यक्ति है. रास्ते में यह गेट वे आफ इंडिया, म्यूजियम, तारापोरवाला मछलीघर, चौपाटी, मैरीन ड्राइव, कमला नेहरू पार्क, हैंगिग गार्डन, जैन मंदिर तथा मणि भवन आदि स्थानों को दिखाती हैं.

वैसे ये टूरिस्ट बसें थोड़ी महंगी जरूर हैं, किंतु उन के द्वारा सैर करने से रास्ते के सभी झंझट समाप्त हो जाते हैं. इस प्रकार ये बंबई में नए आने वाले लोगों के लिए काफी सुविधाजनक हैं.

महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम की ये बसें एकदो व्यक्तियों के लिए ठीक हैं. यदि चार व्यक्ति हों तो टैक्सी लेना सस्ता व सुविधाजनक है. उन के गाइड बस में बैठेबैठे ही समझाते हैं और बहुत रूखे स्वभाव के हैं.

बंबई के दर्शनीय स्थलों में उपर्युक्त वर्णित स्थानों के अलावा एलीफेंटा गुफाएं, नेहरू प्लैनेटेरियम, हाजी अली, महालक्ष्मी मंदिर, चिड़ियाघर, नरीमन पाइंट, रेसकोर्स आदि भी देखने योग्य हैं.

यह सागर तट पर स्थित होने के कारण बंबई का प्रमुख आकर्षण समुद्र ही है. इस सागर सौंदर्य के दर्शन यहां पर जुहू, चौपाटी, मैरीन ड्राइव, वारसोवा, महालक्ष्मी आदि स्थानों से किए जा सकते हैं. इन स्थानों पर सागर का लहराता मादक सौंदर्य तथा भीगी ठंडी हवाएं बदन की सारी थकावट दूर कर देती हैं. लेकिन यदि वास्तव में सागर यात्रा का आनंद लेना है तो गेट वे आफ इंडिया से एलीफेंटा गुफाओं तक की नौका यात्रा करनी चाहिए.

सागर के अलावा यहां झीलें (विहार, पवाई, तुलसी), पहाड़ियां (आरे, कन्हेरी, एलीफेंटा), पार्क (नेशनल पार्क, लायंस पार्क, सांताक्रूज) आदि हैं. लेकिन फिल्मों की नगरी बंबई की महिमा बगैर फिल्मी चर्चा के अधूरी रह जाएगी.

बंबई के प्रमुख फिल्म स्टुडियो फिल्मनगर (चांदीवली), नटराज तथा मोहन (अंधेरी), आर.के. (चेंबूर), रंजीत (दादर) आदि हैं. किंतु इन स्टुडियो में दर्शकों के अंदर जाने की आज्ञा नहीं है तथा यहां के सुरक्षा कर्मचारी दर्शकों के साथ बहुत सख्ती और अभद्रता से पेश आते हैं. अतः जब तक किसी अंदरूनी संबंध द्वारा पूर्व अनुमति न ले ली गई हो, इन स्टुडियो में अंदर जाने का प्रयास नहीं करना चाहिए.

फिल्मी सितारे अधिकतर पाली हिल बांद्रा (दिलीपकुमार, सायरा बानो, राजेश खन्ना, जीतेंद्र, प्राण आदि) अथवा जुहू पार्ले (अमिताभ बच्चन, देवानंद, धर्मेंद्र, हेमा मालिनी, रेखा, लक्ष्मीकांत, प्यारेलाल आदि) स्थानों में रहते हैं. किंतु ये स्थान भी प्रायः दर्शकों के लिए वर्जित से हैं. हां, कभीकभी जुहू, नेशनल पार्क या आरे आदि स्थानों पर चल रही फिल्म शूटिंग देखने को मिल जाती है.

बंबई आने के बाद यहां से अजंता, एलोरा, औरंगाबाद, शिर्डी, पूना, गोआ, माथेरान, महाबलेश्वर आदि स्थानों की भी यात्रा की जा सकती है.

—बिमल श्रीवास्तव

महाबलेश्वर

सन 1828 में सर मैलकम द्वारा खोजा गया महाबलेश्वर महाराष्ट्र में बंबई से लगभग 235 किलोमीटर दूर और समुद्रतल से 1,372 मीटर की ऊंचाई पर एक सुंदर मनोरम पर्वतीय पर्यटन स्थल है. चारों तरफ फैले बागबगीचे, घास के मैदान, हवादार सड़कें, खूबसूरत झील, गोल्फ का मैदान तथा टेनिस कोर्ट यहां के मुख्य आकर्षण हैं.

अपनी शांत प्रकृति और अद्वितीय ऐतिहासिक धरोहरों के कारण महाबलेश्वर पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है. इस से पहले अंगरेजों के शासनकाल में महाबलेश्वर उन की गरमियों की राजधानी भी रहा है. लेकिन यह स्थान सब से अधिक महत्त्वपूर्ण शिवाजी के शासनकाल में ही रहा क्योंकि उस समय उन की सेनाएं आक्रमण कर के भाग कर इसी स्थान पर छिप जाती थीं.

अंगरेज जनरल लाडविक को भी महाबलेश्वर काफी पसंद था. वह अकसर अपनी गरमियां यहीं बिताया करता था. उसी ने अपने लेखों में महाबलेश्वर की सुंदरता का बखान कर के सरकार को इस के विकास के लिए प्रेरित किया था.

कब जाएं?

महाबलेश्वर जाने के लिए अक्तूबर से जून तक का समय उपयुक्त है. जून से अक्तूबर तक का समय में बरसात के कारण सारा कार्यक्रम गड़बड़ा सकता है.

कैसे जाएं?

महाबलेश्वर जाने के लिए पहले बंबई या पुणे आना पड़ता है. बंबई देश के सभी भागों से सड़क, रेल और वायुमार्ग से जुड़ा है.

चट्टानों को तराश कर बनाई गई खूबसूरत मूर्तियां यहां 'राक टैंपल' में देखी जा सकती हैं

पुणे भी देश के सभी भागों से जुड़ा है. पुणे से महाबलेश्वर की दूरी 122 किलोमीटर है. यहीं से जाना सब से सुविधाजनक भी रहता है क्योंकि इस रास्ते से जाने पर महाबलेश्वर से 19 कि.मी. पहले पंचगनी हिल स्टेशन भी देखा और घूमा जा सकता है. बंबई से महाबलेश्वर की दूरी (वाया पुणे) 290 कि.मी. है. बंबई से बस द्वारा महाबलेश्वर के 6 घंटे और पुणे से 4 घंटे लगते हैं. बंबई से चलने वाली बसें सवेरे चल कर दोपहर को महाबलेश्वर पहुंचती हैं और फिर दोपहर बाद वहां से वापस हो कर शाम के अंतिम पहर में बंबई पहुंच जाती हैं.

इस के अलावा महाबलेश्वर कठार, सतारा, पंचगनी, मेढ़ा, कोलहापुर, कुदाल, दपोली, बारामती और तपोला आदि स्थानों से भी जुड़ा हुआ है. सीजन में महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम भी अपनी बसें चलाता है, जो बंबई से चलती हैं. टैक्सियों और राज्य परिवहन की बसों द्वारा भी महाबलेश्वर आराम से पहुंचा जा सकता है. इन सभी के अतिरिक्त बिना मीटर की टैक्सियां भी चलती हैं, जो महाबलेश्वर घुमाने के लगभग 50 रुपए प्रति व्यक्ति वसूल करती हैं.

कहां ठहरें?

महाबलेश्वर में देशी और विदेशी दोनों तरह के होटलों में ठहर सकते हैं. फ्रेडरिक, रेसव्यू, रिट्ज अच्छे होटलों की गिनती में हैं. इन के अलावा ग्रीनलैंड, सेवाय होटल भी अच्छे हैं. बस अड्डे के पास ही कई भारतीय ढंग के होटल हैं, जिन में अजंता लाज, अप्सरा होटल, आराम होटल, भरत होटल, ड्रीमलैंड होटल, गिरिविहार होटल, होटल ब्लू हैवेन, होटल बोने विहार, होटल ग्रीनलैंड, शेरायास होटल, लक्ष्मी लाज, नेल्स होटल, पैराडाइस होटल, राजेश होटल, रीगल होटल, रियान होटल, शालीमार होटल, त्रिवेणी लाज और माडर्न होटल में 55 रुपए से 100 रुपए तक प्रतिदिन के हिसाब से पर्यटक ठहर सकते हैं.

पश्चिमी रहनसहन को पसंद करने वाले पर्यटक अनारकली होटल, ब्लू पार्क, दीना होटल, फाउंटेन होटल, होटल ग्रांड, होटल मैफेयर और होटल ट्री शेड में 100 रुपए से 250 रुपए तक प्रतिदिन के हिसाब से ठहर सकते हैं.

इन के अलावा हालीडे कैंप, गवर्नमेंट हाउस, हीरदा फारेस्ट बंगला, वी.आई.पी. बंगला और लिंगमाला फारेस्ट रेस्ट हाउस में भी संबधित अधिकारी से पूर्व आरक्षण करवा कर सस्ते में ठहरा जा सकता है.

क्या देखें?

आर्थर सीटः आर्थर सीट प्राकृतिक शिल्पकला का एक अद्वितीय उदाहरण है. आर्थर मेलैट नामक लेखक के नाम पर बनी इस जगह से घने जंगल तथा जोरघाटी सहित संपूर्ण स्थल को निहारा जा सकता है. इस की ऊंचाई 1,347.5 मीटर है.

प्रतापगढ़ किलाः महाबलेश्वर से 24 कि.मी. दूर 1656 में निर्मित इस किले में

शिवाजी ने बीजापुर के सुलतान पर कटार चलाने के बाद शरण ली थी. यह अपनी मजबूती और सुंदर वास्तुकला की दृष्टि से बेजोड़ है.

पुराना महाबलेश्वर: यहां तीन मंदिर हैं, जहां 1824 से पहले कोई भी अंगरेज नहीं जा सकता था. यहां के कृष्णाबाई मंदिर से निकलती पानी की पांच धाराएं पांच नदियों की प्रतीक हैं. महाशिवरात्रि के दौरान यहां एक विशाल मेला भी लगता है. इसे ही पंचगनी भी कहा जाता है. महाबलेश्वर के जंगलों में मधुमक्खी पालन केंद्र भी है.

बंबई पाइंट: इस स्थान से बंबई शहर का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है. यह स्थान सूर्यास्त के लिए भी प्रसिद्ध है. यहां से प्रतापगढ़ किला दिखाई देता है. पुराने बंबई मार्ग पर होने के कारण इस का नाम 'बंबई पाइंट' चर्चित हो गया.

लुटेरों की गुफा: यह वह स्थान है जहां कभी शिवाजी के सैनिक छिपा करते थे.

वेण्णा झील: 2.4 कि.मी. की दूरी पर स्थित इस झील का अपना ही सौंदर्य है. पंचगनी मार्ग पर स्थित इस झील के लिए रिकशा या टैक्सी से पहुंचा जा सकता है. यहां नौका विहार का आनंद भी पर्यटक उठा सकते हैं. झील के किनारे ही प्रतापसिंह बगीचा और जड़ीबूटियों का एक संग्रहालय है.

विलसन पाइंट: यहां से सूर्योदय का मनोरम और विहंगम दृश्य देखा जा सकता है. यह सपाट खुला स्थान दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान फौजों द्वारा जंगल पहाड़ों के युद्ध संचालन के लिए युद्धस्थल केंद्र की तरह प्रयोग में लाया जाता था. यहां से मध्य पहाड़ियों और गहरी हरी घाटियों के दृश्य अकल्पनीय हैं.

हंटर पाइंट: 3.6 कि.मी. दूर इस स्थान से कोयना घाटी का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है.

धोबीजल प्रपात: यह स्थान इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है लेकिन एक सुंदर स्थान है. इस के दक्षिणी सिरे से एलफिस्टन पाइंट देखा जा सकता है. इस के अलावा कनाट पीक, चेनम्मा का जलप्रपात, लाडविक पाइंट आदि भी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं.

क्या खरीदें?

कोल्हापुरी चप्पलें और शुद्ध शहद खरीद सकते हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता

महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम, एक्सप्रेस टावर, नरीमन पाइंट, बंबई-21

गोवा

भारत के पश्चिमी तट पर बसा गोआ न केवल मीलों तक फैले मनमोहक और सुंदर समुद्री तटों, प्राचीन चर्चों, नारियल के ऊंचेऊंचे झाड़ों और अनन्नास की हरियाली, ईसाई आश्रमों के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि एक खूबसूरत पर्यटन स्थल भी है. इस के सौंदर्य को देख कर पुर्तगालियों ने इसे 'पूर्व दिशा का मोती' कहा था. सन 1961 में गोआ पुर्तगाली उपनिवेशी शासन से मुक्त हो कर लगभग 400 वर्ष के बाद भारतीय गणतंत्र का एक भाग बना था.

गोआ के समुद्री तट विश्व के सब से सुंदर तटों में गिने जाते हैं, जो पर्यटकों को हर क्षण निमंत्रण सा देते प्रतीत होते हैं. गोआ में बड़े शहरों की तरह न शोरशराबा है और न ही गर्द. अपने में प्रकृति का अनुपम सौंदर्य समेटे यह एक आकर्षक समुद्री सैरगाह है. यह 3,635 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला हुआ है.

यहां पर्यटन के लिए अनुकूल मौसम अक्तूबर से मई तक है. सर्दियों में अधिकतम तापमान 32.2 सें.ग्रे. और न्यूनतम तापमान

नारियल के ऊंचेऊंचे पेड़ तथा सुंदर समुद्री तटों के कारण गोवा प्रसिद्ध है. ▶

21.3 सें.ग्रे. रहता है. मौसम प्रायः गर्मतर रहता है.

कैसे जाएं?

बंबई से गोआ की राजधानी पणजी पहुंचने के लिए यदि हवाई जहाज से जाना चाहें तो दबोलिम तक जा सकते हैं. दबोलिम का हवाई अड्डा पणजी से सिर्फ 29 कि.मी. दूर है.

सड़क और जलमार्गों से भी जाने की व्यवस्था है. बंबई से स्टीमर द्वारा गोआ तक की यात्रा का अपना अलग ही आनंद है. बंबई से प्रतिदिन सुबह 10 बजे समुद्री जहाज पणजी के लिए रवाना होता है. 23 घंटे का सफर तय कर लेने के बाद अगले दिन सुबह यह पणजी पहुंचता है. यात्रियों को अपना भोजन साथ ले कर चलना चाहिए क्योंकि जहाज में मिलने वाला भोजन खराब होता है और महंगा भी.

इस के अतिरिक्त रेल से जाने के लिए मुरगांव या वास्कोडिगामा तक जा सकते हैं. ये पणजी से क्रमशः 33 और 30 कि.मी. की दूरी पर हैं.

कहां ठहरें?

पश्चिमी ढंग के होटलों में ओबराय, कोलवा बीच स्थित सिलवर सेंड्स, फोर्ट अगुआडा बीच रिसार्ट, कोंचा बीच रिसार्ट, फिडालगो, मांडवी, लापाज, जुआरी, केनीस, गोआ वुडलैंड्स, फ्लेमिंगो, दोना पाऊला बीच रिसार्ट, प्रेनहा काटेज आदि.

पणजी में भारतीय होटल हैं: सेंट्रल लाज़ (डाकखाने के पीछे), ग्लैमर लाज (नेशनल थियेटर के पास), इंपीरियल होटल (बस अड्डे के पास), टूरिस्ट होटल (शहर के मध्य स्थित) आदि. होटलों के अतिरिक्त नेपच्यून, एरोमा, रेबेलो, वैगेटर बीच रिसोर्ट, किस्मत लाज, ला विस्तार लाज, माधव आश्रम, पैलेस, संगम, सनमैन लाज, श्री रामेश्वरसिंह लाज इत्यादि स्थलों पर भी ठहरा जा सकता हैं.

यदि आप वास्कोडिगामा जाए तो आप आदर्श लार्जिग एंड बोडिंग, इंदिरा लाज, मेघदूत लाज, सुलतान लाज, मनीष लाज, प्रवासी में ठहर सकते हैं. ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाएं भी हैं.

दर्शनीय स्थल

दोना पाऊलाः गोआ को 'समुद्र तटों की रानी' कहा जाता है. इसलिए यहां समुद्री तटों का सौंदर्य बड़ा आकर्षक है. गोआ का प्रमुख आकर्षण दोना पाऊला है. सात कि.मी. की दूरी पर स्थित यह एक लुभावना पिकनिक स्थल है. इस का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है. यहां से क्षितिज को देखने पर ऐसा लगता है मानो हिंद महासागर की लहरें उसे छू रही हों. यहां से जुआरी नदी व मारगोआ हारबर के दृश्य भी देखे जा सकते हैं.

पणजीः यह मांडवी नदी के तट पर स्थित एक आकर्षक शहर है. गोआ, दमन, दियू की राजधानी होने के कारण यह शहर आधुनिक मकानों, सुंदर बागबगीचों और स्टेच्यू का एक मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है.

कलंगुट बीचः पणजी से 15 कि.मी.

गोवा का प्रमुख समुद्र तट दोना पाऊला
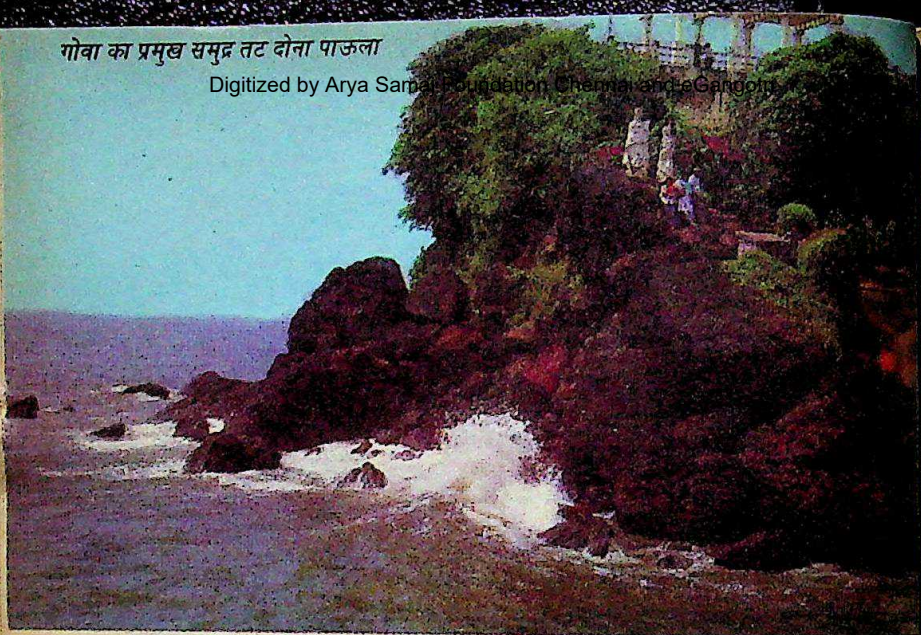
की दूरी पर स्थित इस बीच की सुंदरता को देख कर इसे 'बीचों की रानी' कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी. इसे तीन भागों में बांटा गया है. अंजुना बीच या हिप्पियों का स्वर्ग, कैंडोलिम या मछुआरों के लिए सुरक्षित स्थान व औसत पर्यटकों के लिए मुख्य भाग कलंगूट बीच.

कोलवा बीच: यह बीच किसी समय हिप्पियों के कारण बहुत प्रसिद्ध था. शहरी शोरशराबे से दूर बिलकुल एकांत में बसा यह समुद्री तट अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है. यहां से सूर्योदय तथा सूर्यास्त के दृश्यों को देखना न भूलें. ताड़ के लंबेलंबे वृक्ष, दूरदूर तक फैली सुनहरी रेत और विशाल अरब सागर को देख कर मन वहीं रम जाने को कहता है.

मीरामार: इस समुद्री तट की गिनती विश्व के सब से सुंदर तटों में होती है. पणजी से तीन कि.मी. की दूरी पर स्थित यह एक मनमोहक बीच है. यहां दूरदूर तक फैले ताड़ के वृक्षों का विशाल घना समूह देख कर वापस जाने की इच्छा नहीं होती. यहां बच्चों के खेलने के लिए एक मैदान भी है.

बागमेलो: वास्को और डेबोलिम हवाई अड्डे के पास यह एक छोटा सा, किंतु बड़ा ही आकर्षक बीच है. तट पर ही ओबराय का तीन सितारा होटल बना है.

इन समुद्री तटों के अतिरिक्त अंजुना, बागा, कंडोलिम इत्यादि दूसरे बीच भी पर्यटकों के लिए एक खूबसूरत दृश्य प्रस्तुत करते हैं. समुद्री तटों के अलावा यहां के मंदिर और गिरजाघर भी प्रसिद्ध हैं. अधिकांश मंदिर पोंडा में ही स्थित हैं.

पोंडा में करीब 400 वर्ष पुराना श्री मंगेश मंदिर सर्वाधिक आकर्षक मंदिर है. एक छोटी सी टेकरी पर बना यह मंदिर चारों ओर से मनोरम पहाड़ियों से घिरा है.

इस से 10 कि.मी. आगे प्रियाल पोंडा रास्ते पर तीन मंदिरों का एक समूह है. इस में शांति दुर्गा, श्रीरामनाथ तथा श्रीमहालक्ष्मी मंदिर सम्मिलित हैं.

पणजी से 45 कि.मी. दूर स्थित तबंडी सुरला का पत्थरों से बना हुआ मंदिर है, जो कदंब वंशीय परंपरा की एकमात्र स्मृति है.

इस के अलावा नागेश, श्रीमल्लिकार्जुन, श्रीगोपाल गणपति मंदिर, मापुसा की

कलका देवा, बिचोलिम स्थित श्रीदत्त मंदिर और 500 वर्ष पुराना श्री भगवती मंदिर यहां के अन्य उल्लेखनीय मंदिरों में से है.

गोआ गिरजाघरों के लिए भी प्रसिद्ध है. अधिकांश चर्च 'पुराने गोआ' में हैं.

वामजीसस गिरजाघर: यह सब से अधिक उल्लेखनीय चर्च है. यहां प्रसिद्ध संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव शरीर चांदी के डब्बे में सुरक्षित है. इस का निर्माण 1600 ई. में हुआ था.

सी कैथेड्रल: वाम जीसस के पास में ही सी कैथेड्रल अपने विशाल गुंबदों और घंटाघर के साथ अपना सौंदर्य बिखेर रहा है. यह गोआ की भूमि पर बना पहला ऐसा गिरजाघर है जिसे बनाने में 75 वर्ष का समय लगा था.

इन के अलावा सेंट कजेतन का गिरजाघर, सेंट फ्रांसिस डि असीसी का कानवेंट, सेंट कैथेरिन का चैपल, अगस्टाइन का गिरजाघर, अवर लेडी आफ रोजरी आदि अन्य दर्शनीय गिरजाघर हैं. अंजादीव एक खूबसूरत द्वीप है, जिस में बहुत से आकर्षक गिरजाघर हैं.

रईस मेगोस किला वास्तव में एक गिरजाघर है, जिसे एक हिंदू मंदिर के खंडहरों पर 1550 में बनवाया गया था.

गोआ में तीन जलप्रपात हैं, जिन में दूधसागर प्रपात सब से अधिक प्रसिद्ध है. पुराने गोआ में गोआ का प्रवेश द्वार, वास्कोडिगामा का आटोमेटिक लोडिंग प्लेटफार्म इत्यादि भी दर्शनीय स्थल हैं.

खरीदारी:

पणजी, मायूसा, मारगोआ और वास्कोडिगामा में अच्छे बाजार हैं. किंतु ये दुकानदार दाम बढ़ाचढ़ा कर बोलते हैं. इसलिए आवश्यक समझें तो मोल भाव कर लें.

पर्यटन कार्यालय का पता

महाराष्ट्र पर्यटक सूचना ब्यूरो, महाराष्ट्र राज्य टूरिस्ट होस्टल (नीचे की मंजिल), पणजी.

बंगलौर

बागों का शहर बंगलौर कर्नाटक की राजधानी है. चौड़े रास्तों पर दोनों ओर से घने पेड़ों से सजा यह नगर देश के सुंदर नगरों में से है. 119 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला और समुद्र तट से 920 मीटर ऊंचे बंगलौर का माहौल इतना आकर्षक है कि मन वहीं रम जाने को विवश हो जाता है.

कैसे जाएं?

बंबई, मद्रास, मदुरै, मंगलौर, कोचीन, हैदराबाद, त्रिवेंद्रम, तिरुचिरापल्ली आदि नगरों से इंडियन एअरलाइंस के विमान प्रतिदिन बंगलौर आतेजाते रहते हैं.

बंगलौर, मद्रास, कोचीन, हैदराबाद, मैसूर, पुणे, तिरुचिरापल्ली इत्यादि नगरों से रेल मार्ग द्वारा भी जुड़ा हुआ है.
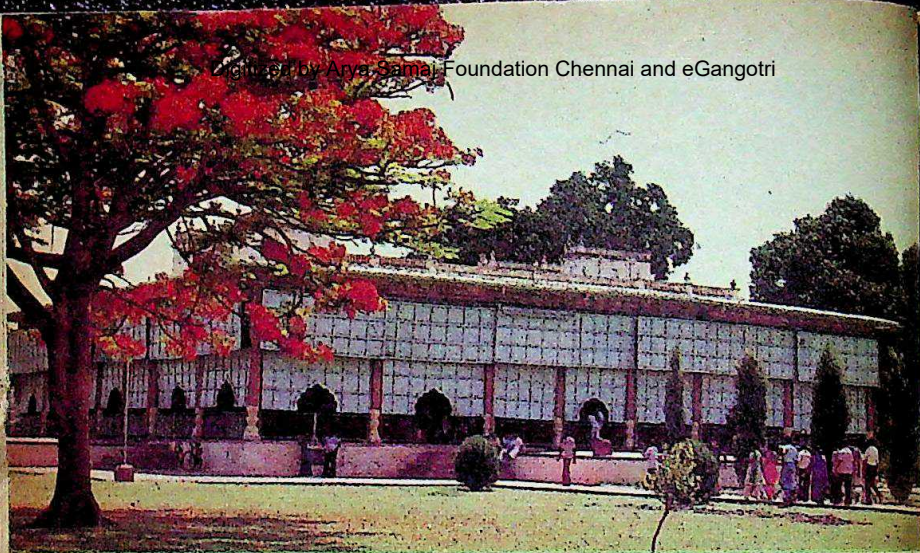
टीपू सुलतान का ग्रीष्मकालीन आवासगृह

साथ ही दक्षिण भारत के सभी प्रमुख नगरों से बंगलौर सड़क मार्ग द्वारा भी जुड़ा हुआ है, अतः पर्यटक किसी भी मार्ग से बंगलौर पर्यटन के लिए जा सकते हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी

बंबई-1,016 किलोमीटर, मद्रास-332 किलोमीटर, बेलूर-204 किलोमीटर, मैसूर-140 किलोमीटर.

कहां ठहरें?

पश्चिमी पद्धति के होटलों में अशोक, वेस्ट एंड, बंगलौर इंटरनेशनल, शिलटन, हाई गेट्स, स्टेलांगर, स्विस काटेज, पैलेस इत्यादि उल्लेखनीय हैं. किंतु ये होटल बड़े महंगे पड़ते हैं.

भारतीय पद्धति के होटलों में उल्लेखनीय हैं: मद्रास वुडलैंड्स, ब्राडवे, वृंदावन, एअरलाइंस, लक्ष्मी, अजंता, कामधेनु इत्यादि. भारतीय पद्धति के इन से भी सस्ते होटल हैं: चंद्र विहार, मोतीमहल, राजमहल, किंग, टूरिस्ट. ये आनंद राव सर्किल व महात्मा गांधी रोड पर हैं.

क्या देखें?

बंगलौर भारत का एक प्रमुख औद्योगिक तथा व्यापारिक केंद्र है. यहां वायुयान, टेलीफोन, बिजली, औषधि निर्माण, मिट्टी के बरतन, कलपुर्जे इत्यादि के कारखानों की प्रचुर संख्या है.

लाल बाग: वैसे तो बंगलौर में अनेक बाग हैं, किंतु लाल बाग का सौंदर्य बड़ा आकर्षक है. इसे 18 वीं शताब्दी में हैदरअली और टीपू सुलतान ने बनवाया था. 240 एकड़ के क्षेत्रफल में फैले हुए इस बाग में पर्यटक विभिन्न प्रकार के पौधों के साथसाथ 100 साल पुराने वृक्ष, फव्वारे, छज्जे, कमल ताल, गुलाब के बगीचे और हरिण उद्यान देख सकते हैं.

संग्रहालय: 1886 में निर्मित प्राचीन वस्तुओं का एक संग्रहालय है. बंगलौर का इतिहास जानने के लिए यहां जाना आवश्यक है.

यहां कलात्मक तथा पुरातात्त्विक चीजों के साथसाथ पुराने आभूषणों का भी बहुत बड़ा संग्रह है.

सचिवालय तथा विधान सभा भवन: कुब्बन पार्क की उत्तरी सीमा पर कर्नाटक सचिवालय तथा विधान सभा के भवन हैं. इन के श्वेत खंभों, गुंबदों और मेहराबों को देख कर मैसूर के प्राचीन महलों की स्थापत्य

कला की याद ताजा हो जाती है. सब से बड़े गुंबद के ऊपर भारत का राष्ट्रीय चिह्न बना है और अंदर चंदन के [illegible] है. अंदर जाने के लिए पहले से ही आज्ञा लेनी पड़ती है.

बुल टेंपल: सांड मंदिर का निर्माण कैंपे गौडा ने करवाया था. इसे देख कर द्रविड़ वास्तुशिल्प की याद ताजा हो जाती है. इस में वृषभ की 4.6 मीटर ऊंची और एक ही पत्थर को तराश कर बनाई गई मूर्ति है.

अन्य दर्शनीय स्थल: इन के अलावा उलसूर झील, टीपू सुलतान के महल [illegible] इत्यादि को भी देखा जा सकता है. झील में नौका विहार की भी सुविधा है.

आसपास के दर्शनीय स्थलों में चामराजा सागर जलाशय या टिप्पगोडानहल्ली (35 कि.मी.), देवरायना दुर्गा (79 कि.मी.), हेसारघट्टा झील, (29 कि.मी.) काग जलाशय (69 कि.मी.), इत्यादि प्रमुख हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता

कर्नाटक राज्य पर्यटन विकास निगम, 10/4, कस्तूरबा रोड, बंगलौर– 560001.

मैसूर

मैसूर को 'कर्नाटक का रत्न' कहा जाता है. बंगलौर से 138 कि.मी. की दूरी पर स्थित यह वहां की संस्कृति को समझने में बहुत मदद करता है.

कर्नाटक का एक और उद्यान नगर मैसूर पूरे भारत में वृंदावन उद्यान के कारण भी प्रसिद्ध है.

कैसे जाएं?

मैसूर का निकटतम हवाई अड्डा बंगलौर 138 किलोमीटर दूर है. बंगलौर से मैसूर तक की यात्रा टैक्सी, बस या रेलगाड़ी द्वारा की जा सकती है.

बंगलौर, पुणे और हसन से मैसूर के लिए नियमित बसें तथा रेलें चलती हैं. इन्हीं नगरों के द्वारा मैसूर देश के अन्य प्रमुख नगरों से जुड़ा है:

प्रमुख नगरों से दूरी

बंगलौर 139 किलोमीटर, बेलूर 151 किलोमीटर, ऊटी 159 किलोमीटर, हसन 116 किलोमीटर.

कहां ठहरें?

महंगे व पांच सितारा होटलों में से कुछ इस प्रकार हैं—इंद्र भवन, किंग्स कोर्ट, मयूर इत्यादि.

इन के अलावा ललित महल पैलेस, मेट्रोपोल, कृष्णराज सागर, राजेंद्र विलास, रिट्ज, हाईवे, वृंदावन, मधुवन, गांधी स्क्वायर, माडर्न हिंदू इत्यादि भी ठहरने के लिए अच्छे होटल हैं.

इन के अतिरिक्त कर्नाटक राज्य परिवहन विकास निगम के टूरिस्ट होम तथा सरकारी चामुंडी गेस्ट हाउस में भी ठहरा जा सकता है.

क्या देखें?

न्यू पैलेस: न्यू पैलेस अपनी स्थापत्य कला, होयसला शैली की नक्काशी, कंगूरे, गुंबद और प्राचीन राजाओं के वैभव का जीवित रूप है. पुरानी तलवारें, रत्नों से जड़ा सिंहासन, शीशे का फरनीचर तथा प्रसिद्ध त्योहार दशहरा के भित्तिचित्र पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं.

चिड़ियाघर: मैसूर का चिड़ियाघर भी देखने योग्य है. यहां सभी प्रमुख जातियों के पशुपक्षी देखे जा सकते हैं.

श्रीरंगपट्टन: श्रीरंगपट्टन मैसूर से केवल 10 कि.मी. दूर बंगलौर मार्ग पर स्थित है. यह एक छोटा सा ऐतिहासिक और प्राचीन स्थल है, जो 200 वर्ष पूर्व हैदरअली और टीपू सुलतान के शासनकाल में उन की राजधानी था.

यहां के विशेष आकर्षणों में श्रीरंगनाथ स्वामी का प्राचीन मंदिर है, जिस का
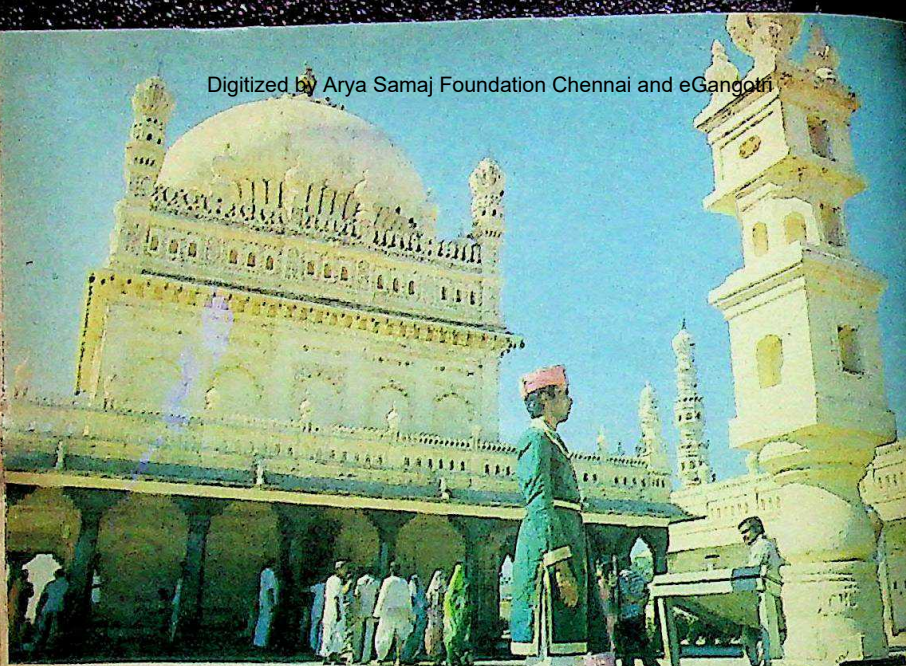
गुंबज के नाम से टीपू सुलतान के मकबरे को देखते ही आंखें चौंधिया जाती हैं ▲

पुनर्निर्माण 16 वीं शताब्दी में किया गया था. इसी के साथ जामा मसजिद भी है जिसे टीपू सुलतान ने 1787 में बनवाया था.

'गुंबज' नाम से प्रसिद्ध टीपू सुलतान का मकबरा देखते ही आंखें चौंधियाने लगती हैं. यह मकबरा काले परशियन संगमरमर से बना है तथा चारों ओर से बागबगीचों से घिरा है. दरवाजे हाथी दांत के बने हैं. पास ही दालान में मसजिद है, जहां हैदरअली तथा फातिमा बेगम की कब्रें बनी हुई हैं.

'गुंबज' से पहले कावेरी नदी के किनारे मुगल शैली में लकड़ी का बना हुआ टीपू सुलतान का महल है. श्रीरंगपट्टन सुलतान के लिए गरमियों का आवास रहा है. इस महल में टीपू सुलतान द्वारा प्रयुक्त अस्त्रशस्त्र, वेशभूषा व अन्य वस्तुएं प्रदर्शन के लिए रखी गई हैं. किंतु दीवारों पर अंकित चित्र इस महल की वास्तविक शान हैं, जिन में लड़ाई के दृश्य भी अंकित हैं.

श्रवणबेलगोल: मैसूर से 99 किलो-मीटर दूर श्रवणबेलगोल विख्यात जैन तीर्थ है. जैन अनुयायियों का यह प्रसिद्ध धार्मिक केंद्र है.

ठहरने के लिए यहां ट्रैवलर्स बंगले और धर्मशालाएं हैं. धर्मशालाओं में बिजली शुल्क के नाम पर थोड़ा सा ही शुल्क लिया जाता है.

ईसा से भी 300 वर्ष पूर्व बना यह स्थल इंद्रगिरि और चंदनगिरि पहाड़ियों के बीच बसा है.

दर्शनीय स्थलों में से प्रमुख है—गोमटेश्वर. इंद्र गिरि पहाड़ी पर एक चट्टान को तराश कर बनाई गई संत गोमटेश्वर की प्रतिमा 17 मीटर ऊंची है. लगभग 1,000 वर्ष पुरानी इस प्रतिमा की तुलना मिस्र की कलाकृतियों से की जा सकती है. जैन संत गोमटेश्वर (बाहुबली) का इस विशाल प्रतिमा तक पहुंचने के लिए 500 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं.

इस के अतिरिक्त भंडारी बस्ती व जैन

मठ (जैन गुरु का निवास स्थान, दीवारों पर विभिन्न जैन राजाओं के जीवन में महत्त्वपूर्ण पक्षों को चित्रित किया गया है), चंद्रगिरि पहाड़ी पर द्रविड़ शिल्प पद्धति से बना आठवीं शताब्दी का मंदिर इत्यादि भी दर्शनीय स्थल हैं

गोमटेश्वर की इस विशालकाय मूर्ति को देखने के लिए वैसे तो वर्ष भर पर्यटक आते रहते हैं, किंतु प्रत्येक 12 वर्ष के बाद यहां जैन संप्रदाय के लोग महामस्तकाभिषेक समारोह में भाग लेने के लिए जमा होते हैं. इस समारोह में धर्म के नाम पर बेहिसाब पैसा बरबाद किया जाता है.

चामुंडी पहाड़ी: 1,000 सीढ़ियों वाली चामुंडी पहाड़ी पर मिट्टी की बनी महिषासुर की विशाल मूर्ति देखने योग्य है. इसे 17 वीं शताब्दी में दोड्डा सेना राजा ने बनवाया था. इस पहाड़ी पर चढ़ने के लिए बसें तथा टैक्सियां भी उपलब्ध हैं.

इसी मार्ग पर पांच मीटर ऊंची नंदी की विशाल मूर्ति है. पहाड़ी की चोटी पर स्थित कई मंदिरों में से एक 12 वीं शताब्दी का है.

इन के अलावा कृष्णराज सागर बांध, वृंदावन बाग, चंदन का तेल निकालने का कारखाना (संदल वुड आयल फैक्टरी), जगमोहन आर्ट गैलरी, सिटी मार्केट, कावेरी आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स एंपोरियम इत्यादि देखने योग्य स्थल हैं.

अन्य दर्शनीय स्थल: बांदीपुर संरक्षित वन मैसूर से 80 कि.मी. दूर ऊटी मार्ग पर है. यह विशाल वेणु गोपाल राष्ट्रीय उद्यान का एक भाग है. यहां शेर, चीते, हाथी, सांभर, लंगूर, भैंसे तथा मोर आदि इधरउधर घूमते देखे जा सकते हैं. यहां ठहरने के लिए फील्ड डायरेक्टर 'प्रोजेक्ट टाइगर' गवर्नमेंट हाउस कांपलैक्स, मैसूर से काटेज और कमरों का आरक्षण करवाया जा सकता है.

शिमसा में भारत का पहला पनबिजली-घर पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण रखता है. शिवसमुद्रम में कावेरी नदी का जल पथरीली घाटी में दो झरनों के रूप में 300 फुट नीचे गहराई में गिरता है.

मैसूर और आसपास के इलाकों में चंदन की लकड़ी, इमारती लकड़ी व रेशम आदि बहुत होता है.

यहां की अगरबत्तियां, साबुन व रेशमी साड़ियां देश के अन्य भागों में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी जाती हैं. साड़ियां गवर्नमेंट सिल्क फैक्टरी से खरीदी जा सकती हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता—

रेलवे स्टेशन पर बने पर्यटन केंद्र से पर्यटन संबंधी जानकारी ली जा सकती है.

मैसूर पैलेस: स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना ▼
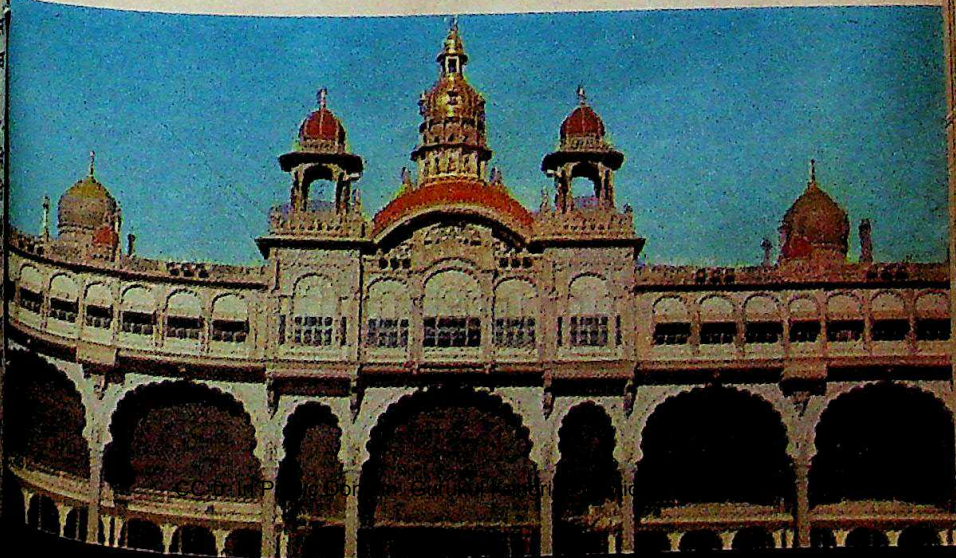
वृंदावन गार्डन

यदि आप हिंदी फिल्में देखते हैं तो उन के युवा नायकनायिकाओं को हरी घास पर लोटते, रंगबिरंगे फूलों के बीच छिपते, लंबेलंबे पेड़ों के आसपास घूमते, सतरंगे फव्वारों के नीचे भीगते, नील सरोवर में जलक्रीड़ा करते देख कर एक क्षण के लिए आप का मन भी ललचा उठता होगा.

क्या आप जानते हैं कि उन का यह फिल्मी प्रेम कहां फलताफूलता है? वे कहां उछलतेकूदते हैं? वे कहां आलिंगनबद्ध हो कर एकदूसरे में खो जाते हैं? और कौन उन के इस प्रेम को अपने हरियाले आंचल में समेट लेता है?

विश्वास कीजिए, उन का प्रेम फिल्मी हो सकता है, पर विहारस्थल नहीं. और उन का यह सुरम्य विहार स्थल है कृष्णराज सागर बांध पर बना वृंदावन गार्डन. अधिकांशतः हिंदी फिल्मों के प्राकृतिक दृश्यों को यहीं फिल्माया जाता है.
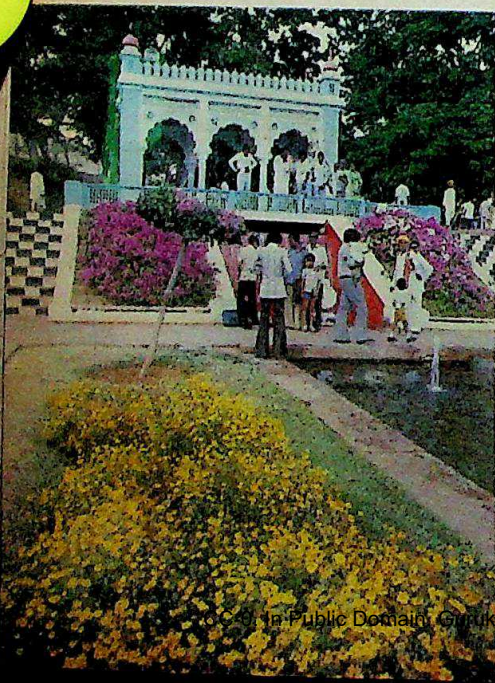
कैसे जाएं?

कृष्णराज सागर बांध मैसूर से उत्तरपश्चिम में 19 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. ऊटी से लौटते समय आप इस शोभाधाम की शोभा निहार सकते हैं. ऊटी से बस द्वारा आप यहां तक आ सकते हैं. मैसूर से यहां तक रेल व बस की सुविधाएं उपलब्ध हैं. यह मैसूर बंगलौर, मिराज, बंबई आदि प्रमुख नगरों से रेल तथा बस मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है, जहां से प्रतिदिन मैसूर के लिए निर्धारित समयों पर रेलगाड़ियां व बसें चलती हैं.

वृंदावन गार्डन के निकटस्थ हवाई अड्डे बंगलौर, मंगलौर और कोयंबटूर में हैं. इन स्थानों से मैसूर हो कर रेलगाड़ी या बस द्वारा आप वृंदावन गार्डन तक पहुंच सकते हैं.

कब जाएं?

वृंदावन गार्डन की सैर के लिए आप पूरे वर्ष में कभी भी जाइए. यहां सदा एक सा मौसम रहता है. वैसे ऊटी, मैसूर, बंगलौर आदि के पर्यटन के दौरान यहां जाना अधिक सुविधाजनक हो सकता है. हां, वर्षा ऋतु यानी जून से सितंबर तक यहां न जाएं तो अच्छा है क्योंकि वर्षा के कारण आप के सैरसपाटे में बाधा पड़ सकती है.

कहां ठहरें?

यहां फिल्मों की शूटिंग करने वालों और पर्यटकों का आवागमन लगा ही रहता है, इसलिए यहां ठहरने की भी यथेष्ट व्यवस्था है. पाश्चात्य ढंग का एक मात्र होटल है–'होटल कृष्णराजसागर.' किंतु यह होटल अधिक महंगा है.

कर्नाटक राज्य पर्यटन विकास निगम का टूरिस्ट होम भी ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान है. इस के अतिरिक्त ट्रैवलर्स बंगला में भी ठहरा जा सकता है, जिस के लिए कृष्णराज सागर के एक्जीक्यूटिव इंजीनियर
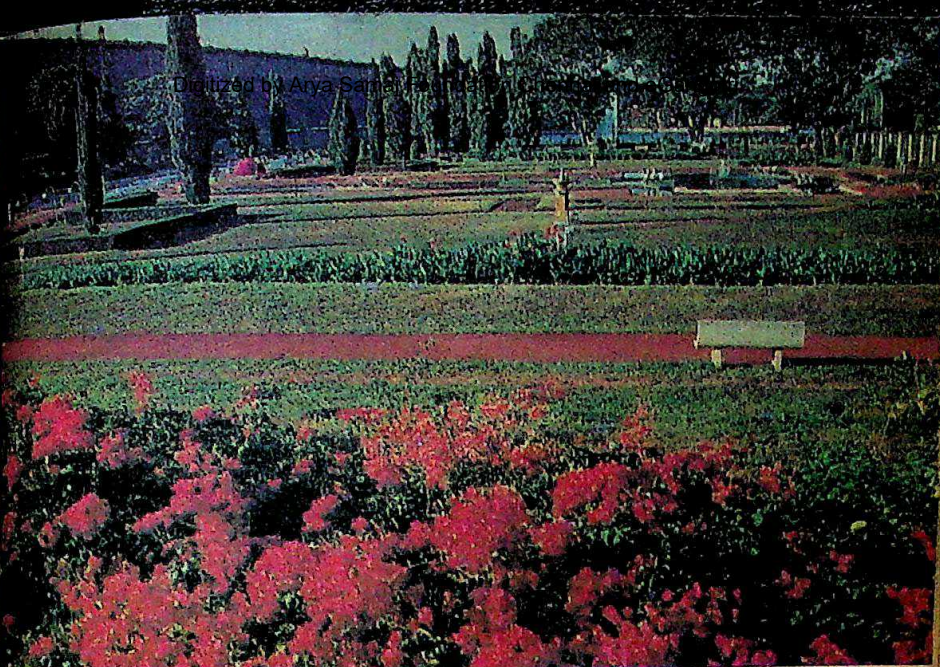
से आरक्षण कराना पड़ता है.

वृंदावन गार्डन के पर्यटन के दौरान आप अपने ठहरने की व्यवस्था मैसूर में ही रखें और वहां से गार्डन घूमघाम कर रात तक लौट जाएं क्योंकि सरकारी आवासों में आरक्षण की असुविधा हो सकती है. और एक ही होटल होने के कारण खर्च भी ज्यादा पड़ता है.

क्या देखें?

लगभग 20 एकड़ क्षेत्र में फैला वृंदावन गार्डन अपने समग्र रूप में दर्शनीय है, जिसे प्रवेशद्वार पर बने एक भव्य मंडप से सहज ही देखा जा सकता है. मंडप से निकलती हुई लगभग 3 मीटर चौड़ी एक जलधारा झरने का दृश्य उपस्थित करती है. यह कृत्रिम झरना गार्डन के बीच में बनी एक कृत्रिम नहर में गिरता है और नहर कावेरी नदी में.

वृंदावन गार्डन के प्रवेशद्वार पर कावेरी नदी को देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है, जिस के हाथों में रखे एक पात्र में सुखसमृद्धि की प्रतीक जलधारा निरंतर बहती रहती है.

रंगबिरंगे फूलों की क्यारियों से युक्त वृंदावन गार्डन ▲

इस गार्डन में रंगबिरंगे फूलों की क्यारियों से युक्त 3 सुंदर चबूतरे हैं. प्रत्येक चबूतरे के मध्य से द्विमुखी जलधाराएं प्रवाहित हो कर मध्य नहर के दोनों ओर निकलती हैं.

तीनों चबूतरों पर 40-40 फव्वारे हैं, जिन की जलधारा को दिन में सूर्य की किरणें और रात में बिजली की रोशनी सतरंगा बना देती है.

प्रत्येक चबूतरे की सहगामी जलधाराओं से विभिन्न आकारों में कई धाराएं निकलती हैं और फव्वारों का रूप ले कर चबूतरे के किनारे बने कुंडों में गिरती हैं.

नहरों व चबूतरों के किनारेकिनारे पैदल पथ हैं, जिन के सहारे अनेक प्रकार के फूल लगे हैं.

संपूर्ण वृंदावन गार्डन जिस चारदीवारी से घिरा है, वह भी प्राकृतिक दृष्टि से मनोहारी है.

महकती पौधशाला : वृंदावन गार्डन के पूरब में संतरों का एक बाग है. बाग के आगे महकती पौधशाला है, जहां हजारों तरह के पेड़पौधे हैं. यहां से कुछ पौधों को देश के विभिन्न भागों में भी भेजा जाता है.

कृष्णराजसागर बांध : कावेरी तथा उस की दो सहायक नदियों के संगम पर कृष्णराजसागर नामक विशाल बांध है. यह बांध स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है. इस की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इस के निर्माण में सीमेंट का जरा भी उपयोग नहीं हुआ. सारा बांध केवल पत्थरों से निर्मित है. यह बांध 2 किलोमीटर लंबा है. इसे देख कर एक झील का आभास होता है.

क्या खरीदें?

वृंदावन गार्डन में कोई खास विक्रय केंद्र नहीं है, जहां से आप मनपसंद चीज खरीद सकें. कर्नाटक क्षेत्र की प्रसिद्ध चीजों की खरीदारी के लिए मैसूर ही उपयुक्त रहेगा. वहां के बाजारों से आप खरीदारी कर लें.

ऊटी

तमिलनाडु का ऊदगमंडलम विश्व भर में ऊटी के नाम से प्रसिद्ध है. 36 वर्ग किलोमीटर में फैला और समुद्र की सतह से लगभग 7,500 फुट की ऊंचाई पर बसा ऊटी पर्वतीय पर्यटन स्थलों में सब से ज्यादा चर्चित और प्रसिद्ध है. अपनी सुंदरता और मनोरमता के लिए विख्यात नीलगिरि पर्वतों पर बसा होने के कारण ऊटी को 'पहाड़ों की रानी' भी कहा जाता है.

नीलगिरि की पहाड़ियों में बसे ऊटी को 1819 में कोयंबटूर के जिला कलक्टर जान सुलीवर द्वारा खोजा गया था. अपनी विभिन्नताओं के कारण यह शहर पर्यटकों को खासा आकर्षित करता है. कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु की सीमा पर बसे ऊटी की हरियाली, पहाड़ियां, झरनें और झीलें पर्यटकों को वहां रुकने के लिए विवश कर देती है.

कब जाएं?

यों तो वर्षपर्यंत ऊटी जाया जा सकता है लेकिन अप्रैल से जून और सितंबर से अक्तूबर तक का समय बेहतर रहता है.

बड़े शहरों से दूरी

दिल्ली से ऊटी 2,627 किलोमीटर, मद्रास से ऊटी 449 किलोमीटर, हावड़ा से ऊटी 2,157 किलोमीटर, बंबई से ऊटी 1,635 किलोमीटर दूर है.

कैसे जाएं?

वायुमार्ग से : ऊटी का निकटतम हवाई अड्डा कोयंबटूर है, जो 89 किलोमीटर है और कोचीन, मद्रास, बंगलौर से जुड़ा हुआ है. मद्रास, कोचीन, बंगलौर, तिरुचिरापल्ली और मदुरै आदि स्थानों से रेलमार्ग द्वारा भी जुड़ा है.

रेल द्वारा : नजदीकी रेलवे स्टेशन कोयंबटूर है. कोयंबटूर से ऊटी तक छोटी रेल गाड़ी चलती है. इस रेलगाड़ी में सिर्फ दो डब्बे लगते हैं. इस रेलगाड़ी को इंजन आगे से
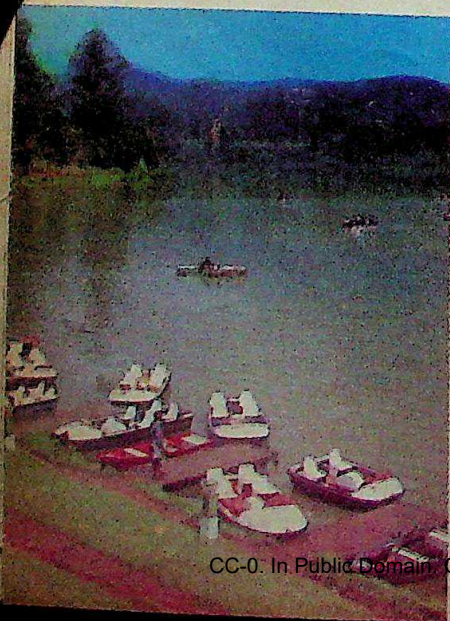
ऊटी का आकर्षण : झील में नौकायन
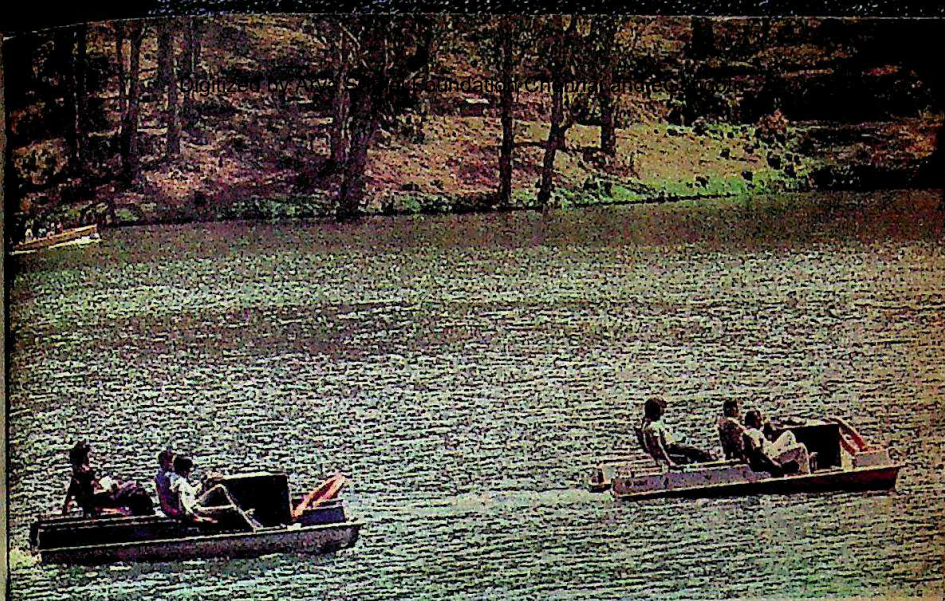
नहीं खींचता, बल्कि पीछे से धक्का देता है. इस मजेदार रेलयात्रा में पर्यटक चाय बागानों के सौंदर्य का मजा भी ले सकते हैं.

बस मार्ग से : ऊटी दक्षिण भारत के सभी प्रमुख नगरों से बस मार्ग द्वारा जुड़ा है. जहां से ऊटी से लिए नियमित बसें और टैक्सियां मिल जाती हैं.

कहां ठहरें?

ऊटी में पर्यटकों के ठहरने के लिए उचित व्यवस्था है. यहां कई होटल, लाज और तमिलनाडु पर्यटन विकास निगम के आवासगृह हैं, जहां ठहरा जा सकता है. पश्चिमी शैली के होटल तमिलनाडु, फर्न हिल इंपीरियल, सेवाय होटल सुविधाजनक होटलों में हैं. इन में कम से कम 550 रुपए और अधिक से अधिक 1,500 रुपए प्रतिदिन के किराए पर रुका जा सकता है. भारतीय शैली के होटलों में दास प्रकाश, वुडलैंड्स, मौर्य सुदर्शन, नटराज आदि में कम से कम 150 रुपए और ज्यादा से ज्यादा 400 रुपए प्रतिदिन किराए पर ठहरा जा सकता है. उच्च कोटि के गेस्ट हाउसों में विलिंगटन, रोज, माउंट हैं.

इन के अलावा यूथ होस्टल, नाहर टूरिस्ट होम, वाई.डब्ल्यू.सी.ए. रेलवे रिटायरिंग रूम और रतन टाटा आफिसर्स हालीडे होम में भी पूर्व आरक्षण के आधार पर उचित किराए पर ठहरा जा सकता है.

कुनूर में भी हैंपटन मैनर होटल, रिट्ज होटल और श्रीलक्ष्मी टूरिस्ट होम में कम से कम 250 रुपए और ज्यादा से ज्यादा 450 या 500 रुपए प्रतिदिन के किराए पर ठहरा जा सकता है.

क्या देखें?

बोटानिकल गार्डन : रेलवे स्टेशन से 1 किलोमीटर दूर और 1847 में लार्ड ट्वी डडेल द्वारा निर्मित यह उद्यान वनस्पति शास्त्रियों और प्रकृति प्रेमी पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र हैं. मई में होने वाली कई प्रमुख प्रदर्शनियां भी यहां की विशेषता हैं. इसी उद्यान में, धारणाओं के अनुसार, हजारों वर्ष पुराना एक वृक्ष का तना है, जिस के आसपास सन 1824 में एक झील बना दी गई थी, जहां पर्यटक नौका विहार, हाउस बोट और तैराकी का आनंद उठा सकते हैं. झील के किनारे होबार्ट पार्क है, जहां पर सीजन के

...घुड़दौड़ का आयोजन होता है.

ऊटकमंड लेक : रेलवे स्टेशन से आधा किलोमीटर की दूरी पर यह झील नौका विहार और मछली के शिकार के लिए काफी अच्छी है.

डोडाबेटा चोटी : ऊटी से लगभग 10 किलोमीटर दूर यह सब से ऊंची पहाड़ी है. यहां एक माइक्रोटेलिस्कोप भी लगा है.

वेनलाक डाउंस : ऊटी मैसूर सड़क पर 104 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले इस स्थान का नाम मद्रास के एक भूतपूर्व गवर्नर वेनलाक डाउंस के नाम पर पड़ा है. ऊटकमंड क्लब और जिमखाना क्लब के गोल्फ लिंक्स भी पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र हैं.

टाइगर हिल : कुन्नूर जाते समय यह रास्ते में पड़ने वाला एक पिकनिक स्थल है, जहां पर्यटक परिवार समेत पिकनिक का आनंद उठा सकते हैं.

हिंदुस्तान फोटो फिल्म्स: ऊटी से 8 किलोमीटर दूर वेनलाक डाउंस में हिंदुस्तान फोटो फिल्म उत्पादन अपनी तरह का एक मात्र भारतीय कारखाना है. यहां पर्यटकों को फोटो उद्योग की जानकारी भी दी जाती है.

मदुमलाई वन्य जीवन अभयारण्य : ऊटीमैसूर रोड पर ऊटी से लगभग 67 किलोमीटर दूर इस स्थान पर बाघ, भेड़िए, भालू, सांप आदि देखे जा सकते हैं. यहां का मुख्य आकर्षण स्वच्छंद विचरते हाथी हैं.

कैथी व्यू : ऊटी और कुन्नूर सड़क पर स्थित इस स्थान से नीचे बसे गांवों को देखा जा सकता है.

मरलीमंड झील : रेलवे स्टेशन से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह एक बढ़िया पिकनिक स्थल है, जहां से ऊटी को पानी सप्लाई होता है.

कलहाटी झरना : ऊटी से 13 किलोमीटर दूर इस झरने की ऊंचाई 120 फुट है. लेकिन गांव हिसपुर घाट तक 6 किलोमीटर बस से जाने के बाद 2 किलोमीटर पैदल जाना होगा.

इल्क हिल : ऊटी के पास ही इस रमणीय स्थल पर सुब्रह्मण्यम का एक शिला मंदिर है. साथ ही चाय बागानों की शोभा भी देखने लायक है. स्नोडोन तथा इल्क की पहाड़ियां दर्शनीय हैं, लेकिन घने पेड़ों से ढकी कायरन पहाड़ी सुंदरता में बेजोड़ है.

इन के अलावा कार्नीहिल, एवलांच हिल, अपर भवानी डैम आदि भी ऊटी में बहुत सा आकर्षण समेटे हुए हैं.

क्या खरीदें?

ऊटी से हस्तशिल्प और हस्तकला की वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं.

कोडैकनाल

मदुरै से 120 कि.मी. दूर मंदिरों के बीच सिमटी कोडैकनाल यूरोपियन लोगों द्वारा तलाशी गई एक प्रमुख पर्यटन स्थली है. इसे 1821 में खोजा गया था. यहां की स्वास्थ्यवर्धक जलवायु और सुंदर पहाड़ियों की रमणीयता पर्यटकों को काफी लुभाती है. सुबहशाम पक्षियों की चहचहाहट से गूंजने वाले कोडैकनाल की विशेषता है यहां का कुरिंजी फूल, जो प्रति 12 वर्ष में एक बार खिलता है तथा जिस की केवल एक छवि देखने के लिए यहां सैकड़ों पर्यटक एकत्रित होते हैं. कोडैकनाल में 5 मील के घेरे में गोल्फ का एक सुंदर मैदान और कई पिकनिक स्थल हैं. यहां फेयरी फाल्स भी है, जहां नहाने के लिए शुल्क देना पड़ता है. इस के अलावा यहां झरनों में स्नान का मजा अलग है.

कब जाएं?

कोडैकनाल जाने के लिए अप्रैल से जून और सितंबर से अक्तूबर का समय ठीक है.

कैसे जाएं?

वायुमार्ग: निकटतम हवाई अड्डा मदुरै

खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं
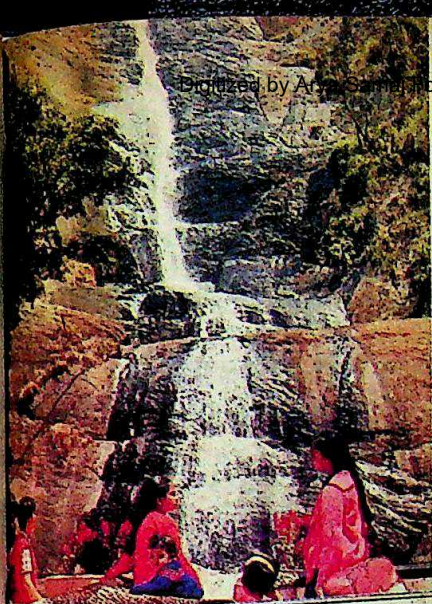
है. मद्रास से मदुरै के लिए विमान सेवा उपलब्ध है, जो एक घंटे में पहुंचा देती है. वहां से बसों और टैक्सियों द्वारा कोडैकनाल पहुंचा जा सकता है.

रेलमार्ग : कोडैकनाल से कोडैरोड रेलवे स्टेशन की दूरी 80 किलोमीटर है, जहां से नियमित बस सेवाएं हैं.

बस मार्ग : कोडैकनाल सभी प्रमुख नगरों से बस मार्गों द्वारा जुड़ा है. यहां से मदुरै, पलानी, डिंडीगुल, तिरुचिरापल्ली, थेनी और कुमुली के लिए बसें उपलब्ध रहती हैं. सीजन में कोयंबटूर से भी सीधी बसें मिलती हैं, जो 175 कि.मी. की दूरी तय कर के कोडैकनाल पहुंचती हैं. इन के अलावा टैक्सियों द्वारा भी यहां पहुंचा जा सकता है.

कहां ठहरें?

कोडैकनाल में भारतीय और यूरोपीय शैली के महंगे और सस्ते होटल हैं. होटलों में होटल तमिलनाडु, कार्लटेन सुविधा संपन्न हैं. होटल जयराज, शीराज, पैराडाइज, हालीडे होम आदि में भी अच्छा प्रबंध है. सरकारी विश्राम गृहों में ठहरने के लिए संबंधित अधिकारियों से पूर्व अनुमति लेना जरूरी है ताकि ठहरने में सुविधा रहे.

क्या देखें?

कोडैकनाल झील: सितारानुमा यह झील कोडैकनाल का प्रमुख आकर्षण है, जहां अंगरेज सर वेरे लेवेनजे ने स्विटजरलैंड की झीलों की याद ताजा करती नहर तथा झील का निर्माण किया था. यहां ढलावदार पहाड़ियों पर उगे वृक्षों को देखने के साथसाथ झील में नौकायन का मजा भी पर्यटक ले सकते हैं. समयसमय पर यहां आयोजित होने वाली नौका दौड़ भी आकर्षण का केंद्र है.

ब्रायंट पार्क: झील के पश्चिमी किनारे पर बना यह पार्क विभिन्न फूलों की कई किस्में अपने में समेटे हुए है. फूलों की कई दुर्लभ किस्मों का यहां से निर्यात भी होता है.

कोकर्स वाक: पर्वतारोहियों के लिए यह रमणीक स्थल है. कोडैकनाल के दक्षिणी छोर पर लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस स्थान से कोडै तथा पेरूमल पहाड़ों के नीचे के मैदानी क्षेत्र का मनोरम दृश्य निहारा जा सकता है. पेरूमल पहाड़ की खड़ी चढ़ाई चढ़ते हुए आप का पूरा दिन खर्च हो जाता है, लेकिन इस की चोटी पर पहुंच कर यहां के प्राकृतिक सौंदर्य की निराली छटा देखते ही सारी थकान खत्म हो जाती है.

टेलीस्कोप हाउस: कोडैकनाल के आसपास की प्राकृतिक छटा को निहारने के लिए यहां दो जगहों पर शक्तिशाली दूरबीनें लगाई गई हैं, जहां 50 पैसे के शुल्क पर प्रवेश दिया जाता है. इन दूरबीनों में एक झील से 1 किलोमीटर दूर और दूसरी कुरिंजी अंदावर मंदिर के पास लगी है.

जिगपुरम पहाड़ी पर बनी वेधशाला मौसम की जानकारी तथा सौर भौतिकी में अनुसंधान कार्य के लिए प्रयोग की जाती है.

शेनबगानूर संग्रहालय: झील से लगभग छः कि.मी. की दूरी पर बना यह संग्रहालय देश के प्रमुख संग्रहालयों में गिना

जाता है. पूजा की हजारों किस्मों के साथ ही यहां जीवजंतुओं के अवशेषों का संग्रह भी है.

कुरिंजी अंदावर मंदिर: झील से 3.2 कि.मी. की दूरी पर बने इस कलात्मक मंदिर से दक्षिणी मैदानी भाग और पलानी की पहाड़ियों की सुंदरता का नजारा लिया जा सकता है.

ग्रीन वैली व्यू: झील से 5.5 कि.मी. की दूरी पर बने इस स्थान और गोल्फ क्लब के बहुत पास वाली इस जगह से वैगाई बांध स्पष्ट नजर आता है.

पलानी की पहाड़ियां: 7.4 कि.मी. की दूरी और समुद्र की सतह से 122 मीटर की ऊंचाई वाले इस स्थान को पर्यटक उस के मनोरम दृश्यों और रमणीय छटा के कारण काफी समय तक याद रख सकेंगे.

दक्षिण भारतीय हस्तशिल्प की वस्तुएं यहां का प्रमुख आकर्षण हैं. कांचीपुरम की सिल्क साड़ियां भी यहां से उचित मूल्य पर खरीदी जा सकती हैं. इस के अलावा पर्यटक धातु और चमड़े की बनी वस्तुएं भी खरीद सकते हैं.

रामेश्वरम

खिली हुई चमकीली धूप में दूरदूर तक फैले रेतीले सागर तट, अथाह सागर जल, सुंदरसुंदर मूंगा टापू और प्रकृति के अनेक मनोरम दृश्यों से पूर्ण रामेश्वरम शताब्दियों से देशीविदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहा है. धार्मिक भावना से ग्रस्त लोग इसे प्रमुख तीर्थ स्थल मानते हैं.

पौराणिक और ऐतिहासिक काव्यों के अनुसार यही वह स्थान है, जहां से लंका तक सागर पर तथाकथित भगवान राम ने तत्कालीन वास्तुविद नलनील की सहायता से एक पुल बनवाया था, जिस के द्वारा वह अपनी सेना सहित लंका पर चढ़ाई कर सके थे. यहीं उन्होंने एक शिवलिंग की स्थापना कर के शैवमत और पूजा का प्रचार किया था.

कैसे जाएं?

रामेश्वरम भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिणीपूर्वी समुद्र तट पर पाक जलडमरूमध्य के द्वीप पर स्थित है. मुख्य भारत भूमि से रामेश्वरम केवल रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. मद्रास, कोडैकनाल, मदुरै, तिरुचिरापल्ली से रामेश्वरम के लिए रेल सुविधाएं उपलब्ध हैं और ये नगर देश के सभी प्रमुख नगरों से रेल मार्ग द्वारा जुड़े हैं.

हवाई मार्ग से जाने वाले यात्रियों को मदुरै तक ही हवाई सेवाएं मिल सकेंगी. मदुरै ही रामेश्वरम का निकटतम हवाई अड्डा है.

बस से जाने वाले पर्यटकों को मंडपम में उतरना पड़ेगा, क्योंकि इस के आगे रामेश्वरम तक बसें नहीं जाती हैं. मंडपम से रामेश्वरम के लिए रेलगाड़ी की यात्रा करनी पड़ेगी. मंडपम तक दक्षिण भारत के सभी प्रमुख नगरों से बसें आतीजाती हैं. रामेश्वरम और मंडपम के बीच 19 किलोमीटर की दूरी है.

स्थानीय यातायात

रामेश्वरम में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए आटोरिकशा, रिकशा, तांगा आदि वाहनों के अलावा टैक्सी सिटी बसों की भी सुविधाएं उपलब्ध हैं.

मंडपम से प्रमुख नगरों की दूरी

मदुरै से 173 किलोमीटर, कोडैकनाल से 307 किलोमीटर, कन्याकुमारी से 295 किलोमीटर, तिरुचिरापल्ली से 254 किलोमीटर, ऊटी से 537 किलोमीटर, कांचीपुरम से 610 किलोमीटर, मद्रास से 624 किलोमीटर.

कहां ठहरें?

रामेश्वरम में अनेक आधुनिक सुख-

रामनाथ स्वामी मंदिर : द्रविड़ वास्तुकला का चरम निर्देशन ▲
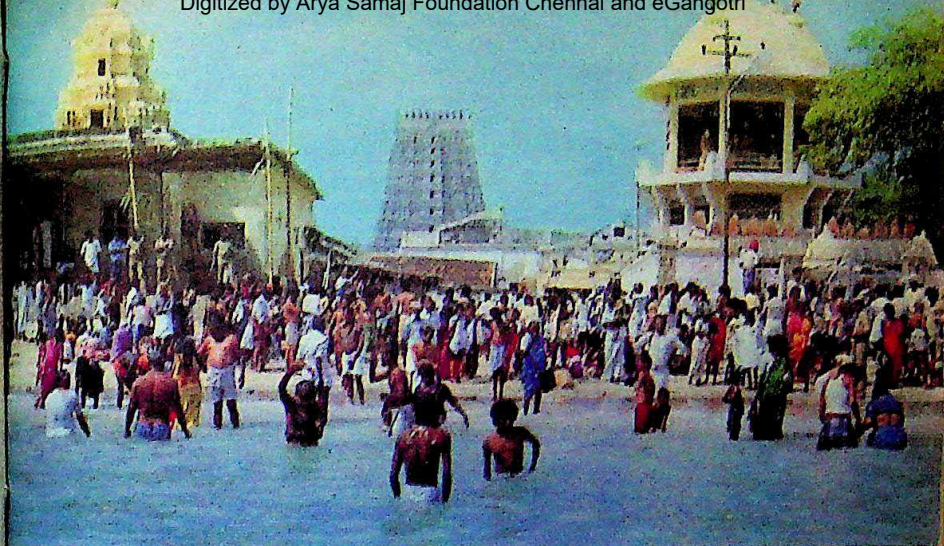
सुविधाओं से संपन्न होटल तमिलनाडु ठहरने के लिए सर्वोत्तम स्थान है. इस के अतिरिक्त मीनाक्षी लाज, रेलवे रिटायरिंग रूम तथा कुछ धर्मशालाएं भी ठहरने के लिए उत्तम स्थल हैं.

क्या देखें?

रामनाथस्वामी मंदिर: **रामेश्वरम में पर्यटकों के लिए सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र है रामनाथस्वामी मंदिर. यह विशाल मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का चरम निदर्शन है. यह मंदिर 12 वीं सदी के बाद की रचना है, जिसे विभिन्न राजाओं ने समयसमय पर और भी अधिक कलात्मक बनाने के सफल प्रयास किए थे.**

इस मंदिर में विश्व का सब से बड़ा गलियारा है, जिस की लंबाई लगभग 4,000 फुट और चौड़ाई 17 से 21 फुट तक है. इस की ऊंचाई 30 फुट है. गलियारे के स्तंभ ग्रेनाइट पत्थर के बने हैं, जिन पर उत्कृष्ट कलाकृतियां अंकित हैं. मंदिर के प्रवेश द्वार पर ऊंचेऊंचे गोपुरम बने हैं.

प्रवाल शैलमाला: **रामेश्वरम के आसपास फैली मूंगे की चट्टानों और टापुओं का अपना अलग ही आकर्षण है. ये प्रवाल शैल मालाएं विश्व की सुंदरतम शैल मालाओं में से हैं. यह एक अच्छा पिकनिक स्थल भी है. खजूर, ताड़ आदि के लंबेलंबे वृक्षों से परिपूर्ण इन टापुओं की सुषमा देखते ही बनती है.**

गंधमादन पर्वत: **रामेश्वरम जलडमरूमध्य के उत्तर में स्थित यह पर्वत यहां का सर्वोच्च और मनोरम शिखर है. यहां से संपूर्ण नगर का नजारा अत्यंत आकर्षक लगता है. पौराणिक कथाओं के अनुसार सूर्यवंशी राजा पुरूरवा ने उर्वशी के साथ इसी पर्वत पर विहार किया था.**

क्या खरीदें?

यहां से ताड़ के पत्तों से बनी वस्तुएं, शंख, मनके आदि खरीदे जा सकते हैं. ये सभी चीजें रामनाथस्वामी मंदिर के पास उचित मूल्य पर मिलती हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता: **देव स्थानम, ईस्ट कार स्ट्रीट, रामेश्वरम.**

त्रिवेंद्रम

भारत के दक्षिणीपश्चिमी किनारे पर बसा यह नगर केरल की राजधानी है. अपने घने जंगल तथा नारियल व केले के पेड़ों से घिरा यह शहर बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है.

कैसे जाएं?

त्रिवेंद्रम हवाई मार्ग से मद्रास व कोचीन से सीधा जुड़ा हुआ है. वैसे भारत के अन्य प्रमुख नगरों बंगलौर, बंबई,कोयंबटूर, दिल्ली इत्यादि से भी पहुंचा जा सकता है. कोचीन, मद्रास, मदुरै, क्विलोन व तिरुचिरापल्ली से त्रिवेंद्रम रेल के माध्यम से जुड़ा है. सड़क मार्ग से यह शहर दक्षिण भारत के सभी नगरों से जुड़ा है. नई दिल्ली से प्रतिदिन केरल एक्सप्रेस त्रिवेंद्रम के लिए रवाना होती है जो लगभग 54 घंटों में त्रिवेंद्रम पहुंचा देती है.

कहां ठहरें?

त्रिवेंद्रम में ठहरने की कोई समस्या नहीं है. होटलों की भी कोई कमी नहीं है, होटलों के किराए देश के अन्य शहरों की अपेक्षा काफी कम हैं. स्टेशन से बाहर निकलते ही सामने वाली सड़क पर आप को होटल ही होटल नजर आएंगे. स्टेशन के ठीक सामने ही बस अड्डा है. बस अड्डे के निकट ही केरल सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा निर्मित होटल है जो सस्ता भी है और सुविधाजनक भी. स्टेशन के सामने थंपानूर रोड पर होटल साफा इंटरनेशनल भी सस्ता व अच्छा है. इसी रोड पर आप को पचासों होटल व गेस्ट हाउस मिल जाएंगे. समुद्र किनारे रहने वाले शौकीन लोगों के लिए कोवालम बीच पर अनेक होटल हैं. होटल कोवालम बीच कुछ महंगा जरूर है परंतु सुविधाजनक है.

त्रिवेंद्रम में खानेपीने की समस्या भी नहीं है. जगहजगह रेस्तरां हैं, जहां डोसा, इडली, उत्तपम आदि खाने को मिल जाते हैं. उत्तर भारतीय लोगों के लिए जगहजगह 'फास्ट फूड सेंटर' जैसे रेस्तरां भी हैं. जहां तुरंत सब्जी तैयार कर के परांठें के साथ परोस दी जाती है. त्रिवेंद्रम में लगभग हर दुकानदार आप को केले बेचता नजर आ जाएगा, चाहे वह चाय वाला हो या होटल वाला. यहां केले की पांचछः किस्में खाने को

पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र कोवालम का समुद्री तट ▼
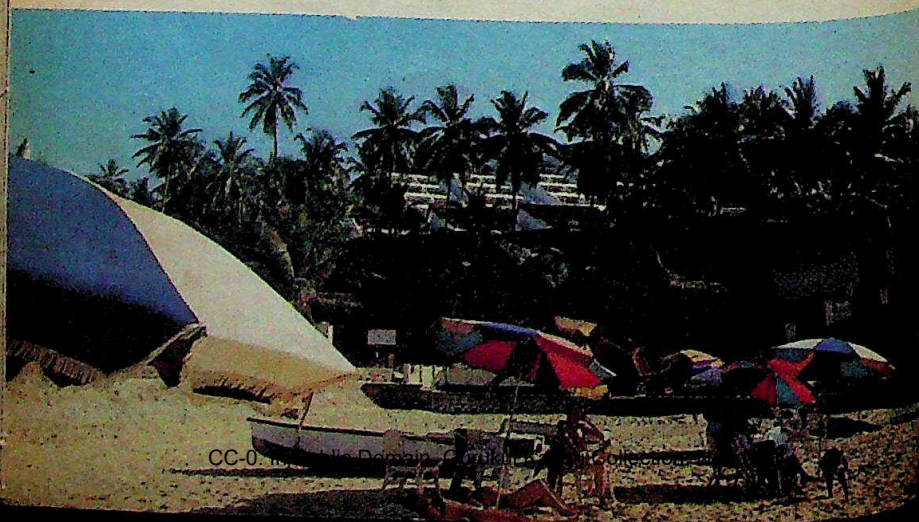
मिल जाता है और केला तीन इंच से ले कर 12 इंच तक लंबा मिल जाता है.

दर्शनीय स्थल:

पद्मनाभ स्वामी मंदिर: त्रिवेंद्रम का प्रमुख आकर्षण है-पद्मनाभ मंदिर. इस में 22 फुट ऊंची काले पत्थर से बनी विष्णु की मूर्ति कला का बेजोड़ नमूना है. इस का सात मंजिला गोपुरम खास द्रविड़ ढंग का है. इस के बरामदे में ग्रेनाइट के 300 खंभे लगे हुए हैं. इस की दीवारों पर नक्काशी और चित्र बड़े सुंदर लगते हैं.

आर्ट गैलरी: श्री चित्रालय आर्ट गैलरी में राजपूत, मुगल, तिब्बती, तंमौर, जापानी, चीनी चित्रकला का बहुत विशाल संग्रह है.

इस के अलावा भित्तिचित्रों का सौंदर्य भी दर्शनीय है.

अन्य दर्शनीय स्थल: इन के अलावा समुद्र तट के पास बना मछलीघर, पशु उद्यान, वेधशाला, ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, शाही महल, विक्टोरिया जुबली हाल इत्यादि भी देखने योग्य हैं.

आसपास के दर्शनीय स्थलों में कोवालम समुद्री तट दर्शनीय है. यहां समुद्र में नहाने का मजा लिया जा सकता है. होटल कोवालम बीच के कर्मचारी पर्यटकों से कुछ शुल्क ले कर तट पर कुरसियां व छतरियां उपलब्ध करा देते हैं. समुद्र में नहाने के बाद पर्यटकों को 'शावर बाथ' की भी सुविधाएं ये कर्मचारी उपलब्ध करा देते हैं. तीनचार घंटे समुद्र में नहाने के बाद व्यक्ति तरोताजा हो जाता है.

पड़ोसी देशों श्रीलंका व मालदीव के लिए त्रिवेंद्रम एक पड़ाव स्थल भी है. त्रिवेंद्रम से सप्ताह में तीन दिन इंडियन एअरलाइंस की उड़ानें मालदीव के लिए भी जाती हैं. मालदीव घूमने वाले पर्यटकों को वीसा की भी जरूरत नहीं पड़ती. अतः अगर पर्यटक चाहें तो लगभग 1,100 रुपए का आनेजाने का टिकट खरीद कर मालदीव घूम सकते हैं. इसी तरह सप्ताह में तीन दिन इंडियन एअरलाइंस की उड़ानें कोलंबो भी जाती हैं. कोलंबो घूमने के शौकीन पर्यटक त्रिवेंद्रम से जा सकते हैं.

क्या खरीदें?

त्रिवेंद्रम से दस्तकारी की खूबसूरत चीजें खरीदी जा सकती हैं.

कन्याकुमारी

समस्त दक्षिण भारत के किनारेकिनारे धूप में बसे सागर तट हैं जिन्हें वृक्षों के झुरमुट तथा सीधे खड़े ताड़ के पेड़ घेरे हैं. इस सब में सब से अद्भुत है भारत का अंतिम छोर कन्याकुमारी. कन्याकुमारी के तट को तीन ओर से तीन भिन्नभिन्न सागर धोते हैं. यहां अरब सागर, हिंद महासागर तथा बंगाल की खाड़ी का पानी आपस में मिलता है. यहां बंगाल की खाड़ी से सूर्योदय होता है तथा अरब सागर में जा कर अस्त हो जाता है. यहां के रजकण केवल सुनहरे ही नहीं हैं, वरन कहींकहीं चांदी के समान चमकते हैं तो कहीं हलके गुलाबी हैं, कहीं हलके पराग से पीले और कहीं चमकते लाल हैं.

कैसे पहुंचें?

छोटीछोटी हरीभरी पहाड़ियों से घिरी सुंदर नगरी कन्याकुमारी का पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान है. इस शहर में अनेक दर्शनीय स्थल हैं. यहां पहुंचने के लिए दक्षिण रेलवे एवं इंडियन एअरलाइंस का सहारा लिया जाता है. त्रिवेंद्रम हवाई अड्डा कन्याकुमारी से 86 किलोमीटर दूर है. त्रिवेंद्रम से आप ट्रेन और बस से कन्याकुमारी जा सकते हैं. दक्षिण भारत के किसी भी शहर से आप कन्याकुमारी

कन्याकुमारी का विहंगम दृश्य

पहुंच सकते हैं, इस के लिए आप को रेल एवं बसें उपलब्ध होंगी.

कहां ठहरें?

कन्याकुमारी में रहने के लिए अनेक होटल एवं गेस्ट हाउस बने हुए हैं. कन्याकुमारी में एक निम्नवर्गीय व्यक्ति भी आसानी से होटल का किराया दे कर अपने रहने की व्यवस्था कर सकता है. होटल तमिलनाडु (केप होटल) भारतीय स्टाइल से बना होटल है. न्यू गेस्ट हाउस सब से महंगा होटल हैं. इन होटलों में वातानुकूलित कमरों की भी व्यवस्था है.

इस के अलावा केरला हाउस, देवस्थानम (तेम्पूल ट्रस्ट) कलायमगल इलास, मलायमगल इलास, टाउनशिप लाज, रेलवे रिटायरिंग रूम, लाज विवेकानंद आदि अनेक स्थलों में भी ठहरा जा सकता है.

क्या देखें?

कुमारी अम्मान मंदिर: कन्याकुमारी मंदिर के अलावा यहां अनेक लुभावने दर्शनीय स्थल हैं. कुमारी अम्मान मंदिर कन्याकुमारी का एक बहुत सुंदर मंदिर है. इस मंदिर को एकता का प्रतीक माना जाता है. इसी मंदिर के एक किनारे महात्मा गांधी की स्मृति में बनाया गया मंडप गांधी स्मारक है. यहीं पर उन के अस्थि कलश को सागर में विसर्जित करने के पहले जनता के दर्शनार्थ रखा गया था. इमारत का निर्माण इस ढंग से किया गया है कि 2 अक्तूबर को सूर्य की किरणें उस स्थान पर पड़ती हैं, जहां अस्थि कलश रखा गया था. 1952 में बना मंडप गांधी स्मारक वास्तुशिल्प का अनूठा नमूना है. इस में नीचे सागर का जल चट्टानों से घिर कर झील की सी शक्ल बनाता है. लोग इस में स्नान भी करते हैं.

मंदिर के दक्षिणपूर्व में सागर से बाहर दो चट्टानें हैं. ये चट्टानें वहां जाने वाले पर्यटकों को मात्र भारत के अंतिम छोर का नजारा ही नहीं दिखातीं, बल्कि स्वामी विवेकानंद के जीवन दर्शन का भी ज्ञान कराती हैं.

सूर्योदय तथा सूर्यास्त: कन्याकुमारी में सूर्योदय और सूर्यास्त के लुभावने दृश्य भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं. पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त और चंद्रोदय के दृश्य एक साथ देखे जा सकते हैं.

समुद्र के बीच एक चट्टान पर बना स्वामी विवेकानंद स्मारक
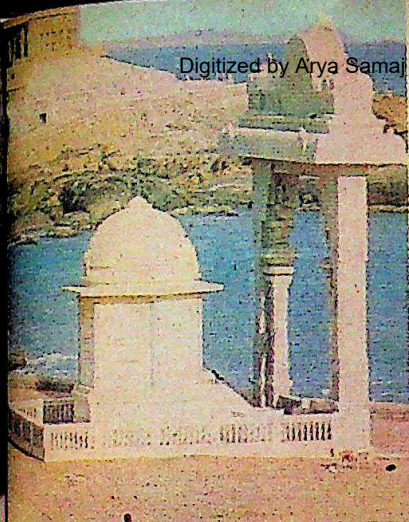
थानुमलायन मंदिर : **इस मंदिर में 9 वीं सदी के अभिलेख सुरक्षित हैं. म्यूजिकल पिलर्स तथा 18 फुट ऊंची विशाल हनुमान मूर्ति कला की बेजोड़ मिसाल है. यह दर्शनीय मंदिर कन्याकुमारी से 13 किलोमीटर की दूरी पर सुचिंद्रम में स्थित है.**

नागराज मंदिर : **इस मंदिर में नागराज, शिव और अनंत कृष्ण की मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं. मंदिर के खंभों पर जैनियों की चित्रकला के नमूने देखे जा सकते हैं. यह मंदिर नायरकायल में स्थित है, जो कन्याकुमारी से 19 किलोमीटर दूर है.**

उदयगिरि किला : **यह 18 वीं शताब्दी में राजा मार्तंड वर्मा के राज्य काल में बना था. यह किला कन्याकुमारी से 34 किलोमीटर दूर है.**

सर्कुलर फोर्ट : **यह किला कन्याकुमारी से 6 किलोमीटर दूर है. उदयगिरि किला की तरह यह भी 10 वीं सदी में बना था. यह एक अच्छा पिकनिक स्थल है क्योंकि यहां समुद्र शांत रहता है और पर्यटकों को सागर स्नान का आनंद मिलता है.** ●
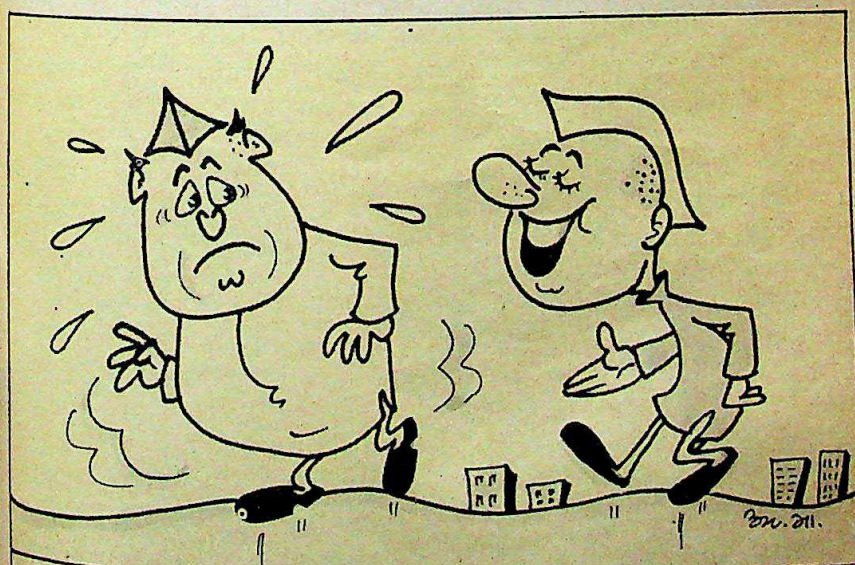
"क्या कहा, बहुत दिनों से हम ने पिकनिक नहीं मनाई. भूल गए, कुछ दिन पहले ही तो 'दौड़' और 'दांडी यात्रा' में सम्मिलित हुए थे."
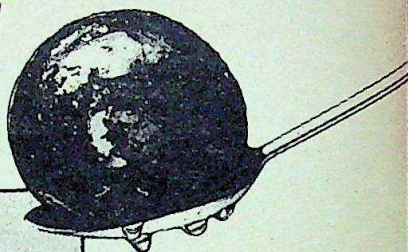
न्युट्रिन
इन्स्टेन्ट
मीठी मीठी बातों से बनी

२०० ग्राम और १०० ग्राम
पैक में उपलब्ध।

पाठकों को विभिन्न पर्यटन स्थलों पर हुए कुछ खट्टेमीठे

अनुभव

जम्मूकशमीर

हम लोग कार से श्रीनगर गए थे. वापस लौटते समय जम्मू में राज्य सरकार के दो सिपाहियों ने हमारी कार रोक ली. पहले उन्होंने गाड़ी के कागज देखे. सब ठीकठाक पा कर वे सामान की तलाशी लेने की बात करने लगे. जब हम ने कहा, 'देख लो,' तो वे आनाकानी करने लगे.

उन का कहना था, "हमें 30 रुपए दे दो अन्यथा तलाशी के नाम पर सामान को इस तरह पटकेंगे कि टूटफूट हो सकती है."

चूंकि ये सिपाही शराब के नशे में थे, इसलिए बहस से कोई लाभ न था. हम ने सोचा इन की मोटर साइकिल का नंबर ही नोट कर लिया जाए पर मोटर साइकिल में नंबर प्लेट थी ही नहीं.

—निर्मल भाटिया, गुडगांव, हरियाणा.

जम्मूकशमीर जाने वाले पर्यटकों को बचाव के उपायों से लैस हो कर ही वहां जाना चाहिए, अन्यथा वे लुटने के लिए तैयार रहें. आटो रिकशा वाले मनमाने ढंग से यात्री किराया लेते हैं और शिकायत करने पर

पुलिस वाले भी उन्हीं का पक्ष लेते हैं. इसलिए किराया पहले तय कर लें.

यहां भोलेभाले पर्यटक जूतों के किराए में भी लुटते हैं. गुलमर्ग में एक जोड़ा जूते का किराया दस रुपए है.

गुलमर्ग, सोनमर्ग, पहलगाम, चश्माशाही आदि के लिए राज्य सरकार की बसें नियमित रूप से उपलब्ध हैं. पर यहां भी पहले से आरक्षण न करवा लेने पर चालक/संवाहक ब्लैक में टिकटों का दोगुना मूल्य वसूल करते हैं.

डल झील में सैर के लिए शिकारा लेने के समय यह भी तय कर लेना चाहिए कि वह कौन कौन से स्थान दिखाएगा, अन्यथा इसी को ले कर झगड़ा होगा.

डल झील में सैर के दौरान कई व्यापारी भी कुछ खरीदने का आग्रह करेंगे. पर उन से कुछ खरीदने से पूर्व क्वालिटी तथा मूल्य पर अच्छी तरह सोचविचार लें.

हम ने श्रीनगर में कुर्तापायजामा तथा कमीजसलवार का कपड़ा खरीदा. जब दिल्ली में इन्हें सिलवाने के लिए दर्जी को दिया, तो वह बोला—"बाबूज़ी, क्यों सिलाई के पैसे बरबाद करते हो? ये कपड़े तो बिलकुल बेकार हैं."

—अशोक कुमार दीवान, नई दिल्ली.

डल झील में सैर के दौरान हमारी नौका का चालक हमें 'शाल हाउस' नामक शिकारे पर ले गया. वहां हम ने साड़ी, शाल कुर्ते आदि खरीदने पर 1,300 रुपए खर्च किए. इस्तेमाल करने पर ये सब नकली निकले.

हम ने पर्यटक निदेशक से इस बारे में लिखित शिकायत की. लेकिन हमें बताया गया कि जांच की काररवाई चल रही है.

इसी प्रकार गुलमर्ग में हम ने होटल से ही दो घोड़े लिए. इन के रेट सरकार द्वारा तय होते हैं, जिन के अनुसार हमें दोनों के 140 रुपए देने थे. पर घोड़े वाला 350 रुपए से कम लेने को तैयार नहीं था. पुलिस से शिकायत करने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ, और हमें 350 रुपए देने पड़े.

—नीरू गुप्ता, दिल्ली

शिमला

शिमला में यदि आप टैक्सी वालों के तौरतरीकों से अवगत हों, और उन्हें मौका न दें कि वे आप को मूर्ख बना सकें, तो फिर खर्च किए पैसों का आप पूरा आनंद ले सकते हैं.

होता यह है कि आठ स्थानों को दिखाने की बात तय हुई तो टैक्सी चालक आप को चार ही स्थान दिखाएगा. पैसे तो एजेंट ले लेता है, और आप के साथ जाता है केवल ड्राइवर, जो तरहतरह के बहाने बनाने में माहिर है.

उपाय यही है कि एजेंट से दर्शनीय स्थलों की लिखित सूची ले ली जाए. तब चालक को बहाने बनाने का मौका नहीं मिल सकेगा.

—अनुपमा जैन, फिरोजाबाद

मैसूर

भारत भ्रमण के क्रम में हम पंद्रह छात्र मैसूर पहुंचे तो मैसूर महाराज के महल ने हमारा मन मोह लिया.

यह महल मैसूर का आभूषण है, जिस का सुनहरा गुंबद काफी दूर से ही दिखाई पड़ता है. महल के भीतर की सजावट व सफाई देख कर तो आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है. बड़ेबड़े सुसज्जित कक्ष, उन में लटकते झाड़फानूस, सुंदर नक्काशी वाले विशाल द्वार, चमचमाते फर्श, दीवारों पर विशाल तैल चित्र, रंगबिरंगे दर्पण अतीत के मैसूर के वैभव की कहानी कहते प्रतीत होते हैं.

कहते हैं, 1911-12 में इस के निर्माण पर 42 लाख रुपए खर्च हुए थे.

मैसूर के समीप ही चामुंडी पर्वत पर चामुंडीश्वरी मंदिर का बड़ा नाम है. पर यहां दर्शन के लिए भी रिश्वत का लेनदेन होता है. रिश्वत न देने वालों को लंबीलंबी कतारों में घंटों प्रतीक्षा करनी पड़ती है या पैसा देना पड़ता है.

—संजय शर्मा, शिमला

देवताओं की पावन भूमि में पधारिए
और
बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री
एवं
यमुनोत्री के दर्शनों का पुण्य लूटिए.
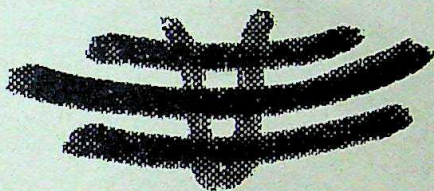
कपाट खुलने की तारीख :

बदरीनाथ–8 मई, केदारनाथ–6 मई, गंगोत्री एवं यमुनोत्री–19 अप्रैल, गढ़वाल विकास निगम मुनि की रेती, ऋषिकेश से इन पवित्र धामों की यात्रा की व्यवस्था करता है. संपूर्ण यात्रा व्यवस्था में लक्सरी बसों में यात्रा, सम्मिलित निवास और गाइड की सेवाएं शामिल हैं. इस संपूर्ण यात्रा के आरक्षण के लिए, अच्छा हो, दो सप्ताह पहले संपर्क करें:–

सहायक महाप्रबंधक (पर्यटन)
गढ़वाल मंडल विकास निगम लि.
मुनि की रेती, ऋषिकेश, फोन: 372/357.

गढ़वाल मंडल विकास निगम लि.
74/1 राजपुर रोड, देहरादून,
टेलेक्स नं. 595-318 डीआरओएन इन.
फोन: 26817/26830/26980.

निदेशक, उ.प्र. पर्यटन,
चित्रहार भवन, 3 नवलकिशोर रोड,
लखनऊ–उ.प्र.

गढ़वाल के बारे में मुफ्त पुस्तिका पाने के लिए कृपया अपना पता लिख कर टिकट लगा लिफाफा भेजिए.

सामान्य :

1. चार धाम, यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बदरीनाथ. 11 दिन, प्रतिदिन वयस्क 1333 रु., बालक 1100 रु.
2. ऋषिकेश, केदारनाथ, बदरीनाथ वाया चिल्ला पौड़ी 8 दिन, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति. वयस्क 860 रु. बालक 720 रु.
3. ऋषिकेश, केदारनाथ, बदरीनाथ वाया लैंस डाउन पौड़ी 7 दिन, शुक्र, शनि, रवि, वयस्क 850 रु., बालक 700 रु.
4. दिल्ली–केदारनाथ, बदरीनाथ 7 दिन, बुधवार, वयस्क 1190 रु., बालक 950 रु.
5. देहरादून, यमुनोत्री, गंगोत्री, गौमुख 7 दिन, मंगलवार, वयस्क 775 रु., बालक 660 रु.
6. ऋषिकेश, यमुनोत्री, गंगोत्री, गौमुख 7 दिन, सोमवार, वयस्क 725 रु., बालक 610 रु.
7. ऋषिकेश, फूलों की घाटी, हेमकुंड 7 दिन, सोम, बृहस्पति, वयस्क 860 रु. बालक 715 रु.
8. ऋषिकेश, बदरीनाथ, 3+2 बस द्वारा 4 दिन, मंगलवार वयस्क 430 रु., बालक 350 रु.

डीलक्स :

1. ऋषिकेश, चारधाम, यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बदरीनाथ (टूरिस्ट कैब द्वारा) 9 दिन बुध, मंगल, रवि. 2450 रु.
2. ऋषिकेश, केदारनाथ, बदरीनाथ (टूरिस्ट कैब द्वारा) 5 दिन, प्रतिदिन 1265 रु.
3. ऋषिकेश, केदारनाथ, बदरीनाथ (मिनी कोच द्वारा) 6 दिन, सोम, रवि, वयस्क 995 रु., बालक 795 रु.

तीर्थयात्री बन कर आइए और गढ़वाल प्रेमी बनकर लौटिए.

गढ़वाल मंडल विकास निगम लि. के निम्नलिखित क्षेत्रीय कार्यालयों में भी कम से कम तीन सप्ताह पहले यात्रा के लिए आरक्षण करवाया जा सकता है :

● सहायक प्रबंधक, द्वारा, उ.प्र. पर्यटन कार्यालय, चंद्रलोक भवन, 36, जनपथ नई दिल्ली. फोन : 3322251, 3326620. ● संपर्क अधिकारी, गढ़वाल मंडल विकास निगम लि., द्वारा, उ.प्र. पर्यटन कार्यालय, 12ए, नेताजी सुभाष रोड, दूसरी मंजिल, कलकत्ता. फोन: 220798, 220287. ● जनसंपर्क अधिकारी (पश्चिमी क्षेत्र) गढ़वाल मंडल विकास निगम लि., द्वारा, भारतीय पर्यटन विकास निगम, निर्मल बिल्डिंग, 11वीं मंजिल नरीमन पाइंट, बंबई. फोन: 2026679, 2023343, 2022575. ● द्वारा महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम (पर्यटन विभाग) मैडम कामा रोड बंबई ● जन संपर्क अधिकारी, गढ़वाल मंडल विकास निगम लि. 2-ए-1, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ. ● प्रबंधक, परिवहन एकक, राजस्थान [illegible] विकास निगम, [illegible] 365-479

चंपक
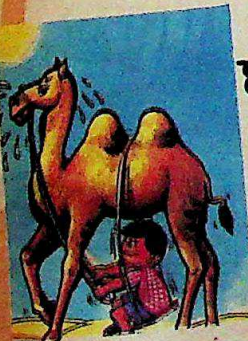
याद आती जिंदगी

ढोलक की थाप पर,
झांझर की झंकार पर,
बहकती
चहकती
गुनगुनाती जिंदगी.

फागुन के फाग सी,
संदली बयार सी,
अलसाती
शरमाती
महकाती जिंदगी,

नदिया में नाव सी,
झुरमुट में छांव सी,
लहराती
गहराती
बलखाती जिंदगी.

सोनपंखी सपनों की
मोरपंखी रात सी,
दुलराती
थपकाती
मुसकाती जिंदगी,

महुए के फूल सी,
सावनी मयूर सी,
इठलाती
इतराती
सरसाती जिंदगी.

बासंती धूप सी,
कोयल की कूक सी,
रिझाती
लुभाती
याद आती जिंदगी.

—रवि कुमार
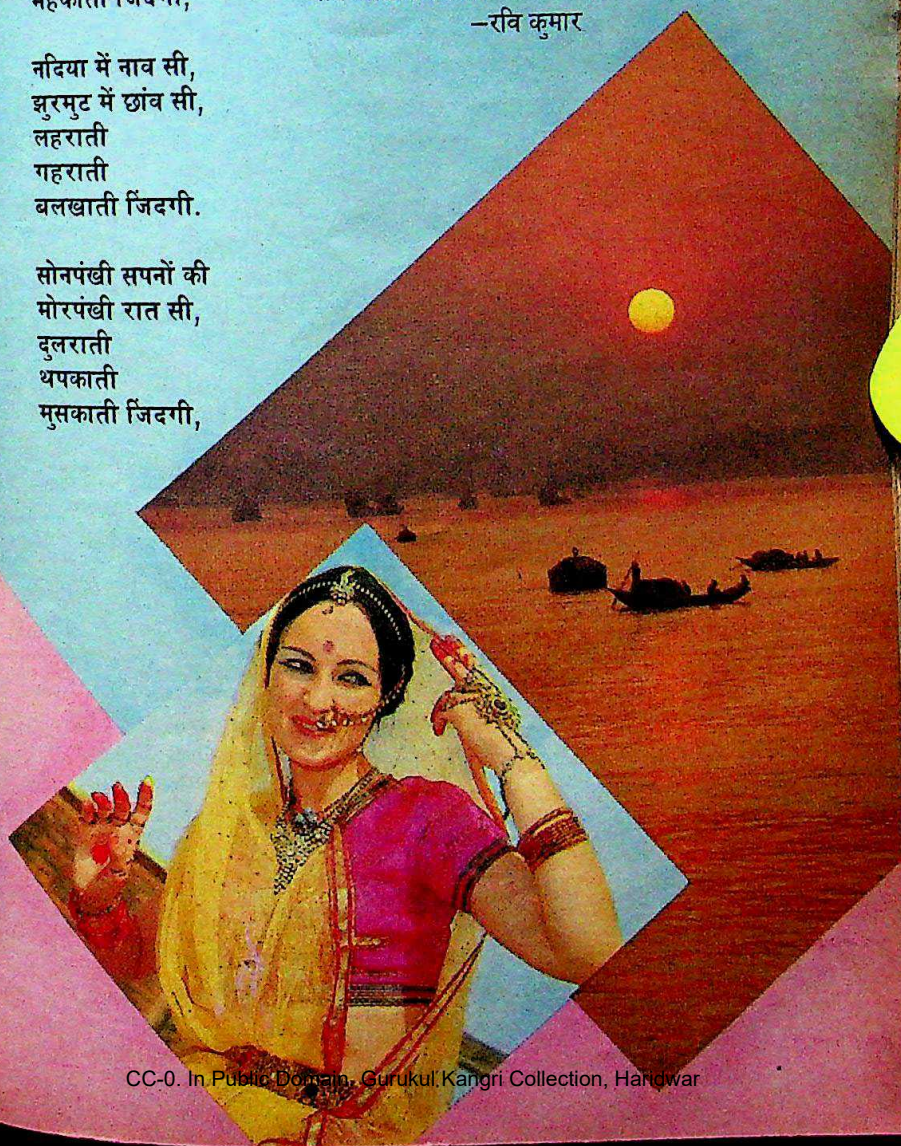
युद्ध विराम

कहानी •

मंजरी सक्सेना

दफ्तर से लौट कर अजीत साहब ने सैरसपाटे के कार्य क्रम की सूची अपनी पत्नी ललिता को दी, ''यह देखो, 'गगन ट्रेवल्स' की बस 'भारत दर्शन' के लिए 20 मई को जाएगी. एक बस गोवा, बंबई, रामेश्वरम, बंगलौर, हैदराबाद, अजंताएलोरा, नासिक घुमाएगी और दूसरी बस में कशमीर और भारत के खासखास स्टेशन.''

''क्या वाकई जाने का इरादा है?'' ललिता ने चहक कर पूछा.

''और क्या, बेगम? यह देखो, 'लीव ट्रेवल कंसेशन' यानी छुट्टी यात्रा रिआयत

अजीत ने परिवार सहित भारत दर्शन का कार्यक्रम बड़े उत्साह से बनाया था. लेकिन यात्रा की शुरुआत ही परेशानियों से हुई. बस में यात्रियों के दो गुट बन गए जो हर बात में एक दूसरे का विरोध करते. आखिर इस यात्रा का अंत कैसा रहा?
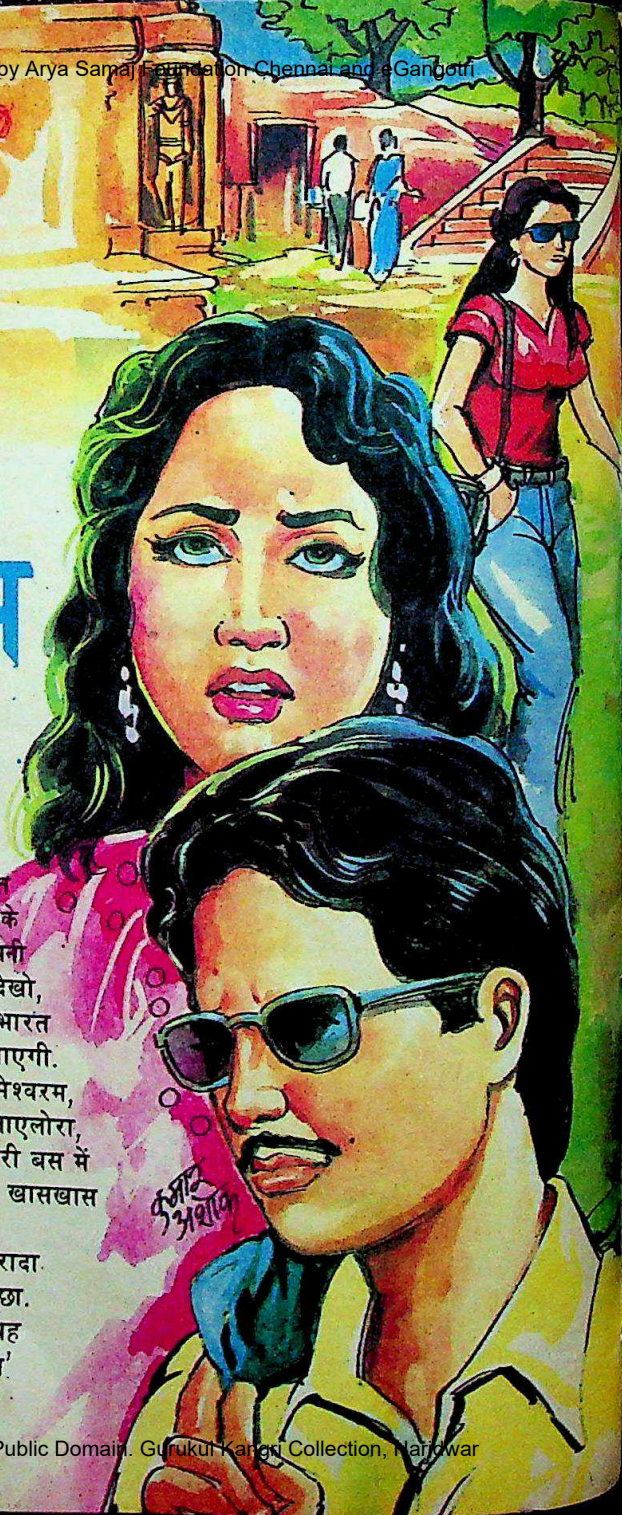
पेशगी भी आ गया," अजीत साहब ने तीन हजार रुपए के नोट दिखा कर कहा, "दोनों में से एक कार्यक्रम बना लो.

"पिताजी, कन्याकुमारी चलिए, समुद्र देखेंगे."

"नहीं पिताजी, कशमीर. धरती का स्वर्ग तो वही है."

"कशमीर जाने में गरम कपड़ों की व्यवस्था पूरी होनी चाहिए. अभी तो दक्षिण भारत का कार्यक्रम ठीक रहेगा. कशमीर से कन्याकुमारी तक भारत एक ही है." ललिता ने युद्धविराम की घोषणा कर दी.

बस, उसी समय से जाने की तैयारी और सूची बननी शुरू हो गई थी. 15-20 दिन की बस यात्रा के लिए खानेपीने की पूरी व्यवस्था करनी थी. सूखा दूध, चाय की पत्ती, स्टोव- कहीं कुछ कमी न रहे. कुछ

बस यात्री एक दूसरे को दोष देते कि आप लोगों की वजह से देर होती है. ▼

छाता, बरसाती हर सामान याद कर के रखना था.

जिस दिन से एल.टी.सी. की बस में सफर शुरू हुआ था, लोगों में आपस में ही दुश्मनी सी हो गई थी. शुरुआत हुई थी अजंताएलोरा से. कुछ लोग गुफाएं देखने के शौकीन थे. वे रात को वहां रुक कर अगले दिन गुफाएं देखने के बाद ही वहां से चलना चाहते थे. बाकी लोग जो दो रातों से सफर कर रहे थे, उन्हें नासिक पहुंच कर मुक्तिधाम और गोदावरी के दर्शनों की इच्छा थी. वे जल्दी से जल्दी नासिक पहुंचना चाहते थे.

विरोधी दल के लोग दूसरे दल को दोष देते कि उन लोगों की वजह से ही देर होती है. कभी कोई पान खाने को रुकता है तो कभी कोई कुछ खाने का सामान खरीदने. एक पार्टी तो अपना सारा राशनपानी साथ ले कर ही चली थी. जहां कहीं बस रुकती, वे लोग झटपट खाना बनाने लग जाते थे, जैसे उन का काम ही सिर्फ भोजन बना कर खाना और बस में बैठना था. उन्हें दर्शनीय स्थलों को देखने से कोई सरोकार ही नहीं था. हां, अगर कुछ देखना ही था तो बस मंदिर. उन्हें तो यही कह कर बस में लाया गया था कि तीर्थ स्थानों की सैर कराएंगे. लेकिन अब तो उन्हें समुद्र, बाग, फैक्टरियां, गुफाएं न मालूम क्याक्या दिखाया जा रहा था और किराया पूरा ले लिया था. कहीं चर्च और गुरुद्वारे थे तो कहीं मसजिद और मीनारें. यह भला क्या बात हुई कि हिंदू हो कर अपना धर्म भ्रष्ट करते फिरें.

एलोरा पहुंचतेपहुंचते शाम के 5.30 बज रहे थे. तब तक गुफाएं बंद हो चुकी थीं. गुफाएं देखने को भी नहीं मिलीं. पता नहीं कौन से मुहूर्त में निकलना हुआ था. एल.टी.सी. की बस को शुरू से ही कोई न कोई परेशानी हो रही थी. कभी किसी बच्चे की तबीयत खराब हो जाती तो कभी बस का टायर फट जाता. सब कुछ ठीकठाक चलने लगता था तो इंजन को पानी की जरूरत पड़
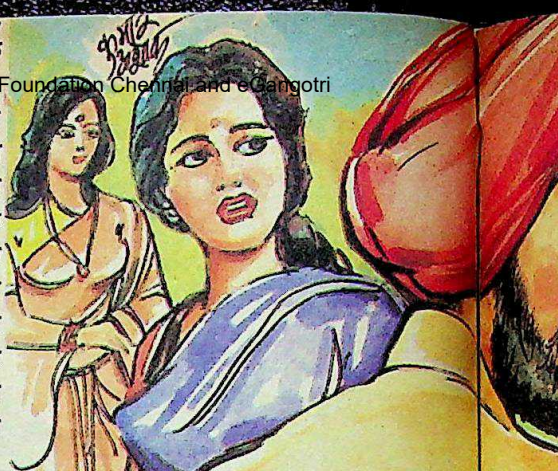
"घड़ी देखिए, क्या समय हो रहा है? आप ने अपने आप को समझ क्या रखा है." कहते हुए बाकी यात्री उन सरदारों से बहस करने लगे.

जाती थी. दूरदूर तक पानी का कहीं नामोनिशान नहीं होता. बड़ी मुशकिल से एक बालटी पानी लाया जाता तो किसी बात को ले कर हिंदूसिखों में झगड़ा शुरू हो जाता था.

बस के लोग दो गुटों में बंट गए थे. दो ड्राइवर थे—एक सिख, दूसरा हिंदू. दो गुट थे—एक सिखों का, दूसरा हिंदुओं का. इसी झंझट की वजह से ही बस पहुंचने में देर हुई. अब तो रुकना जरूरी था ही. रात भर ठहरने के लिए जगह की तलाश शुरू हुई. पता चला कि सिखों का एक स्कूल है, वहां रात काटी जा सकती है. कुछ लोग तो जाने को तैयार थे, लेकिन थोड़े लोग बस के पास ही बिस्तर बिछा के सो गए क्योंकि रात को सिखों के साथ स्कूल में ठहरना, उन्हें उचित नहीं लगा. पर कुछ हिंदू सिखों के साथ स्कूल चले गए थे.

रात को 10 बजे आंधीपानी से सड़क के किनारे सोए हुए लोगों की नींद खुल गई थी. कुछ समझ में नहीं आ रहा था, कहां जाएं?
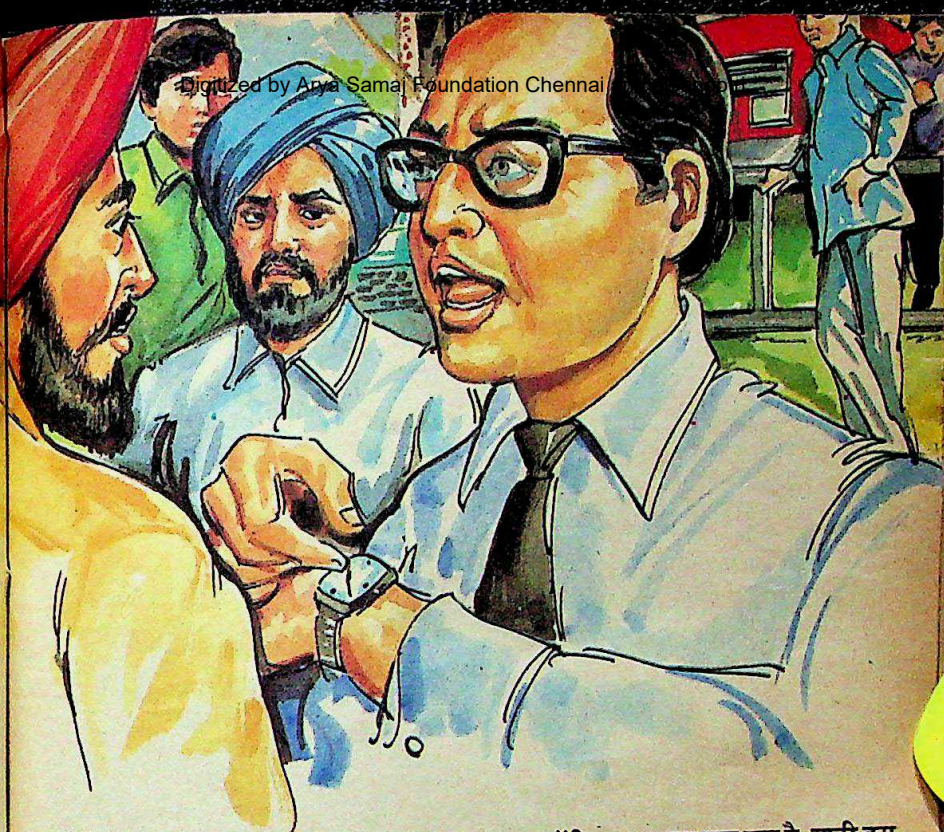
कई लोगों ने सलाह दी कि उस वक्त स्कूल के अलावा और कोई जगह नहीं मिल सकती, जहां रात काटी जाए.

"आप के पास मिट्टी का तेल होगा. थोड़ा सा दे दीजिए, चाय बनानी है."

"चाय तो बन ही रही है. आप कितने लोग हैं. थोड़ी और बढ़ा देंगे. आप अपने गिलास और कप ले आइए."

"जरा आप अपना कुकर देंगे?"

"शौक से लीजिए."

"आप तो बहुत सारा अचार लाई हैं, बहनजी."

"आप भी चख कर देखिए न. लीजिए."

"अरे, ये इतने सारे अंगूरअमरूद किस लिए खरीद लाए?"

"सब लोग इकट्ठे खाएंगे."

"हां, यह ठीक है. सब तो एक ही हैं न."

"कितना अच्छा लग रहा है. सारी बस के लोग ऐसे लग रहे हैं, जैसे एक ही परिवार के सदस्य हों."

"इस में दो मत नहीं."

"अजी साहब, सच पूछो तो पूरा भारत ही एक परिवार है. यह तो हम ही लोग हैं, जो इस के टुकड़े करने पर तुले हुए हैं."

"जिस तरह इस बस में सब मिलजुल कर खातेपीते तीन दिन से हम लोग चल रहे हैं और अभी 15 दिन और इसी तरह चलना है. अगर हम और आप चाहें तो ऐसे ही अपने देश में शांति से रह सकते हैं."

"क्यों नहीं, आखिर हम और आप ही तो देश को अखंड बनाते हैं." और इस तरह जरा सी मुसीबत आते देख कर लोग तमाम भेदभाव भुला कर गिरगिट सा रंग बदल रहे थे.

सिवा तुम्हारे

क्या करें जब हों कोई दांव नहीं
रास्ता कोई नहीं ठांव नहीं,
जिंदगी की खड़ी दुपहरी में
सिवा तुम्हारे, कोई छांव नहीं.
—दिनेशचंद्र 'नीरस'

हैदराबाद पहुंचतेपहुंचते लोगों की निगाहें फिर बदलने लगीं.

"अरे, भई ठाकुर, गाड़ी क्यों नहीं चला रहे हो?" पीछे से आवाज आई.

"अभी पंच प्यारे नहीं आए हैं." ड्राइवर ने पीछे मुड़ कर जवाब दिया.

"लगता है इन सरदारों ने बस खरीद ली है, एल.टी.सी. क्या ली है?" आगे से कोई सवारी खीजते हुए भुनभुनाई.

"अब और कितना इंतजार करोगे? भूख के मारे हमारा तो दम निकला जा रहा है." एक बुढ़िया ने ड्राइवर पर दबाव डालने के उद्देश्य से कहा.

"लोग यह नहीं सोचते कि एक घंटे का समय दिया है तो अब दो घंटे में तो आ जाएं वापस," ड्राइवर बोला.

तभी पांचों सरदार हंसतेबतियाते बस की तरफ आते दिखे. बस में चढ़ते ही सब उन के पीछे पड़ गए.

"आप ने अपनेआप को क्या समझ रखा है?"

"घड़ी देखिए क्या समय हो रहा है?"

"इतने लोग वापस आ गए और आप? वहां बिस्तर बिछे थे, जो इतनी देर आराम कर के आए हैं?"

"देखिए, बेकार बहस करने से कोई फायदा नहीं है. जो जगह चार घंटे में देखने की है वह दो घंटे में कैसे देखी जा सकती है?" एक ने नाराज होते हुए सफाई दी.

"इतने और लोग भी तो एक घंटे में देख कर आए हैं."

"ठीक है, अब देखते हैं कौन घूमता है? ड्राइवर, बस आगे नहीं जाएगी?" दूसरे सरदार ने एलाने जंग कर दिया.

"कैसे नहीं जाएगी?"

"हम अपना सामान यहीं उतार लेंगे."

"उतार लो सामान, कौन रोक रहा है?"

सभी आपस में लड़नेमरने को तैयार थे.

बांबे मैडम ने बड़ी मुशकिल से सब को समझाया, "हम सब एक ही बस में इतने दिनों से सफर कर रहे हैं. और जिस तरह एक परिवार के लोग साथ रहते हैं, उसी तरह हम लोग भी साथ खातेपीते और साथ घूमतेफिरते हैं. क्या जरूरी है कि छोटीछोटी बातों को ले कर बस में बैठे सभी लोगों को परेशानी में डाला जाए और जराजरा सी बात पर बस को रोक दें. लोगों को भूखाप्यासा परेशान करें."

मैडम के समझाने का कई लोगों पर अच्छा असर हुआ और बस आगे चल पड़ी.

जैसे ही बस किले पर पहुंची कि ललिता को अचानक याद आया उन्होंने अपना कीमती कैमरा सालारजंग म्यूजियम में जमा कराया था क्योंकि वहां अंदर चित्र खींचना मना था. और वापस होते समय वह जल्दी में कैमरा लेना भूल गई थीं.

"हाय, मेरा कैमरा?" उन्होंने अजीत से कहा.

"हम लोग 12-13 किलोमीटर आगे आ गए हैं. गोलकुंडा के किले पर पहुंच कर, मैं वहां से टैक्सी कर के कैमरा ले आऊंगा. तब तक सब लोग गोलकुंडा का किला देखेंगे. अभी बस को वापस सालारजंग म्यूजियम ले जाने से फिर हायतोबा मचेगी. इसलिए चुप

नया ओनिडा.
इसे छू पाये तो बस एक ईर्षा भरी नज़र!

ईप्सा में जब भी ईर्षा के रंग घुल जाये, और हाथ अनजाने में ही पत्थर उठा ले, तब जानिये, फिर एक नया ओनिडा तशरीफ़ लाया होगा! बेशक़! नया ओनिडा हाज़िर है अपने अछूते 'क्युब लुक' के साथ। अत्याधुनिक कारीगरी का जादू एक पूरी तरह से 'मोल्डेड' कैबिनेट और अनोखे काले ट्यूब में समाये हुये – मनमोहक रूप-रंग और आने वाले कल की अदा लिये – आ बसा है नया ओनिडा आप के इशारों के इन्तज़ार में! लेकिन, पहले इसके कि आप इसमें बेखबर खो जायें, भूलिये मत कि ईर्षा मंडराती है आसपास। याद रखिये वो सावधान-वाणी: अपने पड़ोसियोंसे नाता ज़रूर जोड़िये, पर अपने ओनिडा को अकेला मत छोड़िये।

ओनिडा. पड़ोसियों की जले जान, आपकी बढ़े शान.

Avenues 0250
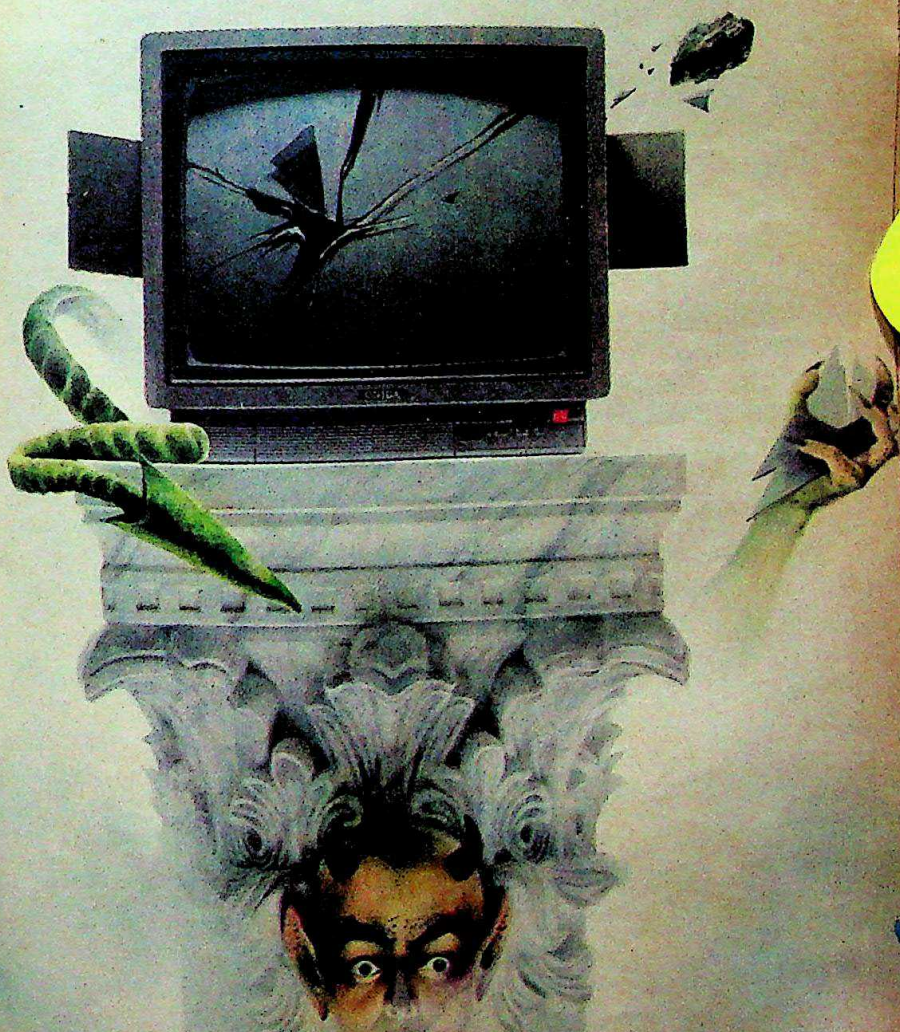
दो वर्ग

समाज में दो बड़े वर्ग हैं—एक तो वे जिन के पास भूख कम, खाना ज्यादा है. और दूसरे वे जिन के पास खाना कम भूख ज्यादा है.

—निकोलस चेफोर्ड

रहना ही बेहतर है," अजीत साहब बोले.

"टैक्सी में कितना किराया लगेगा?" ललिता घबराई.

"चाहे जितना भी लगे, लेकिन बस वापस नहीं जा सकती. बेकार में एक तूफान खड़ा करना हो तो तुम कैमरा लाने की बात कहो ड्राइवर से. वरना यही ठीक है कि मैं किला नहीं देखूंगा और कैमरा ले आऊंगा."

अजीत साहब ने बीवी को समझाया तो वह चुप हुई.

चैक पोस्ट पर गाड़ी अटक गई. प्रानुमतिपत्र (परमिट) का चक्कर था. पहला ड्राइवर उस जगह पहले भी आ चुका था. इसलिए बात उसे करनी थी. लेकिन उसे आर.टी.ओ. के नाम से बुखार आता था. इसलिए दूसरे ड्राइवर को 800 रुपए टैक्स भरना पड़ा. तब कहीं रात के 3 बजे जा कर गाड़ी गोवा की राजधानी पणजी पहुंची.

सुनसान अंधेरी रात, कहीं कोई रास्ता बताने वाला तो दूर चिड़िया का बच्चा भी नहीं कि उस से किसी धर्मशाला या होटल का पता पूछ लिया जाए. भूख के मारे बस के लोग बेहाल थे. जो नाश्ता बचा था, वह एकदूसरे को बांटने के चक्कर में खत्म हो चुका था क्योंकि जिन के पास छोटे बच्चे थे और खाने को कुछ नहीं था, उन्हें मजबूरन किसी के बिस्कुट, किसी के फल लेने पड़ गए थे. इतना लंबा सफर और कहीं रास्ते में एक झोंपड़ी भी नहीं कि चायनाश्ता ही मिल पाता, ऐसी भुखमरी और अकाल जैसे माहौल में किसी ने सड़क के छोर पर एक ठेला देखा तो वह चिल्लाया, "ड्राइवर, गाड़ी उधर रोकिए, वहां कुछ खानेपीने का सामान लगता है."

ड्राइवर के गाड़ी रोकतेरोकते लोगों ने बस में से छलांगें लगाई थीं और ठेले पर पहुंच गए थे. वहां पावरोटी और भाजी के सिवा कुछ नहीं था. लेकिन भूख में वही पावरोटी पुलाव से ज्यादा स्वादिष्ट लग रही थी—तीन रुपए प्लेट में भी. जिन लोगों का पेट भर चुका था, उन्हें अब सोने की जल्दी लग रही थी. जो लोग खाने से रह गए थे, वे अब बरसों से भूखों की तरह टूटे पड़ रहे थे. और इसी लिए देर हो रही थी. ड्राइवर ने गाड़ी चालू की ही थी कि पीछे से कोई चीख पड़ा, "अभी रुको."

"क्या बात हो गई? खाते ही रहोगे? आराम करना है कि नहीं?"

"ठेले वाले की प्लेटें देनी हैं." सरदारजी का लड़का बोला.

"तो जल्दी से क्यों नहीं दे देते."

"बच्चे अभी खा रहे हैं, कैसे वापस कर दें?"

"क्या सारी रात गाड़ी यहीं खड़ी रहेगी?"

"हां, गाड़ी यहीं खड़ी रहेगी."

"यह कौन सी तमीज है," सारे मुसाफिर दुखी हो गए थे.

"देखते हैं, एक घंटे से पहले बस यहां से हिल तो जाए," लड़के ने कहा.

"ऐसे बोल रहा है, जैसे इसी के बाप की गाड़ी है."

"गाड़ी आगे बढ़ी तो मैं एकएक का खून कर दूंगा," लड़का चीखने लगा तो ड्राइवर ने हाथ जोड़ कर माफी मांगी. दोनों गुटों को बहुत समझाया. बड़ी मुशकिल से फैसला हुआ. आधे घंटे के बाद गाड़ी आगे बढ़ी.

बड़ी मुशकिलों से एक होटल मिला. जहां इतने सारे यात्रियों के सोने का इंतजाम हो पाता. 80 रुपए में दो बिस्तर वाले से कम कोई कमरा था ही नहीं. सिर्फ तीन घंटे की रात बाकी थी, लेकिन मजबूरी.

मैसूर दर्शन का कार्यक्रम सुबह 8.30 बजे से तय था. लोगों को उठतेउठते ही 8 बज गए थे. होटल में खाने का पेशगी दे कर, नाश्ता कर के लोग बस में बैठ गए. तभी कुछ लोगों को उलटियां आनी शुरू हो गईं.

फिर झगड़ा हुआ होटल वाले से. अचानक सरदारजी बेहोश हो गए. उन का पूरा शरीर पसीने से तर हो गया था. जल्दीजल्दी बस के सारे यात्री उतर गए और सरदारजी को ले कर कुछ लोग हस्पताल पहुंचे. उन का परिवार बहुत घबरा गया था. घर से इतनी दूर आ कर तबीयत खराब हो गई थी. वह भी ऐसे माहौल में. आठ घंटे बाद सरदारजी की तबीयत कुछ ठीक हुई. डाक्टर ने कहा, "इन्हें उच्च रक्तचाप है. गुस्सा न हों और कोई खास बात नहीं."

डाक्टर ने दवाएं और परहेज समझा दिया. पूरे दिन हस्पताल में गाड़ी रुकी रही. कुछ लोग तो अपने खर्चे पर मैसूर का वृंदावन गार्डन और महाराजा महल देख आए थे. बाकी लोग सिल्क एंपोरियम में चले गए थे.

ललिता को होटल के खाने से गले में खराश हो गई तो उन्होंने भी प्राइवेट डाक्टर को अपना गला दिखा दिया. डाक्टर ने 80 रुपए की दवाएं लिख दीं और 30 रुपए परामर्श की फीस ले ली थी.

80 रुपए की दवाएं ले कर जब अजीत साहब लौटे तो पूरी बस में हंसी की लहर दौड़ गई. लोग सोच रहे थे कि अच्छा हुआ जो हम नहीं फंसे और पुदीनहरा या अमृतधारा खा कर ही 80 रुपए बचा गए.

गाड़ी समुद्र पार करने वाली थी कि तूफान आ गया और मुशकिल से फिर वापस रामेश्वरम गाड़ी को लाया गया. कोई सुरक्षित स्थान नजर नहीं आ रहा था. अतः सब लोगों ने गाड़ी में ही रहना उचित समझा.

मौत सिर पर मंडरा रही थी. लग रहा था कि पूरा रामेश्वरम ही समुद्र में डूब जाएगा. जिस के पास जो कुछ सामान था, उस को मिला कर सब का इकट्ठा खाना बनाया गया, ताकि कोई भूखा न मरे.

जिन लोगों ने बंगलौर म्यूजियम देखने में देर होने पर एतराज किया था. सालारजंग में लड़ाईझगड़ा किया था, फिर गोवा में सिर्फ एक प्लेट के लिए मरनेमारने को तैयार हुए थे. जराजरा सी बात पर इतने दिन से लड़ते रहने के बाद एकदूसरे के दुश्मन, मजबूरी में सफर करते यात्री अब मौत को करीब पा कर एक हो गए थे. और एकदूसरे की सहायता करने को तत्पर थे.

बिना शर्त युद्धविराम की घोषणा हो गई थी.

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

कविताओं और स्तंभों के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा न भेजें. छः सप्ताह तक यदि कोई सूचना प्राप्त नहीं होती तो कविताओं और स्तंभों को अस्वीकृत समझ लें. अस्वीकृत की गई कविताएं और स्तंभ लौटाए नहीं जाएंगे. अतः उन की एकएक प्रति अपने पास अवश्य रखें. इस संबंध में कोई पत्र-व्यवहार न करें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है. —संपादक

प्यासी तस्वीर
मेहनत से तस्वीर बनाई
लिम्का पी कर प्यास बुझाई.
जब आप किसी 'शाहकार' की रचना करते-करते या फिर उस शाहकार के लिए 'मॉडल' करते-करते थक कर प्यास से बेहाल हो जायें तब आयसोटॉनिक साल्ट वाले किटाणुरहित लिम्का की बोतल उठायें और अपनी प्यास बुझायें.
Limca®
नींबू जल-सा मज़ेदार पेय
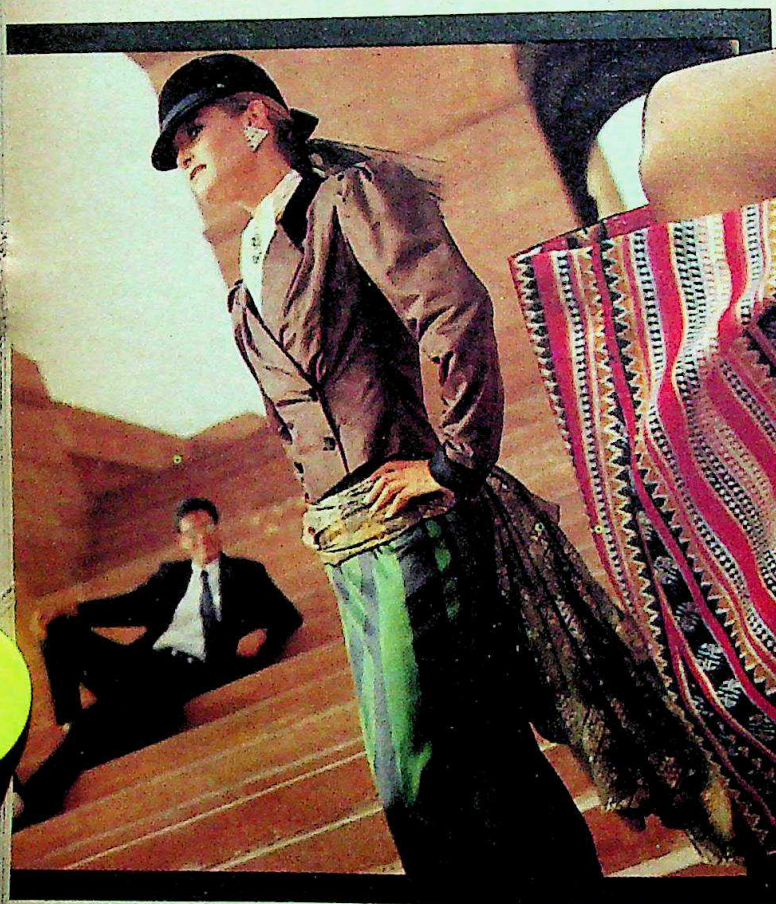
दुस्साहस एक अबला का

कहानी • मंजु सिन्हा

उस दिन बड़ी गरमी थी. लग रहा था वातावरण किसी भट्ठी के इर्दगिर्द सिमट आया हो. जुलाई का महीना था. दाईजी के दमा भी पूरे जोरों पर था. मैं उन के पास बैठी उन के पैरों की मालिश कर रही थी. बारबार पसीने से चेहरा भीग जाता था, मैं उसे आंचल उठा कर पोंछ लेती थी. मन ही मन देहात के लोगों के जीवन एवं उन की परेशानियों को मापतौल रही थी. न बिजली, न पंखा. गरमी में ताड़ के पंखों से काम चला लो, जाड़े में अलाव जला लो.

उन दिनों फसलों के कट जाने के बाद जोती हुई खाली जमीन की मिट्टी जरा सी हवा लगते ही गरम गैस की तरह बदन को छूती थी. बारबार जी चाहता, 'उफ, रिमझिम वर्षा हो जाती, ताकि तन भी शीतल हो जाता और मन भी.''

तभी एक जीप के रुकने की आवाज
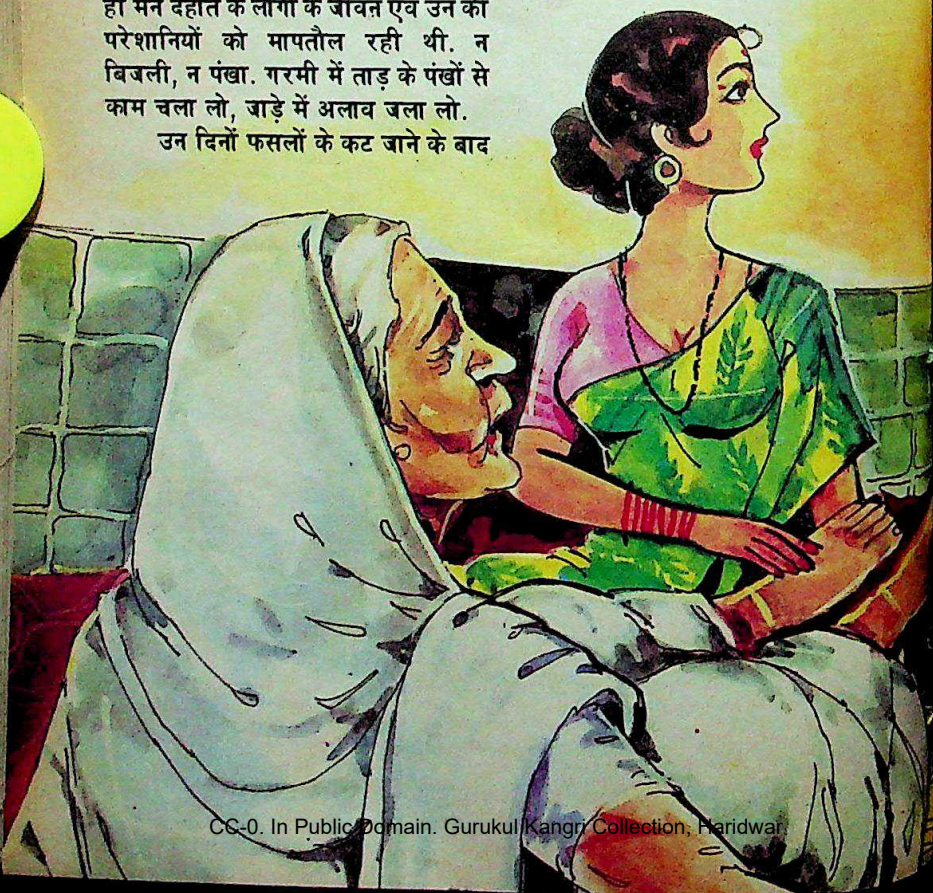
चुस्त आधुनिक और खूबसूरत युवक ने कहा, ''शंकर भैया घर पर हैं क्या?''

मैं ने दाईजी को जगाया, ''दाईजी, कोई आप के पोते को खोज रहा है.''

दाईजी ने कहा, ''कौन है, बेटा?''

दाईजी लगभग चिल्लाते हुए बोलीं, ''[illegible] आ गया, देवप्रकाश.''

रसोईघर में जा कर मैं ने जल्दीजल्दी लस्सी तैयार की और आगंतुक के लिए, पीतल के भगौने से पेड़े प्लेट में ले बाहर आई. दाईजी अपनी बूढ़ी आंखों में आंसू भर कर युवक के बालों को कांपती उंगलियों से सहला रही थीं. मुझे देख कर बोली, ''शंकर की दुलहन है यह.''

युवक ने बड़े सलीके से हाथ जोड़े और कहा, ''मैं आप का हिस्सेदार देवर हूं. वाराणसी में रहता हूं. गत वर्ष भारतीय पुलिस सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण की है. गुजरात कैडर मिला है. शादी का निमंत्रण देने आया हूं. मां ने खास तौर पर दादीजी तथा अन्य सभी को वाराणसी बुलवाया है. 'तिलक' के दो रोज पूर्व मैं आप सब को लेने आ जाऊंगा. दादीजी तैयार रहना.''

''शंकर भैया घर पर हैं क्या?'' आंगन के दरवाजे पर एक खूबसूरत युवक ने आ कर पूछा.

देवर ने अपनी विधवा भाभी कनिया से बलात्कार कर के उसे गर्भवती बना दिया. बाद में खानदान की इज्जत बचाने के लिए देवर व जेठ जच्चा बच्चा दोनों को ही खत्म कर देने पर तुल गए. लेकिन कनिया के दुस्साहस ने सब को बचा लिया.
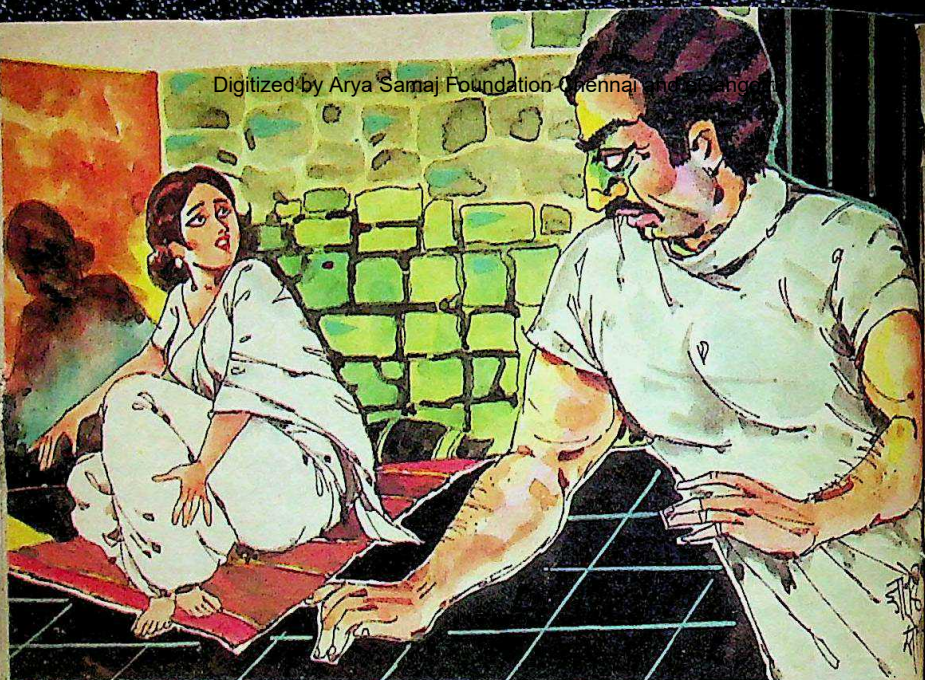
"आधी रात में, लल्लाजी, आप को मेरे कमरे में नहीं आना चाहिए," कांपते हुए कनिया ने अपने देवर से कहा.

मैं ने कभी देवप्रकाश की चर्चा नहीं सुनी थी. हां, इतना अवश्य सुना था कि उस गांव का कोई स्वजातीय लड़का पुलिस अधीक्षक हो गया है. जब भी जानना चाहती, मांजी टाल जातीं. पर उस दिन मांजी, बाबूजी और लल्लाजी गंगा दशहरा मनाने कालीघाट (कलकत्ता) गए थे. मुझे छात्रावास से बुला कर दाईजी की सेवा के लिए उन्होंने नियुक्त कर दिया था. वह युवक देवप्रकाश खुद ब खुद आ धमका था. देवप्रकाश ने कहा, "आप क्या सोच रही हैं, भाभीजी?"

मैं ने हड़बड़ा कर कहा, "कुछ नहीं, आज बड़ी गरमी है न. आप ने पेड़े तो प्लेट में ही छोड़ दिए हैं."

देवप्रकाश ने हंस कर कहा, "शुद्ध दूध के बने हैं पेड़े. कहीं मेरे हाजमे को बिगाड़ न दे."

तब दाईजी स्नेहपूर्ण लहजे में बोल पड़ीं, "खा ले रे, देवु. तू ने तो गांव को भुला ही दिया."

"नहीं दादीजी, मैं ने गांव को भुलाया होता तो आज यों न आता."

इस के बाद उस ने हम दोनों से विदा ली और जीप चला कर, धूल उड़ाता कच्ची सड़क पर बढ़ गया.

वापस आ कर मैं ने दाईजी से पूछा, "दाईजी, यह कौन थे, जो अपने को हमारा हिस्सेदार बता गए हैं. मांजी ने किसी पुलिस अधीक्षक की चर्चा एक बार की थी. पर फिर चुप लगा गईं. "आप बताइए न?"

मैं ने बारबार आग्रह किया, क्योंकि शादी के छः माह बीतने को आए थे और अब तक मैं उस परिवार के अन्य सदस्यों के विषय में बहुत कम जानती थी. मुझे इस का कोई मलाल नहीं था. पर देवप्रकाश के पीछे जरूर कोई विशेष कहानी लगती थी. इसलिए मैं ने अपनी ददिया सास को जोर दे कर कुछ बताने पर विवश कर दिया. उन्होंने उस तपती दोपहरी को अपनी खांसतीहांफती

टचवुड आपके लकड़ी के सुन्दर फ़र्नीचर का इस ख़ूबी से बचाव करे जो पालिश के बस में नहीं.

पेश है टचवुड पॉलीयूरेथेन क्लियर वुड फ़िनिश. इससे लकड़ी के फ़र्नीचर पर एक मज़बूत परत सी जम जाती है—एक ऐसी परत जो पॉलिश के मुक़ाबले कई गुना बेहतर भी है और जिस पर न खरोंचें लगें, न दाग़–धब्बे पड़ें.

पॉलिश में ये मज़बूती नहीं

माना, पॉलिश लगाते ही लकड़ी का फ़र्नीचर सुन्दर दिखने लगता है, लेकिन चाय, सब्ज़ी का शोरबा जैसा कुछ गिरते ही उस पर धब्बा सा पड़ जाता है, जो दुबारा पॉलिश लगाने तक बना रहता है.

क्योंकि पॉलिश सिर्फ़ एक पतली कमज़ोर सी तह ही जमा सकती है: ऐसी तह जो दाग़-धब्बों और खरोंचों से बचाव नहीं कर पाती.

इसलिए आपका फ़र्नीचर कुछ ही महीनों में धब्बों और खरोंचों की नुमाइश बन जाता है.

और फिर वो भद्दा सा दिखने लगता है.

टचवुड—पॉलीयूरेथेन की मज़बूती

टचवुड में है पॉलीयूरेथेन—बहुत ही मज़बूत प्लास्टिक. इसकी एक गाढ़ी पारदर्शी परत बन जाती है, जो लकड़ी पर मज़बूती से जमी रहती है.

ये परत गर्म और ठंडी चीज़ों और खरोंचों का एक लम्बे अर्से तक मुक़ाबला कर सकती है. इतना ही नहीं, इस परत के ज़रिये लकड़ी की स्वाभाविक चमक बरसों एक सी बनी रहती है, जबकि इतने वक़्त में मामूली पॉलिश का नामोनिशान तक नहीं रह पाता.

ब्रश से लगाइए—ये सूखकर एक मज़बूत परत बन जाता है.

टचवुड लिक्विड है. इसलिए ब्रश से इसे लगाया जा सकता है. और ये काम कोई भी पेन्टर आसानी से कर सकता है. याद रखिए, दुबारा जब भी आप अपने घर में रंग कराएँ, फ़र्नीचर पर टचवुड ज़रूर आज़माएँ.

चूँकि ये मज़बूत गाढ़ी परत में बदल जाता है, इसलिए मामूली पॉलिश के मुक़ाबले कुछ देरी से सूखता है, फिर भी इसके सूखने में, खिड़की और दरवाज़ों पर किए पेन्ट से ज़्यादा वक़्त नहीं लगता.

और फिर टचवुड की सुरक्षा बारीक से बारीक नक्क़ाशी में फैल जाती है—हर छुपे कोने तक पहुँच जाती है.

वैसे टचवुड की क़ीमत मामूली पॉलिश से कुछ ज़्यादा ज़रूर है, लेकिन आपके लकड़ी के सुन्दर फ़र्नीचर को ये जितना सुरक्षित रखता है उससे क़ीमत वसूल हो जाती है. पॉलिश इतने लम्बे अर्से तक बचाव नहीं कर सकती.

ग्लॉसी (चमकीली) या मैट (बिना चमकवाली) फ़िनिश

टचवुड दो तरह के फ़िनिश में मिलता है, ग्लॉसी और मैट, जो मामूली पॉलिश में नहीं मिलता और फिर आप उसमें अपनी पसंद के रंग मिलाकर लकड़ी को तीन तरह के विशेष रूप दे सकते हैं.

जितना चाहें—आसानी से ले आइए

एशियन पेन्ट्स–विक्रेता की किसी भी दूकान से आप टचवुड ले सकते हैं: बस दूकान में आइए और ले जाइए.

टचवुड—बस एक बार के इस्तेमाल से ही आप जान जाएंगे कि ये आपके फ़र्नीचर की सुन्दरता किस ख़ूबी से बचाए रखता है.

TOUCH WOOD

एक बार लगे—फ़र्नीचर बरसों नया रहे.

एशियन पेन्ट्स

आवाज में जो कथा सुनाई, उस का मतलब यों था.

देवप्रकाश के दादा एवं मेरे ददिया ससुर सगे भाई थे. जमींदारी के काम बढ़ जाने के कारण एक मकान वाराणसी में भी बनवा लिया गया था, ताकि शहर में बारबार आनेजाने में कोई परेशानी न हो.

एक दिन देर रात गए दोनों भाई शहर से लौट रहे थे कि उलटी दिशा से आने वाले किसी वाहन की चपेट में उन की जीप आ गई. दोनों भाई वहीं चल बसे. उस के बाद जमींदारी की देखरेख मेरे ससुर और देव के पिताजी करने लगे. पर देव की मां अपनी कोख हरी न होने के कारण हमेशा उदासउदास व मुरझाई सी रहती थीं.

कुछ दिनों बाद उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया और एक दिन जब उन्हें लगा कि अब वह नहीं बचेंगी तो उन्होंने अपनी जेठानी (मेरी मांजी) एवं पति को अपने कमरे में बुलाया और बोलीं, "दीदी, मैं तो दुनिया से जा रही हूं, पर आप मुझे वचन दीजिए कि किसी गरीब परिवार की सुशील बहू ला कर इन का घर फिर बसा देंगी. उस के बच्चे होंगे. वंश आगे चलेगा. बोलिए, दीदी, करेंगी न ऐसा."

करती हो? तुम खुद अच्छी हो जाओगी और मेरे बच्चे की मां बनोगी."

पर जेठानी ने फीकी हंसी हंस कर कहा, "मैं ने बनारस में बड़े डाक्टर को दिखाया था. उस ने कहा था कि मैं मां नहीं बन सकती. मुझ में कमी है. आप दूसरी शादी अवश्य कर लेना, यह मेरी प्रार्थना है." और इतना कहतेकहते जेठनी ने दम तोड़ दिया.

परिवार की बुजुर्ग के नाते दाईजी ने ही अपने विधुर भानजे की शादी एक कुलीन, पर निर्धन ब्राह्मण कन्या से करा दी थी. वह इतनी भोली व छुईमुई सी थी कि आते ही दाईजी की बेटी बन गई और गृहस्वामिनी के हृदय पर राज्य करने लगी. पति एक तो उम्र में 18 वर्ष बड़े थे, फिर जमींदारी के रोब से अछूते भी नहीं थे. उन की घनी बड़ीबड़ी मूंछें देख कर कनिया (देव की मां को लोग इसी नाम से बुलाते थे) हिरनी की तरह डर कर दाईजी की देह से सट जाती थी. इस स्थिति में पतिपत्नी में जो मिलन होता है, उस में समर्पण और प्रेम की जगह केवल कर्तव्यबोध होता है. इस मिलन से कनिया खुद को बेहद थकीथकी और कमजोर महसूस करती थी तथा अकसर अपने मायके जाने की जिद करती रहती थी.

मांजी ने अपने देवर से कह कर कनिया को थोड़े दिनों के लिए मायके भेज दिया. मांजी दो बेटियों के जन्म के बाद तीसरी बार मां बनने वाली थीं. 'शायद जगह बदलने से पुत्ररत्न की प्राप्ति हो जाए,' यह सोच कर वह भी इस बार अपने मायके चली गईं.

इधर होनी ने अपने फन फैलाए और छोटे सरकार (कनिया के पति) जब एक शाम शिकार से लौट रहे थे कि उन्हें किसी जहरीले सांप ने डस लिया.

दो दिनों तक इलाके भर के ओझा, तांत्रिक सांप के विष को उतारने का ढोंग करते रहे. एक ने तो उन की कंचनकाया को मिट्टी के गड्ढे में गरदन तक गाड़ दिया था,

ताकि विष उतर जाए. पर व्यर्थ गया. आखिरकार मेरे ससुर ने कलेजे पर पत्थर रख कर अपने चचेरे भाई का अंतिम संस्कार कर दिया.

इस प्रकार 16 वर्षीया कनिया विधवा हो गई और रूढिवादिता के कारण सवा साल तक पति के कमरे में केवल चटाई बिछा कर आंसुओं से आंचल भिगोभिगो कर रातें काटने लगी. नातेरिश्ते की जो भी औरतें आतीं उसे उपदेश दे जातीं, "यह जन्म तो बिगड़ गया, अगला बनाने की खातिर इतनी तपस्या तो करनी ही पड़ेगी, कनिया."

बेचारी कनिया सफेद, बिना किनारे की धोती पहनती, निरामिष खाती, कंबल ओढ़तीबिछाती और दिनरात अपनी विडंबना पर सिसकती रहती.

एक रात कमरे में उन के सगे देवर घुस आए. वह अपने समय के नामी गुंडे थे. और बारहवीं कक्षा में उस साल फेल हो गए थे. भाई की मृत्यु के बाद से गांव में ही रह कर अपने को साधु प्रमाणित करने की भरसक चेष्टा कर रहे थे.

कनिया चौंक कर खड़ी हुई और कांपते हुए बोली, "आधी रात में लल्लाजी, आप को हमारे कमरे में नहीं आना चाहिए था."

पर उन पर तो काम सवार था. उन्होंने अपने गमछे से कनिया का मुंह कस कर बंद कर दिया और अपनी हवस मिटाने लगे. कनिया तड़पती रही, गिड़गिड़ाती रही, पर शैतान कहां मानने वाला था.

अब कनिया को महसूस हुआ था कि पति के मन में कनिया के लिए कितनी कोमल भावनाएं थीं. वह एक बार दर्द से तड़पती तो उस के जमींदार पति उन चांद से मुखड़े को हथेली में ले कर कहते, "फिर कभी...अभी तुम बच्ची हो, आराम करो."

और उन्हें रजाई से ढक कर सुला देते. पर उस दिन कनिया के निढाल पड़े शरीर को जाने कितनी बार उस दुष्ट देवर ने अपनी वासना का शिकार बनाया, कनिया को खुद पता नहीं चला था. वह तो मानो मुरदा थी और उन के शव को कब्र में डाल दिया गया था. अब चाहे पांच मन मिट्टी पड़े चाहे 50 मन, मुरदा तो मुरदा ही होता है न.

उन्हें लगता था कि उन के पति का पलंग, उन की पगड़ी, उन की बंदूक—सब जैसे उन्हें चिढ़ा रहे हों, कनिया, सोचो. तुम जिस की पत्नी थीं, उस से नाहक डरती रहीं. उस के बच्चे की मां नहीं बन सकीं. उसे पूर्ण समर्पण कभी नहीं किया. वह कितना संयमी, कितना धैर्यवान था. उस ने तुम्हें बलात पाने की चेष्टा कभी नहीं की...'

जाने कब वह वहशी कमरे से बाहर गया.

सुबह कनिया को उठने में देरी हुई जान दाईजी उन के कमरे में आईं और उन की दशा देख कर पेड़ की तरह कमरे में गिर पड़ीं. फिर उस घर, उस खानदान की इज्जत का खयाल कर के और यह सोच कर कि बात नौकरदासियों तक नहीं पहुंच जाए, वह साहस कर के उठीं. कनिया को उठाया, मुंह से बंधा गमछा हटाया और धीरे से बोलीं, "हमारा बेटा आया था?"

कनिया सिसक कर बोलीं, "बड़ी अम्मां, हमें मर जाने दो. लल्लू भैया ने हमें कहीं का न रखा..."

दाईजी हिमालय की तरह दृढ़, अडिग हो कर उठीं और सीने से चिपकाते हुए बोलीं, "कनिया, तेरा क्या दोष है, जो तू मरे. गंगा में पेशाब कर देने से गंगा अपवित्र नहीं होती. लल्लू पापी को आने दे."

लेकिन लल्लू ऐसे गायब हुए कि डेढ़ माह तक गायब रहे. कनिया को जरा भी

अहिंसक

वही मनुष्य सच्चा लोकतंत्रवादी है, जो शुद्ध अहिंसक साधनों द्वारा अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करता है. वह अपने देश की तथा अंत में सारी मानव जाति की स्वतंत्रता की भी अहिंसक साधनों से रक्षा करता है. —महात्मा गांधी

एकांत मिलता तो वह प्राणांत कर देती, पर दाईजी ने अपने जेठजेठानी की इकलौती बहू को शुरू से ही अमानत की तरह रखा था.

उन्हें खुद पर क्रोध आता, क्यों उन्होंने रिश्तेदारों और कुल पुरोहित के कहने पर कनिया को 'काशी कुशि' सेवन की इजाजत दी, न बेचारी उस कमरे में अकेली रहती, न वह दुर्गत होती. फिर किसी दुःस्वप्न की तरह उस विचार को मन से निकाल देतीं और सोचतीं, 'लल्लू ने बहू पर कीचड़ उछाल कर ठीक नहीं किया. पर जो भी होगा, ठीक ही होगा अब.'

पर होनी तो अपनी लीला दिखाने पर तुली थी.

सुबहसुबह कनिया बिस्तर से उठते ही उलटी करने लगी. दाईजी तो सन्न रह गईं, 'हैं, अब क्या करूं. लल्लू ने तो इस खानदान की नाक कटवा दी.'

फिर यह खुशफहमी मन में आ बैठी, 'संभव है पित्त प्रकोप से ऐसा होता हो. बेचारी सप्ताह में दोतीन दिन तो व्रतउपवास ही रखती है. चल कर बनारस इसे जनानी डाक्टर को दिखा दूं, पित्त होगा तो ठीक हो जाएगा.'

दाईजी ने अपने बेटे तक को इस हादसे की खबर नहीं दी थी. पर बनारस ले जाने के लिए तो उस से सवारी मांगनी ही थी. दासी को कहा, "जा के बड़े सरकार को बुला ला. कहना कि जरूरी काम है."

सूचना मिलते ही उन का बेटा हाजिर हो गया और 35-36 वर्ष की उम्र में पांच वर्षीय बच्चे की तरह गोद से सट कर बोले, "क्या बात है, अम्मां?"

दाईजी ने बनारस जाने की बात कुछ इस तरह कही कि उन का संवेदनशील मन आशंकित हो गया. कहीं कुछ और बात तो नहीं. "अम्मां, सचसच बताओ. असल बात क्या है?"

दाईजी फूटफूट कर रो पड़ीं और सारी हकीकत कह सुनाई.

जब जीप बनारस पहुंची तो अंधेरा हो

(शेष पृष्ठ 189 पर)

पाठकों की समस्याएं

मैं 31 वर्षीय पुरुष हूं. पिछले वर्ष मेरा विवाह मेरी बिना पसंद की लड़की से हुआ था. लड़की 30 वर्ष की है, पर पिताजी को लड़की वालों ने उस की उम्र 23-24 बताई थी. अब पिताजी का स्वर्गवास हो चुका है. लड़की यानी मेरी पत्नी मायके चली गई है. उस के घरवाले मुझे दहेज या अन्य किसी तथाकथित मुकदमे में फंसाने की धमकी दे रहे हैं. पिताजी की बीमारी के कारण मैं ने उस से शादी की थी. अब उस से दुखी हूं, क्या करूं?

लड़की के घरवालों ने यद्यपि उम्र की बात झूठ बोल कर धोखा किया है. पर अब यदि आप यह महसूस करते हैं कि लड़कियों के अभिभावक कई बार लड़की की उम्र बढ़ जाने पर झूठ का सहारा लेते हैं, तब उस लड़की को क्षमा कर सकते हैं. हो सकता है, असलियत मालूम होने पर आप उस से अच्छा सलूक नहीं कर रहे हों, तभी वह मायके चली गई. लड़की 30 की भी है तो भी आप से छोटी ही है. उसे अपने पास बुला कर समस्या सुलझाइए. याद रखिए, तलाक की प्रक्रिया बहुत कठिन है और क्या गारंटी कि दूसरी पत्नी ठीक ही होगी.

हमारे किराएदार का भाई है, जिसे मैं ने राखी बांधी है. लेकिन वह भाईबहन का रिश्ता स्वीकार नहीं कर रहा और कहता है कि अगर मैं ने उस का प्रेम नहीं स्वीकारा तो वह आत्महत्या कर लेगा. क्या करूं क्या वह सचमुच ऐसा कदम उठा लेगा?"

वह कोई कदम नहीं उठाएगा. उस की लोलुप दृष्टि आप को शिकार बनाना चाहती है. आप उस से अकेले में मिलना बंद कर दीजिए और राखी बांध कर भाई बनाने का सिलसिला भी बंद कर दीजिए. ये तथाकथित भाई अकसर बहन के रिश्ते को निभा नहीं पाते. इन से बचना श्रेयस्कर है.

मेरी उम्र 18 वर्ष है. दो वर्ष पूर्व विवाह हुआ. गौना कर के पत्नी भी आ गई. पत्नी मुझ से दो साल बड़ी है, पर अब हमारे एक पुत्र है. समस्या यह है कि मेरी अभी पढ़ाई चल रही है, पर पत्नी मेरे साथ सो कर सारी पढ़ाई चौपट करवा रही है. क्या करूं?

पत्नी और पढ़ाई दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं, पत्नी के साथ उचित समय बिता कर भी पढ़ाई की जा सकती है. पर सर्वोत्तम यह है कि आप दिन में कुछ समय पुस्तकालय में जा कर पढ़ाई करें, रात को कुछ समय पढ़ कर आप गृहस्थ जीवन निभा सकते हैं. जब आप पढ़ाई करें, उस समय पत्नी को कोई पत्रिका पढ़ने को दे सकते हैं. पढ़ाई का महत्त्व उसे समझाइए. फिर सब ठीक हो जाएगा.

—कंचन

नाक

कहानी • अश्विनीकुमार भटनागर

जहां तक मैं जानता हूं, न तो मेरे पिताजी की नाक टेढ़ी थी और न ही मेरी मां की. ऊपर की पीढ़ियों का मुझे कोई स्मरण नहीं. उन के कोई चित्र भी उपलब्ध नहीं हैं, जिन से कोई निष्कर्ष निकाला जा सके. बात यह थी कि मेरी नाक कुछ अधिक लंबी है और लंबी ही नहीं आगे से एक प्रश्न-चिह्न की तरह झुकी हुई भी है. चूंकि लोग मेरी नाक की हंसी उड़ाते थे और मुझे उस नाक के साथ रहना ही था, इसलिए मैं ने सब के साथ अपनी नाक पर हंसना सीख लिया था. इस से मेरा जीवन कुछ आसान हो गया था.

अब अगर यह नाक मेरे तक ही सीमित रहती तो कोई हर्ज नहीं था. मेरी पहली संतान पुत्र था, जो देखने में मेरी तरह अच्छा था, पर नाक उस ने अपनी मां मंजु की ली थी. स्पष्ट था कि वह मां को प्यारा होगा. दूसरी संतान लड़की थी, जो मां की तरह सुंदर थी, परंतु उस की नाक मेरे जैसी थी. अब वह मुझे तो प्यारी लगती ही थी. जैसेजैसे नीला बढ़ने लगी, उस की नाक भी बढ़ने लगी.

एक दिन नीला मेरे कंधे पर चढ़ कर उछलकूद कर रही थी और मैं भी उस के साथ खेल रहा था. हम दोनों हंस रहे थे. शोर सुन कर मंजु ने प्रवेश किया.

"पिताजी, मैं आ गई," नीला ने पीछे से मेरे गले में बांहें डालते हुए कहा.
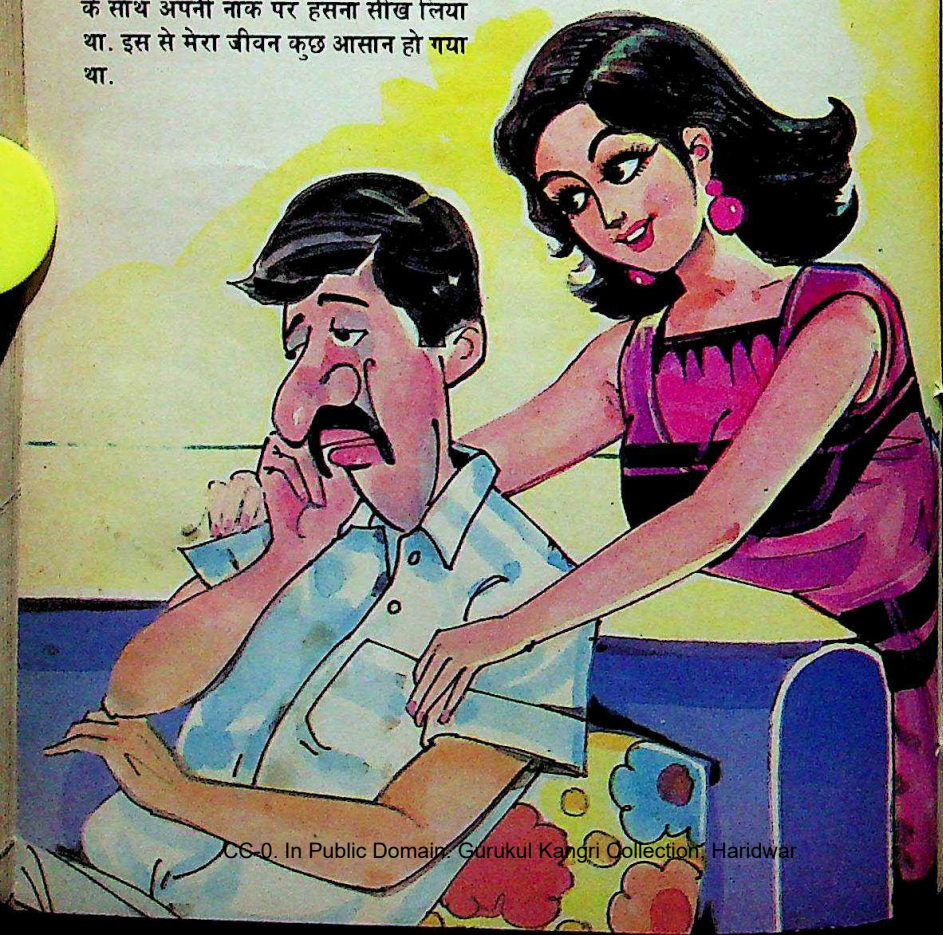
"यह क्या शोर मचा रखा है? नीचे उतर."

नीला सहम कर नीचे खिसक आई.

मैं ने कहा, "क्यों डांट रही हो बच्ची को?"

"ज्यादा सिर पर चढ़ाना ठीक नहीं, लड़की है. देखते नहीं, बांस की तरह बढ़ रही है."

"अब लड़की तो लड़की ही है. बांस की तरह बढ़े चाहे बाजरे की तरह. यों बेकार में डांटने से दिमाग कुंद हो जाता है."

तो बाद में सोचना, पहले नाक पर ध्यान दो. कुछ साल बाद जब शादी करने निकलेंगे तो कोई लड़का नहीं मिलेगा. मुझे तो इस की नाक की चिंता खाए जा रही है."

मैं ने अपनी नाक को प्यार से सहलाते हुए कहा, "क्यों, मुझे तो शादी करने में कोई परेशानी नहीं हुई थी."

मंजु ने खिलखिलाते हुए कहा, "अरे, यह तो मर्द की नाक है. कुछ भी करो, ऊंची ही रहेगी. बात तो लड़की की नाक की है. अब सोचो, अगर मेरी नाक तुम्हारी तरह की होती तो क्या तुम शादी के लिए झटपट तैयार हो जाते?"

मैं सोच में पड़ गया.

मुझे चुप देख कर मंजु ने कहा, "अभी से चिंता करो इस की शादी की. बाद में बहुत परेशानी होगी."

मैं ने आश्चर्य से कहा, "पर अभी तो 10 साल की भी नहीं हुई. अभी से चिंता क्यों करें?"

"अभी से चिंता नहीं करोगे तो नाक काबू से बाहर हो जाएगी." मंजु ने पासा फेंका और अंदर चली गई.

मैं नीला की नाक देख रहा था और नीला मेरी. आंखें मिलते ही हम दोनों फिर हंस पड़े थे.

उस घटना से मैं सतर्क हो गया था. अब मैं लंबी नाक वालों को, विशेषकर युवकों को ध्यान से देखने लगा था. अकसर उन से हंसीमजाक में पूछ भी लिया करता था कि

मेरी नाक देख कर लोगों के हंसने का इलाज तो मैं ने ढूंढ़ लिया था, पर बेटी नीला की नाक मेरी नाक पर बन आई. और जब नातिन की नाक देखी तो मैं अपने को रोक न सका.

[illegible] व लंबी नाक वाली लड़की से शादी करेंगे.

मुझे आश्चर्य हुआ. उत्तर [illegible] था, "अरे साहब, जब मियांबीवी दोनों ही लंबी नाक के होंगे तो आने वाली पीढ़ी का तो नकशा ही बदल जाएगा. जी नहीं, छोटी या गोल नाक चलेगी."

धीरेधीरे समय के साथ यह समस्या गंभीर होने लगी. मंजु का कहना ठीक लगने लगा कि नीला की शादी करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा. मैं यह भी महसूस करने लगा कि नीला अब हंसती कम है. शायद उसे भी नाक की चिंता लग गई थी. चाहे नाक कैसी भी हो, मुझे तो नीला वैसी ही सुंदर लगती थी.

जब उस ने 17 वर्ष पार किए तो मैं ने [illegible] के लिए एकदो विवाह विज्ञापनों के उत्तर में नीला का विवरण भेज दिया. सुंदर, शिक्षित, सभ्य इत्यादिइत्यादि. उस के उत्तर में जब मैं ने नीला की तसवीर भेजी तो बिना टिकट के लिफाफे की तरह खेद सहित वापस आ गई. अब सचाई सामने आने लगी. मुझे भी चिंता होने लगी.

देखा जाए तो नीला में कोई कमी नहीं थी. पढ़ने में बड़ी होशियार, खेलकूद में अव्वल, वादविवाद में आगे और चेहरे से गोरी व सुंदर. बस, नाक ही लंबी और आगे से टेढ़ी थी. जब उस की पहली कहानी एक मुख्य पत्रिका में छपी तो मैं गर्व से फूल गया
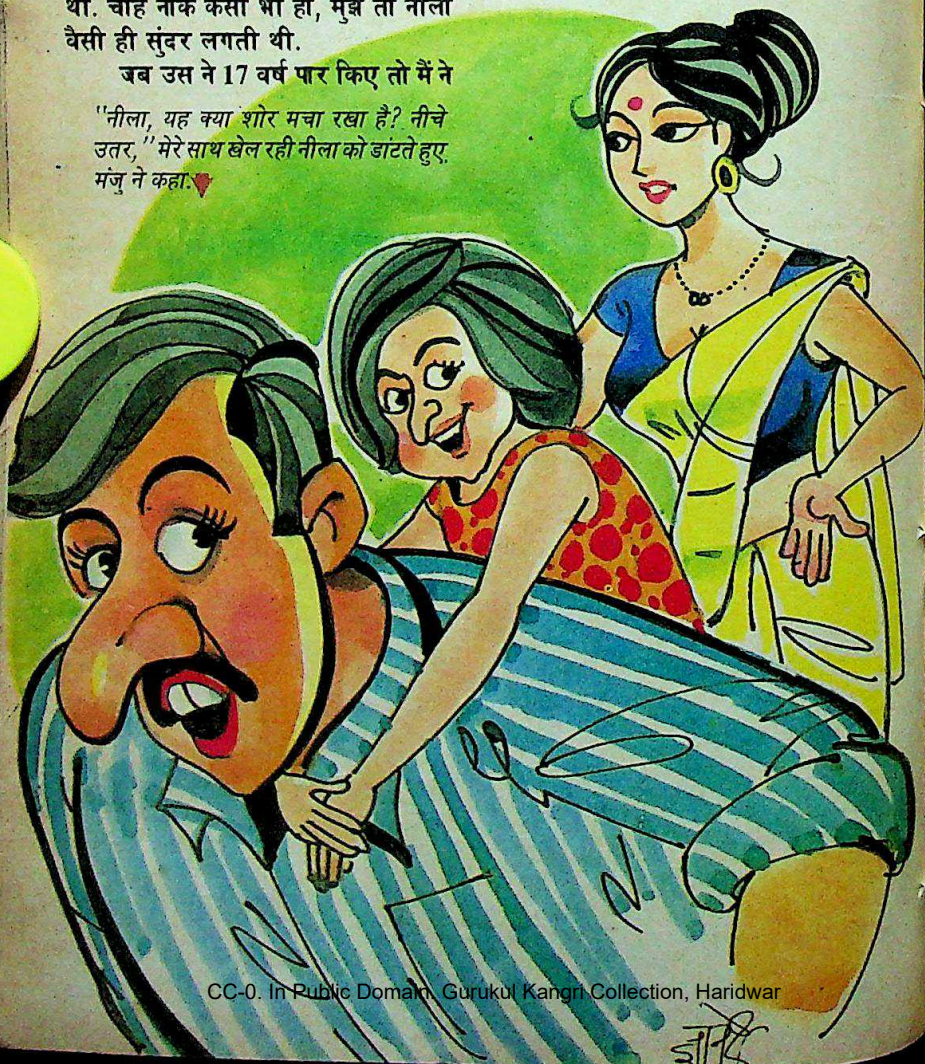
"नीला, यह क्या शोर मचा रखा है? नीचे उतर," मेरे साथ खेल रही नीला को डांटते हुए मंजु ने कहा.
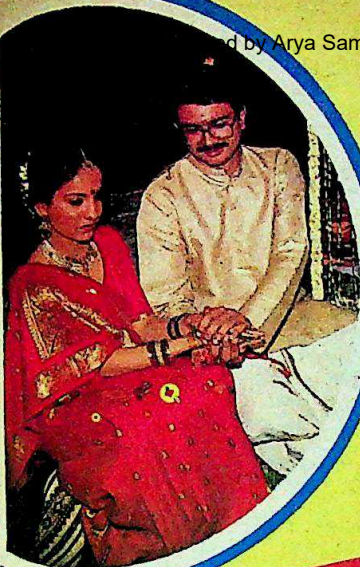
आदर्श दंपतियों के लिए
एक महत्त्वपूर्ण विशेषांक
सरिता
जून (प्रथम) 1988
दांपत्य में दरार
विशेषांक
दांपत्य जीवन में दरार आने के बाद पति और पत्नी दोनों का जीवन जहर बन सकता है. अपने जीवन में दरार आने से कैसे रोकें और आने के बाद इसे कैसे पाटें—इस विषय पर सरिता की चिरपरिचित शैली में उपयोगी सामग्री.
मुख्य आकर्षण :
पति क्यों पत्नी में खामियां निकालते हैं?
अलग रहती पत्नी का भरणपोषण
दांपत्य जीवन में दरार क्यों?
पति की तानाशाही और पत्नियां
अपनी गलती स्वीकार कीजिए
दांपत्य में बहस
अनमेल दंपती और दरारें
इन के अतिरिक्त दांपत्य जीवन की समस्याएं सुलझाने वाली और इसे अधिक मधुर बनाने वाली 8 कहानियां, कई अन्य लेख, मर्मस्पर्शी कविताएं, फिल्म समीक्षाएं तथा सभी स्तंभ.
अपनी प्रति खरीदना न भूलें.

था. ऐसी गुणवान बेटी को तो लोग घर पर आ कर मांगने की प्रार्थना करेंगे.

मैं ने घमंड से कहा, "देख लेना, मंजु. नीला की शादी को कोई अधिक समय नहीं लगेगा. तुम यों ही चिंता करती हो."

"लड़की घर में हो तो चिंता अपनेआप हो जाती है. आजकल क्या, हमेशा ही से लोग गुण कम देखते हैं, नाकनक्शा अधिक देखते हैं. गुणों की कलई तो बाद में खुलती है."

"देखती जाओ मंजु, अभी नीला की उम्र ही क्या है."

"तुम्हें क्या, पासपड़ोसियों की बातें तो मुझे सुननी पड़ती हैं. अपने घर में बड़ी उम्र की लड़कियां बैठी हैं, पर नीला को देख कर न जाने क्या हो जाता है. कोई विश्वास ही नहीं करता है कि उस की शादी आसानी से हो जाएगी."

"अरे सब्र रखो, इसी महल्ले में बैंडबाजे के साथ धूमधाम से बरात आएगी और नीला की शादी होगी. सब देखते रह जाएंगे," मैं ने मंजु से कहा, पर जैसे मैं अपनेआप को सांत्वना दे रहा था.

नीला ने बी.ए. की परीक्षा दी थी. उस दिन अंतिम दिन था. दफ्तर से आया तो नीला को देख कर धक से रह गया. उस की नाक को ढकते हुए एक पट्टी बंधी थी. नाक के ऊपर पट्टी लाल दवा से रंगी हुई थी.

बैठते हुए कहा.

मंजु ने कहा, "जिस बस में बैठी थी, उस की दूसरी बस से टक्कर हो गई. आगे की सीट से मुंह जोर से टकराया तो नाक में चोट लग गई. प्राथमिक चिकित्सा के बाद घर भेज दिया. अभीअभी तो आई है."

मैं ने चिंता से कहा, "मैं एक्सरे कराऊंगा. कहीं हड्डी में तो चोट नहीं लग गई."

नीला ने बुदबुदाते हुए कठिनाई से कहा, "कुछ नहीं, मामूली चोट है. ठीक हो जाएगी."

"नहीं," मैं ने दृढ़ता से कहा, "लापरवाही ठीक नहीं. उठो जल्दी से, और चलो मेरे साथ. मंजु, तुम झटपट से एक प्याला चाय बना दो."

"चाय तो बना रही हूं, पर मैं यहां किसी डाक्टर को नहीं दिखाऊंगी. मैं इसे ले कर भैया के यहां जा रही हूं."

"ओह, मंजु," मैं ने झल्ला कर कहा, "इतने साल हो गए, पर तुम्हारी आदत नहीं गई. हर छोटीछोटी बात पर भैया का राग अलापने लगती हो. पहले यहां दिखा लेते हैं. अगर आवश्यकता होगी तो चली जाना."

"अब भैया सारे घर में अकेले डाक्टर हैं. उन के पास नहीं जाऊंगी तो कहां जाऊंगी?"

मंजु के बड़े भाई डा. महेंद्रप्रसाद ग्वालियर के एक प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक थे. पेट में दर्द भी उठ जाए तो मंजु तुरंत दिल्ली से ग्वालियर भाग पड़ती थी. दिल्ली में दुनिया भर के डाक्टरों के होते हुए भी उसे सिर्फ भैया का ही इलाज माफिक आता था.

"ठीक है, मानोगी थोड़ी," मैं ने गहरी सांस भर कर कहा, "मैं जाता हूं टिकट लाने. सुबह ताज एक्सप्रेस से चली जाना."

दो दिन बाद ग्वालियर से फोन आया.

"कहो भाई, कैसे हो?" डा. महेंद्रप्रसाद का याराना स्वर था दूसरी ओर, "क्या हो रहा है?"

"बिना बीवी के झक मार रहे हैं और क्या कर रहे हैं," मैं ने हंसते हुए कहा.

"ऐसा था तो साथ ही चले आते. अच्छा था मिलना भी हो जाता. वैसे भी देर नहीं हुई, अब आ जाओ."

"अभी तो मैं सहीसलामत हूं. जब दिल पर हमला होगा तो शायद आना पड़े."

"भई, दिल को तो काबू में रखो. बड़ी खराब बीमारी है. सुनो, मंजु और नीला अभी कुछ दिन और यहीं पर रहेंगी."

"क्यों?" मैं ने चिंता से कहा, "गंभीर चोट है क्या?"

"अरे, चोट तो मामूली है. मैं ने एक्सरे करा के दोबारा मरहमपट्टी करा दी है."

"क्या निकला ऐक्सरे में?"

"कुछ खास नहीं, कार्टिलेज यानी अस्थितंतु में जरा खरोंचें आ गई हैं. हलका सा आपरेशन करना पड़ेगा. नहीं तो बाद में सांस की शिकायत हो सकती है."

मैं ने आह भर कर कहा, ".एक बार मरीज डाक्टर के चंगुल में फंस जाए तो फिर पीछा नहीं छोड़ता. गुरदा भी बदलना पड़े तो उसे मामूली आपरेशन कहते हैं."

डा. महेंद्रप्रसाद ने हंसते हुए कहा, "अरे भई, डाक्टरों को भी तो कमानाखाना है. एक बात है."

"क्या बात है?"

"मेरे एक सहयोगी हैं जो शृंगारिक शल्य चिकित्सा यानी कौस्मेटिक सर्जरी करते हैं. मैं ने उन से परामर्श किया था. कह रहे थे कि एक मामूली सा आपरेशन होगा. बस आधा घंटा लगेगा. नीला की नाक छोटी और सुंदर हो जाएगी."

मैं ने भड़कते हुए कहा, "क्यों खामखां मेरी नाक कटवा रहे हो? ऐसी ही ठीक है. मुझे आपरेशन नहीं कराना."

डा. महेंद्रप्रसाद ने कहा, "भई तुम्हारी नाक की बात नहीं कर रहा हूं. मैं नीला की बात कर रहा हूं. एकदम सुंदर लगने लगेगी और शादी भी झटपट हो जाएगी. दोचार डाक्टर लड़के तो यहां ही घूम रहे हैं."

दिन दहाड़े

हम अनाज का व्यवसाय करते हैं. एक दिन एक व्यक्ति हमारी दुकान पर आया और हमारे पिताजी के बारे में पूछने लगा. हमारे यह कहने पर कि वह घर पर नहीं हैं. वह बोला, "मेरी उन से 10 बोरे गेहूं लाने की बात हुई थी. इसलिए आप मुझे 10 खाली बोरे दे दीजिए."

हम ने उस का नामपता पूछ कर उसे बोरे दे दिए. लेकिन जब पिताजी आए तो उन्होंने इस बारे में अनभिज्ञता प्रकट की. बाद में पता चला कि पास के गांव में इस नाम का कोई व्यक्ति नहीं है. इस प्रकार हमें 100 रुपए की चपत लग चुकी थी.

—दामोदर लाल

*

एक बार हम लोग परिवार सहित बिहार में देवघर के निकट बैद्यनाथ के मंदिर में गए. जब हम प्रसाद चढ़ाने लगे तो पुजारी ने 10 रुपए की मांग की. मेरे पास 10 रुपए का नोट नहीं था, इस लिए पुजारी को 100 रुपए का नोट दे दिया.

जब वह वापस आया तो मैं ने प्रसाद के साथ बाकी पैसों की मांग की. यह सुन कर वह बिगड़ गया और बोला, "हम धर्मात्मा पुजारी क्या झूठ बोलेंगे. आप ने सिर्फ 10 रुपए ही दिए थे."

—मुन्ना कु. सिंह

*

हम फिल्म की टिकट लेने के लिए लंबी लाइन में खड़े थे. तभी एक लड़का मेरे पास आया और बोला, "भाई साहब, मुझे खुले 50 पैसे दे दीजिए. टिकट में कम पड़ रहे हैं."

मेरे मना करने के बावजूद मेरे मित्र ने उसे 50 पैसे दे दिए. पैसे ले कर वह चला गया.

फिल्म समाप्त होने पर जब हम दोबारा उधर आए तो वही लड़का दूसरे शो की लाइन में किसी अन्य व्यक्ति से पैसे मांग रहा था. —राजीवकुमार श्रीवास्तव ●

आप उसे फौरन यहां वापस भेज दीजिए. मुझे उस की नाक का आपरेशन नहीं कराना है. मुझे वह वैसी ही सुंदर लगती है. लड़के बहुत मिल जाएंगे."

"जरा गंभीरता से सोचो," डा. महेंद्रप्रसाद ने धीरज से कहा, "बात नीला के भविष्य की है. मानता हूं कि तुम्हें अपनी नाक से प्यार है. स्पष्ट है कि इसी लिए तुम्हें वैसी ही नाक नीला के चेहरे पर भी अच्छी लगती है. मेरी राय में तुम इन्कार मत करो. कोई तकलीफ नहीं होगी नीला को."

मैं ने क्षीण स्वर में पूछा, "नीला क्या कहती है? मंजु क्या कहती है?"

"दोनों राजी हैं. वे यह भी कह रही थीं कि तुम नहीं मानोगे. इसलिए बिना बताए ही आपरेशन करा दूं. पर मैं ने ऐसा करना ठीक नहीं समझा," डा. महेंद्रप्रसाद ने हंसते हुए कहा, "आखिर, नाक का सवाल है न."

मैं ने हार मानते हुए कहा, "जो ठीक समझो, वह करो. मैं अब क्या कह सकता हूं."

"यह बात हुई न. अच्छा तो फिर अगले शनिवार को आ जाओ. साथ ही सब मिल कर जश्न मनाएंगे."

मैं ने चोंगा रख दिया.

टेलीफोन पर ही आपरेशन सफल होने का समाचार मिल गया. मुझे बहुत बुलाया था. पर शायद मन के अंदर एक छिपा हुआ क्रोध था, जिस के कारण मैं ने जाने से इनकार कर दिया. पता होने पर भी स्टेशन उन्हें लेने नहीं गया. जब टैक्सी से उतर कर मंजु ने घंटी बजाई, मैं ने दरवाजा खोल दिया और सूटकेस उठा कर अंदर ले आया. नीला की तरफ देखा भी नहीं. एक डर सा लग रहा था. चुपचाप आ कर अपने सोफे पर आंखें बंद कर के बैठ गया.

"पिताजी," नीला ने पीछे से गले में बांहें डालते हुए कहा, "पिताजी, मैं आ गई."

मैं ने आंखें बंद किएकिए ही कहा, "आवाज से तो लगता है कि नीला है, पर देखने से डर लगता है."

"देखिए न, मैं कैसी लग रही हूं?"

मैं ने धीरे से आंखें खोलीं. लगती तो नीला ही थी, पर वह तो कोई बहुत सुंदर लड़की थी. भरोसा नहीं हुआ कि यह नीला हो सकती है. ध्यान से देखा. उस का प्रश्नचिह्न चला गया था. एक तीखी नाक रह गई थी. मैं ने आगे खींच कर उसे गले से लगा लिया.

एक वर्ष के अंदर ही नीला की शादी तय हो गई. कहां तो पहले लड़का ही नहीं मिल रहा था और अब अनेक में से एक को चुन पाना कठिन हो रहा था. जैसा मैं ने कहा था, बहुत धूमधाम से शादी की.

शादी के बाद जब नीला दामाद के साथ आई तो मैं ने उसे चिढ़ाने के लिए कहा, "तेरी पुरानी तसवीर दिखाऊं?"

"नहीं, पिताजी," नीला ने लिपट कर कहा, "मैं आप से कभी नहीं बोलूंगी."

"अच्छाअच्छा, चिंता मत कर."

दो वर्ष हो गए थे. बच्चा होने वाला था. इसलिए नीला को मंजु ने अपने पास बुला लिया था. कपड़े, बिस्तर, खिलौने और जो कुछ सोचा जा सकता था, इकट्ठे कर लिए थे, घर भी एक तरह का प्रसूतिगृह बन गया था.

"बधाई हो," नर्स ने कहा, "लड़की हुई है."

मंजु का मुंह क्षण भर को उतरा, पर शीघ्र ही संभल कर बोली, "हम देखने आ जाएं?"

"अभी नहीं, चार घंटे प्रतीक्षा कीजिए."

मैं और मंजु फल ले कर आए थे. बाहर ही बैठ गए.

जब हम अंदर गए, नीला सो रही थी. पास ही एक पलने में बच्ची लेटी थी. सारी ढकी थी, केवल मुंह खुला था. जो सब से पहले देखा वह यह कि उस के छोटे से सुंदर चेहरे पर एक प्रश्नचिह्न नाक थी, हम दोनों हंस पड़े और नीला की आंखें खुल गईं.

मैं ने कहा, "एक और नाक, इसे कहां छिपाएगी?" ●

स्वर की मलिका
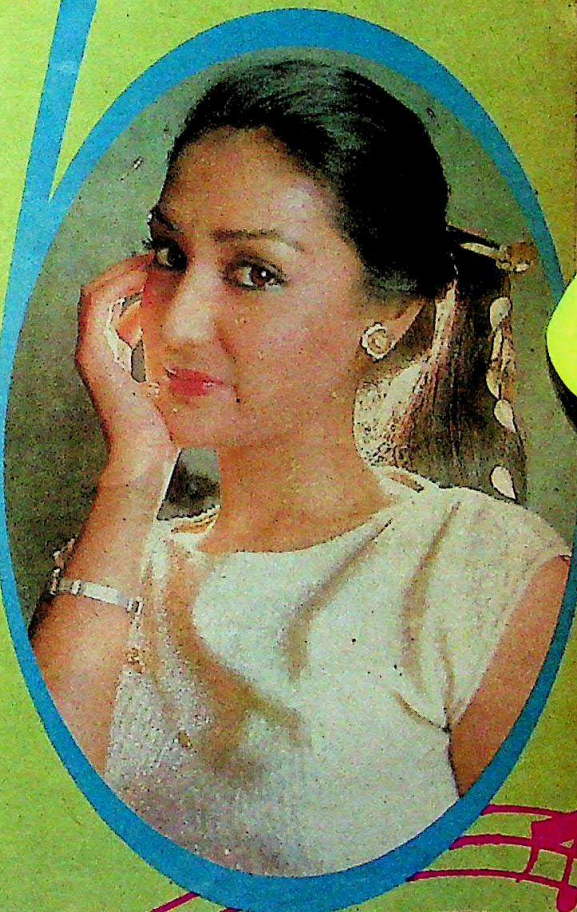
आजा, स्वर की मलिका आजा,
चितवन के उजड़े उपवन में
गीतों का चंदन बिखरा जा.

होंठों पर नीरवता छाई,
सांसों की बदली अकुलाई,
धड़कन में बिजली लहराई,
आजा, स्वर की मलिका आजा.

छंदों में तो घाव लगे हैं,
आशा ने सुखचैन ठगे हैं,
नैना सारी रात जगे हैं,
आजा, स्वर की मलिका आजा.

भटकीं तुझ बिन जब ये दिशाएं,
मदिर हवाएं किस को सुहाएं,
कैसे पढ़ें हम प्रेम ऋचाएं,
आ जा, स्वर की मलिका आ जा.

—यश खन्ना 'नीर'

रिश्तों का व्यापारी

कहानी • चित्रलेखा अग्रवाल

'शाम की स्याही गहराती जा रही थी. आकाश में तारे बिजली के जलतेबुझते बल्बों की भांति टिमटिमा रहे थे. रघुराज कभी अपनी खाली हथेली देखते तो कभी हाथ को झटका देते. उन के मन में उथलपुथल मच रही थी. अंदर के कमरों से हंसी एवं कहकहों के सम्मिलित स्वर उन्हें कान बंद कर लेने को विवश कर रहे थे.

वह दीवान पर लेटलेटे सोचने लगे, 'जब सब सो जाएंगे, तभी अंदर जाऊंगा. बच्चे इसी मुगालते में होंगे कि पिताजी नंदन

रघुराज ने दहेज में भारी रकम ऐंठने के चक्कर में एक से बढ़ कर एक रिश्ते को ठोकर मार दी. उस के विदेश जाने की बात सुन कर तो वह हवा में ही उड़ने लगे. लेकिन मेघ के वापस लौटने पर उनके दिल पर छुरियां क्यों चलने लगीं?

होंगे.'

पर उस दिन उन का दिल उचट गया था. इसलिए बत्ती बंद कर के चुपचाप बैठक में दीवान पर लेट गए. विचारों की रेलगाड़ी धड़ाधड़ पटरियां बदलती हुई दौड़ने लगी. विगत तीन वर्ष चित्रहार से आंखों के दूरदर्शन पर अंकित होने लगे.

तीन वर्ष पहले मेघ ने इंजीनियरिंग कालिज की समस्त ऊंचाइयों को छू लिया था. मेघ रुड़की से इलेक्ट्रानिक्स में गोल्ड मैडलिस्ट रहा. बेटे की स्वर्णिम उपलब्धि पर रघुराज का हृदय गर्व से फूल उठा. मेघ के इंजीनियर बनने का समाचार चंपा की सुगंध सा शहर एवं रिश्तेदारी में फैल गया.

लड़की वालों में मेघ को दामाद बनाने की होड़ लग गई. हीरे की परख जौहरियों ने की और मेघ को दामाद बनाने की बोली

हवाई अड्डे पर रघुराज, उन की पत्नी राधा तथा उन की दोनों बेटियां फूलों का हार ले कर मेघ के इंतजार में खड़ी थीं. ▼
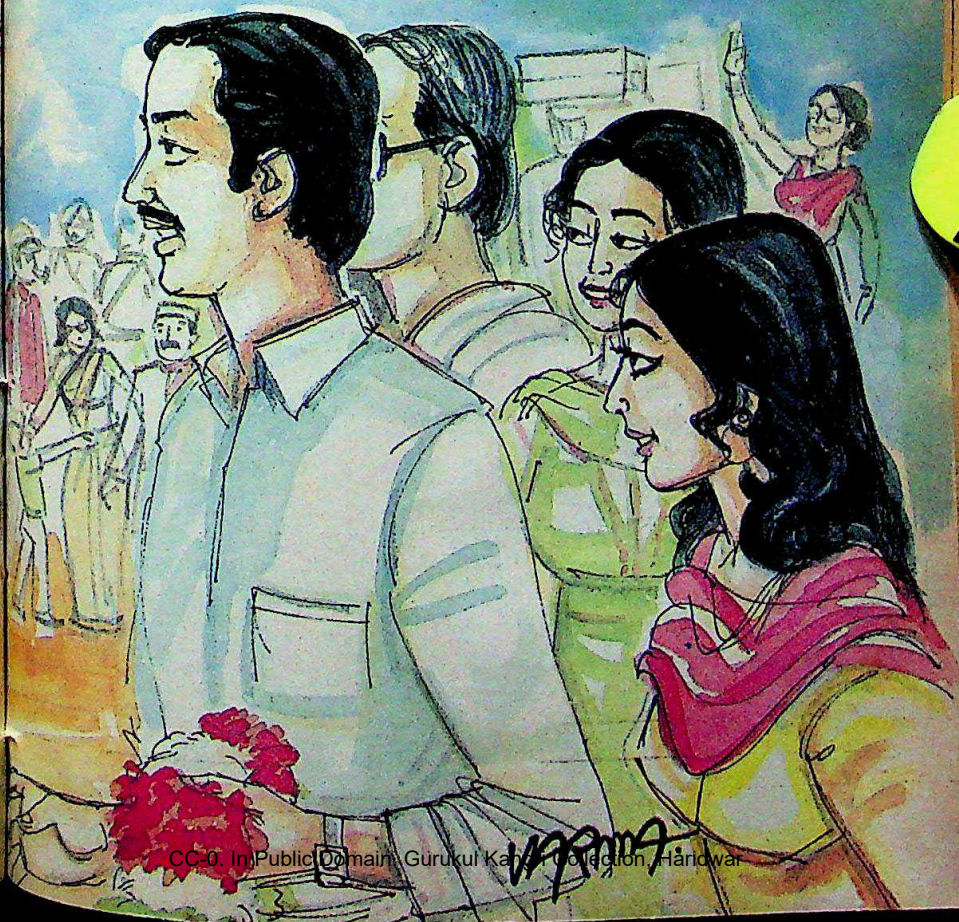
राधा ने मेघ को कामना की फोटो दिखाई तो मेघ को कामना पूनम के चांद सी लगी.

लाखों में लगा दी. रघुराज ने मेघ को दहेज के बाजार में बैठा तो अवश्य दिया था, पर उस पर अभी कीमत की चिट नहीं लगाई थी. फिर भी लड़की वालों द्वारा लगाई गई मेघ की बोली उन्हें घाटे का सौदा प्रतीत हो रही थी. उन्होंने टालते हुए बहाना बनाया, "घर पर दोनों दामाद और लड़कियां आने वाले हैं. उन से सलाह कर के जवाब दूंगा."

दफ्तर से घर आते समय प्रसन्नता के कारण उन के पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे. शहर के बड़ेबड़े रईस कल तक उन से कतराते हुए निकल जाते थे. अब डंके की चोट पर उन्हें समधी बनाने की मैराथन दौड़ में सम्मिलित थे. घर पहुंच कर दरवाजे से ही उन्होंने पत्नी को आवाज लगाई.

उन की पत्नी राधा रसोई में सुबह से शाम कर देती थीं. पर उस दिन फुरसत में थीं, इसलिए चाय का एक कप पति को दिया और एक कप स्वयं ले कर पास की कुरसी पर इतमीनान से बैठ गईं. रघुराज ने पत्नी को छेड़ते हुए कहा, "क्या चाय जैसी तल्ख चीज ले आईं. मैं तुम्हें हलवे सी मीठी खबर सुनाऊं."

भूमिका बांध कर रघुराज मौन हो गए. राधा के खुशामद करने पर उन्होंने मेघ के लिए आए रिश्तों के बारे में बता दिया. राधा दहेज से अधिक लड़की के रूप और गुण को महत्त्व देती थी. इसलिए रिश्तों में

उन्हें रघुराज के दांत काटी रोटी खाने वाले मित्र छंगामल की बिटिया कामना का रिश्ता भा गया.

छंगामल रघुराज से लक्ष्मी स्वरूपा कामना के पैरों के नीचे लक्ष्मी बिछाने का वादा भी कर चुके थे. रघुराज ने तसवीरों की गड्डी से कामना की तसवीर निकाल कर राधा को दे दी. हालांकि मेघ विवाह में मातापिता की राय को सर्वोपरि मानता था, फिर भी बेटा सयाना हो गया था इसलिए भावी पुत्रवधू की तसवीर पर मेघ की एक नज़र डलवाना रघुराज को उचित प्रतीत हुआ.

चाय पी कर मैच देखने जाने के लिए उठते हुए क्रिकेट के शौकीन रघुराज राधा को याद दिलाना नहीं भूले, ''तुम्हारी पसंद से ही काम नहीं चलेगा. रात को खाने की मेज पर तसवीर मेघ से भी पसंद करा लेना. शादी उसी की होनी है कामना से, मेरी या तुम्हारी नहीं.''

रात को राधा ने कामना का जिक्र करते हुए मेघ को कामना की तसवीर दिखाई. कामना पूनम का चांद थी. रूप जैसे उस पर टूटा पड़ रहा था. मां के सामने अधिक मुखर न होते हुए अपनी सहमति दे दी. अगले ही दिन रघुराज ने मेघ का रिश्ता कामना से पक्का कर दिया. प्रचंड गरमी में विवाह के लिए न रघुराज सहमत थे और न छंगामल. वर्षा ऋतु का भी कोई विश्वास नहीं रहता, जाने कब बरस जाए. चाहे तो हफ्तों न बरसे और चाहे तो रोज बरसे मनमौजी बादल. बची हुई खाद्य सामग्री इधरउधर बांटनी पड़ती है. कीमती रेशमी वस्त्र अलमारी में सजा पाए कैदी से हैंगरों पर लटके रह जाते हैं. इसलिए दशहरे से दो दिन पूर्व विवाह की तिथि निश्चित की गई. मेघ होली पर चार दिन को घर आया था. होली से अगले दिन वह दिल्ली लौट गया.

धीरेधीरे विवाह की तिथि की दूरी महीनों से दिनों में रह गई. इसलिए प्रति दिन
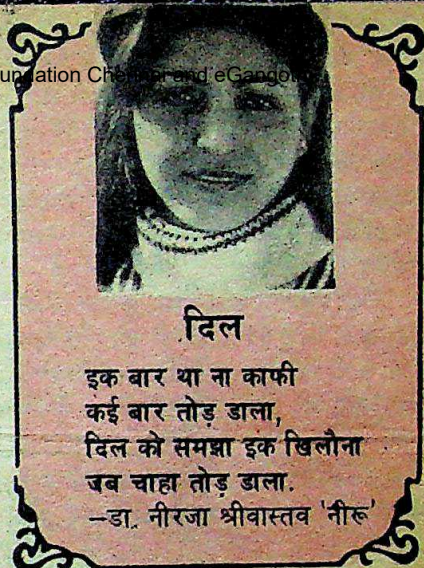
दिल

इक बार था ना काफी
कई बार तोड़ डाला,
दिल को समझा इक खिलौना
जब चाहा तोड़ डाला.
—डा. नीरजा श्रीवास्तव 'नीरू'

दोपहर को दोनों परिवारों का महिला वर्ग साथसाथ वैवाहिक साड़ियां, आभूषण, डिनर सेट आदि की खरीदारी के अभियान पर निकल पड़ता. पुरुष वर्ग भी सजावट वाले एवं हलवाई आदि का प्रबंध करने में व्यस्त हो गया.

अचानक विवाह से एक सप्ताह पहले मेघ के पत्र ने रघुराज को गड़बड़ा दिया. कंपनी मेघ को तीन वर्ष के लिए विदेश भेज रही थी. रघुराज के मस्तिष्क ने कंप्यूटर की गति से हानिलाभ का ब्योरा प्रस्तुत कर दिया. मेघ का कामना से रिश्ता बेहद घाटे का सौदा प्रतीत होने लगा. वह मेघ के विदेश से लौटने पर धनदौलत की लहलहाती फसल काटना चाहते थे.

मेघ की विदेश यात्रा को लाटरी का बंपर ड्रा समझते थे वह, जिस में उन्हें मेघ रूपी टिकट पर लड़की वालों से कम से कम आठ लाख का पुरस्कार प्राप्त होने की आशा थी. राधा ने उन को रिश्ता न तोड़ने के लिए बहुत समझाया. रिश्तेदारी में बदनामी की ऊंचनीच का भय दिखाया, पर रघुराज ने उन की समस्त दलीलों को हथेली पर पड़ी तुच्छ धूल सा फूंक मार कर उड़ा दिया.

रघुराज के इनकार को सुन कर

छंगामल के हाथों के तोते उड़ गए. उन्हें अपने पैरों के नीचे से धरती खिसकती अनुभव हुई. कुछ संभलने पर उन्होंने सोचा कि रघुराज दहेज की सीमा रेखा को 20-25 हजार और बढ़ा देने से शायद अपना इनकार स्वीकृति में बदल देंगे. इसलिए उन्होंने नकदी में 25 हजार रुपए मूल्य की गिन्नियां देने का प्रस्ताव रखा.

पर रघुराज ने छंगामल के प्रस्ताव को कागज के टुकड़े की तरह रद्दी की टोकरी में फेंक दिया. रघुराज ने मन ही मन निश्चय कर लिया था, 'मेघ ऐसी हुंडी है, जिसे वह उस के विदेश से वापस आने पर ही भुनाएंगे. तब लड़की वाले उन्हें ऐसा कोरा चैक थमा देंगे, जिस पर वह मनचाही रकम भर सकेंगे.'

असफल योद्धा के समान रघुराज को मनाने के प्रयत्न विफल होते देख छंगामल ने निराशा से मुंह लटका लिया. रघुराज चलने को हुए तो उन्हें समझाने का अंतिम प्रयास किया और हितैषी बन कर कहा, "तीन वर्ष बाद विदेश से आने पर मेघ 27 के हो जाएंगे तब क्या आधी उम्र बीत जाने पर उन का विवाह करेंगे आप?"

रघुराज ने सुखद भविष्य के काल्पनिक तानेबाने बुन लिए थे. उसी की कल्पना में उतराते हुए उन्होंने दंभ से उत्तर दिया, "सर्टिफ़िकेट में साल भर उम्र गलती से ज्यादा लिख गई तो क्या वह सच में ही 27 साल का हो जाएगा? अभी तो साहब उस के दूध के दांत भी नहीं टूटे हैं. 26 की उम्र में ही तो लड़के घरगृहस्थी का उत्तरदायित्व कंधों पर उठाने लायक होते हैं."

रघुराज के इनकार की आंधी से छंगामल को अपने हृदय पर चिंता एवं निराशा का टनों बोझ रेत के पहाड़ के समान बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ. दुख से उन का गला अवरुद्ध हो गया. तुरंत उन्होंने स्वयं को संभाल लिया. उखड़ी निगाहों से दोनों ने एकदूसरे से विदा ली.

रघुराज एवं छंगामल मित्रता के नाते से निकल कर परस्पर प्रगाढ़ संबंधों की डोर में बंधने वाले थे. परंतु रघुराज के इनकार के झटके से संबंधों की डोर टूट गई. दोनों के बीच व्यापारिकता आ गई. लेनदेन का राईरत्ती तक का हिसाब हुआ. कामना ने वर पक्ष से प्राप्त साड़ियों के साथ के ब्लाउज सिलवा लिए थे. छंगामल ने साड़ियों का सूटकेस वापस करते समय याद आने पर सुबह सिल कर आए ब्लाउजों का पैकेट भी कांपते हाथों से रघुराज को थमा दिया.

ब्लाउजों को देख कर रघुराज की स्मृति को भी एक झटका लगा. वह उलटे पैरों अंदर गए और मेघ का सूट जो पिछली शाम दरजी ने दो दिन के नोटिस पर सी कर दिया था, ले आए और छंगामल को सौंप दिया.

सूट देख कर छंगामल की आंखें छलछला आईं. उन के इंगलैंड वासी भाई ने अपनी इकलौती भतीजी के भावी पति के लिए सात समंदर पार से 'शाही सूट' का कपड़ा भेजा था. छंगामल सोच के सागर में डूब गए, 'अब उसे क्या लिखूंगा? लिखूंगा तुम्हारी कम्मी...'

आंसुओं को आंखों में सोखते हुए छंगामल रिश्ते में दिया सामान वापस ले के कर भारी कदमों से कार में बैठ गए. सामान वापस लाते समय उन्हें प्रतीत हुआ कि जैसे वह कामना को रघुराज के घर से लौटा कर ले जा रहे हों.

दशहरे से पांच दिन पहले मेघ घर आ गया. पिता द्वारा रिश्ते तोड़ दिए जाने का समाचार सुन कर वह सकते में आ गया. राधा उस के लिए चाय बना लाई. उस ने अनमना हो कर चाय पी और बालकनी में इधर से उधर चहलकदमी करते हुए पिता के दफ्तर से लौटने की प्रतीक्षा करने लगा.

मेघ को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी. रघुराज ने दूर से ही मेघ को देख लिया था. वह सीधे बालकनी में पहुंच गए. रघुराज की आशा के विपरीत मेघ ने कामना से रिश्ता तोड़ने का विरोध रोषपूर्ण शब्दों में

किया, "पिताजी, गुड्डेगुड़ियों का खेल समझ कर आप ने रिश्ता तोड़ दिया. मेरे विदेश जाने के समाचार के पहले आप के हृदय में रिश्ता तोड़ने का अंकुर तक न था. यदि आप मेरे अमरीका जाने को विवाह में बाधक समझते हैं तो ठीक है. कंपनी किसी दूसरे इंजीनियर को भेज देगी. आप कामना को अपनी पुत्रवधू बना कर उस के अधपके अरमानों को अफवाह एवं चर्चाओं की अग्नि में जलने से बचा लीजिए."

रघुराज जानते थे कि मेघ के विरोध का उफान एक ही धमकी के छींटों से नीचे बैठ जाएगा. अपने अमोघ अस्त्र भूख हड़ताल का नोटिस उन्होंने मेघ को दे दिया. मेघ ने भी थके तैराक से हाथपैर मार कर पिता के अनुचित निर्णय के विरुद्ध मुंह बंद कर लिया.

पिता के पास से उठ कर मेघ अपने मित्र अरण्य के पास पहुंचा. निस्संतान मामामामी ने अरण्य को आंख की पुतली बना कर पाला था. मेघ ने अरण्य को कामना से रिश्ता टूट जाने का पूरा वृत्तांत सुना दिया तथा उस से कामना से विवाह करने का प्रस्ताव रखा. अरण्य सोचविचार के पश्चात कामना से विवाह के लिए सहमत हो गया.

छंगामल को घर बैठे रिश्ता हाथ आ गया. मेघ की उदारता से उन का टूटा हृदय कुछ संभला, वरना रिश्ता टूटने से पिछले दो दिनों में रिश्तेदारों, पड़ोसियों एवं जान-पहचान वालों की कामना के संबंध में बेसिरपैर की व्यंग्योक्तियां उन्हें अंदर तक बींध गई थीं. अरण्य से रिश्ता हो जाने से ताजा घाव पर मानो शीतल मरहम रख दिया गया तथा रिश्तेदारों के हाथ से बात को तूल देने का सुअवसर ढीली अंगूठी सा फिसल गया.

मेघ का रिश्ता टूट जाने का समाचार शीघ्र ही इस कान से उस कान होता हुआ शहर भर में धुनी रूई सा फैल गया था. नगर के दिग्गज सेठों ने रघुराज के सम्मुख प्रस्तावों के ढेर लगा दिए, पर रघुराज ने एक ही संक्षिप्त वाक्य से उन के मुंह पर ताला

बच्चों के मुख से

एक बार मेरा 3 वर्षीय छोटा भाई तन्मयता से खाना खा रहा था और अपनी कमीज उठा कर पेट भी देखता जा रहा था. जब मैं ने उस की इस हरकत का कारण पूछा तो वह बड़े भोलेपन से बोला, "दादी ने कहा था कि पेट देख कर खाना खाना चाहिए."

उस की बात सुन कर हम लोटपोट हो गए.

— ओमप्रकाश अस्थाना

*

मेरे पिताजी चश्मा लगाते हैं. एक सुबह जब वह सो कर उठे तो उन्होंने कहा, "मैं ने रात में एक भयंकर सपना देखा था."

मेरा छोटा भाई (जो सब बातों को बड़े ध्यान से सुन रहा था) एकाएक बोला, "आप को तो बिना चश्मे के दिखाई ही नहीं देता फिर आप ने चश्मे के बिना सपना कैसे देख लिया?"

— अजयकुमार

एक दिन मेरी भानजी ने अपनी मां से कहा कि उस की गणित की अध्यापिका बहुत चालाक हैं.

उस की मां ने जब उस से कारण जानना चाहा तो उस ने तुरंत कहा, "वह खुद तो ऐनक लगा कर पढ़ाती हैं और हम लोगों से मन लगा कर पढ़ने की बात करती हैं"

उस के इस जवाब को सुन कर हम सभी हंसने लगे और वह चुपचाप हमारा मुंह देखने लगी.

— चेतनकुमार गुप्त

*

एक दिन मेरा 5 वर्षीय बेटा किसी बात पर जिद कर रहा था. अतः मैं ने उसे समझाते हुए कहा, "बेटे जब तुम छोटे थे, तब तुम कितने अच्छे थे. मैं जो भी कहता था, तुम मान लेते थे. लेकिन अब बड़े हो कर तुम बातबात पर जिद करते हो."

इस पर वह बड़े भोलेपन से बोला, "पिताजी, तब मुझ में अक्ल नहीं थी, अब तो मुझ में बहुत अक्ल आ गई है."

— सुरेशकुमार परमार

जड़ दिया, "मेघ के विदेश से लौट आने पर ही रिश्ता करूंगा. अभी से किसी को लटकाए रखने से क्या फायदा?"

भगवती सेठ ने लालच का चुग्गा डाला, "बस, आप रिश्ता ले लीजिए और हां कर दीजिए. तीन साल तक हम तीजत्योहारों पर धन और मिठाई दोनों से आप को मालामाल करते रहेंगे."

पर रघुराज वचनबद्ध नहीं होना चाहते थे. इसलिए तीन साल तक त्योहारों पर मिलने वाली भेंटों के ध्यान करने भर से ही निकली लार को अंदर ही अंदर गटकते हुए उत्तर दिया, "इतना लंबा अनुबंध! न बाबा न, आजकल तो चट मंगनी पट ब्याह होते हैं."

एकएक कर के सभी अभ्यर्थियों ने दाल न गलती देख कर दूसरे चूल्हे पर दाल पकाने की व्यवस्था करने के लिए अपने घरों की राह ली.

कामना एवं अरण्य के विवाह के बाद मेघ अमरीका चला गया. हवाई अड्डे पर वे दोनों उसे छोड़ने आए. उन दोनों को फूलों सा खिला देख मेघ ने चैन की सांस ली.

तीन वर्ष के अंतराल में मेघ पिता को बारबार पत्र द्वारा कुशल समाचार भेजता रहा. रघुराज कैलेंडर में एकएक दिन को निशान लगा कर काटते रहे. इसी प्रकार प्रतीक्षा की घड़ियां बीत गईं.

सुबह मेघ का हवाई जहाज हवाई अड्डे पर उतरा तो रघुराज, राधा, दोनों बेटियां विधि एवं प्रवीणा पुष्पमालाओं सहित स्वागत करने के लिए उपस्थित थे. जहाज से उतरने का पलपल का विलंब रघुराज को द्रौपदी के चीर सा लंबा प्रतीत हुआ. आखिर मुसकरा कर हाथ हिलाता हुआ मेघ जहाज की सीढ़ी से नीचे उतरा. आगे बढ़ कर उस ने रघुराज के चरण छुए. तीन वर्ष विदेश में रह कर मेघ के व्यक्तित्व में चार चांद लग गए थे. रघुराज को लगा कि मेघ को कहीं अपनों की ही नजर न लग जाए. उन्होंने उसे उठा कर हार पहनाया और गले से लगा लिया.

सहसा मेघ के पीछे खड़ी साड़ी में लिपटी मेम एवं उस के कंधे से लगे शिशु को देख कर रघुराज सकते में आ गए. उन की प्रसन्नता पानी की धार सी नीचे गिरने लगी.

प्रवीणा एवं विधि ने मेघ का संकेत पाते ही भाई के लिए लाए पुष्पहार साड़ी वाली मेम एवं किलकारी मारते शिशु को पहना दिए. रघुराज के मौन साधते ही तीन वर्ष की बातें अनकही रह गईं. जबान का काम आंखों से लेते हुए मेघ ने संकेत से सब को कार में बैठने को कहा. रास्ता एकदूसरे की ओर देखने में ही कट गया.

रघुराज चुपचाप सोफे पर पसर गए. मेघ बातचीत का सूत्र ढूंढ़ने के प्रयत्न में पिता के पास इधरउधर चहलकदमी करने लगा. पिता को मनाने के पुराने प्रयत्न को मेघ ने दोहराया और चुपचाप सोफे के पास बैठ कर उन के पैर दबाने लगा. रघुराज ने तुरंत करवट ले कर दीवार की ओर मुंह कर लिया. साहस कर के मेघ ने कहा, "गुलनार और शनल को आप ने अपने आशीर्वाद से क्यों वंचित कर दिया. क्या वे दोनों आप के कुछ नहीं, पिताजी?"

मेघ के प्रश्नों पर अपने प्रश्न की तह लगाते हुए रघुराज ने उदासीनता से परंतु रोषपूर्ण स्वर में उत्तर दिया, "विवाह क्या मेरे आशीर्वाद से किया था, जो अब आशीर्वाद चाहिए?"

मेघ ने भूमिका तैयार कर के ही पिता से बात छेड़ी थी. विवाह का इतिहास बताते हुए मेघ ने उन का रुख अपनी ओर मोड़ने का प्रयत्न किया. तीन वर्ष की घटनाओं के थान के थान उस ने पिता के सम्मुख खोल दिए, "यहां से जा कर मैं जिस परिवार में 'पेइंग गेस्ट' के रूप में रह रहा था, वह मूल रूप से भारतीय था. गुलनार के दादाजी 40 वर्ष पूर्व वहां जा कर बस गए थे तथा अमरीका की नागरिकता उन्होंने ले ली थी. गुलनार जब सात वर्ष की थी, कार दुर्घटना में उस की मां की मृत्यु हो गई थीं. तब से गुलनार के पिता मदनजी ने उसे मां और बाप बन कर पाला.

पी जाओ गुस्से को झटपट

गुस्सा करना
ठीक नहीं है
उस को तुम पी जाओ गटगट

इस के कारण
ही होती है
आपस में अनबन और खटपट.

पढ़ते समय
लगन से पढ़ लो
काम बनेंगे तब सब चटपट.

खेलो, कूदो,
नाचो गाओ
दौड़ लगा कर भागो सरपट.

यदि गुस्सा
आ भी जाए तो
उसे भगा दो पल में झटपट.

उसे बढ़ाना
ठीक नहीं है
पैदा होते सत्रह झंझट.

—मदनगोपाल शर्मा
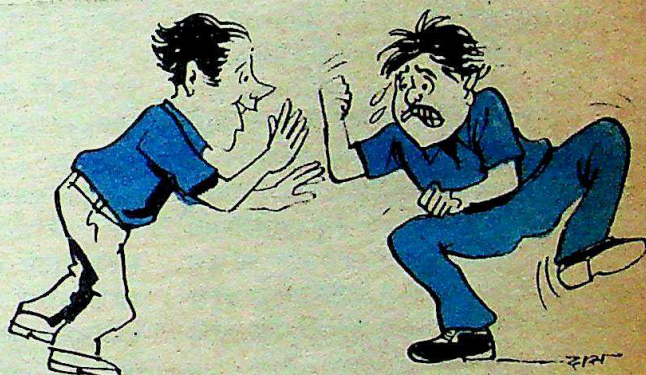
"वह गुलनार को विदेशी रस्मोरिवाज के साथ भारतीय परंपराओं से भी परिचित कराते रहे. भारतीय परंपराओं से लगाव के कारण गुलनार ने बी.ए. में भारतीय दर्शन का पेपर लिया. पिता द्वारा भारतीय संस्कारों की पिलाई घुट्टी के कारण गुलनार भारतीय युवक से विवाह करने के सपने बुना करती थी. गुलनार के घर में 'पेइंग गेस्ट' के रूप में रहते हुए मुझे एक वर्ष ही बीत पाया था कि पिता का साया भी उस के सिर से उठ गया.

"अंतिम सांसें लेने से पहले मदनजी ने गुलनार का हाथ मेरे हाथ में थमाते हुए कहा, 'शीघ्र ही जा कर अदालत में विवाह कर लो, कहीं मेरी आंखें इस से पहले बंद न हो जाएं. यदि मेरे सामने गुलनार का विवाह तुम से हो गया तो मैं शांति से मर सकूंगा.'

"मदनजी की आंखों में सावनभादों उमड़ आया. समय की कमी के कारण मैं आप की पूर्व अनुमति नहीं ले सका. विवाह के तीन दिन बाद गुलनार के पिताजी ने सदैव के लिए आंखें मूंद लीं."

मेघ का एकएक शब्द रघुराज के हृदय पर हथौड़े के समान चोट करता जा रहा था. मेघ की ससुराल से मिलने वाले सामान के उन्होंने अनगिनत रंगीन सपने बुन रखे थे. 'आधुनिकतम सुविधाओं के साजोसामान घर में दोगुने से चौगुने हो जाएंगे. दुलहन से अधिक दुलहन का दहेज आकर्षण का केंद्र बन जाएगा. समधियाने के स्वर्ण भंडार से मेरा अधमरा लाकर ठसाठस भर जाएगा. मिलनी में समधी से हीरे की अंगूठी से कम पर समझौता नहीं करूंगा.'

रघुराज लड़की के पिता को शहद का छत्ता समझते थे और स्वयं को शहद का व्यापारी, जो छत्ते को निचोड़ कर, उस का पूरा शहद प्राप्त कर लेना चाहता है. मेघ ने उन की मनोकामनाओं की अंत्येष्टि कर दी थी. इसलिए वह उसे कोई जवाब न दे कर, घर से निकल आए.

प उमड़ पड़ा. मेघ को एक से तीन हो कर लौटने पर बधाइयों पर बधाइयां मिलने लगीं. उष्मा भाभी ने बधाई के शरबत के साथ कटाक्ष की कड़वाहट भी घोल दी जो रघुराज के कानों में खौलते तेल सी उतर गई, "भाभीजी, बधाई. मेघ ने यहां की सब लड़कियां फेल कर दी थीं. क्या पता था कि मेघ को दूध सी सफेद रंग वाली लड़की चाहिए, वरना यह तो कामना के पैर की धोवन भी नहीं है."

वह कामना की बूआ लगती थीं, इसलिए मन का आक्रोश निकालने का सुनहरा अवसर हाथों से क्यों छिटक जाने देतीं.

रघुराज ने करवट बदली. सोचा, 'ऐसे कब तक मुंह छिपा कर पड़ा रहूंगा.'

चप्पलें पैर में अटकाईं और नीलमणि की संध्या सभा में जा बैठे. उन्हें देखते ही सब के मुंह पर ताले से लग गए. फिर भी एक फिकरा उन के कानों में तीर की तरह प्रवेश कर गया, "आधी छोड़ सारी को धावे, सारी मिले न आधी पावे."

रघुराज चुपचाप कोने में एक कुरसी सरका कर बैठ गए. नीलमणि ने उन्हें मीठी झिड़की दी, "सुदामा की पोटली की तरह मिठाई का डब्बा कहीं बगल में तो नहीं छिपाए हो. आज के खुशी के दिन और खाली हाथ, कंजूस कहीं के, कहां गई हमारी मिठाई?"

रघुराज ने भीतर की टूटन को हृदय के तहखाने में बंद कर दिया. फीकी सी हंसी हंस कर चंद शब्दों में उत्तर दिया, "बेटा विदेश से बहू और पोता साथ में लाया है, मिठाई नहीं,छुट्टी के दिन पार्टी दूंगा. तब जितनी जी चाहे मिठाई व नमकीन उड़ा लेना."

पीछे से बलदेव ने तीर मारा, "रघु को जरा सांस तो लेने दो. सुबह हवाई अड्डे कैसे खुशखुश गए थे. गए थे एक को लेने और लौटे तीन को ले कर. थक गए होंगे बेचारे. थकावट उतर जाए तो इतमीनान से शानदार पार्टी भी कर देंगे, रघु."

रघुराज मन में कसक उठे, 'शानदार रकम तो मिली नहीं मुझे. अब क्या मेरा सिर खुजला रहा है जो शानदार पार्टी में अपना दिवाला निकालूं. इस से अच्छा तो मेघ की शादी कामना से कर के उसे विदेश भेजता. शहर की बरात होने के कारण पूरे शहर की दावत मुफ्त में हो जाती. अब क्या? सूखे पेड़ से, खाली आ बैठे मेघ अमरीका से. मेरी नाक नीची हुई और जगहंसाई हो रही है ऊपर से.'

मन की व्यथा मन में संजोते हुए रघुराज ने ऊपरी हंसी हंस कर उत्तर दिया, "क्यों मेरी गोरीचिट्टी बहू को नजर लगा रहे हो? पार्टी पक्की रही. डा. शैलेश का तबादला कहां हुआ है?"

मित्र मंडली समझ गई कि रघुराज मेघ की शादी की चर्चा और ज्यादा नहीं सुनना चाहते. इसलिए वीरेंद्र ने बात का रुख दहेज विरोध की ओर मोड़ दिया, "मेघ को इंजीनियर बनाने में तुम ने लाखों रुपए लगा दिए. चाहते तो भारत में उस की शादी कर के ब्याज सहित लाखों वसूल सकते थे. पर तुम आजकल के व्यापारियों की तरह नहीं हो, जो बेटे का सौदा करते हैं. दुलहन लाए तो सात समुद्र पार से. दहेज के नाम पर तुम ने सूई तक भी न ली."

रघुराज 'निज मन की व्यथा मन ही राखो गोय' के रहीमी सिद्धांत का पालन करते थे. अतः बेचूक शेखी बघार कर बोले, "गुलनार में कमी क्या है जो दहेज की बैसाखी लगाती. भारतीय परंपराएं उस की दादी ने उसे लोरी में सुनासुना कर रटा दी हैं. लगता है, वह अमरीका से नहीं, बल्कि अमरकोट से आई है."

रघुराज चल दिए, पीछे से कामना के दूर के रिश्ते के फूफाजी ने फिकरा कसा, "चौबे छब्बे होने गए, दुबे भी न रहे. बड़े रिश्तों के व्यापारी बने फिरते थे." फिकरे सीधे रघुराज के कानों से टकराए और प्रतिध्वनि करते हुए उन के हृदय में धारदार बरछियों से उतर गए. ●

हमारे घर में दूध कभी कम नहीं पड़ता...

क्योंकि हमारा दूधवाला बीस से अधिक वर्षों से हमारा दोस्त रहा है

जी हां, अमूल मिल्क पावडर हमेशा भरोसेमंद दोस्त साबित हुआ है. घर में अमूल हो तो दूध कम पड़ने का सवाल ही नहीं उठता... फिर चाहे दूध की ज़रूरत दही जमाने, खीर, हलवा, केक, मिल्क शेक, रसगुल्ले, गुलाब जामुन बनाने के लिये हो या फिर एक कप मज़ेदार चाय के लिये.

आपको तो पता है कि दही सही न जमे, पुडिंग ठीक न बने तो घर में छोटे-बड़े सभी नाक-भौं चढ़ाना शुरू कर देते हैं. अमूल मिल्क पावडर हो तो इस चिन्ता से जान छूट जाती है, क्योंकि दूध की क्वालिटी सदा एक सी बढ़िया होती है और हर चीज़ सही मज़ेदार बनती है. क्यों न हो अमूल की क्वालिटी पिछले बीस से अधिक वर्षों से एक जैसी बढ़िया रही है.

अमूल
मिल्क पावडर
जैसे घर में ही डेरी.

OPERATION FLOOD

वितरक : गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड, आणंद
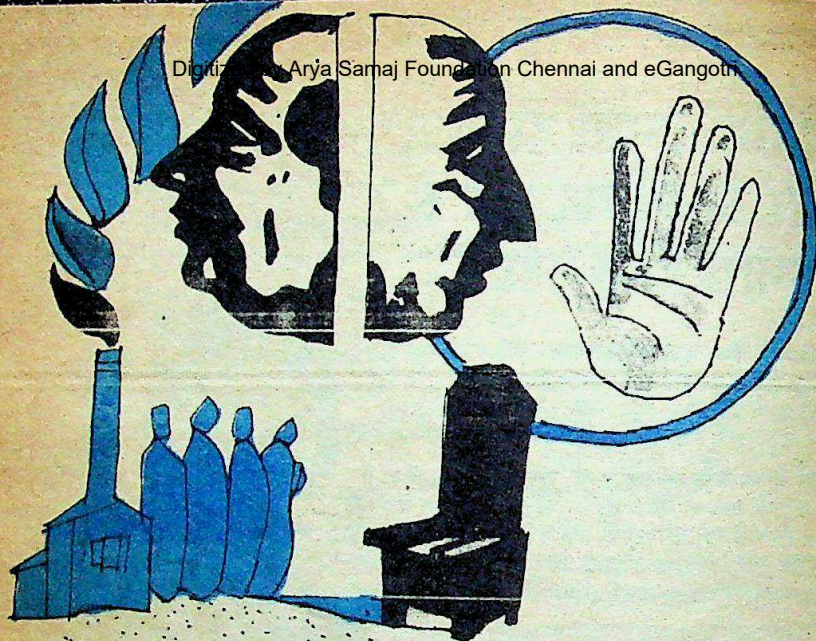
दो मुंहे

हम सब दोमुंहे हैं
कमजोरों पर शेर, मजबूतों के चूहे हैं
हम सब दोमुंहे हैं.
आज हमारे पास
व्याख्यानों की बंदूकों में
आदर्शों का टोटा है
और अपनी जरूरत का
सुयोग आने पर,
हम ने अपने ही हाथों,
उन आदर्शों का गला
भी खूब घोंटा है.
वह जो दूर
चमचमाती कुरसी है न?
यदि उस पर दूसरा कोई बैठा हो
तो बिलकुल बंटाधार है
और यदि अपने राम बिराजे
तो सचमुच बेड़ा पार है.
लाठीधारी बाबा की ग्रंथीवाली से
सुबह में त्याग, अहिंसा
और उपकार उधार
लाते हैं
और रात होते ही
स्वार्थों की तलवार से
उन सब की गरदन उतार आते हैं.
निरस्त्रीकरण, मानवतावाद
और शांति की ओट में
लगते हैं शस्त्रों के अंबार
एकदूसरे के घर दबोचने का कुचक्र
और पर्यावरण में दमघोंटू फुत्कार.
अंधेरों की मुट्ठी में उजालों की रूहें हैं
हम सब दो मुंहे हैं.

— अमरेंद्रनारायण

दुस्साहस एक अबला का

पृष्ठ 166 का शेषांश

चला था. हवेली के चौकीदार ने उन्हें देखते ही कहा, "छोटे सरकार भीतर ही हैं, बड़े मालिक."

बड़े मालिक लल्लू का नाम सुनते ही खौल उठे और कहा, "आज पहले उस का खून करूंगा. बाद में डाक्टर को दिखाऊंगा."

पर दाईजी ने समझदारी से काम लिया और उस वक्त बात टल गई.

लेडी डाक्टर ने कनिया का मुआयना कर के कहा, "यह मां बनने वाली हैं, पर बेहद कमजोर हैं. इसलिए इन्हें ताकत की दवा लिखे दे रही हूं. परेशानी की कोई बात नहीं."

पर दाईजी एवं जेठजी को मानो सांप सूंघ गया था. दोनों सन्न रह गए थे. अब क्या करें?

डाक्टर ने पूछा, "क्या बात है? आप लोग कुछ परेशान लग रहे हैं?"

पर दाईजी ने बात संभाल ली, "नहीं तो, कोई बात नहीं है."

घर पर आ कर बड़े मालिक सीधे लल्लू के कमरे में चले गए और दहाड़े, "कमीने, बदकार, तू ने हमारे खानदान की नाक कटवा दी."

लल्लू उस वक्त नशे में धुत्त थे. उसी झोंके में बोले, "कौन सा आसमान टूट गया है?"

मालिक चिल्लाए, "तुझे पता है शिवप्रताप की विधवा मां बनने वाली है तेरे कारण."

"तो गर्भपात करा दीजिए. घावफुंसी, फोड़ानासूर काट कर ही तो साफ किया जाता है."

बड़े मालिक का गुस्सा अब पराकाष्ठा पर था. उन्होंने झपटकर लल्लू की गरदन पकड़ ली और अपनी चौड़ी हथेलियों से उस की गरदन दबाने लगे. लल्लू चीखने लगे. दोनों स्त्रियां भागी हुईं उस कमरे में आ गईं.

दाईजी ने बीचबचाव किया और बोलीं, "दुष्ट, तीन बार तेरा ब्याह तय किया, पर तूने हर बार इनकार कर दिया. यही सब करने की खातिर कुंआरा सांड बना बैठा है."

दाईजी अपने बेटे को खींच कर दीवानखाने में ले आईं और दोनों मांबेटा घंटों उस मुसीबत से छुटकारा पाने का उपाय सोचते रहे. बड़े सरकार रुद्रप्रताप की परेशानी यह थी कि गैरकानूनी गर्भपात किस डाक्टर से करवाएं. उन की प्रतिष्ठा धूल में मिल जाएगी. नहीं कराते तो रामपुर और पूरे मिरजापुर में जो ऊंची नाक किए चलते थे, वह कट जाएगी. आखिर, एक रास्ता सूझ ही गया.

दाईजी ने याद दिलाया कि शिवप्रताप की पहली पत्नी के भाई उसी शहर में डाक्टर हैं. विलायत से लौटे हैं. याद आते ही बड़े सरकार झटपट तैयार हो गए और रात को खाने पर उन्हें बुला लिया.

कनिया ने अपनी शादी में अपनी सौत के भाई को देखा था. पर कनिया तब लाजवंती की कोमल पत्तियों की तरह थी, जो आतेजाते लोगों के पांव भर देखा करती है. अब जब वह कनिया के सामने आए और बोले, "कैसी हो बहन?" तो कनिया का रोमरोम गुहार करने लगा. दाईजी और भानुप्रताप लल्लू दोनों ने घर पर ही 'सबकुछ साफ कर लेने' का निश्चय किया. कनिया को बुलाया गया. वह जा कर खड़ी हो गई और निरीह नजरों से अपने भाई की ओर देखा. दाईजी ने कहा, "मुन्ना, तू अपना काम शुरू कर दे. जितनी जल्दी काम हो जाए, कलंक धुल जाए."

पर कनिया ने कहा, "नहीं, मैं ऐसा नहीं होने दूंगी."

कनिया के इस रुख से सभी घबरा गए, पर उन्होंने अपनी सौत के भाई के पांव पकड़ कर कहा, "मुझे बचा लीजिए, भैयाजी. एक पाप में मुझे जबरन घसीटा गया. अब हत्या का पाप में जानबूझ कर नहीं होने दूंगी. यह बच्चा होगा, मेरे बुढ़ापे का सहारा, मेरे वैधव्य की नौका बन कर मुझे पार लगाएगा."

रुद्रप्रताप गरजे, लाख डराया धमकाया, फूटी कौड़ी न देने की घोषणा कर दी, पर कनिया अपने संकल्प पर अडिग रही थी.

आखिरकार रुद्रप्रताप अपनी मां को ले कर कमरे से निकल गए और डा. विपिन से दूसरी सुबह आने का वादा कर के चले गए. खाना किसी ने नहीं खाया. जमींदार रुद्रप्रताप को लोकलाज की चिंता थी. कनिया को अपने जीवन की. वह दरिद्र पिता की बेटी थीं. जानती थीं कि वहां उन्हें एक दिन भी अब आश्रय नहीं मिलेगा.

उस रात विचारों में उलझी कनिया सो नहीं पाई. उठ कर शौचालय जाने लगी. बरामदे में एक छाया सी दिखाई दी. कनिया झट खंभे की ओट में हो गई और चिल्ला पड़ी. दौड़ कर आई. दाईजी ने देखा, भानुप्रताप पिस्तौल लिए खड़े थे और अनवरत गालियां बरसाए जा रहे थे. वह पागलों की तरह फायर कर रहे थे.

विपिन को जब इस घटना की सूचना मिली तो वह भागे हुए आए. कनिया अब घायल शेरनी की तरह हो चली थी. बोली, "भैयाजी, लल्लू भैया कुकर्म कर के अब उस पर परदा डालना चाहते हैं. भाई साहब की भी यही राय है, पर आप को मैं अपना पंच मानती हूं. मुझे बताइए, मैं कहां गलत हूं."

विपिन ने गला साफ कर के कहा, "ऐसे बच्चे को समाज स्वीकार नहीं करेगा."

कनिया ने नागिन की तरह फुंकारते हुए कहा, "समाज तो विधवा को भी नहीं स्वीकारता, मैं बच्चे को पालपोस कर बड़ा करूंगी. वह मुझे स्वीकार करेगा, मैं उसे. यह मेरा फैसला है."

कनिया वहीं रह गई. विपिनजी ने उन्हें बतौर बहन संरक्षण दे दिया. वहीं देवप्रकाश का जन्म हुआ. पढ़ालिखा और अब एस.पी. बन गया था. भानुप्रताप का अब तक कोई पता नहीं था.

इतना सुना कर दाईजी बुरी तरह खांसने लगीं. मैं ने पानी पिलाया तो वह थोड़ी संयत हुईं और बोलीं, "तब से, तुम्हारी सास कनिया से नाराज हैं. पर मैं हर साल काशी जा कर उसे देख आती हूं."

अचानक मेरी निगाह देवप्रकाश द्वारा दिए गए निमंत्रण पत्र पर पड़ी. लिखा था:

डाक्टर विपिन, अपने भानजे देवप्रकाश आई.पी.एस. के विवाह के शुभ अवसर पर (सुपुत्र दिवंगत शिवप्रताप सिंह) आप सभी को हार्दिक निमंत्रण देते हैं.

मैं कभी कार्ड को देखती थी, कभी कनिया के साहस की दाद देती थी. आखिर, उन्होंने अपने मृतक पति को ही देवप्रकाश का पिता बना दिया. पहले केवल दाईजी जाने को तैयार थीं. पर अब मैं ने भी निश्चय कर लिया था कि उस तपस्विनी के दर्शन जरूर करूंगी, जिस ने अपने दुस्साहस से पाप को भी पुण्य में बदल दिया है. ●

लेख • रीता ग्रोवर

पति का तबादला पत्नी का कैरियर

यों तो तबादलों से कई असुविधाएं होती हैं, जो संबंधित व्यक्ति तथा उस के परिवार को इच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक झेलनी पड़ती हैं. परंतु तबादलों वाली नौकरियों में कार्यरत पुरुषों की पत्नियों को उन का तबादला अपने कैरियर की दृष्टि से सब से अधिक अखरता है. पति एक स्थान पर स्थायी हो तो पत्नी पारिवारिक उत्तरदायित्व निभाते हुए भी

अपने कैरियर की राह पर बढ़ सकती है, जब कि दूसरी स्थिति में यह संभव नहीं होता. समयसमय पर तबादला होने वाले वर्ग में जो महिलाएं आती हैं, उन के सामने तीन विकल्प होते हैं- (1) पति से अलग एक स्थान पर स्थिर रह कर कैरियर की राह पर बढ़ती जाएं. (2) पति के हर तबादले पर अपनी वर्तमान नौकरी से त्यागपत्र दे दें और नए स्थान पर नई नौकरी करें. (3) अपने कैरियर व आर्थिक स्वतंत्रता का मोह त्याग कर केवल गृहिणी बन कर रहें.

सेना के अफसर की पत्नी डाक्टर रंजना प्रथम विकल्प वाली महिलाओं की श्रेणी में आती हैं. डा. रंजना विवाह से पूर्व जहां कार्यरत थी वहां उस की आय चार अंकों में थी. विवाहोपरांत उस ने काफी समय तक नौकरी जारी रखी. इस के लिए वह कभी बिना वेतन की लंबी छुट्टी ले कर पति के साथ रहती तो कभी पति अपनी छुट्टियों में उस के साथ रहता. पर ऐसा कब तक चलता? इस बीच छोटेबड़े स्थानों पर पति के तबादलों से उसे एहसास हो गया कि नौकरी छोड़ने का अर्थ अपना बनाबनाया कैरियर समाप्त कर देना है. अतः आपसी समझौते से उन्होंने अलग रह कर अपनी नौकरी जारी रखी. कैरियर की राह पर तो रंजना सफलतापूर्वक आगे बढ़ती रही, पर उस का पारिवारिक सुख पति या पत्नी की छुट्टियों का मुहताज हो गया.

अगर पति के तबादले पत्नी के कैरियर और आर्थिक स्वतंत्रता का हनन करते हैं तो पत्नी निश्चय ही कुंठा तथा अन्य मानसिक कष्टों का शिकार होने लगती है. तबादले की स्थिति आने पर दोनों को वह रास्ता अपनाना होगा जो घर और बच्चों दोनों के लिए सुविधाजनक हो.

डा. रंजना व उस के वर्ग की कुछ अन्य महिलाओं से बातचीत करने पर यह निष्कर्ष निकला कि पति से अलग रहने के कारण उन का पारिवारिक जीवन अत्यंत अस्तव्यस्त सा होता है. बल्कि यों कहना चाहिए कि पारिवारिक सुख उन्हें प्राप्त ही नहीं होता. कभी छुट्टियों में पति के पास चले गए अथवा कभी पति छुट्टी ले कर आ गए. इन चंद दिनों की छुट्टी को छुट्टी अथवा बदलाव तो कहा जा सकता है, पर पारिवारिक सुख नहीं.

इस वर्ग में जहां पत्नी को पति का सहयोग प्राप्त न हो वहां पत्नी की जिद और महत्त्वाकांक्षा पतिपत्नी में मनमुटाव भी उत्पन्न कर देती है, जिस के परिणाम अकसर अच्छे नहीं निकलते. बच्चों को भी माता और पिता दोनों का प्यार और मार्गदर्शन एक साथ नहीं मिल पाता जो कि उन के सही विकास के लिए अत्यंत आवश्यक होता है. इस विकल्प को स्वीकार करने वाले वर्ग में वे ही महिलाएं हैं जो या तो बहुत ही महत्त्वाकांक्षी हैं या परिवार में आर्थिक योगदान देना उन की विवशता है.

जो महिलाएं किसी भी स्थिति में अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों से आंखें मूंदना नहीं चाहतीं और न ही किसी प्रकार अपनी आर्थिक स्वतंत्रता की इच्छा को दबा पाती हैं अथवा परिवार में जितना भी बन पड़े, आर्थिक योगदान देना उन की विवशता है, वे दूसरे विकल्प से समझौता कर लेती हैं. परंतु इस समझौते में उन्हें जो मानसिक पीड़ा पहुंचती है, उस का अनुभव भुक्तभोगी ही कर सकता है.

छोटे से कसबे के एक छोटे से कानवेंट स्कूल में चार सौ रुपए पर कार्यरत बी.ए., बी.एड. चंदा का कहना है, "हमारे साथ की अन्य महिलाएं सरकारी स्कूलों व अन्य केंद्रीय विद्यालयों में चार अंकों में कमा रही हैं. हर साल वेतन वृद्धि ले रही हैं, पर हम खानाबदोशों के लिए न कोई वरिष्ठता,

दफ्तर में कार्यरत महिला : पता नहीं कब पति का तबादला हो जाए और यह बनता हुआ कैरियर बिगड़ जाए.

न कोई वेतनवृद्धि, नौकरी भी कहीं मिलती है कहीं नहीं भी मिलती. कई बार स्तर पहले से भी नीचा हो जाता है. पिछले स्टेशन पर मैं 500 रुपए ले रही थी, यहां सिर्फ 400. पर करें क्या? और कोई चारा भी तो नहीं."

इस वर्ग में एक नहीं अनेक चंदाएं हैं, जिन्हें अकसर विवशतावश अपनी योग्यता से नीचे स्तर की नौकरी से समझौता करना पड़ता है. अच्छे अंकों से अंगरेजी साहित्य में एम.ए. पास किरन सेना के छोटे से स्कूल में 300 रुपए माहवार पर काम कर रही है.

बी.ए., बी.एड. और शास्त्रीय तथा सुगम संगीत की गायिका सुवर्णा को कभी दोतीन माह में रेडियो पर एकाध कार्यक्रम पा लेने में ही संतोष करना पड़ता है क्योंकि उस का पति एक मकान बनाने वाली कंपनी में काम करता है. यह कंपनी हर दोतीन साल बाद अपने काम के ठेके के अनुसार ठिकाना बदल लेती है. एक अन्य सैन्य अधिकारी की डबल एम.ए. पत्नी केवल 300 रुपए की नौकरी के लिए कितने ही चक्कर काट चुकी है. बहुत कम महिलाओं को ही संतोषजनक काम मिल पाता है और उन्हें भी अपनी वरिष्ठता तो गंवानी ही पड़ती है. निरंतर संघर्ष करते रह कर भी उन्नति न कर पाने की निराशा के कारण, इस वर्ग की महिलाओं में हीनभावना और कुंठा पनपने लगती है जो न तो व्यक्तिगत रूप से अच्छी होती है, न ही परिवार की खुशहाली के लिए.

अंतिम विकल्प स्वीकार करने वाली महिलाओं में कुछ एक परंपरावादी महिलाओं (जिन्हें नारी की आर्थिक स्वतंत्रता में कोई रुचि नहीं) को छोड़ दें तो अधिकांश महिलाएं ऐसी मिलती हैं जिन के लिए यह विकल्प महत्त्वाकांक्षा का अभाव अथवा आर्थिक स्वतंत्रता के प्रति अनाकर्षण का परिणाम नहीं, अपितु परिस्थितियों से समझौता मात्र है.

अपना ही उदाहरण दूं तो पति के साथ रहने के मोह ने मुझे प्रथम विकल्प स्वीकार करने से रोका. संघर्ष अधिक व नगण्य की निराशा ने दूसरे विकल्प को ठुकराया. आत्मनिर्भरता की चाह ने ब्यूटी पार्लर

खोलने को उकसाया, परंतु यह भी संभव न हुआ. आज के कठिन प्रतियोगिता के युग में ऐसे काम के लिए एक स्थान पर स्थायी रूप से टिकना आवश्यक है. काम जमाने की स्थिति आने तक पति का तबादला हो जाना सब समाप्त कर देता है. ऐसी स्थिति में तीसरे विकल्प से समझौता करने के अतिरिक्त क्या बचा रहता है?

उक्त तीन विकल्पों में से किसी एक विकल्प से समझौता करना इस वर्ग की महिलाओं की विवशता है. समस्या यह है कि किसी भी विकल्प को अपनाया जाए, जीवन में कहीं न कहीं कमी का एहसास बना ही रहता है. प्रथम को अपनाने से पारिवारिक जीवन का मोह त्यागना पड़ता है, द्वितीय को अपनाने से इतना संघर्ष कर के भी कुछ न पा सकने की कुंठा और तीसरे विकल्प में वर्षों के परिश्रम द्वारा अर्जित ज्ञान और प्रतिभा का सदुपयोग न कर पाने का क्षोभ.

समस्या का समाधान सिर्फ वैयक्तिक

रामकृष्ण ने इस समस्या का समाधान अपने ढंग से किया. जब उन की पत्नी का ब्यूटी पार्लर चल निकला तो उन्होंने अपनी तबादलों वाली नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और स्वयं भी व्यापार की दुनिया में कूद पड़े. आज वे दोनों अपनेअपने क्षेत्र में सफल हैं व एक साथ रहते हुए पारिवारिक सुख भी भोग रहे हैं.

समस्या का यह समाधान वैयक्तिक रूप से रामकृष्ण परिवार के लिए भले ही उचित रहा हो परंतु व्यावहारिक व सामाजिक रूप से यह समाधान अंतिम नहीं है. तबादलों की नौकरी में कार्यरत हर पुरुष न तो नौकरी छोड़ कर अपना व्यापार कर सकता है और न ही इस प्रकार देश की कार्यप्रणाली समुचित रूप से चल सकती है.

अतः सरकार को चाहिए कि वह भी इस दिशा में कुछ कार्य करे.

केंद्रीय विद्यालय की एक अध्यापिका जिस के सैन्य अधिकारी पति का तबादला जम्मूकश्मीर से दक्षिण भारत में हो चुका है, आजकल अपने तबादले की प्रतीक्षा में लंबी छुट्टी ले कर बैठी है. उस का कहना है कि ऐसे अवसरों पर इतना समय लग जाता है कि वह अकेले रहने के सिवा बिना वेतन की लंबी छुट्टी लेना अधिक अच्छा समझती हैं.

अब तक के अपने पांच साल के कार्यकाल में उसे एक बार छः माह प्रतीक्षा करनी पड़ी, दूसरी बार दो वर्ष. पैसे का नुकसान हुआ, वेतनवृद्धि भी नहीं हुई और एक बार चेतावनी भी मिली. अब वह इसी चिंता में है कि इस बार प्रतीक्षा कितनी लंबी होगी, नौकरी बनी रहेगी अथवा नहीं? सरकार चाहे तो इस प्रकार की समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकती है.

मानसिक कष्ट

सरकार की उपेक्षा और पति के तबादलों की विवशता के कारण महिलाओं का यह वर्ग जिस मानसिक कष्ट को झेल रहा है, उसे देखते हुए आज की जागरूक व महत्त्वाकांक्षी महिलाएं विवाह के संदर्भ में एक स्थान पर स्थायी रूप से कार्यरत पुरुष को ही प्राथमिकता देती हैं. मेडिकल कालिज की कुछ छात्राओं से इस विषय पर बातचीत हुई तो सब की प्राथमिकता एक ही थी कि वे विवाह को कैरियर की राह में बाधक नहीं साधक बनाना चाहती हैं.

आज वह जमाना नहीं रहा जब मातापिता लड़कियों को किसी भी खूंटे से बांध देते थे और वे चौकेचूल्हे की सीमा में बंधी जिंदगी गुजार देती थीं. आज लड़कियां डाक्टर हैं, वकील हैं, इंजीनियर और प्रोफेसर हैं, वैज्ञानिक और व्यापारी हैं. हर क्षेत्र में उन की पहुंच है. देश की इस प्रतिभा का बड़ा हिस्सा लंबे अरसे की उपेक्षा के कारण व्यर्थ हो रहा है. सरकार को चाहिए कि इस प्रतिभा की ओर ध्यान दे, उसे देश की उन्नति में भाग लेने का अवसर दे, जिस से व्यक्ति और समाज दोनों लाभान्वित हो सकें. ●
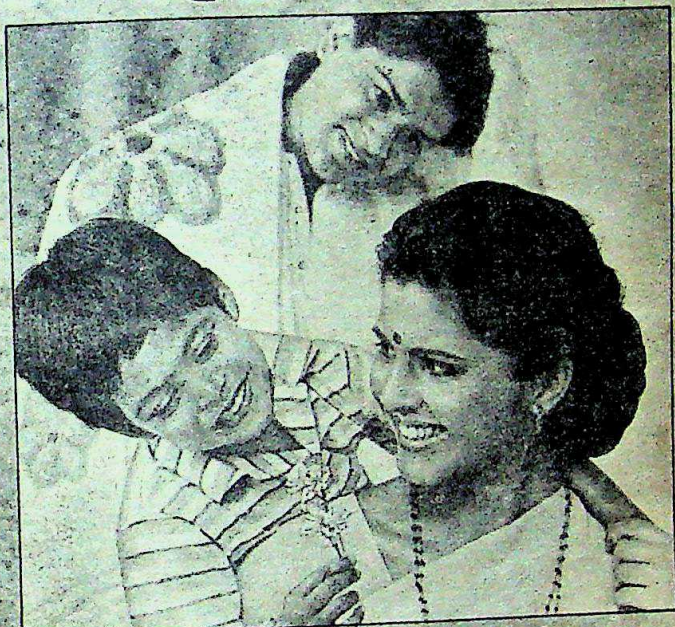
विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए विदेशी पर्यटकों को पर्यटन संबंधी सुविधाएं प्रदान कर गुजरात भ्रमण की ओर आकर्षित किया जाता है.
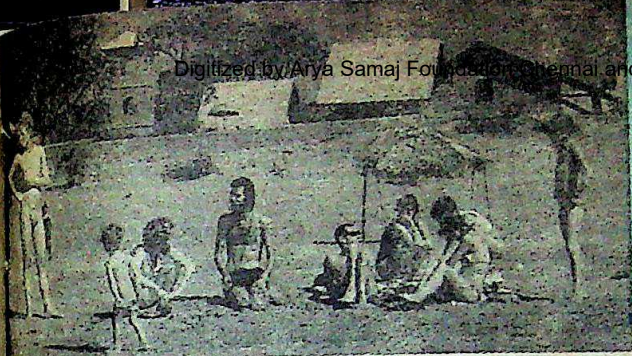
गुजरात पर्यटन विभाग के क्षेत्रीय प्रबंधक

कुंवर जयेंद्र सिंह के. झाला से एक भेंट

भेंटवार्त्ता • नीलम कुलश्रेष्ठ

किसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से जुड़ी प्राचीनतम स्थापत्य वाली मजबूत विशाल इमारत हो, कुहासे से ढके पहाड़ों के शिखर हों, हवा के झोंकों पर झूलती हुई लहरें हों या दूरदूर तक फैले जंगल में उछलतेभागते चीतल हों ; मन मशीनी जिंदगी से अपना दामन छुड़ा कर इन सब में डूब जाना चाहता है, चाहे थोड़े दिन के लिए ही सही. शायद इसी को पर्यटन कह सकते हैं.

शिक्षा के विकास के साथ लोग यह समझने लगे हैं कि पर्यटन का भी जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है. इधर कुछ वर्षों से विभिन्न राज्यों के पर्यटन विभागों के रंगीन विज्ञापनों ने भी दुनिया में तहलका सा मचा रखा है. लोगों का मन उन विज्ञापनों के आकर्षण में बंध कर उन स्थानों को देखने के लिए लालायित हो उठता है. अब प्रश्न उठता है, अपने पर्यटन स्थलों पर आने वाले पर्यटकों को पर्यटन विभाग कितनी और क्या
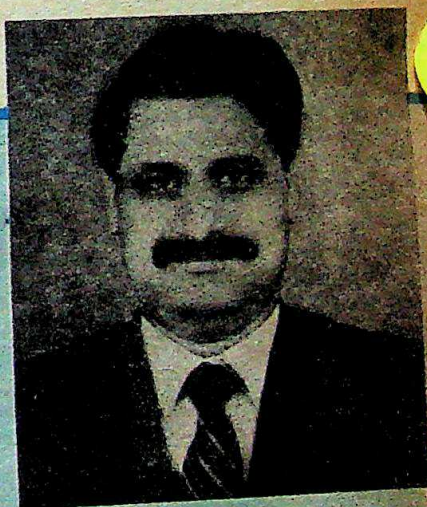
सिर्फ़ प्यार ही नहीं चुका सकता इनकी दवाओं के बिल.
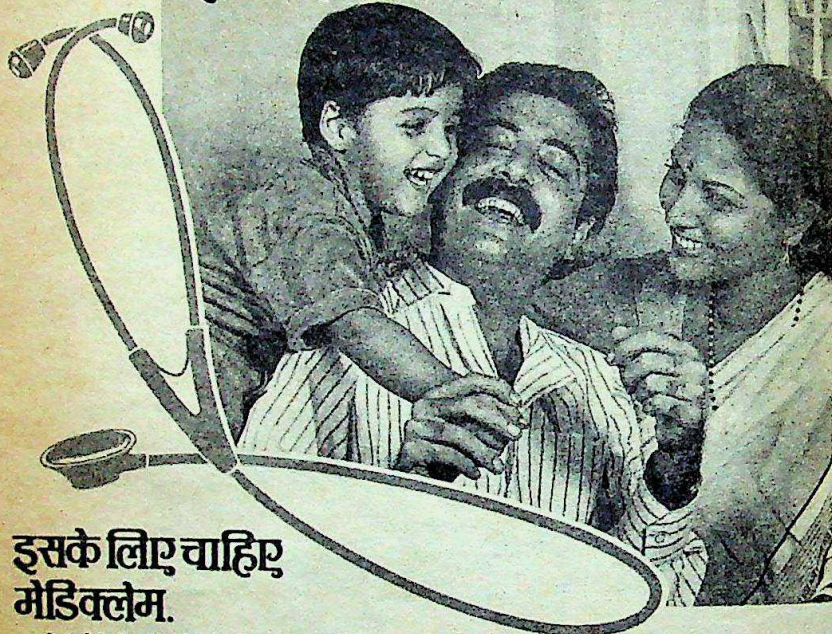
इसके लिए चाहिए मेडिक्लेम.

जी हां, मेडीक्लेम की हॉस्पिटलाइज़ेशन और डॉमिसिलियरी हॉस्पिटलाइज़ेशन बेनिफ़िट पॉलिसी आपके परिवार के लिए है एक अनोखा वरदान.

आपका ढेर सा प्यार... आपकी कंपनी की कोई भी मेडीकल योजना.... बड़ी-बड़ी बीमारियों, ऑपरेशन और दुर्घटना में इलाज पर होने वाले खर्च का बिल नहीं चुका सकती.

इसीलिए आपको चाहिए मेडीक्लेम. मेडीक्लेम के ज़रिए आप कई तरह के चिकित्सा लाभ हासिल कर सकते हैं– वह भी आपकी आवश्यकता, आपकी ज़रूरतों के अनुरूप.

यहां तक कि आप घर पर रहकर इलाज करने का खर्च भी पा सकते है.

साथ ही आप पारिवारिक-छूट और करों में छूट का लाभ भी उठा सकते हैं.

यदि आप अपने परिवार को सही मायने में प्यार करते हैं तो मेडीक्लेम योजना के अंतर्गत इनका बीमा कराइए.

जो आपको कम खर्च में दिलाए कहीं ज़्यादा सुरक्षा, कहीं ज़्यादा लाभ और यही है आपके प्यार का सच्चा सुबूत.

प्रिमियम प्रति वर्ष रु.	हॉस्पिटलाइज़ेशन रु.	डॉमिसिलियरी हॉस्पिटलाइज़ेशन रु.
२००	१०,५००	३,१००
२५०	१७,६००	—
३५०	२५,५००	—
६०० *	३७,७५०	५,२५०
८४० *	५२,७५०	७,४००
१,३०० *	८२,५००	११.५००

आयु सीमा ५ से ७० वर्ष

★ *अतिरिक्त प्रीमियम अदा करने पर व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा भी उपलब्ध.*

MEDICLAIM

मेडीक्लेम के प्रस्तुतकर्ता न्यू इंडिया एश्योरन्स

NEW INDIA ASSURANCE

A subsidiary of the General Insurance Corpn. of India.

ख़तरे का कोई भी नाम....बीमा करना हमारा काम.

CONTOUR ADS-NIA-278E/87 HIN

सुविधाएं प्रदान करता है
सुखसुविधाओं का कितना ध्यान रखता है.

आजकल विश्वभर में पर्यटकों को सुविधाएं देने में देश के सभी पर्यटन विभागों में कड़ी प्रतिस्पर्धा चल रही है. सभी देश चाहते हैं कि अधिक से अधिक पर्यटक उन के पर्यटन स्थलों की तरफ आकर्षित हों और वहां आ कर उन की मेहमाननवाजी उन्हें इतना मोह ले कि भविष्य में भी वे छुट्टियों में उन्हीं के यहां आना पसंद करें.

किसी भी पर्यटन विभाग के अधिकारी पर्यटकों को समुचित सुविधाएं देने के लिए क्याक्या प्रयास करते हैं इस विषय पर सविस्तार मेरी बातचीत हुई गुजरात पर्यटन विभाग के बड़ोदरा कार्यालय के युवा उत्साही प्रादेशिक व्यवस्थापक (रीजनल मैनेजर) व मार्केटिंग मैनेजर कुंवर जयेंद्रसिंह के. झाला से, जो इस कड़ी प्रतिस्पर्द्धा को चुनौती के रूप में स्वीकार रहे हैं. वे समुचित निरीक्षण में अपने क्षेत्र के पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की सुखसुविधाओं पर विशेष ध्यान देते हैं, जिस से गुजरात के पर्यटन स्थल दूसरे प्रदेश के पर्यटकों में भी लोकप्रिय हों.

प्रत्येक प्रदेश का पर्यटन विभाग अपनी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक संपदा के अनुसार पर्यटन स्थलों का चुनाव कर के उन का विकास करता है. उस की हमेशा यही कोशिश रहती है कि पर्यटकों की हर सुविधा का ध्यान रखा जाए और उन का वहां आ कर भरपूर मनोरंजन हो.

पर्यटकों के लिए सब से बड़ी सुविधा होती है, भ्रमण का आयोजन. अपनी लोकप्रियता बरकरार रखने के लिए प्रत्येक पर्यटन विभाग सजग रहता है कि पर्यटकों की रुचि पहचान कर उन के लिए विभिन्न कितने प्रकार के होते हैं? जयेंद्रसिंह झाला इस पर प्रकाश डालते हैं, "हमारा विभाग चारपांच पर्यटन स्थलों को एकसाथ दिखाने के लिए इकट्ठे भ्रमण या आयोजित प्रवास की व्यवस्था करता है. इस में हम पर्यटकों की सुविधा के लिए खाने, रहने, परिवहन व गाइड की व्यवस्था करते हैं या यह भी कहा जा सकता है कि कुछ रुपया दे कर पर्यटक निश्चित हो जाता है. उसे घुमाने और उस की पूरी सुखसुविधाओं की जिम्मेदारी भी हमारे विभाग की हो जाती है."

अन्य कौन से भ्रमणों की व्यवस्था की जाती है?

"कोई त्योहार या कोई विशिष्ट मेला हो या नवरात्रि ही क्यों न हो, हम लोग धार्मिक प्रवास की व्यवस्था करते हैं, जिस में लोग सोमनाथ, द्वारका, पालीताना या गिरनार जाना पसंद करते हैं. जंगल के जीव जंतुओं में रुचि रखने वाले लोगों के लिए वन्य जीवन संबंधी प्रवास की भी व्यवस्था की जाती है. गुजरात के पास अपनी वन संपदा है. हम लोग इस भ्रमण की इस तरह व्यवस्था करते हैं कि वे सासनगीर, नलसरोवर व ब्लेक बग अभयारण्य भी एकसाथ व सुविधा से देख सकें.

"जिन प्रदेशों के पास अपने कुछ विशेष उद्योग हैं उन प्रदेशों के पर्यटन विभाग इन उद्योगों के शैक्षणिक भ्रमण की भी व्यवस्था करते हैं. गुजरात वस्त्र उद्योग को दिखाने के लिए 'टेक्सटाइल टूर' की भी व्यवस्था की जाती है."

क्या आप दूसरे प्रदेशों के लिए भी भ्रमण की व्यवस्था करते हैं?

"हां, बिलकुल ऐसा किया जाता है,

कला और संस्कृति के केंद्र गुजरात प्रदेश के भ्रमण की इच्छा हर पर्यटक रखता है. गुजरात पर्यटन विभाग ने पर्यटकों की सुविधा के लिए ऐसे क्या प्रबंध किए हैं कि आज हर पर्यटक गुजरात भ्रमण के लिए आकर्षित हो रहा है.
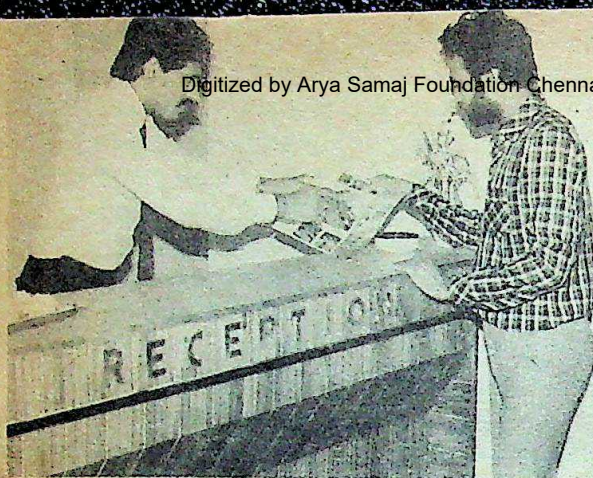
अनुसार पर्यटन स्थलों की जानकारी दी जाती हैं.

चाहते हैं. बड़ोदरा स्थित गुजरात पर्यटन के दफ्तर में पर्यटकों की इस रुचि को ध्यान में रखते हुए इन पोस्टरों को वितरित करने की भी व्यवस्था है. इसी तरह देश के अन्य पर्यटन विभाग भी पोस्टर बेचने की व्यवस्था करते हैं."

जब पर्यटन का मौसम नहीं होता या बच्चों की छुट्टियां नहीं होतीं, तब उन दिनों आप पर्यटन स्थलों पर ऐसी कौन सी विशेष सुविधाएं देते हैं, जिन से पर्यटक वहां आना पसंद करें?

"जब पर्यटन का मौसम नहीं होता है तो हम विशेष छूट वाले इकट्ठे भ्रमण के प्रबंध की सुविधा देते हैं. पर्यटन स्थलों पर विशेष खेलकूदों का आयोजन करते हैं और उन्हें विज्ञापित भी अच्छी तरह करते हैं. इन स्थलों पर राक 'क्लाईंबिंग,' 'ट्रेकिंग,' समुद्री स्थलों पर 'वाटर स्पोर्ट्स' या इन की प्रतियोगिता का आयोजन करते हैं. कुछ नई सुविधाएं मिलने की आशा में पर्यटक बहुत उत्साहित हो कर इन में भाग लेते हैं. यहां से एक पर्यटन स्थल चोखाड पर एक गुरु को भेज कर वहां योग सिखाने का कार्यक्रम रखा गया. उस से भी लोग आकर्षित हो कर वहां पहुंचे थे.

"जिन पर्यटन विभागों के क्षेत्र में पहाड़ हैं और जहां शीतकाल में समुचित बर्फ पड़ती है, वहां पर इस ऋतु में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बर्फ के खेल स्कीइंग व स्केटिंग का आयोजन किया जाता है. इन की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं. पर्यटक बर्फ की चादर पर मिली इस सुविधा का लुत्फ उठाने पहाड़ों की तरफ चल देते हैं."

सभी प्रदेशों में पर्यटन विभागों की सब

ताकि हमारे प्रदेश के पर्यटकों को आसपास के प्रदेशों में घूमने का मौका मिले. हमारा विभाग सौराष्ट्र दर्शन व दक्षिण गुजरात दर्शन भ्रमण के साथसाथ गुजरात, राजस्थान दर्शन, मांडू, उज्जैन, इंदौर दर्शन का भी आयोजन करता है. कभीकभी 25-50 लोगों का दल किसी दूसरे विशेष स्थान के लिए जाना चाहता है तो हम लोग उन के लिए वाहन व रहने की व्यवस्था करते हैं.

"प्रत्येक प्रदेश का पर्यटन विभाग अपने पर्यटकों को सुविधा देने के लिए अपने आसपास के प्रदेश में पर्यटन विभागों से भी सहयोग लेता है और उन के पर्यटकों को अपने यहां सुविधा देता है. जैसे गुजरात पर्यटन विभाग, मध्य प्रदेश पर्यटन, उत्तर प्रदेश व हि.प्र. के पर्यटन विभाग द्वारा आए पर्यटकों को 10 से 15% रिआयत देता है. उसी तरह वहां भी यहां से भेजे गए पर्यटकों को छूट मिलती है.

"पर्यटकों की सुविधा का खयाल रखते हुए अहमदाबाद में तो एक 'नेशनल काउंटर' ही खोल दिया गया है. जहां पर देश के सभी पर्यटन स्थलों की जानकारी उपलब्ध है.

"कुछ पर्यटक अपने दफ्तर या कंपनी के लिए गुजरात के त्योहारों, आदिवासियों या किसी विशेष स्थान के चित्र ले जाना

पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित वाटर स्पोर्ट्स में पर्यटक उत्साहित हो कर भाग लेते हैं और अपनी यात्रा का लुत्फ उठाते हैं.

से अधिक आमदनी का जरिया है विदेशी पर्यटक. वे उन्हें सुविधाएं दे कर अधिक से अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करना चाहते हैं. गुजरात के लोग अधिकतर विदेशों में बसे हुए हैं. इसलिए विशेष रूप से उन का ध्यान रखते हुए गुजरात पर्यटन विभाग ने एक योजना तैयार की है. इस के विषय में जयेंद्रसिंह झाला बताते हैं, "कोई भी विदेशी या प्रवासी भारतीय 1,100 अमरीकी डालर दे कर 25 वर्षों तक गुजरात पर्यटन विभाग का सदस्य बन सकता है. दरअसल प्रवासी भारतीय, विशेषकर गुजराती, विदेशों में बसे हुए हैं. प्रत्येक वर्ष वे छुट्टियों में भारत आते ही हैं. इस योजना में शामिल हो कर वे यहां के एक पर्यटन स्थल पर कुछ दिन बिता सकते हैं."

भारतीय पर्यटकों के लिए नई योजना

भारतीय पर्यटकों के लिए क्या आप ने इसी तरह की किसी योजना की सुविधा रखी है? मैं ने पूछा.
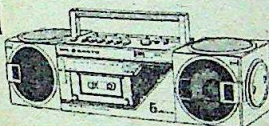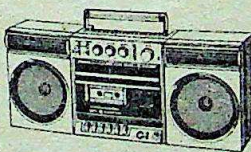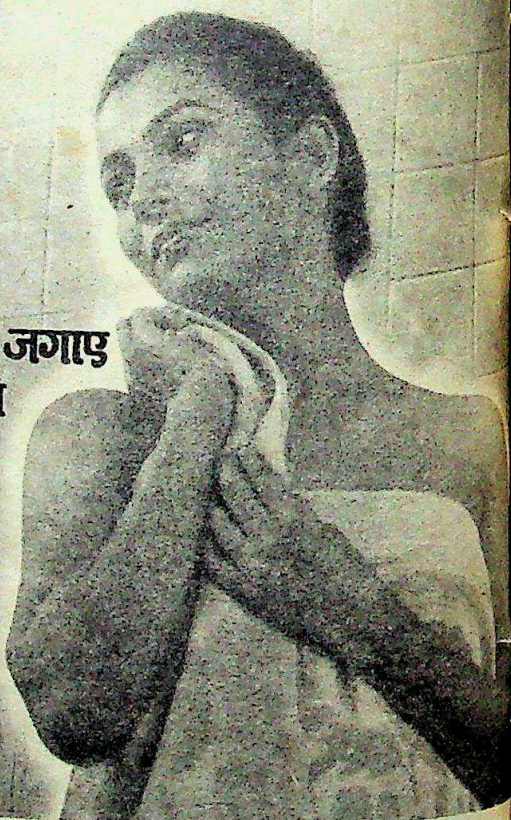
"पांच हजार रुपए दे कर कोई भी भारतीय हमारा 25 वर्ष तक सदस्य बन सकता है. हमारे चुने हुए कुछ पर्यटन स्थलों पर प्रतिवर्ष एक सप्ताह बिता सकता है. बाकी के स्थानों पर वह विशेष छूट का अधिकारी है."

अकसर देशों के पर्यटन विभाग लायंस क्लब, लियो क्लब या किसी बड़े संस्थान में अपने पर्यटन स्थलों के विषय में भाषणमाला की भी व्यवस्था करते रहते हैं, जिस से श्रोताओं को इन स्थलों की सविस्तार जानकारी की सुविधा मिल जाती है.

पर्यटकों की आर्थिक स्थिति के अनुसार ये विभाग 20 रुपए से ले कर 200 रुपए और कुछ स्थानों पर 500 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से आवास व्यवस्था करते हैं?

आप की अन्य कोई योजना?

कुंवर जयेंद्रसिंह के. झाला का उत्तर था, "आजकल की महंगाई के अनुसार ही हमें अपने विश्रामगृह व खानेपीने की दरें नियत करनी होती हैं. होता यह है कि उन दरों पर मध्यम वर्ग के लिए पर्यटन करने में मुशकिल होती है. इसलिए मैं स्वयं एक ऐसी योजना पर काम कर रहा हूं कि ये लोग भी हमारे विभाग से लाभ उठा कर पूरी तरह, सुविधाजनक तरीके से पर्यटन कर सकें. मैं ने इस योजना का नाम रखा है 'पे लेटर, ट्रेवल टुडे' यानी भुगतान बाद में, सफर आज. यदि किसी भी विभाग का व्यक्ति अपने मुख्य कार्यालय से यह लिखवा कर ले आए कि वह इस विभाग में काम करता है तो उस के घूमने की हम तुरंत ही व्यवस्था कर देंगे. बाद में वह किस्तों में पैसा दे सकता है."

पर्यटकों को कब से इस योजना की सुविधा मिल रही है?

"अभी तो मैं इस की रूपरेखा ही तैयार कर रहा हूं क्योंकि कुछ कानूनी मुद्दों पर भी विचार करना पड़ेगा. मान लीजिए वह कुछ महीने में ही नौकरी छोड़ कर चला जाए तो?"

क्या ही अच्छा हो यदि पर्यटन विभाग पर्यटकों की सुविधाओं व उन की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए योजनाएं तैयार करे, जिस से पर्यटन आम आदमी के लिए भी सुलभ हो सके. ●

घर पर आये हैं मेहमान
'फ्रेश वन्स' बढ़ायें आपकी शान
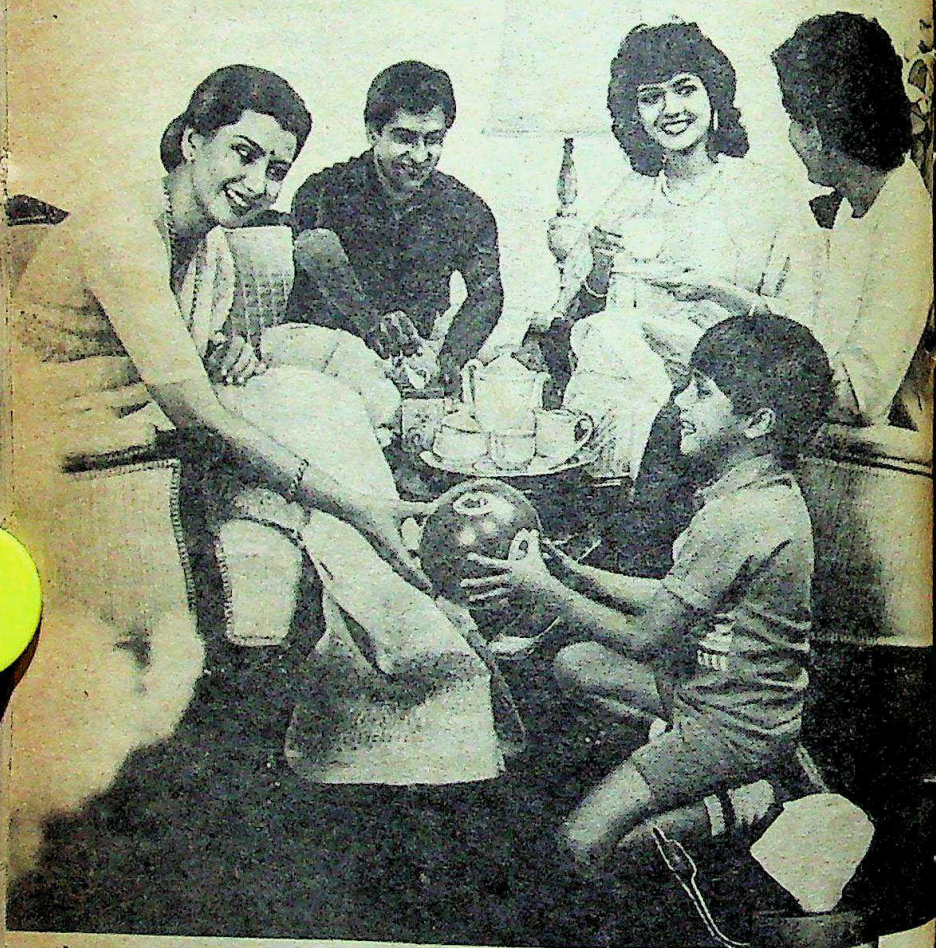
मेहमानों का जब हो आना, तब क्यों न फ्रेश वन्स से शुरू करें ताज़गी का फ़साना. फ्रेश वन्स भीगे-भीगे, ठंडे-ठंडे टिशूज़ हैं. इसीलिये तो ये चेहरे पे जमी धूल और पसीना मिनटों में गायब कर देते हैं. बस एक भीगा-भीगा ठंडा-ठंडा टिशू निकालिये, मेहमानों को दीजिए, और फिर देखिये वे कैसे साफ़ सुथरे, खिले-खिले से लगेंगे. बस ऐसे, घर से निकलते वक्त थे जैसे.

फ्रेश वन्स. शान से खुद इस्तेमाल कीजिये.
शान से औरों को दीजिये.

FRESH™ ONES

'फ्रेश वन्स'-भीगे-भीगे, ठंडे-ठंडे टिशूज़.

वह देख रहा था. उस की पत्नी उस के कुछ पीछे हाथों में कागज के कई पैकेट लिए खड़ी थी. इन पैकेटों में अभीअभी खरीदे गए कपड़े थे. आज भी वह बहुत थका हुआ था. उस का मन बिलकुल भी नहीं था कि वह फिल्म देखने जाए, पर उस की पत्नी न मानी.

शाम जब वह कारखाने से आया तो उस ने अपनी पत्नी को कपड़े पहने तैयार पाया था. कई दिनों से वह टालता आ रहा था. वे केवल दूसरे शो में ही जा सकते थे, क्योंकि वह कारखाने से ही करीब छः बजे आ पाता था. दूसरा शो आरंभ होने के पहले करने के बाद अब पहला शो छूटने की प्रतीक्षा कर रहे थे.

वह सिनेमा के फोटो डिसप्ले देखने लगा. उसे हर हीरोइन एक सी लगती थी. उस की पत्नी ने उसे कई बार पिक्चर हाल में भी उस समय टोका जब वह आशा पारिख को हेलन और हेलन को मधुमती कह रहा था. उस ने मुसकरा कर अपनी पत्नी को देखा. अब वह ऐसी स्थिति में था कि हर औरत उसे एक सी लगती थी. उसे अपनी पत्नी का चेहरा भी ठीक से याद नहीं था.

वह भिलाई में परेशान हो गया था. घटिया और पुरानी किस्म की रूसी मशीनें

थकान

कहानी • अशोक मिश्र

आए दिन, जबतब बिगड़ जाती थीं और इस का दोष मढ़ा जाता था उस के सिर पर. रूसी लोग उसे और उस के साथी इंजीनियरों को कामचोर व लापरवाह कहते रहते थे और उस के बड़े अफसर इन्हीं रूसियों की हां में हां मिलाते हुए उस को नौकरी से अलग कर देने की धमकी देते रहते थे. वह पिटापिटाया

सरिता बीस साल पहले, मई (द्वितीय) 1968
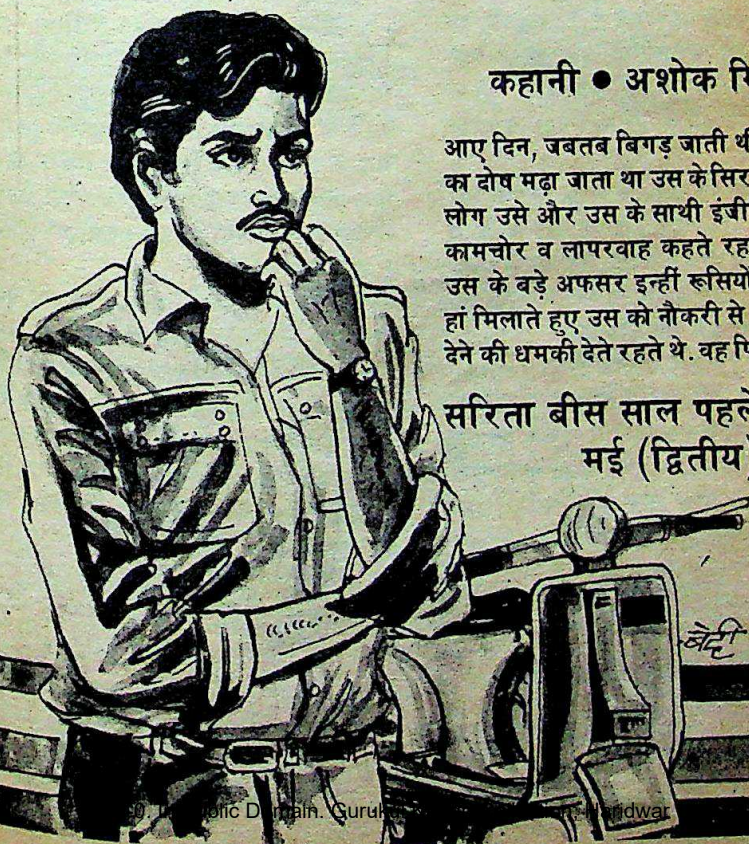
सो घर लौटते समय देशी शराब की बोतल ले कर आता और पी कर सो जाता था.

उस की पत्नी ने कई बार मना किया था कि देशी शराब की बोतल न लाया करे, क्योंकि खाली बोतलें देख कर उस की सहेलियां उस के पति की कंजूसी पर व्यंग्य करती हैं. अपनी भिलाई की जिंदगी में वह ठीक से सो भी नहीं पाया था. इस की वजह यह थी कि जबतब जीप भेज कर उसे कारखाने बुलवा लिया जाता था.

उस ने ऊब कर पीछे देखा. नशे में धुत एक सरदार अपने मलयाली साथी के कंधे पर हाथ रखे उस की पत्नी को घूर कर देख रहा था. उस की पत्नी के चेहरे पर परेशानी झलक रही थी. शायद कुछ पहले से ही वह शराबी उसे ताक रहा था.

उस की पत्नी उस के बिलकुल पास आ कर खड़ी हो गई. उसे भी बुरा लग रहा था पर वह झगड़ा मोल नहीं लेना चाहता था. हो सकता है कि ये कारखाने के श्रमिक हों. इन के साथ झगड़े का लाभ यूनियन उठा ले. बात उस की नौकरी पर आ सकती है. पुलिस वाले भी कम नहीं हैं, उस से डेढ़दो सौ रुपए ऐंठ ही लेंगे.

वह सोचने लगा कि अगर उस के पास कार होती तो आज यह नौबत नहीं आती, वे दोनों कार में ही बैठे रहते. वह अपनी पत्नी की कमर में हाथ डाल देता और पत्नी अपना सिर उस के कंधे पर रख देती.

स्टैंड पर खड़े स्कूटर को उस ने देखा और उस का मन ग्लानि से भर गया. खड़े स्कूटर पर तो वे बैठ भी नहीं सकते. कार में कितनी सुरक्षा होती है! कार की कल्पना से वह खुश हो गया और एक फिल्मी धुन गुनगुनाने लगा. उस की पत्नी भी कार की शौकीन थी, पर एक इंजीनियर अपने वेतन से भिलाई में कार नहीं खरीद सकता, कम से कम आठ दस साल तक.

शराबी सरदार ने अब एक भद्दी गाली जोर से दी, तो वह चौंक पड़ा. उसे शराबियों से घृणा नहीं थी, क्योंकि वह स्वयं भी पीता था. पर उसे शराब पी कर ऊधम मचाने वालों से नफरत थी. उसे काफी बुरा लगा क्योंकि यह गाली उस की पत्नी ने भी सुन ली.

सरदार या उस के साथी को मना करना झगड़ा मोल लेना था. इस कारण वह अपनी पत्नी को ले कर कुछ दूर चला गया. लेकिन सरदार और उस का साथी उस की ही तरफ बढ़े. उस की स्थिति उस जानवर के सदृश हो गई जिसे हांकने वाले खदेड़ कर शिकारियों तक ले जाते हैं. वह अपनी पत्नी के सम्मुख निरंतर हीन होता जा रहा था.

वह अपने विवाहित जीवन का मूल्यांकन करने लगा. उस ने अपनी पत्नी को महज स्कूटर, कुछ कपड़े और गुजारे लायक खाने के अतिरिक्त कुछ भी तो नहीं दिया. उस के प्रणय का प्रतीक केवल स्कूटर और कुछ कपड़े ही रह गए हैं, सुरक्षा नहीं. जिस सुरक्षा के लिए स्त्री विवाह करती है उसे देने में वह असमर्थ है!

क्रोध से उस का मुंह लाल हो गया. इन दोनों गुंडों से अधिक क्रोध उसे स्वयं पर था. उस की पत्नी क्या सोचती होगी! कालिज में वह बाक्सिंग का चैंपियन था. उसे इनाम में मिले कप अब भी उस के ड्राइंगरूम में सजे थे, जिन्हें उस की पत्नी प्रतिदिन कपड़े से पोंछती और प्रति सप्ताह 'सिलवो' से चमकाती थी.

उस की पत्नी की ओर सरदार और उस का साथी छींटाकशी करते आगे बढ़े तो क्या उस क्षण बाक्सिंग चैंपियन रहे उस युवक का सोया हुआ पुरुषत्व अपनी थकान मिटा कर पत्नी की रक्षा कर सका?
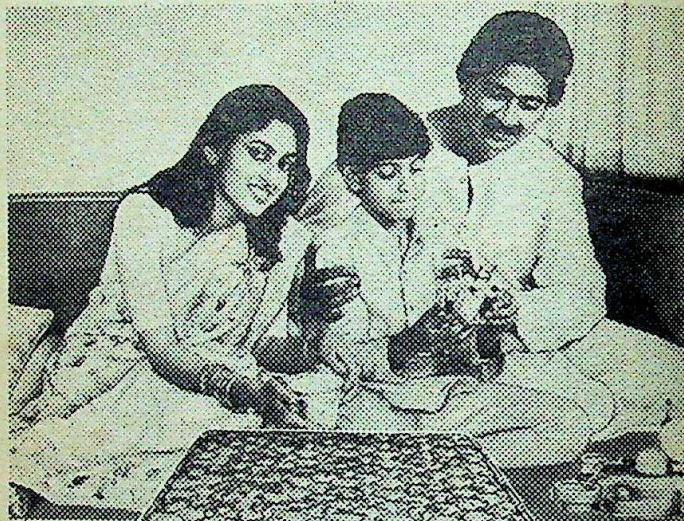
उस का मन एक अजीब सी झुंझलाहट से भर गया. वह सोचने लगा, 'फिल्म के बाद जब वह घर जाएगा, सारे कप तोड़ फेंकेगा.' फिर वह कुछ पछतावे में पड़ गया, आठ साल से उस ने प्रैक्टिस क्यों छोड़ रखी है!

सरदार अपने मलयाली साथी के साथ

सरदारजी का वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि उस का फौलादी मुक्का सरदारजी के जबड़े पर पूरे जोरशोर के साथ पड़ा.
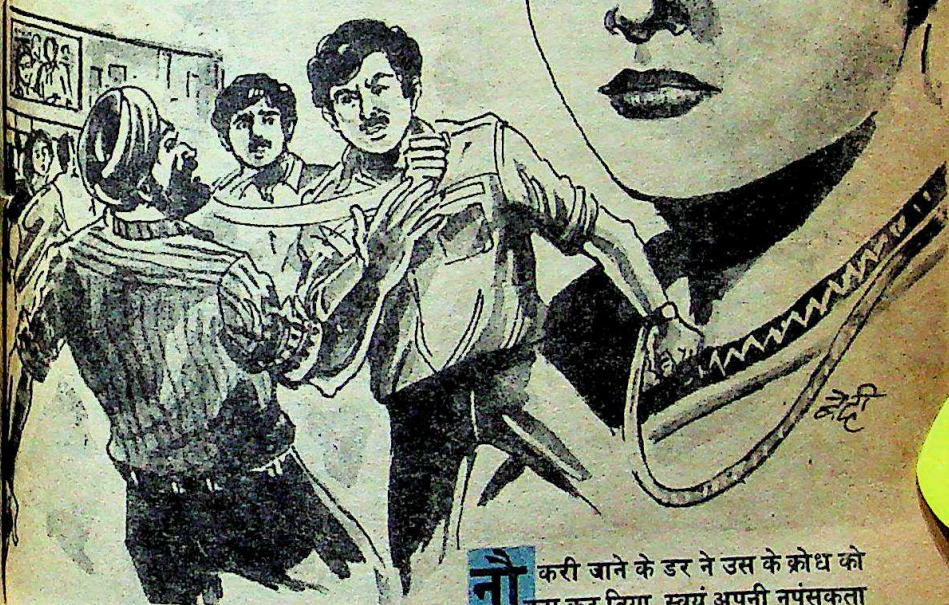
कुछ दूर पर जा खड़ा हुआ. दोनों आपस में फुसफुसा कर कुछ बातें करने लगे. उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि दोनों में से एक कारखाने में जरूर काम करता है और बड़े अफसरों और रूसी विशेषज्ञों का शायद मुंहलगा है. इन से झगड़ा होने पर उसे अवश्य नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा. यूनियन वाले इसे एक इंजीनियर और कामगार का झगड़ा बता कर उस के पीछे पड़ जाएंगे. और रूसी विशेषज्ञ कामगारों को खुश करने के लिए अफसरों के कान भरेंगे. वे उस से नाराज भी हैं, क्योंकि वह खुलेआम मशीनों के घटिया स्तर की आलोचना करता रहता है.

नौकरी जाने के डर ने उस के क्रोध को कम कर दिया. स्वयं अपनी नपुंसकता को नकारने के लिए वह अपने मन में सोचने लगा कि 'शोहदों के मुंह लगना शरीफों का काम नहीं है. वह एक क्षण के लिए सारे अपमान को भूल गया. अपने नंगेपन पर उस ने 'शराफत का झीना आवरण ओढ़ लिया. वह शरीफ है, इस विश्वास से उसे गर्व होने लगा.

एकाएक शराबी सरदार ने लड़खड़ाते हुए स्वर में कहा, ''यार, माल तो अच्छा है! कहां का है?''

''सेक्टरां का बाबू है. रायपुर से पटा कर लाया होगा. मास्टरनी या नर्स होगी.'' मलयाली के इस स्वर को सुन कर उस के

अंदर का पुरुषत्व जाग उठा. सत्तरह साल की स्कूल और कालिज की जिंदगी आठ साल की क्लबों और क्वार्टरों की मनहूस व सभ्य जिंदगी उसे झकझोर गई. रूसियों द्वारा किया गया प्रतिदिन का अपमान भी उस के पुरुषत्व को खत्म नहीं कर पाया था.

"क्यों यार, कितने में पटाया है? हम को भी 'शामिल...'" सरदार का वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि उस का फौलादी मुक्का सरदार के जबड़े पर पूरे जोरशोर के साथ पड़ा. फिर कटी डाल की भांति गिरते हुए सरदार के पेट में उस ने दूसरा घूंसा भी तबीयत से जड़ दिया.

तभी उस ने कनखियों से देखा कि मलयाली अपनी लुंगी में हाथ डाल कर छुरा निकाल रहा है. उस ने पलट कर छुरा निकालते हुए मलयाली की दाईं भुजा पर अपनी खुली हथेली से इतने जोर की चाप मारी कि मलयाली चीख मार कर धरती पर पड़ गया. छुरा उस की मुट्ठी से फिसल कर जमीन पर गिर पड़ा. अब उमर भर उस मलयाली की उंगलियां छुरा नहीं पकड़ सकेंगी, क्योंकि इन घायल मांसपेशियों को कोई भी डाक्टर ठीक नहीं कर सकता.

चारों ओर से भीड़ जमा हो गई. अभी तक कोई निश्चय नहीं कर पा रहा था कि किस का पक्ष लिया जाए. टांगों के बीच दबी दुम को ऊपर होने में कुछ समय तो लगता ही है. उस ने मुड़ कर जमीन पर लोटे हुए सरदार और मलयाली को तीखी नजर से देखा.

सरदार ने खून से सने दो दांत अपने मुंह से उगले और कराहने लगा. लोग पुलिस को पुकार रहे थे. उस ने उस ओर अब ध्यान नहीं दिया. आज पहली बार उस की थकान उतरी थी, उस का सोया हुआ पुरुषत्व जागा था. स्टैंड पर खड़े अपने स्कूटर को उस ने देखा और मुसकरा दिया. अब वह कार नहीं खरीदेगा. आज पुरुषत्व ने उस की थकान को हमेशाहमेशा के लिए दफन कर दिया था. ●

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ कब तक चुप रहूंगी

निर्माता: किशनचंद बोकाड़िया
निर्देशक: टी.प्रकाश राव
संगीत: भप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार: आदित्य पंचोली, अमला, अरुणा ईरानी, गुलनार ईरानी, किरनकुमार, कादर खान, सत्येन कप्पू और सईद जाफरी.

क्या औरत के लिए सिर्फ दो जगहें हैं बिस्तर और रसोई? क्या औरत पति के नाम का मंगलसूत्र पहन कर पति की हर अनुचित बात मानने लिए मजबूर है? इन के जवाब हैं 'कब तक चुप रहूंगी' में. अति नाटकीयता से भरपूर इस फिल्म का विषय तो अच्छा है लेकिन उस का प्रस्तुतीकरण प्रभावशाली ढंग से नहीं हो सका है. जगहजगह कथावस्तु में लचरपन है.

गोपाल (आदित्य पंचोली) एक भोलाभाला गांव का आदमी है, जो मन ही मन एक शहरी लड़की गीता (अमला) से प्रेम करता है. गीता जब दोबारा अपने पति राकेश (किरनकुमार) के साथ उस गांव में आती है तो उसे देख कर गोपाल के मन को ठेस पहुंचती है. गीता गोपाल को नौकर बना कर शहर लाती है. शहर पहुंच कर गोपाल को पता चलता है कि राकेश तस्करी करता है. वह गीता को बताता है. गीता द्वारा पति से विरोध करने पर वह दो वेश्याओं को घर में ले आता है और उस की आंखों के सामने ही रंगरेलियां मनाता है. बहुत हद हो जाने पर गीता अपना मंगलसूत्र तोड़ कर फेंक देती है. पुलिस जब राकेश को गिरफ्तार कर लेती है तो राकेश के ही पिता गीता का हाथ गोपाल के हाथ में दे देते हैं.

फिल्म की कहानी में जो गति व स्वाभाविकता होनी चाहिए उस का अभाव है. सिर्फ भाषण और डायलागबाजी से काम नहीं चलता. संवादों में प्रवाह भी होना चाहिए. फिल्म की नायिका से संवाद ढंग से बोले ही नहीं गए हैं. इस से अच्छी तो वह 'पुष्पक' फिल्म में गूंगी ही लगी थी.

फिल्म का निर्देशन भी कमजोर है. मध्यांतर से पहले कादर खान की थोड़ी सी

'कब तक चुप रहूंगी' में गुलनार ईरानी और किरनकुमार : अति नाटकीयता की शिकार फिल्म.

कामेडी है, नावों की दौड़ और नायकनायिका का रोमांस है. यह है. डाकिए वाला प्रसंग भी बहुत बड़ा है और नीरस भी. निर्देशक ने एक पढ़ीलिखी शहरी लड़की को अत्याचार पर अत्याचार सहते दिखाया है. आजकल कौन सी ऐसी लड़की होगी जो पति के इतने अत्याचार सहेगी और अपनी आंखों से अपने ही शयनकक्ष में अपने पति को वेश्याओं के साथ देखना पसंद करेगी? फिर वह पति पर क्रूरता का मुकदमा भी तो कर सकती थी. अपने बाप के घर अकेली भी तो जा सकती थी.

फिल्म में बाक्स आफिस फार्मूलों को नजरअंदाज नहीं किया गया है. उत्तेजक नृत्य, अश्लील हरकतें, मारधाड़, कलाबाजियां सब कुछ है इस फिल्म में.

अभिनय की दृष्टि से आदित्य पंचोली कहींकहीं ठीक लगा है, बतौर नायक यह उस की पहली फिल्म है. इस से पहले वह वीडियो फिल्मों में काम करता रहा है.

'प्यार का मंदिर' में मिथुन चक्रवर्ती, राजकिरण, सचिन, निरूपा राय और श्रद्धा वर्मा : पारिवारिक फिल्म के नाम पर फार्मूले.

अमला ने निराश किया है. अन्य कलाकार सामान्य हैं. फिल्म के गीत इंदीवर, अनजान और समीर ने लिखे हैं. गीत अच्छे कहे जा सकते हैं. फिल्म का संगीत भी अच्छा है.

○ प्यार का मंदिर

निर्मात्री : शबनम कपूर
निर्देशक : क. बापैय्या
संगीत : लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार : मिथुन चक्रवर्ती, माधवी, राजकिरण, सचिन, शोमा आनंद, अरुणा ईरानी, श्रद्धा वर्मा, शक्ति कपूर, कादर खान.

हमारे फिल्म निर्माताओं की पारिवारिक फिल्मों में अति दिखावे की आदत हो गई है. सास क्रूर होगी तो मां करुणामयी, बेचारी. इस फिल्म में मां को बहू के अत्याचारों से पिसता दिखाया गया है, जिस में बेटे भी पत्नियों की हां में हां मिलाने लगते हैं.

लक्ष्मी (निरूपा राय) के तीन बेटे विजय (मिथुन), अजय (राजकिरण), संजय (सचिन) और एक बेटी मीना (श्रद्धा वर्मा) है. अजय कलक्टरी की परीक्षा की तैयारी कर रहा है और संजय वकालत की. विजय मेहनतमजदूरी कर के भाइयों की मदद करता है. वह राधा (माधवी) से प्रेम करता है. विजय का दोस्त दिलीप (शक्ति कपूर) अपने पार्टनर गोपाल (भरत कपूर) की हत्या कर देता है. अपनी बहन की शादी के लिए रुपयों की खातिर यह इलजाम विजय अपने ऊपर ले लेता है. सजा काट कर आने के बाद विजय को पता चलता है कि उस के भाइयों ने अपनी मां को घर से निकाल दिया है तो वह बौखला उठता है. इधर दिलीप द्वारा बनाई गई स्कूल की इमारत ढह जाती है, जिस के लिए जांच आयोग बैठाया जाता है. यह काम अजय को सौंपा जाता है. दिलीप अजय की पत्नी का अपहरण कर लेता है, परंतु ऐन मौके पर विजय आ कर दिलीप से बदला लेता है.

इस फिल्म की कहानी को तीन भागों में बांटा गया है. पहले भाग में मारपीट तथा

अन्य फार्मूलों का सहारा लिया गया है. दूसरे भाग में (मध्यांतर के बाद) घरफोड़ बहू द्वारा सास की दुर्दशा और बेटे द्वारा मां का अपमान दिखाया गया है और तीसरे भाग में फिर से फार्मूलों का सहारा लेते हुए झोंपड़पट्टियों में आग लगाना, अपहरण, बलात्कार की कोशिश तथा खूब जम कर मारधाड़ डाली गई है. फिल्म के संवाद कादर खान ने लिखे हैं, जिन्हें किसी भी स्तर पर पारिवारिक फिल्म के लायक नहीं कहा जा सकता.

फिल्म का निर्देशन भी कमजोर है. फिल्म में जगहजगह नाटकीयता नजर आती है.

फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं. पहले गीत "लोग जहां पर रहते हैं उस जगह को वो घर कहते हैं" से लगता है फिल्म साफसुथरे वातावरण में आगे बढ़ेगी. परंतु जल्दी ही दूसरे गीत "याहीयाहीयाही याहा..." जैसे डिस्को नृत्य से यह भ्रम टूट जाता है. अन्य गीत भी चालू किस्म के हैं.

अभिनय की दृष्टि से निरूपा राय को छोड़ कर कोई कलाकार प्रभावित नहीं कर पाया है.

○ पाप की दुनिया

निर्माता: पहलाज निहलानी
निर्देशक: शिबु मित्रा
संगीत: भप्पी लाहिड़ी
कलाकार: सनी देओल, चंकी पांडे, नीलम, रूबीना, प्राण, डैनी, शक्ति कपूर.

आजकल सेंसर हर मारधाड़प्रधान फिल्म के पीछे हाथ धो कर (या कैंची खड़का कर) पड़ा हुआ है. इस फिल्म में तो हर दस मिनट बाद मारामारी दिखाई गई है, सो कोई आश्चर्य नहीं कि इसे सेंसर ने महीनों तक रोके रखा.

जेलर प्राण की बहन अपने भाई की इच्छा के खिलाफ एक अपराधी डैनी से शादी कर लेती है. डैनी के जुल्मों का शिकार हो कर वह अपने बेटे को प्राण की गोद में
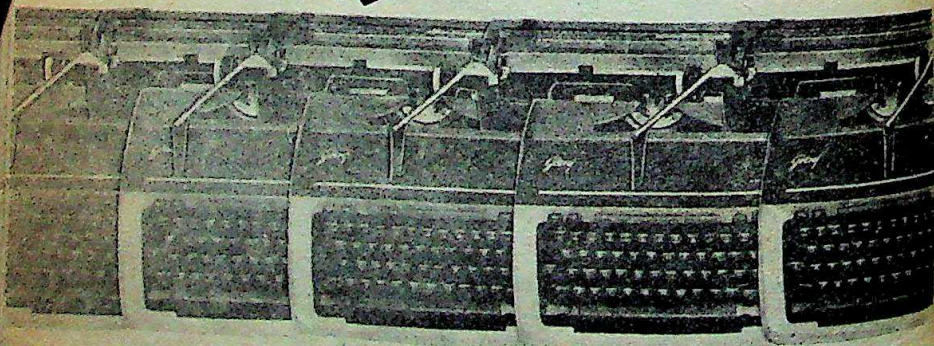
छोड़ कर मर जाती है. प्राण डैनी को एक डकैती के दौरान रंगे हाथों पकड़वा देता है. बदले में डैनी प्राण के बेटे को उठा ले जाता है. प्राण के संरक्षण में डैनी का बेटा (चंकी पांडे) पुलिस इंस्पेक्टर तथा डैनी के संरक्षण में प्राण का बेटा (सनी देओल) एक चोर बनता है. उस के बाद, जैसा कि आम फिल्मों में होता है, दोनों नायक एक दूसरे से टकराते हैं. एक ही लड़की (नीलम) से प्रेम भी करते हैं. अंत में, दोनों का एकदूसरे पर भेद खुलता है तथा खलनायक डैनी का अंत होता है. चूंकि फिल्म में प्रेमत्रिकोण भी दिखाया गया है, अतः एक नायक का मरना आवश्यक हो जाता है, सो चंकी पांडे मारा जाता है

कलाकारों में नीलम की परदे पर उपस्थिति दर्शकों के दिलों में गुदगुदी पैदा करती है. वह एक से बढ़ कर एक 'सूट' पहने है. इस अभिनेत्री का भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल है. सनी के अभिनय में आंशिक रूप से सुधार हुआ है. परंतु अभी भी उस में काफी खामियां हैं. चंकी पांडे नया

फिल्म 'पाप की दुनिया' में चंकी पांडे और नीलम : प्रेम का त्रिकोण.

होने के बावजूद कैमरे के सामने घबराता नहीं है. परंतु उस की आवाज उस के लंबेतगड़े वजूद से मेल नहीं खाती. शक्ति कपूर खलनायक 'बिसना' के छोटे से रोल में दर्शकों को हंसाने में सफल रहा है. रूबीना को इस फिल्म के बाद अपना कैरियर →

क्या दांत निकलने के पूरे ५००० घंटों के दौरान आप अपने बच्चे पर नज़र रख सकती हैं?

दांत निकलना शुरू होते ही आपका हँसता-खेलता लाडला अचानक रोने और चिड़चिड़ाने लगता है.

बस ज़रा नज़र चूकी नहीं कि सामने पड़ी हर चीज़ मुंह में डालकर चबाना-चूसना शुरू कर देता है.

चाहे फिर किताब हो, जूते, चादर या फिर टेलिफोन वायर... जो भी उसे मसूढ़ों के दर्द या खुजली से राहत दिलाए.

और हर ऐसी-वैसी चीज़ मुंह में डालने पर उसके कोमल मसूढ़ों में कीटाणु लगना स्वाभाविक है. जिससे उसको अक्सर दस्त या बुखार भी हो जाता है.

बरसों से माताएँ दांत निकलने की इस समस्या को बच्चों के लालन-पालन का ही हिस्सा मानकर, इससे परेशान होती आ रही हैं.

पर आज दुनिया भर की माताएँ दांत निकलते समय अपने बच्चे को देती हैं - टीथिंग जैल.

आप भी लीजिए अब राहत की सांस. क्योंकि सबसे पहली बार हम आपके लिए लाए हैं दुनिया के जानेमाने फ़ार्मूले पर आधारित दांत निकलने की ख़ास दवा - यानी बच्चे को दांत निकलते समय होनेवाली हर परेशानी का अंत.

दुनिया भर की माताएँ अपने बच्चों को हँसता-मुस्कुराता देखने के लिए टीथिंग जैल पर भरोसा करती है।

रेप्टाकोज़ ब्रैट का नया टीजैल. अलग-अलग दवाएं और शिशु देखभाल संबंधी उत्पादन तैयार करनेवाली ऐसी कंपनी जिस पर डॉक्टरों को पूरा-पूरा भरोसा है. बच्चों के मनभाते स्वाद वाला टीजैल. अपने मुन्ने के मसूढ़ों पर मलिए.

आपका मुन्ना हर परेशानी भूलकर घंटों हंसता-खेलता रहेगा. टीजैल बच्चे के कोमल मसूढ़ों को आराम पहुंचाता हैं, और साथ ही बच्चे की हर ऐसी-वैसी चीज़ मुंह में डालकर चबाने-चूसने की इच्छा को ख़त्म करता हैं.

अपनी नज़दीकी दवा की दुकान से टीजैल की ट्यूब लाइए. और फिर अपने बच्चे को सबसे पीड़ा-भरे दिनों में भी पाइए हंसता-मुस्कुराता, स्वस्थ तंदुरुस्त.

'एन्जॉय योअर बेबी' शिशु देखभाल संबंधी मुफ़्त पुस्तिका लाइए और अपने मुन्ने को देखिए अधिक करीब से... और पहचानिए.

यहां लिखिए : बेबीकेयर डीवीज़न, रेप्टाकोज़ ब्रैट एंड कं. लि., डॉ. एनी बेसेंट रोड, वर्ली, बम्बई ४०० ०२५.
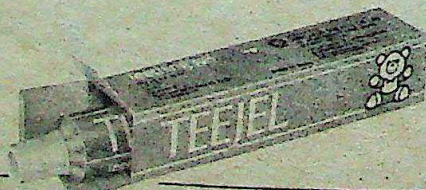
टीजैल

लौंग तेलयुक्त टीथिंग जैल

मुन्ने को रखता, सदा हँसता-मुस्कुराता.
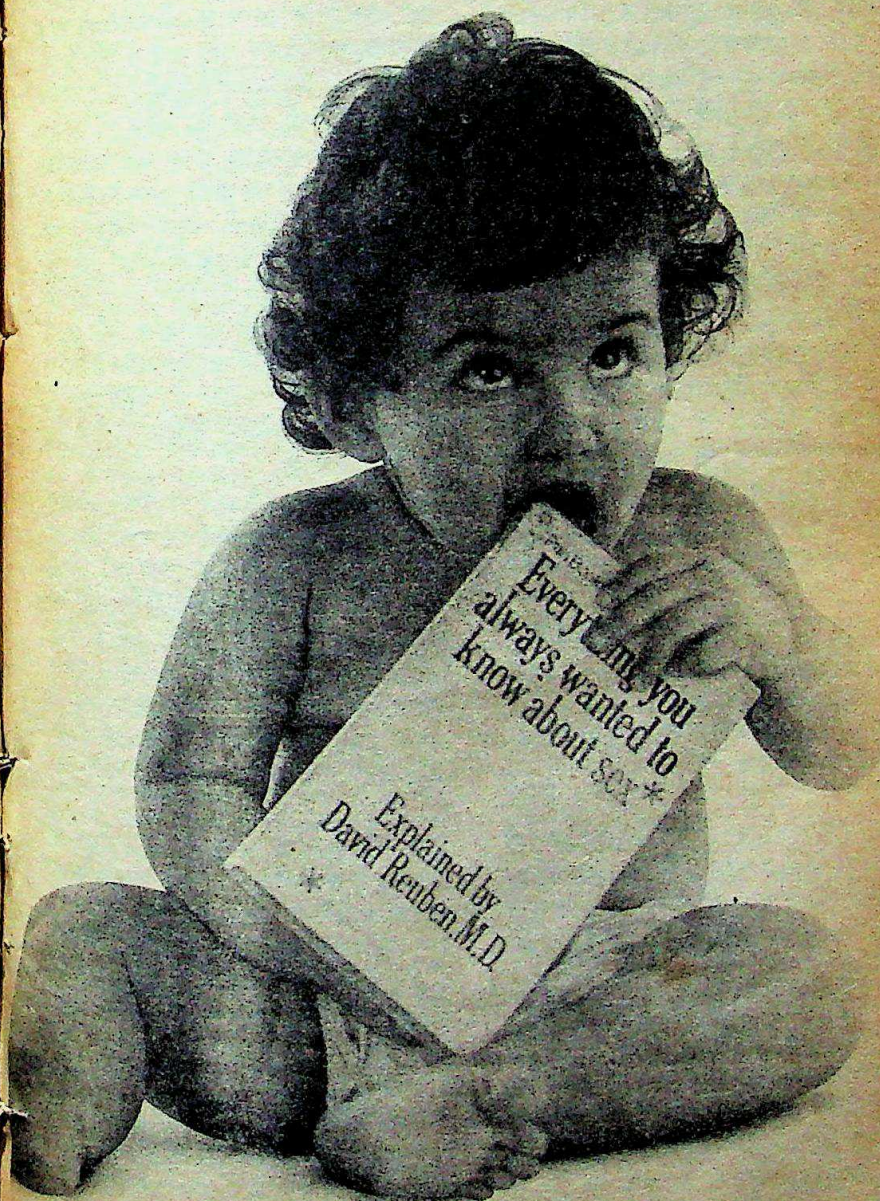
लगभग समाप्त ही समझना चाहिए. अन्य सभी कलाकार अपनीअपनी अभिनय शैली के साथ मौजूद हैं.

सिबा मिश्रा की सिनेमाटोग्राफी त्रुटिहीन है. निर्देशक शिबु मित्रा ने फिल्म संपादन की कला पूना फिल्म संस्थान में सीखी थी. शायद इसी लिए फिल्म का संपादन खासा पैना है. मारधाड़ के दृश्यों पर काफी मेहनत की गई लगती है तथा उन पर पैसा भी काफी खर्च किया गया है. नृत्य निर्देशिका सरोज खान को खासी मेहनत करनी पड़ी होगी, सनी देओल से नृत्य करवाने के लिए.

भप्पी लाहिड़ी की धुनें साधारण हैं. परंतु उन्हें संगीतबद्ध करने के लिए इतने भारी आर्केस्ट्रा का इस्तेमाल किया गया है कि कान संवेदनाहीन से हो जाते हैं.

पहलाज निहालानी की पिछली दो फिल्मों 'इलजाम' व 'आग ही आग' की तरह यह फिल्म भी टिकट खिड़की पर औसत जानी चाहिए.

O कसम

निर्माता: इंद्रकुमार व अशोक ठकरिया
निर्देशक: उमेश मेहरा
संगीत: भप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार: अनिल कपूर, पूनम ढिल्लों, प्राण, कादर खान.

इस फिल्म की कहानी को नया तो नहीं कहा जा सकता परंतु परदे पर कहानी को कहने का अंदाज जरूर कुछ अलग है. इस का श्रेय फिल्म के निर्देशक उमेश मेहरा को जाता है.

एक गांव है, जिस का सरदार प्राण है. इस गांव में अफीम उगाई जाती है. खलनायक अमृतपाल एवं उस के साथी इस अफीम को गांव से खरीद कर तथा उसे हेरोइन आदि अन्य नशीले पदार्थों में बदल कर शहर में बेचते हैं. एक दिन बड़ी अजीबोगरीब परिस्थितियों में शहर का एक भोला सा युवक गांव में पहुंच जाता है तथा प्राण का विश्वास जीत कर इस अवैध व्यापार में हिस्सेदार बन जाता है. प्राण की लड़की पूनम ढिल्लों उसे दिल दे बैठती है. कुछ समय बाद जब यह भेद खुलता है कि अनिल कपूर एक पुलिस अधिकारी है तो सारे गांव वाले उस के खून के प्यासे हो जाते हैं. परंतु वह किसी तरह प्राण व गांव वालों को इस धंधे की बुराइयां समझा कर आत्म समर्पण के लिए राजी कर लेता है. लेकिन अमृतपाल व गुलशन ग्रोवर की चालों की वजह से उसे उस की बीवी (पूनम ढिल्लों) व गांव वाले न सिर्फ गद्दार करार देते हैं, वरन एक हत्या के झूठे आरोप में उसे जेल भी हो जाती है. अंत में अनिल कपूर जेल से भाग कर फिर गांव पहुंचता है. वह पूनम ढिल्लों व गांव वालों का विश्वास फिर से जीतता है तथा उन्हीं की सहायता से अमृतपाल व गुलशन ग्रोवर के गैंग का खात्मा करता है.

अनिल कपूर ने एक बार फिर साबित किया है कि नए नायकों में वह सब से बेहतर है. इस फिल्म में उसे जहांजहां भी मौका मिला है उस ने अपनी अभिनय प्रतिभा का सुबूत दिया है. कादर खान की कामेडी कहींकहीं अश्लील अवश्य हो गई है परंतु वह दर्शकों को हंसाने में निश्चित रूप से सफल हुआ है. प्राण व पूनम ढिल्लों समेत अन्य सभी कलाकारों का अभिनय साधारण है.

लगता है भप्पी लाहिड़ी, इंदीवर व अनजान ने एक टीम बना ली है, मगर सिर्फ घटिया संगीत देने के लिए.

आजकल मारधाड़ वाली फिल्मों के प्रति दर्शकों के मोहभंग के लक्षण कुछकुछ नजर आने लगे हैं. यह फिल्म यदि थोड़ी बैठने लायक बनी है तो मात्र एस. पप्पू की फोटोग्राफी के कारण.

यों तो इस फिल्म के औसत से ऊपर व्यवसाय करने की उम्मीद है, परंतु अगर यह फिल्म भी दर्शकों के उस 'मोहभंग' की शिकार हो गई तो... ●

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

गरीब, इज्जतदार, घरेलू कन्या, 19, 165 सें.मी., इंटरमीडिएट, रंग गेहुआं हेतु कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9649, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, संपन्न परिवारीय, 26, 160 सें.मी., एम.ए., गृहकार्यों में निपुण कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9650, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 24, 157 सें.मी., एम. एससी. (सांख्यिकी), गेहुआं रंग, भारतीय जीवन बीमा निगम में कार्यरत, 1,500/- वेतन, कन्या हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि. नं. 9658, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 152 सें.मी., एम.ए., कायस्थ, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, संगीत व फ्रूट प्रीजर्वेशन में डिप्लोमा कन्या हेतु कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 9659, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, माहेश्वरी, दिल्ली निवासी, 20 वर्षीया, 157 सें.मी., गोरी, सुंदर, ग्रेजुएट, सुशील, गृहकार्यदक्ष, कानवेंट शिक्षित, विदेश भ्रमण करी हुई कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य, शिक्षित, संपन्न, प्रतिष्ठित परिवारीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9660, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरकारी अधिकारी, संभ्रांत परिवारीय, 23, 158 सें.मी., बी.एससी., बी.एड., अग्रवाल, सुंदर, स्लिम, गेहुआं, सर्वगुणी कन्या हेतु वर. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9661, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, तीन कन्याएं, 18-23, ट्रेंड, जिला नागोर राजस्थान, अध्यापिकाएं हेतु 21-30 वर्षीय ब्राह्मण, गवर्नमेंट कर्मचारी, स्वव्यवस्थित व्यापारी वर. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9662, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25, 156 सें.मी., 52 कि.ग्रा., बी.एससी., बी.एड., एम.ए., आफिसर परिवारीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. इंजीनियर, डाक्टर, शासकीय सेवारत को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9740, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा क्षत्रिय, सुंदर, गोरी, 158 सें.मी., 22 वर्षीया, मांगलिक, मेडिकल छात्रा हेतु सुंदर, गोरा, डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक सेवारत, सजातीय, मांगलिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9741, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, 159 सें.मी., हाईस्कूल, मध्यमवर्गीय, टेलीफोन डिप्लोमा, सीधी आंख की तरफ काला निशान बचपन से, हेतु योग्य वर. विकलांग, तलाकशुदा, [illegible] वाले भी लिखें: वि.नं. 9742, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 164 सें.मी., मांगलिक, बी.ए. आनर्स व टेक्सटाइल डिजाईनिंग कोर्स उत्तीर्ण, इकहरा बदन, गौरवर्ण, सुशील, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी कन्या हेतु माहेश्वरी अथवा अग्रवाल, कार्यरत शिक्षित वर. साधारण, दहेजरहित शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9751, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 25, 152 सें.मी., 2,000/-, दिल्ली में सरकारी अध्यापिका, गेहुआं रंग, आकर्षक, नाकनक्श, निजी दो मकान, केवल चार बहनें, शुद्ध शाकाहारी कन्या हेतु सरकारी, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9752, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा ओसवाल, श्वेतांबर जैन, मैरिट, एम.बी. बी.एस. पास, 24 वर्षीया, 168 सें.मी., मांगलिक, संपन्न परिवार की कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, शिक्षित व्यापारी, चार्टर्ड एकाउंटेंट, इंजीनियर वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9753, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 162 सें.मी., जैन, एम.ए., बी.एड., सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9754, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धनाढ्य मारवाड़ी अग्रवाल परिवारीय, सुंदर, इकहरी, गोरी, स्नातक, 28, 155 सें.मी., विधवा बहू हेतु 35 वर्ष की आयु के अंदर का स्वजातीय, संपन्न, सुयोग्य वर चाहिए. दोएक बच्चों वाला विधुर भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9755, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 152 सें.मी., एम.ए., बी.एड., हिंदू धोबी, साफ रंग, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9756, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शाकाहारी परिवार, स्नातक, सुंदर, गृहकार्यनिपुण, 21, 155 सें.मी., गर्ग बीसा अग्रवाल कन्या हेतु वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9757, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 25 वर्षीया, 155 सें.मी., सुंदर, समझदार, शिक्षित कन्या जिस का निर्दोष परिस्थिति में पूर्व पति की पौरुषहीनता के कारण कोर्ट से विवाह विच्छेद हुआ है, के पुनः विवाह हेतु सुलझे व प्रगतिशील, अग्रवाल, उच्च परिवार में संबंध आमंत्रित. कम उम्र विधुर भी विचारणीय. मारवाड़ी, राजस्थानी, कलकत्ता निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9758, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार, 25 वर्षीया, 157 सें.मी., मैट्रिक, टेलरिंग व एंब्रायडरी में डिप्लोमा प्राप्त, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु ससंतान विधुर, सेवारत या व्यवसायरत, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9759, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोयल, गौरवर्ण, सुंदर, 31, 165 सें.मी., एम.एससी. (माइक्रोबाइलाजी), पीएच.डी. यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, विदेशों में प्रशिक्षण प्राप्त कन्या हेतु वर. लिखें: वि.नं. 9760, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, 23 वर्षीया, 159 सें.मी., एम.ए., बी.एड., त्यागी कन्या हेतु समकक्ष आयु, सुशिक्षित, दहेज विरोधी वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9761, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित चौहान राजपूत, 23, 157 सें.मी., एम.ए. अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष, सुंदर कन्या हेतु सजातीय, स्वावलंबी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9762, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 155 सें.मी., सुंदर, स्वस्थ, एम.ए. (द्वितीय वर्ष), गृहकार्यदक्ष, राजपूत कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9763, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 152 सें.मी., स्लिम, आकर्षक, एम.ए.,बी.एड., सुशील, गृहकार्यदक्ष, कुर्मि क्षत्रिय कन्या हेतु सजातीय, यूनिवर्सिटी लेक्चरर, इंजीनियर, डाक्टर, राजपत्रित अधिकारी या अन्य उच्च सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9764, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, राजपूत, 155 सें.मी., बी.ए. द्वितीय में अध्ययनरत, गोरी, सुंदर, स्लिम, गृहकार्य में दक्ष, प्रतिष्ठित राजपूत परिवार की कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. संपूर्ण विवरण प्रथम बार लिखें: वि.नं. 9765, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 165 सें.मी., बैस, राजपूत, एम.ए.,कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9766, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 166 सें.मी., अग्रवाल मित्तल गोत्र, सुंदर, गौरवर्ण, नौवीं पास (बचपन में गिरने की वजह से फिट आता है) कन्या हेतु सजातीय, उच्च आय वाला वर चाहिए जो कन्या को प्यार दे सके. दहेज नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9767, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नागपुर निवासी, मध्यमवर्गीय, सुशिक्षित, सुंदर, सद्गुणी, गुप्ता (वैश्य), घरेलू, 23, 151 सें.मी., एम.ए., एवं 21, 152 सें.मी., एम.ए., साफ रंग, मांगलिक, गोरी कन्याएं दहेजरहित, सुयोग्य वधू हेतु वर. वैश्य परिवार कृपया पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9768, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 157 सें.मी., मैट्रिक, अति आकर्षक, गौरवर्ण, तलाकशुदा कन्या हेतु दहेजरहित, शिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9769, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 25, 152 सें.मी., ग्रेजुएट, गौरवर्ण, सुंदर कन्या हेतु सजातीय, शिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9770, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव, 165 सें.मी., सुंदर, स्वस्थ, गंभीर, कन्या हेतु सुयोग्य, ऊंची शिक्षाप्राप्त दहेजविरोधी, सुप्रतिष्ठित 26-30 वर्षीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9771, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 21, 162 सें.मी., बी.ए.,एम. एड. उच्च प्रथम श्रेणी, एम.ए. (अध्ययनरत), सुंदर, इकहरी कन्या हेतु उच्च शिक्षित, सुस्थापित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9772, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 152 सें.मी., एम.ए.,बी.एड., माहेश्वरी, सुंदर, साफ रंग, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9773, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 155 सें.मी., मध्यप्रदेशीय अग्रवाल गोयल, एम.एससी., गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, (शादी के 3 माह पश्चात विधवा हुई, पति राजपत्रित अधिकारी) रेलवे में कार्यरत कन्या हेतु अविवाहित, विधुर, उच्च अधिकारी, आई.ए.एस., इंजीनियर, उच्च व्यवसायी वर चाहिए. कोई उपजाति बंधन नहीं. पिता उच्च व्यवसायी. उत्तम व शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9774, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 152 सें.मी., पश्चिमी उत्तर प्रदेशीय, ब्राह्मण कन्या, कानवेंट शिक्षित, गौरवर्ण, इकहरा बदन, एम.ए. (गृह विज्ञान) एवं इसी विषय में पीएच.डी. में संलग्न, हेतु सजातीय, इंजीनियर, डाक्टर, बैंक अधिकारी अथवा प्रतिष्ठित व्यवसायी वर चाहिए. पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 9775, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, बीसा अग्रवाल, गर्ग, 155 सें.मी., स्वस्थ किंतु स्लिम, आकर्षक, घरेलू, गृहकार्यदक्ष, सुसंस्कृत, बी.ए. (अंगरेजी, संगीत), एम.ए. (अंगरेजी), एम.फिल. अध्ययनरत कन्या हेतु प्रतिष्ठित व्यापारी, इंजीनियर, गजेटेड आफिसर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9776, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, राजपूत, अति सुंदर, परित्यक्ता, एम.ए., इलाहाबाद हेतु कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9777, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 152 सें.मी., सिंधी, गोरी, सुशील, गृहकार्यदक्ष, बी.ए., मांगलिक कन्या हेतु वर. लिखें: वि.नं. 9778, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्तावासी, बिहारी स्वर्णकार, पुत्री, 18, लंबी, गोरी, सुंदर, कालिज छात्रा हेतु सजातीय, आई.ए.एस., डाक्टर, इंजीनियर या समकक्ष वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9779, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी क्रिश्चियन, कानवेंट शिक्षित, 21 वर्षीया, बी.ए., एवं 18 वर्षीया, आई.ए., सुंदर, स्मार्ट और स्लिम कन्याओं हेतु योग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9780, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एवं 26 वर्ष, एम.ए., पीएच.डी. रत कन्याओं हेतु सुयोग्य वर की आवश्यकता है. शीघ्र एवं सुंदर विवाह. लिखें: वि.नं. 9781, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 एवं 28 वर्षीया, एम.ए., पीएच.डी. अध्ययनरत, उच्च शिक्षित, पाटनवार क्षत्रिय परिवारीय दो कन्याओं हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9782, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 160 सें.मी., कानवेंट शिक्षित, एम.काम., बीसा अग्रवाल, स्लिम, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, गेहुआं रंग प्रतिष्ठित व्यापारिक घराने की कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9866, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, पोस्ट ग्रेजुएट, हिंदू कन्या, 164 सें.मी., 46 कि.ग्रा. हेतु उपयुक्त, कार्यरत, उदार, शाकाहारी, हिंदू वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9867, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 23 वर्षीया, लंबाई 160 सें.मी., इंटर शिक्षा, रंग गेहुआं, बाएं हाथ की दो उंगलियां बचपन से छोटी, दहेजरहित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9868, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18, 150 सें.मी., गौड़ ब्राह्मण, बी.ए. प्रथम वर्ष, गौरवर्ण कन्या हेतु सुयोग्य, दहेज विरोधी, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9869, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, विसेन राजपूत, अंतिम एम.बी.बी.एस. में अध्ययनरत, गौरवर्ण, 160 सें.मी., सुंदर, पिता प्रथम श्रेणी अधिकारी, भाई डाक्टर, हेतु एम.एस./एम.डी./छात्र/25-28 वर्षीय संपन्न राजपूत वर चाहिए. उत्तम शादी. तत्काल सविवरण लिखें: वि.नं. 9870, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, मीना राजपूत, सुंदर, अंडर ग्रेजुएट अध्यापिका, कानूनन तलाकशुदा, निस्संतान कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9871, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संभ्रांत परिवार, 30½ वर्षीया, 160 सें.मी., बी.एससी., एलएल.बी., बी.एड., चुस्त, गौरवर्ण लड़की हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9872, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 150 सें.मी., स्नातकोत्तर, जयपुर में केंद्रीय सेवारत, स्मार्ट, श्रीवास्तव कन्या हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. दुर्घटनावश दायां पंजा बहुत मामूली कमजोर. चाल बिलकुल सामान्य. लिखें: वि.नं. 9873, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 162 सें.मी., सरयूपारीण ब्राह्मण (तिवारी), पोस्ट ग्रेजुएट अध्ययनरत, गोरी, आकर्षक, खूबसूरत, शादी के एक हफ्ते के अंदर पंजाब में दुर्घटना से पति का देहांत, निर्दोष कन्या हेतु सुयोग्य, वर चाहिए. निस्संतान नवयुवक विधुर भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9874, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सें.मी., एम.एससी., मध्यप्रदेश के संभ्रांत परिवार की सुशील, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, गेहुआं रंग, स्लिम कन्या हेतु शासकीय सेवारत, डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए., आर्मी आफिसर, लेक्चरर, राजपत्रित अधिकारी, सजातीय वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9875, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू (तेली), 21 वर्षीया, 153 सें.मी., 45 कि.ग्रा., एम.ए. (प्रथम श्रेणी), फेयर, आकर्षक, शालीन, मृदुभाषी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु स्वजातीय, सुस्थापित, कार्यरत वर. लिखें: वि.नं. 9876, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 24 वर्षीया, 151 सें.मी., रंग गेहुआं, एम.ए., मितभाषी, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9877, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 165 सें.मी., माहेश्वरी, बी.काम., स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, गौरवर्णीय कन्या हेतु सजातीय, सुव्यवस्थित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9878, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, अरोड़ा, 25½ वर्षीया, 157 सें.मी., एम.ए. (इकोनामिक्स) बी.एड., डी.ए.वी. स्कूल सेवारत कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 9879, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

संपन्न, जैन, 21, 175 सें.मी. 1,800/-, हेतु वधू. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9705, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, सुंदर, 42, 165 सें.मी., संगीतज्ञ दूरदर्शन, रेडियो के प्रख्यात गायक, बंबई सुर-शृंगार पुरस्कृत, आय 5,000/-, गजल गुरबानी की कैसेट निकली है, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9706, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 28, बी.ए., 2,000/-, सरकारी सेवारत, विकलांग युवक हेतु गरीब, विधवा या संतानोत्पत्ति में असमर्थ वधू चाहिए. जाति एवं दहेज बंधन नहीं. युवक थोड़ी सेक्सुअल कमजोरी महसूस करता है. लिखें: वि.नं. 9707, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40, विधुर, 175 सें.मी., प्री-यूनिवर्सिटी (साइंस), मासिक आय 2,500/-, राउरकेला (उड़ीसा) निकटवर्ती एक लिमिटेड कंपनी में सीनियर स्टोर्स आफिसर, वशिष्ठ गोत्रीय, मारवाड़ी गौड़ ब्राह्मण को 30-40 वर्षीया अच्छे स्वभाव की सहनशील, घरेलू जीवनसंगिनी की जरूरत है जो पत्नी के साथ एक मां व बहू का फर्ज निभा सके तथा 3 वर्षीय एक बच्चे तथा बूढ़े मांबाप व दादी का खयाल रख सके. सरल शांतिमय जीवन की इच्छुक लिखें: वि.नं. 9708, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 170 सें.मी., धोबी (धंधा नहीं), केंद्रीय

प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी हेतु सुंदर वधू चाहिए. बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9709, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, 29, 170 सें.मी., एम.ए., बी.एड., नेत्रहीन अध्यापक, सरकारी क्वार्टर, 2,500 /-, हेतु ग्रेजुएट, सुशील देखने में सुंदर, स्लिम वधू चाहिए. शीघ्र विवाह.लिखें: वि.नं. 9710, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 28, 174 सें.मी., ग्रेजुएट, बिजनेसमैन हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित वधू चाहिए. जैन व बीसा अग्रवाल को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9711, सरिता, नई दिल्ली-110055.

58 वर्ष के एक स्वस्थ, संपन्न बहाई विधुर को हिंदी अंगरेजी का सामान्य ज्ञान वाली, स्वस्थ, 45 वर्ष से अधिक आयु वाली विधवा या अविवाहित जीवनसंगिनी चाहिए. धर्म, जाति, देश, मातृभाषा का भेदभाव नहीं. लिखें: वि.नं. 9712, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, स्नातक, 161 सें.मी., आय 5,500/-, गवर्नमेंट आफ फुजायरह में कार्यरत, बिहार निवासी, हेतु हंसमुख, आकर्षक, आधुनिक, इंगलिश स्पीकिंग (प्राथमिकता) जीवनसंगिनी चाहिए. निस्संतान विधवा एवं परित्यक्ता स्वीकार्य. नौकरी, आर्थिकस्तर, प्रांत, धर्म, जातिबंधन नहीं. दहेजरहित शीघ्र (जून 88) सिविल मैरिज. कन्या स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती है. लिखें: NAVIN. L. AMBASTHA, POST BOX 500, FUJAIRAH, U.A.E.

48 वर्षीय, अग्रवाल, गर्ग, विधुर, उत्तरदायित्व मुक्त हेतु 35-37 वर्षीया, सजातीय, निस्संतान विधवा जीवनसंगिनी चाहिए. दिल्ली में अपना व्यवसाय, अपना मकान. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9724, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30,175 सें.मी., कानूनन तलाकशुदा, कुर्मि कश्योजिया, मासिक आय रु. 8,000/-, हेतु सुंदर, निस्संतान, विधवा, परित्यक्ता, अविवाहित वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9730, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, उपमन्यु गोत्र, एम.काम., 22 वर्षीय, 170 सें.मी., गौरवर्ण, स्वस्थ एवं सुदर्शन, निजी व्यवसाय, मासिक आय पांच अंकीय, कलकत्ता में निजी आवास, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या एक मात्र विचारणीय. केवल सजातीय, जन्मांक सहित पत्र-व्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 9731, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42 वर्षीय, 158 सें.मी., विधुर, अग्रवाल मंगल, प्रतिष्ठित, संपन्न, उच्चमध्यमवर्गीय, स्वस्थ, सुंदर, स्मार्ट, उच्च व्यवसायी, वैवाहिक सुख देने के पूर्ण योग्य, छोटा पुत्र 18 वर्ष (शेष विवाहित) हेतु सजातीय, गोरी, सुंदर, स्वस्थ, संतानोत्पत्ति अनिच्छुक, गृहकार्यदक्ष जीवनसंगिनी चाहिए. संभ्रांत परिवारीय विधवा/बांझ को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9732, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय स्वर्णकार, 24, 183 सें.मी., एराड्रम आफिसर, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले युवक हेतु अति सुंदर, कम से कम 163 सें.मी. लंबी स्नातक कन्या चाहिए. इच्छुक प्रथम बार में पूर्ण विवरण दें.लिखें: वि.नं. 9733, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28,165 सें.मी., हिंदू पंजाबी, प्रतिष्ठित घराने से संबंधित हैंडसम, स्मार्ट, विधुर बिजनेसमैन, अच्छी आय, 3 बच्चियों हेतु प्रतिष्ठित, गरीब घराने से संबंधित 25 वर्षीया, सुंदर, गोरी वधू चाहिए. तलाकशुदा, निस्संतान विचारणीय. लिखें: वि.नं. 9783, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27,175 सें.मी., बी.काम., व्यवसायी, सुंदर, स्वस्थ, इसाई परिवार हेतु अंगरेजी माध्यम, प्रशिक्षित, शिक्षिका चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9784, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, 165 सें.मी., शाकाहारी, तलाकशुदा, मासिक आय 1,500/-, युवक हेतु सुशील, स्वस्थ, शिक्षित वधू चाहिए. निस्संतान, बेसहारा, परित्यक्ता, विधवा को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9785, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 1,500/-, रेलवे कर्मचारी हेतु योग्य, जायसवाल कन्या. लिखें: वि.नं. 9786, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, 175 सें.मी., खत्रा, मंगली, बी.ए., संपन्न व्यवसायी, मासिक आय 6,000/-, इकलौते पुत्र हेतु खूबसूरत लड़की चाहिए और कोई भी डिमांड नहीं. लिखें: वि.नं. 9787, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी राठी, 26 वर्षीय,168 सें.मी., बी.ई. युवक हेतु सुशिक्षित, सुंदर, सौम्य स्वभाव वधू चाहिए. पारिवारिक विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9788, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 29 वर्षीय, स्वस्थ, आकर्षक, 178 सें.मी., प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, 3,200/-, हेतु सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9789, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय परिहार, राजपूत, बी.काम., 27, 168 सें.मी., भिलाई स्टील प्लांट में कार्यरत, 1,700/- मासिक, हेतु शिक्षित, सुंदर, गोरी, सजातीय वधू चाहिए. दहेज बंधन नहीं. भिलाई में निजी मकान तथा ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9790, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, परित्यक्त, अग्रवाल गोयल गोत्र, अहमदाबाद निवासी, निस्संतान, उत्तम स्वास्थ्य, संयुक्त परिवार, संयुक्त मासिक आय लगभग 10,000/-, हेतु सजातीय वधू चाहिए. दहेज बंधन नहीं. 25 वर्ष की उम्र तक की विधवा को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9791, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, कुशवाहा, विधुर, 2 बच्चे लड़की 6 वर्ष, लड़का 4 वर्ष, पी.सी.एस. अधिकारी हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9792, सरिता, नई दिल्ली-

माहेश्वरी, 25,180 सें.मी., विशेष आकर्षक, ग्रेजुएट, सेवारत, नवयुवक हेतु सजातीय, कलकत्ता निवासी, प्रतिष्ठित परिवार की सुसंस्कृत, सुंदर, सुशिक्षित, सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9793, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, अग्रवाल गोयल, 176 सें.मी., साफ रंग, स्मार्ट, बी.काम., कलकत्ता में निजी व्यवसाय, आय पांच अंकों में, निजी आवास हेतु स्वस्थ, सुंदर, सुशील, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 9794, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी गुप्ता, 27,172 सें.मी., हायर सेकेंडरी, निजी मकान, दुकान केमिस्ट, 4,000/- मासिक आय, हेतु सुंदर, सुशिक्षित एवं इकहरी वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9795, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, क्षत्रिय राजपूत, एम.ए. (अर्थशास्त्र), भूतपूर्व सैनिक, स्वस्थ, सुंदर, गेहुआं रंग, सरकारी संस्थान में सेवारत, मासिक आय 2,100/-, पूर्वी उत्तर प्रदेश में खेती, मकान, बाग, निस्संतान विधुर हेतु सजातीय, सुंदर, स्वस्थ, चरित्रवान, शिक्षित, गरीब, निस्संतान विधवा, पूर्वी उत्तरप्रदेशीय कन्या चाहिए. दहेजरहित साधारण विवाह. पूर्ण विवरण सहित शीघ्र लिखें: वि.नं. 9796, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25,165 सें.मी., माहेश्वरी परिवार, बी.काम. (प्रथम वर्ष), आमदनी चार अंकों में युवक हेतु सुशील, घरेलू, माहेश्वरी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9797, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न परिवारीय, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., स्वस्थ, आकर्षक, हाईस्कूल आटो मेकेनिक, 1,200/- मासिक, राजपूत युवक हेतु सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9798, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अरोड़ा खत्री, 32, 152 सें.मी., 1,200/-, सरकारी सेवारत, आधी बांह में नुक्स, युवक हेतु वधू. दहेज, जातिबंधन नहीं. नुक्स वाले भी लिखें: वि.नं. 9799, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50 वर्षीय, लेक्चरर, विधुर, 6 बच्चे, वेतन 3,041/- रु. मासिक, 3 लाख की गृहसंपत्ति हेतु विधवा, परित्यक्ता, अनाथ स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9800, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, अनुसूचित जाति, 29, 169 सें.मी., 3,000/-, एम.ए., एलएल.बी., बिजनेस, स्मार्ट युवक हेतु सजातीय, लंबी, गोरी, सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9801, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 170 सें.मी., अमेरिका निवासी, ब्राह्मण, आर्टिस्ट हेतु सजातीय नर्स या कमर्शियल आर्टिस्ट, अंगरेजी ज्ञान, गृहकार्यनिपुण कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9802, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 178 सें.मी., संपन्न प्रतिष्ठित (गर्ग), अग्रवाल, दिल्ली निवासी, व्यवसायरत तलाकशुदा हेतु वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9803,

भट्ट राय ब्राह्मण, केंद्रीय कर्मचारी, दिल्ली उ.प्र. निवासी, 26 वर्ष, पीएच.डी., कर रहे युवक हेतु सुंदर, सजातीय वधू चाहिए. शिक्षा एवं समस्त विवरण तुरंत एक बार में ही भेजें. निर्णय तुरंत. लिखें: वि.नं. 9804, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, दोनों पैर पोलियो से विकलांग, हाथ और पैर के सहारे, स्वयं शीघ्र चलने में समर्थ, केंद्रीय कर्मचारी, दिल्ली, सभी जातियों से वधू स्वीकार. तुरंत विवरण भेजें. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 9805, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 174 सें.मी., प्रतिष्ठित ऐरन अग्रवाल परिवारीय, अमेरिका में एम.एस. कंप्यूटर शिक्षा में पढ़ रहे हेतु मेडिकल, इंजीनियर अथवा उच्च पढ़ीलिखी, स्वजातीय, सुंदर कन्या जल्दी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9806, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, 175 सें.मी., खत्री (टंडन), एम.ए., बी.एड., एलएल.बी., एल.टी. ग्रेड अध्यापक हेतु सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. मान्यता प्राप्त सिलाई डिप्लोमाधारी या बी.टी.सी. इंटर सिलाई सहित या बी.ए., बी.एड., (इंटर सिलाई के साथ) वरीयमान. दहेजरहित, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9807, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारनिवासी, कुर्मी क्षत्रिय, 25 वर्षीय, बी.एससी., वेतन 1,400/-, हेतु सुंदर, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण प्रथम बार लिखें: वि.नं. 9808, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, 167 सें.मी., दिगंबर जैन, इंटरमीडिएट, पशुऔषधि निर्माण व्यवसाय, आय चार अंकीय, गौरवर्ण, इकहरे युवक हेतु सरल, गृहकार्यनिपुण, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9809, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सुशील, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 26,180 सें.मी., 2,000/-, डिप्लोमा इंजीनियर, रेलवे कार्यरत हेतु सजातीय, सुंदर वधू. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9810, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 160 सें.मी., विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण, बी.काम., निजी व्यवसाय, अच्छी आय, युवक हेतु सुयोग्य, सुंदर, सजातीय कन्या चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 9811, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मालवीय लौहार, 26, 158 सें.मी., एम.काम., व्यवसायी हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9812, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, 160 सें.मी., सक्सेना, बी. एससी., गौरवर्ण, सुंदर, स्वस्थ, प्रसिद्ध प्राइवेट कन्सर्न में कार्यरत, आय चार अंकों में हेतु कायस्थ वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9813, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी, 28 वर्षीय, केंद्र सरकार कर्मचारी, आय 1,500/-, बी.ए., 170 सें.मी., हेतु योग्य वधू चाहिए.

24 वर्षीय, 160 सें.मी., एम.ए., निजी व्यवसाय, वार्षिक आय 6 अंकों में, बाएं पैर में आंशिक विकलांगता, पंजाबी अग्रवाल हेतु सजातीय, कुंवारी, चरित्रवान कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. केवल पंजाबी अग्रवाल ही संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 9815, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अमरीकन नागरिक, शाकाहारी, धूम्रपान रहित, मेडिकल डाक्टर, 26,180 सें.मी., कान्यकुब्ज ब्राह्मण हेतु सजातीय, उच्चशिक्षित, मेडिको/इंजीनियर वधू चाहिए. विवाह संभावित जुलाई. लिखें: OM DIXIT, 2955 WYLIE DRIVW, FAIR BORN OHIO 45324 U.S.A.

23 वर्षीय, सक्सेना कायस्थ, एडवोकेट पुत्र, वरिष्ठ एडवोकेट, देहरादून, गोरा, स्वस्थ, 173 सें.मी., साधन संपन्न हेतु सुयोग्य, सुंदर, कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9816, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 26, 170 सें.मी., 2,200/-, ग्रेजुएट, शाकाहारी, डायरेक्टर पार्टनर, सपंन्न हेतु प्रोफेशनली क्वालीफाइड वधू. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9817, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 176 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, स्नातक, स्वतंत्र व्यवसायी, रु. 5,000/-, संपन्न, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु सजातीय, सुशील, आकर्षक, ग्रेजुएट, लंबी, साफ रंग, गृहकार्यनिपुण कन्या चाहिए. उत्तर प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9818, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 170 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय मध्यप्रदेश निवासी, एम.डी., नई दिल्ली में कार्यरत, सुंदर, डाक्टर हेतु अतिसुंदर वधू चाहिए. मेडिको प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9819, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य विधुर, 50,175 सें.मी., 2,000/- मासिक आय, पारिवारिक दायित्व मुक्त हेतु सुंदर, शिक्षित, निस्संतान, जीवनसाथी चाहिए. जातिबंधन नहीं. विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9820, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 27, 172 सें.मी., स्नातक, निजी व्यवसाय, देहली, कलकत्ता हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9821, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 25,178 सें.मी.; असिस्टेंट इंजीनियर, पी.एच.ई., म.प्र. हेतु सुंदर, शिक्षित, सुशील कन्या. लिखें: वि.नं. 9822, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न परिवार के 24 वर्षीय, बिजनेस एक्जीक्यूटीव, आय 12 हजार रुपए मासिक से अधिक हेतु गौड़ ब्राह्मण, संपन्न परिवार की अत्यंत सुंदर, स्लिम, गौरवर्ण, 22 वर्ष से कम आयु की वधू चाहिए. कानवेंट शिक्षित को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9823, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जांगिड़ ब्राह्मण, 25 वर्षीय, 178 सें.मी., ग्रेजुएट युवक हेतु सुंदर, आकर्षक, शिक्षित, कन्या चाहिए.

25 वर्षीय, 168 सें.मी., माहेश्वरी, एम.काम. पास, कंपनी सेक्रेटरी (फाइनल) अध्ययनरत, अच्छी सर्विस में कार्यरत युवक हेतु माहेश्वरी/अग्रवाल, संपन्न परिवारीय, सुंदर, पढ़ीलिखी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9825, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, 170 सें.मी., हरियाणा गवर्नमेंट कालिज (फरीदाबाद), लेक्चरर, डाक्टरेट, 3,600/-, खानदानी, नेत्रहीन हेतु नेत्रवान, शिक्षित वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9826, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज कुलीन केंद्रीय सरकार सेवारत, 22,165 सें.मी., 1,500/-, पुत्र हेतु बहुत सुंदर, अथवा सरकारी सेवारत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9827, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण दुबे, भारद्वाज गोत्र, एम.काम., प्रतिष्ठित खानदान, 26,175 सें.मी., 5,000/- मासिक, म.प्र. में निजी औद्योगिक प्रतिष्ठान वाले युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, चरित्रवान एवं घरेलू लड़की चाहिए. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण भेजने पर ही विचार होगा. लिखें: वि.नं. 9828, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी अरोड़ा, 26,158 सें.मी., गेहुआं रंग, ग्रेजुएट, निजी व्यवसाय, आय 1,500/-, हेतु सुंदर, सुशील वधू चाहिए. कृपया शीघ्र विवाह वाले लिखें: वि.नं. 9829, सरिता, नई दिल्ली-110055.

44, संपन्न, सुशिक्षित, मारवाड़ी अग्रवाल, विधुर हेतु उचित आयु वर्ग, सुशील, मृदुल एवं शांत स्वभाव, गृहकार्यकुशल, संतान अनिच्छुक, सजातीय जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9830, सरिता, नई दिल्ली-110055.

समानतावादी, असिस्टेंट सर्जन (मध्य प्रदेश), 29,158 सें.मी., हेतु 20-26 वर्षीया, आकर्षक, गोरी, डाक्टर/समकक्ष कार्यरत वधू, जिस में हो शारीरिक, भावनात्मक, आत्मिक सौंदर्य, मानसिक परिपक्वता, कर्तव्यबोध, स्पष्ट, उदार, रूढ़िमुक्त व्यापक दृष्टिकोण, समझदारी, आत्मीयता, प्रेम, समर्पण, विश्वास, स्वर माधुर्य, साहित्य, संगीत रुचि, सुरक्षित, शांत खुशियों भरा जीवन. प्रांत, दहेज, जाति संकीर्ण मानसिकता वालों से क्षमा. शीघ्र सादा विवाह. लिखें: वि.नं. 9831, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दो भाई क्रमशः 24 वर्ष एवं 21 वर्ष, दोनों 170 सें.मी., बी.ए., इंटर 5,000/-, मासिक, पिता इंजीनियर, उच्च शिक्षित, संस्कारवान माता, तीन आधुनिक शिक्षण संस्थाओं की स्वामिनी को साधारण, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, संस्कारवान वधुएं चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9832, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 172 सें.मी., प्रजापति, आगरा निवासी, स्वव्यवसायरत, अच्छी आमदनी, निजी मकान, इकलौता पुत्र (और एक बहन शादीशुदा विदेश

...बसा हुए) युवक हेतु सजातीय, सुंदर, ग्रेजुएट वधू चाहिए. कोई दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, विधुर, रस्तोगी वैश्य, 165 सें.मी., इंटरमीडिएट, 4,000/- मासिक, पेंट्स व्यवसाय, पांच बच्चे (तीन लड़के कक्षा 11, 10, 9, दो लड़की कक्षा 7, 5, में शिक्षार्य), हेतु सुयोग्य, स्वस्थ, शिक्षित गृहकार्यदक्ष, संतानोत्पत्ति में असमर्थ वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, पटेल, गुजराती, बड़ोदरा निवासी, 175 सें.मी., स्वस्थ, सुंदर, स्मार्ट, एम.ए., को.ओ. बैंक में कैशियर हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9835, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्नेही, सुशिक्षित, दिल्ली कोठी मालिक, निर्व्यसनी, एकाकी, विधुर, हिंदू, 52 हेतु धर्म, प्रांत, निरपेक्ष, निर्धन वधू. सविवरण लिखें: वि.नं. 9836, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उच्च शिक्षित, स्मार्ट, धनी, इंडो-मारिशस व्यापारी, आय 2,00,000/-, वार्षिक नवयुवक हेतु स्लिम, गौरवर्ण, स्मार्ट, खूबसूरत, उच्चशिक्षित, सांस्कृतिक, घरेलू, मिलनसार कन्या चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. कन्याएं स्वयं भी पूर्ण विश्वास सहित लिखें: MR. OMDUTH, FAUGOO ROYAL ROAD, TRIOLET. MAURITIUS.

24, 176 सें.मी., इंजीनियर, प्रतिष्ठित व्यावसायिक परिवार, माहेश्वरी युवक हेतु सुंदर, सुशील, स्मार्ट, सजातीय वधू चाहिए. पत्रिका सविवरण सहित लिखें. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9842, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तोमर राजपूत युवक, 23 वर्षीय, 177.5 सें.मी., जूडोकराटे में प्रवीण, अत्यंत वैभव संपन्न, कानपुर नगर में स्थापित, मासिक आय, 3,000/-, फिल्म क्षेत्र में कार्यरत, सुंदर वर हेतु शिक्षित, सुंदर, राजपूत, वीरांगना वधू चाहिए. दहेज की समस्या नहीं. लिखें: वि.नं. 9843, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 एवं 26 वर्षीय, जैन धर्म में आस्था रखने वाले दो स्मार्ट, लंबे, सुस्थापित, सुंदर नवयुवकों हेतु सुंदर, सुशील, लंबी कन्याएं चाहिएं. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9844, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, गेहुआं रंग, 29,170 सें.मी., एम.एससी., एलएल.बी., ग्रामीण बैंक आफिसर हेतु सुंदर, गोरी, पतली, पोस्ट ग्रेजुएट, शिक्षित, प्रतिष्ठित परिवार की शहरी बैकग्राउंड की वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9845, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, ब्राह्मण (गोत्र उपाध्याय), अपनी सरकारी एजेंसी, आय पांच अंकों में, एक पैर कमजोर (विकलांग), दिल्ली निवासी हेतु गौड़ या चौरसिया परिवार की अपंग (विकलांग), चलने में समर्थ वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9846, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल, 24½, 175 सें.मी., इंजीनियर, बैंक अधिकारी, 2,600/- हेतु सुयोग्य वधू. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9847, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 170 सें.मी., कनौजिया (रजक), साधारण बीमा निगम में अधिकारी हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, दिल्ली निवासी, नौकरीपेशा, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9848, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25,163 सें.मी., शिक्षा मात्र इंटरमीडिएट, आय मात्र 700/-, हेतु उ.प्र. निवासी, समझदार, गृहकार्यदक्ष, चाहे कम पढ़ी किंतु सुंदर वधू चाहिए. जाति, दहेज नहीं. गरीब को प्राथमिकता. बिना खर्चे के शादी. पत्र हिंदी में लिखें: वि.नं. 9849, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 28, 150, सें.मी., आठवीं, 9,00/- रु. युवक हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9850, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27,172 सें.मी., बी.काम. (आनर्स), एम.काम., स्मार्ट, खत्री, स्टेट बैंक आफिसर हेतु प्रतिष्ठित परिवार की अति सुंदर, स्लिम कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. जयपुर/जोधपुर वासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9851, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 168 सें.मी., बी.काम., गुप्ता वैश्य, निजी थोक संपन्न व्यवसायी (डिस्ट्रीब्यूटर एंड स्टाकिस्ट), आय अच्छे चार अंकीय, प्रतिष्ठित परिवार हेतु सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9852, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी सैयद, 22 वर्षीय, 165 सें.मी., बी.काम. (आनर्स), संपन्न, प्रतिष्ठित, निजी व्यवसाय युवक हेतु शुद्ध, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9853, सरिता, नई दिल्ली-110055.

51 वर्षीय, हिंदू पंजाबी, विधुर, सिविल इंजीनियर, गजेटेड आफिसर (दो पुत्र एक पुत्री) हेतु 40-48 वर्षीया, सुशिक्षित, सुशील, लेक्चरर, टीचर, संगीतकार, नेत्रहीन/विकलांग, संतान अनिच्छुक/संतानोत्पत्ति में असमर्थ जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9854, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहार निवासी, 38 वर्षीय, पंजाबी, अरोड़ा युवक (ठेकेदार आय पांच अंकीय), ग्रेजुएट, 171 सें.मी., गेहुआं, तलाकशुदा हेतु 25-30 वर्षीया, अविवाहित, सुंदर, मैट्रिक से बी.ए. तक शिक्षित कन्या चाहिए. सुंदर, निसंतान, विधवा, परित्यक्ता, तलाकशुदा, पंजाबी, रिफ्यूजी (उग्रवाद के कारण) भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9855, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, 163 सें.मी., 2,000/-, अरोड़ा, अविवाहित, मैट्रिक फेल, निजी मकान, व्यवसाय, रुड़की निवासी युवक हेतु गरीब, कुंआरी, तलाकशुदा, विधवा जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें:

कलकत्तावासी, माहेश्वरी, 24½, 174, सें.मी., चार्टर्ड एकाउंटेंट, कंपनी सेक्रेटरीशिप (इंटर) कार्यरत, निजी मकान, इकलौते पुत्र हेतु सुंदर, सुशिक्षित, घरेलू, माहेश्वरी/अग्रवाल वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9857, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोयल, 26,180, सें.मी., राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत, निजी बंगला हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. प्रथम बार संपूर्ण विवरण. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9858, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 175 सें.मी., माहेश्वरी, बी.काम., स्वस्थ, सुंदर, सुव्यवस्थित, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु सुंदर, सुशील, गौरवर्णीय, गृहकार्यदक्ष, धार्मिक विचार वाली कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. सविवरण लिखें: वि.नं. 9859, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40, प्राथमिक अध्यापक, रंग सांवला हेतु योग्य महिला साथी चाहिए. बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9860, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इंटरमीडिएट, 27 वर्षीय, 168 सें.मी., 55 कि.ग्रा., गेहुआं रंग, स्वस्थ, निर्व्यसनी, विदेश में कार्यरत हेतु सुंदर, स्वस्थ, सभ्य, सेवा भाविक, इज्जतदार, गृहकार्यदक्ष, सिलाई, कटाई, कढ़ाई, बुनाई का अच्छा ज्ञान, शाकाहारी, हिंदीभाषी, ग्रामीण व शहरी, 24 वर्ष तक की पतली कन्या चाहिए. अनाथ कन्या को प्राथमिकता. पोस्टकार्ड साइज की दो फोटो (एक आधी एक पूरी) के साथ, संपूर्ण विवरण प्रथम बार में ही लिखें. उपजातिबंधन, दहेजबंधन बिलकुल नहीं. कोर्ट मैरिज को प्राथमिकता. लिखें: R.M. JAGANNATH. 76192—GANZOUR. TRIPOLI. LIBYA.

माहेश्वरी, 27,168 सें.मी., बैंक आफिसर हेतु सुंदर, कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9861, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलिम, 33,168 सें.मी., नेवल आफिसर (दो बच्चे) हेतु संतानोत्पत्ति असमर्थ, धर्म परिवर्तनार्थ सहमत, गोरी, तलाकशुदा वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9862, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 26,177 सें.मी., बी.ए., एम.एस. युवक, पिता का सुस्थापित क्लीनिक हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. मेडिको को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9863, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा ओसवाल जैन, विधुर, 37 वर्ष हेतु दो बच्चे हैं 17/15, बीसा ओसवाल, गरीब परिवार की सुंदर, सुशील, स्वस्थ, पढ़ीलिखी कन्या चाहिए. मासिक आय 6,000/-, निवास बेंगलूर इच्छुक. पूर्ण विवरण के साथ संपर्क करें. बच्चे रहित विधवाएं भी संपर्क करें. ऊंचाई 168 सें.मी. लिखें: वि.नं. 9864, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26,170 सें.मी., बी.काम., व्यापाररत, स्लिम, स्मार्ट, धारा अग्रवाल युवक हेतु सजातीय, घरेलू कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9865, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

माहेश्वरी, 19,165 सें.मी., 55 कि. बी.काम., असाधारण सुंदर कन्या हेतु आई.ए.एस. सी.ए. या समयोग्य या स्वतंत्र व्यापारी व माहे. 28,175 सें.मी., 60 कि.ग्रा., एम.काम., सुं. शाकाहारी, मद्य निग्रही, मासिक आय स्वतंत्र व्या. से 20,000/-, के लिए माहेश्वरी, अग्रवाल, अति सुंदर वर-वधू के लिए पत्र आमंत्रित हैं. लिखें: वि. 9838, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय, प्रतिष्ठित, अनुसूचित जाति (जाटव) परिवारीय, 24 वर्षीया, 162 सें.मी., गेहुआं, सुंदर छात्रा, एम.ए., गृहकार्यदक्ष हेतु राजपत्रित अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर वर एवं दो भाइयों सहायक निदेशक, ओ.एन.जी.सी. के पद पर आसीन, एम.एससी., 28 वर्षीय, 172 सें.मी., गेहुआं एवं उ.प्र. सेवारत डाक्टर, 26 वर्षीय, 165 सें.मी., गेहुआं हेतु स्नातक, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधुएं चाहिए. डाक्टर हेतु मेडिको को प्राथमिकता. पिता व दो बड़े भाई राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 9839, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार, 24 वर्षीय, 175 सें.मी., रंग गोरा, निर्व्यसनी, शाकाहारी, सहृदय, व्यापारदक्ष, स्मार्ट, मांगलिक भाई हेतु वधू एवं एम.एससी., 20 वर्षीया 160 सें.मी., रंग गोरा, सुंदर, सुशील, मांगलिक बहन हेतु सजातीय, सुशिक्षित, उच्च सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9840, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

गुप्ता दंपति, नर्सिंग होम, संस्था या अनाथ आश्रम द्वारा नवजात से 4 माह तक का शिशु गोद लेना चाहते हैं. लिखें: वि.नं. 9719, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, अग्रवाल, हाईस्कूल, सुशील, एकाकी, शाकाहारी नवयुवक हेतु जो उच्चशिक्षा एवं प्यार दे सकें. लिखें: वि.नं. 9837, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

बंबई स्थित, माहेश्वरी परिवार हेतु 40-45 वर्षीया, स्वस्थ, बेसहारा, अकेली, शाकाहारी नौकरानी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9841, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पांडुलिपि संशोधन के लिए हिंदी में दक्ष संपादकों की आवश्यकता है. हिंदी के व्याकरण, विरामचिह्नों, वाक्य विन्यास आदि के बारे में पूर्ण ज्ञान आवश्यक. आवेदन करें: सरिता, नई दिल्ली-110055.

अब आप भी मज़ा लीजिए पेन्टिंग का-चाहे कपड़ा हो या सिरैमिक, कैनवास या कुछ और. लगभग सभी सतहों पर रंग जमाएं-फ़ेविक्रिल एक्रिलिक कलर्स.
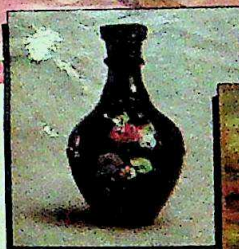
▲ फ़ेविक्रिल सिरैमिक्स पर

◀ फ़ेविक्रिल कैनवास पर

जी हाँ, फैब्रिक कलर्स में फ़ेविक्रिल सर्वश्रेष्ठ तो है ही, पर कैनवास, सिरैमिक, एक्रिलिक शीट्स और धातु आदि पर भी फ़ेविक्रिल से पेन्टिंग करना उतना ही आसान और मज़ेदार है.

फ़ेविक्रिल एक्रिलिक कलर्स में मीडियम मिलाने की कोई ज़रूरत नहीं. बस बोतल खोलिए, ब्रश डुबोइए... और पेन्टिंग शुरु कीजिए.

फ़ेविक्रिल एक्रिलिक कलर्स हर सतह पर एकदम आसानी से इस्तेमाल हो सकते हैं. और ये कलर्स चमकीले तथा पक्के रहते हैं. किसी भी सतह पर - ना चिपचिपाहट,ना पपड़ियाँ. फ़ेविक्रिल एक्रिलिक कलर्स २७ मनमोहक रंगों में उपलब्ध हैं, जो बड़ी आसानी से एक दूसरे से मिल जाते हैं, ताकि आप अपना विशेष मनपसंद शेड भी बना सकें. अब सादा फूलदान, सजीला बने उसमें सजाए हुए फूलों के समान - फ़ेविक्रिल से.

कोरे कैनवास की एक बढ़िया पेन्टिंग बन सकती है और एक्रिलिक शीट्स पेन्टिंग बनकर दीवारों को सजा सकती है.

फ़ेविक्रिल के साथ ज़रूरत है तो सिर्फ़ एक ब्रश और आपकी कल्पना की.

फ़ेविक्रिल
एक्रिलिक कलर्स
फैब्रिक/आर्ट पेन्टिंग के लिए

पेन्टिंग आसान, काम मजेदार

मुफ़्त! डिज़ाइन/स्टैंसिल. (अपनी पसन्द पर निशान लगाइए). कूपन को भर कर इस पते पर भेजिये: 'फ़ेवी फ़ेयरी', पोस्ट बाक्स ११०८४, बम्बई-४०० ०२० Sr

नाम ______ पता ______

⊖ फ़ेविक्रिल यह एडहेसिवों में सुप्रसिद्ध ब्रॉण्ड फ़ेविकोल के निर्माता पिडिलाइट इण्डस्ट्रीज प्रा. लि. बंबई ४०० ०२१ का ट्रेडमार्क है.

OBM/2759/HN

ठंडा... और ठंडा:
अनन्य क्षमता का परिणाम.
सब तरह से नया गोदरेज कम्प्रेसर
और पॉलीयूरीथेन इंस्युलेशन.
नये गोदरेज 165 लीटर रेफ़्रिजरेटर की ठंडा करने की क्षमता सचमुच बेमिसाल है. आधुनिक तकनीक से बना और सब तरह से नया मज़बूत कम्प्रेसर. साथ ही अंतर्राष्ट्रीय दर्जे का पॉलीयुरीथेन इंस्युलेशन. दोनों मिल कर अधिक तेज़ी से ठंडा करते हैं और बिजली भी बचाते हैं.
गोदरेज रेफ़्रिजरेटर वोल्टेज की ज़्यादा से ज़्यादा घट-बढ़ भी मज़े में संभाल लेते हैं. सच पूछिए तो 165 लीटर रेफ़्रिजरेटर में इतनी ख़ूबियाँ पहले कभी नहीं मिलीं.
बेहतरीन गोदरेज डिज़ाइन के फलस्वरूप दरवाज़े के पैनल और सब्ज़ी ट्रे में अब इतनी जगह जितनी पहले कभी नहीं मिली. और मनपसंद चुनाव के लिए केवल गोदरेज ही पेश करते हैं चार और आकर्षक रंग: इलेक्ट्रिक रेड, स्प्रिंग ग्रीन, डेज़र्ट सैंड तथा कूल ब्लू. और क्लासिक व्हाइट तो है ही!
Godrej
165 लीटर रेफ़्रिजरेटर
सचमुच बेजोड़
HTA 2090

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ   अंक : 798 जुलाई (द्वितीय) 1988

कथा साहित्य

लेख

स्तंभ

कविताएं

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016, मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस काम्प्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008.
सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 240 रु., (हवाई डाक से) 636 रु.

मूल्य एक प्रति 5.00 रुपए, वार्षिक 120 रुपए.

आतंकवाद से संबंधित टिप्पणी मन को कचोटने वाली लगी.

आतंकवादियों को मंदिर, मसजिद आदि धार्मिक स्थल आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं. इसी लिए वे ऐसे स्थानों को अपना केंद्र बना लेते हैं.

अतः सरकार को केवल स्वर्ण मंदिर में ही नहीं, अन्य धार्मिक एवं संदिग्ध स्थलों के मामले में भी सख्ती से पेश आना चाहिए. —मुकेशकुमार सेन
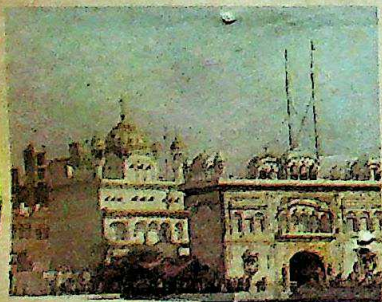
स्वर्ण मंदिर में कुछ आतंकवादियों का आत्मसमर्पण सरकार की उल्लेखनीय सफलता है. किंतु आतंकवादियों ने तो व्यापक पैमाने पर अपना जाल फैला रखा है. अतः सरकार को भी शीघ्र ही व्यापक स्तर पर कारवाई करनी चाहिए. —के.बी. मालवीया

*

कांग्रेस कार्यकारिणी के संदर्भ में आप के विचार तर्कसंगत लगे.

लगता है, आजकल कांग्रेसी विधायकों व सांसदों की स्थिति बड़ी दयनीय हो गई है. इतना अंकुश तो दिवंगत इंदिरा गांधी के जमाने में भी नहीं था.

'कांग्रेसियों के भगवान' की कृपादृष्टि कब तक किस पर रहेगी, इस की जानकारी तो उन के बहुत करीबी व्यक्ति को भी नहीं हो पाती. लोकतांत्रिक प्रणाली होने के बावजूद, सत्ता पक्ष के ही सांसदों एवं विधायकों को अपनी बात कहने की स्वतंत्रता नहीं है तो भला आम नागरिकों की क्या हैसियत होगी? —[illegible]

सुबूतों का बहाना

लेख 'बोफोर्स सौदे की [illegible] के घेरे में' (जून/द्वितीय) से यह जगजाहिर हो गया है कि भारत में निष्पक्ष जांच होना संभव ही नहीं है.

संयुक्त संसदीय जांच समिति का यह कहना गलत है कि पर्याप्त सुबूत उपलब्ध नहीं हैं. क्या 'इंडियन एक्सप्रेस', 'दि हिंदू' आदि समाचारपत्रों में प्रकाशित दस्तावेज जाली हैं?

इसी संबंध में दूरदर्शन पर प्रस्तुत विशेष कार्यक्रम के अंतर्गत जानबूझ कर वही प्रश्न पूछे गए, जिन से कांग्रेस की छवि धूमिल न हो और विपक्ष से ऐसे प्रश्न पूछे गए, जिन का संबंध बोफोर्स सौदे से नहीं था अथवा उन का उत्तर तत्काल देना संभव नहीं था. —राजेश्वरसिंह 'राज'

*

दवा विक्रेता कितने दोषी

लेख 'बेमौत मरना : अपना इलाज खुद करना' (जून/द्वितीय) से मैं सहमत हूं. फिर भी दवा विक्रेता ही इस के लिए दोषी नहीं कहे जा सकते. दिल्ली का औषध विभाग इतना भ्रष्ट है कि हजारों रुपए व्यय करने पर ही दवा विक्रेताओं को लाइसेंस मिल पाता है. यह पैसा कहां से निकले, यदि दवा विक्रेता मनमरजी से दवा न बेचें.

दूसरी बात है कि अच्छे डाक्टर आम जनता की पहुंच से बाहर हैं. मजबूरन उन्हें नीमहकीमों या दवा विक्रेताओं की शरण में जाना पड़ता है. —एक पाठक

*

तनाव : कारण और निवारण

लेख 'मानसिक तनाव से कैसे बचें?' (जून/द्वितीय) उपयोगी है.

आज मानसिक तनाव जीवन का अंग बन चुका है. नगरों में यातायात, महंगाई, पदार्थ दुर्लभता, जल व वातावरण प्रदूषण आदि के कारण हमारा जीवन तनावपूर्ण रहने लगा है.

लेखक ने ठीक ही कहा है कि किए गए कार्य के प्रति संतोष व परिणाम के प्रति निरपेक्ष भाव होना चाहिए. तभी तनाव कम होगा. —बी. रमेश जैन

*

स्वास्थ्य विशेषांक

स्वास्थ्य विशेषांक (जून/द्वितीय) में अनेक गंभीर रोगों के कारणों और उन के उपचार की अच्छी जानकारी दी गई है.

किंतु सुझाए गए उपचार अत्यंत महंगे और दुर्लभ हैं, जिन्हें केवल धनवान रोगी ही प्राप्त कर पाते हैं. —महेंद्र शर्मा (मनोहर)

*

स्वास्थ्य संबंधी लेखों ने हमारी आंखें खोल दीं. किसी भी असावधानीवश अपने रोग को बढ़ा लेने वालों को यह विशेषांक सचेत करता है. —रंजना अरोड़ा

*

राजा और डाकू

लेख '[illegible]' (जून/प्रथम)

काइ रकम मिलती है, पत्रलेखक की ऐसी सोचना उस की घटिया मानसिकता का परिचायक है क्योंकि निष्पक्ष विचार प्रस्तुत करना पत्रकारिता का प्रमुख गुण है.

—आनदसिंह भंडारी

*

में 'बाबरनामा' के आधार पर बाबर को एक डाकू बताया गया है.

यदि इतिहास में वर्णित तमाम राजवंशों के संस्थापकों के बारे में जाना जाए तो यही प्रतीत होगा कि वे भी आरंभ में चोर, डाकू या लुटेरे थे. अपने बाहुबल से उन्होंने पहले छोटे समूह, फिर बड़े समूह और तदुपरांत राज्य पर अपनी निरंकुशता स्थापित कर अपने राजवंश की नींव रखी.

यह सर्वविदित है कि राजा का विरोध करने वाला विजयी होने पर राजा बन जाता है, जबकि हारने पर वह विद्रोही कहलाता है. —सी. दास

*

आवास समस्या

लेख 'डी.डी.ए. का मकान : जीवन भर का रोना' (जून/प्रथम) अच्छा लगा.

यह समस्या केवल दिल्ली की ही नहीं, सभी नगरों की है. नगरों में विकास प्राधिकरण, नगर सुधार न्यास आदि संस्थाएं बड़ीबड़ी योजनाएं तो बनाती हैं, मगर उन्हें पूरा करने में समय बहुत लगाती हैं. शायद इस के पीछे भ्रष्टाचार ही कारण है. —प्रेमकुमार कुलदीप

*

सुझाव का अभाव

कहानी 'असहाय' (जून/प्रथम) का अंत उचित नहीं प्रतीत होता है क्योंकि न तो इस में कोई पारिवारिक सुझाव है और न ही कोई महत्त्वपूर्ण उद्देश्य. —सुरेशकुमार नेगा

*

निष्पक्ष पत्रकारिता

पत्र 'हिंदूधर्म की आलोचना क्यों?' (आप के पत्र/जून/प्रथम) से मैं सहमत नहीं हूं.

'सरिता' को मुसलमानों या अन्य धर्मावलंबियों से

पर्यटन विशेषांक

पर्यटन स्थल उदयपुर का विवरण अत्यंत संक्षिप्त कर दिया गया है. लेख में विश्वविख्यात राजसमंद झील तथा रणकपुर के जैन मंदिर को नजरअंदाज कर दिया गया है.

उदयपुर के लकड़ी के खिलौने तथा कलात्मक वस्तुएं बहुत प्रसिद्ध हैं. यहां आने वाले पर्यटक ये चीजें जरूर खरीदते हैं. —अंजनी परिहार

*

बहाई धर्म

लेख 'उग्र होता फिलिस्तीनी विवाद' (मई/प्रथम) के अंतर्गत बहाई धर्म के विषय में दी गई जानकारी में कुछ भूल रह गई है.

बहाई धर्म को एक स्वतंत्र धर्म के रूप में स्वीकार किया जाता है, न कि किसी दूसरे धर्म के एक पंथ या संप्रदाय के रूप में.

दूसरी बात यह है कि बहाई धर्म के संस्थापक बहाउल्लाह थे 'बहाउल्लाह' का शाब्दिक अर्थ है प्रभु का प्रकाश. उन का जीवन काल 1817 से 1892 तक है. उन्होंने अपने ईश्वरीय उद्देश्य और एक नया धर्म प्रकट करने की उद्घोषणा 1863 में बगदाद में की थी. बहाउल्लाह के अनुयायी ही बहाई कहलाए. आज संसार के प्रत्येक भाग में बहाई निवास करते हैं.

—जनसंपर्क विभाग, बहाई पब्लिक इनफारमेशन आफिस, दिल्ली.

*

विकलांगोद्धार, अंतर्जातीय विवाह और 'सरिता'

'सरिता' वैवाहिक विज्ञापनों द्वारा केवल जीवनसाथी खोजने में ही सहयोगी नहीं है, बल्कि विकलांगोद्धार, अंतर्जातीय विवाह आदि के रूप में कल्याण की भावना भी पैदा करती है. दहेज पीड़ित, निस्सहाय, निराश लोगों को 'सरिता' के माध्यम से मनपसंद जीवनसाथी की तलाश करनी चाहिए.

सरिता (जुलाई 1987) में 'वर चाहिए' शीर्षक से मैं ने एक विज्ञापन 'नेत्रहीन गुप्ता, 23 वर्ष...' पढ़ा था. मेरे मन में नेक कार्य की भावना जागी और 14 नवंबर 1987 को मैं ने उस विज्ञापन की 'नेत्रहीना' से दहेज रहित विवाह कर लिया. तब से हमारा दांपत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो रहा है. किसी को कोई शिकवाशिकायत नहीं है. —डा. एल. के. शर्मा

*

आधे मूल्य में वैवाहिक विज्ञापन

आप विधवाओं और परित्यक्ताओं के विवाह के लिए आधे मूल्य पर वैवाहिक विज्ञापन देते हैं, यह बहुत ही अच्छी बात है. —एक पाठक

सुमन सौरभ
जुलाई 1988
जासूसी व शौर्य कथा विशेषांक
दुश्मन के किले में चतुराई से घुस कर उसे बेनकाब करना और कानून को मदद पहुंचाना ही देशभक्त जासूसों का असली काम होता है. इस अंक में उन साहसी किशोरों के अद्भुत कारनामे होंगे जिन्होंने दुश्मनों के छक्के छुड़ा कर जानेमाने जासूसों को भी पीछे छोड़ दिया.
जासूसी कहानियों की एक झलक
कहानी: काला गुलाब
तभी अंदर से उल्लू के बोलने की आवाजें आईं. अनूप ने गौर से उस आवाज को सुना. 'नहीं, यह उल्लू की आवाज नहीं, कोई संकेत से किसी को बुला रहा है...' वह छाया पश्चिम की तरफ वाले दरवाजे पर ठिठक गई.
कहानी: पुरानी इमारत का रहस्य
रात को जाने कब सूरज की नींद टूट गई. उसे जोरों की प्यास लग रही थी. दो मिनट के लिए उसे समझ नहीं आया कि वह कहां है. फिर उसे याद आया कि वे लोग उस सूने बंगले में हैं. सूरज जैसे ही गलियारे में आया कि ठिठक गया. बाहर से कुछ अजीब सी आवाजें आ रही थीं. उस के रोंगटे खड़े हो गए.
कहानी: अपहरण
उस आदमी की पदचाप गली में गूंज कर दिल में भय व खौफ पैदा कर रही थी. अब वह बिलकुल नजदीक आ गया था. मैं दीवार के निचले छज्जे के नीचे नाली में लेट गया. मेरी तरफ उस का एकएक कदम मेरा बूंदबूंद खून सुखाता जा रहा था. भय से सिहरन पैदा कर देने वाली कहानी.
कहानी: वही आदमी
राजेश को वह आदमी जानापहचाना सा लगा. माथे पर चोट का निशान, लंबा सा व्यक्ति, पर वह तो गंजा था. इस के सिर पर बाल हैं. "कहीं यह दूसरा आदमी तो नहीं है?" राजेश ने सोचा. कौन था वह रहस्यमय आदमी?
अन्य कहानियां
उड़न तश्तरी का रहस्य, मौत के साए में, गायब हुई बही, आधी मूंछें, फोननंबर, अंगूठी की वापसी, एनव नहीं अस्ताफील, संपत चंपत ने हार चोर पकड़ा, वगैरह साथ में जासूसी पर ढेर सारी सामग्री, सभी स्थायी स्तंभ, 6 चित्रकथाएं.
विशेष आकर्षण : बोफोर्स तोप का क्लोजअप.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन

"ગાયબ!"

"चोले गेयेछे!"

ग़ायब!

दर्द और पीड़ा बस ग़ायब!

दस प्राकृतिक तत्व आराम पहुंचाने वाले एक बाम में मिलाए गए हैं - जिसे कहा जाता है अमृतांजन. ९० वर्षों से अधिक समय से विश्वसनीय.

सिरदर्द हो, बदनदर्द या मोच, इनके पहले लक्षण दिखते ही अमृतांजन हल्के हल्के मलिए, इसके पहले कि आप इसे महसूस कर पाएं, दर्द... ग़ायब!

अमृतांजन

जल्द लौटा लाए-आपकी मुस्कान!

OBM 824 HIN

अमृतांजन लिमिटेड

दिन दहाड़े

कुछ दिन पहले मैं रेलवे आयोग की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए 'बिहार राज्य पथ परिवहन' की बस से रांची जा रहा था. मैं ने टिकट लेने के लिए 20 रुपए दिए. काउंटर क्लर्क ने मुझे एक टिकट दे कर बाकी 7 रुपए बस में ले लेने के लिए कहा और टिकट के पीछे लिख भी दिया.

बस के चलने पर मैं ने परिचालक से अपने बाकी पैसों की मांग की. लेकिन टिकट देख कर उस ने बड़ी हैरत से कहा कि वह टिकट न तो उस बस का है और न ही वह बाकी पैसों के बारे में जानता है.

इस प्रकार मुझे पुनः 13 रुपए दे कर रांची पहुंचना पड़ा. —निर्मलसिंह बानरा

*

एक बार मेरे पिताजी के मित्र गोरखपुर से फैजाबाद जा रहे थे. रास्ते में उन की एक व्यक्ति से मित्रता हो गई. कुछ समय पश्चात पिताजी के मित्र को झपकियां आने लगीं तो उस व्यक्ति ने उन से कहा, "भाई साहब, यहां बहुत से जेबकतरे भी घूमते हैं, इसलिए सावधान रहिएगा."

इस पर पिताजी के मित्र अपनी जेब टटोलते हुए बोले, "हम से कौन पैसे ले जा सकता है?" और इतना कह कर वह निश्चिंत हो कर सो गए.

लेकिन जब वह फैजाबाद पहुंचे तो उन के पास बैठे संदिग्ध व्यक्ति का कहीं पता नहीं था और उन सज्जन के पैसे भी गायब थे. —कविता त्रिपाठी

*

पिछले दिनों दिल्ली के एक समाचार पत्र में प्रकाशित एक कंपनी के आकर्षक विज्ञापन को पढ़ कर मैं ने उस में उल्लिखित आशुलिपिक के पद के लिए अपना आवेदनपत्र भेजा.

आवेदन पत्र भेजने के एक सप्ताह के भीतर ही मुझे साक्षात्कार के लिए बुलावा आ गया. साक्षात्कार के दौरान पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर मुझे उत्तीर्ण घोषित कर दिया गया और कंपनी का 75 रुपए पंजीकरण शुल्क जमा करवा कर मुझे 15 दिन बाद आने को कहा गया.

पंद्रह दिन बाद जब मैं उस कंपनी के कार्यालय पहुंचा तो पता चला कि कंपनी मेरी ही तरह कई अन्य आवेदनकर्ताओं को भी बेवकूफ बना कर हजारों रुपए लूट ले गई थी. —मनीष कुमार

हमें शहर में रहते हुए कुछ ही महीने हुए थे. एक दिन एक व्यक्ति हमारे घर आया और बोला, "मैं बिजली विभाग से आया हूं. आप का तीन महीने का बिल जमा नहीं हुआ है. इसलिए आप तुरंत मुझे भुगतान कर दीजिए."

हमारे संदेह करने और बिल दफ्तर में जमा करने की बात पर वह बोला, "सोच लीजिए. आज आखिरी दिन है. फिर आप का बिजली का कनेक्शन कट जाएगा." साथ ही उस ने रसीद बुक में उन लोगों के नाम व पते दिखाए जिन से वह पैसा ले चुका था. कोई और उपाय न देख कर हम ने तीन महीने के बिल का भुगतान कर उस से रसीद ले ली.

कुछ दिन बाद ही बिजली विभाग से नोटिस आने पर हम ने वहां वह रसीद दिखाई तो उन्होंने बताया कि यह रसीद और वह आदमी दोनों जाली हैं. —सुमन मिश्रा ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

Rs. 624

क्या आपको 'इम्पोर्टेड' छाप पर भरोसा करना चाहिए? आप तो पूरे भरोसे से ले सकते हैं असली टाइटन क्वार्ट्ज़.

जानते हैं, भारत में बिकने वाली 'इम्पोर्टेड' घड़ियों में से ८०% या तो नकली होती हैं या घटिया. कौन सी कितनी चलेगी, कहना मुश्किल है. और इन पर गारण्टी भी तो नहीं.

अगर आप विदेश से कोई घड़ी खरीदते भी हैं तो आप यकीन से यह नहीं कह सकते कि यहां उसकी सर्विस हो भी सकती है या नहीं... अगर हो भी तो कितना समय और पैसा लगे.

आप तो ले सकते हैं दो साल की पक्की गारण्टी वाली असली टाइटन क्वार्ट्ज़ घड़ी, जिसके साथ आपको मिलता है टाटा के नाम का भरोसा-बरसों हर वक्त साथ निभाने का.

आपकी सेवा के लिए टाइटन की भरोसेमंद सर्विस-सुविधा देश के कोने कोने में उपलब्ध है. सुविधा जो फुर्तीली भी है, किफ़ायती भी. यहां तक कि ज़रूरत पड़ने पर नई बैटरी भी सिर्फ़ १७ रुपये में लगाई जा सकती है.

तो बस अब आप चुनिए अपनी घड़ी टाइटन की अंतर्राष्ट्रीय पसंद की १५० से ज्यादा शानदार क्वार्ट्ज़ घड़ियों में से. कीमत सिर्फ़ ३५० रु. से १५०० रु. तक.

टाटा की ओर से टाइटन क्वार्ट्ज़

अपने लिए, अपनों के लिए

OBM/2849 HIN

टाइटन वाचेस लिमिटेड, सोना टॉवर्स, ७१ मिलर रोड, बंगलोर

मार्गशीर्ष जुलाई (द्वितीय) 1988

सरित प्रवाह

राजीव गांधी ने शनिवार 25 जून को अपने मंत्रिमंडल का एक बार फिर पुनर्गठन किया—25वीं बार.

इस उलटफेर में किसी सोचविचार या गंभीर पैंतरे का कोई सवाल नहीं था. इलाहाबाद की करारी चोट के बाद जख्म सहलाने और मरहमपट्टी करने की भावना ही इस में अधिक थी. उत्तर प्रदेश से वीरबहादुर सिंह को तो हटना ही था, महाराष्ट्र में शंकरराव भाऊराव चह्वाण स्थिति संभाल नहीं पा रहे थे. कुछ वफादार पिछलगुओं को टुकड़े फेंकने थे; कांग्रेस के ही कुछ संभावित प्रतिद्वंद्वियों को महत्त्वपूर्ण स्थानों से हटाना था.

पिछले दिनों नारायणदत्त तिवारी, अर्जुन सिंह, नरसिंह राव, रामास्वामी वेंकटरमण व अन्य एकदो के नाम कांग्रेस के नेतृत्व के लिए, राजीव गांधी के विकल्प के रूप में, उभरे थे. इन सब को धीरेधीरे या तो हटा दिया गया है या ऐसे स्थान पर रखा गया है जहां वे लोग अपने अधिकार का प्रयोग कर के अपने समर्थकों की संख्या न बढ़ा सकें.

जैसा इन मंत्रियों में मंत्रिमंडल के 24वें उलटफेर के समय (सरिता/मार्च/प्रथम/1988) कहा गया था, राजीव गांधी समझते हैं कि असली भारत सरकार तो मैं ही हूं, मंत्री तो मेरे शतरंज के मोहरे हैं, जहां बैठा दिया, ठीक है. चाल तो मैं ही चलूंगा.

आज देश में अराजकता है, सरकारी व्यवस्था चरमरा रही है, ताश के पत्तों की तरह महत्त्वपूर्ण सरकारी नीतियां रोज बनतीबिगड़ती हैं, ऊपर से ले कर नीचे तक हर व्यक्ति, कांग्रेसजन समेत, असंतुष्ट, चिंतित और घबराहट में डूबा है. वह व्यवस्था में परिवर्तन चाहता है, पर बेबस, लाचार है.

भारत जैसे बड़े, समस्याओं से लदे देश की सरकार चलाना आसान काम नहीं है. जब साधारण लिपिक या मोटरचालक के लिए भी सुचारु रूप से काम करने के लिए अनुभव व अपने स्थान पर स्थायित्व आवश्यक होता है, यहां केंद्रीय मंत्रिमंडल रोज पासों की तरह बदला, उलटापुलटा जाता है. किसी व्यक्ति को अपने पद, अपने मंत्रालय की समस्याएं, बारीकियां और कार्यप्रणाली समझने का अवसर ही नहीं मिलता. आज यहां तो कल वहां. ऐसे में अधिकारी या तो मनमानी करेंगे, जेबें भरेंगे, या कोई फैसला ही नहीं करेंगे. हर प्रकार से देश और जनता की हानि है. प्रगति में बाधा है, गरीबी को बढ़ावा है, बेईमानी और धांधली में उछाला है.

पर राजीव गांधी को इस सब से क्या?

वह कहते हैं, मैं तो प्रधानमंत्री पद के लिए लालायित ही नहीं था (अब इसे हाथ से नहीं जाने देने के लिए संकल्पबद्ध हूं,यह बात दूसरी है). मुझे आप लोगों ने पहले प्रधान मंत्री बना दिया, फिर 1984 के चुनावों में संपुष्टि कर दी, अब आप भुगतो. निकाल सको तो निकाल दो. हिम्मत है क्या?

*

ज्ञानी जैलसिंह ने अपने राष्ट्रपति होने के अंतिम दिनों में राजीव गांधी के विरुद्ध कोई कदम नहीं उठाने के बदले अन्य शर्तों के अलावा राजीव गांधी से एक शर्त यह मनवाई थी कि कमलकांत तिवारी को, जो ज्ञानी जैलसिंह को रोज गालियां चटखाया करते थे और जिस में राजीव गांधी को स्वयं मजा आता था, मंत्री पद से हटा दिया जाए. फलस्वरूप तिवारी मंत्रिमंडल से बरखास्त कर दिए गए थे.

पर अब 25 वें उलटफेर में तिवारी विदेश मंत्रालय में छोटे मंत्री के रूप में फिर सम्मिलित कर लिए गए हैं.

इस का अर्थ यह हुआ कि राजीव गांधी ने जैलसिंह से किया गया करार तोड़ दिया है. तो क्या अब जैलसिंह भी राजीव गांधी के खिलाफ बोलने और गोपनीय बातों पर प्रकाश डालने में स्वतंत्र हैं?

संसार के सब से बड़े और जितना संभव है उतने जनतांत्रिक देश अमरीका में राजनीति में कुछ छिपा नहीं रहता. सब बातें, अच्छी या बुरी, जो परदे के पीछे होती हैं, देरसवेर जनता के सामने खोल दी जाती हैं. वहां राष्ट्रपति तक को नहीं बख्शा जाता. उदाहरण के तौर पर विगत राष्ट्रपति जान कैनेडी को औरतों का बड़ा शौक था. हर रोज रात को राष्ट्रपति निवास ह्वाइट हाउस में नई औरतें लाई जातीं और सुबह वापस भेज दी जातीं. कैनेडी के मरने के बाद (कैनेडी की पत्नी जैकवुलीन द्वारा एक बूढ़े, पर अपार धनी ग्रीक ओनासिस से पुनर्विवाह करने का एक कारण कैनेडी का यह परस्त्रीगमन भी था). कैनेडी के मरने के बाद यह बात पुस्तकों व पत्रिकाओं में खुल कर छप गई.

आजकल भी अमरीका में राष्ट्रपति रेगन और उन की पत्नी नैंसी की अनेक अंदरूनी बातें, व उन की कार्यप्रणाली के बारे में खुल कर बात हो रही है.

कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति की अंदरूनी बातों पर क्यों प्रकाश डाला जाए? ठीक है, यदि वह व्यक्ति देश का संचालन न कर रहा हो. परंतु जो करोड़ों नागरिकों के जीवन से हर रोज खेलता हो, उस की बातों पर कंबल पड़ा रहना आवश्यक नहीं है. यदि वह व्यक्तिगत गोपनीयता चाहता है तो राजनीति के मैदान में नहीं आए, घर बैठे. देश के कर्ताधर्ता होने के नाते आप के हर छोटेबड़े, भलेबुरे कामों पर प्रकाश पड़ना आवश्यक ही है, किसी भी सफल जनतंत्र के लिए.

राजनीतिबाजों के कामों की, जिन पर वे परदा डालना चाहते हों, सार्वजनिक रूप में समीक्षा होनी ही चाहिए. अमरीका व ब्रिटेन की तरह भारत में भी इस विषय में जनता की जानकारी बढ़नी चाहिए ताकि कोई शक्तिशाली व्यक्ति गलत काम करने की हिम्मत न करे.

*

स्वीडन की बोफोर्स कंपनी से दूर मार करने वाली तोपों की भारत सरकार द्वारा खरीद, और उस में लगभग 64 करोड़ रुपए की रिश्वत दिए और लिए जाने के मामले को जितना दबाए जाने की कोशिश की जाती है, उतना ही वह उछलता, उलझता दिखाई पड़ता जाता है.

पिछले एक वर्ष से, जब से स्वीडन के टीवी ने यह रहस्योद्घाटन किया था कि इस सौदे में बड़ी ऊंची रकम रिश्वत या कमीशन के रूप में दी/ली गई है, भारत में बराबर एक हंगामा मच रहा है. आज दूरदराज गांवों व जंगलों में रहने वाले आदिवासी भी बोफोर्स के नाम से परिचित हैं, चाहे उन्हें इस घिनौने सौदे के बारे में पूरा विवरण नहीं मालूम हो.

राजीव गांधी और सरकार कहती

रहा है कि हमारा इस रिश्वत या कमीशन से कोई संबंध नहीं है; न तो किसी ने यह दी, न किसी ने ली. पर हर सप्ताह इस सौदे की एक परत खुलती जा रही है.

इस साल के शुरू में सरकार द्वारा कांग्रेसियों व उस के सहयोगियों से लदी हुई एक संयुक्त संसदीय समिति बैठाई गई थी जो रिश्वतबाजी की जांच करे. इस शंकरानंद समिति ने, जैसा पहले ही लोगों को विश्वास था, मामले पर सफेदी पोत कर सब को—भारत सरकार को, राजीव गांधी को, अमिताभ बच्चन को, विन चड्ढा को—पाकसाफ होने का प्रमाणपत्र दे दिया और इन सब ने ठंडी सांस ली—चलो बला टली.

पर अभी 22 जून को मद्रास के एक अंगरेजी दैनिक 'हिंदू' ने, जिस ने कभी अपने सारे जीवन काल में सरकार विरोधी कोई कदम नहीं उठाया, स्वीडन के बोफोर्स कंपनी और दो विदेशी, केवल खानापूरी करने के लिए बनाई, कंपनियों के बीच हुआ पत्रव्यवहार प्रकाशित किया है, जिस से साफ जाहिर होता है कि सौदे के हर भुगतान पर निर्धारित कमीशन देने का करार किया गया और यह कमीशन बाकायदा स्विटजरलैंड के गुप्त खातों में जमा किया गया.

पहले तो राजीव गांधी की सरकार ने, हमेशा की तरह, इन दस्तावेजों को जाली बताया, पर ये कागजात इतने अधिक और विश्वसनीय थे कि इन को जाली करार दे कर किसी को बेवकूफ बनाना कठिन था. इसलिए केंद्रीय जांच ब्यूरो को आदेश दिए गए कि जांच करो कि ये कागजात सही हैं या जाली. और विश्वेश्वरनाथ चड्ढा को, जो

बोफोर्स का भारतीय प्रतिनिधि है, विदेश जाने से रोक दिया गया.

यह तो स्पष्ट है कि 64 करोड़ रुपए जितनी बड़ी रकम विन चड्ढा अकेला नहीं डकार सकता. यह रकम तो टेढ़ेमेढ़े, भूलभुलैया रास्तों पर चल कर अंत में सौदा पक्का करने, खरीदने वालों के पास पहुंचेगी. और इतने बड़े अरबों रुपए के सौदों की संपुष्टि, अंतिम फैसला कौन कर सकता है?

वैसे, सरकारी सौदों में कमीशन भारतीय जीवन का एक कड़वा सत्य है. कुछ अपवादों को छोड़ कर, इस देश में हर सरकारी खर्च में 2% से 10% तक कमीशन लगाबंधा होता है. हर आपूरक, ठेकेदार या काम करने वाला यह जानता है और अपनी निविदा में इस रकम का पहले ही से प्रावधान रखता है. जब कांग्रेस के मुख्य सचिव गुलाम नबी आजाद सरकारी टीवी पर खम ठोक कर कहते हैं कि हम 40 वर्ष से राज कर रहे हैं, कोई घास नहीं खोद रहे हैं, हमें पैसे की क्या कमी है, तो मामला जनता के सामने और कितने अधिक साफ तरीके से पेश किया जा सकता है?

अभी हाल में केंद्रीय महालेखापरीक्षक ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के हिसाबकिताब की जांच कर के जो रिपोर्ट दी है उस से साफ पता चलता है कि यह परिषद एक सफेद हाथी के समान है जो काम थोड़ा करता है, खाता ज्यादा है.

शिक्षा ऐसा विषय है जिस में हर रोज नए परीक्षण हो रहे हैं, पर संतोषजनक कुछ नहीं निकलता. इस परिषद ने भी बहुत से प्रयोग/परीक्षण किए हैं, जिन पर जनता का करोड़ों रुपया खर्च हो चुका है और निरंतर हो रहा है. पर सिवाए छोटे बच्चों पर किताबों और विषयों का असह्य भार बढ़ाने के, इस परिषद ने कुछ नहीं किया है.

आज सब मातापिता देखते हैं कि उन के छोटेछोटे बच्चे बस्ते के बोझ से दबे, सहमेसहमे स्कूल की तरफ रोज अनमने मन

से पांव बढ़ाते हैं और शाम को थक कर चूर हो कर वापस लौटते हैं.

आज पहली कक्षा से ले कर 12 वीं कक्षा तक पाठ्यक्रम इतना विस्तृत और जटिल है कि कोई शिक्षक उसे निर्धारित समय में पूरा नहीं कर पाता. नतीजा यह होता है कि शिक्षक सब कुछ बच्चों और उन के मातापिता पर छोड़ देते हैं और कहते हैं, घर में पढ़ो, मांबाप से पढ़ो, नहीं तो हमारी ट्यूशन लगाओ.

स्कूल के 6 घंटे, घर में 4 घंटे और फिर भी पढ़ाई पूरी नहीं. ऊपर से या तो मांबाप को जोतो, नहीं तो शिक्षकों का घर भरो. अन्यथा बच्चा पास तो शायद हो जाए, पर अच्छे नंबरों से अछूता रहेगा, जिस के कारण सिवाए तृतीय श्रेणी के हाथ कुछ नहीं लगता. और तृतीय श्रेणी के लिए नौकरी, व्यवसाय या व्यापार में भी क्या स्थान उपलब्ध है?

शैक्षिक अनुसंधान से 10 वीं कक्षा से 11 वीं कक्षा हुई, अब 12 वीं भी हो गई. बी.ए. पास करने के लिए पहले 14 वर्ष लगते थे अब 15 लगते हैं और कोई विशेष लाभ नहीं. पहले बी.ए. तक दो पड़ाव बीच में थे – काफी विद्यार्थी मैट्रिक कर के पढ़ाई छोड़ देते थे और कामकाज में लग जाते थे. जो आगे पढ़ते थे वे इंटरमीडिएट कर के डाक्टरी या इंजीनियरी में जा सकते थे. इन के अलावा इंटर पास विद्यार्थी भी कामकाज में लग जाते थे. पर अब न काम मैट्रिक से चलता है, न हायर सेकंडरी से. और बी.ए. करने के लिए कालिजों में जगह नहीं मिलती.

आवश्यकता आज और अधिक अनुसंधान/प्रशिक्षण की नहीं, सारी प्रक्रिया को सहज, सुलभ, सस्ती बनाने की है. इस के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद जैसी संस्थाओं की कोई आवश्यकता नहीं है, जो गरीब जनता का करोड़ों रुपया बरबाद करती है.

जहां तक पुस्तक प्रकाशन का सवाल है, इस राष्ट्रीय संस्था ने कोई विशेषता या विशेषज्ञता नहीं प्रदर्शित की है. लाखों रुपए की धांधलियां जरूर की हैं, और रद्दी जरूर जमा की है.

*

स्कूलों की पाठ्य पुस्तकों के सरकारीकरण से जनता को कोई लाभ हुआ हो, ऐसा नहीं दिखाई पड़ता. सरकारी किताबें भद्दी छपी होती हैं, महंगी होती हैं (यदि सस्ती होती हैं तो इसलिए कि उन पर जनता से टैक्स के रूप में वसूल किए धन से सहायता दे कर उन्हें लागत से कम मूल्य पर बेचा जाता है) और उन में कोई नई सूझबूझ नहीं होती.

इस के अतिरिक्त, पाठ्यपुस्तकों के सरकारीकरण से सब से बड़ी हानि यह हुई है कि देश में अच्छे साहित्य का प्रकाशन बिलकुल रुक गया है. पहले पुस्तक प्रकाशक पाठ्यपुस्तकें छापबेच कर उन्हें जो मुनाफा होता था, उस का काफी अंश साहित्यिक पुस्तकें, जिन में हमेशा घाटा रहता है, छापने में लगा देते थे. इसलिए नई पुस्तकें छपती थीं, नए लेखक पैदा होते रहते थे.

आज जो साहित्य प्रकाशित हो रहा है, वह बिलकुल फुटपाथिया है, हिंदी फिल्मों से भी गयाबीता.

बिना कुछ आमदनी के कोई क्या काम कर सकता है? अच्छे साहित्य प्रकाशन के लिए पैसा नहीं है. पैसे नहीं है तो लेखक भी नहीं है और जिस देश में पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त कुछ अच्छा प्रकाशित न हो तो उस का क्या भविष्य हो सकता है?

पाठ्यपुस्तकों का सरकारीकरण इसलिए किया गया था कि इस में बहुत मुनाफा होता है और यह मुनाफा एक निजी व्यक्ति क्यों कमाए. सरकार क्यों न कमाए–यानी समाजवादी बुखार के कारण. पर राज्यों द्वारा पुस्तकों के सरकारीकरण से राज्य सरकारों को कितना मुनाफा हुआ, इस का ब्योरा कहीं नहीं मिलता, और जहां तक धांधली का प्रश्न है, क्या सरकारी महकमे दूध के धुले हैं? ●
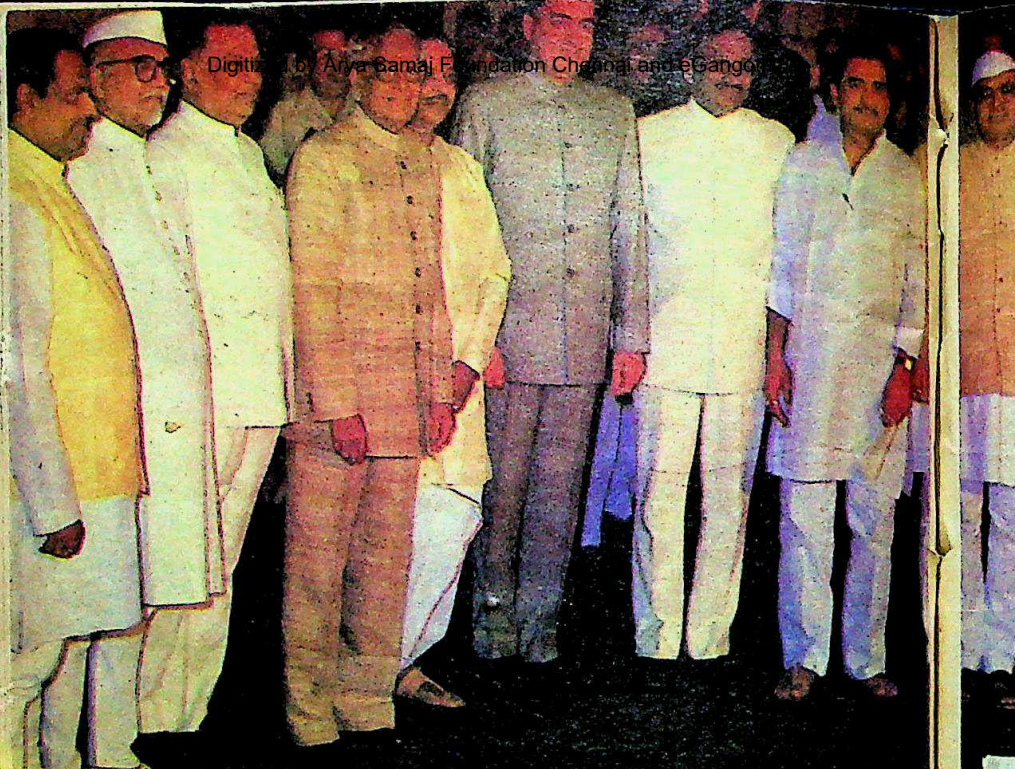
कूड़ादान बनते केंद्रीय मंत्रिमंडल में

लेख ● विवेक सक्सेना

राज्य व केंद्र के राजनीतिक कूड़ेदानों में अदलाबदली करने के शौकीन राजीव गांधी ने पुनर्गठन की 25वीं पारी खेलते हुए एक बार पुनः व्यापक परिवर्तन किए हैं.

छः नए मंत्रियों को शामिल कर के, तीन को पदोन्नति दे कर, कुछ के विभाग बदल कर व दो नए 'मंत्रालय' बना कर राजीव गांधी ने एक बार पुनः अपनी सरकार व संगठन को सक्रिय बनाने का असफल प्रयास किया है.

मंत्रिमंडल तथा राज्यों में परिवर्तन

असफल मुख्यमंत्रियों के लिए कूड़ादान बनते जा रहे केंद्रीय मंत्रिमंडल में आए दिन होने वाले परिवर्तनों से राजीव गांधी भले ही आत्मसंतोष महसूस करें, पर जनता को तो राहत तभी मिलेगी जब कूड़ादान ही बदल जाएगा.

'राजीव एंड कंपनी' के कुछ नए चेहरे : जिन की छवि स्वयं मलिन हो, वे कंपनी की छवि स्वच्छ कैसे करेंगे?

वीर बहादुर सिंह : उपचुनाव में हार के कारण दिल्ली तबादले की गाज गिरी (बाएं) विश्वनाथ प्रताप सिंह: इलाहाबाद संसदीय उपचुनाव में भारी बहुमत से विजयी (नीचे)

परिवर्तन

किया जाना काफी अरसे से अपेक्षित था. इंतजार केवल उपचुनावों के परिणाम का था. वैसे, राजीव गांधी को स्वयं भी इस बात का अनुमान अवश्य रहा होगा कि ये परिणाम किस के पक्ष में होंगे. शायद यही कारण था कि केंद्र व राज्य, दोनों ही जगह बहुत जल्दी ही परिवर्तन किए जाने की

संभावनाएं एक सप्ताह पूर्व ही बलवती होने लगी थीं.

अपने 63 सदस्यीय केंद्रीय मंत्रिमंडल में राजीव गांधी ने जिन छः नए मंत्रियों को शामिल किया है, वे हैं: वीरबहादुर सिंह, शंकरराव भाऊराव चह्वाण, बाबूराव शंकरानंद, माधवसिंह सोलंकी, कल्पनाथ राय तथा कमलकांत तिवारी.

वीरबहादुर सिंह की गरदन पर दिल्ली तबादले की तलवार उसी दिन से लटकनी शुरू हो गई थी जिस दिन विश्वनाथप्रताप सिंह चुनाव जीते थे. इलाहाबाद उपचुनाव के नतीजे के बाद केंद्रीय पर्यवेक्षक संतोषमोहन देव की इस रिपोर्ट से राजीव गांधी अच्छी तरह समझ गए कि वीरबहादुर सिंह न तो एक कुशल प्रशासक हैं, न प्रबंधक हैं, और न ही उन के नेतृत्व में कांग्रेस डेढ़ साल बाद होने वाले आम चुनाव जीतने की उम्मीद कर सकती है.

1986 के इलाहाबाद व 1987 के मेरठ के सांप्रदायिक दंगे भी उन की कुरसी न हिला सके. लेकिन इलाहाबाद की हार ने इस कुरसी को इतनी तेजी से उन के नीचे से खींच लिया कि वह अपने शासन का 1,000वां दिन मनाने के पूर्व ही दिल्ली खिसका दिए गए.
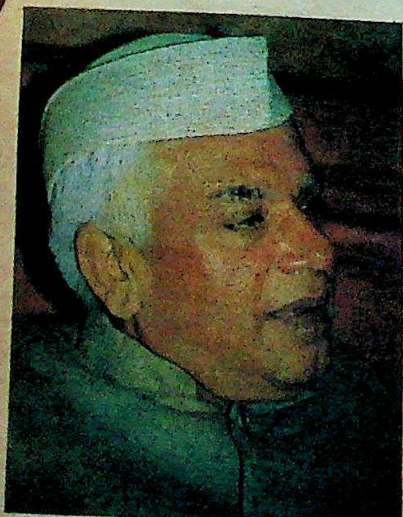
राजीव एंड कंपनी का एक सीधासादा सिद्धांत है. अगर माल की तारीफ हो रही है, वह बिक रहा है तो उस का श्रेय कंपनी को जाता है. किंतु यदि माल में कहीं खोट निकल आए तो उस की जिम्मेदारी वितरक पर डाल दी जाती है. वीरबहादुर सिंह के मामले में भी यही हुआ. विश्वनाथप्रताप सिंह का 'माल' कहीं अधिक अच्छा था. कांग्रेस चुनाव प्रचार में वितरक के नाम का कहीं भी इस्तेमाल नहीं किया गया. कंपनी को ही मोहरा बनाया गया. किंतु जब गाज गिरी तो वितरक पर गिरी और उसे तत्काल हटा दिया गया.

अब कंपनी की छवि सुधारने का काम नारायणदत्त तिवारी को सौंपा गया है. तिवारीजी यह नहीं चाहते थे कि कंपनी की छवि सुधारने के चक्कर में उन की अपनी छवि खराब हो जाए, पर ऊपर का आदेश मानना उन की मजबूरी थी.

मुख्य मंत्री पद के लिए कई नामों पर चर्चा चली. इन में दिनेश सिंह व लोकपति त्रिपाठी का नाम भी शामिल था. गोपी अरोड़ा तो पूरी तरह से लोकपति को ही उत्तर प्रदेश का मुख्य मंत्री बनाने के लिए प्रयासरत थे, किंतु अंत में फैसला नारायणदत्त तिवारी के पक्ष में हुआ.

दिनेश सिंह को इसलिए नहीं चुना गया, क्योंकि राजीव गांधी को यह विश्वास हो चुका था कि यह ठाकुर पूरी तरह से विश्वनाथप्रताप सिंह के साथ जाने का मन बना चुके हैं. लोकपति त्रिपाठी की प्रगति में उन के पिता बाधक साबित हुए व नारायणदत्त तिवारी की केंद्र में नंबर दो होती स्थिति व उद्योगपतियों के मध्य बढ़ता उन का प्रभाव उन के लिए घातक साबित हुआ. केंद्र में उन के प्रभाव को घटाने तथा राज्य में दल के प्रभाव को बढ़ाने के लिए उन्हें

उत्तर प्रदेश के एक बार फिर बने नए मुख्य मंत्री नारायण दत्त तिवारी : क्या आगामी आम चुनाव में कांग्रेस का प्रभाव बढ़ाने के लिए यह परिवर्तन हुआ है

महाराष्ट्र में दल पर अंकुश न लगा सकने के कारण केंद्र में वित्त व्यवस्था को सुधारने की शपथ लेते शंकरराव भाऊराव चह्वाण (बाएं). और कांग्रेस में अपने दल के विलय की कीमत वसूल करने वाले महाराष्ट्र के नए मुख्य मंत्री शरद पवार (दाएं).

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री पद पर बैठाना जरूरी हो गया था.

महाराष्ट्र के शंकरराव भाऊराव चह्वाण को इसलिए हटाया गया क्योंकि वहां दल के अंदर असंतोष इतना अधिक बढ़ चुका था कि शिक्षा मंत्री चंद्रिका केनिया व बंबई प्रदेश अध्यक्ष मुरली देवड़ा एकदूसरे पर सरेआम कीचड़ उछाल रहे थे व चह्वाण खामोशी से दोनों का खेल देख रहे थे.

वसंतदादा पाटिल डंके की चोट पर चह्वाण की मुखालफत का ऐलान कर चुके थे. जब कि शरद पवार इसलिए दुखी थे कि कांग्रेस में अपने दल का विलय करने से पूर्व उन्हें राजीव गांधी द्वारा मुख्य मंत्री बनाए जाने का वचन पूरा नहीं हुआ था. इस वर्ष फरवरी माह में जब राजीव गांधी ने अपने मंत्रिमंडल में फेरबदल किया था तो शरद पवार ने उस में शामिल होने का निमंत्रण ठुकरा कर अपनी नाराजगी का एहसास करा दिया था. असंतुष्टों की दिनोदिन बढ़ती संख्या के कारण राजीव गांधी के लिए यह परिवर्तन जरूरी हो गया था.

शंकरराव चह्वाण को केंद्र में वित्त जैसा महत्त्वपूर्ण मंत्रालय सौंपने के पूर्व राजीव गांधी काफी कशमकश में फंसे रहे. गुजरात के भूतपूर्व मुख्य मंत्री माधवसिंह सोलंकी स्वयं को इस पद का दावेदार मान रहे थे. उन्होंने तो अपने कुछ खास उद्योगपति मित्रों को यह सूचना भी दे दी थी कि वह अगले दिन वित्त मंत्रालय का भार संभालने जा रहे हैं. किंतु ऐन मौके पर बूटासिंह ने भांजी मार दी.

नारायणदत्त तिवारी के वित्त मंत्रालय से हटते ही जिस तरह से शेयर बाजार में खलबली मची व शेयरों के दाम तेजी से गिरे, उसे देखते हुए बूटासिंह ने प्रधान मंत्री को सलाह दी कि विश्वनाथप्रताप सिंह के अभ्युदय को तभी सीमित किया जा सकता है, जब कोई उन जैसी छवि वाला व्यक्ति इस मंत्रालय का कामकाज संभाले. बूटासिंह ने उन्हें समझाया कि उद्योगपति खुश हो कर पैसा दे सकता है, किंतु सत्ता में रहने के लिए वोट चाहिए और वोटों के लिए जनता को खुश करना जरूरी है.

क्योंकि शंकरराव चह्वाण की छवि भी अब एक कुशल, ईमानदार प्रशासक की

थी, अतः उन्हें यह मंत्रालय सौंपना पड़ा.

बाबूराव शंकरानंद की मंत्रिमंडल में वापसी बहुत जरूरी थी. संयुक्त संसदीय समिति के अध्यक्ष पद की हैसियत से उन्होंने बोफोर्स कांड से राजीव गांधी को बरी कराने में जिस कौशल एवं तत्परता का परिचय दिया था, उस के लिए उन्हें पुरस्कृत करना अनिवार्य हो चला था.

माधवसिंह सोलंकी को गुजरात छोड़ने के लिए बाध्य कर, दिल्ली में व्यस्त रखने के लिए कोई मंत्रालय सौंपना जरूरी था, तो कल्पनाथ राय व कमलकांत तिवारी को उन की व्यक्तिगत निष्ठा, स्वामिभक्ति ने लाभ पहुंचाया. कमलकांत तिवारी को तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के दबाव के कारण राजीव गांधी को अपने मंत्रिमंडल से इच्छा न होते हुए भी हटाना पड़ा था.

ज्ञानी जैलसिंह के साथ संघर्ष में कमलकांत तिवारी ने जिस तरह से समस्त मर्यादाओं को लांघ कर जैलसिंह पर कीचड़ उछालने का बीड़ा उठाया था, वह कांग्रेसी संस्कृति में प्रशंसनीय था. यही कदम कल्पनाथ राय ने विश्वनाथप्रताप सिंह के खिलाफ उठाया व उच्छृंखलता की डोर पकड़ कर मंत्रिमंडल में घुसने में सफल हो गए.
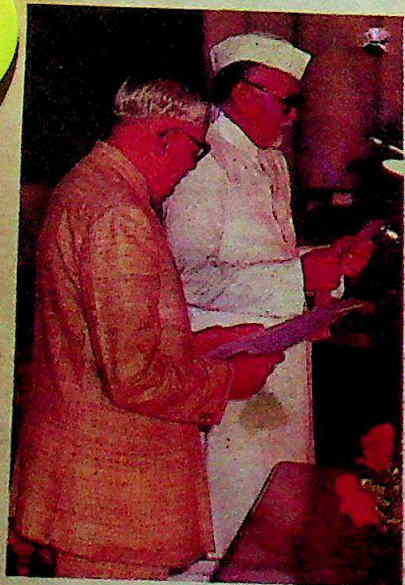
कैबिनेट मंत्री के रूप में पदोन्नत जिया-उर-रहमान: क्या उत्तर प्रदेश के मुसलिम मतदाता इस से संतुष्ट हो जाएंगे?

वीरबहादुर सिंह को संचार मंत्रालय सौंपा गया है. बाबूराव शंकरानंद को कानून एवं न्याय, कमलकांत तिवारी को विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है तो कल्पनाथ राय को ऊर्जा मंत्रालय में राज्य मंत्री, माधवसिंह सोलंकी योजना एवं क्रियान्वयन मंत्रालय का कामकाज संभालेंगे.

पामूलापारथी वेंकट नरसिंहराव, पंजाला शिवशंकर, दिनेश सिंह आदि सहित नौ मंत्रियों के विभागों में परिवर्तन किया गया है. प्रधान मंत्री के कार्यालय में एक राज्य मंत्री के पद का सृजन किया गया है, जिस का अतिरिक्त भार संसदीय राज्य मंत्री शीला दीक्षित संभालेंगी.

पेप्सी कोला लाबी ने अपनी बढ़ती शक्ति का प्रदर्शन करते हुए खाद्य प्रोसैसिंग मंत्रालय बनवा दिया है, जिस का कामकाज जगदीश टाइटलर देखेंगे.

जियाउर रहमान अंसारी को पदोन्नत कर के कैबिनेट स्तर का और रफीक आलम को पदोन्नति दे कर राज्य मंत्री बनाया गया है.

63 मंत्रियों को शामिल करने के बाद भी, अभी मंत्रिमंडल का विस्तार होना बाकी है क्योंकि पांच मंत्री अपने मंत्रालय/विभाग के अलावा दूसरे मंत्रालयों का कार्यभार भी संभाले हुए हैं. ऐसा लगता है कि 'हिंदू' द्वारा बोफोर्स कांड के बारे में और रहस्योद्घाटन किए जाने के कारण प्रधान मंत्री संसद के वर्षाकालीन अधिवेशन में अपने बचाव के लिए बहुत बेचैन हैं, तभी उन्होंने सारे रिकार्ड तोड़ते हुए संसदीय कार्य मंत्रालय में पांच मंत्रियों की भरती की है.

वर्तमान परिवर्तनों से संकेत मिलता है कि उत्तर प्रदेश में मुसलिम मतदाता की नाराजगी उन्हें हरिजन मतदाता की

माधवसिंह सोलंकी : गुजरात में जातिवाद की आंधी को शांत करने की योजनाएं तैयार नहीं कर सके, पर अब देश के लिए योजनाएं बनाएंगे.

नाराजगी की तुलना में ज्यादा चिंतित कर रही है. यही कारण है कि रफीक आलम व जियाउर रहमान अंसारी की पदोन्नति की गई है.

पामूलापारथी वेंकट नरसिंहराव तथा दिनेश सिंह को क्रमशः विदेश व वाणिज्य मंत्रालय सौंप कर राजीव गांधी ने यह आभास दिया है कि वह बुजुर्ग साथियों के अनुभव का लाभ उठाना चाहते हैं. पंजाला शिवशंकर मानव संसाधन विकास मंत्रालय सौंपे जाने से खुश नहीं हैं, क्योंकि उन की नजर वित्त मंत्रालय पर थी.

संतोषमोहन देव को गृह तथा शिवराज पाटिल को नागरिक उड्डयन एवं पर्यटन का स्वतंत्र भार सौंपा जाना यह संकेत देता है कि राजीव गांधी उन की कार्यक्षमता से प्रसन्न हैं व सतीश शर्मा का प्रभाव घटना शुरू हो चुका है. नरसिंहराव को विदेश मंत्रालय सौंप कर व कमलकांत तिवारी को यहीं राज्य मंत्री बना कर राजीव गांधी ने नटवर सिंह के भी पर कतर दिए हैं.

वर्तमान परिवर्तन के बाद विभिन्न राज्यों को मंत्रिमंडल में मिलने वाला प्रतिनिधित्व यह झलक देता है कि संसद में सब से ज्यादा प्रतिनिधि भेजने वाले राज्य उत्तर प्रदेश में, दल की हाल के उपचुनावों में हुई हार से राजीव गांधी कितने अधिक चिंतित हैं.

कैबिनेट स्तर के 20 मंत्रियों में से छः मंत्री उत्तर प्रदेश के हैं. तीन महाराष्ट्र के तथा दोदो राजस्थान व दिल्ली के हैं. राजीव गांधी सब से ज्यादा उत्तर प्रदेश को महत्त्व दे रहे हैं. उन्होंने अपना सारा ध्यान उत्तरी एवं पश्चिमी प्रदेशों पर केंद्रित कर रखा है. इन राज्यों के 15 कैबिनेट मंत्री हैं.

ऐसा लगता है कि पंजाब, पश्चिम बंगाल तथा तमिलनाडु में अपने दल की सफलता की संभावनाओं के प्रति राजीव गांधी पूरी तरह से निराश हो चुके हैं. शायद इसी लिए उन्होंने इन राज्यों का कैबिनेट स्तर का प्रतिनिधित्व खाली छोड़ रखा है.

यही स्थिति दक्षिणी राज्यों की भी है. सारे दक्षिण से केवल तीन कैबिनेट मंत्री हैं. जब कि अकेली दिल्ली के दो हैं. संभवतः दिल्ली के चुनावों को मद्देनजर रखते हुए भी यही संतुलन बैठाया गया है.

भले ही राजीव गांधी इस परिवर्तन के पीछे यह कारण बता रहे हों कि वह अपना भार घटा कर संगठन की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहते हैं, किंतु उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया है कि हर परिवर्तन के साथ वह पहले की तुलना में और अधिक कमजोर होते जाते हैं.

राजीव गांधी की एक विडंबना यह भी है कि 400 से अधिक सांसदों की भीड़ में उन्हें कुछ दरजन चेहरे ही ऐसे नजर आते हैं, जिन्हें वह दिल्ली से राज्य की राजधानी व राज्य से दिल्ली तक की दौड़ लगवा सकते हैं. ये चेहरे पहिए नहीं स्टैपनी हैं, जो कभी आगे लग जाते हैं तो कभी पीछे, और कभी खाली हो कर ऊपर.

जो मुख्य मंत्री राज्य में असफल, अयोग्य साबित हो जाता है, उसे अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए केंद्र में

मौका दिया जाता है. राजीव मंत्रिमंडल में सात भूतपूर्व मुख्य मंत्री शामिल हो चुके हैं व जगन्नाथ मिश्र अपनी बारी के इंतजार में हैं. कुछ मंत्रियों को अतिरिक्त भार इसलिए सौंपा गया है क्योंकि अभी गुजरात से अमरसिंह चौधरी तथा उड़ीसा से जानकीवल्लभ पटनायक का दिल्ली तबादला होना बाकी है. राज्य हो या केंद्र, हर जगह नए चेहरों के अभाव हैं. ताश की गड्डी की तरह वही पत्ते बारबार सामने आ जाते हैं.

1977 के चुनावों के पूर्व की इंदिरा गांधी व आज के राजीव गांधी में सब से बड़ा अंतर यही है कि तब इंदिरा गांधी के सलाहकार सही जानकारी होते हुए भी उन्हें गुमराह कर रहे थे, जबकि आज राजीव गांधी को गलत सलाह इसलिए मिल रही है क्योंकि सलाहकारों को वास्तविकता का आभास तक नहीं है.

गुलाम नबी आजाद का दावा था कि सुनील शास्त्री डेढ़ लाख वोटों से जीतेंगे. जब कि वह एक लाख दस हजार वोटों से हार गए.

निस्संदेह आजाद का यह बड़बोलापन नहीं था. वह अंदाज ही नहीं लगा सके थे कि जनता क्या सोच रही थी. वैसे राजीव गांधी को मात्र डेढ़ साल बाद होने वाले आम चुनावों के लिए अभी से तैयारी शुरू कर देनी चाहिए. उन के पर्यवेक्षक व सलाहकारों द्वारा दी जाने वाली सूचनाएं यदि सत्य हैं तो वह वास्तव में बहुत खतरनाक संकेत है.

राजीव गांधी ने स्पष्ट कह दिया है कि वह इस उपचुनावी हार को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं. हाल में मंत्रिमंडल में किया गया परिवर्तन इस की पुष्टि भी कर देता है. कुछ लोग अपनी गलतियों से सबक लेते हैं, व कुछ सबक लेने के लिए गलती करते हैं. राजीव गांधी दूसरी श्रेणी में आते हैं. अगले सबक के लिए उन्होंने एक बार फिर गलती कर दी है.

आज केंद्रीय मंत्रिमंडल अयोग्य मुख्य मंत्रियों के लिए कूड़ादान साबित हो रहा है जो मुख्य मंत्री राज्य में असफल साबित हो जाता है, उसे केंद्र के कूड़ेदान में न केवल फेंका जाता है, बल्कि महत्त्वपूर्ण पद भी दिया जाता है. अब तक सात भूतपूर्व मुख्य मंत्री केंद्रीय कूड़ाघर में पहुंचाए जा चुके हैं.

असफल प्रशासकों का जमघट

वीरबहादुर सिंह अपना दलीय संचार तंत्र सही तरह से चला सकने में असमर्थ रहे, इसलिए उन्हें केंद्र में संचार मंत्रालय सौंप दिया गया. शंकरराव चह्वाण राज्य में दल के अंदर अनुशासन कायम रखने में असफल रहे, इसलिए वह अब देश का वित्तीय अनुशासन सुधारने के लिए मंत्री बनाए गए हैं.

माधवसिंह सोलंकी गुजरात में जातिवाद की आंधी को शांत करने की योजना तैयार नहीं कर सके थे, पर अब वह देश के लिए योजनाएं तैयार करेंगे. बिंदेश्वरी दुबे बिहार से इसलिए हटाए गए थे क्योंकि राजनीतिक एवं प्रशासनिक तौर पर वह आलसी साबित हो गए थे. अब वह श्रम मंत्रालय द्वारा देश में चुस्ती लाएंगे.

मुख्य मंत्री के रूप में मोतीलाल वोरा मध्य प्रदेश में कभी भी कल्याण कार्यक्रम व विकास की उड़ान नहीं भर सके, पर अब वे स्वास्थ्य परिवार कल्याण तथा नगर विमानन मंत्रालय में फुरती लाएंगे.

जिस कृषकबहुल राज्य हरियाणा के किसानों ने इंदिरा कांग्रेस का सफाया कर दिया, जिस राज्य के तत्कालीन मुख्य मंत्री भजनलाल किसानों के दर्द का एहसास नहीं कर सके, उन्हें कृषि मंत्रालय का कामकाज सौंपा गया है.

पामूलापारथी वेंकट नरसिंहराव, जो आंध्र प्रदेश में केंद्र की छवि सुधारने में नाकाम रहे थे, अब विश्व में देश की छवि सुधारने के ठेकेदार बना दिए गए हैं. यही स्थिति जे. वेंगलराव की भी है, जो आंध्र प्रदेश में दल की नींव हिल जाने के बाद उद्योगों की नीवें मजबूत करने के काम में लगा दिए गए हैं. •

मास्को वार्त्ता

शीतयुद्ध के बादल छितराने लगे

लेख • वेदप्रकाश अरोड़ा

हिरोशिमा पर गिराए गए मात्र 20 हजार टी.एन.टी. के अणुबम ने 78 हजार व्यक्तियों को मौत की गोद में सुला दिया था. वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अगर कभी कोई जानेअनजाने या गलती से किसी स्थान पर 20 मेगाटन का एक हाइड्रोजन बम गिरा दे तो छः वर्ग मील के इलाके में कोई भी प्राणी नहीं बच पाएगा. छः से 12 मील के इलाके की आधी आबादी और संपत्ति बिलकुल नष्ट हो जाएगी. कोई

पांच हजार वर्ग मील इलाका रेडियो विकिरण से बुरी तरह प्रभावित हो जाएगा. वहां का पर्यावरण इतना विषाक्त हो जाएगा कि जीते जी भयंकर यातनाएं सहनी पड़ेंगी.

जब अमरीका और सोवियत संघ के विशाल प्रक्षेपास्त्र एक ही बार में 10-12 हाइड्रोजन बम निशाने पर छोड़ेंगे तो उन से हुई तबाही से न केवल असंख्य प्राणियों का विनाश होगा, बल्कि महाशीतकाल को जन्म देने वाली वायुमंडलीय तबाही मच उठेगी और बचेखुचे जीवधारी लंगड़ेलूले या अन्य दृष्टियों से अपंग हो जाएंगे. इन का जीवन इतना हृदय विदारक और पीड़ाकारी होगा कि वे मौत के लिए तरसते नजर आएंगे. साथ ही, यह हरीभरी धरती बंजर, वीरान नजर आएगी.

परमाणु अस्त्रों की इस भस्मासुरी शक्ति को काबू में रखने और उसे विकास कार्यों में लगाने के लिए वाशिंगटन में 8 दिसंबर 1987 को अमरीका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन और सोवियत संघ के साम्यवादी दल के महासचिव मिखाइल गोरबाचौफ ने कम तथा मध्यम दूरी तक मार करने वाले परमाणु अस्त्रों को नष्ट कर देने के समझौते पर हस्ताक्षर किए. इस वर्ष 29 मई से चली पांच दिन की मास्को वार्त्ता में इस समझौते की पुष्टि पत्रों के आदानप्रदान के बाद पहली जून से उसे लागू कर के निरस्त्रीकरण की दिशा में पहला ठोस कदम उठाया गया. यह समझौता सैनिक टकराव के बजाए परस्पर सहयोग का दस्तावेज था.

यह एक ऐसा दस्तावेज था, जिस में समस्याओं को परमाणु अस्त्रों, परमाणु बमों, हाइड्रोजन और नाइट्रोजन बमों के युद्ध के [illegible] मिलबैठ कर निबटाने पर जोर दिया गया. ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने 1946 में दो शत्रु देशों और दो शक्ति समूहों के युद्ध क्षेत्र में एकदूसरे से न जूझते हुए भी, जिस 'शीतयुद्ध' की चपेट में घिर जाने की मनहूस घोषणा की थी, उन दो बड़े राष्ट्रों के नेताओं की परस्पर बातचीत और इस दस्तावेज के आदानप्रदान के साथ ही इस 'शीत युद्ध' की तीव्रता कम होतेहोते समाप्त हो जाने की आशा बंध गई है. दो महाशक्तियों की विचारधाराओं में टकराहट तो अब भी चलती रहेगी, लेकिन वह महाभारत छेड़ने के लिए नहीं अपनेअपने देश की दशा सुधारने, अपने समाजों की पुनः रचना, खुले खुशनुमा आकाश के नीचे तथा भयमुक्त धरती के ऊपर मन की गांठें खोल कर एक नए युग के निर्माण के लिए होगी.

अमरीका के मन में सोवियत संघ को शैतान के देश के रूप में और सोवियत संघ के मन में अमरीका को मौत की ओर बढ़ रहे दकियानूसी पूंजीवादी देश के रूप में देखने का जो एकतरफा दृष्टिकोण विकसित हो गया था, वह प्रत्येक शिखर वार्त्ता के साथ बदलता चला गया है.

साम्यवादी विस्तारवाद और पूंजीवादी साम्राज्यवाद दोनों में इतने घुन लग गए हैं कि वे इतने जर्जर होते जा रहे हैं कि लोगों का दोनों से विश्वास उठता चला जा रहा है तथा वे गुटनिरपेक्षता की ओर मुड़ने जा रहे हैं. अगर वियतनाम का कंपूचिया को धर दबोचना, अंगोला में क्यूबा की सेना की तैनाती, पोलैंड में मजदूर आंदोलन और सोलिडैरिटी का दमन, अफगानिस्तान में

वाशिंगटन वार्त्ता के बाद मास्को वार्त्ता से परमाणु मिसाइलों में कटौती की उम्मीद तो पूरी नहीं हो सकी. लेकिन इस वार्त्ता ने दो महाशक्तियों के बीच की गलतफहमी को दूर कर एक ऐसा आधार प्रदान किया है जो निरस्त्रीकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण साबित होगा.

सौहार्दपूर्ण वातावरण में रेगन और गोरबाचौफ ने समझौतों पर हस्ताक्षर किए. ▲
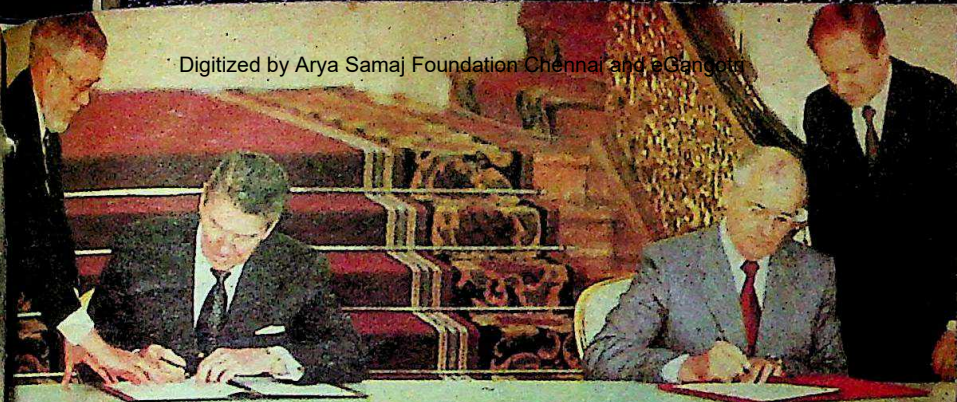
सोवियत सेना का प्रवेश, पूर्वी यूरोप में सोवियत सेना और अस्त्रों की तैनाती तथा सोवियत संघ और साम्यवादी चीन का आपसी द्वंद्व साम्यवादी विस्तारवाद के भौंडे प्रदर्शन थे, तो अंतरिक्ष युद्ध के कार्यक्रम, पश्चिम यूरोप में पर्शिंग और क्रूज मिसाइलों की तैनाती, निकारागुआ में कोंट्रा विद्रोहियों की मदद, कंपूचिया में अत्याचारी पोलपोट सरकार का समर्थन, दक्षिण अफ्रीकी रंगभेदी सरकार की तरफदारी और इजराइल को शह साम्राज्यवादी पूंजीवाद के ओछे हथकंडे थे.

इन से दोनों संसारों के बीच शंकाओं, संदेहों और अविश्वासों की दीवारें ऊंची उठती चली गईं.

राष्ट्रपति रेगन ने गोरबाचौफ से मानव अधिकारों, निरस्त्रीकरण, अफगानिस्तान ईरानइराक लड़ाई, फिलस्तीनी गुत्थी, पश्चिम एशिया आदि की क्षेत्रीय समस्याओं, अंगोला, दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया, द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मामलों पर विचारविमर्श कर नए रिश्ते कायम किए हैं और शीतयुद्ध के ताबूत में एक और मजबूत कील गाड़ कर इतिहास का नया अजूबा पैदा किया है.

मध्यम और कम दूरी के परमाणु प्रक्षेपास्त्रों की संधि के लागू होने के साथ ही खूबसूरत धरती को परमाणु हथियारों के घोर विनाश से मुक्ति दिलाने के नए युग का सूत्रपात हुआ है. पहली बार प्रलयंकारी विनाश के बादलों से विश्वास की झांकती किरणें दिखाई दी हैं.

हालांकि इस संधि से दो महाशक्तियों के परमाणु अस्त्रों के भंडारों का कोई 5% ही नष्ट किया जाएगा तो भी इस का राजनीतिक महत्त्व इस के आंकड़ों से कहीं अधिक है.

सोवियत संघ कुल मिला कर 1752 परमाणु मिसाइल नष्ट करेगा. इन में वे दोनों प्रकार के मिसाइल शामिल होंगे, जो कहीं लगाए गए हैं या नहीं. इन में 826 मध्यम दूरी तक मार करने वाले और 926 कम दूरी तक मार करने वाले परमाणु मिसाइल होंगे. उधर अमरीका कुल 859 परमाणु मिसाइल नष्ट करेगा, जिन में मध्यम दूरी तक मार करने वाले 689 और कम दूरी तक मार करने वाले 170 मिसाइल होंगे. इस संधि में मौके पर जा कर मुआइना करने की शर्त भी शामिल है ताकि कोई भी पक्ष समझौते की शर्तों का उल्लंघन न कर सके.

दोनों नेताओं ने अपने इस चौथे शिखर सम्मेलन में हथियारों पर नियंत्रण के दो अन्य समझौतों पर भी हस्ताक्षर किए. एक समझौते के अंतर्गत धरती और पनडुब्बियों के अंतर्महाद्वीपीय परमाणु प्रक्षेपास्त्रों के

परीक्षणों की शक्ति का जायजा लेने के लिए संयुक्त जांचपड़ताल की व्यवस्था है.

इन के अलावा, सांस्कृतिक और आर्थिक सहयोग के कई समझौते भी किए गए. सांस्कृतिक समझौते के अनुसार परस्पर सांस्कृतिक सहयोग बढ़ाया जाएगा तथा खिलाड़ियों और लेखकों को एकदूसरे के यहां भेजा जाएगा. दोनों पक्षों ने मछलियां पकड़ने के एक अन्य समझौते पर भी हस्ताक्षर किए. इस समझौते के अंतर्गत मत्स्यउद्योग में सहयोग बढ़ाने के लिए कुछ सिद्धांत और कार्यविधियां निर्धारित की गई हैं. दोनों देशों ने समुद्र में बचाव, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष के बारे में कई करारों की भी पुष्टि की. इन समझौतों पर इतनी तेजी से हस्ताक्षर किए गए कि प्रत्येक व्यक्ति हतप्रभ रह गया.

लेकिन वाशिंगटन वार्त्ता के निश्चय के विपरीत, मास्को वार्त्ता में लंबी दूरी के परमाणु मिसाइलों में आधी कटौती की घोषणा नहीं की जा सकी. इस से सारे संसार में शांतिप्रेमी और निरस्त्रीकरण के इच्छुक देशों, संगठनों और व्यक्तियों में निराशा सी छा गई. घोषणा न हो सकने का कारण यह था कि समुद्र में पनडुब्बियों से लंबी दूरी तक मार करने वाले क्रूज मिसाइलों को सीमित करने पर गतिरोध बना रहा. संभवतः इस क्षेत्र में अमरीका सोवियत संघ से आगे है और वह नहीं चाहता कि सोवियत निरस्त्रीकरण निरीक्षक अमरीकी पनडुब्बियों में जा कर इन मिसाइलों की जांचपड़ताल और नियंत्रण करें.

उधर सोवियत संघ धरती के चल केंद्रों से लंबी दूरी तक मार करने वाले परमाणु मिसाइलों में अमरीका से काफी आगे है और इन के निरीक्षण व नियंत्रण के संबंध में उस का रवैया भी उत्साहवर्धक नहीं था. लंबी दूरी के ये अस्त्र एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक अथवा पांच हजार किलोमीटर से अधिक दूरी तक मार करने की क्षमता रखते हैं. इन्हें आकाश में बममार विमानों से, समुद्र में पनडुब्बियों से और भूतल पर चलअचल केंद्रों से छोड़ा जा सकता है.

अमरीका का MX परमाणु मिसाइल (बाएं) रूस का विशाल अंतर्महाद्वीपीय परमाणु मिसाइल SS-9 (नीचे)

समझौते पर रेगन और गोरबाचौफ की सहमति ने दोनों देशों को एकदूसरे के करीब ला दिया है. ▲
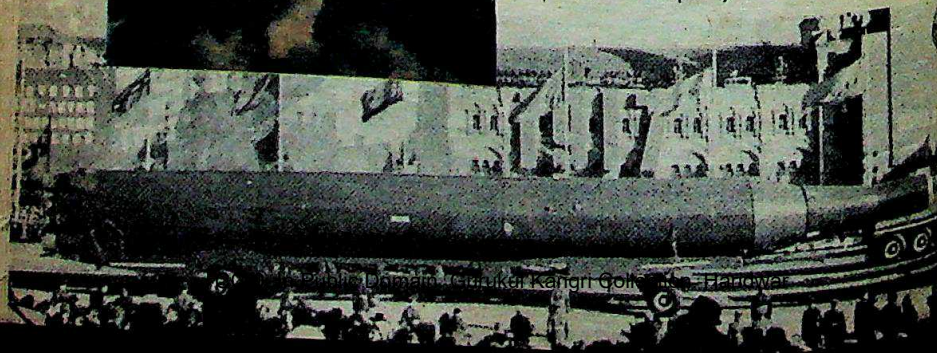
संधि में कम दूरी और मध्यम दूरी के जिन अस्त्रों को नष्ट करने की बात कही गई है, वे यूरोप तक सीमित हैं, जबकि लंबी दूरी तक मार करने वाले अस्त्र जल, थल, आकाश और यहां तक कि अंतरिक्ष में भी तैनात हैं तथा आकार में तो कहीं बड़े होते ही हैं.

इन अस्त्रों की संधि 'स्टार्ट' की राह में एक अन्य रुकावट अमरीका का सामरिक रक्षा पहल कार्यक्रम (एस.डी.आई.) अथवा अंतरिक्ष मिसाइल कार्यक्रम है, जिसे राष्ट्रपति रेगन किसी भी हालत में छोड़ना नहीं चाहते. अमरीका चाहता था कि 1972 की ए.बी.एम. यानी प्रक्षेपण मिसाइल विरोध संधि की जगह एक ऐसा दस्तावेज स्वीकार कर लिया जाए, जिस में अंतरिक्ष युद्ध कार्यक्रम में अनुसंधान जारी रखने की मोहलत हो. इसे सोवियत संघ कैसे मान सकता था. इन अस्त्रों में 50% कटौती का समझौता न हो सकने के कारण ही गोरबाचौफ ने कह डाला कि शिखर वार्त्ता से एक सुनहरा अवसर मिला था, लेकिन उसे यों ही गंवा दिया गया. पर यह सही नहीं है.

यह ठीक है कि 'स्टार्ट' संधि नहीं हो सकी तो भी इस के लिए आधा सफर तय कर लिया गया है. निस्संदेह मजबूत नींव तो डाली ही जा चुकी है. हां, यह सफलता उस प्याले में पड़े दूध की तरह है जो आधा भरा है. स्वयं गोरबाचौफ ने कहा है कि 'स्टार्ट' यानी लंबी दूरी तक मार करने वाले अस्त्रों में कमी करने की संधि के लिए आधार तैयार कर लिया गया है और पर्याप्त तैयारी की जा चुकी है.

दोनों नेताओं ने अपने वार्त्ताकारों को आदेशनिर्देश दिए हैं कि इन अस्त्रों की परिसीमन संधि पर वार्त्ता 12 जुलाई से शुरू कर दें. वैसे भी, आकाश से छोड़े जाने वाले क्रूज मिसाइलों और धरती के चल केंद्रों से छोड़े जाने वाले मिसाइलों पर समझौते की दिशा में कुछ प्रगति हुई है और इन पर सहमति का दायरा बढ़ा है.

यहां यह उल्लेखनीय है कि सोवियत समाज में खुलेपन और पुनर्रचना के चल रहे अभियान ने मास्को शिखर वार्ता में एक नया आयाम जोड़ दिया. रेगन ने यह भांपने का प्रयास किया कि इस अभियान के कारण सोवियत जनता को कहां तक मानअधिकार मिले हैं और कहां तक धार्मिक आजादी प्राप्त हुई है.

कुछ सोवियत असंतुष्टों से हुई रेगन की मुलाकात लौह आवरण में एक अनहोनी, अनसुनी, अनोखी और अपूर्व घटना थी. विभिन्न सोवियत सूचना माध्यम इस घटना

सावधानी

सावधानी के नाम का तत्त्व भारतीय रक्त में नहीं है. यह उन बुद्धुओं का देश है जो राजनीति में भी आदर्श बघारते हैं. —नरेंद्र कोहली

से बौखला से गए और गोरबाचौफ को भी अमरीकी राष्ट्रपति से एक शिक्षक या उपदेशक की तरह व्यवहार करने और सीख देने से बाज आने के लिए कहना पड़ा. लेकिन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस घटना के कारण तथा रेगन के राजनीतिक औचित्य की सीमा लांघ जाने पर भी न तो कोई कूटनीतिक संकट उत्पन्न हुआ और न ही रेगन को अपनी सोवियत यात्रा बीच में ही छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा.

संदेह की दीवार खत्म होने के आसार

निस्संदेह यह अमरीका और सोवियत संघ के बीच संदेह की मोटी परतों वाली दीवार के तेजी से टूटने का स्पष्ट संकेत है. यह इस बात का सूचक है कि सोवियत संघ में सही माने में परिवर्तन की हवा चल रही है. यह हवा वैसी नहीं है जैसी कुछ समय पहले चीन में चली थी. तब बात तो की गई सैकड़ोंहजारों फूलों के खिलने, मुसकराने की, लेकिन खिलने कोई भी फूल नहीं दिया गया. उलटे सब को मसल कर रख दिया गया और कथित सांस्कृतिक क्रांति के दौरान आगे आए मुखर व्यक्तियों को जेलों में ठूंस दिया गया.

असल में, सोवियत संघ में बह रही परिवर्तन की बयार ही उस के बाहरी रिश्तेनातों में व्यक्त हो रही है. अगर यही हवा बहती रही और अमरीका ने दकियानूसीपन छोड़ कर, तथा संदेहों के दायरे फांद कर दोस्ती का हाथ बराबर आगे बढ़ाए रखा तो निरस्त्रीकरण की मंजिल अवश्य प्राप्त कर ली जाएगी. यह मंजिल भले ही दूर हो, और उस की राह कांटों से भरी हो, फिर भी यह आशा की जा सकती है कि राष्ट्रपति रेगन के अवकाश ग्रहण करने से पहले पांचवीं शिखर वार्त्ता से 'स्टार्ट' पर हस्ताक्षर हो जाएंगे और जमाना विकास की दिशा में बढ़ने के लिए एक नए खुशगवार मोड़ पर आ खड़ा होगा.

लंबी दूरी के अस्त्रों में कटौती

मास्को वार्त्ता उस के परिणामों की अपेक्षा उस से उत्पन्न सौहार्दपूर्ण वातावरण के लिए सफल कहलाएगी. इस से दो महाशक्तियों के बीच के ही नहीं पूर्व और पश्चिम के बीच सहयोग के दरवाजे खुले हैं. जो रेगन ईरान को हथियार बेचने और काले धन से निकारागुआ के विद्रोहियों की गैरकानूनी मदद करने के लिए बदनाम हो गया था और जिस की छवि एक जिद्दी शीतयोद्धा के रूप में उभर रही थी, वाशिंगटन वार्त्ता और अब मास्को वार्त्ता के बाद उस की छवि एक शांतिदूत और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की कड़ियों को जोड़ने वाले प्रबल प्रवक्ता के रूप में स्थापित हो गई है. कल का अनुदार नेता आज उदारमना बन गया है.

यह शिखर वार्त्ता दो महाशक्तियों, दो बृहद राष्ट्रों, दो संसारों, दो राजनीतिक दर्शनों और दो विचारधाराओं का मिलन था. दोनों दिग्गजों ने एकदूसरे के गढ़ में जा कर एकदूसरे को देखा, सुना, समझा, सराहा, एकदूसरे के मन को टोहाटटोला. दोनों के संबंधों में ठहराव, ठंडेपन का स्थान गतिशीलता और गरमाहट ने ले लिया. दोनों ने आशा प्रकट की कि रेगन के राष्ट्रपति पद छोड़ने से पहले उन की पांचवीं शिखरवार्त्ता होगी. यह वार्त्ता लंबी दूरी के अस्त्रों में 50% की कटौती कर ऐतिहासिक निर्णय ही नहीं करेगी, बल्कि संसार को एक नई दिशा की ओर ले जाएगी, जिस से परमाणु अस्त्रों की तबाही ला देने वाली जहरीली बौछारें नहीं पड़ेंगी, बल्कि परमाणु शक्ति के शांतिपूर्ण उपयोग की अमृतमयी वर्षा होगी. ●
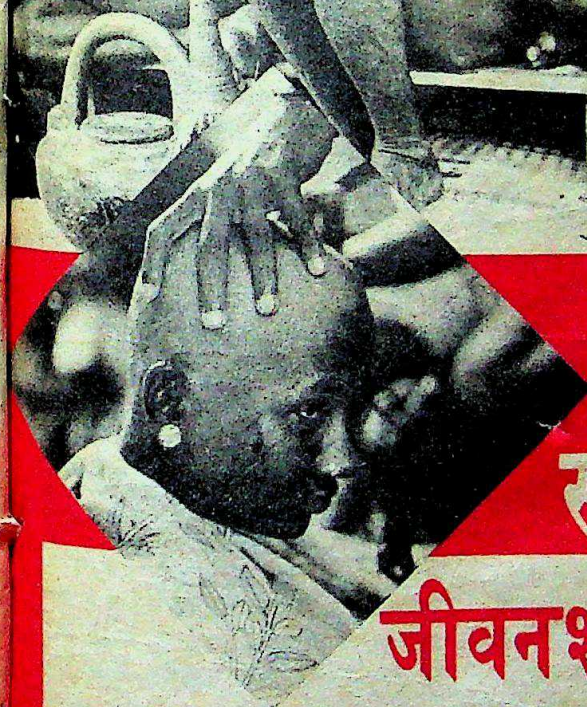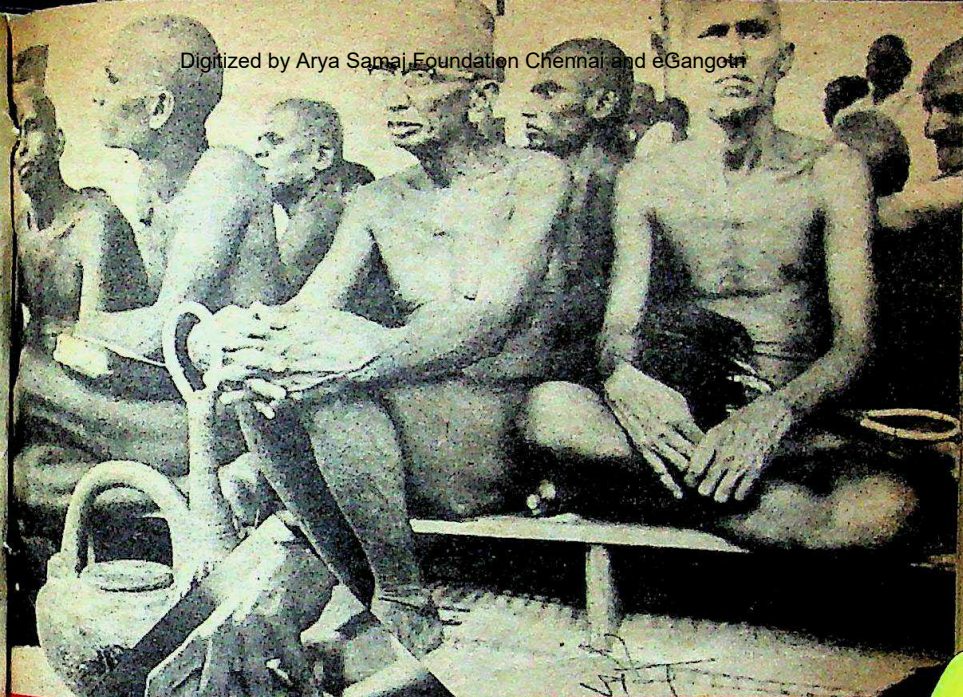
जैन संन्यास : जीवनशून्य जीवन

लेख • मुनि सुमन कुमार

ढाई हजार वर्ष पहले जैनियों के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर ने जिस मुनि संस्था को प्रेम, करुणा व मैत्री के प्रतीक के रूप में स्थापित किया था, आज यदि उन मुनियों के जीवन जीने के तरीके, उन के उपदेशों तथा उन के सिद्धांतों को देखें तो पता चलेगा कि उन के उपदेश तथा जीवन मूल्य महावीर की शिक्षाओं के ठीक विपरीत होने के साथ ही साथ अध्यात्महीन भी हैं.

जैन मुनि 10-12 वर्ष के लड़केलड़कियों को नरक के दारुण कष्ट व स्वर्ग के सुहावने सुख चित्रों के माध्यम से दिखलाते हुए बताते हैं कि यदि वे (लड़केलड़कियां) संसार के कीचड़ में न फंस कर मुनि जीवन स्वीकार

करेंगे तो स्वर्ग जाएंगे. साथ ही, यह चेतावनी भी दे दी जाती है कि एक बार संन्यास ग्रहण करने के बाद यदि वे मुनि जीवन को त्याग कर पुनः गृहस्थ जीवन अपनाएंगे तो निश्चय ही नरक में जाएंगे. सामाजिक भर्त्सना, पारिवारिक अस्वीकृति की आशंका के साथ ही नरक जाने का भय भी इतना प्रबल होता है कि जिंदगी भर मानसिक द्वंद्व व अशांति में रहता हुआ भी कोई मुनि या साध्वी पुनः घर लौटने का साहस नहीं करता.

संन्यास का उद्देश्य

उन 90% मुनियों (या साध्वियों) से यह जानने की आशा रखना ही व्यर्थ है कि उन्होंने किस उद्देश्य को सामने रख कर परिवार त्याग किया था क्योंकि वे 9 से 15 वर्ष की उम्र में ही संन्यास ले लेते हैं. दरअसल संन्यास का उद्देश्य है—बोधिज्ञान प्राप्त करना तथा समाज को रचनात्मक कार्यों के प्रति सजग करते रहना. पर सदियों से जैन मुनियों ने ध्यान व साधना का रास्ता छोड़ कर त्याग, निवृत्ति जैसे शब्दों की गलत व्याख्या करते हुए शारीरिक यातना व जीवन की सचाइयों को नकारने का जो रास्ता पकड़ रखा है उस से बोधिज्ञान व रचनात्मकता का कोई वास्ता नहीं है.

यही वजह है कि जैन मुनियों ने इस कलियुग में 'बोधिज्ञान' प्राप्त होने की संभावना को ही नकार दिया. जबकि सचाई यह है कि बोधिज्ञान में समय अवरोधक नहीं बनता. इसी लिए महावीर ने कहा है, "क्षणम्भि मुक्के" अर्थात मुक्ति इसी क्षण संभव है.

प्रत्येक जैन मुनि के लिए जरूरी होता है कि वह वर्ष में दो बार सिर व दाढ़ी के केशों को हाथ से नोचे. महावीर ने कहा है कि किसी भी प्राणी को कष्ट देना पाप है. तो क्या स्वयं को कष्ट देना पाप नहीं है? केश लुंचन प्रक्रिया इतनी दारुण होती है कि इस से रोमरोम में आग सी लग जाती है. मन में जो चीज आक्रोश व अशांति पैदा करे उस चीज का बोधिज्ञान से क्या संबंध हो सकता है?

जड़ तपस्या

महावीर ने पंचाग्नि तपने, पेड़ों से लटकने, धूप सहने व भूखा रहने का विरोध करते हुए ध्यान को ही मुक्ति का मार्ग कहा है. पर दुख की बात है कि जैनों ने ध्यान का रास्ता छोड़ कर भूखे रहने को ही मुक्ति का मार्ग चुन लिया. जैन मुनि स्वयं तो 30-40-50 दिनों तक भूखे रहते हैं, पर सावनभादों मास में 10-12 वर्ष के हजारों लड़केलड़कियों को भी 8-10 दिन तक भूखे रहने की प्रेरणा देते हैं. क्या 10-12 वर्ष के अबोध लड़केलड़कियों को स्वर्ग व धर्म के नाम पर 8-10 दिन तक भूखा रहने की प्रेरणा देना पाप नहीं है? मेरा अपना मानना तो यह है कि 12-14 वर्ष के लड़केलड़कियों को जीवनभर के लिए जैन संन्यास देना भी पाप कार्य है.

बाल दीक्षा

यौवन के फूल खिले बिना ही 12-14 वर्ष की अबोध, अपरिपक्व उम्र में ही जिंदगी भर के लिए संन्यास दे देना दीक्षित व्यक्ति को जीवन की सचाइयों से अंधकार में रखना है. स्वयं महावीर ने यशोदा

तीर्थंकर महावीर की शिक्षाओं के विपरीत जैन मुनि शारीरिक यातना को सह के बोधिज्ञान को प्राप्त करने का जो मिथ्या प्रयास कर रहे हैं वह क्या जैन समाज को जीवन की सचाइयों से दूर नहीं ले जा रहा?

अबोध और अपरिपक्व उम्र में ही संन्यास ग्रहण करने की प्रेरणा देना क्या उसे जीवन की सचाइयों से दूर कर अंधकार में रखना नहीं है?

राजकुमारी के साथ विवाह करने के बाद तथा प्रियदर्शिनी पुत्री पैदा करने के बाद घर छोड़ा था. महावीर के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने की वकालत करने वाले जैन मुनि क्यों अपने को व जैन समाज को महावीर के आदर्शों के विरुद्ध जीवन की सचाइयों से दूर ले जाने का मिथ्या प्रयास कर रहे हैं? इसलिए जैन धर्मगुरुओं को परंपरागत जैन संन्यास में अबोध बच्चों को कभी भी दीक्षित नहीं करना चाहिए.

शरीर वैर

जैन मुनि जीवनपर्यंत स्नान नहीं करते. स्नान तो दूर रहा, वे पसीने को पोंछना, आंखें धोना, दातून करना इत्यादि कार्यों को भी पाप मानते हैं. गंदी सड़कों पर नंगे पांव चलते हैं. फिर भी पैर तक नहीं धोते. आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि कई जैन मुनि तो बल्ब का प्रकाश देखने को भी पाप मानते हैं. जो जैन मुनि ऐसी रूढियों में फंसे हैं, उन से 'सम्यक् ज्ञान' की आशा रखना ही व्यर्थ है.

महावीर ने कहा "छित्तु वदंति मूढ़ा लिंगमिमं मोक्ख मग्गोत्ति" अर्थात मूर्ख लोग व्यर्थ में ही कहते हैं कि 'साधुता' या मुक्ति प्राप्ति के लिए 'अमुक' चिह्न का होना आवश्यक है. पर महावीर की शिक्षाओं के विपरीत स्थानकवासी व तेरापंथ इन दो जैन संप्रदायों ने 'मुंहपट्टी' को ही साधुता का लक्षण बना दिया.

500 वर्ष पहले एक मुनि ने तर्क दिया कि खुले मुंह बोलने से मुंह से निकलने वाली गरम हवा बाहर की ठंडी हवा से टकराती है, इस से जीव हिंसा होती है.

पहली बात तो यह कि मुंह से सटी होने पर भी मुंह व पट्टी में दूरी बनी ही रहती है. अतः विपरीत हवा के टकराव को रोका नहीं जा सकता. दूसरे, नाक से व शरीर के हर रोम कूप से हवा बाहर निकलती है, तो क्या जैन मुनियों को नाकपट्टी व शरीरपट्टी भी लगानी चाहिए? तीसरे, 12,000 जैन मुनियों में 5,000 मुनि ही पट्टी लगाते हैं, तो क्या शेष 7,000 मुनि मुनि नहीं हैं? तर्क व अध्यात्म दोनों ही दृष्टियों से मुंहपट्टी अनुपयोगी होने के कारण उक्त दो संप्रदायों को 24 घंटे मुंह को कसे रखने वाली मुंहपट्टी के मिथ्या आग्रह को छोड़ देना चाहिए.

जैन मुनियों का जीवन जितना जीवन शून्य है, उतने ही उन के उपदेश व सिद्धांत भी मिथ्या व मानववाद के विरुद्ध हैं. यही कारण है कि आज 12,000 जैन मुनि समाज पर आर्थिक भार माने जाते हैं. जैन मुनि मानते हैं कि कृषि करना, कुआं खुदवाना, विद्यालय बनाना, पुस्तक छपाना, अक्षर ज्ञान देना व लेना, भोजन पकाना, कपड़े बनाना इत्यादि सब कार्य पाप कार्य हैं. यहां तक कि जैन मुनि भूखे को भोजन देने, प्यासे को पानी पिलाने, स्वयं श्वास लेने, मातापिता की सेवा करने, बच्चों का भरणपोषण करने, विपत्ति में फंसे व्यक्ति की जीवन रक्षा करने को भी पाप मानते हैं. यदि सारा संसार जैन मुनियों के आधार पर चलने की सोच ले तो वह भोजन भी नहीं कर सकता.

यहां यह स्पष्ट कर दिया जाए कि
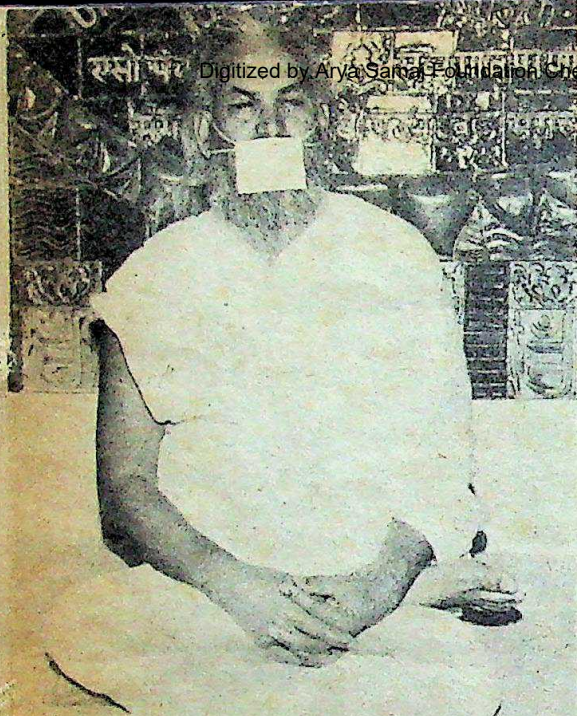
'मुंहपट्टी' को साधुता का चिह्न बना कर जैन मुनि क्या महावीर की शिक्षाओं का सही रूप से पालन कर रहे हैं?

तेरापंथी मुनि अपने अनुयायियों द्वारा भी उक्त कार्य कराने को पाप मानते हैं, जबकि स्थानकवासी मंदिरमार्गी व दिगंबर संप्रदायों के मुनि अपनेअपने संप्रदाय के अनुयायिओं द्वारा उक्त कार्य किए जाने पर आंशिक पाप व संप्रदाय भिन्न व्यक्तियों द्वारा किए जाने पर पूर्ण पाप मानते हैं.

जैसे, एक जैन यदि दूसरे जैन को ही भोजन देता या पानी पिलाता है तो आंशिक पाप करता है, पर जैनेतर को पानी आदि पिलाने से वह पूर्ण पाप का भागी बनता है. अथवा एक जैन यदि अपनी मां की सेवा, बच्चों का भरणपोषण व विपत्ति में फंसी अपनी पत्नी के जीवन को बचाता है तो वह आंशिक पाप करता है. पर यदि एक जैन किसी जैनेतर व्यक्ति की या अपनी जैनेतर मां की सेवा, बच्चों का भरणपोषण व स्त्री (पत्नी) के जीवन की रक्षा करता है तो वह पूर्ण पाप का भागी बनता है.

इस मान्यता के पीछे सोच यह है कि जैन मुनि अपने संपद्राय के अनुयायियों को सम्यक ज्ञानी तथा संप्रदाय इतर जैनों को मिथ्या ज्ञानी माते हैं. अतः सम्यक ज्ञानी को कम पाप व मिथ्या को पूर्ण पाप होता है.

जो मुनि स्वयं तथा अपने अनुयायियों को सम्यक ज्ञानसंपन्न मानते हैं, उन्हें अपनी उक्त क्षुद्र, अमानवीय व मिथ्या मान्यताओं पर हंसी आनी चाहिए कि वे महावीर के इस वाक्य को भी नहीं समझ पाए कि, 'एगेव माणुसी जाई' अर्थात मनुष्य जाति एक है.

महावीर ने कहा, "मत्ति में सव्व भूएसु" अर्थात मैं सब से प्रेम (मैत्री) करता हूं. पर जैन मुनि कहता है कि मित्र के साथ मित्रता का भाव, पत्नी के साथ प्रेमभाव, मांबहनों के साथ आदर स्नेह का भाव भी पाप है. तो धर्म क्या है? पति का पत्नी के प्रति घृणा का भाव क्या धर्म है? क्या पति पत्नी से प्रेम का अधिकारी नहीं है? प्रेम पाप क्यों है? क्या घृणा धर्म है?

जैन मुनियों द्वारा प्रेम को घृणित बताने का ही फल है कि हरएक जैन परिवार में पतिपत्नी, मांबेटे व सासबहू के बीच कलह चलती ही रहती है. दरअसल, परंपरागत जैन मुनि अपने उपदेशों की सत्यता न आगम वाक्यों से (महावीर वाणी से), न आध्यात्मिक अनुभवों से और न ही तर्क से प्रमाणित कर सकते हैं. आज के वैज्ञानिक समय में भी यदि हम ने परंपरागत जैन संन्यास व परंपरागत उपदेशों को नहीं बदला तो हम महावीर की आध्यात्मिक शिक्षाओं व ध्यान योग के रहस्यों को समझने में एक बार फिर चूक जाएंगे. ●

आ ही गई! एक बेल्टरहित नैपकिन, जो इतनी बड़ी है कि इसे सुपर कहा जा सके

उस औरत के लिए, जिसे चाहिए बेल्टरहित आराम और सुविधा सुपर साइज़ में— नई स्टेफ्री सुपर. अधिक बढ़िया विशेषताओं के साथ :

सोखने में सुपर : नई स्टेफ्री सुपर एक अधिक लंबी, अधिक चौड़ी और अधिक मोटी नैपकिन है. और इसकी बहुत अच्छी तरह से सोखने वाली भीतरी तहें इस बात का विश्वास दिलाती हैं कि आपकी त्वचा हमेशा आरामदेह और सूखी रहे.

बचाव में सुपर : नई स्टेफ्री में मौजूद नीली प्लास्टिक-शील्ड न सिर्फ़ नैपकिन को नीचे से और अगल बगल से ढंके रहती है बल्कि ऊपर से भी थोड़ा सा ढंके रहती है... ताकि दाग़ धब्बे न लगें और बहाव को बाहर आने से बचाए. इस तरह आप निश्चिंत रहती हैं कि आपको परेशानी में डालने वाली दुर्घटना जैसी कोई चीज़ नहीं होगी. कभी नहीं!

सुरक्षा में सुपर : नई स्टेफ्री में हैं तिहरी एड्हेसिव पट्टियां. इससे आपको यकीन होता है कि नैपकिन बिल्कुल ठीक और सही सुरक्षित प्रकार से अपनी जगह पर रहेगी. ना तो हिलेगी, ना खिसकेगी, ना फिसलेगी. नई स्टेफ्री सुपर. अधिक बहाव वाले दिनों के लिए और रात के लिए यह बहुत उपयोगी है.

"यह तो बस हर तरह से सुपर है!"

नई स्टेफ्री सुपर

बेल्टरहित सैनिटरी नैपकिन्स

जॉनसन एण्ड जॉनसन

OBM/2900/HN

आयुर्वेदिक औषधियां : जो दारू की तरह दम छीन लेती हैं

लेख • जगदीश चावला

उस दिन महरौली के रामजीवन ने अपने घर में रखी एक औषधि की बोतल को ज्यों ही गटागट अपने हलक में उतारा, उस की हालत बिगड़नी शुरू हो गई. हस्पताल जाते समय उसे रास्ते में खून की उलटी भी हुई और वहां पहुंचते ही वह मूर्च्छित हो गया. डाक्टरों के बहुत प्रयास करने से उस की जान तो बच गई, मगर उसे हस्पताल से छुट्टी इस आदेश के साथ मिली कि यदि वह अपने जीवन को मूल्यवान समझता है तो भविष्य में इस तरह की औषधियां पीना बंद कर दे.

मगर दिल्ली की ही नई बस्ती किशनगंज के दो तिपहिया स्कूटर चालक—रमेशकुमार व नरेंद्रकुमार इसी तरह की आयुर्वेदिक औषधि पी कर हमेशा के लिए मौत की नींद सो गए. यह कोई

काल्पनिक कथा या मनघड़ंत समाचार नहीं है बल्कि एक सच्ची और वास्तविक घटना है जो गत वर्ष सितंबर में दिल्ली में घटी थी. इसी तरह की अनेक घटनाएं आए दिन देश के अन्य भागों में भी होती रहती हैं.

रमेश व नरेंद्र की मृत्यु के बाद स्थानीय पुलिस ने उस औषधि के नमूने केंद्रीय अपराध विज्ञान प्रयोगशाला में भेजे. जांच करने पर पता चला कि इन युवकों ने जो औषधि ली थी वह मृतसंजीवनी सुरा थी.

पिछले एक दशक से मादक द्रव्यों के बढ़ते हुए सेवन से जनजीवन में जो अराजकता पैदा हुई है उस के लिए आयुर्वेदिक, ऐलोपैथिक और जीवन रासायनिक पदार्थों के वे करीब आधा दरजन उत्पादन भी जिम्मेदार हैं जिन में अलकोहल की मात्रा इतनी अधिक रहती है कि वे सामान्य शराब से भी ज्यादा नशा पैदा करते हैं. मृतसंजीवनी सुरा, मृतसंजीवनी सुधा, महाद्राक्षासव, अशोका लिक्विड गुट्टू तथा बायोटानिक व टिंचर जिजर का प्रचलन इतना ज्यादा हो गया है कि शराबियों ने अपनी तलब पूरी करने के लिए ऐसी ही अलकोहल युक्त औषधियों का नियमित रूप से सेवन करना शुरू कर दिया है.

मृतसंजीवनी सुधा, मृतसंजीवनी सुरा और महाद्राक्षासव जैसी अलकोहलयुक्त आयुर्वेदिक औषधियां अब उन सभी स्थानों पर खुले आम बिकती हैं जहां पहले से ही कच्ची या देसी शराब की सर्वाधिक खपत है. इन दवाओं की बिक्री का सब से बड़ा आकर्षण यही है कि इन की बिक्री पर किसी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं है और लोग इसे दवा कह कर ही बेचते हैं जबकि इस का प्रभाव दारू से कम नहीं है.

यों तो इन दवाओं की हर बोतल पर इस के सेवन की विधि लिखी रहती है कि भोजन के बाद एक या आधा चम्मच का ही सेवन करें, मगर यह जिन लोगों के होंठों पर शराब की तरह लग चुकी हो वे इस के एक दो चम्मचों से ही संतुष्ट नहीं होते बल्कि पूरी की पूरी बोतल गटागट पी जाते हैं.

दिल्ली के कई रईस घरों से ले कर पुनर्वास कालोनियों तथा झुग्गीझोंपड़ियों तक में आज 'सुरा' की सर्वाधिक खपत है. बताया जाता है कि नवंबर 1984 के दंगों के दिनों में जब शराब की बिक्री करने वाली दुकानें व सरकारी ठेके बंद हो गए थे तो नशे के शौकीन लोग इन अलकोहलयुक्त आयुर्वेदिक दवाओं पर भूखों की तरह टूट पड़े थे. तभी से इस की लोकप्रियता व उत्पादन में भी उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली गई.

दिल्ली में इस समय अंगरेजी शराब की बिक्री के लिए प्रशासन की ओर से लाइसेंस प्राप्त 93 दुकानें व चार संस्थाएं यानी भारतीय पर्यटन विकास निगम, दिल्ली पर्यटन निगम, दिल्ली नागरिक पूर्ति निगम तथा दिल्ली उपभोक्ता सहकारी भंडार हैं. इन चारों संस्थाओं ने वर्ष 1986-87 में अंगरेजी शराब की 1,40,40,032 बोतलों की बिक्री की, जबकि इस वर्ष अप्रैल मास में बिकने वाली शराब की बोतलों की संख्या 12, 25, 740 है.

इसी तरह, दिल्ली क्षेत्र में इस समय देसी शराब के 10 ठेके सब्जीमंडी, जहांगीरपुरी, उत्तमनगर, पंजाबीबाग, सीलमपुर, गोविंदपुरी, महरौली,

आयुर्वेदिक औषधियों में अलकोहल की काफी मात्रा होने से शराबियों का ध्यान इस ओर गया और वे दवा को दारू की तरह पीने लगे. परिणामस्वरूप इन औषधियों ने बहुतों को मौत के घाट उतारा. आवश्यकता है जनता और सरकार दोनों को इस ओर सचेत होने की.
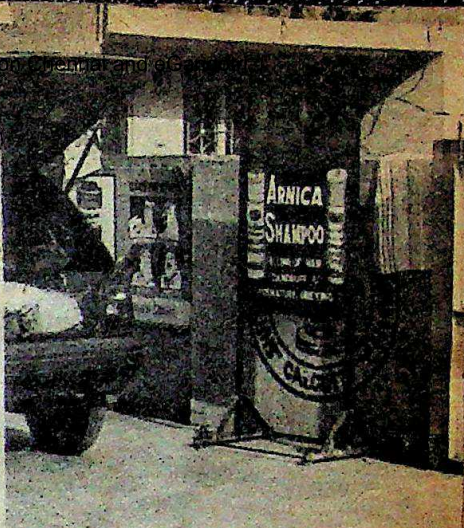
पटपड़गंज, श्रीनिवासपुरी, नांगलोई में हैं, जहां देसी शराब की पूरी बोतल 26 रुपए में तथा अद्धा 14 रुपए में और देसी रम की बोतल 27 रुपए में तथा अद्धा 15 रुपए में मिलता है. सुबह 11 बजे से रात साढ़े सात तक खुले रहने वाले इन ठेकों पर एक व्यक्ति एक समय में चार बोतलें तक खरीद सकता है.

आबकारी आयुक्त के कार्यालय के महाप्रबंधक भास्करप्रकाश जोशी ने इस प्रतिनिधि को बताया कि "हमारी देसी शराब सहारनपुर व मंसूरपुर की सहकारी डिस्टिलरियों से आती है और व्यापक जांचपड़ताल के बाद ही इस की बिक्री की अनुमति दी जाती है. देसी शराब की एक बोतल में अलकोहल की मात्रा 50 डिगरी तक होती है. पिछले वर्ष हम ने लगभग 48 करोड़ रुपए की शराब बेची थी. अप्रैल 1986 के एक मास में हमारी बिक्री 3,81,34,059.62 रुपए की थी जबकि यही बिक्री अप्रैल 1983 में 3, 87, 17, 124.40 रुपए की रही थी.

उपर्युक्त आंकड़ों से पता चलता है कि सिर्फ दिल्ली क्षेत्र में ही प्रति वर्ष कई करोड़ रुपए की अंगरेजी व देसी शराब लोग पी जाते हैं. लेकिन इस से कम तादाद उन लोगों की भी नहीं है जो बाजार में चोरीछिपे

जब से आयुर्वेदिक औषधियों को शराब की तरह पिया जाने लगा तब से इन की बिक्री में एकाएक तेजी आई. ▲

बिकने वाली अवैध तथा नकली शराब या आयुर्वेदिक औषधियों के नाम पर अलकोहल युक्त दवाएं सेवन करते हैं.

देश का शायद ही कोई ऐसा कोना बचा होगा जहां ज्यादा मात्रा में या जहरीली शराब पीने से लोगों की मौतें न हुई हों. सच तो यह है कि इस तरह से होने वाली मौतों की संख्या दिनोदिन बढ़ती जा रही है और ऐसी मौतों के लिए वे तमाम आयुर्वेदिक औषधियां भी बराबर की जिम्मेदार हैं जिन में अलकोहल की मात्रा काफी अधिक रहती है.

ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपने घर में मृतसंजीवनी सुरा को यह बता कर रखते हैं कि यह एक आयुर्वेदिक टानिक है जो शरीर को शक्ति व स्फूर्ति देता है. मगर वे इस टानिक का इस्तेमाल दवा की तरह न कर के दारू की तरह ही करते हैं. इस सुरा को पीने वालों का कहना है कि इस का स्वाद शराब की तरह से कुछ तेज और तीखा होता है जबकि आयुर्वेदिक रीति से तैयार किए जाने वाले आसवों का स्वाद थोड़ा खट्टामीठा बताया जाता है.

इन्हें नहीं मालूम कि ये अपनी ही मौत खरीद रहे हैं.

इन आयुर्वेदिक औषधियों में अलकोहल की मात्रा कितनी होनी चाहिए, इस बारे में आयुर्वेद औषधिशास्त्र में कहीं भी कोई निश्चित ब्योरा उपलब्ध नहीं है. मगर कुछ समय पूर्व केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान परिषद ने इन दवाओं के लिए अलकोहल का मानक 3 से 19% तक तय करने का निश्चय किया था. लेकिन पता नहीं किन कारणों से वह मानक स्वास्थ्य मंत्रालय को मान्य नहीं हो पाया. अब तक बिक रही सुरा की 180, 330, और 500 मिलीलीटर की बोतलों में अलकोहल की मात्रा 30 से 52% तक रही है.

दिल्ली आबकारी विभाग के जिला आबकारी अधिकारी (औषधि) एम.यू. सिद्दीकी ने इस प्रतिनिधि को बताया कि इस समय दिल्ली में मृतसंजीवनी सुरा को बनाने वाली सात फार्मेसियां हैं तथा तीन अन्य फार्मेसियां महाद्राक्षासव का उत्पादन करती हैं, जबकि हरियाणा, उत्तर प्रदेश व राजस्थान के अतिरिक्त कुछ अन्य राज्यों में भी इस के उत्पादकों की कोई कमी नहीं है.

मृत संजीवनी सुरा बेचने वाले भी अब सभी राज्यों में कुकुरमुत्तों की तरह उग रहे हैं. इसे बनाने वाली एक फार्मेसी के संचालकों का कहना है कि आयुर्वेदशास्त्र के अनुसार राजा शुक्र तथा अन्य कई राजेमहाराजे अपनी सेना को मृतसंजीवनी सुरा का सेवन कराते थे ताकि उन के सैनिक, स्वास्थ्य और बलवीर्य की दृष्टि से कहीं भी कमजोर सिद्ध न हों. आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली में सुरा तथा आसवों को सेहत के लिए काफी उपयुक्त बताया गया है.

शुरूशुरू में तो इन आयुर्वेदिक औषधियों का इतना प्रचारप्रसार नहीं था, मगर जब से शराब के पियक्कड़ों ने इसे अपने उपयोग में लाना शुरू किया है तब से ज्यादा पैसा कमाने के लालच में कुछ उत्पादकों ने भी इस में अलकोहल की मात्रा बढ़ा दी है. अब दिल्ली में इस की बिक्री पर कुछ अंकुश लगा है तो आसपास के राज्यों से

इस ख़बर को न पढ़ने से आपके बालों को बहुत नुकसान पहुंच सकता है.

अब तक डैन्ड्रफ़ से छुटकारा पाने का मतलब था बालों को बेरौनक और बेजान बना देना.

पर अब ऐसा नहीं.

पेश है नया पामोलिव एन्टी-डैन्ड्रफ़ शैम्पू-बालों के लिए बेहद मुलायम इस शैम्पू में है डैन्ड्रफ़ हटाने वाला क्लिम्बाज़ोल-जिसे औषधीय परीक्षणों द्वारा मान्यता प्राप्त है. यह न केवल असरदार तरीके से डैन्ड्रफ़ हटाता है, बल्कि बालों में पपड़ी और खुजली भी नहीं होने देता.

इसलिए अगर आप बालों को मुलायम रेशमी और डैन्ड्रफ़

नया पामोलिव एन्टी-डैन्ड्रफ़ शैम्पू.

बेहतर परिणाम के लिए हफ्ते में २ बार ज़रूर इस्तेमाल कीजिए पामोलिव एन्टी-डैन्ड्रफ़ शैम्पू.

नया पामोलिव एन्टी-डैन्ड्रफ़ शैम्पू : डैन्ड्रफ़ हटाए, बालों में

नशीले पदार्थों के रोगियों का मनोवैज्ञानिक उपचार करने वाले विशेषज्ञ डा. हरीश भल्ला.
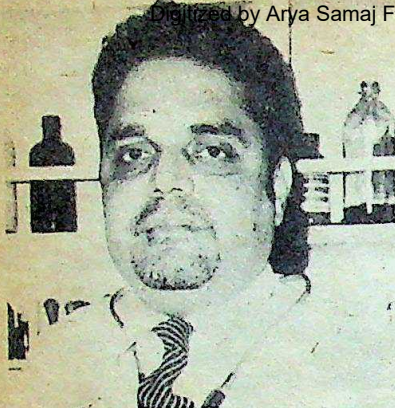
मांग पूरी की जा रही है.

कुछ समय पहले गढ़वाल में भी ऐसी आयुर्वेदिक औषधियों से कुछ लोगों की मृत्यु हो गई थी और तब वहां उत्तरकाशी जिले की महिला नागरिक समिति ने इस व्यापार को बंद करवाने के लिए कई प्रदर्शन किए थे और यह मांग की थी कि ऐसी तथाकथित सभी औषधियों पर प्रतिबंध लगाया जाए जिन से सामाजिक व्यवस्था के बिखरने का खतरा बढ़ता है. तब बहुत होहल्ला मचने पर एक व्यापारी के उत्पादन पर प्रतिबंध भी लगा दिया गया था, मगर बाद में उस ने अदालत से इस आधार पर स्थगन आदेश प्राप्त कर लिया था कि वह दवाओं का व्यापार करता है, शराब का नहीं.

संसद के शीतकालीन अधिवेशन में इन दवाओं के उत्पादन के संबंध में कई प्रश्न पूछे गए थे और यह भी कहा गया था कि इन दवाओं का इस्तेमाल नशे के लिए हो रहा है. मगर तब सरकार के पास विभिन्न राज्यों में इन दवाओं के उत्पादन के निश्चित आंकड़े उपलब्ध नहीं थे.

अब दिल्ली प्रशासन ने नए सुरा उत्पादकों को फिलहाल लाइसेंस देना बंद कर दिया है और इस की बिक्री के आदेशों में भी व्यापक परिवर्तन किए हैं. नए आबकारी नियमों के अनुसार किसी टानिक में 11.4% या 20 डिगरी तक अलकोहल की मात्रा आबकारी अधिनियम के अंतर्गत नहीं आती. मगर इस से ज्यादा डिगरी में अलकोहल प्रयुक्त होने पर अब आबकारी शुल्क भी लिया जा सकता है.

पहले ये आयुर्वेदिक औषधियां आबकारी अधिनियम के अंतर्गत इसलिए नहीं आती थीं क्योंकि आबकारी अधिनियम उन औषधियों पर लागू नहीं होता था जिन में अलकोहल स्वयं पैदा होता था या बाहर से मिलाया जाता था. मगर अब 17 मार्च, 1987 से इन औषधियों पर भी आबकारी कानून लागू हो गया है. अब नए कानून के मुताबिक सुरा बेचने वाला 1,000 रुपए वार्षिक फीस जमा करा कर लाइसेंस प्राप्त करेगा. इस की खरीद व बिक्री का पूरा हिसाबकिताब रखेगा और बिक्री भी सिर्फ पंजीकृत चिकित्सकों के नुसखे पर ही करेगा. जिन उत्पादकों को सुरा बनाने के लाइसेंस मिल चुके हैं उन्हें भी अपनी बोतलों के लेबल पर अलकोहल की मात्रा घोषित करनी होगी तथा घोषित मात्रा से अधिक अलकोहल पाए जाने पर जुरमाने सहित अतिरिक्त शुल्क देना होगा.

प्रशासन की इस घोषणा के बाद दिल्ली की एक प्रसिद्ध फार्मेसी को इस कानून का उल्लंघन करने पर दंडित भी किया जा चुका है. लेकिन यह बात तय है कि केवल कानून बना देने से कोई बुराई नहीं रुकती, बल्कि इस से पुलिस व अधिकारियों को हाथ रंगने का एक और अवसर प्राप्त हो गया है. आबकारी से प्राप्त भारी राजस्व के बल पर टिकी सरकार भला शराबबंदी में दिलचस्पी क्यों लेगी?

आज देश में वैध, अवैध और नकली शराब तथा सुरा के धंधे को कई ठेकेदारों, राजनीतिबाजों, पुलिस व आबकारी विभाग के अधिकारियों का संरक्षण प्राप्त है.

1kg=10½Lts

SAGAR
SKIMMED MILK POWDER

आम तौर पर ठेकेदार डिस्टिलरी की शराब नहीं बेचते क्योंकि ऐसा करने पर भारी आबकारी शुल्क देना पड़ता है. वे अलकोहल से अवैध शराब बना लेते हैं और उस पर असली होने का ठप्पा लगा कर बाजार में बिक्री के लिए धकेल देते हैं. मगर सुरा के बारे में सरकार या तो शुरू से ही अंधेरे में रही है या फिर वह जानबूझ कर अव्यावहारिक रवैया अपनाती रही है. नशाबंदी की बात करना तो दूर, इस मद से होने वाली आय में वृद्धि की नईनई तरकीबें खोजी जा रही हैं. प्रश्न यह है कि क्या सरकार की आय के अन्य स्रोत सूख चुके हैं जो अब शराब बंदी जैसे जनजीवन से जुड़े प्रमुख विषय की भी उपेक्षा की जा रही है?

सुरा बनाने वाली कंपनियां भले ही इस बात से भड़कती रहें कि उन की औषधि को दारू क्यों कहा जाता है, मगर यह सत्य है कि बरसों से अधिकांश आयुर्वेदिक चिकित्सक भी मरीजों को मृतसंजीवनी सुरा के सेवन की सलाह नहीं देते.

अलकोहल की मात्रा अधिक होने के कारण इन दवाओं का स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ना स्वाभाविक है. इन के अंधाधुंध सेवन से जिगर काम करना बंद कर देता है. डाक्टरी भाषा में इसे 'लिवर सिराईसिस' कहते हैं.

इन दवाओं के अत्यधिक सेवन से शरीर उसी तरह उत्तेजित होता है जैसे शराब पीने से. मगर बाद में इस से कमजोरी, रक्ताल्पता और नपुंसकता बढ़ जाती है. दूरदर्शन पर नशाबंदी से संबंधित कार्यक्रम 'अंधी गलियां' का संचालन करने वाले तथा नशीले पदार्थों के रोगियों का मनोवैज्ञानिक उपचार करने के विशेषज्ञ करोल बाग के डा. हरीश भल्ला का कहना है: "इन दवाओं यानी इस नकली शराब के सेवन से पेट में अलसर होना, मेदा खराब हो जाना, उलटियां और उस में खून का आना तो स्वाभाविक है ही, मगर इस के अत्यधिक सेवन से सारा शरीर खोखला हो जाता है और बाद में मनुष्य मात्र एक नरकंकाल बन कर रह जाता है."

सुरा जैसी आयुर्वेदिक दवाओं में अलकोहल न होता तो संभवतः किसी को इस ओर ध्यान देने की जरूरत न पड़ती. मगर इन दवाओं की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता इसलिए जरूरी है कि इन में वह तत्त्व मुख्य है जो शराब में होता है तथा जिसे वैज्ञानिक भाषा में 'एथिल अलकोहल' कहते हैं. यह अलकोहल एक रंगहीन द्रव्य होता है जिस की महक बड़ी तीखी होती है. क्लोरोफार्म व ईथर के समान अलकोहल खिन्नता पैदा करने वाला, नींद लाने वाला विषैला तत्त्व है. यह जैविक तंतु की कार्यशक्ति को नष्ट करता है.

भोज्य पदार्थों के साथ जब अलकोहलयुक्त सुरा छोटी आंत में पहुंचती है तो यह वहां बिना हजम हुए शरीर में सीधे जज्ब हो जाती है. ज्यादा मात्रा में पीने से इस की खुमारी बढ़ने लगती है. मनुष्य पर बातूनीपन सवार हो जाता है. वह बहकीबहकी बातें करता है और जब मनुष्य 400-500 मिलीग्राम से ऊपर इस दवा का सेवन कर चुका होता है तो वह अनर्गल बकवास करता हुआ अपने होशोहवास भी गुम कर बैठता है और कभीकभी सांस रुकने से वह मर भी सकता है.

शराब या सुरा के साथ जवांमर्दी के अफसाने भी झूठे व दिलफरेब होते हैं. यह शराब व्यक्ति को अपराधी जीवन की ओर ले जाती है. हिंसा तथा बलात्कार करने वाले 75% व्यक्ति शराबी ही होते हैं.

परिवार पूरे राष्ट्र की इकाई है. इसलिए जब एक परिवार लड़खड़ाता है तो उस का प्रभाव सारे समाज व राष्ट्र पर भी पड़ता है.

महात्मा गांधी के नकशेकदम पर चलने का दम भरने वाली हमारी सरकार भले ही राजस्व प्राप्ति के लालच में नशाबंदी की घोषणा न करे मगर यह घर के लोगों और विशेषतः जागरूक महिलाओं की नैतिक जिम्मेदारी है कि वे अपने घर में बरबादी के इस भूत को न घुसने दें. ●
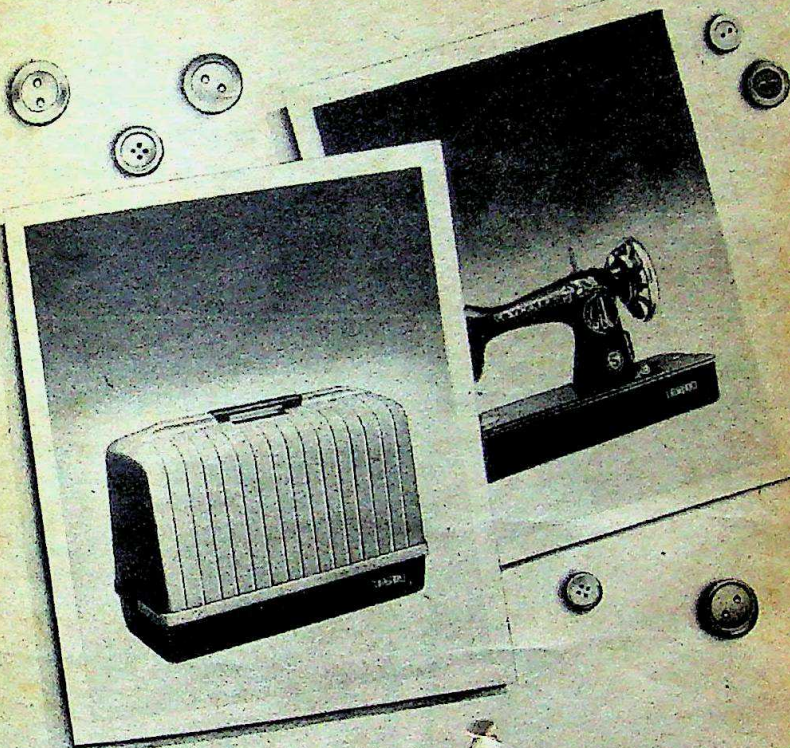
मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.

मुझे शिकायत है उन व्यक्तियों से जो दवाखाने में दवा लेने आते हैं परन्तु वहां बैठ कर धूम्रपान करते हैं और मना करने पर भी बाज नहीं आते.

-जी. विश्वनाथन, शिवा

मुझे शिकायत है उन पड़ोसियों से जो हमारे बाहर जाने के बाद बगीचे में से फूलपौधे उखाड़ कर ले जाते हैं.

-मीना पांडेय

मुझे शिकायत है उन व्यक्तियों से जो अखबारों की दुकान पर आ कर पत्रपत्रिकाएं उठा कर पढ़ना शुरू कर देते हैं.

-जनकराज बजाज

मुझे शिकायत है उन लोगों से जो दूसरों की दुकान में अपनी सुविधा के लिए सामान रख कर बेखबर हो जाते हैं. इस से दुकानदार को उन का सामान वापस लौटाने के लिए व्यर्थ ही इंतजार करना पड़ता है.

-नवनीत कुमार

मुझे शिकायत है उन सज्जनों से जो अपने मित्रों से हाथ मिलाते समय काफी देर तक एकदूसरे का हाथ नहीं छोड़ते. इस से रास्ते में आनेजाने वालों को परेशानी होती है.

-[illegible] कंडवाल

न आए मेघा

न सावन आया,
न भादों छाया.
न हरियाली छाई,
सूख गई काया.

मेघों की आस में,
धरती रही प्यासी.
साजन की राह में,
नयनों में उदासी.

न सरसों फूली,
खेत रहे सूने.
न सावन के झूले,
न भादों के मेले.

न आए मेघा,
न ही सजन.
सूख गई फसलें,
सूने नयन.

-डा. कमलनारायण मेहरोत्रा 'अनंत'

शोर
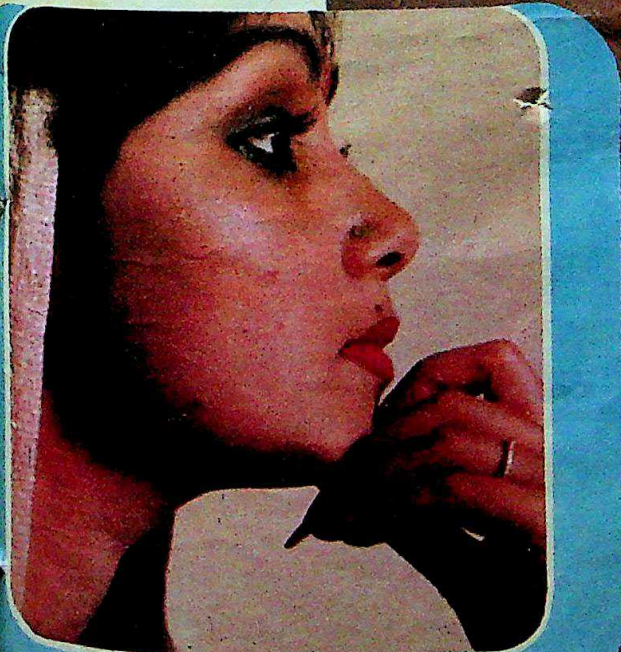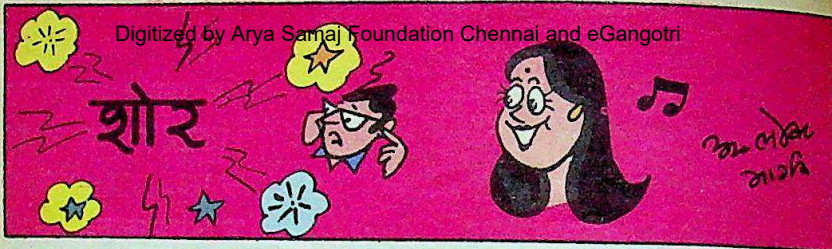
चूं चूं
यह पंखा बहुत आवाज कर रहा है. इसे बंद कर दो.

इसे बंद करेंगे तो गर्मी हो जाएगी.
होने दो. मुझे शोर में नींद नहीं आती.

श्रीमतीजी, फ्रिज की घरघराहट मुझे सोने नहीं दे रही. इसे बंद करो.
अरे! सारे फल सब्जी खराब हो जाएंगे.

और नींद नहीं आई तो मेरी तबियत खराब हो जाएगी.

यह नल भी बंद करो! मैं बिना नहाए रह सकता हूं पर बिना शोर नहीं.

थोड़ी देर बाद
हैं! इतना तेज संगीत! और प्रकाश कहां गए?

हाय! यह क्या?

नींद नहीं आ रही थी तो संगीत सुनने लगा और आंख लग गई.

बिटिया की आकर्षक फ्राक

फैशनपरस्त इस गुड़िया की सूती क्रेप की सफेद फ्राक पर नीले प्रिंटेड कपड़े की डिजाइन कैसी फब रही है ◄

हलके नीले पालिएस्टर टाप पर रायल ब्लू 'ए' लाइन ट्यूनिक, उस पर पीला जिराफ तो मुन्नी पर गजब ही ढा रहा है.

हलके नीले टेरीकाट पर गहरे नीले व लाल कपड़े की मनमोहक झालर में यह गुड़िया स्वच्छंद चिड़िया सी पेड़ की डाल पर कैसी चहक रही है.

सावन की हरियाली में, बागों की बहारों में हरी प्रिंटेड टेरीवायल पर, सादा हरे योक पर सफेद धागे से काढ़ी हुई बेल की फ्राक पहन कर झूलने का मजा कुछ और ही है.
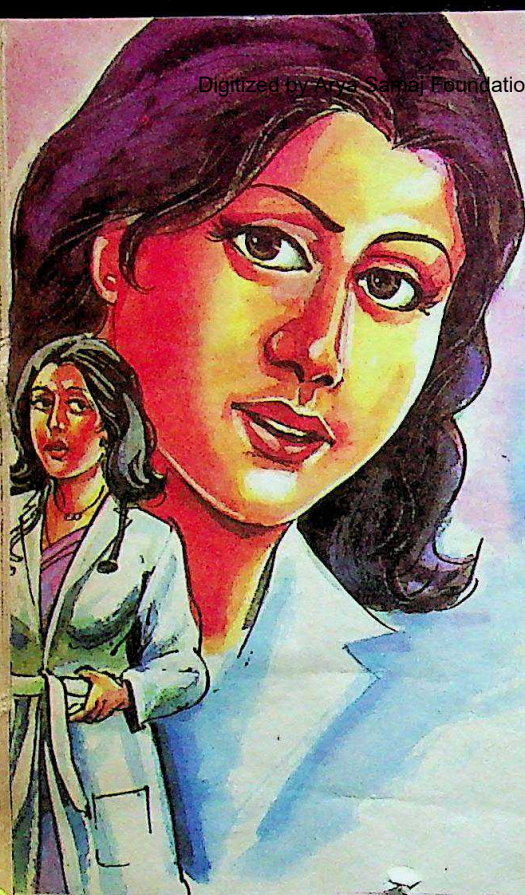
उन नेत्रों की भाषा को अनु तब से पढ़ती आई थी, जब उस की मासूम आंखें अभी पूरी तरह खुल कर संसार की कठोरता को भांप पाने में भी अक्षम थीं.

"बेटा है. और रमा दीदी बिलकुल ठीक हैं. आप के आशीवाद से आपरेशन सफल रहा. अच्छा चाचा, मैं चलती हूं. अभी एक और आपरेशन करना है." कहते हुए अनु ने झुक कर डाक्टर रघुनंदन के चरण स्पर्श किए.

"ओह, अनु कितनी बार तुम्हें समझाया है, इस प्रकार चरण स्पर्श करना अच्छा नहीं लगता है. आपरेशन से पहले आत्मविश्वास जगाया करो, न कि मेरे चरण स्पर्श किया करो. पर तुम मानती ही नहीं. बड़ी जिद्दी लड़की हो," हर बार की तरह डाक्टर रघुनंदन ने घिसेपिटे शब्द दोहरा दिए थे.

कहानी • समीर कुमार

नारी अभिमन्यु

"मुबारक हो, डाक्टर चाचा, आप नाना बन गए." आपरेशन कक्ष से बाहर निकलती डाक्टर अनु ने एक नया जन्मा शिशु डाक्टर रघुनंदन की बांहों में थमा दिया.

खुशी से भरे डाक्टर रघुनंदन ने शिशु के मस्तक का चुंबन ले कर संसार में उस का अभिवादन किया. फिर अगले ही क्षण उन की प्रश्नभरी निगाहें अनु की ओर उठ गईं.

"और हां, चाची को मेरी ओर से बधाई देना और कहना कि शाम को मिठाई खाने जरूर आऊंगी," अनु ने जातेजाते दूर से ही संदेश दिया था.

डाक्टर रघुनंदन नजरें गड़ा कर अनु के तेजी से बढ़ते हुए कदमों को देख रहे थे, 'यह सचमुच अनु ही भागी जा रही है?' उन्होंने स्वयं से प्रश्न किया. उन के सारे जीवन की कड़ी मेहनत, सारी सफलता मात्र उस

प्रक्रिया में निहित हो कर रह गई थी. अनु का बढ़ता हुआ एकएक कदम, उन्हें अपनी सफलता के प्रति आश्वस्त कर रहा था.

अनु के वार्ड के दूसरे छोर पर लुप्त होते ही, उन्होंने अपनी दृष्टि जब अपनी गोद के नन्हे शिशु पर डाली तो स्मृतियों का एकएक पृष्ठ उन के समक्ष खुलता चला गया. उसी होली मिशन हस्पताल में आज से 25 वर्ष पहले, उसी प्रसूतिकक्ष में, दो जुड़वां बच्चों का जन्म हुआ था.

जाड़ों की वह काली रात अब तक डाक्टर रघुनंदन को नहीं भूली थी. आनंद

अपाहिज अनु समाज की बेड़ियों में जकड़े और कर्तव्यच्युत अपने पिता को अंत तक माफ न कर सकी. प्रेम की वेदी पर अपने स्वाभिमान को तिलांजलि न दे कर उस ने ऐसी मिसाल कायम कर दी, जिस के सामने निखिल को झुकना पड़ा.

"नहीं, डाक्टर नहीं. यह तो मेरी जिंदगी पर एक बदनुमा दाग है. एक तो लड़की वह भी अपाहिज. जान ले लूंगा मैं इस की." कहते हुए आनंद के हाथ पालने में पड़ी बेटी की ओर बढ़े.
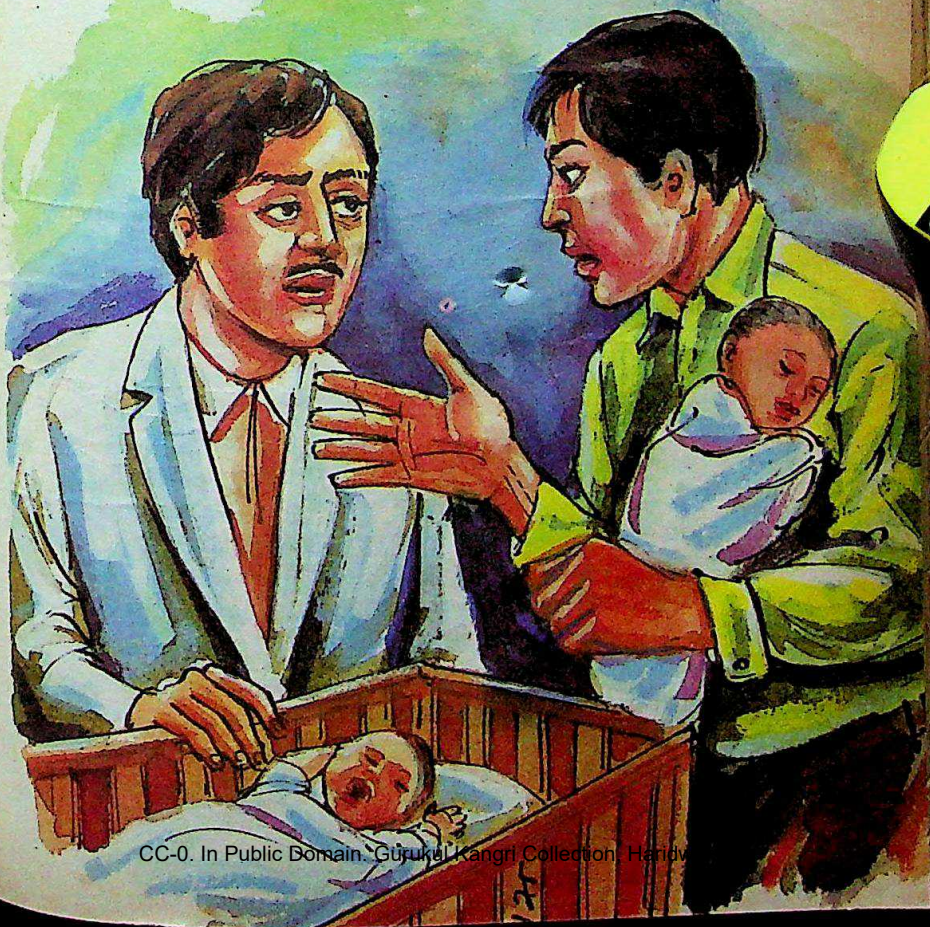
पत्नी को अत्यंत गंभीर अवस्था में ले कर हस्पताल पहुंचा था. [illegible] बाद डाक्टर रघुनंदन लगभग चीख पड़े थे.

"तुम ने बहुत देर कर दी है, आनंद. अब तो सब आपरेशन पर निर्भर है." और डाक्टर ने जल्दी से आपरेशन के प्रबंध का निर्देश दे दिया था.

"सब ठीक हो जाएगा."

आनंद के कंधे पर हौसला बांधने का हाथ रख कर डाक्टर रघुनंदन रात के लगभग 12 बजे आपरेशन कक्ष में दाखिल हुए. लगभग तीन घंटे तक आनंद अत्यंत तनावपूर्ण मुद्रा में इधर से उधर और उधर से इधर टहलता रहा.

"मुझे अफसोस है, आनंद. तुम्हारी पत्नी को मैं बचा नहीं सका." आनंद पथराई दृष्टि से डाक्टर को देख रहा था, "दो जुड़वां बच्चों को जन्म दे कर वह चल बसी."

"बेटे हैं न?" अपनी पूरी ताकत लगा कर आनंद ने अपने कंठ से ये शब्द निकाले थे.

"एक बेटा और एक प्यारी सी गुड़िया." डा. रघुनंदन को आनंद का यह प्रश्न बड़ा अटपटा लगा था.

"लेकिन..." डाक्टर रघुनंदन कुछ कहतेकहते एकाएक रुक गए थे.

"लेकिन क्या, डाक्टर?" आनंद अधीर हो चला था.

"तुम मेरे साथ दफ्तर में आओ, आनंद."

और दोनों चल पड़े.

"क्या बात है, डाक्टर?" दफ्तर में पहुंच कर आनंद ने पूछा था. उस की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी.

"पहले शांत हो जाओ," कहते हुए डाक्टर ने थरमस में से एक प्याला चाय का भर कर आनंद की ओर बढ़ा दिया था, "मैं जानता हूं कि इस समय तुम पत्नी की मृत्यु से अत्यधिक दुखी हो, पर आनंद, जाने वाली तो जा चुकी है. और अब उन के बारे में सोचो, जो जन्म ले चुके हैं."

आनंद कुछ न समझा. वह उलझी दृष्टि से डाक्टर को देख रहा था.

"धीरज से सुनो, जो मैं तुम्हें बता रहा हूं," रघुनंदन, आनंद की मनःस्थिति भलीभांति समझ रहे थे, "तुम्हारे दोनों बच्चे विकलांग हैं."

आनंद पर तो जैसे वज्र टूट पड़ा. मानो एक भारी पत्थर डाक्टर ने आनंद के सिर पर दे मारा हो.

"घबराओ नहीं, आनंद." रघुनंदन ने आनंद को ढाढ़स बंधाया, "तुम्हारा बेटा तो एकदो सालों के इलाज के बाद बिलकुल ठीक हो जाएगा, पर बेटी की टांग में बहुत ज्यादा खराबी है. आज की चिकित्सा में उस का कोई इलाज नहीं है. मैं तो क्या, दुनिया का कोई भी डाक्टर इस की गारंटी नहीं दे सकता. लेकिन फिर भी मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा."

डा. रघुनंदन अपनी कुरसी से उठ कर आनंद के पास आए और उस के कंधों पर अपने सांत्वना के हाथ रख दिए.

दुख और पीड़ा से जलता आनंद का दिल पिघल कर आंखों के रास्ते बह चला. क्षण भर को कलेजा मुंह को आ गया और आनंद फूटफूट कर रोने लगा, "यह क्या हो गया, डाक्टर. एक ही रात में मेरी जिंदगी क्या से क्या हो गई," ठंड से भरी वह रात आनंद के चीत्कार से कंपकंपा उठी थी. उस रात से भी कहीं अधिक अंधकार आनंद को अपने जीवन में घुलता प्रतीत हो रहा था, "एक तो लड़की, वह भी अपाहिज. जान ले लूंगा मैं उस की. जिंदा नहीं छोड़ूंगा... मैं उसे..." आनंद जोरजोर से चीख रहा था.

"शांत हो जाओ, आनंद. इस समय तुम नहीं जानते तुम क्या कह रहे हो," रघुनंदन ने चिकित्सक सुलभ अंदाज में कहा, "जाओ, आनंद, दिन निकलने को है. जा कर अपनी पत्नी के अंतिम संस्कार का प्रबंध करो. उस के बाद थोड़ा आराम कर के शाम को मुझ से मिलना, आज तुम्हारे बच्चे हमारी देखरेख में ही रहेंगे." डाक्टर रघुनंदन आनंद की बातों से सचमुच

"अनु, मैं तुम से शादी करना चाहता हूं. यह मजाक नहीं. मेरी जिंदगी का सवाल है." निखिल अनु का हाथ अपने हाथ में ले कर विश्वास दिला रहा था.

आशंकित हो चले थे.

"आओ, आओ, आनंद. मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था," डा. रघुनंदन के अभिवादन के उत्तर में आनंद के मुरझाए मुख पर मुसकान की हलकी सी रेखा खिंची और वह पास पड़ी कुरसी पर निर्जीव सा बैठ गया. डूबते सूरज से भी कहीं अधिक लाली आनंद की आंखों में झलक रही थी. सायंकाल की पीलिमा आनंद के चेहरे पर उतर आई थी.

"मुझे लगता है कि अपने बच्चों को

देखने की उत्सुकता में तुम एक पल भी नहीं सोए." सब कुछ समझते हुए भी डा. रघुनंदन गलत कारण बता रहे थे. मनोवैज्ञानिक रूप से वह आनंद का ध्यान दुखों से परे ले जाने की कोशिश कर रहे थे.

"सिस्टर कृष्णा, आनंद के बच्चों को ले आओ," पास ही कार्यरत एक नर्स को डाक्टर ने निर्देश दिया.

कुछ ही देर में एक पालने में दो सुंदर बच्चों के साथ कृष्णा आ गई. "लीजिए, आनंदजी यह है आप का बेटा और यह प्यारी सी गुड़िया," कृष्णा ने टूटीफूटी हिंदी में कहा.

आनंद ने धीरे से अपने बेटे को उठाया और तेजी से सीने से लगा लिया. वह पल भर को अपनी आंखें मूंद कर इस दुनिया के हर गम को भूल गया था. पालने में पड़ी बच्ची के रोने की आवाज से आनंद उस की ओर आकर्षित हुआ.

"लो भई, यह शिकायत कर रही है तुम से कि अब जल्दी से मुझे भी अपनी गोद में उठा लो." डा. रघुनंदन सहज भाव से आनंद के मन में पितृत्व की भावनाओं का संचार करने का यत्न कर रहे थे, परंतु आनंद की भावनाएं तो पथरा चुकी थीं.

"नहीं डाक्टर, नहीं," आनंद चीख पड़ा, "यह तो मेरी जिंदगी पर एक बदनुमा दाग है. इसे मेरा प्यार कभी नहीं मिल सकता. पैदा होते ही मां को खा गई और अब बाप को तिलतिल मारने को खुद जिंदा है," कहतेकहते आनंद का हाथ गला घोंटने के लिए अपनी बेटी की ओर बढ़ा.

उसी पल डा. रघुनंदन ने उस का हाथ झटक कर परे कर दिया, "पागल हो गए हो, आनंद. होश में आओ. होनी के आगे किस का जोर चला है? इस में इस बेचारी का क्या दोष है?"

डा. रघुनंदन ने बड़ी मुशकिल से स्वयं को नियंत्रित किया, "जरा सोचो आनंद, हो सकता है, तुम्हारी यह बेटी कल इतनी समझदार और होशियार बने कि तुम सारी दुनिया में गर्व से सिर ऊंचा कर के कह सको, यह मेरी बेटी है."

"ऐसा कुछ नहीं होगा, डाक्टर, तुम भूल रहे हो कि यह लड़की है," आवेश में भरा आनंद शिष्टता के संबोधन को भी भूल गया था, "वह भी एक अपाहिज लड़की है. अगर मैं चौराहे पर खड़ा हो कर खुद को बेच भी दूंगा तो भी कोई इस की डोली नहीं उठाएगा. मैं वह दिन कभी नहीं आने दूंगा, कभी नहीं..."

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, आनंद. लानत है तुम पर. तुम आज भी लड़की को शादी और दहेज के संदर्भ में देखते हो. दुनिया चांद पर जा पहुंची है और तुम धरती से भी नीचे एक गहरे दलदल में फंसे हो." डा. रघुनंदन आनंद को किसी भी तरह समझाने का प्रयास कर रहे थे, "और अगर तुम इसे अपनी पत्नी की मौत का कारण मानते हो तो यह बेटा भी तो इस के साथ ही पैदा हुआ है. जब अपनी बेटी को मारना चाहते हो तो इसे ही क्यों जिंदा रख रहे हो?" डाक्टर क्रोध से धधक उठे थे.

"यह तो मेरे बुढ़ापे का सहारा बनेगा, डाक्टर," कह कर आनंद ने अपने बेटे को सीने से चिपटा लिया.

"स्वार्थी, मूर्ख, उसी को अपने सीने से लगा रहे हो, जो कल तुम्हें आग के हवाले कर देगा. और उसी को मार रहे हो, जिस के एक सुख पर तुम्हें सौ सुखों की शांति मिलेगी."

"तुम अपनी इन किताबी बातों से मेरा इरादा नहीं बदल सकते, डाक्टर. और फिर तुम मेरी निजी जिंदगी में दखल नहीं दे सकते. तुम्हारी फीस मैं ने काउंटर पर अदा कर दी है. तुम्हें इस लड़की के लिए कोई कष्ट नहीं करना होगा. मैं खुद ही इसे किसी अनाथालय में फेंक आऊंगा?" आनंद ने बड़ी नफरत से अपनी बेटी की ओर हाथ बढ़ा दिए.

"ठहरो, आनंद. मैं तुम्हारे क्षणिक आवेश में इस का जीवन बरबाद नहीं होने

घर जाओ, और ठंडे दिमाग से सोचो. मुझे पूरा विश्वास है कि इस के स्नेह में बंधे कल तुम खुद आ कर इसे ले जाओगे.''

और इसी तरह दिन सालों में बदलते चले गए और साल दिनों की तरह गुजरते चले गए. उस के बाद आनंद फिर कभी अपनी बेटी को लेने नहीं आया. डा. रघुनंदन ने जगहजगह आनंद की खोज की. पर वह तो रातोंरात शहर छोड़ कर जाने कहां चला गया था. डा. रघुनंदन की देखरेख में अस्पताल की नर्सों के हाथों ही में आनंद की बेटी अनु पल कर बड़ी हो रही थी. उसे अनु नाम भी डा. रघुनंदन ने ही दिया था.

अस्पताल के न्यास से आज्ञा ले कर वह अनु के इलाज के शोध कार्यों में लग गए. कई वर्षों की कड़ी मेहनत और खोजबीन के बाद डा. रघुनंदन ने अनु को अपने पैरों पर खड़ा कर दिया. शारीरिक और आर्थिक दोनों रूप से.

''मुबारक हो, चाची,'' अनु ने घर में कदम रखते ही डा. रघुनंदन की पत्नी शीला को झुक कर अभिवादन करते हुए कहा.

शीला ने अनु को आलिंगन में भर कर उस का माथा चूम लिया, ''कितनी देर लगा दी. सब तुम्हारा ही इंतजार कर रहे हैं.''

''हां, भई, अब तो अनु बहुत व्यस्त डाक्टर हो गई है, डाक्टर अनु, एम.डी. गायनाकालोजिस्ट,'' रघुनंदन ने रूठे बच्चे के से स्वर में कहा.

''अरे, मेरे अच्छे डाक्टर चाचा. अगर मैं आप की डिगरियां गिनने लग गई तो यह चाय बिलकुल ठंडी हो जाएगी.''

सब ठहाका लगा कर हंस पड़े और अनु मेज पर चाय बनाने बैठ गई. अनु ने चाय का प्याला डा. रघुनंदन की ओर बढ़ाते हुए कहा, ''लीजिए, डाक्टर चाचा.''

''खुद इतनी बड़ी डाक्टर हो गई, पर बच्चों की तरह डाक्टर चाचा कहना नहीं छोड़ेगी.'' पास बैठी शीला ने चुटकी ली.

''मेरे तो जीवन का आरंभ ही इन्हीं दो शब्दों से हुआ था, चाची. मैं इन्हें कैसे छोड़

तूफां

ख्वाब आंखों में पल रहे होंगे,
दिल में तूफां मचल रहे होंगे,
तुम नहा लोगे रंगोखुशबू में,
हम शरारों में जल रहे होंगे.

—यश खन्ना 'नीर'

सकती हूं?'' चाय में चीनी डालते हुए अनु का हाथ थम सा गया था, ''मरते समय भी मेरे जीवन के अंतिम शब्द यही होंगे, इतना निश्चित है.''

''लो, हम तो आज तक इन्हें डाक्टर ही समझते रहे और यह निकली दार्शनिक,'' डा. रघुनंदन के बेटे ने सब को हंसा कर माहौल में हलकाफुलकापन भर दिया था.

''मुझे नाज है अपनी इस बेटी पर,'' डा. रघुनंदन ने चाय की चुसकी लेते हुए कहा, ''और अब, सब लोग जिगर थाम कर सुनो. एक बहुत बड़ी खुशखबरी मैं आप को सुनाने जा रहा हूं.''

सब प्रश्नसूचक दृष्टि से उन्हें देख रहे थे.

''अनु हमारी पूरी संस्था की तरफ से डाक्टरों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए चुनी गई है,'' डा. रघुनंदन ने उद्घोषकों जैसे अंदाज में कहा.

सब ने तालियां बजा कर इस घोषणा का स्वागत किया, ''यह लो अनु, कल सुबह की पहली उड़ान से ही तुम और निखिल

मानवता

मानवता के सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठ उपहारों पर किसी जाति अथवा देश का एकाधिपत्य नहीं हो सकता. न तो इस का विस्तार क्षेत्र सीमित हो सकता है और न वह कृपण का भूमिगत धन ही बन सकता है.

रवींद्र

न्यूयार्क जा रहे हो," हवाई जहाज का टिकट अनु की ओर बढ़ाते हुए डा. रघुनंदन ने कहा.

पकड़तेपकड़ते अनु के हाथों से टिकट छूट कर फर्श पर जा गिरा. निखिल का नाम सुनते ही पूरे कमरे में एक अजीब सा सन्नाटा छा गया, "डाक्टर चाचा, जब आप को मालूम है कि मैं निखिल के साथ..."

"तुम डा. निखिल के साथ जाने से इनकार नहीं करोगी," डा. रघुनंदन का स्वर आदेशात्मक था, "और फिर उस के जाने का निर्णय पूरे मिशन का है."

वह स्वयं साफ बच निकले थे. हालांकि हस्पताल के निदेशक होने के नाते उन्होंने निखिल को अनु के साथ भेजने की भरपूर सिफारिश की थी. अनु को सब कुछ समझते हुए भी सिर झुका कर उसे स्वीकार करना पड़ रहा था.

"अनु," डा. रघुनंदन ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "बेटी, निखिल अच्छा लड़का है. तुम भी तो उसे प्यार करती हो. जब वह तुम से शादी करने को तैयार है तो..."

"अपने स्वाभिमान को दफन कर के उस पर अपनी भौतिक खुशियों का महल बनाना आप ने मुझे कभी नहीं सिखाया."

"मैं स्वयं जा कर निखिल के पिता को समझाऊंगा. मुझे यकीन है कि वह मान जाएंगे. और तुम तो शुरू से मेरी ही बेटी हो." डा. रघुनंदन अनु को समझाने का हर यत्न कर रहे थे. उन के अंतिम वाक्य पर तो अनु जैसे अंदर तक कहीं भीग सी गई थी.

"डाक्टर चाचा, आप को मैं फरिश्ता नहीं, इनसान कहने में गर्व अनुभव करती हूं क्योंकि यह दुनिया इनसानों की नहीं शैतानों की है. यह दुनिया, यह समाज शारीरिक श्रोत के परिणाम को तो संतान कह कर उसे सम्मान दे सकता है, लेकिन प्रेम और भावनाओं से जनित संतान आज भी इन की दृष्टि में परिभाषाहीन है."

डा. रघुनंदन हैरान से अनु के चेहरे की ओर देख रहे थे. वह सोच रहे थे, 'दुनिया को इतनी भीतर तक देख पाने की दृष्टि अनु कहां से पा गई.'

"अच्छा चाचा, अब मैं चलती हूं."

और अनु खड़ी हो गई. आंसू का एक कतरा गाल पर ढुलकने से पहले ही उस ने पोंछ डाला था.

"इतनी रात को कहां जाएगी, बेटी आज यहीं रुक जा," शीला ने अनु का सिर अपने कंधे से लगाते हुए कहा. उत्तर में अनु ने आंखें नीचे किए ही सिर हिला दिया.

उस रात अनु की आंखों में नींद नहीं थी. वह रहरह कर सोचती थी, "जिस निखिल का साथ पाने को मैं सदा बेचैन रहती थी, आज उसी के साथ जाने से मैं इनकार कर रही हूं. मुझे आज भी याद है मेडिकल कालिज के वे दिन, जब मैं कभीकभी शाम को निखिल को जबरदस्ती घुमाने ले जाती थी और निखिल जब छात्रावास में ही बैठ कर पढ़ाई करने की बात कहता था तो मैं बड़ी चंचलता से उसे मना लेती थी."

"डाक्टर बन कर तो सब को रोज शाम को सैर करने की सलाह दोगे और खुद कभीकभी भी..."

"चलो, बाबा, चलो," किताब बंद करते हुए निखिल कहता, "भला तुम से भी बातों में जीत सका है कोई."

और इस तरह साथ पढ़तेघूमते निखिल और अनु को पता भी नहीं चल पाया था कि कब वे एकदूसरे से प्रेम करने लगे हैं. संयोगवश निखिल को भी अनु वाले हस्पताल में ही नौकरी मिल गई थी. वहां भी दोनों एकसाथ बीमार मानवता की सेवा में जुट गए थे.

एक दिन बातों ही बातों में निखिल ने

अनु के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखा था. और दो दिन बाद ही वह अपने मांबाप के साथ डा. रघुनंदन के घर पहुंच गया था.

उस दिन डा. रघुनंदन की खुशी का ठिकाना नहीं था. ऐसे समय में की जाने वाली औपचारिकता को पूरी तरह निभाया गया. और फिर बातों ही बातों में निखिल के पिता ने पूछ लिया "अनु के मातापिता से आप हमें कब मिलवा रहे हैं?"

"अनु की मां का तो उस के जन्म के समय ही देहांत हो गया था और पिता..." इस वाक्य को पूरा करने का साहस डा. रघुनंदन में नहीं था. अनु के जीवन से जुड़ा यह प्रश्न कभी उत्तरित नहीं हो पाया था. फिर रघुनंदन ने अनु से कहा था, "अनु, तुम अंदर जाओ."

और अनु चुपचाप उठ कर अंदर चली गई थी.

"क्या अनु के पिता भी इस दुनिया में..."

"नहीं सुमन साहब, ऐसा नहीं हो सकता."

"डाक्टर साहब, आप क्या कह रहे हैं? जरा साफसाफ समझाइए." सुमन उत्सुक हो रहे थे.

"बस, आप यह समझ लीजिए कि अनु

गायब हो रहा है सोना

देश में तेजी से कम हो रहे स्वर्ण भंडार की स्थिति को देखते हुए सरकार काफी चिंतित है. सरकारी सूत्रों के अनुसार पिछले कुछ वर्षों से स्वर्ण खदानों से निकलने वाले सोने की मात्रा निरंतर कम होती जा रही है. इन में कुछ खानें ऐसी भी हैं जो बंद होने के कगार पर हैं. 100 वर्षों से अधिक समय से इन से सोना निकाला जा रहा है.

स्वर्ण खदानों की उत्पादन क्षमता कम होने के दूसरे कारण भी हैं, जैसे बिजली व पानी की अपर्याप्त पूर्ति, खनिज भंडार में कमी, महंगाई बढ़ने के साथसाथ सोने की मात्रा में कमी, वातावरण के प्रभाव और प्राकृतिक विपदाओं के कारण चट्टानों का टूटना आदि. इन सब बातों का सोने के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है. सोने की नई खानें न मिलने के कारण संकट और भी बढ़ गया. सब से बड़ी चिंता इसी बात को ले कर हो रही है कि यदि स्वर्ण की नई खानें नहीं मिलीं तो निकट भविष्य में 'सोने का अकाल' पड़ सकता है.

सरकार ने सोने के इस संकट की वास्तविकता कई साल पहले महसूस कर ली थी. इसलिए सोने के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कई योजनाएं तैयार की गईं. सोने की नई खदानों की खोज, उन की खुदाई और उत्पादन की नई संभावनाओं का पता लगाया जा रहा है. कुछ नदियों की तलछट, नदी तल पर पाई जाने वाली चट्टानों और उन की धाराओं के साथ बह कर आई हुई बालू में सोने के कण पाए जाते हैं.

हाल ही की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि हिमाचल प्रदेश की शिवालिक पहाड़ियों (सिरमूर जिले में) से हो कर बहने वाली नदियों की तलछट में 0.1 से 7.8 ग्राम प्रति टन सोने के कण मिलते हैं. पंजाब के रोपड़ जिले की नदियों में भी सर्वेक्षण के बाद ऐसा पाया गया. देश के अनेक स्थानों में भारतीय खनिज अन्वेषण निगम और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण इस प्रकार के प्रयासों में लगे हुए हैं. मगर अभी तक नदियों की बालू से सोना निकालने की तकनीक आर्थिक दृष्टि से उपादेय सिद्ध नहीं हुई है. इस की उपादेयता साबित होने के बाद ही स्वर्ण उत्पादन की इस संभावना के विषय में कुछ कहा जा सकता है.

एक अच्छे खानदान में ही जनमी हुई लड़की है और अब वह मेरी बेटी है. बचपन से ही मेरी देखरेख में पलीबढ़ी है."

"क्या समाज में रिश्ते इस तरह जोड़े जाते हैं?" सुमन उसी पुराने घिसेपिटे इतिहास को हर रूढ़िवादी बाप की तरह दोहराने पर उतारू थे, "आप पढ़ेलिखे हैं, काबिल हैं, इसी लिए हम आप को इज्जत देते हैं. लेकिन इस का अर्थ यह नहीं है कि आप रास्ते के किसी भी पत्थर को उठा कर उसे जबरदस्ती हीरा प्रमाणित करें और हमारे खानदान की अंगूठी में सजा दें."

"सुमन साहब, अनु एक पढ़ीलिखी होनहार लड़की है. मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि आप उसे बहू बना कर गर्व का अनुभव कर सकेंगे," डा. रघुनंदन के स्वर में पितृत्व झलक रहा था.

"जहां तक पढ़ीलिखी होने का प्रश्न है, हमारे खानदान ने कभी औरत की कमाई पर भरोसा नहीं किया. रही गर्व की बात तो वह तो अच्छे खानदान से रिश्ता जोड़ कर ही किया जा सकता है."

"चलो, निखिल."

और इस तरह वे कोरा जवाब दे कर चलते बने और डा. रघुनंदन उन का मुंह देखते रह गए.

अभी पिछले दिन ही निखिल से अनु की मुलाकात हुई थी.

"कैसी हो अनु?" निखिल ने पहल की थी.

"बहुत अच्छी हूं, डाक्टर," अनु ने रूखा सा जवाब दिया था, "मुझे हस्पताल में देख कर हैरान हो रहे हो न. तुम सोचते होगे कि अनु कहीं घर में पड़ी सुबक रही होगी, क्यों?"

"उफ, अनु. तुम्हारी इसी वीरप्रकृति पर तो हम मरते हैं." निखिल जैसे अनु को मना रहा था.

"हटो निखिल, मुझे बहुत काम पड़ा है."

"अनु, मैं तुम से शादी करना चाहता

एन् फ्रेंच हेयर रिमूवर
नर्माई से बालों की सफ़ाई
एन् फ्रेंच क्रीम हेयर रिमूवर की नर्माई और सुविधाजनक सफ़ाई आज़मा लीजिए और अब अलविदा कीजिए रेज़र से कटने छिलने और वैक्सिंग से होनेवाली असुविधा और त्वचा की तकलीफ़ को.
एन् फ्रेंच में मौजूद विशेष बेबी आयल आपकी त्वचा मुलायम बनाए. और एन् फ्रेंच त्वचा की तह में जाए, बड़ी नर्माई से अनचाहे बालों की सफ़ाई कर दिखाए, आपकी त्वचा हफ़्ता-ब-हफ़्ता इतनी कोमल बनाए, जिसे बार बार छूने को जी चाहे.
एन् फ्रेंच क्रीम हेयर रिमूवर प्रयोग करने में कितनी सुविधाजनक है. आप इसे बगलों, बाहों और पांवों पर इस्तेमाल कर सकती हैं... आप जब भी चाहें.
तीन भीनी भीनी सुगंधों में से अपनी मनपसंद चुनिए. फ़्लोरल, लेमन और संदल और पाइए अधिक साफ़ और अधिक ख़ूबसूरत त्वचा.
FLORAL 40 g
Anne French
CREME HAIR REMOVER
लेमन और संदल सुगंधों में भी.
एन् फ्रेंच क्रीम हेयर रिमूवर
अंग अंग सफ़ाई और ख़ूबसूरती का एहसास
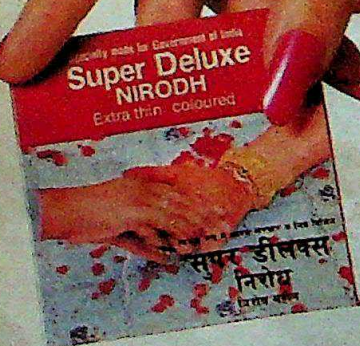
हूं." निखिल गंभीर हो चला था.

"यह मजाक तुम मुझ से पहले भी कर चुके हो."

"यह मजाक नहीं है, मेरी जिंदगी का सवाल है यह." निखिल अनु का हाथ अपने हाथ में ले कर विश्वास दिला रहा था.

"मजाक नहीं तो और क्या है," अनु ने फौरन हाथ झटक दिया, "आज तुम उसे शादी की बात कह रहे हो, जिसे कल तुम्हारे पिताजी ने रास्ते का पत्थर कह कर ठोकर मार दी थी."

"यह तो अपनेअपने विश्वास की बात है. जिसे मेरे पिता पत्थर कहते हैं, मैं उसे प्यार मानता हूं और उसे अपने दिल में स्थान देना चाहता हूं," निखिल की आंखें प्रीतिभावना से चमक उठी थीं. उस ने निर्णायक स्वर में कहा था, "मैं तुम से शादी करूंगा, अभी और इसी वक्त. हम अदालत में जा कर शादी करेंगे."

"नहीं निखिल, ऐसा कभी नहीं होगा. अगर तुम्हें शादी करनी है तो तुम्हारे घर वालों को मुझे सम्मानपूर्वक बहू बना कर यहां से ले जाना होगा. मैं अपने प्रेम को कभी अपनी कमजोरी नहीं बनने दूंगी. मैं एक जीतीजागती इनसान हूं, कोई भोग की वस्तु नहीं.

अपने जीवन को विलासपूर्ण बनाने के लिए जब किसी का जी चाहा छोड़ दिया और जब जी चाहा किसी दूसरे ने उठा लिया, यह जीवन मेरा अपना है. पिता और प्रेमी के बीच उछलती गेंद नहीं हूं मैं. कम से कम अपना अंत वैसा नहीं होने दूंगी, जैसा मेरा आरंभ था, क्योंकि अब मैं पूरे होश में हूं." अनु का चेहरा अंगारे की तरह लाल हो रहा था.

"लेकिन अनु, अपने इस क्रोध के उफनते हुए लावे में मुझे क्यों झुलसा देने पर उतारू हो. पिताजी ऐसे मानेंगे नहीं और तुम..." निखिल जैसे अनु के निर्णय से छटपटा उठा था, "अनु मुझे विश्वास है कि शादी के बाद पिताजी तुम्हें बहू के रूप में अवश्य स्वीकार कर लेंगे. इस से उन का भी मान रह जाएगा."

"मैं तुम्हारे प्यार की कद्र करती हूं, निखिल. तुम्हारे पिता की भी इज्जत करती हूं, पर उन के पितृदंभ पर मैं अपने नारीत्व की बलि नहीं चढ़ा सकती. मुझे क्षमा करना." अनु के चेहरे का रोमरोम अहंभाव से ओतप्रोत हो उठा था.

"अनु, मैं मर जाऊंगा तुम्हारे बिना." निखिल विह्वल हो उठा था.

परंतु उस दिन अनु का घायल हृदय समाज के प्रत्येक प्राणी को तराजू के एक ही पलड़े पर बैठाए हुए था, "नहीं, तुम जिओगे. अभी क्षण भर में तुम में पुरुष होने का दंभ तुम से कह उठेगा कि किसी हालत में भी नारी का अहं ऊपर नहीं उठना चाहिए. और तुम... उस के वशीभूत हो कर उसे लताड़ते हुए एक सुखदतर जीवन जीने का प्रण कर लोगे. फिर तुम और तुम्हारे पिता खुशी से उठा लाओगे एक ऐसी औरत को जो तुम्हारे पौरुष के बोझ तले तिलतिल कर होम हो जाएगी. और तब तुम उस के सड़े हुए जीवन की दुर्गंध में अपनी मर्दानगी की खुशबू ले कर अपना सीना फुला कर समाज में ऐलान करोगे कि तुम एक पुरुष हो."

और अनु बिफरती हुई निखिल को एक किनारे कर के वहां से उठ कर चली गई थी.

यह सब सोचतेसोचते अनु छटपटा उठी थी. उस की सांसें फूलने लगी थीं. उस सर्द रात का एकएक पल, मानो उस के कंधों पर जम सा गया था. बोझ उसे अकेले ही उठाना पड़ रहा था.

"ट्रिनट्रिन..."

ड्राइंगरूम में पड़े फोन की घंटी बजने लगी. अनु की तंद्रा टूटी, 'इतनी रात गए किस का फोन हो सकता है?'

लगभग एक मिनट तक घंटी बजती रही. 'शायद चाचा सो रहे होंगे," यह सोच कर अनु उठ कर ड्राइंगरूम तक पहुंची. तभी डा. रघुनंदन अपने कमरे से उठ कर फोन तक पहुंच गए. उन की आंखें उनींदी थीं.

"मैं देखता हूं," कह कर उन्होंने फोन

आप के पाँव का जाना पहचाना सुखद अहसास
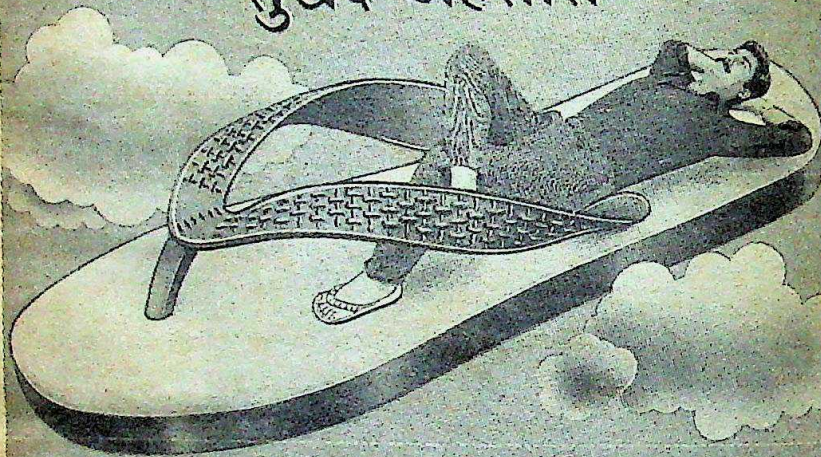
हवाई चप्पल व कैनवेस शूज़

रिलैक्सो रबर प्राईवेट लिमिटेड

308/8, शाहजादा बाग पुरानी रोहतक रोड़ दिल्ली-110035 फोन: 5416863, 501521.

उठा लिया. और दूसरी तरफ की बात सुन कर बोले, "डा. विशाल से कहो, उसे देखें. मैं अभी पहुंच रहा हूं."

डा. रघुनंदन ने चौंगा रख दिया.

"किस का फोन था," अनु ने सरसरी तौर पर पूछ लिया. डाक्टर होने के नाते उस के लिए इस प्रकार आधी रात को बुलावे का फोन आना कोई विशेष बात नहीं थी.

"हस्पताल से था. किसी आदमी ने रेलगाड़ी के नीचे आ कर आत्महत्या करने की कोशिश की है. केस बहुत गंभीर है. शायद आपरेशन करना पड़े, सुदीप कह रहा था कि चेहरा भी पहचाना नहीं जा रहा है. काफी चोट पहुंची है." रघुनंदन ने जल्दीजल्दी बताया. अनु का रोमरोम अजीबअजीब आशंकाओं से भर उठा. इतनी ठंड में भी वह पसीने से तरबतर हो गई. क्षण भर को वह अचेतन सी हो गई थी.

"मैं भी चलूंगी आप के साथ," अनु घबराए से स्वर में बोली.

"इतनी रात गए तुम कहां जाओगी? फिर सुबह की उड़ान भी पकड़नी है. तुम आराम करो," डा. रघुनंदन ने गाउन कसते हुए कहा.

अनु पास खड़े सोफे पर निर्जीव सी गिर गई, 'नहीं, निखिल इतना कमजोर नहीं हो सकता. मैं उसे अच्छी तरह जानती हूं,' उस ने अपनेआप से कहा.

पर यह उसे जाने क्या हुआ जा रहा था. जैसे रगरग में चिनगारियां फूट रही थीं. इतने में रात के सन्नाटे में गैरेज से निकलती कार की आवाज से उस का ध्यान भंग हुआ. अनु उठ कर खड़ी हो गई और धीरेधीरे स्वयं को ढोती शयनकक्ष की ओर ले गई.

पलंग पर अपनी काया को बिछा देने के बाद भी आंखें पल भर के लिए बंद न हुई थीं. उस की नींद तो गायब हो चुकी थी. उस का जी चाहता था कि उसी वक्त निखिल के घर फोन कर के उस के सुस्वस्थ होने का समाचार ले. पर उस का अहं उसे रोक देता था. अगले ही पल वह स्वयं को कोसती 'निखिल मुझ से इतना प्यार करता है और मैं उसे कल क्या क्या खरीखोटी सुनाती रही.'

तभी वह स्वयं को समझाने लग जाती. इसी ऊहापोह में एक बार फिर फोन की घंटी बज उठी. वह विद्युत गति से भाग कर फोन के पास पहुंची. चौंगा उठातेउठाते उस का हाथ रुक गया. एक अनजान भय से वह कांप उठी. अपने हृदय की एकएक धड़कन उसे लोहे पर हथौड़े की चोट की भांति सुनाई दे रही थी. बड़ी मुशकिल से अनु ने चौंगा उठा कर कान के करीब तक पहुंचा दिया.

"हैलो," अनु ने सारी ताकत एकत्रित कर के एक शब्द बोला था.

उधर से डा. रघुनंदन का स्वर उभरा था, "अनु, सुबह हवाई अड्डे जाने से पहले हस्पताल में मुझ से मिल कर जाना."

"क्या बात है, चाचाजी?" अनु की आवाज और सारा शरीर कांप रहा था. उसे लग रहा था कि अभी गिर जाएगी.

"सुबह तुम से एक जरूरी बात करनी है. मैं ने अभीअभी निखिल को भी फोन कर के हस्पताल में ही चले आने को कह दिया है."

अनु ने उसी क्षण फोन बंद कर दिया. उस की सांसें फूल रही थीं. कुछ क्षण वह अपना सिर हथेलियों पर टिकाए पास ही की कुरसी पर बैठी रही. इस प्रक्रिया में उस के लंबे घने केशों ने उस का पूरा चेहरा ढक लिया था. उसे लगा कि मीलों बेतहाशा भागने के बाद किसी ने उसे दो बूंद पानी पिला दिया हो.

मानसिक तनाव से मुक्त होती अनु को अब नींद आने का आभास हो रहा था. तभी अपने बालों को पीछे की ओर समेटती हुई अनु अपने कमरे की ओर बढ़ गई.

"सुप्रभात, डाक्टर चाचा," कहते हुए अनु ने डा. रघुनंदन के कमरे में प्रवेश किया.

उन्होंने आगे बढ़ कर अनु का चेहरा अपने हाथों में ले लिया और उस का माथा चूम लिया. फिर उसे स्वयं कुरसी पर बैठाया. अपना स्थान ग्रहण कर के डा. रघुनंदन अनु को कुछ क्षण अपलक देखते रहे.

"तू सचमुच इतनी बड़ी हो गई है, अनु, मुझे तो बीते कल की बात लगती है. जब तू नन्ही सी मेरी गोदी में बैठ कर तरहतरह की जिदें करती थी. डाक्टर चाचा, मुझे चाकलेट चाहिए, मुझे हवाई जहाज..." और डा. रघुनंदन की आवाज भर्रा उठी थी. उन्होंने अपनी कुरसी घुमा कर आंखें पोंछ डाली थीं.

अनु उठ कर डा. रघुनंदन की कुरसी के पास खड़ी हो गई थी, "मुझे मालूम है कि मैं पहली बार इतनी दूर सात समंदर पार जा रही हूं और आप उदास हो रहे हैं. मैं कोई हमेशा के लिए थोड़े ही जा रही हूं."

"तेरी मंजिल मिल गई है. और कौन जाने तू बीते हुए कल को मुड़ कर भी देखे." डा. रघुनंदन आज शायद पहली बार इतने भावुक हो रहे थे.

"यह आज आप कैसी बातें कर रहे हैं? मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा" अनु हैरान सी उन्हें देख रही थी.

"डाक्टर, रात वाले रोगी को होश आ रहा है," सिस्टर कृष्णा ने डा. रघुनंदन को उन के आदेशानुसार उसी समय आ कर सूचना दी.

"चलो अनु, देखें." डा. रघुनंदन अनु के साथ चल पड़े थे.

रोगी का पूरा शरीर पट्टियों से ढका हुआ था. पैर पर प्लास्टर चढ़ा था. माथे पर टेप लगा कर जख्म को ढक दिया गया था. रोगी के पास रखे स्टैंड से लटकी बोतल द्वारा उसे ग्लूकोस चढ़ रहा था. चेहरे को हिलाने का प्रयास करते हुए, कराहने की ध्वनि के साथ, नेत्र खोलने का यत्न कुछ क्षण चलता रहा.

आखिरकार उस की आधी आंखें खुलीं और आधी बंद रह गईं. अधखुली आंखों में सामने खड़े व्यक्ति का अक्स उभरा. आंखें फटी की फटी रह गईं. माथे पर जोर देते हुए उस व्यक्ति के होंठ फड़फड़ाए, "डा...क्टर रघुनंदन, आप...?"

"शुक्र है, तुम बच गए," डा. रघुनंदन ने खुश हो कर जवाब दिया.

"मुझे क्यों बचाया? मुझ जैसे पापी का मर जाना ही अच्छा था." रोगी के स्वर में छटपटाहट स्पष्ट विद्यमान थी.

"ऐसा नहीं कहते, आत्महत्या तो कायरों का कृत्य है," डा. रघुनंदन ने उसे समझाया, "इसे पहचानते हो?"

अनु ने फौरन मुड़ कर देखा, पर कमरे में तो उस के अलावा कोई नहीं था. वह

हतप्रभ सी उन का वार्तालाप सुन रही थी. तभी डा. रघुनंदन ने अपने दोनों हाथ अनु के कंधों पर रख दिए, "आनंद, यह रही तुम्हारी अमानत तुम्हारी बेटी."

अनु को जैसे काटो तो खून नहीं बदन में. पल भर को वह जड़ सी हो गई. अवाक सी आनंद की ओर ताक रही थी.

"अनु, यह तुम्हारे पिता हैं. इन्हें नमस्कार करो, बेटी, मैं ने इन के बारे में तुम्हें आज तक कुछ नहीं बताया," डा. रघुनंदन ने हिम्मत जुटा कर कहा.

अनु अचल सी खड़ी रही.

"अनु!" डा. रघुनंदन ने उसे जोर से पुकारते हुए झिंझोड़ दिया. अनु जैसे शून्य से धरती पर आ गिरी. पल भर में उस ने दृष्टि गड़ा कर आनंद की ओर देखा. शरीर के सारे रक्त में ज्वारभाटा सा उफान अनु स्पष्ट अनुभव कर रही थी. उस के पूरे शरीर में मानो किसी ने बारूद भर कर शोलों में फेंक दिया हो. वह फट पड़ी, "पिता? आप इस आदमी को मेरा पिता कहते हैं. डाक्टर चाचा, जो आज से 25 साल पहले एक अबोध, असहाय और अपंग बच्ची को इस हस्पताल की चौखट पर पटक गया था. उसे आज आप मेरा पिता प्रमाणित करना चाहते हैं."

"अनु, तुम्हें..." डा. रघुनंदन अनु को संभालने का प्रयत्न कर रहे हैं.

अनु ने पूरी बात भी नहीं सुनी, "मुझे कोई भ्रम नहीं हुआ है. कई बरस पहले ही मुझे सिस्टर कृष्णा ने सब कुछ बता दिया था."

"अनु," डा. रघुनंदन अपना स्वर कड़ा करने का प्रयत्न कर रहे थे, "तुम इन की बेटी हो और यह तुम्हारे पिता हैं. तुम इतनी सी बात समझ क्यों नहीं पा रही?"

"बेटी..." आनंद के गले से दर्द भरी पुकार निकली.

"बेटी कहने का हक तो आप उसी दिन गंवा बैठे थे जिस दिन मेरी मां की चिता के [illegible] आप ने मेरे अधिकारों की मांग

अपना सौन्दर्य निखारिए
एस्कमेल अपनाइए
ESKAMEL
FOR THE TREATMENT OF PIMPLES AND ACNE
एस्कमेल पिम्पल क्रीम
कील मुंहासों की परेशानी अब क्यों सताए जब आप सही क्रीम अपनाएं. जी हां, एस्कमेल – एक ख़ास फ़ार्मूलेवाली क्रीम, जो मुंहासे होने न दे, भद्दे दाग़ पड़ने न दे.
एस्कमेल आपका सौन्दर्य निखारे, हरदम.
एस्कमेल सुन्दरी बनिए
© Eskayef Limited. Licensed user of Regd. Trade Mark ®
HTA 1897
SKF — एक एसकेएफ उत्पादन

करता शैशव बरबाद कर गए थे." अनु की आंखों में खून उतर आया था.

"मुझे माफ कर दे, बेटी. आखिर, मैं तेरा पिता हूं." आनंद का रोमरोम रो रहा था.

"कर्तव्यों के बिना अधिकारों की मांग नहीं की जा सकती, जनाब आनंद साहब. संरचना मात्र से जनक तो बना जा सकता है, पर पिता नहीं. वास्तव में अगर एक पिता देखना चाहते हैं तो देखें इन्हें," अनु ने डा. रघुनंदन की ओर इशारा किया. "जानते हैं आप, किस की बदौलत आज मैं यहां तक पहुंच पाई हूं? किस ने मुझ अपंग को अपना कर और उंगली पकड़ कर दुनिया के साथ कदम से कदम मिला कर चलना सिखाया? कौन था वह जो मेरे रुदन के साथ रोया और मेरी किलकारियों के साथ ठहाके लगाता था? मुझे शिक्षा दे कर इनसानों की कतार में खड़ा करने का अवसर किस ने दिया? यह है वह महानता की प्रतिमूर्ति. कदमकदम पर दुनिया मेरे बाप का नाम पूछती, और यह पिता बन कर उन के मुंह पर हाथ रख देते."

"बस, अनु, बस," डा. रघुनंदन का कंठ सूख गया था.

"यह व्यक्ति मेरा जनक नहीं, मेरा पिता है. मेरी रगों में बहता खून का एकएक कतरा इन के हार्दिक प्रेम का भाग है."

"आनंद, तुम इस की बातों का बुरा मत मानना. मैं इसे बाद में समझाऊंगा. तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है. तुम आराम करो. तुम मुझे अपने बेटे का पता बता दो, मैं उसे बुला भेजता हूं. वह तुम्हारे बारे में परेशान होगा," डा. रघुनंदन ने कहा.

अनु मौन सी धरती पर नजर गड़ाए खड़ी थी.

"तुम्हें याद है, डाक्टर," आनंद अपना पूरा जोर लगा कर बोल रहा था. "मैं ने कहा था कि यह बेटा मेरे बुढ़ापे का सहारा बनेगा. आज उसी ने धक्के मार कर मुझे घर से निकाल दिया. और मैं इस सब से तंग आ कर आत्महत्या करने निकल पड़ा. पहले तो मैं ने उसे सुधारने में अपना सब कुछ लुटा दिया और बचीखुची संपत्ति वह शराब में लुटा आया. मुझे क्या पता था कि मेरी बेटी इतनी होनहार निकलेगी."

"आप ने मुझे सड़कों पर फेंक दिया, कुदरत आप को चौराहों पर ले आई. और आज फिर अपने स्वार्थ के वशीभूत आप मुझे बेटी कह रहे हैं. अगर मुझे डा. रघुनंदन का संरक्षण न मिलता तो जानते हैं आप कि क्या हश्र होता मेरा. नाली के कीड़ों की तरह एक अपाहिज, बेसहारा सड़कों पर रेंगती फिरती.

"तब...तब मैं देखती कि अगर सारी दुनिया भी आप से चीखीचीख कर कहती कि आनंद यह तुम्हारी बेटी है तो आप मुझ से मुंह फेर कर चुपके से निकल जाते और आज, इतिहास अपनेआप को फिर दोहराएगा. आज मैं आप को इसी हस्पताल में इसी हालत में छोड़ कर जा रही हूं. 25 वर्ष पुराना वह दिन आज फिर उतर आया है इस धरती पर. केवल चेहरे उलट गए हैं." अनु के चेहरे पर स्वाभिमान और स्वावलंबन का तेज स्पष्ट विद्यमान था, "अच्छा डाक्टर चाचा. मैं चलूं. मेरी उड़ान का समय हो गया है."

"आओ अनु," कमरे के बाहर निखिल के साथ खड़े उस के पिता सुमन ने कहा, "मुझे क्षमा करना, बेटी."

इस के साथ ही उन्होंने निखिल का हाथ अनु के हाथ में दे दिया. अनु स्वयं को संभाल न सकी. निखिल के कंधे पर सिर रख कर वह फफक रही थी.

निखिल उस के सिर पर हाथ फेरता रहा, "मुझे तुम पर गर्व है, अनु. द्वापर युग का अभिमन्यु तो सारा युद्ध सफलतापूर्वक लड़ने के बाद भी चक्रव्यूह के अंतिम द्वार में उलझा कर मार डाला गया था, लेकिन तुम तो आज की ऐसी 'नारी अभिमन्यु' हो जो पुरुष रचित चक्रव्यूह के सातों द्वार भेद कर युद्ध में विजयी हुई हो. तुम हो इतिहास की नव रचयिता."

और फिर दोनों चल पड़े थे अपनी मंजिल की ओर. •

सूरज की किरणें सीधे उस के मुंह पर पड़ने लगी थीं. वह कसमसा कर [illegible] मुंह लेट गया. मन तो किया कि उठ कर खिड़की बंद कर दे, जहां से वे किरणें अंदर आ जाती थीं, लेकिन उसे उठने का ही आलस्य था. उठ जाता तो नींद खुदबखुद खुल जाती. उठना तो पड़ेगा ही उसे. रोज के कामों को कैसे टाल सकता था. यंत्रवत सब कुछ करना पड़ता था.

'अभी तक चाय क्यों नहीं आई.' वह

चोर

कहानी • डा. अनिता श्रीवास्तव

मन ही मन नीरू पर भुनभुनाने लगा, 'नीरू लगी होगी बिट्टू में. ये औरतें भी अजीब होती हैं. बेटा हो जाता है तो बेटे के बाप को भूल जाती हैं. मुझे दफ्तर भी तो जाना है और नीरू है कि अभी तक चाय बना कर नहीं लाई, जबकि उसे पता है कि चाय की चुसकियों से ही मेरी आंखें खुलती हैं.

'पर नीरू भी क्या करे, बिट्टू के स्कूल जाने का भी तो यही समय है.'

वह अपनेआप ही नीरू की सफाई भी दे देता था. मन उलझने से पहले सुलझ जाता था.

"पिताजी," बिट्टू उस के पास आ कर पलंग पर बैठ गया.

"क्या है?" उस का स्वर उनींदा था.

"पिताजी, ध्यान से सुनो. आज मेरी अभ्यास पुस्तिका खत्म हो गई है. आज अपने दफ्तर से कागज ले आइए."

"ले आऊंगा. जा, पहले अपनी मां से कह कि चाय ले कर आए?" वह खीजे स्वर में बोला.

"लीजिए चाय, और उठिए. साढ़े आठ बज रहे हैं. पहले बेटे को तैयार करो. फिर बाप की सेवा में लगो," नीरू ने बड़बड़ाते हुए कमरे में प्रवेश किया.

चाय का नाम सुनते ही वह तुरंत उठ गया. नीरू की तरफ देख कर मुसकराया, "यदि तुम बिना भाषण झाड़े चाय दो तो यकीन मानो, चाय में चीनी डालने की जरूरत न पड़े."

नीरू झेंप गई थी. एक मीठी मुसकान उस पर फेंकते हुए वह बिट्टू का बस्ता लगाने लगी. नीचे रिकशा आ गया था. घंटी बज रही थी.

"अच्छा पिताजी, कागज जरूर ले आइए," बिट्टू ने पुनः अपनी चीज की याद दिलाई और बस्ता ले कर दरवाजे की तरफ भागा.

वह भी पलंग पर उठ बैठा. अभी भी नहीं उठता तो दफ्तर के लिए देर हो जाती, दफ्तर भी दूर था. बस से जाना पड़ता था. बस में धक्केमुक्के खाते हुए उसे बड़ा गुस्सा आता था. भीड़ के कारण आदमी से आदमी इतना सट जाता है कि एकदूसरे के कपड़े तो कपड़े, बदन तक की बू नथनों में भरने लगती है. क्यों है ऐसी जिंदगी भागती हुई, दौड़ती हुई.

"नीरू, टिफिन तैयार हो गया?" उस ने स्नानगृह से निकलते ही पूछा.

"हां, आप कपड़े तो पहन लें. सब्जी चढ़ी है. बस, थोड़ी सी कसर है."

उस ने घड़ी की तरफ निगाहें घुमाई. पौने दस बज रहे थे. वह जल्दीजल्दी कपड़े पहनने लगा, फिर बोला, "लाओ, टिफिन दो. देर हो रही है."

"दो मिनट ठहरिए, सब्जी जरा कच्ची है," रसोई से ही नीरू की आवाज आई.

"पक जाने पर तुम ही खा लेना," वह भुनभुनाते हुए सीढ़ियां उतर गया.

बस स्टाप पर लंबी कतार देख कर उसे झुंझलाहट हुई. हालांकि वह रोज ऐसी ही लंबी कतार का सामना करता था. दूर से बस आती हुई दिखाई दी कि कतार में लगे सब के सब लोग किसी योद्धा के समान कमर कस कर तैयार हो गए. एकदूसरे को धक्का देते हुए सब चढ़ने की कोशिश करने लगे. इनसान कितना स्वार्थी होता है. कुछ

समाज में बढ़ती भ्रष्टता और मूल्यहीनता पर चोट करने की शुरुआत सुरेंद्र ने स्वयं ही की. उस का उठाया यह कदम काबिलेतारीफ रहा. लेकिन इस अभियान में भूखे बच्चे की मजबूरी को नजरअंदाज करना क्या ठीक था?
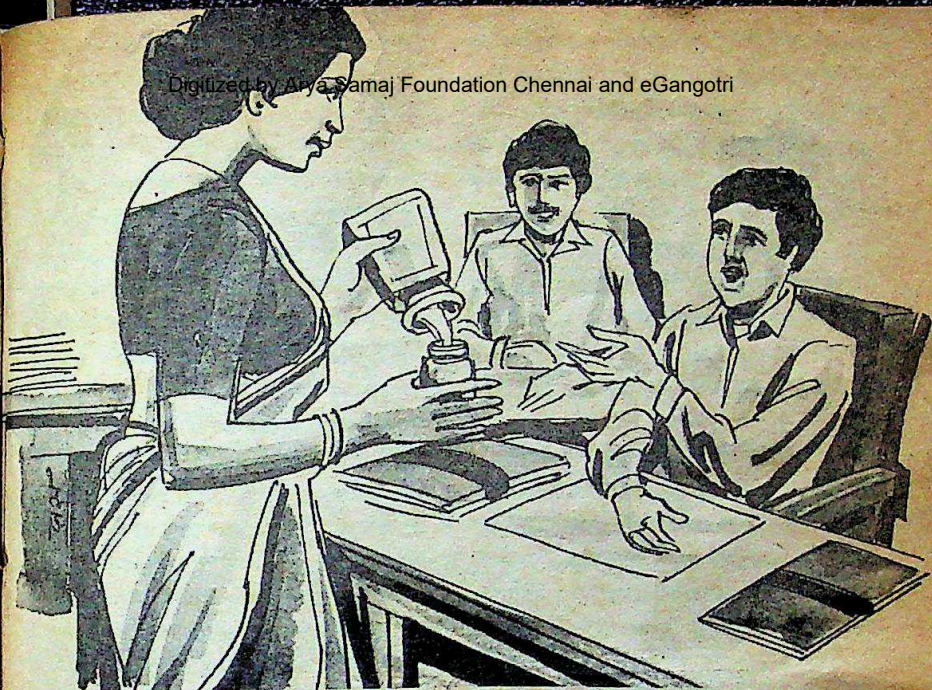
भी तो नहीं देखता है— न बूढ़े, न बच्चे, न महिला. बस, जानवर की तरह टूट पड़ता है.

"50 पैसे खुले नहीं है," कंडक्टर की आवाज उस के कानों से टकराई. उस ने मुड़ कर देखा कोई नया चेहरा था. वह कंडक्टर भी नए चेहरों को पहचान लेता था और खुले नहीं है.' कह कर पैसे बना लेता था. यह उस की प्रतिदिन की अतिरिक्त आय होती थी. रोजाना बस में चढ़ने वाला आदमी दूसरे दिन अपने पैसों का तकाजा भी कर सकता है. पर नया चेहरा ऐसा नहीं कर सकता. उस कंडक्टर को बस में पूरे दिन में जाने कितने नए चेहरे मिलते होंगे. वह सब से इसी तरह पैसे बनाता होगा.

वह इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था कि दफ्तर के पास वाला स्टाप आ गया. दफ्तर तक जाने के लिए उसे थोड़ा चलना पड़ता था. जैसे ही वह दफ्तर वाली सड़क की तरफ मुड़ा कि उस ने देखा, एक पुलिस वाला एक सीधेसादे 22-23 वर्ष के नौजवान पर बरस रहा था, "बोल, क्यों किया था यह सब?"

"पूनमजी: यह क्या कर रही हैं? गोंद की बड़ी शीशी में से छोटी शीशी में गोंद क्यों डाल रही हैं?" आलोक ने पूनम से कहा.

"मैं ने कुछ नहीं किया. ख्वाहमख्वाह मुझे क्यों तंग कर रहे हो?"

"अंदर डाल दूंगा तब अक्ल ठिकाने आएगी," पुलिस वाले ने नौजवान का कालर पकड़ लिया.

"छोड़ दो मुझे," वह गिड़गिड़ाया.

"छूटना चाहता है तो निकाल 10 रुपए."

"10 रुपए, किस बात के ?" उस के चेहरे से निरीहता झलक रही थी.

"बताऊं, किस बात के?" पुलिस वाले ने उस की पतली सी पीठ पर कस कर दो डंडे जमाए.

"मार क्यों रहा है, ये ले पकड़ 10 रुपए."

पुलिस वाले ने 10 रुपए अपनी जेब में डाले और खीसें निपोरने लगा. उस लड़के ने

अपना कालर ठीक किया और गीली आंखों के साथ सड़क की दूसरी तरफ चल पड़ा.

यह सब देख कर उस का मन खिन्न हो उठा. खिन्न मन से वह जैसे ही दफ्तर में घुसा, ननकू चपरासी खड़ा हो गया, "नमस्ते साहब."

"नमस्ते," वह आगे बढ़ गया और मन ही मन सोचने लगा, 'यह ननकू भी बड़ा बदमाश है. चाय वगैरह कुछ भी मंगाओ, 25-50 पैसे जरूर मार लेता है. चायपानी के पैसे काट लिए, कह कर वह ढीठ हंसी हंस देता है.'

सामने ही आलोक बैठा था. वह टाइप करता जा रहा था और सौंफ खाता जा रहा था. सौंफ 24 घंटे उस के मुंह में दबी रहती थी. जब भी आलोक किसी रेस्तरां में जाता था तो भले ही चाय या काफी पिए, लेकिन सामने मेज पर पड़े 'टूथपिक' में से चारपांच 'टूथपिक' जरूर निकाल लेता था और सौंफ तो जैसे उस की बपौती थी. मुट्ठी में थोड़ी ज्यादा न दाब ली तो समझो सारा दिन उस का बेकार गया.

वह अपनी मेज पर बैठ गया. दराज में से कागज निकालने लगा.

"अरे सुरेंद्र, कब आए?"

"अभीअभी, बस बैठा ही हूं." अनमने स्वर में बोला. आलोक से बात करने का उस का मन नहीं था. हां, एक सरसरी नजर उस ने आलोक पर जरूर डाली थी. आलोक जेब से टूथपिक निकाल कर अपने पीलेपीले दांतों को कुरेद रहा था.

"कैसे हो, सुरेंद्र?" सामने से पूनम आती हुई दिखाई दी.

"ठीक हूं," सुरेंद्र बोला, शायद बोलना जरूरी था इस लिए.

"पूनमजी, यह क्या कर रही हैं? गोंद की बड़ी शीशी में से छोटी शीशी में गोंद क्यों डाल रहीं हैं?" आलोक के पीले दांत निकल पड़े थे.

"पिंकी की कुछ किताबें फट गई हैं, इसलिए थोड़ा सा गोंद घर ले जाऊंगी." पूनम ने अपना काम जारी रखा.

इतने में ननकू सुरेंद्र के पास आया और कागज सरका कर बोला, "साहब ने कहा है कि बिल बना दीजिएगा."

सुरेंद्र ने उस कागज को ध्यान से देखा, 'हूं, तो पहले की तरह माल तो कम आया है, लेकिन बिल कितना लंबाचौड़ा बना है,' उस ने मन ही मन कहा. फिर काम में लग गया. उसे पिछले भी बहुत से काम निबटाने थे. वह चुपचाप काम में लग गया.

दोपहर तक सिर में भयानक दर्द उठने लगा. उस ने सिरदर्द की गोली ननकू से मंगवा कर एक घंटे पहले ली थी, पर कोई लाभ नहीं हुआ. उस से कोई काम करते नहीं बन रहा था. हार कर आधे दिन की छुट्टी की अर्जी दी और घर के लिए चल पड़ा.

घर पहुंच कर सुरेंद्र किवाड़ खटखटाना ही चाहता था कि उस की नजर रसोई के पिछले दरवाजे पर पड़ी, 'उफ, कितनी बार कहा है नीरू से कि रसोई का यह दरवाजा बंद ही रखा करे. पीछे झुग्गी वाले रहते हैं. दरवाजा खुला रहना ठीक नहीं. पर नीरू भी कभीकभी बड़ी लापरवाह हो जाती है,' वह अपनेआप से बोलता हुआ पिछले दरवाजे से घर में प्रवेश करने के लिए रसोई की तरफ बढ़ा.

जैसे ही सुरेंद्र ने रसोई में कदम रखा कि एक 14-15 वर्षीय लड़के को देख कर चौंक गया. उस लड़के की निकर पर जगहजगह पैबंद लगे हुए थे. बदन पर एक फटी हुई मैलीकुचैली बनियाइन थी. सुरेंद्र को देखते ही उस के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं. वह भागने का प्रयत्न करने लगा.

लेकिन सुरेंद्र ने उस को धर दबोचा, "क्यों, चोरी करने आया था यहां." सुरेंद्र ने उस के बालों को कस कर पकड़ लिया.

सुरेंद्र का तेज स्वर सुन कर नीरू भी वहीं आ गई.

"बोल, क्या चुराया है? बोलता है या नहीं?" सुरेंद्र की कड़कदार आवाज गूंजी. वैसे ही सुरेंद्र को भयंकर सिरदर्द हो रहा

था, वह क्रोध में परिणत हो चुका था.

"कुछ नहीं, साहब, कुछ नहीं," वह लड़का घिघियाया. डर के मारे उस की आंखों से आंसू बहने लगे थे.

"कुछ नहीं, अभी उगलेगा सब कुछ." सुरेंद्र ने आव देखा न ताव और दोतीन थप्पड़ उस लड़के को कस दिए. फिर एक घूंसा भी पीठ पर जमा दिया. लड़के के मुंह से खून निकलने लगा.

"अरे, अरे, छोड़ भी दो." नीरू बचाव करने लगी. उस का नारी हृदय पसीज उठा.

"तुम हट जाओ, नीरू." सुरेंद्र बुरी तरह बौखलाया हुआ था. "इतनी छोटी उम्र में चोरी करता है. बड़ा हो कर डाकू बनेगा. आज तो अंदर करूंगा इस पिल्ले को."

"बाबूजी, छोड़ दीजिए. मेरी मां बहुत बीमार है. कई महीने हो गए हैं. चारपांच दिन से घर में अन्न का दाना नहीं था. बहुत भूख लगी थी, इसलिए यहां चला आया," वह लड़का हाथ से अपने मुंह का खून साफ करते हुए बोला.

"झूठ बोलता है, कहानी गढ़ता है,"

"तुम हट जाओ, नीरू. इतनी छोटी उम्र में चोरी करता है. आज तो जेल भिजवा कर ही रहूंगा इस को." सुरेंद्र लड़के को मारता हुआ बौखलाए स्वर में बोला.

सुरेंद्र पुनः गरजा.

"नहीं, बाबूजी. यह देखिए, सिर्फ चार रोटियां ही चुराई हैं." उस ने निकर की दाईं जेब से मुड़ीतुड़ी चार रोटियां बाहर निकाल दीं और बाईं जेब उलट दी, जो खाली थी.

"चल, अपने घर ले चल. यदि तेरी मां सचमुच बीमार है तो छोड़ दूंगा. नहीं तो आज तुझे जेल की हवा खिलवाऊंगा." सुरेंद्र ने उसे धक्का दिया.

"अब जाने भी दीजिए," नीरू बीच में बोली थी.

"नीरू, गनीमत थी कि रोटियां ही चुरा पाया. मैं अचानक न आता तो सारे बरतन समेट लेता," सुरेंद्र ने कहा और उस लड़के की बांह पकड़ कर घसीटता हुआ उसे बाहर ले गया.

वह लड़का झुग्गियों की ओर जा रहा था. सुरेंद्र उस के साथसाथ चल रहा था. थोड़ी दूर चलने के बाद ही किसी ने उसे आवाज दी, "राजू, तू कहां था. तेरी मां एक घंटे से झुग्गी में मरी पड़ी है."

यह सुनते ही सुरेंद्र के पैर पथरा गए. उस की हिम्मत नहीं हुई कि वह राजू से कुछ कह सके. फिर भी उस ने कनखियों से उस की तरफ देखा. राजू पहले तो सुन्न सा खड़ा रहा. फिर एकाएक 'मां, मां" पुकारता हुआ रोने लगा.

राजू अपनी झुग्गी की ओर पागलों की तरह भागा, उस की झुग्गी के आसपास बहुत से लोग जमा थे. सुरेंद्र बाहर से ही उस लड़के का दर्दनाक रुदन सुनता रहा. झुग्गी के भीतर जाने का साहस वह नहीं जुटा पाया.

बोझिल कदमों से सुरेंद्र वापस जाने लगा. राजू की मर्मभेदी आवाज उस के कानों में बड़ी दूर तक पड़ती रही.

जब सुरेंद्र घर में घुसा तो नीरू की उत्सुक नजरें उस के चेहरे पर स्थिर हो गईं, "क्या हुआ?"

"वह लड़का सच कह रहा था. उस की मां मर भी गई." सुरेंद्र का स्वर डूबा हुआ था.

"ओह, यह तो बहुत बुरा हुआ." नीरू ने एक ठंडी आह भरी.

थोड़ी देर तक दोनों के मध्य चुप्पी छाई रही. फिर नीरू ही बोली, "खाना लगा दूं?"

"भूख नहीं है. सिर में दर्द हो रहा है. मैं जरा आराम करूंगा," यह कह कर वह पलंग पर लेट गया और अपनी दोनों आंखें मूंद लीं.

"थोड़ा सा तो खा लो."

"कहा न, भूख नहीं है. मुझे अकेला छोड़ दो," उस के स्वर में कटुता थी.

नीरू चुपचाप कमरे से चली गई. वह जानती थी कि सुरेंद्र की झुंझलाहट, वह आक्रोश अपने ही ऊपर था. सुरेंद्र ने पलकें बंद कर ली थीं. लेकिन राजू का चेहरा उस की आंखों के आगे घूम रहा था. उस के कानों से बारबार उस के रोने की आवाजें टकरा रही थीं.

क्यों मारा था मैं ने उस लड़के को? क्या इसलिए कि वह चोर था? वह सोचने लगा, 'कौन नहीं है चोर? क्या वह कंडक्टर चोर नहीं, जो रोज नए चेहरों को खुले पैसे न होने के बहाने लूटता है? क्या वह पुलिस वाला चोर नहीं है, जो निर्धन राहगीरों को बेवजह तंग कर के उन से रुपए मारता है? क्या वह ननकू चोर नहीं है, जो दफ्तर वालों से चायपानी के पैसे ऐंठता है? क्या आलोक चोर नहीं है, जो रेस्तरां से 'टूथपिक' और सौंफ चुराता है? क्या पूनम चोर नहीं है, जो दफ्तर का गोंद घर ले जाती है? क्या मेरा बास चोर नहीं है, जो कम माल मंगा कर अधिक माल का झूठा बिल बनवाता है? क्या मैं खुद चोर नहीं हूं, जो अभ्यास पुस्तिका के लिए दफ्तर से कागज उठा कर ले आता हूं? जब आसपास के सारे चेहरे चोरों के चेहरे हैं, तो राजू को ही मैं ने क्यों मारा? सारा आक्रोश उस पर ही क्यों उतारा? यदि चोरों के प्रति मुझे इतना ही आक्रोश है तो एकएक कर के सब को क्यों नहीं मारता?'

सुरेंद्र को लगा जैसे उस के दिमाग की नसें [illegible]. उस के मन में उमड़ते हुए

चैम्पियन का नया राज़!
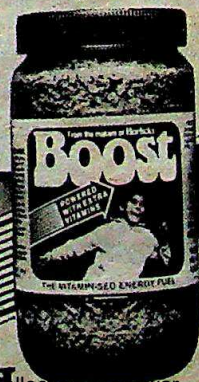
बूस्ट
विटामिन-युक्त शक्ति का ईंधन

विचार तेल की बूंदों की तरह पानी की ऊपरी सतह पर तैरने लगे थे, मथने लगे थे उसे और उस के अंतर्मन को, राजू के मुंह से निकला खून उस के मन की परतों में जमने लगा था. वह स्वयं को अपराधी महसूस करने लगा था.

वह घटना उसे भीतर तक प्रताड़ित कर रही थी. उस का सिर बुरी तरह भन्नाने लगा था और वह औंधे मुंह लेट गया था.

सुरेंद्र की आंख कब लग गई, उसे पता ही नहीं चला. शाम को बिट्टू ने उसे जगाया.

"पिताजी, उठो चाय पी लो."

वह उठ कर बैठ गया और बिट्टू के हाथ से चाय का प्याला ले लिया. बिट्टू पलंग पर चढ़ गया और उस के गले में बाहें डाल कर बोला, "पिताजी, अभ्यास पुस्तिका के लिए कागज ले आए?"

सहसा उस के मुंह में ढेर सारी कड़वाहट भर गई.

"नहीं," उस ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"पिताजी, आप कितने भुलक्कड़ हैं. हम आप से नहीं बोलते." बिट्टू रूठ गया.

"यह लो पांच रुपए. कल स्कूल से लौटते हुए कापी खरीद लेना." सुरेंद्र ने जेब से पांच रुपए निकाल कर बिट्टू की ओर बढ़ा दिए.

"लेकिन पिताजी, आप तो कहते थे कि अभ्यास पुस्तिका के लिए मैं कभी बाजार में पैसे न खर्च करूं". बिट्टू से साश्चर्य बोला.

"कहा न, खरीद लेना कापी. दिमाग क्यों खा रहे हो," सुरेंद्र चिल्ला उठा. बिट्टू सहम गया और चुपचाप रुपए ले कर चला गया.

सुरेंद्र धीरेधीरे चाय की चुसकियां भरने लगा.

"चलो, एक चोर तो कम हुआ," वह बुदबुदाया और चाय का प्याला नीचे जमीन की तरफ सरका कर पुनः लेट गया.

ऊर्जा का नया स्रोत बनी भूगर्भीय चट्टानें

लगभग एक दशक से ऊर्जा समस्या को ले कर विश्वव्यापी आंदोलन छिड़ा हुआ है. मौजूदा शेल आयल, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसे साधनों के खर्चीले तथा जटिल होने के कारण वैज्ञानिकों ने इन्हें अव्यावहारिक बताया है. आसानी से ऊर्जा प्राप्त करने के उद्देश्य से पिछले दिनों वैज्ञानिकों ने भूगर्भीय चट्टानों को ऊर्जा का नया स्रोत घोषित किया है.

भूगर्भीय संरचना के आधार पर वैज्ञानिकों ने बताया है कि प्राकृतिक रूप से गरम चट्टानों के क्षेत्र भूकंपीय गतिविधि वाले क्षेत्र, ज्वालामुखी के क्षेत्र, नए बने पर्वतों के क्षेत्र या टेक्टानिक प्लेटों के सीमाक्षेत्र में पासपास दो कुएं तीनचार हजार मीटर की गहराई तक खोद कर उस में से एक कुएं में करोड़ों लीटर पानी डाला जाता है. पानी के संपर्क में आते ही तपती चट्टानों में दरार पड़ जाती हैं और पानी उबलने लगता है. इस प्रकार पैदा हुई भाप दूसरे कुएं में ढकेल कर बिजली पैदा की जाती है.

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इस प्रकार की चट्टानों की संख्या भी सीमित है तथा लगभग 50 वर्षों में ऐसी चट्टानें ठंडी पड़ जाएंगी. फिलहाल जापान, पश्चिम जरमनी, फ्रांस, ब्रिटेन और स्विटजरलैंड इस तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं.

खसखस मलाई कोफ्ते

सामग्री : 200 ग्राम पनीर, 100 ग्राम दही, ½ कटोरी खसखस, नमक, मिर्च, हलदी, धनिया, गरम मसाला, ½ प्याला मलाई, 100 ग्राम मैदा, खोया, अदरक, लहसुन, प्याज, दालचीनी, हरी धनिया, काली मिर्च, तेल, 2 टमाटर.

विधि : पनीर को बारीक पीस कर मैदा मिलाएं. खसखस को भून कर इसी मिश्रण में मिलाएं. अब खोया भूनें, उस में नमक मिर्च मिला लें. फिर पनीर के मिश्रण की छोटीछोटी रोटी हथेली पर रख कर खोए का मिश्रण भरें और पनीर की रोटी को कचौड़ी की तरह बंद करें. कड़ाही में तेल गरम कर के गुलाबी होने तक तलें.

तरी तैयार करना : एक गांठ लहसुन, एक गांठ अदरक व एक बड़ा प्याज ले कर छील कर काट लें. अब दालचीनी, खसखस, दो टमाटर डाल कर मसाला बारीक पीसें. फिर कड़ाही में दो बड़े चम्मच डाल कर चारछः दाने काली मिर्च और तेज पत्ते का बघार दे कर मसाला भूनें, जब तक कि मसाला, कड़ाही न छोड़ने लगे. अब टमाटरों को थोड़े पानी में उबाल कर छील लें और उसी पानी में टमाटर मसल कर टमाटर का पानी भुने हुए मसाले में डालें और आवश्यकतानुसार पानी डालें

पंचरंगी कोफ्ते
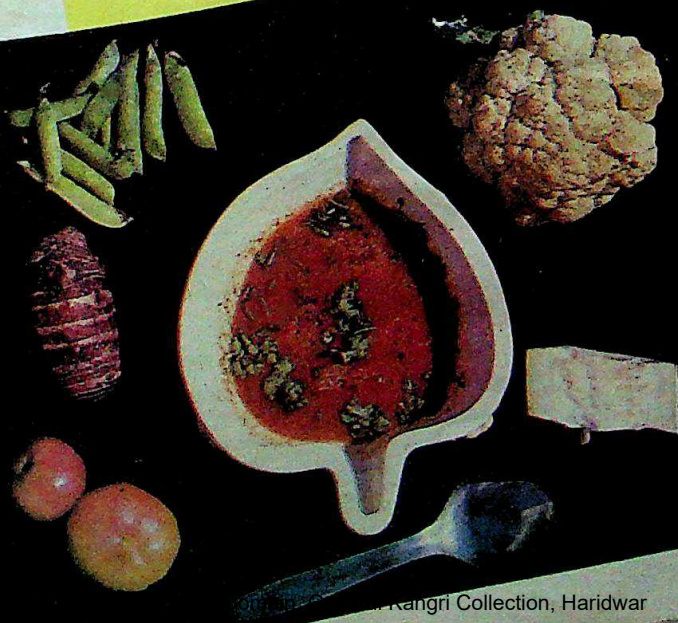
अच्छी तरह से उबल जाने पर हरी धनिया व गरम मसाला डाल कर उतार लें और परोसने के 10 मिनट पहले कोफ्ते और मलाई डाल दें और फिर परोसें.

हरे चने के कोफ्ते

सामग्री :300 ग्राम हरे चने, 250 ग्राम पनीर, 200 ग्राम पालक, 2 चम्मच बेसन, 2 बड़े टमाटर, 2 प्याज, 1 गांठ लहसुन, अदरक, हलदी, मिर्च, नमक, गरम मसाला, हरी धनिया, घी, 1 कटोरी मलाई, तेल.

विधि : हरे चने को पीस कर इस में बेसन मिलाएं. नमक मिला कर हाथ में एक लोई ले कर छोटी रोटी बना कर छोटा पनीर का टुकड़ा भरें और तेज आंच में तलें.

तरी तैयार करना : लहसुन, अदरक, पालक, प्याज, थोड़े हरे चने पीसें और तेल गरम कर के मसाला अच्छी तरह भूनें. अब टमाटरों को पानी में उबाल कर छील लें और उसी पानी में टमाटर मसल कर टमाटर का पानी भुने हुए मसाले में डालें. आवश्यकतानुसार कुछ पानी और डाल कर उबालें. जब तरी अच्छी तरह उबल जाए तब मलाई और हरी धनिया डालें. परोसते समय तरी में कोफ्ते डालें. ये खाने में बहुत स्वादिष्ट और पौष्टिक होते हैं.

गोभी के कोफ्ते

सामग्री : 1 सफेद फूल गोभी, 2 बड़े चम्मच बेसन, नमक, मिर्च, हलदी, गरम मसाला, अदरक, लहसुन, टमाटर, प्याज, 1 चम्मच तिल, 1 चम्मच मूंगफली, तेल.

विधि:गोभी को कद्दूकस कर के साफ धो लें. अब इस में बेसन मिलाएं. फिर नमक, मिर्च, गरम मसाला डाल कर अच्छी तरह मिला लें और मनचाहे आकार के कोफ्ते तेल गरम कर के तलें.

तरी : प्याज, मिर्च, अदरक, लहसुन, भुने तिल, भुनी मूंगफली तथा टमाटर बारीक पीस लें. अब तेल गरम कर के प्याज के टुकड़ों का बघार दे कर मसाला डालें और गुलाबी होने तक भूनें. जब मसाला कड़ाही छोड़ने लगे तब तीन कटोरी पानी डाल कर अच्छी तरह उबल जाने दें. जब तरी गाढ़ी हो जाए, तब नीचे उतारें. परोसते समय तरी में कोफ्ते डालें.

पनीर के नरगसी कोफ्ते

सामग्री : 500 ग्राम पनीर, 1 बड़ा चम्मच कार्नफ्लोर, 2 प्याज, लहसुन, अदरक, टमाटर, नमक, मिर्च, धनिया पाउडर, गरम मसाला, पीला रंग, तेल.

विधि : पनीर को बारीक कर लें. कार्नफ्लोर व नमक मसलें. पनीर के दो भाग करें. एक में पीला रंग मिलाएं. दूसरे को सफेद रहने दें. रंगीन पनीर की गोलियां बना कर सफेद पनीर और कार्नफ्लोर की लोई के अंदर भर दें. धीमी आंच पर तेल गरम कर के गुलाबी होने तक तलें.

तरी : लहसुन, अदरक, प्याज, टमाटर बारीक पीसें. कड़ाही में तेल गरम कर के मसाला भूनें और आवश्यकतानुसार पानी डाल कर तरी तैयार करें. ऊपर से मलाई और हरी धनिया डालें और परोसते समय कोफ्ते डाल कर परोसें.

लौकी के कोफ्ते

सामग्री : 250 ग्राम लौकी, 1 चम्मच अजवायन, 2 चम्मच बेसन, नमक, मिर्च, धनिया पाउडर, गरम मसाला, अदरक, प्याज, टमाटर, हलदी.

विधि : लौकी छील कर कद्दूकस कर लें. अब इस में बेसन, अजवायन, नमक, मिर्च डाल कर अच्छे से मसलें और कड़ाही में तेल गरम कर के अंडाकार कोफ्ते तलें.

अदरक, प्याज पीस कर अलग रखें. टमाटर उबाल कर रस बना लें. तेल गरम कर के मसाला भूनें. इसी में मिर्च, हलदी, धनिया सब डाल कर, अच्छी तरह भूनें और टमाटर का रस डाल कर उबाल लें. थोड़ी देर बाद नीचे उतार कर हरी धनिया और कोफ्ते डाल दें. ऊपर से गरम मसाला डालें.

—दुर्गा यादव

. जब
तीन
उबल
नीचे
डालें.

ते

बड़ा
हसुन,
निया
तेल.
र लें.
के दो
. दूसरे
लियां
र की
र तेल

प्याज,
गरम
नुसार
पर से
रोसते

म्मच
मिर्च,
दरक,

स कर
मक,
ड़ाही
तलें.
रखें.
गरम
लदी,
भूनें
ल लें.
निया
साला
व ●
रिता

भीगी रातें

रीती नौका
सूनी दरिया
बंद पड़ी इन पतवारों को
अब हमें ही खेना होगा.

घोर अंधेरा
गहरी रातें
चिरनिद्रा में सब जग सोया
अब हमें ही जगना होगा.

चली पुरवैया
फूली बगिया
इन नन्हे सुंदर फूलों से
अब हमें ही सजना होगा.

भीगी रातें
अनछुई सांसें
मुक्त हुए कसे हुए बंधन
अब हमें ही बंधना होगा.

—महेश

पृथ्वीराज ताराबाई

गतांक से आगे

अंधकार के बाद पृथ्वीराज और ताराबाई अपने सैनिकों के साथ टोडा नगर में आए. उन के सैनिक महल के सामने ताजिया देखने के लिए एकत्रित भीड़ में घुस गए. पृथ्वीराज तथा ताराबाई भी भीड़ में मिल गए.

ताजिए महल की ओर आने लगे. अधिकांश श्रद्धालु मातम करने में लग गए थे. उन के रोने चीखने की आवाजें चारों ओर गूंजने लगीं. कुछ तलवारबाजी, कुछ पट्टेबाजी के खेल दिखा रहे थे. पृथ्वीराज, ताराबाई तथा राजपूत सैनिकों की ओर किसी का ध्यान नहीं था.

पृथ्वीराज तथा ताराबाई महल के छज्जे के निकट पहुंच गए. उन के सैनिकों ने भी मोरचे संभाल लिए.

ताजिए महल के नीचे आ गए. उन को देखने टोडा का शासक लल्ला खां पठान छज्जे पर आ गया. उस के भाई, परिवारजन तथा प्रमुख अधिकारी भी छज्जे पर खड़े थे.

छज्जे के निकट खड़े पृथ्वीराज तथा ताराबाई ने एकदूसरे की ओर देखा. तारा ने पूरी शक्ति से कमान को कान तक खींच कर तीर छोड़ा, जो लल्ला के गले में बिंध गया. पृथ्वीराज का तीर लल्ला के भाई के सीने में धंस गया. दोनों गिर पड़े.

इतने में चारों ओर से तीरों की बौछारें छज्जे पर होने लगीं. छज्जे पर खड़े व्यक्तियों में से अधिकांश हताहत हो कर

वहीं गिर पड़े. केवल कुछ ही भाग कर प्राण बचा सके. महल के प्रांगण में पृथ्वीराज तथा तारा के सैनिकों की तलवारें चमक रही थीं. पठान इस अप्रत्याशित आक्रमण से भौचक्के रह गए थे.

राव सुरताप के टोडा से पलायन के बाद किसी ने उस पर आक्रमण नहीं किया था. उन में से कुछ ने जो ताजियों के साथ तलवारबाजी के खेल दिखा रहे थे, राजपूतों का डट कर सामना किया. कुछ शस्त्रअस्त्र लेने अपने घरों की ओर भागे. किंतु राजपूत सैनिकों ने उन में से अधिकांश को भाग कर प्राण बचाने का अवसर नहीं दिया. उन की तलवारों तथा तीरों की मार से चार घंटे में एक हजार पठान मारे गए. जो बचे उन में मोरचा लेने की शक्ति नहीं थी. उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि राजपूत सैनिकों की संख्या केवल 800 ही है. उन को आशंका थी कि वह तो महाराणा की मुख्य सेना की अग्रटुकड़ी है. उन्होंने शीघ्रातिशीघ्र टोडा से अधिकाधिक दूर भागना ही उचित समझा.

पृथ्वीराज जानता था कि बचे हुए 4,000 पठान यदि संगठित हो कर उस पर आक्रमण कर देंगे तो उन्हें पराजित करना कठिन होगा. अतः वह उन्हें खदेड़ना चाहता था, ताकि उन्हें संगठित होने और दुश्मन की सैन्य शक्ति का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर नहीं मिले.

अर्ध रात्रि को पृथ्वीराज ने अपने समस्त सैनिकों को महल के सामने एकत्रित किया. 50-50 सैनिकों की टुकड़ियां बनाईं.

तारा ने पूरी शक्ति से कमान को कान तक खींच कर तीर छोड़ा, जो लल्ला खां के गले में बिंध गया. दोनों गिर पड़े.

पृथ्वीराज और ताराबाई ने अपनी वीरता से कई युद्ध जीते. लेकिन राव जगमाल ने पृथ्वीराज से प्राणों की भिक्षा मांगने के बाद भी उस के साथ ऐसा धोखा किया जिस में पृथ्वीराज जैसा वीर भी मात खा गया.

तीन टुकड़ियां तारा को सौंपी, शेष टुकड़ियों को ले कर वह पठानों को दूर खदेड़ने चल दिया.

तारा ने एक टुकटी को खजाने की सुरक्षा पर लगाया. दूसरी टुकड़ी को ले कर वह अस्तबल गई. उस टुकड़ी को अस्तबल की रक्षार्थ लगाया, ताकि पठान घोड़े नहीं ले सकें. तीसरी टुकड़ी के साथ वह महल में घुसी.

महल में चारों ओर युद्ध के चिह्न विद्यमान थे. कहीं लाशें पड़ी थीं तो कहीं घायल पड़े कराह रहे थे.

तारा के आगे चार सैनिक मशालें ले कर चल रहे थे. अचानक उस को महल के जनाने भाग का ध्यान आया, वहां उस का शैशव तथा किशोर काल कटा था. वह तेजी
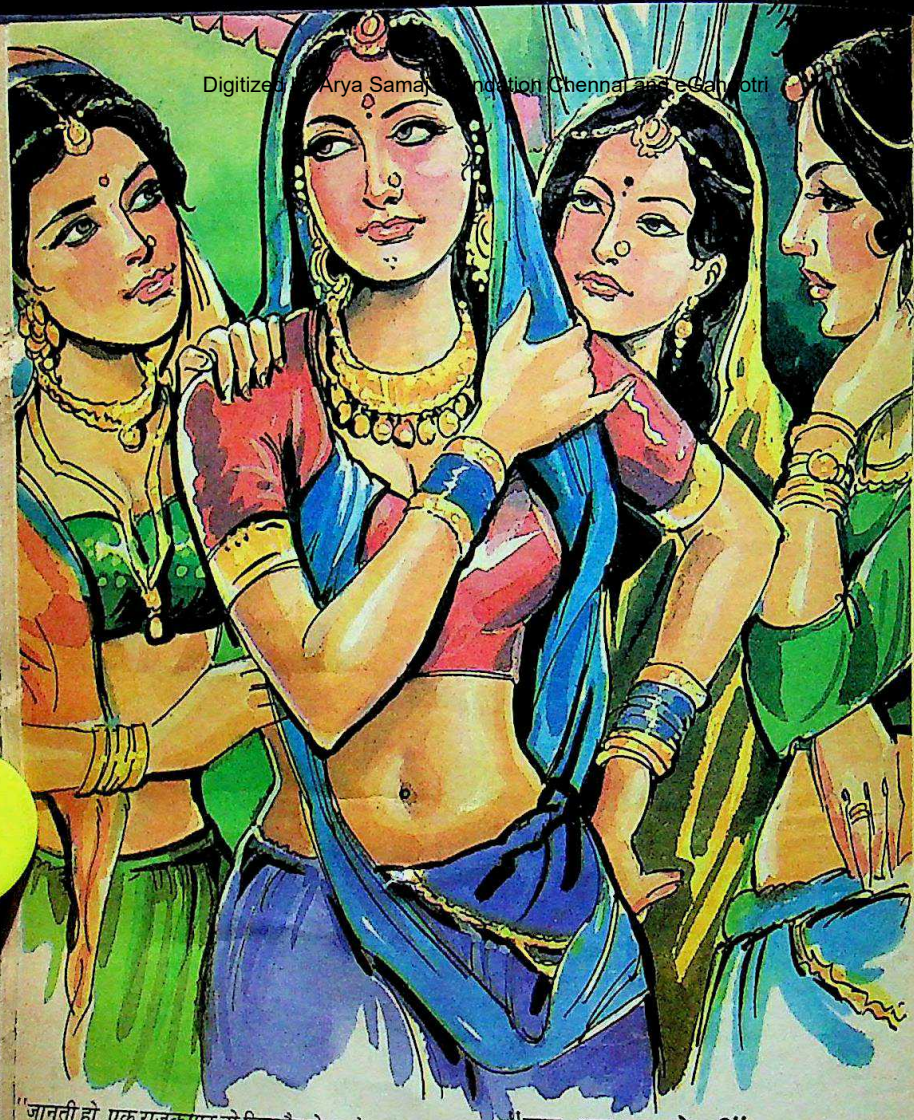
"जानती हो, एक राजकुमार तो बिदनौर के रास्ते में ही मारा गया. अब दूसरा आ रहा है." तारा से उस की एक सहेली ने कहा.

से उस ओर बढ़ी. जनाना महल का मुख्य द्वार बंद था.

सैनिक, लकड़ी का एक मोटा लट्ठा ले आए. उन्होंने उस से टक्करें मारमार कर मुख्य द्वार तोड़ दिया. द्वार के टूटते ही अंदर से कुछ नारियों की आवाजें आईं.

"हाय, अब क्या होगा?"

सैनिकों को पीछे रोक कर, तारा एक हाथ में मशाल तथा दूसरे हाथ में तलवार ले कर अंदर घुसी. वह आगे बढ़ रही थी और महल के अंदर की भयभीत नारियां पीछे हट रही थीं. उन के भय का कारण समझते ही तारा ने तलवार म्यान में डाली तथा अपने सिर से कवच का लोहे का टोपा उतार लिया. घने बाल उस की पीठ पर लहराने लगे. वह बोली,

"मैं तारा हूं. तारा, राव सुरताप की बेटी. आप घबराएं नहीं."

एक स्त्री ने पास आ कर कहा, "नहीं, तुम स्त्री नहीं हो. मर्द भी लंबे बाल रख लेते हैं.

तारा ने सीने पर पहना कवच उतार कर भूमि पर पटक दिया और लपक कर उस स्त्री को खींच कर अपने वक्षःस्थल से चिपका लिया. वह पठान नारी अवाक रह गई. तारा से स्वयं को छुड़ाते हुए कुछ शरमाती हुई बोली, "अब यकीन हो गया कि तुम स्त्री हो."

तारा ने महल की पठान स्त्रियों को आश्वासन दिया कि वे जहां जाना चाहेंगी, उन्हें वहां जेवर तथा सामान के साथ सुरक्षित भेज दिया जाएगा. तारा के आश्वासन से उन का भय समाप्त हो गया. बूढ़ी औरतें उस का शुक्रिया अदा करने लगीं और जवान तारा को घेर कर खड़ी हो गईं. तारा घूमती हुई उस कमरे में पहुंची, जिस में वह रहा करती थी. उस ने अपने अस्त्रशस्त्र उतारे. उस के वस्त्र रक्तरंजित तथा कई स्थानों से फट चुके थे. उस ने हाथ मुंह धोने की इच्छा प्रकट की तो एक पठान नारी बोली. "आप लड़ाई जीत चुकी हैं. अब तो नहाधो कर कपड़े बदलें."

"लेकिन पहनूंगी क्या? इन को सूखने में समय लगेगा."

"जनाने महल में जनाने कपड़ों की क्या कमी? हमारे कपड़े शौक से पहनें."

शीघ्र ही नौकरानियां स्नान के लिए पानी तथा पहनने के लिए वस्त्र ले आईं. तारा ने स्नान कर के कपड़े पहन लिए. फिर बाहर आई. नौकरानियां उस का शृंगार कर रही थीं कि पृथ्वीराज के जनाना महल के बाहर पहुंचने की सूचना मिली. तारा ने शीघ्रता से पीठ पर ढाल, कमर में तलवार बांधी तथा वक्षःस्थल पर कवच पहन कर बाहर आ गई.

उस भेस में उसे देख कर पृथ्वीराज बोला, "आप जनाना महल में ही रहें. यह ढाल, तलवार मुझे दे दें." तारा ने उत्तर दिया, "अभी नहीं, विवाह के बाद घाघरालूंगी पहनूंगी."

राव सुरताप को विजय की सूचना देने द्रुतगामी घुड़सवार रवाना हो गए. राव तथा उन के परिवारजनों के आ जाने पर तारा तथा पृथ्वीराज का विधिवत विवाह हो गया.

कुछ दिन टोडा में रह कर पृथ्वीराज ताराबाई के साथ कुंभलगढ़ आ गया. उन दिनों मांडू के सुलतान की ओर से मल्लू खां अजमेर पर शासन करता था. एक दिन ताराबाई ने पृथ्वीराज से कहा, "कहते हैं कि 50 वर्ष पूर्व अजमेर महाराणा के अधीन था." पृथ्वीराज ने उत्तर दिया, "पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु के बाद मुसलमानों ने लगभग 200 वर्ष अजमेर पर राज किया. गत 50 वर्षों से मांडू वाले राज कर रहे हैं."

तारा बाई ने अजमेर पर अचानक आक्रमण करने का सुझाव दिया.

युद्धप्रिय पृथ्वीराज को ऐसे आक्रमणों में अत्यधिक रूचि थी. उस ने न तो पिता को सूचना दी, न ही उन की सेना ली.

एक हजार चुनिंदा सैनिक ले कर उस ने अजमेर पर बिजली की गति से आक्रमण कर दिया. नवाब मल्लू खां वीरता से लड़ा, किंतु मारा गया. पृथ्वीराज ने तारागढ़ के

जिगर

इक कतरा खून का
लाएं कहां से हम,
खूने जिगर की धार
नहीं देखी थी आप ने.
—सुरेशकुमार गोयल

दर्शन

दर्शन की बातें जीवन की नहीं होतीं.
—यादवेंद्रनाथ शर्मा 'चंद्र'

किले पर भी अधिकार कर लिया. तारागढ़ के युद्ध में ताराबाई ने अद्भुत वीरता प्रदर्शित की. भागते हुए घोड़े की पीठ से चलाए गए उस के तीरों की मार से पचासों दुश्मन सैनिक मारे गए. अजमेर की जनता मल्लू खां के शासन के अंत से अत्यधिक प्रसन्न हुई. उस ने इस वीर दंपती का भव्य स्वागत किया. भाट तथा चारणों ने उन की प्रशंसा में अनेक गीत गाए.

मेवाड़ तथा मालवा में पुरानी शत्रुता थी. महाराणा कुंभा ने मालवा के सुलतानों को अनेक बार पराजित किया था. रायमल के महाराणा बनने पर मांडू के सुलतान ने उस पर आक्रमण किया था. महाराणा ने तीन राजकुमारों, अपने चाचा सारंगदेव तथा सूरजमल के साथ उस का सामना कर के उसे पराजित किया था. उस के दूसरे आक्रमण के समय महाराणा को अकेले ही उस का सामना करना पड़ा था. क्योंकि जयमल की मृत्यु हो चुकी थी, सांगा अज्ञातवास में था तथा पृथ्वीराज गोड़वाड़ में था. परिस्थितिवश महाराणा ने धन दे कर सुलतान को वापस किया. स्वयं को असमर्थ पा कर महाराणा ने सूरजमल को सादड़ी तथा सारंगदेव को भैसरोड की जागीरें दीं, ताकि वे मेवाड़ की रक्षा करें.

पृथ्वीराज की दृष्टि में संदिग्ध स्वामीभक्ति वाले परिवार से सीमा रक्षा की अपेक्षा करना एक भूल थी. उस की दृष्टि में यह महाराणा की निर्बलता का परिचायक था. उस ने ताराबाई से कहा, "मुझे खेद है कि दीवानजी इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंचे कि मेवाड़ की सीमाओं की सुरक्षा सारंगदेव तथा सूरजमल के सहयोग के अभाव में नहीं हो सकती."

उस ने गोड़वाड़ से पिता दीवानजी यानी महाराणा को पत्र लिखा कि सारंगदेव तथा सूरजमल को जागीरें दे कर आप ने भयंकर भूल की है.

महाराणा पत्र को पढ़ कर कुपित हुए. उन्होंने लिखा,

"मैं ने तो जागीरें दे दी हैं. यदि तुम में साहस हो तो छीन लो."

पृथ्वीराज में शौर्य, साहस तथा रणनिपुणता का अभाव नहीं था. उस ने पिता को उत्तर देने के स्थान पर उन को अपनी उपलब्धि से परिचित कराना अधिक श्रेयस्कर समझा.

साधनहीन होते हुए भी उस ने 2000 अश्वारोही एकत्रित कर, भैसरोड पर आक्रमण कर दिया. उस का आक्रमण इतना अप्रत्याशित था कि सारंगदेव तथा सूरजमल गढ़ी में अपने परिवार को छोड़ कर भाग गए. पृथ्वीराज ने गढ़ी तथा समस्त क्षेत्र पर अधिकार कर लिया.

सारंगदेव तथा सूरजमल ने मांडू जा कर सुलतान से सहायता की याचना की. वह वर्षों से महाराणा को पराजित करने के उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में था. उस ने एक शक्तिशाली सेना उन के साथ कर दी. उस की सहायता से सारंगदेव तथा सूरजमल मेवाड़ के अनेक क्षेत्रों पर अधिकार करते हुए गंभीर नदी तक आ गए. वहां महाराणा ने उन का सामना किया. वह अत्यधिक वीरता से एक साधारण सैनिक की भांति लड़े. उन के शरीर पर 22 घाव हो गए. अत्यधिक रक्त बहने से महाराणा भूमि पर गिरने वाले ही थे कि पृथ्वीराज तथा ताराबाई एक हजार सैनिकों के साथ कुंभलगढ़ से आ गए. उन के रणक्षेत्र में पहुंचते ही महाराणा के थके हुए सैनिक दोगुने जोश से लड़ने लगे. मालवा के सैनिक भागने लगे.

पृथ्वीराज भयंकर मारकाट करता हुआ सूरजमल तक पहुंच गया. उस के वारों से सूरजमल को अनेक घाव आए. किंतु युद्ध के निर्णायक स्थिति में पहुंचने से पहले

(शेष पृष्ठ 179 पर)

बालों से... जड़ तक !

क्यूटिकल
मेडुला
कौर्टेक्स
बालों की जड़

हल्का, पतला तेल
चिपचिपाहट-मुक्त
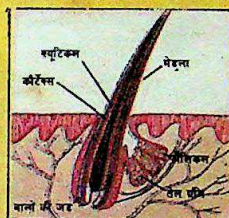
'एक बच्चा परिवार नीति'

प्रश्नों के घेरे में

लेख • प्रतिनिधि

कुछ जनसंख्या विशेषज्ञों का कहना है कि "जनसंख्या की वृद्धि तब तक कोई बड़ी समस्या नहीं बनती जब तक कि उस बढ़ने वाली आबादी की परवरिश के स्रोत सूखते नहीं हैं."

मगर साथ ही कुछ अर्थशास्त्री यह भी कहते हैं कि "यदि बढ़ती जनसंख्या पर रोक न लगाई जाए तो एक दिन वही बढ़ी हुई आबादी सिर का दर्द बन जाती है."

आबादी के लिहाज से चीन की जनसंख्या भारत से कहीं ज्यादा है. इस समय चीन की आबादी करीब 1.1 अरब है, जिस के 1990 में 1.2 अरब हो जाने का अनुमान

भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या पर रोक लगाने के लिए जहां परिवार नियोजन के कार्यक्रमों में अब सिर्फ दो बच्चों वाले परिवार की वकालत की जा रही है, वहीं करीब 7 वर्ष पूर्व यानी 1980-81 में 'एक बच्चा परिवार' की नीति चीनी दंपतियों पर थोपनी शुरू की गई थीं.

अमरीका के लोवल विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर नानसी बी. वायनर ने जब शिक्षाविदों के एक दल के साथ चीन की सामाजिक और शैक्षणिक पद्धति का अध्ययन किया तो अपने सर्वेक्षण के दौरान उन्हें कई महत्त्वपूर्ण जानकारियां मिलीं, जो इस बात का आभास कराती हैं कि चीन में जहां सुधार की नीतियां और देश को आधुनिक बनाने के यत्न काफी संतोषप्रद हैं, वहीं चीनी समाज में एक नई पारिवारिक और सामाजिक समस्या भी खड़ी हो गई है. वहां ढीलेपन से लागू की गई 'एक बच्चा परिवार' नीति का परिणाम अब यह है कि इस नीति के लागू होने के सात वर्षों में ही चीन में करीब चार करोड़ ऐसे बच्चों का जन्म हुआ है जो परिवार के लिए अकेली संतान हैं.

चूंकि चीन का नया पारिवारिक ढांचा अब '4-2-1' यानी नानानानी व दादादादी (4) मातापिता (2,) और बच्चा (1) की धुरी पर विकसित हो रहा है, अतः ऐसी इकलौती संतान को मातापिता जरूरत से ज्यादा प्यार देते हैं. उस की उचितअनुचित सभी मांगों को पूरा करते हैं. यहां तक कि कई मातापिता ऐसी इकलौती संतान को घर का कामकाज तक भी नहीं करने देते. इस से परिवार में अकेला बच्चा 'दुलारा शहंशाह' बन जाता है, पर जरूरत से ज्यादा लाड़प्यार जताने से उस की आदतें भी खराब हो जाती हैं. यही कारण है कि चीन में जनमीं अकेली संतानें अब जिद्दी हो चली हैं. वे किसी का कहना नहीं मानतीं. उन की आदतें भी खर्चीली हो गई हैं. ऐसे बच्चों में बढ़ती उद्दंडता से अब चीन के समाजशास्त्री भी परेशान हैं.

चीन की एक बच्चा परिवार नीति लागू होने के परिणामस्वरूप वहां तेजी से बदलते पारिवारिक ढांचे के रूप ने एक ऐसी सामाजिक समस्या उत्पन्न कर दी है जो इस नीति की सफलता पर प्रश्नचिह्न लगा देती हैं.

यहां अब हर कोई इस बात से सहमत है कि मातापिता और दादादादी या नानानानी ऐसी अकेली संतानों को बिगाड़ने में पिछली पीढ़ी की तुलना में अधिक योगदान कर रहे हैं. सोचने की बात यह भी है कि जहां ऐसे अकेले बच्चे की परवरिश में सारा कुटुंब ही जुटा हो तो वहां ऐसे बच्चे का विकास भी किस तरह का होगा. स्वाभाविक है कि इतने अधिक लोगों के संरक्षण में पल रहे अकेले बच्चे में आत्मविश्वास की कमी होगी और वह अपनी हर जरूरत के लिए

नई पारिवारिक नीति ने मातापिता के अपनी इकलौती संतान के प्रति संरक्षण और दायित्व के क्षेत्र को और भी बढ़ा दिया है.
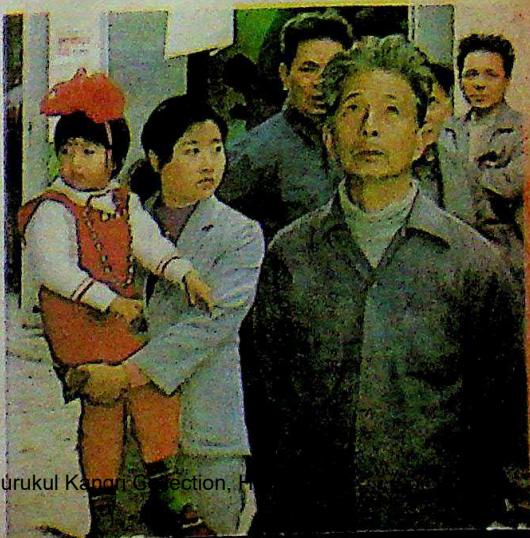
घर के बाकी सदस्यों पर ही निर्भर रहेगा.

हालांकि चीन की मौजूदा जनसंख्या को देखते हुए वहां 'एक बच्चा' परिवारों की संख्या बहुत अधिक नहीं है. कुल मिला कर चीन में 17% परिवार ही ऐसे हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में तो इन का अनुपात केवल 12% ही है. फिर भी चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी के रूढ़िवादी नेताओं को लग रहा है कि इन बच्चों में समाजवादी चरित्र का अभाव होगा, क्योंकि अधिक लाड़प्यार में पले इन बच्चों को दूसरों की तकलीफों का एहसास नहीं होगा.

चीन में अब चूंकि ऐसी अकेली संतानों की तेजी से वृद्धि हो रही है और उस के ज्यादा बिगड़ जाने व सिरचढ़े हो जाने का अंदेशा भी जन्म लेने लगा है, संभवतः इसी लिए यहां जनसंख्या को नियंत्रित करने वाली 'एक बच्चा' परिवार नीति पर भी अब प्रश्नचिह्न लगने शुरू हो गए हैं.

नैतिक शिक्षा पर बल

ज्यादा लाड़प्यार से ऐसे बच्चे कहीं बिगड़ कर आवारा न बन जाएं, इसी लिए चीन के वाइस प्रीमियर ली पेंग भी उन्हें शुरू से ही ऐसी नैतिक शिक्षा दिए जाने के पक्ष में हैं, जो उन में देशभक्ति, एकता और मेहनत का जज्बा पैदा कर सके.

अन्य मातापिता की तरह चीनी मातापिता भी अपने बच्चों को खूब प्यार करते हैं और अब तो अकेली संतान होने के कारण वहां पर बच्चे अपने मातापिता, दादादादी तथा अन्य परिजनों के लिए और ज्यादा 'महत्त्वपूर्ण' हो गए हैं. इस कारण आज के दशक में पल रहे बच्चे पिछली पीढ़ी की तुलना में अधिक स्वस्थ हैं.

मगर संतान की तंदुरुस्ती के मामले में मातापिता का अति उत्साह भी कभीकभी नुकसानदेह साबित होता है जो हाल में एक चीनी समाचारपत्र के इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है. अपनी अकेली संतान को पूर्णतः स्वस्थ और किसी संक्रामक रोग से मुक्त रखने के लिए एक दंपती ने अपने बच्चे को जन्म के छः वर्ष बाद तक केवल 'डिस्टिल्ड वाटर' पिलाया. जिस का परिणाम यह हुआ कि बच्चे में रोग के प्रतिरोध की क्षमता नहीं रही और इस कारण उस की मृत्यु हो गई.

आज चीनी समाज में कई मातापिता और विशेषतः युवा दंपती इस बात को ले कर उलझन में हैं कि उन्हें अपने बच्चों की परवरिश भी एक ऐसे सामाजिक परिवेश में करनी पड़ रही है जो उन के अपने बचपन के माहौल से पूर्णतः भिन्न है.

अकेली संतान भी समस्याग्रस्त

बाल मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि जब किसी अकेली संतान को अपने परिवार में भाई या बहन का साथ नहीं मिलता तो उ[illegible] में दूसरों के साथ खुशियां बांटने की प्रवृ[illegible] भी विकसित नहीं होती, यानी अके[illegible] संतान भी कभीकभी अधिक समस्याग्र[illegible] होती है. फिर भी चीन में अपनी अके[illegible] संतानों को सही राह पर चलाने का दायि[illegible] उन के मातापिता पर ही है, इसलिए वे अ[illegible] एकमात्र बच्चे का हर तरह से खयाल र[illegible] हैं और चाहते हैं कि उन का बच्चा एक एक दिन 'कुछ' बन कर दिखाए.

चीन में प्रायः मातापिता दोनों [illegible] दफ्तर जाते हैं और ऐसे में घर लौटने पर दफ्तर के तनाव से मुक्त भी रहना चाहते [illegible]

चीन में ऐसे मातापिता कम ही हैं, [illegible] अपने अकेले बच्चे के साथ संतुलित ढंग [illegible] पेश आते हैं. अपनी इकलौती संतान के [illegible] मातापिता किस ढंग का व्यवहार करें, [illegible] बताने के लिए अब चीन में कुछ ऐ[illegible] अभिभावक प्रशिक्षण कक्षाएं भी चलाई [illegible] रही हैं, जहां पर मातापिता बच्चे की सु[illegible] और विकास सबंधी जानकारी प्राप्त क[illegible] हैं.

अब देखना यह है कि चीन का '[illegible] बच्चा परिवार' अभियान विरोधाभासों [illegible] रहते कहां तक सफल हो पाता है और भा[illegible] जैसे अन्य देश जो परिवार नियोजन [illegible] दिशा में अग्रसर हो रहे हैं, चीन की [illegible] नीति से क्या सीख लेते हैं.

टेलीविजन: बढ़ता हुआ जोखिम

लेख • रामकिशोर पारचा

टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रम क्या लोगों में कोई हिंसात्मक प्रवृत्ति पैदा कर सकते हैं? कहीं ये पारिवारिक संबंधों को चोट तो नहीं पहुंचा रहे हैं? घरघर में पाया जाने वाला यह छोटा परदा क्या लोगों में कोई रचनात्मक लगन जगा पाया है? कहीं यह लोगों में उदासीनता तो नहीं बढ़ा रहा? सब से बड़ी बात यह है कि इस से समाज को कोई दिशा भी मिलती है या नहीं?

बेशक टेलीविजन एक सशक्त माध्यम है. लेकिन आजकल इस का खतरनाक प्रभाव जिस तरह से मानसिकताएं बदल रहा है वह चिंता का विषय है. पिछले दिनों ब्रिटेन में एक नर्सरी स्कूल में कुछ बच्चे मैदान में खेल रहे थे. अचानक उन्होंने अपने संग खेलते सहपाठियों को बुरी तरह काटना शुरू कर दिया. चार से सात वर्ष के बच्चों की इस हरकत पर अध्यापक चौंके. बाद में पता चला कि इन सभी बच्चों ने देर रात को दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों के अंतर्गत दिखाई गई फिल्म 'जौज' देखी थी. यह फिल्म खतरनाक खूनी शार्क पर आधारित थी, जो आदमी को

टेलीविजन अपने सशक्त प्रभाव से नियमित दर्शकों की मानसिकता को स्पंज की भांति सोख रहा है. इसलिए इस का दास न बन कर एक दर्शक की भांति आनंद उठाते हुए इस के हानिकारक प्रभाव से बचें.

देखते ही उस पर झपट पड़ती थी.

आज ऐसा कोई नहीं है जो यह स्वीकार न करता हो कि टेलीविजन एक सशक्त और प्रभावी माध्यम है. 1959 में जब इस की शुरुआत हुई थी तो यह एक चिंताभरा प्रश्न था कि इस के प्रभाव को नियंत्रित कैसे रखा जाएगा. लेकिन अब, जब यह जवान हो चुका है तो यह वास्तव में चिंता का विषय बन गया है कि इस के बढ़ते प्रभाव को कैसे रोका जाए?

यदि आंकड़ों के अनुसार देखा जाए तो पिछले 30 वर्षों में टेलीविजन देखने वालों का औसत और समय बेहद बढ़ा है. इंगलैंड में अब लोग हफ्ते में औसतन 30 घंटे टी. वी. देखते हैं. उस का परदा भी विकसित और पहले से बड़ा हो गया है. अब रंगीन टी. वी. सेट आ गए हैं और वहां चलने वाले चार चैनलों में से अपनी पसंद के अनुसार किसी भी चैनल का कार्यक्रम देखा जा सकता है. यह जरूरी नहीं है कि आप किसी कार्यक्रम को पूरा ही देखें. चाहें तो उसे रिकार्ड कर के बाद में भी देख सकते हैं. इस के लिए अब वीडियो रिकार्डर हर जगह उपलब्ध हो गए हैं.

इंगलैंड में छोटे परदे के प्रति आकर्षण इतना बढ़ गया है कि टेलीविजन प्रसारण करने वाले अधिकारियों का हर निर्णायक कदम असफल सिद्ध हो रहा है. ▼

अधिकतर लोगों को परिवार के साथ रिकार्ड किए गए कार्यक्रम देखने में अधिक आनंद आता है. ये लोग ब्रिटेन के तीसरे दर्जे के लोग हैं. लेकिन इन के यहां वीडियो सेट आसानी से मिल जाएगा. पश्चिमी लंदन में एक धारावाहिक 'ईस्ट एंडर्स' सप्ताह में दो बार दिखाया जाता है. इस समय सर्वाधिक चर्चित इस कार्यक्रम को देखने के लिए सभी परिवार शाम पांच बजे से 10 बजे तक टी. वी. के सामने डटे रहते हैं. आंकड़ों के अनुसार टी. वी. देखने वालों में 4 से 7 वर्षीय बच्चे सप्ताह में औसतन 20 घंटे टी. वी. देखते हैं.

सवाल उठता है कि इस छोटे से परदे में आखिर ऐसा क्या आकर्षण है जिस ने लोगों की सोच को स्पंज की तरह सोख लिया है?

आई. वी. ए. टेलीविजन कंपनी के अध्यक्ष राबर्ट टावलर का मानना है कि इस का एक मात्र यह कारण है कि लोग टी. वी. के कार्यक्रमों को दर्शक की तरह नहीं देखते. 'क्विज' जैसे कार्यक्रमों के साथ वे स्वयं भी प्रतियोगी बन जाते हैं. यह अलग बात है कि 'क्विज' का असली मजा असल में वही लोग ले पाते हैं जो उस में हिस्सा ले रहे होते हैं. लेकिन

एकदूसरे को मात देने के चक्कर में दर्शक भी अपने को प्रतियोगिता से जोड़ लेते हैं.

हाल के एक सर्वेक्षण से पता लगा कि जो लोग नियमित टी. वी. देखते हैं वे टी. वी. से इस कदर जुड़ जाते हैं कि उन का हंसना, बात करना और बहस करना सभी कुछ उस के इर्दगिर्द ही लिपट जाता है. आलोचनाओं का दौर भी इसी के तहत चलता है. हालांकि ये लोग अखबार भी उतनी ही रुचि से पढ़ते हैं लेकिन प्रभावी टी. वी. ही रहता है.

संसद सदस्यों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि कुछ कार्यक्रम तो इतने वीभत्स चित्रण पर आधारित होते हैं कि वे परिवार के साथ बैठ कर देखने के लिए कतई उपयुक्त नहीं हैं.

टी. वी. कंपनियां भी चेतावनी दे चुकी हैं कि टी. वी. बच्चों के लिए हानिकारक साबित हो रहा है.

इंगलैंड में इसी कड़ी में बच्चों को 9 बजे से पहले ही बिस्तर में भेजने का एक अभियान चलाया गया था, जो पूरी तरह असफल रहा क्योंकि ज्यादातर वयस्क कार्यक्रम 9 बजे से पहले ही दिखाए जाते हैं.

अन्य सामयिक गतिविधियों में भाग न ले कर टेलीविजन को ही अपना केंद्र बनाना क्या आप के लिए खतरनाक नहीं हैं?

ऐसा नहीं है कि इस के दुष्प्रभाव में केवल बच्चे ही आए हों. बड़े भी इस से बच नहीं पाए हैं. जो लोग पहले अपना समय खेल और अन्य सामयिक गतिविधियों पर लगाते थे, वे भी अब टी. वी. के दास बन गए हैं. टी. वी. के चलते ही घर के सभी काम ठप पड़ जाते हैं.

हां, गरमियों के मौसम में जरूर लोगों की यह 'चिपक' प्रवृत्ति कम हो जाती है क्योंकि देर से सूर्यास्त होने के कारण लोग देर तक घर से बाहर रहते हैं. परंतु सर्दियों में टी. वी. देखने वालों की बाढ़ सी आ जाती है. सभी लोग चाहते हैं कि वे परिवार के सदस्यों के साथ मिल कर टी. वी. देखें.

भारत की स्थिति इस से बिलकुल मिलतीजुलती है. जैसे इंगलैंड में टेलीविजन प्रसारण करने वाले इस बारे में कोई निर्णायक कदम नहीं उठा पा रहे हैं, वैसे ही भारत का दूरदर्शन भी निरंतर असमंजस की स्थिति में है. ●

पंकज गोस्वामी
कल रात हमारे घर एक मरियल सा चोर घुसा और पापा सहित हम सब की मरम्मत करके चलता बना.
कैसे हो सकता है तुम्हारे पापा तो इंटरनेशनल बाक्सिंग चैम्पियन हैं चोर का मारमार कर कीमा नहीं बना देते
यही तो परेशानी है.. अब पापा लाख रुपए लिए बगैर मुक्का नहीं चलाते...

आई जुलाई
दीदी भैया
ताता थैया,
काट गिराई
दस कनकैया.
नानानानी
कहते रानी,
पढ़ ले, मत कर
आनाकानी.
शन्नोसाजो
अब मत नाचो,
बैठे कुछ पल,
पुस्तक बांचो.
ताऊताई
बोले भाई,
आई जुलाई
करो पढ़ाई.
—मदनलाल अग्रवाल

क्या दांत निकलने के पूरे ५००० घंटों के दौरान आप अपने बच्चे पर नज़र रख सकती हैं?

दांत निकलना शुरू होते ही आपका हँसता-खेलता लाडला अचानक रोने और चिड़चिड़ाने लगता है.

बस ज़रा नज़र चूकी नहीं कि सामने पड़ी हर चीज़ मुंह में डालकर चबाना-चूसना शुरू कर देता है.

चाहे फिर किताब हो, जूते, चादर या फिर टेलिफोन वायर... जो भी उसे मसूढ़ों के दर्द या खुजली से राहत दिलाए.

और हर ऐसी-वैसी चीज़ मुंह में डालने पर उसके कोमल मसूढ़ों में कीटाणु लगना स्वाभाविक है. जिससे उसको अक्सर दस्त या बुखार भी हो जाता है.

बरसों से माताएँ दांत निकलने की इस समस्या को बच्चों के लालन-पालन का ही हिस्सा मानकर, इससे परेशान होती आ रही हैं.

पर आज दुनिया भर की माताएँ दांत निकलते समय अपने बच्चे को देती हैं - टीथिंग जैल.

आप भी लीजिए अब राहत की सांस. क्योंकि सबसे पहली बार हम आपके लिए लाए हैं दुनिया के जानेमाने फ़ार्मूले पर आधारित दांत निकलने की ख़ास दवा - यानी बच्चे को दांत निकलते समय होनेवाली परेशानी का अंत.

रेप्टाकोज़ ब्रैट का नया टीजैल. अलग-अलग दवाएं और शिशु देखभाल संबंधी उत्पादन तैयार करनेवाली एक कंपनी जिस पर डॉक्टरों को पूरा-पूरा भरोसा है. बच्चों के मनभाते स्वाद वाला टीजैल. अपने मुन्ने के मसूढ़ों पर मलिए.

दुनिया भर की माताएँ अपने बच्चों को हँसता-मुस्कुराता देखने के लिए टीथिंग जैल पर भरोसा करती है।

आपका मुन्ना हर परेशानी भूलकर हंसता-खेलता रहेगा. टीजैल बच्चे के मसूढ़ों को आराम पहुंचाता हैं, और ही बच्चे की हर ऐसी-वैसी चीज़ मुंह में डालकर चबाने-चूसने की इच्छा को करता हैं.

अपनी नज़दीकी दवा की दुकान से टीजैल की ट्यूब लाइए. और फिर अपने बच्चे को सबसे पीड़ा-भरे दिनों में भी पाइए हंसता-मुस्कुराता, स्वस्थ तंदुरुस्त.

'एन्जॉय योअर बेबी' शिशु देखभाल संबंधी मुफ्त पुस्तिका लाइए और अपने मुन्ने को देखिए अधिक करीब से... और पहचानिए.

यहां लिखिए : बेबीकेयर डीवीज़न, रेप्टाकोज़ ब्रैट एंड क. डॉ. एनी बेसेंट रोड, वर्ली, बम्बई ४०० ०२५.

टीजैल

लौंग तेलयुक्त टीथिंग जैल

मुन्ने को रखता, सदा हँसता-मुस्कुराता.

समय होनेवाल
अलग दवाएं
करनेवाली ऐ
है.
मुन्ने के
शानी भूलक
ल बच्चे के
हैं, और
चीज़ मुंह
इच्छा को
की दुकान
और फि
पाइए
संबंधी मुफ्त
अधिक का
ज़ ब्रैट एंड क

बच्चों के मुख से

मेरा पांच वर्षीय पुत्र बड़ा बातूनी है. एक दिन वह मुझ से बोला, "पिताजी, आप तो कहते थे कि बिना मेहनत किए आदमी कुछ नहीं बन सकता."

मेरे 'हां' कहने पर वह बोला, "फिर मेहनत किए बिना मैं बड़ा भाई कैसे बन गया." उस के इतना कहते ही मैं जोर से हंस पड़ा. दरअसल कुछ दिन पहले ही मेरे यहां बेटा पैदा हुआ था. — प्रकाशचंद्र अवस्थी

*

मेरा भतीजा बड़ा चंचल है. एक बार मेरे भाई साहब एक अंगूठी बनवा कर लाए जिस में कुछ खोट निकल आई. वह गुस्से में बोले, "उस सुनार को तो मैं देख लूंगा. कमबख्त ने मेरी अच्छी हजामत कर दी."

यह सुनते ही मेरा भतीजा बड़ी सादगी से बोला, "पर पिताजी आप के बाल तो बढ़े हुए हैं. हजामत कहां हुई?" इतना सुनना था कि हम सब हसंतेहंसते लोटपोट हो गए.

— विष्णु अवासा

*

एक बार हम सब बैठे हुए 15 अगस्त की चर्चा कर रहे थे. हमारे पिताजी बता रहे थे कि पहले पाकिस्तान भारत का एक अभिन्न अंग था. लेकिन 15 अगस्त 1947 के दिन इसे हम से अलग कर दिया गया था.

तभी उन का ध्यान पास ही बैठे अपने नाती की तरफ गया, जिसे समझाते हुए वह बोले, "समझे, बेटा, भारत से ही पाकिस्तान का जन्म हुआ था."

अचानक ही वह पूछ बैठे. "अच्छा बताओ, भारत को 'भारत माता' क्यों कहते हैं?"

नाती ने तपाक से उत्तर दिया, "क्योंकि भारत ने पाकिस्तान को जन्म दिया था.

— दिलीपकुमार धींग

एक बार मैं अपने कुछ मित्रों के साथ एक मशहूर कपड़े की मिल को देखने गया. हमारे साथ मेरा 6 वर्षीय भतीजा भी था. मिल में पानी की एक बड़ी टंकी के नीचे बड़े अधिकारियों के दफ्तर को देख कर मेरे एक दोस्त ने जानना चाहा कि पानी की टंकी के नीचे ही दफ्तर क्यों बने हैं.

और कोई जवाब देता उस के पहले ही मेरा भतीजा बोल पड़ा, "इतनी सी बात आप की समझ में नहीं आई. पानी की टंकी के नीचे दफ्तर इसलिए बनाए गए हैं ताकि अधिकारियों का दिमाग ठंडा रहे."

उस का जवाब सुन कर हम सभी हंसने लगे और वह हमारा मुंह देखने लगा.

— मोहम्मद नसीर कुरैशी

*

एक बार दूरदर्शन पर 'उपभोक्ताओं के अधिकार' विषय पर कार्यक्रम आ रहा था. एक वक्ता कुछ तुतला कर बोल रहे थे और 'जिम्मेदारी' शब्द का उच्चारण वह 'जीभमारी' कर रहे थे.

उन्होंने कहा, "सरकार की भी जीभमारी है और उपभोक्ताओं की भी जीभमारी (जिम्मेदारी) है कि..." तभी पास ही बैठे मेरे छोटे भाई ने झट से कहा, "जीभ तो इन की मारी गई है और दूसरों को दोष दे रहे हैं." यह सुनते ही हम सभी ठहाका लगा कर हंस पड़े. — श्याम अलवरी

*

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अ
संपन्न
शौक
पता
चला
होते
देख
की, म
ननद
उठ
उखड़े
रहा

पति के परिवार के साथ भी आनंद उठाइए

लेख• अरुणा शर्मा
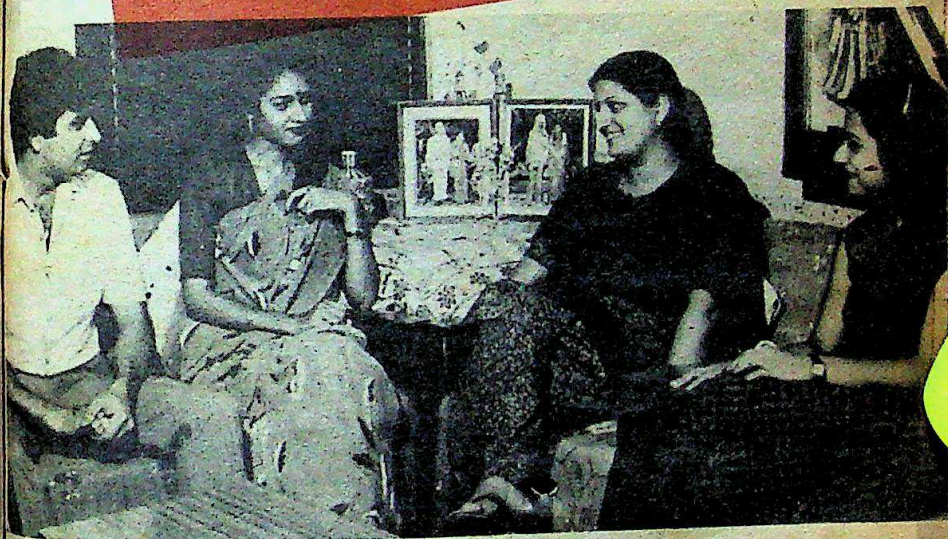
अभी कुछ दिन पहले की ही बात है कि मेरा एक परिवार में जाने का संयोग हुआ. वहां चंद दिन पहले ही विवाह संपन्न हुआ था तथा सभी लोग बहुत ही शौक व उत्साह के साथ सम्मिलित हुए थे. पता चला कि नववधू का पति नौकरी पर चला गया है, इसलिए घर में सब सदस्यों के होते हुए भी तनाव व सन्नाटा सा था. मुझे देख कर सभी ने सामान्य होने की कोशिश की, मगर नववधू किसी प्रकार सहज हो कर ननददेवरों की चुहलबाजी का आनंद नहीं उठा रही थी.

स्वाभाविक था कि वे लोग बहुत ही उखड़े हुए लग रहे थे. बड़ा ही अटपटा लग रहा था. पूछने पर पता चला कि नववधू की उदासी व तटस्थता का कारण पति का चला जाना था जिस से वह घर में आकर्षणहीनता महसूस कर रही थी तथा ननद व देवर बहुत ही निराश व दोषी महसूस कर रहे थे.

ऐसे वातावरण में अधिक समय रुकना संभव न देख कर मैं तुरंत वहां से लौट आई. मगर अनेक प्रश्न अपने दिल दिमाग में समेट लाई. क्या नववधू का इस प्रकार का व्यवहार उचित था ? क्या वह महज अपने पति की ही पत्नी है, किसी की भाभी या बहू नहीं ? मातापिता, भाईबहन जो उसे इतने चाव से अपने घर की वधू बना कर लाए थे, क्या मात्र औपचारिकता थी? क्या पतिपत्नी

के संबंधों के अतिरिक्त किसी और संबंध की कोई महत्ता नहीं है? यदि नववधू अपने व्यवहार के बदले में तटस्थ व्यवहार या उपेक्षा पाती है तो क्या इस के लिए वह स्वयं ही दोषी नहीं है ?

यह बड़ा स्वाभाविक सा तथ्य है कि नववधू पति के कारण ही पतिगृह में आती है. मगर यह बात वह भूल जाती है कि पति का अस्तित्व मात्र अपने व्यक्तित्व में ही नहीं है, मगर उस का मन उन रिश्तों की डोर में भी बंधा होता है, जिन्होंने उस में संस्कार रोपे हैं, जिन के साथ विवाह से पूर्व उस ने सुखदुख बांटे हैं, अपना बचपन साथ बिताया है. अतः रिश्तों की यह मजबूत डोर इतनी आसानी से टूटनी संभव नहीं होती.

जब नए रिश्ते के बंधन में बंधते ही नए प्राणी के घर में आने से घर के सदस्यों के प्रति पति के प्रेम की डोर टूटने लगती है तो इस का दोषी पत्नी को ही ठहराया जाता है, किसी और को नहीं. हालांकि ये रिश्ते देखने में बड़े ही औपचारिक से लगते हैं, मगर ये पतिपत्नी के जीवन निर्धारण में बड़ी ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं. कोई भी पति यह नहीं चाहेगा कि पत्नी के कारण उस के आत्मीयजनों के स्नेह में कोई कमी आए. यही कारण है कि विवाह के बाद जब नववधू परिवार के अन्य सदस्यों के साथ तालमेल नहीं बैठा पाती तो कुछ दिन तो पति काल्पनिक उड़ानें भरने के कारण कुछ नहीं देख पाता. मगर जब कदम यथार्थ के धरातल पर ठहरते हैं तो या तो पति का दब्बू व्यक्तित्व सामने आता है या फिर आपसी

ससुराल में वधू का व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि वहां के सभी रिश्ते आत्मीयता की डोर में बंधे रहें और उन के साथ बिताए एकएक पल को सुखद अंदाज में जिया जाए.

संबंधों में टकराहट व कलह का सामना करना पड़ता है. परिणाम यह होता है कि वधू समस्त परिवार को स्नेहसूत्र में बांधने के बजाए परिवार में तो विघटन लाती ही है, साथ ही पति का भी विश्वास व स्नेह खो देती है.

अकसर यह देखने में आता है कि यदि वधू को पति के प्रवास के कारण या परिस्थितिवश ससुराल में कुछ दिनों के लिए पति के बिना रहना होता है तो घर में सासससुर, स्नेही ननद व देवरों के होते हुए भी वह उसे जेल से कम नहीं समझती. यही कारण है कि अधिकांश पत्नियां मायके में रहना अधिक पसंद करती हैं.

माना पति उन के सर्वस्व हैं, मगर ससुराल वाले भी तो ग़ैर नहीं हैं. फिर पति के साथ तो तमाम उम्र रहना होता है, जबकि ससुराल में ननद व देवरों के साथ रहना महज संयोग व अस्थायी होता है. कुछ ही दिनों में ननद की शादी हो जानी है तथा देवर को कहीं नौकरी पर चले जाना है. फिर जब साथ रहना ही है तो उन के साथ बिताए एकएक पल को क्यों न सुखद बना कर भरपूर अंदाज में जिया जाए.

अगर आप उस घर की चारदीवारी में सारे दिन रहते हुए भी पति की याद से चिपकी रहती हैं और स्वयं को कैदी से कम नहीं मानती हैं तो अब जानने की बात यह है कि आप के क्षणप्रतिक्षण याद दिलाने से न तो आप के पति ही शीघ्र लौट आएंगे और न ही समय शीघ्र व्यतीत हो जाएगा, बल्कि इस चक्कर में आप स्वयं को घर के अन्य सदस्यों से भी दूर करती जाएंगी. जब आप अपने पति के साथ कहीं और जाएंगी तो आप के पास कुछ नहीं होगा जेलखाने की कैद की यादों के सिवा.

यदि आप थोड़ा सा प्रयास करें तो आप के पति की अनुपस्थिति आप के लिए सजा नहीं बन जाएगी. हां, जब भी आप पति के साथ कहीं और जाएंगी तो आप के दामन में होंगे ननददेवरों के साथ गुजारे क्षण और सासससुर के निर्देशन में नए कामों के

यदि आप ननद की इच्छाअनिच्छा का ध्यान रखेंगी तो वह भी आप की भावनाओं का ध्यान रख आप का मन बहलाने की कोशिश करेगी.

ही आप की सफलता मात्र उस परिवार से संबंधित होने में है. आप की वास्तविक सफलता पति के साथसाथ परिवार के अन्य सदस्यों को वास्तविक रूप से पा लेने में है और उन का हृदय जीत लेने में है. आप की ननदों या देवरों की रुचि मात्र भाई की पत्नी में नहीं होती, बल्कि अपनी प्रिय भाभी में भी होती है. अब यह पूर्णतया आप पर निर्भर करता है कि आप किस रूप को प्रधानता देती हैं. पति के परिवार को सहजता से अपना लेती हैं या अपने ही गलत व्यवहार द्वारा उस से कट कर पति को भी दूर ले जाती हैं.

अनुभवों का सुख. तब वह समय भी दूर नहीं होगा, जब आप के देवर व ननद आप के आगमन पर स्वयं को दोषी नहीं महसूस करेंगे तथा आप के आने का बेसब्री से इंतजार करेंगे. यदि आप उन्हें उचित आदर व स्नेह देंगी तथा उन की इच्छाअनिच्छा का ध्यान रखेंगी तो वे भी आप की भावनाओं का ध्यान रखेंगे तथा आप का मन बहलाने की कोशिश करेंगे.

कोशिश कीजिए कि उन्हें महसूस न हो कि आप के आने से उन्होंने अपना बेटा या भाई खो दिया है, बल्कि उस परिवार में स्वयं को उत्साह व खुशी को बढ़ाने वाली तथा सुखदुख की साथी की तरह स्थापित कीजिए, जिस से परिवार में फूट न पड़े. साथ ही आप सही मायनों में गृहलक्ष्मी कहलाएं.

यदि किसी कार्यक्रम में आप के पति आप के साथ न जा सकें तो न तो सारा कार्यक्रम ही चौपट कर के सब को उदास कीजिए और न ही अकेले जाने में संकोच दिखाएं. न जाने के लिए साससुसर और ननददेवर को जलीकटी सुनाना भी गलत है. इस से न तो आप ही सुखी रह सकेंगी, न ही अपराधबोध से ग्रस्त परिवार के अन्य सदस्य. आप का जरा सा उत्साहपूर्ण रवैया उन के आनंद व प्रसन्नता को कई गुना बढ़ा सकता है.

याद रखिए, पति के प्रति आप का समर्पण मात्र उसे पा लेने के लिए नहीं है, न

यदि संयोगवश किसी कार्यक्रम में आप, के व आप के पति के साथ आप के ससुराल के किसी भी सदस्य को जाना पड़े तो उन्हें अनचाहा न जताइए. इस प्रकार व्यवहार कीजिए कि कभी उन्हें भविष्य में आप के साथ जाना पड़े तो हिचकिचाएं नहीं. इस तरह वे आप के सहयोगी ही नहीं सिद्ध होंगे, बल्कि आप के साथ आनंदित भी हो सकेंगे. यों आप के पति उन के लिए बेगाने नहीं बनेंगे, बल्कि वह उन के साथ पहले वाली आत्मीयता की डोर से बंधे रहेंगे. वह बेटा या भाई बने रहेंगे, जो अपनी नई जिम्मेदारी को अपने भाईबहन व परिवार के सदस्यों के स्नेह व सहयोग से पूरी करना चाहते हैं. अपने विवाह के फलस्वरूप वह कुछ गंवाएंगे नहीं, बल्कि पाएंगे एक ऐसा जीवनसाथी जो न केवल उन की जिंदगी में नए रंग भर कर एक नए जीवन की ओर अग्रसर ही करेगी, बल्कि पुराने रिश्तों की डोर को बड़ी ही खूबसूरती से इस तरह जोड़ेगी कि वह गांठ लाख देखने पर भी नजर नहीं आएगी. इस की परिणति पूर्णतया आप पर ही निर्भर है.

शैतानी की निशानी

सुरक्षा दे हैण्डीप्लास्ट

अपने नटखट शैतानों की शरारतों से कौन मां परिचित नहीं?
साहसी राजकुमार. बेधड़क बहादुर.
मासूम मुनियारानी. हुड़दंगा हुल्लड़बाज.

छिलने, कटने, खरोंच पड़ने और चोट लगने की शिकायत तो इन सब के साथ रहने ही वाली है. खेल जो रहे हैं.

अब ऐसे मौकों पर ही उन्हें चाहिए एक सच्चा दोस्त— दोस्तीभरी पट्टी हैण्डीप्लास्ट.

हैण्डीप्लास्ट आपके बच्चों के मामूली घाव को जल्द अच्छा करता है.

क्योंकि इसमें वही जीवाणुनाशक दवा है. जिसका इस्तेमाल डाक्टर करते हैं.

और घाव भर जाने के बाद हैण्डीप्लास्ट का न चिपकनेवाला पैड दाग छोड़े बिना आसानी से निकल आता है.

इसलिए हैण्डीप्लास्ट हमेशा अपने पास रखिए.
क्या पता कब शरारत का एक और नमूना सामने आ जाये?
क्योंकि यह सब तो लगा ही रहेगा. है न!

HTA 2050

अपने बच्चों को निडर बनाइए

लेख ● हेमंतकुमार यादव 'शशि'

"चुपचाप सो जाओ, नहीं तो झोले वाला बाबा पकड़ कर ले जाएगा."

"ज्यादा शरारत करोगे तो पुलिस से पकड़वा दूंगा."

"वह देखो भूत आया, जल्दीजल्दी खा लो, नहीं तो पकड़ लेगा."

ये कुछ ऐसे वाक्य हैं जिन का प्रयोग मातापिता अकसर ही बच्चों को डराने के लिए करते हैं. मातापिता यह सोचते हैं कि ऐसा करने से बच्चे डर कर उन की बात मान लेंगे. ऐसा होता भी है. तत्काल तो बच्चे डर कर उन की बात मान लेते हैं. लेकिन यह डर बच्चे के कोमल मन में हमेशा के लिए बैठ जाता है. मातापिता की यह आदत बच्चों के विकास में बहुत बड़ी बाधा है.

प्रबुद्ध मानवतावादी विचारकों तथा विद्वानों का मानना है कि बच्चों में शुरू से ही शक्ति, साहस, बुद्धि तथा संवेदनशीलता जैसे चारित्रिक गुणों का विकास करना चाहिए. बच्चों के भविष्य निर्माण में इन गुणों का काफी महत्त्व है.

कुछ मातापिता बच्चों को अकारण डराते रहते हैं. यह ठीक नहीं है क्योंकि बच्चा जब सचमुच ही डर जाता है तो यह डर धीरेधीरे उस में मानसिक बीमारी के रूप में प्रकट होता है. परिणामस्वरूप वह किसी भी वस्तु से डरने लग जाता है.

लेखक के पड़ोसी घनश्याम बराबर ही अपने बच्चे को डराते रहते हैं. बच्चे को डरा कर काम करवाने की उन की आदत पड़ गई है. कभी पड़ोसी से अखबार मंगवाना हो तो डरा कर ही भेजते हैं, "जाओ, हरीश के यहां से अखबार ले आओ. यदि नहीं लाओगे तो काली मैया से पकड़वा दूंगा."

अकारण ही बच्चों को डरा कर अपनी बात मनवाने वाले मातापिता को चाहिए कि बच्चे को प्यार से समझा कर उस में साहस व निडरता उत्पन्न कर उस के बौद्धिक विकास में सहायक बनें.

एक दिन एक बहुरुपिया काली का भयानक रूप धारण कर के घर के सामने से गुजर रहा था. महल्ले के कुछ शरारती बच्चे उस के पीछे 'काली मैया काली मैया' का हल्ला करते हुए चले आ रहे थे. तभी घनश्याम का बच्चा घर से बाहर निकला. काली मैया को साक्षात भयानक वेश में देख कर वह डर गया. वह जोरजोर से चिल्लाने और रोने लगा. उस ने अब तक केवल तथाकथित काली मैया का नाम ही सुन रखा था. मगर अब तो उस ने देख लिया था कि काली मैया कितनी भयानक होती है. अब वह दिन में भी घर से नहीं निकलता है. जबकि विचार किया जाए तो बच्चे में डर पैदा करने की गलती घनश्याम ने ही की थी.

यदि बच्चा किसी वस्तु या जानवर से डरता हो तो मातापिता को चाहिए कि उस वस्तु या जानवर से बच्चे के मन का भय निकालने की कोशिश करें. उस वस्तु को छू कर या उस जानवर के करीब जा कर बच्चे का भय दूर करें. बच्चे को भी उस वस्तु को छूने तथा उस के करीब आने के लिए प्रोत्साहित करें. हां, इस बात का ध्यान रखें कि वह वस्तु या जानवर वास्तव में खतरनाक न हो.

जिस चीज से बच्चा कभी डरा न हो या जिस के बारे में उसे पूरी जानकारी न हो, उस के बारे में बच्चे को कोई डर वाली बात नहीं बतानी चाहिए. यदि बच्चा कोई गलत काम कर रहा हो तो उस का परिणाम जरूर बता देना चाहिए. जैसे, कोई बच्चा यदि खुली छत पर खेल रहा हो तो खेलने से मना करने के लिए कोई झूठी डराने वाली बात नहीं कहनी चाहिए, बल्कि उसे यह बताएं कि खुली छत पर खेलने से नीचे गिर जाने की संभावना रहती है. कहीं वह नीचे गिर जाएगा तो उस के हाथपांव और दांत टूट जाएंगे.

इस से बच्चा समझ जाएगा कि खुली छत पर लापरवाही से नहीं खेलना चाहिए.

बिना कोई कारण बताए बच्चे को डरा कर खुली छत पर खेलने से मना कर क्या आप बच्चे में खुद की सुरक्षा करने की जिम्मेदारी का एहसास उत्पन्न कर सकती हैं? ▶

छोटीछोटी बातों को ले कर बच्चे को डरा कर उस के शारीरिक और मानसिक विकास में बाधक न बनें.
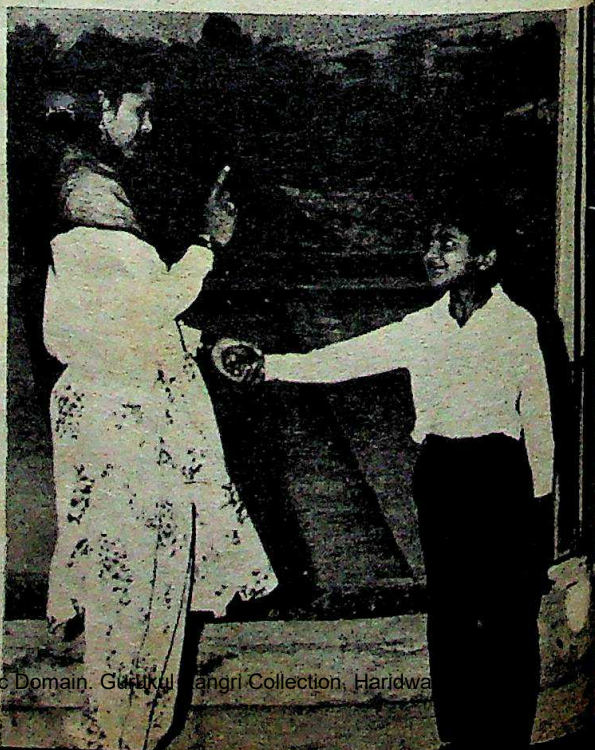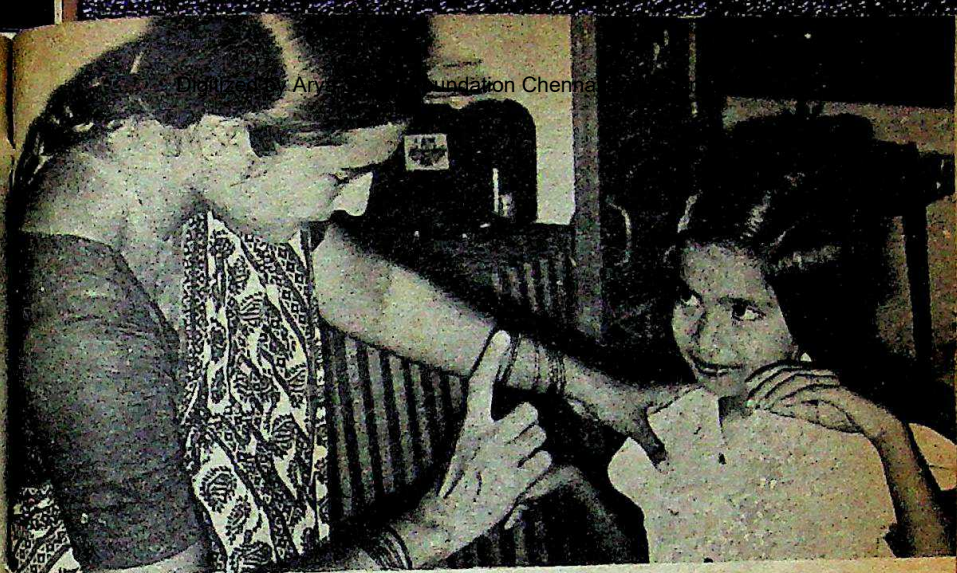
उस के मन में अपनी सुरक्षा खुद करने की जिम्मेदारी भी पैदा होगी. भविष्य में बच्चा अपनी सुरक्षा खुद करने लगेगा तथा वह निडर भी बना रहेगा.

बच्चों के लिए हर बात सत्य है. बच्चे भूतप्रेत, राक्षस की कहानियों को सच मान लेते हैं. ऐसी कहानियां सुनने वाले बच्चे को जरा यह कह कर तो देख लीजिए कि 'वह अंधेरे में जाए'. वह डर से नहीं जाएगा. कहानियां सुनतेसुनते उसे यह विश्वास हो जाता है कि अंधेरे में भूतप्रेत तथा राक्षस रहते हैं. इसी डर से वह अंधेरे में जाना नहीं चाहता है. एक बार यदि बच्चों के मन में डर बैठ जाए तो बड़े होने तक उन के मन से वह डर नहीं निकल पाता है.

छोटीछोटी बातों को ले कर बच्चों को डराने वाले मातापिता अनजाने ही उन के शारीरिक एवं मानसिक विकास में बाधक बनते हैं. मातापिता को चाहिए कि यदि बच्चा उन की बात नहीं मानता है तो उसे प्यार से समझाएं. भूल कर भी किसी चीज का डर दिखा कर काम करवा लेने की कोशिश नहीं करनी चाहिए. बच्चे को हमेशा ही डर के वातावरण से दूर रखना चाहिए. मातापिता जिस तरह बच्चे को किसी बीमारी या गंदी आदतों से बचाते हैं, उसी तरह डर की बीमारी से भी बचाएं. बच्चे को चोर, डाकू, भूतप्रेत का डर तो बिलकुल नहीं दिखाना चाहिए क्योंकि यह डर उसे दिन ही नहीं, रात में भी सपनों में डराता है.

जो बच्चा रात में सोते हुए अचानक चिल्ला कर रोते हुए उठ बैठे तो यह निश्चय ही इसी डर का कुपरिणाम है. ऐसे बच्चे को तुरंत गुस्से में आ कर डांटना नहीं चाहिए. उस से पूछना चाहिए कि उस ने सपने में क्या देखा है. फिर प्यार से पुचकार कर उस का डर कम करना चाहिए.

बच्चों को निडर बनाने के लिए स्वयं मातापिता को निडर बनना होगा. बहुत से मातापिता बच्चों की तरह ही डरते हैं. ऐसे मातापिता को चाहिए कि पहले अपना डर दूर करें.

यदि अपने बच्चों को साहसी, कर्मठ तथा योग्य बनाना चाहते हैं तथा सही ढंग से उन का मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक विकास करना चाहते हैं तो उन में साहस का संचार कीजिए, उन्हें निडर बनाइए. ●

नेस्टम बेबी सीरियल.
आदर्श शुरुआत.
और स्वस्थ संतुलित विकास.
दूध में मिला नेस्टम –
एक पौष्टिकता से परिपूर्ण आहार। जब आपका शिशु लगभग ४ महीने का हो जाता है तब उसे दूध के साथ साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है। नेस्टम बेबी सीरियल शिशुओं के लिए आसानी से पचने वाला विशेष तौर पर तैयार किया गया आहार है।
पहले से उबाले हुए गुनगुने दूध में नेस्टम मिलाइए और बस पौष्टिकता से परिपूर्ण आहार तैयार है। शिशु के स्वस्थ विकास और उसकी चुस्ती-फुर्ती का आधार। शिशु को देना शुरू कीजिए फिर देखिए उसके बढ़ते रंग ढंग।
डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए।
नेस्टम के साथ –
शिशु के आहार में नित नई बात।
अपने बढ़ते हुए शिशु को धीरे-धीरे आप नए-नए स्वादों से परिचित कराइए। नेस्टम मिला कर उबली हुई सब्जियाँ, फल और दालें कुछ भी खिलाइए। परिवार के भोजन में उसे भी शामिल होने के लिए तैयार कीजिए।
नेस्टम®
राइस
आयरन और विटामिनों से भरपूर। दूध में मिलाइए।
मुफ़्त
आपके शिशु को आहार में विविधता ज़रूर भाएगी। इसलिए मुफ़्त "नेस्टम रेसिपि पुस्तिका" के लिए लिखिए:
नेस्टम,
पो. बाक्स नं. 6016
नई दिल्ली 110 008.
Nestlé
Nestum
Rice
Nestlé
Nestum
baby cereal
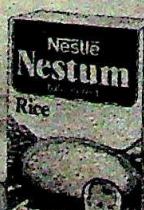
दोपहर के करीब 2 बजे होंगे. बच्चों के स्कूल से लौटने में अभी देर थी. घर के कामकाज की थकान से टूटी, थोड़ी देर आराम करने के खयाल से मैं बिस्तर पर लेटी ही थी कि घंटी बजी. कौन होगा इस वक्त. सोचते हुए मैं उठने ही लगी थी कि घंटी फिर बजी. समझ गई कि पड़ोसी की छोटी लड़की टूटू ही होगी. किसी को उठने का समय ही नहीं देती, घंटी पर से उंगली उठाते ही फिर रख देती है. दरवाजे तक पहुंचतेपहुंचते तीसरी बार घंटी बजी. दरवाजा खोलते ही सुनाई पड़ा, "चाची, मां ने कहा है बड़ी कैंची दे दो."

बेवक्त उठाए जाने और बारबार घंटी बजाए जाने पर गुस्सा तो पहले ही आ रहा था. उस की मांग और लहजे ने मुझे और भी भड़का दिया. पर पांच वर्षीया बच्ची से भला क्या कहती, जितना बन पाया उतनी ही मधुर आवाज में पूछा, "किस लिए चाहिए कैंची मां को?"

"मेरा फ्राक काटना है."

"पर तुम्हारी मां को तो सिलाई नहीं आती?"

"अब सीख रही हैं. हमारे ऊपर वाली रमा चाची आई हैं सिखाने. कल ही मां मेरे फ्राक के लिए नया कपड़ा बाजार से लाई हैं."

कैंची दे कर मैं अंदर चली आई. बिस्तर पर फिर से लेटने का विचार दिमाग से निकल गया था. मैं यह सोचने व समझने की कोशिश

लेख ● कनु सभरवाल

मांगिए मगर दूसरों की सुविधा देख कर

कर रही थी कि जब सिलाई का शौक चढ़ा है तो फिर बाजार से कैंची क्यों नहीं खरीद लाई. विचारधारा शुरू होने से पहले ही कट गई. घंटी फिर से बारबार बजने लगी थी. दरवाजा खोल, मैं ने गुस्से में पूछा, "अब क्या चाहिए?"

"फीता," सीधा सा उत्तर मिला.

"घर में नहीं है क्या?"

"चाची, है तो सही, मगर पता नहीं कहां है. मां कहती हैं अब कौन ढूंढ़े जा कर, चाची से ले आओ."

दृश्य दो

इतवार का दिन. सुबह के साढ़े दस बजे हैं. बच्चे टेलीविजन देख रहे हैं और पति अखबार पढ़ने में मग्न हैं. मैं रसोईघर में केक बनाने में लगी हूं कि अचानक घर की शांति भंग हो जाती है. घंटी बजती है. मैं जानती हूं कि कोई दरवाजा नहीं खोलेगा. मैदे से सने हाथों से दरवाजा खोल कर देखती हूं कि सुबीर खड़ा है.

थोड़ी देर मेरी तरफ देखते रहने के बाद वह हिचकिचा कर कहता है, "चाची, अखबार का साहित्य संबंधी परिशिष्ट थोड़ी देर के लिए दे दीजिए."

"क्यों?"

"गुड़िया कामिक (किमी डोनलड) वाला पन्ना देखने की जिद कर रही है."

"आज तुम्हारा अखबार नहीं आया क्या?"

"ऐसी बात नहीं है, चाची."

"तो फिर?"

"पिताजी पढ़ रहे हैं और पढ़ते हुए वह अखबार का कोई भी पन्ना किसी को नहीं देते. गुड़िया रोए जा रही है. मां को डर है कि कहीं पिताजी गुस्से में आ कर उसे पीट न दें इसलिए कहती हैं कि चाची से ले आओ." थोड़ा रुक कर सुबीर ने फिर कहा, "मां कह रही थीं कि पूरी बात जान कर चाची जवाब नहीं देंगी."

"पर अखबार तो तुम्हारे चाचाजी पढ़ रहे हैं, बेटे."

"प्लीज चाची, थोड़ी देर के लिए ही चाहिए. चाचाजी से अनुरोध कर दीजिए न गुड़िया की खातिर. फुजूल में पिट जाएगी बेचारी."

दृश्य तीन

शाम के सात बजे हैं. मैं अपनी भाभी के साथ बाहर बगीचे में बैठी हूं. मेरे पति, भैया व बच्चे बाजार गए हुए हैं. चूंकि हम दो वर्ष बाद मिले हैं इसलिए बातों में इस कदर खोए हुए हैं कि किसी भी चीज का ध्यान नहीं. अचानक "मेमसाहब, मेमसाहब," सुनाई पड़ता है. देखती हूं सामने रामू खड़ा है, सरला जी का नौकर.

"हां, रामू, क्या बात है?"

"थोड़ा नमक चाहिए, मेमसाहब."

"क्यों आज नमक खत्म हो गया घर में क्या?"

"है थोड़ा सा," रामू ने अपने खास अंदाज में कहा, "मगर मेरी मेमसाहब कहती हैं कि घर में थोड़ा ज्यादा नमक रहना चाहिए. शायद कोई मेहमान ही आ जाए रात को."

मुझे खीज आ गई. मैं ने कहा, "ठहरो, पैसे देती हूं. बाजार से जा कर ले आओ."

"मेमसाहब ने बाजार जाने से मना किया है. कहती हैं कि मैं जब भी बाजार जाता हूं एक घंटे से पहले वापस नहीं आता. कह रही थीं कि कल या परसों जब स्वयं बाजार

किसी से कुछ मांगना ठीक नहीं लेकिन फिर भी मजबूरी में दूसरे की परेशानी और वक्त बेवक्त को मद्देनजर रख कर यदि मांगा जाए और काम के बाद तुरंत वापस कर दिया जाए तो न तो संबंध टूटेंगे न ही प्यार.

जाएंगी तो लेती आएंगी."

दृश्य चार

पति व बच्चे कार में बैठ चुके थे. मैं दरवाजे पर ताला लगा रही थी कि सीढ़ियों से तेजी से उतरता हुआ मनीष दिखाई दिया. मैं एक क्षण के लिए रुक गई. पास आ कर हांफते स्वर में उस ने सिर्फ इतना कहा, "चाची."

"क्या बात है, बेटे?" समझदार होने के कारण यह बच्चा मुझे बहुत अच्छा लगता था.

"चाची, दिव्या को बहुत तेज बुखार है."

"डाक्टर के पास ले जाना है क्या?"

"नहीं, चाची, थर्मामीटर चाहिए. डाक्टर को सुबह दिखाया था. उस ने कहा था कि जब भी महसूस हो, इस का बुखार देख लेना."

"बेटे, मैं ने तो सुबह ही कहा था कि जब तक दिव्या पूरी तरह से ठीक नहीं हो जाती थर्मामीटर अपने ही पास रखो."

"मां कहती हैं कि किसी की चीज ज्यादा देर नहीं रखनी चाहिए.

मांगी हुई चीज यदि जल्दी ही धन्यवाद के साथ लौटा दी जाए तो रिश्तों में मधुरता पहले की तरह बनी रहेगी.

मैं कहना चाहती थी कि मां से कहो किसी से बारबार चीज नहीं मांगते, पर कह न सकी. सिर्फ इतना कहा, "हम बाजार जा रहे हैं. मां से पूछ लो अगर कहें तो बाजार से एक थर्मामीटर ला दूंगी."

"मैं ने कहा था, चाची," मनीष ने मायूस होते हुए कहा, "परंतु मां कहने लगीं क्या जरूरत है, कौन सा हर रोज जरूरत पड़ती है. साल में कभी एकआध बार ही तो कोई बीमार पड़ता है, सो पड़ोस से ले कर काम चल ही जाता है."

ये चारों दृश्य न तो किसी उपन्यास की पृष्ठभूमि से लिए गए हैं और न ही ये किसी खाली मस्तिष्क की उपज हैं. ये तो हमारे इर्दगिर्द घटने वाली सैकड़ों घटनाओं में से कुछ हैं. आप सभी पाठकों ने कभी न कभी, किसी न किसी पात्र के रूप में कोई न कोई भूमिका जरूर निभाई होगी. हां, अगर बदला होगा तो सिर्फ संवाद.

हम परिवार की एक इकाई में रहते हैं. हमारी कुछ आवश्यकताएं हैं. ऐसा संभव नहीं कि हम अपनी सभी जरूरतें हर समय अपनेआप में रह कर ही पूरी कर सकें. न ही हम अपने आसपास से, समाज से कट कर रह सकते हैं. जिंदगी में कई अवसर ऐसे आते हैं जब हमें अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए अपने पड़ोसियों व मित्रों की सहायता की जरूरत पड़ती है. मेरे साथ भी ऐसा कई बार हुआ है.

पिछले महीने की बात है. शनिवार का दिन था. दोपहर के करीब 2 बजे थे. तार मिला. मेरे पति को जल्दी से दिल्ली पहुंचना था. देखा तो घर में हवाई जहाज की टिकट के लिए पूरे रुपए नहीं थे. बैंक बंद हो चुका था. कोशिश की कि बनिए को चेक दे कर उस से नकद रुपए ले लें परंतु उस दिन उस के पास भी पर्याप्त रुपए नहीं थे. आखिर पड़ोसियों से ही मांगने पड़े.

ऐसी ही एक और घटना कुछ दिन पहले हुई. शाम को घर में कुछ मेहमान आ गए. उन के लिए चाय बनाई, पर दूध फट गया. सारा दिन बिजली नहीं थी, शायद इसी लिए फ्रिज में रखा दूध खराब हो गया था. ताजा दूध एक घंटा पहले आया ने गिरा दिया था. बाजार से उस समय दूध मिलने की न तो कोई संभावना थी और न ही घर में कोई था जो दूध ला सकता. डब्बे के सूखे दूध की ही चाय बनानी पड़ी. सभी ने पी, मगर एक वृद्ध सज्जन ने इनकार कर दिया. कहने लगे कि मैं यह चाय नहीं पी सकता. चाय के अलावा कुछ ठंडा पेय भी वह नहीं लेते थे. उन की चाय के लिए दूध आखिर पड़ोस से मांगना ही पड़ा.

कुछ आवश्यक बातों का ध्यान रखिए

इन सभी घटनाओं से एक बात साफ तौर पर उभरती है कि मांगने की समस्या कभी न कभी सब के सामने जरूर आती है. परंतु अगर सभी घटनाओं को ध्यान से पढ़ा व परखा जाए तो हम इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि हर मांग उचित नहीं. कई बार हमें अपनी जरूरत इतनी महत्त्वपूर्ण लगती है कि हम किसी और पहलू पर ध्यान ही नहीं देते.

किसी से कोई भी चीज मांगने से पहले हमें चाहिए कि हम अपनेआप से कुछ प्रश्न करें. मांगना क्यों जरूरी है? क्या हम यह चीज बाजार से नहीं मंगवा सकते (नमक वाली घटना)? जिस से हम कोई चीज मांगने जा रहे हैं उस को भी तो कहीं उस की जरूरत नहीं (अखबार वाली घटना)? क्या मांगने का समय सही है? कहीं हम किसी को बेवक्त तो परेशान नहीं कर रहे (कैंची, फीते वाली घटना)? कहीं हम वही चीज पहले भी तो नहीं मांग चुके (थर्मामीटर वाला किस्सा)? कहीं हम कोई ऐसी कीमती या व्यक्तिगत चीज तो नहीं मांग रहे जिसे देने में किसी को हिचकिचाहट हो जैसे कि थोड़ी देर के लिए मिक्सी, टोस्टर, सिलाई मशीन, बच्चों के जन्मदिन के गानों वाले कैसेट वगैरहवगैरह.

अब लौटा भी दीजिए

अकसर देखने में आया है कि कुछ लोग मांगने में तो बहुत जल्दी करते हैं परंतु चीज लौटाने में उतनी जल्दी नहीं दिखाते. कुछ लोग तो चीज लौटाना ठीक भी नहीं समझते. खासकर खानेपीने की चीजें. अब अगर देखा जाए तो पहले तो खानेपीने की चीजें मांगनी ही नहीं चाहिए. पर अगर कभी मांगने की जबरदस्त जरूरत आ भी पड़े (दूध वाली घटना) तो यह बहुत जरूरी है कि अवसर मिलने पर उसी दिन या फिर अगले ही दिन, चीज वापस भेज दी जाए. शिष्टाचारवश यह भी आवश्यक है कि इस काम के लिए नौकर या बच्चे को न भेज कर स्वयं जाएं और जहां तक हो सके उन्हें इस बात से जरूर अवगत कराएं कि मांगने की स्थिति क्यों उत्पन्न हुई. अगर किसी कारणवश स्वयं न जा सकें तो एक पत्र साथ में जरूर भेजें.

हमारे शास्त्रों में किसी से कुछ मांगना बुरी बात मानी गई है. मांग कर न लौटाना भूल से या किसी अन्य कारणवश तो गुनाह समान है. पर कई बार देखने में आता है कि लोग चीज ले कर चुप हो जाते हैं. ऐसे में अगर कभी देने वाला अपनी चीज वापस मांग ले तो

बस, उस से बुरा इनसान तो इस धरती पर बसता ही नहीं.

मार्च की बात है. वार्षिक परीक्षाओं में कुछ ही दिन शेष थे. पड़ोसियों का लड़का सामान्य ज्ञान की किताब मांग कर ले गया. यह कह कर कि थोड़ी ही देर में वापस कर जाएगा. घंटे दिनों में बदल गए, पर किताब वापस नहीं आई. पांचवें दिन मैं ने नौकर को किताब लाने के लिए भेजा. जवाब आया कि किताब तो वापस कर दी थी. इस बार बेटे को भेजा. किताब तो वापस आ गई मगर इस संदेश के साथ, "इतनी भी क्या जरूरत है आप की मां को, हम पर भरोसा नहीं रहा क्या? किताब रख थोड़े ही लेते?"

सारा दिन मन खराब रहा. अपनी ही बेवकूफी व गलती पर गुस्सा आता रहा. बेवकूफी इसलिए कि उन की आदत जानते हुए भी किताब दी. गलती इसलिए कि वापस मांगने की हिमाकत की.

हमें चाहिए कि अगर कभी कोई चीज मांगने की जरूरत आ पड़े तो काम पूरा होते ही लौटा दें. अगर किसी ने चीज दे कर दोस्ती या पड़ोसी होने का कर्तव्य निभाया है तो हमें भी यह वस्तु जल्दी से, धन्यवाद सहित लौटाने का अपना कर्तव्य निभाना चाहिए.

नुकसान होने पर

छुट्टी का दिन था. मेरे पति किसी काम से शहर से बाहर गए हुए थे. पड़ोस के कन्हैयालाल आए और कहने लगे, "भाभी जी, सुदर्शन का बैडमिंटन रैकेट तो दीजिए. मेरा भाई आया हुआ है. उस के साथ खेलने जाना है."

चार दिन बाद मेरे पति दौरे से वापस आए. शाम को खेलने जाने के लिए तैयार हो कर देखा तो रैकेट गायब था. मैं ने जल्दी से बेटे को दौड़ाया कि कन्हैयालाल चाचा से रैकेट वापस ले कर आओ. बेटा खाली हाथ लौट आया. आ कर संदेश दिया, "चाचा थोड़ी देर में आ कर आप से बात करेंगे." मैं

द्वीपीय पक्षियों की लुप्त होती प्रजातियां

मनुष्य की आबादी के प्रसार के कारण दिनोदिन वन क्षेत्र घटते जा रहे हैं. इस का सीधा प्रभाव पर्यावरण तथा वन्य पक्षियों पर पड़ रहा है. 17 वीं शताब्दी के बाद समुद्री द्वीपों के किनारे रहने वाले पक्षियों की 90% प्रजातियां लुप्त हो चुकी हैं. और अब अन्य प्रजातियों के लुप्त होने का खतरा भी बढ़ता जा रहा है.

पिछले दिनों विश्व वन्य जीवन कोष द्वारा जारी की गई एक रिपार्ट के अनुसार दक्षिणी तथा मध्य प्रशांत महासागर के अनेक द्वीपों में रहने वाले बहुत से पक्षियों की प्रजातियां लुप्त हो रही हैं. इन द्वीपों में सेशेलस की एलडवारी प्रजाति भी शामिल है. इस प्रजाति के 30 पक्षी 1983 में आखिरी बार देखे गए थे.

इसी प्रकार आस्ट्रेलिया का नोट फोक भी 1986 के सर्वेक्षण में नहीं पाया गया.

रिपोर्ट में बताया गया है कि इन पक्षियों को हर कहीं शिकार और खाना नहीं मिलता. पंख भारी होने से उड़ने में भी इन्हें असुविधा होती है. अधिक अंडे देने, तेजी से बढ़ने और बड़ा आकार होने में ही इन की सारी ऊर्जा चली जाती है. इन की निडरता के कारण मनुष्य से भी इसे खतरा है, जैसे डोडो पक्षी ही हजारों की संख्या में मार गिराया गया. इस के अतिरिक्त द्वीपों में भोजन और घोंसलों का भी अभाव रहता है.

इन सब बातों के बावजूद, अगली सदी में लुप्त हो रही प्रजातियों की संख्या कम की जा सकती है, अगर जंगलों का प्रसार कर के इन्हें आदमी और उस के पालतू जानवरों से बचाया जा सके.

कसमसा कर रह गई. पति के तेवर देख कर उन से आंख न मिला सकी.

करीब तीन घंटे बाद, रात होने पर कन्हैयालाल सपत्नीक आए. चाय की चुसकियां लेते हुए मेरे पति से बोले, "यार, तुम्हारा रैकेट भी क्या चीज था. मेरे भाई से शटल उठाते हुए एक बार जब जमीन से लगा, दो टुकड़े हो गए. बहुत पुराना था क्या?"

"हां, पिछले करीब पंदरह वर्षों से मेरे पास था. परंतु टूटने वाली हालत में तो बिलकुल नहीं था."

"तो भई तुम क्या समझते हो कि जानबूझ कर तोड़ा है? जरूर कहीं न कहीं पर दरार रही होगी." कन्हैयालाल ने खिसियानी हंसी हंसते हुए कहा, "चलो, इसी बहाने नया आ जाएगा."

"हां, नया तो लाना ही पड़ेगा," मेरे पति ने मन मसोस कर कहा.

"ठीक है. तुम नया रैकेट खरीद लो. थोड़ा योगदान मैं भी कर दूंगा. कितने रुपयों का आया होगा वह रैकेट पंदरह वर्ष पहले?" फिर कुछ सोच कर स्वयं ही कहा, "बीस-पचीस का होगा. अगर सिर्फ 50 पैसे प्रति वर्ष के हिसाब से भी कीमत में कटौती करें तो साढ़े सात रुपए और कम हो जाते हैं. इतना सब मैं दे दूंगा."

"अरे, छोड़िए भाई साहब, क्या बात करते हैं आप भी?" मैं ने गुस्से व खीज को अंदर ही रोकते हुए मायूसी भरे स्वर में कहा, "आप कहते हो पुराना था. कभी भी टूट सकता था. हो सकता है इन से ही टूट जाता." मुझे पक्का विश्वास था कि वैसा ही रैकेट एक सौ रुपए से कम में नहीं आएगा फिर इन से पंदरहबीस रुपए ले कर इन का एहसान क्यों लिया जाए.

"भई हम तो कायल हो गए भाभीजी की दलील के. क्या खूब कहा. पुराना था, टूटना ही था. किसी से भी टूट जाता." उठते हुए मेरे पति के कंधे पर हाथ मार कर कहने लगे, "हमारा एहसान मानो दोस्त, तुम्हें बचा लिया. अगर कहीं तुम से रैकेट टूट जाता तो बस समझो तुम्हारी तो छुट्टी हो जाती. अच्छा, नया रैकेट शुभ हो. उस की खुशी में हमें दावत देना मत भूल जाना."

नुकसान करने के बावजूद कन्हैयालाल जले पर नमक छिड़क कर चले गए. इतना ही नहीं जातेजाते हम दोनों की लड़ाई का इंतजाम भी कर गए. इन का कहना था कि मैं ने रैकेट दिया ही क्यों. मैं कह रही थी कि जब स्वयं ही मांगने आ गए तो जवाब कैसे देती. बदले में मैं ने प्रश्न किया कि ऐसे लोगों से दोस्ती क्यों रखते हो. इस वाक्‌युद्ध के बाद घर में कुछ दिनों तक मौन युद्ध रहा. बात यहीं पर खत्म नहीं हुई. कुछ दिनों बाद कन्हैयालाल के घर से "थोड़ी देर के लिए छाता दे दीजिए" की फरमाइश आई. मैं ने बहाना बना कर जवाब दे दिया. उस दिन से उधर से बोलचाल बंद है मगर वह आसपड़ोस में कहतेफिरते हैं कि हम किसी के साथ मधुर संबंध नहीं रखते.

समझ में नहीं आता कि इस सब में कसूर किस का है. हां, इतना जरूर जानती हूं कि इस मांगनेदेने के चक्कर में रैकेट तो गया ही, दोस्त भी खोना पड़ा.

क्या करें?

कहावत है कि अक्लमंद वही है जो दूसरों की गलतियों से सबक सीखे. हमें चाहिए कि जहां तक हो सके हम मांगने से बचें. थोड़ी समझबूझ व सोचविचार से हम मांगने की जरूरत से बच सकते हैं. अगर कभी मांगने की मजबूरी हो ही जाए तो हमें चाहिए कि मांगी हुई वस्तु को जितनी जल्दी हो सके काम पूरा होने पर वापस लौटा दें. मांगते समय हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस से देने वाले को कोई असुविधा या तंगी तो नहीं होगी.

मांगी हुई चीज खराब होने या टूटने की दशा में हमें वही चीज बाजार से ला कर वापस करनी चाहिए.

अगर हम इन छोटीछोटी बातों का ध्यान रखें तो मैं विश्वास के साथ कह सकती हूं कि इस मांगनेदेने के चक्कर में न दोस्ती ही टूटेगी और न ही दिल. ●

वाटरबरीज़ सुरक्षा

'बरसात के मौसम में लोग सर्दी-खांसी के शिकार अक्सर हो जाते हैं. लेकिन जब वाटरबरीज़ आपके परिवार की सुरक्षा में तैनात हो, तो सर्दी-खांसी की एक न चले.

क्योंकि इसमें मिले हुए मिनरल और आयरन आपमें सर्दी से मुकाबले की ताकत खूब बढ़ाएं, और क्रिओसोट और गायाकॉल खांसी को दूर भगाएं.

यानी वाटरबरीज़ में है आपकी सुरक्षा का अचूक उपाय. याद रखिए आपका परिवार इससे वंचित न रह जाए.

वाटरबरीज़ रैड लैबल

सर्दी और खांसी के लिए आपके परिवार का विश्वसनीय रक्षक

LINTAS WHL WRL P 1 1811 HI
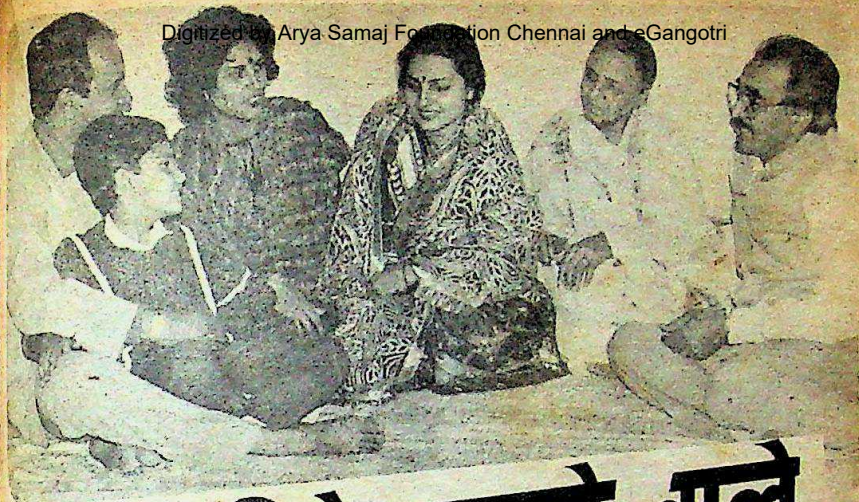
लड़की के मायके वाले

लेख ● कमला सपोलिया

आज से कुछ अरसा पहले जब लड़की की शादी होती थी तो विदाई के समय उसे शिक्षा दी जाती थी : "बेटी, आज से ससुराल ही तुम्हारा घर है. यह तो केवल तुम्हारा मायका है, जहां तुम कभीकभार आया करोगी. सारा जीवन तो तुम्हें अब उसी घर में काटना है."

लड़की सीख को सुनती थी, उसे समझती थी और उस पर अमल भी करती थी. कुछ महीने मायके के चक्कर लगाने के बाद वह पूरी तरह से अपनी ससुराल में रम जाती थी, घर के बड़ों की इज्जत करती थी. सास और परिवार की दूसरी स्त्रियां जो कहती थीं, नई बहू उन बातों को मानना अपना कर्तव्य समझती थी. इस तरह धीरेधीरे लड़की मायके वालों की न रह कर ससुराल वालों की हो जाती थी.

वैसे भी पहले संयुक्त परिवार होते थे. नहीं तो दोचार रिश्तेदार तो साथ रहते ही थे. इसलिए इतने लोगों के बीच में आ कर नई बहू ससुराल के तौरतरीकों पर न तो कोई आलोचना करती थी, न कोई ऐसी मांग करती थी, जिसे घर वालों के लिए पूरा करना संभव नहीं होता था. लड़की अपनेआप को पति के परिवार का एक सदस्य मानती थी और उसी में अपना सुख और मानसम्मान समझती थी.

आजकल जब लड़की शादी कर के विदा होती है तो उसे कहा जाता है : "जा, बेटी, ससुराल जा, दिल लग जाए तो वहां रह जाना, वरना हम तो यहां हैं ही. वैसे तो यह घर अब भी तेरा ही है."

लड़की सुनती है और इसी बात को दिल में ले कर अपनी ससुराल में कदम रखती है. इसलिए वह अपने मायके वालों को कभी नहीं भूल पाती. हर वक्त उसे मांबाप, भाईबहन और पिछला घर याद आता रहता है. इधर

वह भूलना नहीं चाहती, उधर मायके वाले उसे भूलने नहीं देते.

कई लोग तो अपनी लड़की के साथ ही ससुराल चले आते हैं, कभी उस के दिलदिमाग में और कभी शारीरिक रूप से ही. ऐसी हालत में लड़की अपने पति के परिवार में घुलनेमिलने की कोशिश ही नहीं करती.

कुछ वर्ष पहले हम चंडीगढ़ में थे तो एक पड़ोसी परिवार के लड़के की शादी हुई. दिल्ली से लड़की विदा होने लगी तो उस की छोटी बहन भी कार में साथ ही बैठ गई.

दो दिन बाद बहू के स्वागत में ससुराल में पार्टी थी. सुबह के 11 बजे बहू की दो मौसेरी बहनें, मातापिता और भाई भी अचानक वहां पहुंच गए.

लड़के वाले पहले ही मेहमानों की भीड़ से परेशान थे. अब उन्हें और पांच लोगों के रहने का प्रबंध करना पड़ा. उधर लड़की अपने मायके वालों को देख कर ऐसी मग्न हुई कि सब कुछ भुला कर उन के आगेपीछे घूमने लगी.

मायके वालों ने भी कमाल ही कर दिया. पार्टी के बाद उन्हें दिल्ली लौट जाना चाहिए था, पर वे चंडीगढ़ देखने के लिए पूरा एक सप्ताह बेटी की ससुराल में ही रह गए. हर रोज उन का कहीं न कहीं जाने का कार्यक्रम बनता और वे अपनी बेटी और दामाद को भी अपने साथ ले जाते. लेकिन दामाद के आगे वह किसी और को निमंत्रण नहीं देते थे. इस का नतीजा यह हुआ कि बेटी के साथ दामाद तो अपनी ससुराल वालों से घुलमिल गया, लेकिन अपने मायके वालों के कारण बहू का अपनी ससुराल में मन नहीं लगा.

घूमनेफिरने के बाद मायके वाले दिल्ली लौटते हुए अपनी बेटी को भी साथ ले गए. कुछ दिनों बाद दामाद अपनी पत्नी को लाने पहुंच गया. इस प्रकार दिल्ली आनेजाने का न खत्म होने वाला एक सिलसिला शुरू हो गया.

तीन साल तो हम ने भी देखा कि बहू चंडीगढ़ आती ही नहीं थी. भूलेबिसरे आ भी जाती थी तो एकदो दिनों में ही मायके जाने के लिए विचलित हो उठती थी.

ससुराल में वह हमेशा उखड़ीउखड़ी सी रहती थी. कभी अपनी सास या किसी और के साथ बैठ कर बातें नहीं करती थी. अपना बच्चा दादादादी के पास पल भर के लिए भी नहीं छोड़ती थी. उस ने अपनी ससुराल में रमने की कभी कोशिश ही नहीं की.

लेकिन इस में उस का इतना दोष नहीं था, जितना उस के मायके वालों का था. उन्होंने उसे अपनी ससुराल में जगह बनाने का मौका ही नहीं दिया. वे हर वक्त लड़की को अपने साए में रखते थे. इसी लिए बेटी भी उन की ही बनी रही. वह हर दुखसुख के मौके पर मायके भागती. उस की ससुराल वालों को तो कई बातों का पता ही नहीं चलता था. उन की बहू अपने रिश्तेदारों को क्या देती थी, उन से क्या पाती थी, उन्हें कोई खबर नहीं थी. पूछो जैसा आपस में उन का रिश्ता कभी जुड़ा ही नहीं था.

एक दूसरे परिवार में छोटी बहन अनीता ब्याह कर दिल्ली आई तो बड़ी बहन गीता पहले से ही वहां रहती थी. वैसे दोनों के रहनसहन में बहुत अंतर था.

अनीता का पति सीमित आय वाला एक सरकारी अफसर था और उस के मातापिता, छोटी बहन और भाई उस के साथ रहते थे.

विवाहित बेटी के घरसंसार में दखलअंदाजी न कर यदि उसे अपने ढंग से ससुराल के वातावरण व पारिवारिक सदस्यों के साथ तालमेल स्थापित करने का मौका दिया जाए तो वह तनावरहित सुखी जीवन बिता पाएगी.
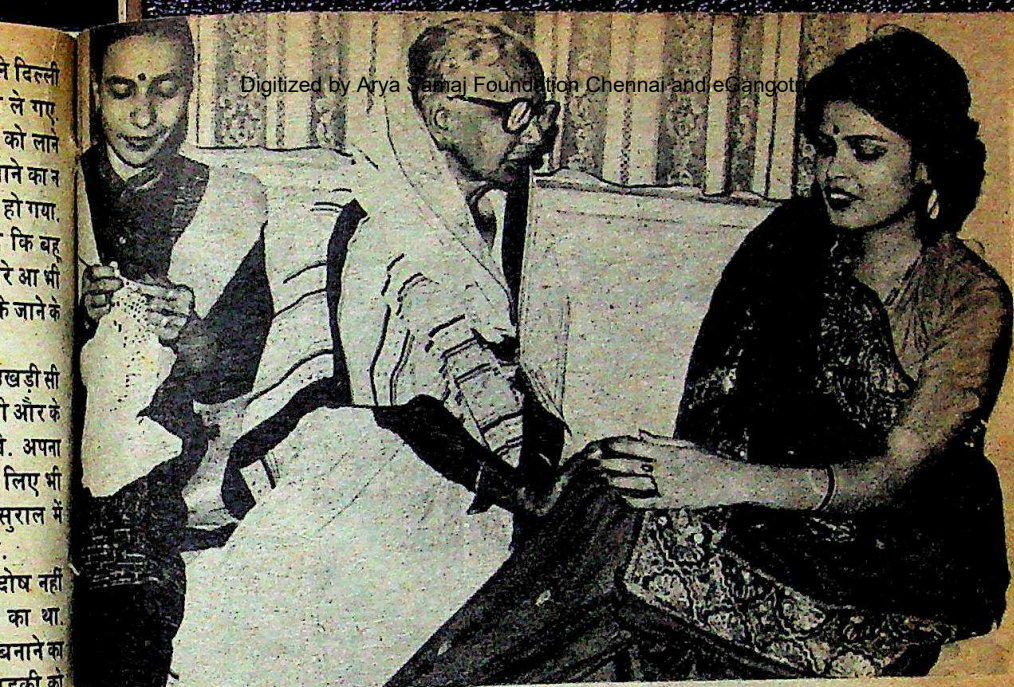
गी... स्वतंत्र... व्यवसाय... था. इसी... कोई कम... वाला थ... जिंदगी... अनीता... लेती. क... और कभ... श... रहते थे... था. सैर... चारपांच... होती. ऐ... अपने क... ज... बड़ी बे... दामाद... कार्यक्रम... लौटती... जाती थ... इ...

गीता अपने पति और दो बच्चों के साथ स्वतंत्र रूप से रहती थी. पति का अपना व्यवसाय था. जिस में वह बहुत व्यस्त रहता था. इसलिए गीता के पास समय और पैसे की कोई कमी नहीं थी, न कोई रोकटोक करने वाला था. वह अपने से ज्यादा अनीता की जिंदगी में दिलचस्पी लेने लगी. रोज सुबह वह अनीता को फोन कर के दिन का कार्यक्रम बना लेती. कभी बाजार जाने का, कभी सिनेमा और कभी काफी पीने का.

शहर में और भी बहुत से रिश्तेदार रहते थे, जिन के घर जाना भी जरूरी होता था. सैरसपाटे करने के बाद अनीता शाम को चारपांच बजे घर लौटती तो बुरी तरह थकी होती. ऐसी हालत में पति के आने तक वह अपने कमरे में आराम करती थी.

जब मातापिता दिल्ली आते तो वह भी बड़ी बेटी के पास ठहरते. छोटी बेटी और दामाद को अपने पास बुला कर वहीं अपने कार्यक्रम बना लेते थे. अनीता कभी घर लौटती और कभी अपनी बहन के घर ही रह जाती थी.

इस का अंजाम यह हुआ कि अनीता को अपनी ससुराल में रुचि लेने, अपने पति के परिवार के साथ रिश्ता जोड़ने या प्यार बढ़ाने का मौका ही नहीं मिला. उस के मायके वाले उसे इस तरह घेरे रहते थे कि अनीता की कोई इच्छा रही भी होगी तो वह उस के मन में ही दबी रह गई होगी.

दो वर्ष हो गए, पर अनीता अब भी अपनी ससुराल ही में मेहमान की तरह रहती है. घर की किसी बात या काम में उसे दिलचस्पी नहीं है. मायके वाले उस के जीवन में इस तरह छाए हुए हैं कि वहां किसी और के लिए कोई जगह नहीं होती. बूढ़ी सास दिन भर घर के काम में खटती है. बहू ताना देती है, "साथ रहेंगे तो काम नहीं करेंगी क्या?"

कई कारणों से परिवार के सदस्यों का एक साथ रहना आवश्यक है. और कोई रास्ता भी तो नहीं है. इसलिए सास कहती है, "अगर अनीता के मायके वालों ने यह चलन न अपनाया होता तो परिवार के लोग हालात के

सास और ननद के साथ बैठ कर हंसनेबोलने से लड़की को स्वयं धीरेधीरे उन के साथ अपनत्व की अनुभूति होने लगेगी.

अनुसार बहू के साथ अपना तालमेल बैठा लेते. न तो बहू घर में मेहमानों की तरह रहती और न ही परिवार वाले उस के व्यवहार से शर्मिंदा होते."

मायके वालों की शह

आजकल अनीता की तरह बहुत सी लड़कियां अपने मायके वालों की शह पर अपनी ससुराल वालों के साथ बहुत बुरा बरताव करने लगी हैं. खास तौर पर वे आधुनिकाएं, जो शिक्षा और स्वतंत्रता की आड़ ले कर जो मन में आता है करती हैं, जो मुंह में आता है कहती हैं. कोई उन्हें कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर सकता. ससुराल का नाम तो पहले ही बदनाम है. वे कुछ कहेंगे तो उन्हीं पर हजारों लानतें भेजी जाएंगी.

कोई भी आधुनिक बहू जब अपने मायके वालों से बात करती है, अपनी सास के लिए बड़े तिरस्कार से 'बुढ़िया' शब्द का प्रयोग करती है. सास यह बात जानती है, लेकिन वह क्या कर सकती है? प्यार और आदर तो मन से होता है. इस मामले में तो कोई जोर जबरदस्ती नहीं चल सकती.

लेकिन ताज्जुब तो लड़की के मायके वालों पर होता है, जो ससुराल वालों के लिए अपशब्दों का इस्तेमाल करने पर कभी भी अपनी बेटी को नहीं टोकते. शायद वे यह भूल जाते हैं कि आज वे मायके वाले हैं तो कल वे भी किसी की ससुराल वाले बनेंगे. तब उन के साथ भी ऐसा ही दुर्व्यवहार किया जाएगा. उन्हें उस वक्त कितना बुरा लगेगा, क्योंकि ससुराल और मायके का यह चक्कर तो हमेशा से चला आ रहा है.

इस चक्कर में कुछ चक्कर तो जन्म से होते हैं. उन के साथ प्यार होना स्वाभाविक है. लेकिन कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं, जो शादी के बाद जुड़ते हैं. उन रिश्तों को सुखद बनाने के लिए बड़ी कोशिशें करनी पड़ती हैं. लड़कियों को पति के परिवार के साथ अपनों जैसा व्यवहार करना पड़ता है. यही त्याग आजकल की लड़कियां करना नहीं चाहतीं.

हैरानी तो इस बात पर होती है कि लड़कियों के मायके वाले उन्हें, उन के गलत [illegible] बढ़ावा देते हैं. कुछ तो ऐसे लोग भी हैं, जो अपनी लड़कियों को उन की ससुराल वालों के खिलाफ भड़काते रहते हैं.

परिवार में जब बहू आती है तो एक नए सदस्य का आगमन होता है. कुछ तबदीलियां जरूर होती हैं. घर के लोग बहू को समझने का प्रयत्न करते हैं. बहू ससुराल की स्थितियों को भांपने की कोशिश करती है.

लड़की के मायके वाले अगर उस के विवाहित जीवन में बहुत अधिक दखलअंदाजी न करें तो शायद वह अपनी ससुराल में अच्छी तरह घुलमिल भी जाए. लड़कियां चाहे कितनी भी शिक्षित और अक्लवाली हों मांबाप के घर में उन का दरजा छोटों में आता है. वहां उन की गलतियों और नादानियों को नजरअंदाज कर दिया जाता है. लेकिन शादी के बाद वह अचानक ही बड़ों की श्रेणी में आ जाती हैं. ऐसी हालत में लड़कियों को बहुत सोचसमझ कर कदम उठाना चाहिए.

लड़की के मायके वालों को भी चाहिए कि सही राह दिखा कर वे उस की सहायता करें. लड़की के विवाहित जीवन को बनाने-बिगाड़ने में उन का बहुत योगदान होता है. किसी भी लड़की का अपनी ससुराल वालों के साथ झगड़ा, मनमुटाव कर के, उन्हें नीचा दिखा के या जगहजगह उन की निंदा कर के मान नहीं बढ़ता क्योंकि पति और उस के परिवार के साथ लड़की का अपना नाम भी जुड़ा होता है. उसे ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिए जिस से उस के नाम को कोई बट्टा लगे.

मांबाप के घर में लड़की का जन्म होते ही उस के रिश्ते बनेबनाए होते हैं. जन्म के रिश्ते वैसे भी बहुत प्यारे होते हैं. लेकिन शादी के बाद वाले रिश्ते जोड़ने से ही जुड़ते हैं और उतने ही मीठे होते हैं, जितने बनाए जाते हैं. इस के लिए बड़े यत्न करने पड़ते हैं. कभीकभी अपनी खुशियों और इच्छाओं को दबाना पड़ता है. लेकिन उस के बदले में पति और ससुराल वालों से जो ढेर सारा प्यार और आदर मिलता है, वह संभाले से नहीं संभलता. ●

के गलत
कुछ तो
को उन
ते रहते

एक नए
दीलियां
मझने का
तियों को

उस के
दखल-
सुराल में
लड़कियां
वाली हों
में आता
नियों को
न 'शादी
णी में आ
को बहुत

चाहिए
सहायता
बनाने-
होता है.
वालों के
न्हें नीचा
ा कर के
उस के
नाम भी
हीं करती
बट्टा लगे.
जन्म होते.
जन्म के
हैं, लेकिन
ी जुड़ते हैं
नाए जाते
पड़ते हैं.
छाओं को
ले में पति
प्यार और
संभलता.

सभी जानते हैं, आज का युग विज्ञान का है. कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां विज्ञान ने अपनी कारगुजारी न दिखाई हो, और कोई ऐसा काम नहीं है जिसे वह असंभव मानता हो. असंभव को संभव कर दिखाने की बात मन में ठान कर ही वैज्ञानिक काम करते रहते हैं. लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी मुझे बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि एक

व्यंग्य • शंकर पुणतांबेकर

चांद पर विजय

वैज्ञानिकों ने दूरस्थ चांद पर भले ही विजय पा ली हो, पर निकटस्थ चांद पर विजय पाना उन के वश का नहीं लगता. काश! इन वैज्ञानिकों ने इस चांद पर कुछ उगाने की कोशिश की होती.

क्षेत्र ऐसा है जहां वैज्ञानिक सूत भर भी कामयाबी नहीं पा सके हैं. मेरा मतलब चांद के क्षेत्र से है. यह बड़े ताज्जुब की बात है कि दुनिया का बड़े से बड़ा वैज्ञानिक भी एक छोटी सी कामयाबी हासिल न कर सका. हां, साहब, छोटी सी कामयाबी! चांद पर विजय पाने की बात को मैं एक छोटी सी ही कामयाबी मानता हूं.

पर लगता है, आप ने मेरी बात को ठीक तरह से नहीं समझा है. इसी लिए तो आप को

सरिता, बीस साल पहले, जुलाई (द्वितीय) 1968

"देखो, उस चांद की तरह चमकाना मेरा जूता," प्लेटफार्म पर एक सज्जन ने पालिश वाले को मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा.

मेरे कथन पर विश्वास नहीं हो रहा है. मैं चांद की कामयाबी की बात को छोटी सी कामयाबी जरूर कह रहा हूं, लेकिन मैं बात किस चांद के बारे में कर रहा हूं, जानते हैं? चांद से मेरा मतलब वह नहीं है जो आप समझ रहे हैं. चांद से मेरा मतलब आप के आकाश के चांद से नहीं, बल्कि खोपड़ी के चांद से है, यानी सिर के बालरहित चिकने क्षेत्र से है. और जब मैं चांद पर कामयाबी की बात कहता हूं तो मेरा मतलब एक ऐसी विधि की खोज से है जिस के प्रयोग से यह क्षेत्र, जिसे हम लोग खल्वाट भी कहते हैं, बालों की खेती से हराभरा यानी कालाकलूटा हो जाए.

अब तो आप, जब कि मेरी बात का मतलब ठीकठीक समझ गए हैं, अवश्य ही मेरे कथन से सहमत हो जाएंगे कि हमारे वैज्ञानिक चांद पर विजय पाने की एक छोटी सी कामयाबी हासिल नहीं कर सके हैं. संभव है कि मेरी तरह आप के मुख से भी यह निकल पड़े कि सचमुच आज का वैज्ञानिक आकाश में स्थित चांद पर कामयाबी हासिल करने की धुन में तो लगा है, लेकिन वह खुद अपने में ही स्थित चांद पर कामयाबी पाने में असफल रहा है!

कभी मेरे दिमाग में यह विचार भी उठ आता है कि कहीं निकटस्थ चांद की कामयाबी में स्वयं को विफल और निराश पा कर ही तो आज के वैज्ञानिक दूरस्थ चांद के पीछे नहीं पड़ गए हैं?

मैं नहीं समझ पाता कि उस ऊबड़खाबड़ चांद पर विजय पा कर इन वैज्ञानिकों को क्या

मिल जाएगा! कितना अच्छा होता यदि वैज्ञानिक उस ऊबड़खाबड़ स्थान के बजाए सिर पर के चिकने स्थान पर विजय पाने के लिए डटे रहते! फिर तो संसार के कितने ही मुझ जैसे खल्वाट सिर वालों का भला हो जाता.

हां, मैं खल्वाट सिर वाला हूं. आकाश के चांद को देख कर मन कैसा प्रसन्न और शीतल हो उठता है, जब कि इस चांद को देख कर? बस, कुछ न पूछिए. इस विज्ञान के युग में रह कर भी इस से छुटकारा न मिल सका. इस विचार से मन में विषाद और ताप भर जाता है.

मेरी चांद, आप जानते हैं कि कैसी है? बस, सिर के निचलेनिचले हिस्से में नाममात्र को कुछ बाल बच रहे हैं. दुनिया में सभी तो दगाबाज नहीं हुआ करते. पर हाय, नेकों की संख्या इतनी इनीगिनी. ये हैं तो कम से कम इतना तो पता चल जाता है कि मेरा सिर है और वह कहीं से आरंभ होता है. वैसे दुनिया में मैं देख रहा हूं, काम बिना सिर वालों का भी चल जाता है, या कहूं कि बिना सिर वालों का ही चल रहा है. बचे हुए बालों के ऊपर का हिस्सा इतना चमचमाता है कि नए मुरादाबादी लोटे की पेंदी की चमचमाहट भी इस के सामने फीकी नजर आए. और चिकना यह इतना है कि इस पर उंगली ठहरती नहीं है. इसी लिए कभीकभी मुझे यह संदेह हो उठता है कि मेरा सिर ठिकाने पर है भी या नहीं?

चांद का चिकनापन और चमकीलापन भला किसे भाएगा! इन के चमकीलेपन का उस दिन मुझे बहुत बुरा लगा जब एक दिन रेलवे प्लेटफार्म पर एक सज्जन ने पालिश वाले को अपना जूता थमा कर मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, "देखो, उस चांद की तरह चमचमाना मेरा जूता!" सुन कर मुझे गुस्सा तो इतना आया था कि जाऊं और अपना जूता निकाल कर नगर में एक और चमचमाती चांद की संख्या बढ़ा दूं, लेकिन उसी समय गाड़ी ने प्लेटफार्म में प्रवेश किया और मैं...

उफ! एक जमाना था जब इस चांद पर घने बाल थे. आज उन दिनों की याद हो आती है तो मन दुख से भर आता है. घर में इस घनी खेती के लिए न किसी खाद की जरूरत पड़ती थी, न सिंचाई की. इस की ओर से मैं जितना बेपरवाह था उतनी ही वह घनी थी. पूरे चेहरे की शोभा बस उसी में समाई हुई थी. लोगों की नजर पड़ती तो बस पड़ी ही रह जाती.

लेकिन शायद लोगों की नजर का ही नतीजा था धीरेधीरे मेरे बाल...नहीं, नहीं, झड़ने नहीं, सफेद होने लगे. जवानी में ही वृद्धावस्था की यह निशानी उभरती देख मैं घबरा उठा. और इसी घबराहट का परिणाम है कि आज...

आइए, वह पूरा किस्सा ही मैं आप को सुना दूं.

आरंभ में दाईं ओर के कान के पास के कुछकुछ बाल सफेद हुए. वास्तव में, मुझे उन से इतना चिंतित नहीं हो जाना चाहिए था. लेकिन नहीं, मैं उन्हें देख कर इतना चिंतित हो उठा कि शायद उसी चिंतावश मेरे बाईं ओर के बाल भी सफेद हो गए. और आप तो जानते ही हैं, जब दुश्मन दोनों ओर से हमला बोल दे तो मनुष्य अपने बचाव के लिए क्या कुछ नहीं करता. मैं ने भी वही किया. बालों की बढ़ती सफेदी का मुकाबला करने के लिए मैं हर संभव कोशिश में लग गया. और आज सोचता हूं, अच्छा होता मैं ने यह न किया होता.

सफेद बालों को काला बनाने वाले तेलों के विज्ञापन अखबार में काफी छपते हैं, यह मुझे पता था. इसलिए मैं ने अखबार लेना शुरू किया. वैसे मुझे अखबारों में विशेष रुचि नहीं थी. यहां आंदोलन और गोलीकांड, वहां बाढ़ या मोटर दुर्घटना, यहां बेकारों की संख्या में वृद्धि, वहां अनाज के दामों में बढ़ोतरी जैसी खबरों को पढ़ कर आखिर क्या हासिल होता है! अपना खुद का गम क्या कम है जो ऐसी खबरों को पढ़ते रहें.

वैसे मंत्रियों के भाषण भी अखबार में छपते हैं....

हां, तो मैं ने हर दिन अखबार लेना आरंभ कर दिया और उस में छपे तेल के इश्तहारों पर इस तरह टूट पड़ने लगा जैसे और लोग पहले पृष्ठ के मोटे हर्फों पर टूट पड़ते हैं.

मैं जो अखबार लेता था, उस में सफेद बालों को काला बनाने वाले तेलों के ढेरों विज्ञापन थे. वैसे मुझे मेरा अखबार विज्ञापनों का खासा केटलाग जैसा ही लगता. पहले पृष्ठ को अपवादस्वरूप छोड़ दें तो बाकी पृष्ठों में भीमकाय विज्ञापनों के बीच दुबलेपतले समाचार कुचले जाते हुए से लगते. उसे देख कर कभीकभी मुझे यह आशंका हो उठती कि यह अखबार नहीं है, इश्तहारों की कोई नुमाइश है.

हां, तो आगे सुनिए. मैं ने तेल के उन ढेरों विज्ञापनों में से अपने लिए एक ऐसा तेल चुन लिया जिस में सफेद बालों को देखतेदेखते काला बना देने की गारंटी थी. कीमत की मैं ने परवाह नहीं की. शीशी खरीद लाया. वह जब खत्म हो गई तो दूसरी ले आया और दूसरी के बाद तीसरी. देखतेदेखते छः महीने बीत गए फिर भी बाल जैसे के तैसे. यह देख कर मैं ने दूसरा विज्ञापन पकड़ा.

अखबार में छपे विज्ञापनों को देख बाल काले करने की शीशियों की इस भीड़ को खरीदने में मुझे पैसों की बरबादी के दुख से अधिक बालों की बरबादी का दुख था.

लेकिन इस विज्ञापन का तेल भी उसी का भाई या बाप निकला. फिर तो मैं ने एक के बाद एक अनेक तेल बदले और आजमाए. अपने अखबारों के सभी विज्ञापनों के तेल आजमा चुका तो मैं ने अखबार बदल दिया. उस में विज्ञापित तेल भी आजमा चुका तो तीसरा अखबार लेना शुरू कर दिया.

इस तरह शायद ही कोई अखबार होगा जिस में छपे विज्ञापनों के तेलों को मैं ने न आजमाया हो. मेरा खयाल है, मैं ने इतने तेलों को आजमाया कि यदि एकएक तेल मेरे सिर के एकएक बाल को ही काला बना देता तो न केवल सारे सफेद बाल काले हो जाते, बल्कि

जो काले थे वे मेरे अगले सात जन्मों में भी सफेद बनने की हिम्मत नहीं कर सकते थे लेकिन हर तेल जैसे मेरा दुश्मन निकला. ऐसा न होता तो मेरे सफेद बालों को काला बनाने की बात छोड़िए, उस ने उलटे मेरे काले बालों को ही सफेद न बनाया होता.

ऐसे रंग और ढंग के तेलों का मैं ने इस्तेमाल किया कि कुछ न पूछिए. सफेद रंग के बालों को काला बनाने के लिए मैं ने न सिर्फ काले रंग के, बल्कि सफेद रंग के भी तेल का इस्तेमाल किया. सोचा शायद कांटे से कांटा निकल जाए. जहां पतले से पतले तेल का इस्तेमाल किया वहां गाढ़े तेल को भी अपने सिर पर चुपड़ा. सुगंधित तेल को तो कोई भी लगा ले, मैं ने दुर्गंधयुक्त तेलों को भी सुगंधित तेलों की ही भांति आस्थापूर्वक लगाया. कुछ तो मैं ने ऐसे तेल लगाए जो सिर्फ इसलिए तेल कहे या माने जा सकते थे कि उन के लेबलों पर 'तेल' लिखा होता था.

तेलों की शीशियों का घर में ढेर सा लग गया. जगह की तंगी के इन दिनों में एक कमरा इन्हीं के ढेर से घिर गया. रंगबिरंगी ये शीशियां मोटी, पतली, ठिगनी, लंबी, लचकीली सभी संभव आकारप्रकार की थीं. कुछ के रंगरूप और नाम बड़े ही सलोने थे. उन्हें देख कर आज मैं सोचता हूं, 'अपने रंगरूप और नाम में इतनी लुभावनी ये परियां (हां, परियां ही, तभी तो हम इन पर टूट पड़ते हैं) कहीं गुण में भी ऐसी ही होतीं! पर नहीं, दुनिया के दस्तूर का अपवाद ये ही क्यों बनें!'

शीशियों की इस भीड़ को खरीदने में मेरा कितना ही पैसा बरबाद हो चुका था लेकिन मुझे पैसों की बरबादी का इतना दुख नहीं था जितना बालों की बरबादी का. जी, हां, बालों की बरबादी का! बालों को काला बनाने के चक्कर में मेरी गति (या दुर्गति) उन चौबेजी के किस्से जैसी हुई जो छब्बेजी बनने के चक्कर में दुबेजी बन कर रह गए थे.

बालों को काला बनाने के लिए जिन तेलों का मैं ने इस्तेमाल किया उन्होंने धीरेधीरे मेरे बालों को सफेद तो बना ही दिया था, साथ ही उन की जड़ें भी हिला कर रख दीं. नतीजा यह हुआ कि वह प्रदेश जहां किसी जमाने में घनी आबादी थी, आज चिकना और चमचमाता मैदान बन कर रह गया है.

यह है दास्तान मेरी चांद की!

आज इसे जबजब देखता हूं या अनुभव करता हूं तो मन यह सोच कर दुख से भर जाता है कि क्यों मैं कुछेक सफेद बालों को देख कर घबरा उठा था और उन को काला बनाने के चक्कर में पड़ गया.

तब सिर पर बाल तो थे, सफेद ही क्यों न हों! और फिर उन से ऐसी कौन सी तकलीफ थी? आज तो अब यह हालत है कि खुले सिर रहना मानो पाप हो गया है. हर मौसम में यह कष्टकर है. गरमियों में यह भाग टीन की भांति तप जाता है. बरसात में पानी की बूंदें आ गिरने पर टीन की ही भांति यह तड़तड़ कर के बज उठता है.

ठंड में तो बस यह समझ लीजिए कि इस में और बर्फ के एक टुकड़े में कोई अंतर नहीं रह जाता.

आदमी को जब ठोकर लगती है तो वह सावधान हो जाता है. लेकिन कौन सा आदमी? जो समझदार हो वह न! मैं शायद ऐसे आदमियों में से नहीं था. इसी लिए तो तेल के विज्ञापनों की ठोकर से सावधान नहीं हुआ- और चांद पर बाल उगाने वाले विज्ञापनों के चक्कर में पड़ गया. बस, वही क्रम फिर से शुरू हो गया. एक विज्ञापन वाली दवा या तेल से फायदा होते न देख दूसरे विज्ञापन वाली दवा को आजमाने लगा. दूसरे के बाद तीसरे, फिर चौथे...

और एक दिन मैं ने इन दवाओं या तेलों को हमेशा के लिए बंद कर दिया. आप पूछेंगे, "क्यों, क्या उन का कोई असर नहीं हो रहा था इसलिए?" नहीं, साहब, इस कारण नहीं. कारण कुछ दूसरा ही था.

उस दिन मेरे दिमाग में अचानक एक विचार कौंध गया. बालों को काला बनाने वाले तेलों ने जहां मेरे बालों को ही साफ कर

के रख दिया, वहां कहीं ऐसा न हो कि सिर पर बाल उगाने वाली दवाएं मेरे सिर को ही मानो मेरी बुद्धि को ही साफ कर के रख दें. बस, इस विचार का कौंध जाना था कि दूसरे ही क्षण मैं ने न केवल पास का तेल उठा कर फेंक दिया, बल्कि भविष्य में सिर पर कभी भी तेल न आजमाने का फैसला कर डाला.

कुछ लोगों से मुझे मालूम हुआ कि विद्वानों के ही सिर गंजे होते हैं. थोड़ीबहुत विद्वत्ता मुझ में जरूर थी. मैं सिर पर बालों का इतना कायल था कि सोचा, 'क्यों न बुद्धिमानी से काम करना छोड़ मूर्खता भरे काम आरंभ कर दूं! जितने बाल सिर की शोभा हैं उतनी बुद्धि या विद्वत्ता थोड़े ही.' मैं ने डट कर मूर्खतापूर्ण काम करने आरंभ कर दिए. लेकिन इस प्रयास से भी मुझे सफलता नहीं मिली, शायद इसलिए कि मूर्खतापूर्ण कामों के लिए मुझे अपना दिमाग चलाना पड़ता था. मूर्खता के अपना असर दिखाने के पहले ही, दिमाग अपना असर दिखा देता.

फिर सिर पर बाल कैसे आ सकते थे? आज सोचता हूं, 'काश, मूर्खता के लिए दिमाग की आवश्यकता न होती!'

बस, अब अंत में इतना ही कहना चाहता हूं, यह ठीक है कि आज मेरी यह चांद मेरी गलती का मुझे दिया गया दंड है, लेकिन हमारी कितनी ही गलतियों पर वैज्ञानिकों ने इलाज खोल लिया है, फिर इस गलती का ही इलाज क्यों नहीं...?

कभीकभी क्रोध आता है मुझे उन वैज्ञानिकों पर जो इस चांद की ओर जरा भी ध्यान न दे कर अपनी अटूट शक्ति और बेशुमार धन आकाश के चांद पर खर्च कर रहे हैं.

एक बात और, मेरी दृष्टि में सच्ची वैज्ञानिक फतह वह होगी जिस दिन उस चांद पर नहीं, इस चांद पर फतह हासिल कर ली जाएगी. ●

जीवन की मुसकान
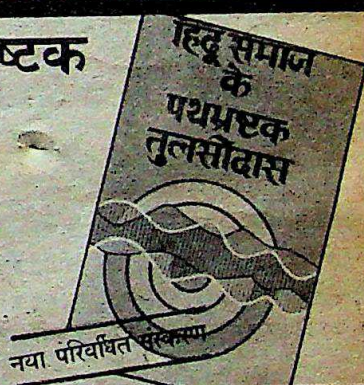
हमारी दीदी के ससुर ने साफ कह दिया था कि वह विवाह में दहेज वगैरह कुछ नहीं लेंगे. मगर जब फेरे हो रहे थे तो ऐन मौके पर वह अड़ गए, "हमें एक मोपेड चाहिए."

उन की इस अप्रत्याशित मांग से पिताजी आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि वह बड़ी मुशकिल से शादी का खर्च जुटा पाए थे. वह लड़के का रिश्ता हाथ से नहीं जाने देना चाहते थे, अतः तत्काल अपना घर गिरवी रख कर उन्होंने मोपेड का इंतजाम किया और विदाई की रस्म पूरी की.

जब विदाई का समय आया तो मेरी मां भावावेश में आ कर अपने दामाद से बोलीं, "कुंअरजी, यही पहली और आखिरी बार इस घर में मेहमान हो. फिर क्या पता हम फुटपाथ पर ही रहें."

उन्हें पूरी बात मालूम पड़ी तो उन्होंने अपने पिताजी से साफ कह दिया कि आप ने एक मोपेड के बदले मुझे बेच दिया. इसे आप ले जाइए.

बाद में उन्होंने माफी मांगी और हमारा घर गिरवी से छुड़ाया. जीजाजी के प्रति हमारा आज भी मन श्रद्धा से भर उठता है.

—सरोज कुमारी

*

पिछले दिनों मैं अपनी ननद के साथ नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से जलपाईगुड़ी जाने के लिए सीटें आरक्षित कराने गई थी. मैं ने टिकट एक कागज में लपेट कर पर्स में डाल लिए.

घर पहुंचते ही टेलीफोन पर एक व्यक्ति ने बताया, "आप रेलवे स्टेशन पर आ कर अपनी टिकटें ले जाइए."

जब मैं ने उसे बताया कि मैं अभीअभी तो टिकटों का आरक्षण करा कर लौटी हूं तो उस ने अपना पर्स देखने के लिए कहा. पर्स देखने पर पता चला कि टिकटें उस में नहीं थीं. स्टेशन पहुंच कर जैसे ही मैं आरक्षण खिड़की की ओर गई, एक युवक ने मुझे पहचान कर टिकटें मुझे सौंप दीं और बताया कि झाड़ू लगाते समय सफाई कर्मचारी को मिली थीं. आप को टिकटें सौंपने के लिए मैं ने आरक्षण फार्म पर आप का फोन नं. देखा और 2 घंटे से आप के इंतजार में खड़ा हूं. आज भी उस युवक की मानवता को याद कर मैं कृतज्ञ हो जाती हूं.

—गायत्री कांति

कालिज के दिनों में कुछ खराब लड़कों से मेरी दोस्ती हो गई थी. एक बार हम चार दोस्त कालिज से सीधे बिना टिकट लिए ही पुष्कर मेला देखने चले गए. वहां मेरे एक दोस्त ने एक व्यक्ति की जेब से 200 रुपए निकाल लिए. दूसरी बार जब वह एक और व्यक्ति की जेब काट रहा था तो उसे पकड़ लिया गया. मैं ने उसे छुड़ाना चाहा तो मुझे भी पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया गया.

मैं ने पुलिस इंस्पेक्टर के पैरों में गिर कर माफी मांगी और उसे बताया कि मैं ने किसी की जेब नहीं काटी थी और पहली बार इन लोगों के साथ आया था.

इंस्पेक्टर को मुझ पर दया आ गई. वह मुझे घर ले गया और खाना खिलाया. फिर उस ने मुझे टिकट दिलवा कर गाड़ी में बैठा दिया.

—सुशीलकुमार

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

रूप की गलियों में

कभी वर्तमान में ठहरे
कभी लौट अतीत गए,
दिन यों ही बीत गए.

रूप की गलियों में,
या कहीं बिजलियों में,
सोए तो बांहों में
जागे तो कलियों में.
कभी अनचाहे लोग मिले,
कभी मन के मीत गए.

सपनों की बस्ती में,
यादों की मस्ती में,
खोएखोए से हम
अपनी ही हस्ती में.
कभी अनगढ़ अनबोले से
कभी बाहर रीत गए.

जब लोग नहीं समझे
हम अपने से उलझे,
सुलझे तो उलझ गए
फिर उलझउलझ सुलझे.
कभी अपने से ही हारे,
कभी मन से जीत गए.

—तारादत्त निर्विरोध

कहानी • डा. ज्ञानेश्वरी वाजपेयी

उस दिन रंजना बहुत खुश थी. लिली उच्च खत्री परिवार की बहू बन गई थी. होना तो यह चाहिए था कि बेटी को ससुराल विदा करते समय वह भावविह्वल हो कर आंसू बहाती, फिर बेटी के चले जाने पर निढाल सी पड़ी रह जाती. वैसे रंजना को लिली के बिछोह का दुख कम नहीं था.

फिर भी उस दिन उस की जो विजय हुई थी, उस विजय के भाव ने बेटी के बिछोह का दुख दबा दिया था. 30 वर्ष की छिपी हीनभावना तिरोहित हो गई थी और उस का मस्तक गर्व व विजय से उन्नत हो उठा था.

सचमुच अनोखी थी रंजना. रंजना के
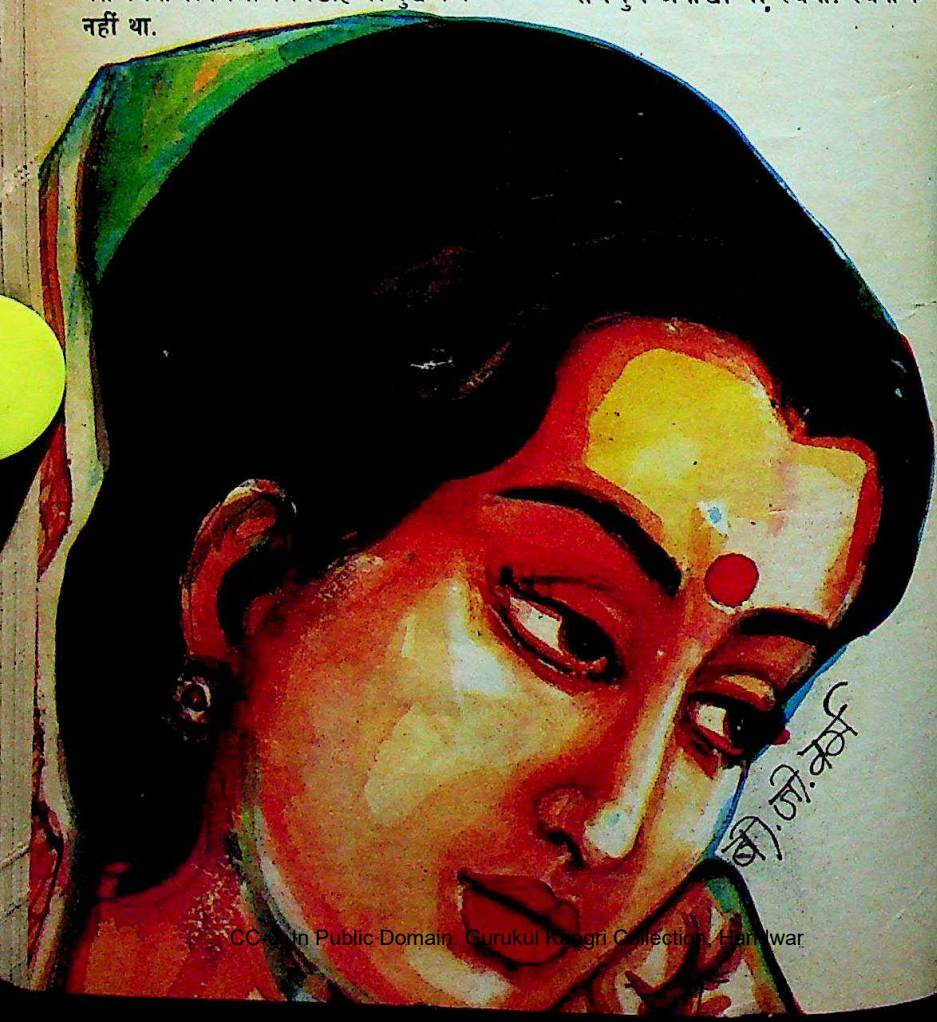
विजातीय बहू होने के कारण रंजना अपनी ससुराल में प्रायः उपेक्षित रही थी, मगर कुछ समय बाद ऐसा क्या हुआ, जिस से उसे वह मानसम्मान और अपनत्व मिलने लगा कि उसे अपनी बेटी का विवाह विजय पर्व सा लगने लगा.

विषय में लोग कानाफूसी कर रहे थे.

"जाने कैसी मां है, बेटी विदा हो गई और मां का कलेजा नहीं पसीजा."

पर यह तो दुनिया है. और दुनिया वालों की आलोचना का प्रभाव अब रंजना पर जरा भी नहीं पड़ता था.

अभी घर मेहमानों से भरा था. सास, चचिया सास, ननदें, देवरानियां, जेठानियां और अ[illegible]त के कितने ही सगेसंबंधी थे. घर भर में तिल धरने के लिए भी जगह नहीं थी. रंजना ने खुले दिल से सब का स्वागत किया था, सेवा की थी. वे सब उसी खत्री समाज के संबंधी थे, जिन्होंने 30 वर्ष पूर्व रंजना की

दुलहन बनी लिली को देख कर रंजना सोचने लगी कि अभी उस के आंचल से खेल रही लिली पलक झपकते ही कैसे इतनी बड़ी हो गई.

दिल खोल कर भर्त्सना की थी. उस के घर का भोजन करना धर्म के विरुद्ध समझा था.

पर रंजना को अब रंचमात्र भी क्षोभ नहीं था. आखिर, सब ने लिली के विवाह में उसी भांति सहयोग दिया था, जिस भांति उस के देवर व ननद के विवाह में उन की सास को दिया था. तब रंजना दूर ही दूर रहती थी. आलोचकों की दृष्टि से अपने को बचाती रहती थी.

रंजना आंखें मूंद कर सोफे पर बैठ गई थी. इतने दिनों की थकान, मानसिक तनाव कि बेटी के विदा होतेहोते कहीं कोई टंटा न खड़ा हो जाए, अब महसूस हो रहा था. बेटी के विदा होने का दुख कैसे नहीं होगा. आखिर, उस का दिल तो एक मां का दिल था. हालबेहाल न हो कर, आंसू न बहा कर, उस ने अपने मन पर कठिन नियंत्रण किया हुआ था. आंखें बंद करते ही उस का मस्तिष्क क्रियाशील हो उठा था और उस के समक्ष स्मृतियों के चलचित्र उभरने लगे थे.

5 मई, 1957 को वह लिली की भांति ही दुलहन बनी थी. उस घर में आई थी. तब वह घर एकदम सूना था. बस, वह और अजित. नई बहू का स्वागत सास कैसे करती है? जेठानियां कैसे मनुहार करती हैं? ननददेवर कैसे ठिठोली करते हैं और नई भाभी को कैसे छेड़ते हैं? उस ने कुछ न जाना था. उस का अपराध मात्र इतना था कि वह कायस्थ परिवार की कन्या थी और उस ने अजित को चाहा था. तनमन से उस ने अजित को प्रेम किया था और उस प्रेम के बदले में वह हर मुशकिल, हर बाधा को सहन करने और झेलने को प्रस्तुत हो गई थी. तब वह मात्र 22 वर्ष की अल्हड़ किशोरी थी. पर उस में हिम्मत तब भी कम न थी.

सीतापुर से अजित के थोड़े से मित्रों की बरात के साथ पिता का द्वार पीछे छोड़ आई थी. अपना नया नीड़ बनाने में अजित उस के साथ था. बस, उसे अजित ही तो चाहिए था और आखिरकार अजित उस का हो गया था. तब भी विजय उसी की हुई थी. फिर भी पूरे जीवन का संघर्ष बाहें पसारे उस की प्रतीक्षा कर रहा था.

आठ बजे वह उस सूने घर में आई थी. घंटे दो घंटे बाद मित्र अजित व रंजना को भावी जीवन की शुभकामनाएं दे कर विदा हो गए थे. अजित व रंजना एकदूसरे को देखते रह गए थे.

अपनों से बिछुड़ने का दुख, अजित के सगे संबंधियों का असहयोग, उसे कचोटने लगा था. वह अजित के कंधे पर अपना सिर रख कर फूटफूट कर रोई थी. ये दुख के कम, खुशी के आंसू अधिक थे.

थोड़ी देर रो लेने से मन कुछ हलका हुआ था तो अजित उसे भोजन कराने एक रेस्तरां में ले गए थे. घर में तो कुछ था ही नहीं और पिता द्वारा दी गई गृहस्थी की आवश्यक वस्तुएं अभी बंधी पड़ी थीं.

अजित और रंजना विश्वविद्यालय में सहपाठी थे. तभी उन की आपस में जानपहचान हुई थी. वह पहचान मित्रता और फिर घनिष्ठता में परिवर्तित होती गई थी. रंजना रूपवती तो थी ही. पर उस का रहनसहन एकदम सादा था. कोई तड़कभड़क नहीं, बनावश्रृंगार नहीं. वैसे प्रकृति ने उस की रचना ही इस प्रकार की थी कि उसे सुंदरता बढ़ाने के लिए बाहरी उपकरणों का सहारा लेने की कोई आवश्यकता नहीं थी. वह ऊपर से जितनी सादी थी, अंदर से भी उतनी ही सरल. अजित को उस की यह निश्छलता ही बांधती चली गई थी.

उस समय विवाह के सामाजिक नियम कठोर थे. अंतर्जातीय विवाह बहुत कम होते थे. अगर कहीं होते भी थे तो वहां उन जोड़ों को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था. उन से रोटीबेटी के संबंध समाप्त कर दिए जाते थे.

अजित उच्च खत्री कुल के बेटे थे और उन के तीन अविवाहित बहनें थीं. रंजना के पिता सीतापुर में डिप्टीकलक्टर थे. वह कायस्थ थे. रंजना का परिवार संकीर्ण मनोवृत्ति का नहीं था. उन्हें अजित के
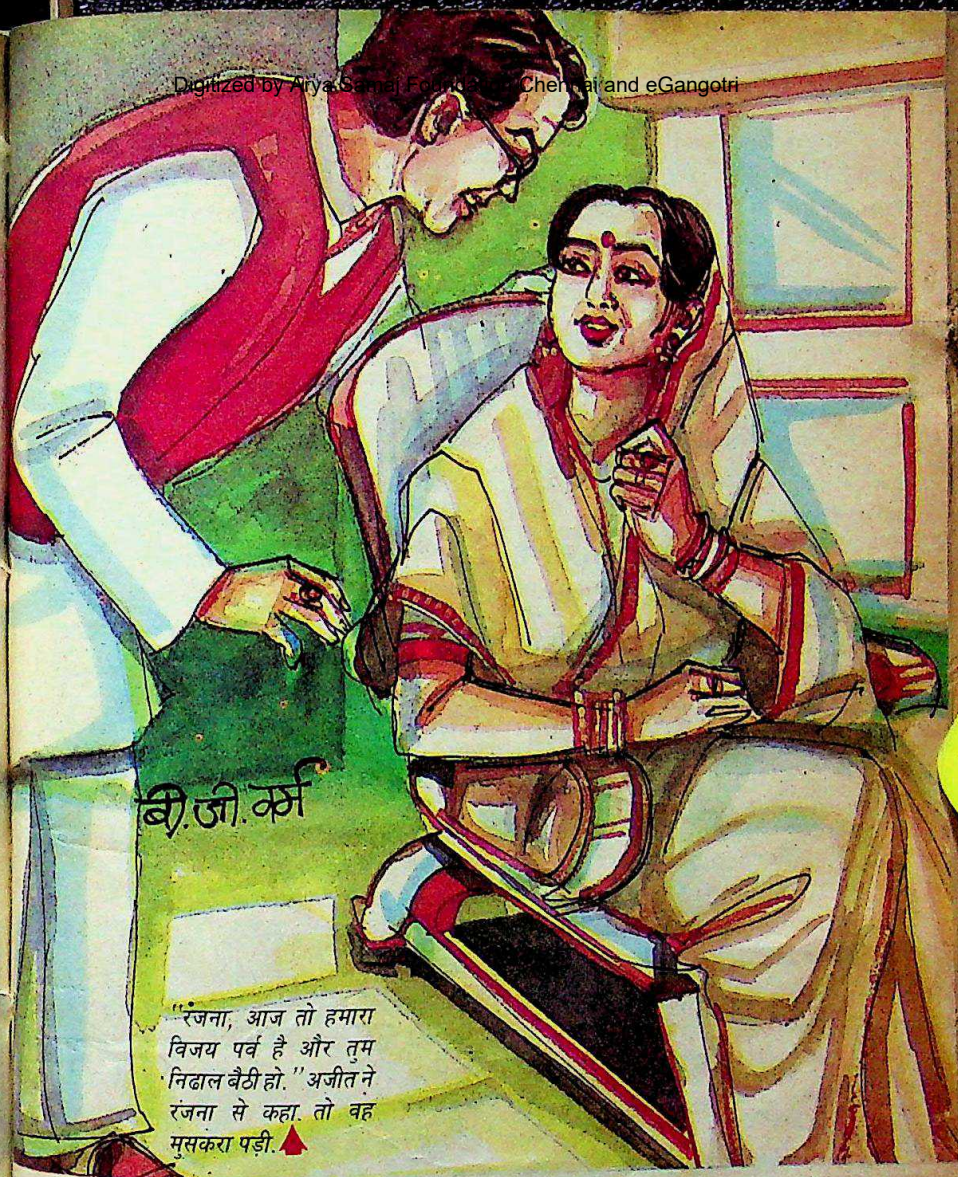
"रंजना, आज तो हमारा विजय पर्व है और तुम निढाल बैठी हो." अजीत ने रंजना से कहा. तो वह मुसकरा पड़ी.

कुलगोत्र पर कोई आपत्ति नहीं थी, फिर भी वह चाहते थे कि उन का इकलौता दामाद अच्छे पद पर हो. अभी तो अजित एम. ए. के प्रथम वर्ष में ही थे. रंजना के पिता ने बेटी को समझा दिया था, "रंजू, हमारी एक ही शर्त है. और वह यह कि अजित आई. ए. एस. अथवा पी. सी. एस. ही बन कर दिखाए तो मैं तुम्हारा हाथ सहर्ष उसे दे दूंगा. अपने मातापिता को राजी करना उस का काम है."

भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिए अजित ने बहुत प्रयास किए थे, पर सफल नहीं हो पाए थे. तब उन्होंने एक दफ्तर में क्लर्क की नौकरी करनी प्रारंभ कर दी थी. कैसे भी हो अजित जल्दी से जल्दी अपने पैरों पर खड़ा होना चाहते थे. अजित के मातापिता और सगे संबंधियों ने उस संबंध

का घोर विरोध किया था. अजित के पिता ने तो यहां तक कह दिया था, "यदि तुम्हें मेरी मरजी की चिंता नहीं है तो जो करना है, अपने बल पर करो. हम तो तुम्हारा मुंह देखना भी पसंद नहीं करेंगे. अपने स्वार्थ में तुम ने अपनी बहनों का भविष्य भी नहीं सोचना चाहा. किस के द्वार पर जाऊंगा बेटियों का रिश्ता करने? कौन हमारे घर खाना खाएगा?"

अजित ने पिता को बहुत समझाया था. कहा था, "बाबूजी, आप आशीर्वाद दे दीजिए. मैं अलग ही रह लूंगा. रूखासूखा जो भी मैं पुरुषार्थ के बूते पर अर्जित कर पाऊंगा रंजना उसी में सुखी रह लेगी. मैं ने उसे बहुत परखा है."

पर बाबूजी टस से मस नहीं हुए थे, "क्या जमाना आ गया है, बेटा बाप को नसीहत दे रहा है."

फिर अजित पिता की ओर से निराश हो गए थे. पर उन्होंने अपना निश्चय नहीं बदला था.

रंजना ने भी अपने पिता से कह दिया था, "पिताजी, मैं ने अजित को चाहा है. आई. ए. एस., पी. सी. एस. की कुरसी को नहीं. यदि आप को इस से ठेस लगती है कि आप का दामाद एक मामूली क्लर्क है तो आप समझ लीजिएगा, आप के कोई बेटी नहीं थी. यदि मुझ में आप का रक्त है तो एक दिन मैं यह सिद्ध कर दूंगी कि मेरा निर्णय गलत नहीं है. आप बेशक समाज के सामने कभी अपने दामाद का जिक्र न कीजिएगा. आप की प्रतिष्ठा को आंच नहीं आएगी."

रंजना के पिता राकेश को बेटी की दृढ़ता पर गर्व भी हुआ था और बेटी को न रोक पाने की अपनी विवशता पर क्षोभ भी. आखिर, उन्होंने रंजना को अनुमति दे दी थी. वह सारी स्थिति समझ गए थे. अतः नई गृहस्थी को जुटाने योग्य साधन उन्होंने रंजना को दे दिए थे. अजित अपने थोड़े से मित्रों की बरात ले कर गया था और रंजना को ब्याह लाया था.

रंजना ने दूसरे दिन से गृहस्थी जमाने का प्रयास किया था. उस के कानों में पिता के कहे शब्द बारबार गूंज रहे थे, "रंजू, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है. जो राह तुम चुन रही हो, उस पर चलने का तुम्हें अभ्यास नहीं है. जिस प्रकार तुम्हारा इतना समय हमारे घर में बीता है, जिन सुखसुविधाओं की तुम आदी रही हो, वे तुम्हें अजित नहीं दे पाएगा. बाद में पछताओगी तो कुछ न हो सकेगा."

रंजना ने कहा था, "पिताजी, अपने निर्णय पर पछताने की घड़ी आने से पहले ही मैं फांसी का फंदा गले में डालना स्वीकार कर लूंगी. आप चिंता मत कीजिए.

धीरेधीरे रंजना ने सब सीख लिया था. मन में लगन हो, प्यार का बल हो तो इनसान क्या नहीं कर लेता. रंजना ने स्थिति समझ ली थी. संघर्ष के लिए वह कटिबद्ध हो कर ही आई थी. उस ने शादी से पहले ही शिक्षिका का प्रशिक्षण पूरा कर लिया था. अब उस ने कालिजों में आवेदनपत्र देने प्रारंभ कर दिए थे. एक वर्ष के भीतर ही उसे स्थानीय कालिज में व्याख्याता की नौकरी मिल गई थी. अजित और रंजना की तनख्वाह मिला कर खर्च अच्छी तरह चल जाता था.

समाज की अवहेलना तो सहनी ही थी. पर अजित जैसे अनजान बन जाता था. आलोचनाओं का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था. वह रंजना से भी यही कहता था, "रंजू, तुम सुना ही मत करो किसी की बात. यह तो दुनिया है, कुछ न कुछ कहेगी ही. हम ने तो उन की दृष्टि से कहने वाला कदम भी उठाया है, कहने दो. देखना एक दिन सब चुप हो जाएंगे."

अजित का कहना ही ठीक था. लोगों को एक ही विषय की आलोचना करते रहने का समय ही कहां होता है. नित नए विषय आलोचकों को प्राप्त होते रहते हैं. अतः थोड़े दिनों में ही वे किसी दूसरे विषय में उलझने लगते हैं और पुरानी बात दब जाती है.

अजित हर बार रंजना को साथ ले

कर जाते थे. उन्होंने रंजना को अपने समाज के रीतिरिवाज समझा दिए थे. वह कहते थे, "मैं ने तो समाज को छोड़ा नहीं है, समाज ने मुझे छोड़ा है. इसलिए मैं तो जाऊंगा."

धीरेधीरे सब जगह उन का आनाजाना प्रारंभ हो गया था. रंजना में केवल उस के कुलगोत्र को छोड़ कर दूसरी तो कोई बात थी नहीं. यही रंजना यदि खत्री कुल की होती तो लोग उसे बहू बनाने में गर्व का अनुभव करते. हां, अजित के पिता का क्रोध शांत नहीं हुआ था.

जब अजित पिता के घर जाते तो वह क्रोध के कारण किसी बहाने बाहर चले जाते. मां को बहू ठीक लगती थी, पर समाज के कठोर नियम उस की ममता को जकड़ लेते थे और वह भी सीमित व्यवहार ही रख पाती थी.

रंजना को अब भी वह दिन याद था, जब लिली छः माह की थी. एक दिन उसे तेज बुखार हो गया था. उस के कालिज में निरीक्षण होने वाला था. प्रचार्या ने एक दिन पहले ही सारी व्याख्याताओं को समझा दिया था कि वे ठीक समय पर आ जाएं.

वैसे तो रंजना लिली को रोज शिशुगृह ही छोड़ कर कालिज जाती थी. चार बजे कालिज से लौटने पर रास्ते में उसे लेती हुई घर आती थी. अकेली होने के कारण उसे यह व्यवस्था करनी पड़ी थी. पर उस तेज बुखार में उसे शिशुगृह में छोड़ने को मन नहीं हो रहा था.

वह लिली को ले कर सास के पास गई थी, "मांजी, आज लिली को तेज बुखार है, और मेरा कालिज जाना भी बहुत आवश्यक है. आप लिली के पास वहां रह लीजिए."

रंजना जानती थी कि अगर वह सास के पास लिली को छोड़ कर आएगी तो बाबूजी तूफान खड़ा कर देंगे. इसी लिए उस ने सास को अपने घर रहने को कहा था.

पर मांजी ने कोई बात नहीं समझनी चाही थी, "बहू, तुम मेरी विवशता भी तो समझो. अपने बाबूजी का क्रोध तो तुम
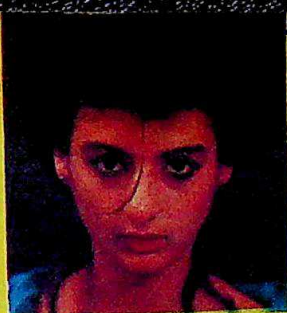
अवसाद

ताड़ के पत्ते बने
अवसाद के ये दिन,
तुम चले आओ, हैं आए
सहवास के ये दिन.
–चंचल हर्ष

जानती हो. मैं वहां कैसे जा सकती हूं? और लिली को यहां भी नहीं रख सकती. तुम इसे शिशुगृह में ही छोड़ दो. वे भी तो बच्चों की देखभाल ठीक ही करते हैं."

आंसू पी कर रंजना लौट आई थी. बुखार में तपती लिली को शिशुगृह छोड़ने गई थी तो शिशुगृह की संरक्षिका सरोज भी आश्चर्यचकित रह गई थीं. दिन भर कालिज में रंजना लिली के लिए बेचैन रही थी. फिर तो धीरेधीरे बाबूजी का क्रोध भी दबने लगा था. मांजी का असहयोग भी उतना नहीं रह गया था. हां, रहते वे लोग अभी भी अलग ही थे.

अब बाबूजी उसे देख कर घर से बाहर तो नहीं जाते थे, पर उस से बोलना, बात करना अभी भी उन्हें पसंद नहीं था. जब अक्षत का जन्म हुआ तो साससुर उसे हस्पताल में देखने गए थे. रंजना भावविह्वल हो कर आंसू न रोक पाई थी. मांजी ने पोते को उठा कर कलेजे से लगा लिया था. रंजना के बेटे को नहीं, अजित के बेटे को. फिर कहा था, "एकदम अजित पर ही तो गया है."

पोते का अपने बेटे का रंगरूप लेना

राजनीति और न्याय

राजनीति और न्याय जनता के लिए अबूझ पहेली नहीं है. इसलिए वह ऐसे लोगों को आसानी से उखाड़ सकती है जो संविधान को उखाड़ना चाहते हैं.

—अब्राहम लिंकन

शायद उन के आहत अहम को तुष्ट कर गया था.

दो बच्चों के साथ रंजना को कठिन असुविधाओं में दिन बिताने पड़े थे. वह नौकरी नहीं छोड़ सकती थी. नौकरी और बच्चों के दायित्वों में बच्चे ही कष्ट पा रहे थे.

अब तो वह सब बड़ा विचित्र लगता था. रंजना कैसे कर पाई थी उतना? कभी किसी बच्चे की तबीयत खराब होती थी तो रंजना रातरात भर नहीं सो पाती थी. सुबह कालिज जाना होता था. कभी अजित छुट्टी ले कर घर रहते थे तो कभी वह. इसी तरह बच्चे बड़े हो गए.

उसे वह दिन अब भी अच्छी तरह याद था, जब उस की ननद का विवाह हुआ था. उस ने अपनी ओर से चुपचाप चार हजार रुपए का उपहार खरीदा था और अजित के हाथों विवाह से पहले ही मांजी के पास भिजवा दिया था. उसे भय था कि सब के सामने देने पर यदि मांजी ने लेने से इनकार कर दिया तो क्या इज्जत रहेगी. मांजी ने उपहार स्वीकार कर लिया था.

उस दिन एक संस्कार होने वाला था. कुलवधुएं मिल कर उस संस्कार को संपन्न करती हैं. रंजना को कालिज के लिए जाते देख कर मांजी ने रोक लिया था, "बहू, आज तुम छुट्टी ले लो. घर में विवाह रचा है और तुम्हारा कालिज जाना है कि..."

रंजना तो जानबूझ कर टल जाना चाहती थी. उसे कौन कुलवधू समझता था? अपमानित होना अकेले में तो सहा जाता है, पर भरी सभा के बीच असह्य हो उठता है. फिर भी सास की अवज्ञा उस ने नहीं की थी और कालिज नहीं गई थी.

इतने मानसिक क्लेशों व अंतर्द्वंद्वों को रंजना अकेली झेल रही थी. अजित को रंचमात्र भी भनक नहीं लगने दी थी. अजित व्यस्त भी बहुत थे. घर में बड़े बेटे होने से उन का दायित्व बहुत बढ़ गया था. बहन का विवाह भरे समाज में हो रहा था. कहीं कोई कमी न रहने पाए, अजित इस ओर से पूर्ण सतर्क थे. एक बार बहन विदा हो कर अपने घर चली जाए तो अजित की जीत ही जीत थी.

दोपहर में खानदान की सारी कुल वधुएं संस्कार के लिए एकत्र हुईं तो कमरे में मांजी ने उसे आदेश दिया था, "बहू, लाल वाली साड़ी पहन लो. पैरों में महावर लगा लो और बाहर चल कर सब के बीच में बैठो. यहां कमरे में अकेली क्या कर रही हो. वहां तुम्हारी जरूरत है."

आखिर, वह घर की पहलीपहली बहू थी. अब जो हुआ सो हो गया. पर वह संस्कार तो बड़ी बहू से कराना ही था. इसीलिए मांजी उसे बुला लाई थीं. रंजना ने लाल साड़ी पहनी. मांजी की आज्ञानुसार महावर रचाया, भर बांह लाल चूड़ियां भी डाल लीं और कमरे से बाहर आई.

सजीधजी 20-25 बहुएं बैठी थीं, पर रंजना के समक्ष सब का रंग फीका था. सब रंजना को एकटक देखे जा रही थीं, मानो कोई अजूबा देख रही हों.

संस्कार की विधि बताते हुए मांजी ने प्रारंभ रंजना के हाथ से कराया तो रंजना की आंखों के कोर आंसुओं से तर हो गए थे. पर उस ने सायास छिपा लिया था. यह तो चमत्कार ही हो गया था. उसे लगा था कि अब मांजी ने उसे हृदय से स्वीकार कर लिया है.

वहां बैठी हुई स्त्रियों में कुछ खुसरफुसर प्रारंभ हुई थी तो मांजी ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था. "बड़ी बहू है घर की.

वहीं तो प्रारंभ करेगी. मेरे बेटे की विवाहिता है, मेरी कुलवधू है."

सब एकाएक चुप हो गई थीं.

अपने ही यदि विरोध न करें तो बाहर वालों की आलोचना करने की हिम्मत नहीं होती. इतने अनवरत संघर्ष के बाद अब रंजना को लग रहा था कि उसे समाज की स्वीकृति प्राप्त हो गई है. विवाहशादियों के अवसरों पर ही उसे सोचना पड़ जाता था. वह इन समारोहों से दूर ही दूर रहती थी. अजित अकेले ही सब निभा आते थे. पर वहां स्थिति दूसरी थी. अजित की अपनी बहन का विवाह था, वह कैसे नहीं जाती?

खैर, कुछ बुरा नहीं हुआ. जाने से पहले उस ने अजित से कहा था, "वहां तुम्हारे नातेरिश्ते के इतने लोग आएंगे, मेरा जाना ठीक होगा क्या?"

अजित ने किंचित रोष से उसे देखा था, "जहां मैं रहूंगा, वहां तुम्हारे रहने को कौन रोकेगा. वह हमें न बुलाएं तो भी हमें जाना चाहिए. हम ने विवाह किया है, चोरी नहीं की है. हम अपना मुंह क्यों छिपाएं?"

ननद का विवाह बड़ी सरलता, मगर भलीभांति संपन्न हो गया था. कहीं कोई गड़बड़ नहीं हुई थी. बरात के विदा होने के बाद सब ने इतमीनान की सांस ली थी. दोचार बूढ़ी स्त्रियों को छोड़ कर किसी ने कोई चर्चा भी नहीं की थी.

रंजना का बेटा इंजीनियरिंग में दाखिला ले कर भुवनेश्वर पढ़ने चला गया था. लिली वहीं विश्वविद्यालय में अंगरेजी साहित्य से एम. ए. कर रही थी. रंजना के बेटीबेटे बहुत कुशाग्रबुद्धि थे. रंजना को बेटी के विवाह की चिंता तो थी, पर वह समाज में तो विवाह कर नहीं पाएगी. यही सोच कर वह चाहती थी कि बेटी यदि किसी सुयोग्य लड़के को पसंद कर ले तो वह अदालत में जा कर उस का विवाह कर देगी.

पर लिली तो दूसरी ही प्रकार की लड़की थी. कटे बालों, अत्याधुनिक

(शेष पृष्ठ 181 पर)

"हाय कमान हवाई जहाज से विदेश जाने वाले थे. जाते समय हवाई अड्डे पर उन्होंने इन को देखा तक नहीं. यह समझते ही इन को चक्कर आ गया..."

बालू पर पड़ी लकीर

मैं अपने घर के बरामदे में बैठा पढ़ने का मन बना रहा था, पर वहां शांति कहां थी. हमेशा की तरह हमारे पड़ोसी पंडित ओंकारनाथ और मौलाना करीमुद्दीन में जोरजोर से झगड़ने की आवाजें आ रही थीं. वह उन का तकरीबन रोज का निमय था—दोनों छोटी से छोटी बात पर लड़ते-झगड़ते रहते थे. "देखो, मियां करीम, मै तुम्हें आखिरी बार मना करता हूं, खबरदार जो मेरी कुरसी पर बैठे."

"अमां पंडित, बैठने भर से क्या तुम्हारी कुरसी गल गई. बड़े आए मुझे धमकी देने, हूं."

"नहाते तो हैं नहीं महीनों से और चले आते हैं कुरसी पर बैठने," पंडितजी ने बड़बड़ाते हुए अपनी कुरसी उठाई और अंदर रखने चले गए.

मुझे यह देख कर आश्चर्य होता था कि मौलाना और पंडित में हमेशा खींचातानी होती रहती थी. पर उन की बेगमों की उन में कोई भागीदारी नहीं थी. मानो दोनों अपनेअपने शौहरों को खब्ती या सनकी समझती थीं. अचार, मंगोड़ी से ले कर कसीदा, कढ़ाई तक में दोनों बेगमों का साझा था.

पंडित की बेटी गीता जब ससुराल से आती, तब सामान दहलीज पर रखते ही झट मौलाना की बेटी शाहिदा और बेटे रागिब से मिलने चली जाती. मौलाना भी गीता को देख कर बेहद खुश होते. घंटों पास बैठ कर ससुराल के हालचाल पूछते रहते. उन्हें चिढ़ थी तो सिर्फ पंडित से.
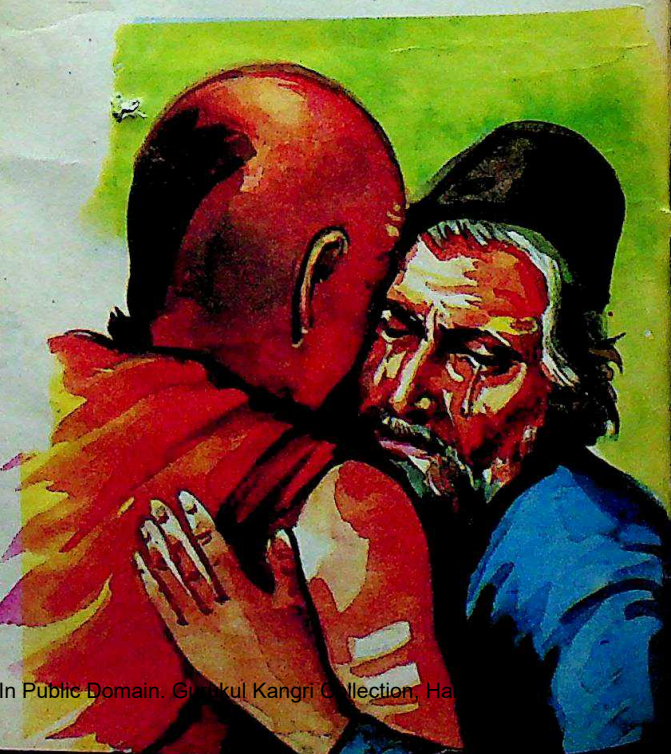
कटाक्षों का सिलसिला यों ही अनवरत
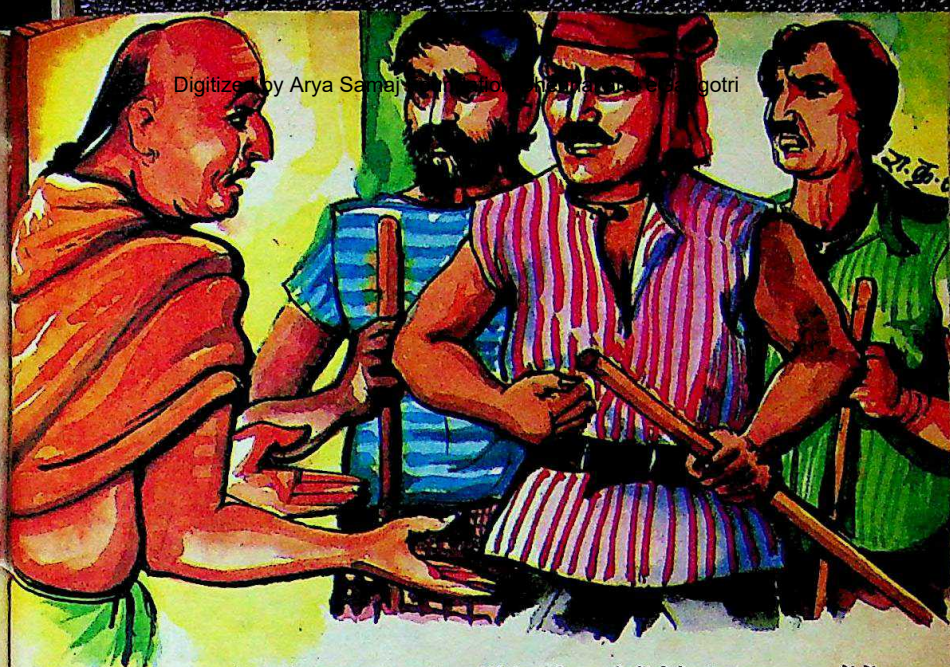
"मैं...मैं ने छिपाया है मौलाना को? अरे, मेरा तो उन से रोज ही झगड़ा होता है. नहीं विश्वास हो तो देख लो मेरा घर." पंडित ने दरवाजे से हटते हुए कहा. ▲

जारी रहता. पिछले दिन ही मौलाना का लड़का रागिब जब सब्जियां लाने बाजार जा रहा था, तब पंडिताइन ने पुकार कर कहा, "बेटे रागिब, बाजार जा रहा है न. जरा मेरा भी थैला लेता जा. दोचार गोभियां और एक पाव टमाटर लेते आना."

"अच्छा चचीजान, जल्दी से पैसे दे दीजिए."

पंडित और मौलाना अपनेअपने बरामदे में कुरसियां डाले बैठे थे. भला ऐसे सुनहरे मौके पर मौलाना कटाक्ष करने से क्यों चूकते. छूटते ही उन्होंने व्यंग्यबाण चलाए, "बेटे रागिब, दोनों थैले अलगअलग हाथों में पकड़ कर लाना. नहीं तो पंडित की सब्जियां नापाक हो जाएंगी."

मुसकराते हुए उन्होंने कनखियों से पंडित की ओर देखा और पान की एक गिलौरी गाल में दबा ली.

उधर पंडित ने इतमीनान कर लिया कि रागिब थोड़ी दूर निकल गया है. तब ताव दिखाते हुए बोले, "अरे रख दे मेरे थैले. मेरे हाथपांव अभी सलामत हैं. मुझे किसी का एहसान नहीं लेना. पंडिताइन की बुद्धि जाने कहां घास चरने चली गई है. खुद चली जाती या मुझे ही कह देती."

भुनभुनाते हुए पंडित दूसरी ओर मुंह फेर कर बैठ जाते.

यों ही नोकझोंक चलती रहती पर एक दिन ऐसी गरम हवा चली कि सारी

छोटीछोटी बातों पर एकदूसरे से नोकझोंक करने वाले पंडित और मौलाना का यह व्यवहार क्या अविश्वास की हवा चलते ही बालू पर पड़ी लकीर की भांति मिट गया था?
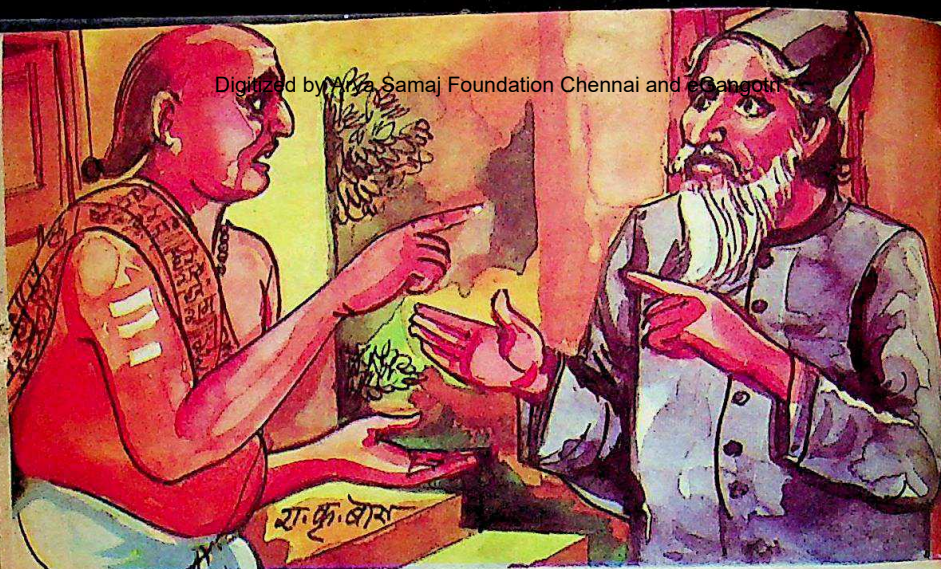
सुबह होते ही पंडित और मौलाना का एकदूसरे पर कटाक्ष करने का सिलसिला फिर शुरू हो गया. ▲

नोकझोंक गंभीरता में तब्दील हो गई.

"शहर शांत था, पर वह शांति किसी तूफान के आने से पूर्व जैसी भयानक थी. अब न पंडिताइन रागिब को सब्जियां लाने को आवाज देती, न ही मौलाना आ कर पंडित की कुरसी पर बैठते. एक अदृश्य दीवार दोनों घरों के मध्य उठ गई थी, जिस पर दहशत और अविश्वास का प्लास्टर दोनों ओर के लोग थोपते जा रहे थे. रिश्तेदार अपनी 'बहुमूल्य राय' दे जाते, "देखो मियां, माहौल ठीक नहीं है. यह महल्ला छोड़ कर कुछ दिन हमारे साथ रहो."

परंतु कुछ ऐसे भी घर थे, जहां अविश्वास की परत अभी उतनी मोटी नहीं थी. इन दोनों परिवारों को भी अपना घर छोड़ना मंजूर नहीं था.

"गीता के बापू, सो गए क्या?"

"नहीं सोया हूं," पंडित खाट पर करवट बदलते हुए बोले.

"मेरे मन में बड़ी चिंता होती है."

"तुम क्यों चिंता में [illegible] रही हो. ख्वाहमख्वाह नींद खराब कर दी, हूंह." और पंडित बड़बड़ाते हुए बेफिक्री से करवट बदल कर सो गए.

पर एक रात ऐसा ही हुआ जिस की आशंका मन के किसी कोने में दबी हुई थी. दंगाई (जिन की न कोई जाति होती है, न धर्म) जोरजोर से पंडित का दरवाजा खटखटा रहे थे, "पंडितजी, बाहर आइए."

पंडित के दरवाजा खोलते ही लोग चीखते हुए पूछने लगे, "कहां छिपाया है आप ने मौलाना के परिवार को."

"मैं... मैं ने छिपाया है, मौलाना को? अरे, मेरा तो उन से रोज ही झगड़ा होता है. नहीं विश्वास हो तो देख लो मेरा घर," पंडित ने दरवाजे से हटते हुए कहा.

अभी दंगाइयों में इस बात पर बहस चल ही रही थी कि पंडित के घर की तलाशी ली जाए या नहीं कि शहर के दूसरे छोर से बच्चों और स्त्रियों की चीखपुकार सुनाई पड़ा. रात के सन्नाटे में वह हंगामा और भी भयावह प्रतीत हो रहा था. दरिंदे अपना खतरनाक खेल खेलने में मशगूल थे. बलवाइयों ने पंडित के घर की चिंता छोड़ दी और वे दूसरे दंगाइयों से निबटने के लिए नारे लगाते हुए तेजी से कोलाहल की दिशा की ओर झपट पड़े.

दंगाइयों के जाते ही पंडित ने दरवाजा बंद किया. तेजी से सीढ़ी बजाते हम एक ओर चले. वह कमरा जिसे पंडिताइन फालतू सामान और लकड़ियां रखने के काम में लाती थी, अब मौलाना के परिवार के लिए शरण स्थली था. सभी भयभीत कबूतरों जैसे सिमटे थे. बस सुनाई पड़ रही थी तो अपनी सांसों की आवाजें.

पंडित ने कमरे में पहुंचते ही मौलाना को जोर से अंक में भींच कर गले लगा लिया. आंखों से अविरल बह रहे आंसुओं ने खामोशी के बावजूद सब कुछ कह दिया था. मौलाना स्वयं भी हिचकियां लेते जाते और पंडित के गले लगे हुए सिर्फ "भाईजान, भाईजान" कहते जा रहे थे.

गरम हवा शांत हो कर फिर बयार बहने लगी थी. सब कुछ सामान्य हो चला था. न तो किसी को किसी से कोई गिला था, न शिकवा. एक संतुष्टि मुझे भी हुई, अब मेरा महल्ला शांत रहेगा. पढ़ने के उपयुक्त वातावरण पर मेरा यह चिंतन मिथ्या ही साबित हुआ.

सुबह होते ही पंडित और मौलाना ने अखाड़े में अपनी जोरआजमाई शुरू कर दी थी.

"तुम ने मेरे दरवाजे की पीठ पर फिर थूक दिया, मौलाना," पंडित गरज रहे थे.

"अरे, मैं क्यों थूकने लगा. तुझे तो लड़ने का बहाना चाहिए."

"क्या कहा, मैं झगड़ालू हूं."

"मैं तो गीता बिटिया के कारण तेरे घर आता हूं, वरना तेरीमेरी कैसी दोस्ती."

शिकायतों और इलजामों का कथोपकथन तब तक जारी रहा, जब तक दोनों थक नहीं गए.

मैं ने सोचा, 'यह समुद्र की लहरों द्वारा बालू पर खींची गई वह लकीर है, जो क्षण भर में ही मिट जाती है. समुद्र के किनारों ने लहरों के अनेक थपेड़ों को झेला है. पर आखिर में तो वे समतल ही हो जाते हैं.' ●

ये पति

मेरे पति को मेरे बनाए खाने में कुछ न कुछ कमी निकालने की आदत है. एक बार किसी के यहां उन्होंने अरहर की दाल खाई. उस समय उन के साथ मेरा छोटा भाई भी था.

दूसरे दिन मैं ने भी अरहर की दाल बनाई. खाना खाते वक्त अपनी आदत के अनुसार उन्होंने कहा, "यह भी कोई दाल है. दाल तो कल खाई थी."

तभी मेरा छोटा भाई तपाक से बोला, "जीजाजी, उन की दाल के बारे में तो आप कह रहे थे कि दाल भी कहीं ऐसे बनती है."

भाई की बात सुनते ही मेरी हंसी छूट गई, लेकिन मेरे पति का चेहरा देखने लायक हो गया था.

—पूजा वर्मा

*

अपनी शादी के कुछ महीने बाद मैं अपनी बहन के यहां मिलने गई. लौटते समय मेरे पति स्कूटर स्टार्ट कर रहे थे, लेकिन स्कूटर स्टार्ट नहीं हो रहा था. मेरी अच्छी सेहत होने के कारण मैं ने अचानक कहा, "मेरे पैर भारी हैं. लाइए, मैं किक मारूं."

मेरी बात सुनते ही मेरे जीजाजी ने तपाक से कहा, "तुम्हारे पैर भारी हैं, कितने महीने का है?"

आभा चंद्रा

*

हमारी भाभीजी गुस्से में अकसर कह दिया करती थीं, "मेरे तो तनबदन में आग लग गई."

पिछले वर्ष दीवाली पर जब भैया भाभीजी द्वारा बताई कोई चीज लाना भूल गए तो भाभीजी ने आदत के अनुसार गुस्सा होते हुए भाई साहब से कहा, "आप की इन्हीं बातों से तो मेरे तनबदन में आग लग जाती हैं."

यह सुन कर भाई साहब पास रखी हुई बाल्टी का पानी भाभीजी के ऊपर डालते हुए बोले, "लो, आग बुझ गई."

धर्म सिंह ●

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ आखिरी अदालत

निर्माता : परवेश सी. मेहरा
निर्देशक : राजीव मेहरा
संगीत : अनु मलिक
मुख्य कलाकार : विनोद खन्ना, डिंपल कापड़िया, जैकी श्राफ, सोनम, विनोद मेहरा, सीमा देव, शफी ईनामदार, रूपेश कुमार, गुलशन ग्रोवर और परेश रावल.

इधर कुछ अरसे से हमारी फिल्मों में समानांतर अदालत का प्रचलन कुछ बढ़ा है. यह समानांतर अदालत आप को देखने को मिली होगी फिल्म 'शहंशाह' और 'खतरों के खिलाड़ी' में. यही नहीं, इन फिल्मों से पहले भी यह अदालत दिखाई जाती रही है.

फिल्म 'आखिरी अदालत' में भी यह समानांतर अदालत मौजूद है, जो अपराधियों को कानून द्वारा छोड़ दिए जाने पर मौत की सजा देती है. सवाल उठता है, ऐसा बारबार क्यों दिखाया जा रहा है. जवाब है, हमारा कानून इतना लचर है कि अपराधी अपराध कर के साफ बच निकलते हैं और कानून देखता रह जाता है. इस फिल्म की कहानी का विषय ठीक यही है, जिसे निर्देशक राजीव मेहरा ने कुशलता से निर्देशित कर के कुछ हद तक दर्शनीय बना दिया है.

शहर में सनसनी फैली हुई है. छः बदमाश हत्याएं करते हैं, तस्करी करते हैं, खूनखराबा करते हैं. पकड़े जाने पर वे अदालत से बरी हो जाते हैं. एकएक कर के उन अपराधियों का खून होता जाता है. कोई नहीं जानता कि यह खून कौन कर रहा है. इधर इंस्पेक्टर अमर (विनोद खन्ना) अपराधियों के पीछे है. सबइंस्पेक्टर रीमा (डिंपल कापड़िया) उस की सहायिका है. दोनों में प्रेम हो जाता है. एक दिन रीमा अमर के घर वही लिबास देखती है जो हत्यारा पहनता है. उसे शक हो जाता है कि अमर ही अपराधियों का हत्यारा है, लेकिन अमर की मंगनी के वक्त घटा हादसा इस बात को झुठला देता है. फिर शक किया जाता है एक पत्रकार नितिन (जैकी श्राफ) पर. यह शक सही साबित होता है. इस बात पर से परदा उठता है कि अपराधियों को मौत के घाट उतारने वालों में एक अवकाशप्राप्त जज, बैरिस्टर, डाक्टर, स्वतंत्रता सेनानी, गृहिणी और एक पत्रकार शामिल हैं. अदालत में इन सब पर मुकदमा चलता है, जहां यह पता चलता है कि इन लोगों ने केवल अपराधियों को ही खत्म किया है, निरपराध लोगों को नहीं. तभी सबइंस्पेक्टर रीमा की नजर गिरजा (परेश रावल) की कलाई पर जाती है और असली अपराधी का पता चल जाता है. इधर उपअधीक्षक (पुलिस) (शफी ईनामदार) रीमा को पकड़ कर गिरजा तक पहुंचाता है. उधर अमर और नितिन पुलिस से छूट कर उस असली अपराधी से रीमा को बचाते हैं. गिरजा मारा जाता है और नितिन को जेल हो जाती है.

मुजरिम बनाम कानून की लड़ाई पर आधारित इस फिल्म में एक से एक आधुनिक हथियारों का प्रयोग किया गया है. फिल्म में हिंसा बहुत है. फिल्म में शुरू में तो
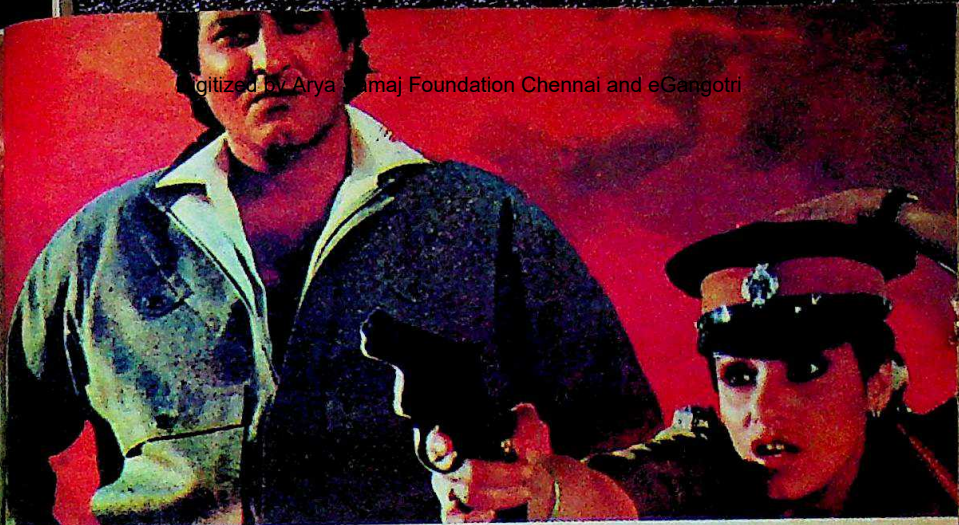
फिल्म 'आखिरी अदालत' में विनोद खन्ना और डिंपल कापड़िया : समानांतर अदालत पर बनी साधारण फिल्म.

लगता है कि ये हत्याएं इंस्पेक्टर अमर ही करता है. परंतु फिर लगता है कि इस के पीछे कहीं पत्रकार नितिन तो नहीं. लेकिन फिर भी रहस्य बना रहता है कि शायद कोई और है. यह सब कुशल निर्देशन की वजह से हुआ है. इस के अलावा, फिल्म में सभी किस्म के फार्मूले मौजूद हैं—मारधाड़, उत्तेजक नृत्य, बलात्कार की कोशिश आदि.

फिल्म में एक पुलिस उपअधीक्षक को अपराधियों से मिला हुआ दिखा कर निर्देशक ने पुलिस विभाग पर व्यंग्य किया है. जब ऐसे पुलिस अधिकारी ही अपराधियों के सामने दुम हिलाते रहेंगे तो देश का क्या होगा? फिल्म का छायांकन एस. एम. अनवर ने किया है, जिसे अच्छा कहा जा सकता है. फिल्म के संवाद जावेद सिद्दीकी ने लिखे हैं, जिन में एकाध जगह छोड़ कर कहीं कोई अश्लीलता नहीं है. फिल्म का संपादन भी कुशलता से किया गया है.

अभिनय की दृष्टि से विनोद खन्ना प्रभावित करता है. वह 'अर्धसत्य' के पुलिस अफसर जैसा लगता है. डिंपल कापड़िया मध्यांतर से पहले एक अनाड़ी पुलिस अफसर की भूमिका में दर्शकों को काफी हंसाती है. जैकी श्राफ परिचित शैली में है. सोनम एक नई अभिनेत्री है. यह उस की पहली फिल्म है. अपनी पहली ही फिल्म में उस ने जिस तरह अपने बदन से कपड़े उतारे हैं, उस से लगता है कि यह अभिनेत्री सिर्फ सजावटी गुड़िया बन कर रह जाएगी. अन्य कलाकार साधारण हैं.

★ कमांडो

निर्माता: मुशीर रियाज
निर्देशक: बी. सुभाष
संगीत: भप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार: मिथुन चक्रवर्ती, मंदाकिनी, हेमंत बिरजे, किम, डैनी, शक्ति कपूर, दिलीप ताहिल और अमरीश पुरी.

इस फिल्म में बंबइया शैली में देशभक्ति के फार्मूले को भुनाया गया है. फिल्म में दिखाए गए देश के गद्दार लोग और देशभक्त नायक, किसी में भी स्वाभाविकता नजर नहीं आती. जो कुछ दिखाया गया है, वह सब नाटकीयता लगती है.
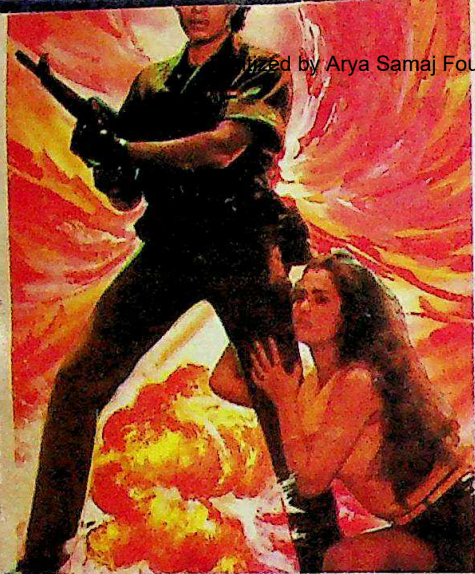
फिल्म 'कमांडो' में मिथुन चक्रवर्ती और मंदाकिनी : देशभक्ति का फार्मूला.

चंदर (मिथुन चक्रवर्ती) एक देश-भक्त का बेटा है और आशा (मंदाकिनी) हथियार बनाने वाली फैक्टरी के मालिक की बेटी. फैक्टरी का जनरल मैनेजर एम. सी. भल्ला (दिलीप ताहिल) देशद्रोहियों से मिला हुआ है. इस काम में उस की मदद करता है. सुरक्षा अधिकारी मिरजा (शक्ति कपूर). चंदर इस फैक्टरी में कमांडो फोर्स में भरती हो कर आता है. उसे हथियारों से भरे ट्रक को ले जाने के लिए कहा जाता है. इन हथियारों के बारे में पहले ही सौदा हो चुका होता है कि मारसीलोनी (अमरीश पुरी) के आदमी इन्हें लूट लेंगे. परंतु चंदर हथियारों को लुटने नहीं देता. उसे आशा को ले कर भागना पड़ता है. मारसीलोनी चंदर को मारने के लिए निजा (डैनी) को नियुक्त करता है, इधर आशा के पिता को जब पता चलता है कि एम. सी. भल्ला देशद्रोहियों से मिला हुआ है, तो वह कंपनी का सारा प्रबंध अपने हाथ में ले लेता है. उधर मारसीलोनी आशा को अगवा कर लेता है और सीमा पार अपने अड्डे पर ले जाता है. आशा को छुड़ाने का काम चंदर को सौंपा जाता है. वह [illegible] (हेमंत बिरजे) व जूमजूम (किम) की सहायता से मारसीलोनी के अड्डे तक पहुंच कर सब का सफाया कर डालता है. और आशा को मुक्त करा लाता है.

पिछले दिनों अखबारों में बहुत प्रचार किया गया कि पड़ोसी देश हमारे देश में अवैध हथियार भेज रहे हैं और अपने यहां से लोगों को ट्रेनिंग दे कर हमारे देश में तोड़फोड़ कराने के लिए भेज रहे हैं. इसी विषय को आधार बना कर इस फिल्म की कहानी लिखी गई है.

फिल्म देखने पर शुरू में तो ऐसा लगता है कि कहानी में काफी दम होगा क्योंकि शुरू में ही एक पात्रा को मेकअप द्वारा इंदिरा गांधी बना कर जनता के सामने भाषण करते हुए दिखाया जाता है और इंदिरा गांधी द्वारा बोले गए कुछ वाक्य उस से बुलवाए जाते हैं. उस के बाद देशद्रोहियों द्वारा उस की हत्या करते हुए दिखाया जाता है. इस के अलावा, देशभक्ति के जज्बे की और भी बातें कही जाती हैं. परंतु शीघ्र ही बंबइया लटकोंझटकों में यह कहानी फंस कर रह जाती है. कहींकहीं फिल्म के गाने कहानी में बाधा बनते नजर आते हैं.

फिल्म का निर्देशन कुछ हद तक ठीक है. हास्य कलाकार सतीश शाह पर फिल्माया गया कुछ भाग थोड़ी राहत देता है. फिल्म में संवाद डा. राही मासूम रजा ने लिखे हैं, जिन में कहीं कोई गंदगी नहीं है. बाहरी शूटिंग के कुछ दृश्य अच्छे बन पड़े हैं.

फिल्म में मिथुन चक्रवर्ती ने परंपरागत अभिनय किया है. लगता है कि राजकपूर की गंगा (मंदाकिनी) अब कुछ उजली होने लगी है. इस फिल्म में उस के अभिनय में कुछ निखार आया है. हालांकि एकाध जगह उस ने थोड़ा सा शरीर प्रदर्शित करने की की है. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म के गीत अनजान ने लिखे हैं, जिन्हें बप्पी लाहिड़ी ने अच्छा संगीत दिया है. दो गीत चल सकते हैं.

○ शूरवीर

निर्मातानिर्देशक : श्याम रल्हन
संगीत : लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार : राजन सिप्पी, मंदाकिनी, सुरेश ओबराय, डैनी, कादर खान, राकेश बेदी, गोगा कपूर और दीप्ति नवल.

'शूरवीर' एक कमजोर फिल्म है, जिस में जगहजगह नाटकीयता नजर आती है. इस फिल्म की कहानी में इत्तफाक और किस्मत के नाम पर जगहजगह पात्रों का टकराव कराया गया है और अंत में पात्रों को आपस में मिला कर इसे किस्मत का चमत्कार बताया गया है.

शंकर (डैनी) अपनी पत्नी नंदा (दीप्ति नवल) व बच्ची मीना (बड़ी हो कर मंदाकिनी) के साथ रहता है. नंदा गर्भवती है और एक बेटे को जन्म देती है. शंकर अपने बेटे को बड़ा आदमी बनाने के लिए बुरे काम करने लगता है. शंकर का बास उसे हत्या के आरोप में गिरफ्तार कराना चाहता है. शंकर भाग निकलता है. घर आने पर उसे पता चलता है कि उस का बेटा बीमार है. वह उसे डा. मल्होत्रा (सुरेश ओबराय) के पास ले जाता है. डाक्टर बच्चे को देखने से इनकार करता है. बच्चा मर जाता है. शंकर भाग निकलता है. दीवाली की रात को वह डाक्टर के इकलौते बेटे वीर (बड़ा हो कर राजन सिप्पी) को उठा ले जाता है. वह वीर को अपने आदमी के सुपुर्द कर देता है. पुलिस शंकर को गिरफ्तार कर लेती है.

इधर शंकर की पत्नी व बेटी मीना डा. मल्होत्रा के घर नौकरी करने लगती हैं. उधर बड़ा होने पर वीर की मुलाकात मीना से होती है. दोनों में प्यार होता है. शंकर जेल से रिहा होने वाला होता है कि लोग वीर को जेल भिजवा देते हैं. जेल में वीर को असलियत पता चलती है तो वह शंकर का दुश्मन बन जाता है. जेल से छूटने पर शंकर पर दबाव डाला जाता है कि वह मीना को अगवा कर ले. वह मीना का अपहरण करता है. तभी वीर भी जेल से बाहर आता है और शंकर को दबोच लेता है. यहीं सारा रहस्य खुलता है. परंतु तभी शंकर के गिरोह का मुखिया (कादर खान) सब को घेरे में ले लेता है. घमासान लड़ाई के बाद सब दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है.

फिल्म की पटकथा तरुण घोष ने लिखी है, जिस में जगहजगह खामियां हैं. पहली बात तो यह कि इस का विषय ही घिसापिटा है. दूसरे, निर्देशक श्याम रल्हन भी इसे सहारा देने में असफल रहा है. संपादन स्वयं काफी हद तक कमजोर है.

फिल्म के संवाद कादर खान ने लिखे हैं, जो कहींकहीं बकवास मालूम पड़ते हैं. संवाद बोलने में आवाज का दोष साफ नजर आता है. फिल्म में मारधाड़ व गोलियों की बौछार का भी प्रयोग किया गया है. मारधाड़ के दृश्यों में फाइट कंपोजर मोहन बग्गड़ पूरी तरह असफल रहा है.

फिल्म 'शूरवीर' में राजन सिप्पी : अपरिपक्व अभिनय ▼

फिल्म में पांच गाने हैं, जिन्हें मोहम्मद अजीज, अनुराधा पोडवाल, सुरेश वाडकर और कविता कृष्णमूर्ति जैसी टीम ने गाया है, परंतु अफसोस, कोई गाना चलने वाला नहीं. फिल्म का छायांकन भी कमजोर है.

अभिनय की दृष्टि से राजन सिप्पी प्रभावित नहीं करता. इस से पहले हालांकि उस की कुछ फिल्में प्रदर्शित भी हो चुकी हैं. परंतु अभी तक वह अपना अच्छा अभिनय नहीं दिखा पाया है. दीप्ति नवल जैसी अभिनेत्री को ऐसी फिल्म स्वीकार ही नहीं करनी चाहिए थी. मंदाकिनी तो लगता है कि अब सिर्फ जिस्म दिखाने वाली गुड़िया बन कर रह गई है. इस फिल्म में उस का अभिनय निकृष्ट है. अन्य कलाकार भी निराश ही करते हैं.

○ जुल्म को जला दूंगा

निर्माता निर्देशक: महेंद्र शाह
संगीत: नदीम श्रवण
मुख्य कलाकार: नसीरुद्दीन शाह, सुमीत सहगल, वसंतसेना, किरण कुमार, सदाशिव अमरापुरकर व संपूर्णानंद.

इस फिल्म का नाम 'जिंदा जला दूंगा' था, परंतु सेंसर की तारीफ करनी होगी कि उस ने इस 'समाजविरोधी' नाम के साथ फिल्म को पास नहीं किया.

एक गांव में धर्मदास (किरण कुमार), इंस्पेक्टर मंगेश (सदाशिव अमरापुरकर) तथा ठकुर (संपूर्णानंद) के अत्याचारों का बोलबाला है. इसी गांव में हरिया (नसीरुद्दीन शाह) मुरदे जलाने का काम करता है. एक दिन गांव में एक डाक्टर (सुमीत सहगल) आता है. उसे हरिया की बहन तुलसी (वसंतसेना) से प्यार हो जाता है. काफी नाटकीय सी परिस्थितियों में दोनों की शादी हो जाती है, परंतु शादी की रात मंगेश तुलसी के साथ बलात्कार करता है तथा उस के पति को मार डालता है एवं बाद में ठकुर के घर छिप जाता है. बदले की आग में सुलगता हरिया दोनों खलनायकों को खत्म कर देता है. इस सारी कहानी के बीच कहीं धर्मदास का हृदय परिवर्तन भी शामिल है.

नसीर अगर चाहे भी तो इस से घटिया अभिनय कभी नहीं कर पाएगा. जब नसीर जैसे अभिनेता का इस फिल्म में यह हाल है तो बाकी कलाकारों के अभिनय का अंदाजा आप स्वयं लगा सकते हैं.

महेंद्र शाह के निर्देशन के स्तर की एक बानगी प्रस्तुत है. हरिया एक अत्यंत निर्धन व्यक्ति है तथा मुरदे जलाता है, परंतु उसे सारी फिल्म में स्टोनवाश की पैंट पहने दिखाया गया है.

वास्तव में यह फिल्म निर्देशन, संगीत तथा अभिनय, हर लिहाज से इतनी बेकार है कि स्वस्थ मस्तिष्क वाले लोगों को तो इस फिल्म में 'पोस्टरों' के भी आसपास नहीं भटकना चाहिए.

हो सकता है कि कम कीमत की वजह से यह फिल्म निर्माता के लिए थोड़ाबहुत फायदे का सौदा साबित हो, परंतु वितरक निश्चित रूप से घाटा उठाएंगे. ●

'जुल्म को जला दूंगा' में नसीरुद्दीन शाह : औसत मसाला फिल्म. ▼

गरीबी और गैरजिम्मेदार पूंजीपति

लेख • सैन्नी अशेष

भारत की गरीबी को समझने के लिए मार्क्स को पढ़ने की नहीं, भारत की परंपरागत मान्यताओं को जानने की जरूरत है.

इस देश के पिछले पंडित यह बताते थे कि हमारी गरीबी और लाचारी का कारण जन्मों के कर्म हैं, हमें अपनी नियति को चुपचाप स्वीकार कर लेना चाहिए.

धार्मिक पंडितों का जमाना अभी लदा भी नहीं था कि समाजवादी पंडित यह घुट्टी पिलाने लगे कि इस देश की गरीबी का कारण इस देश के अमीर लोग हैं.

धार्मिक पंडित और समाजवादी पंडित दोनों ही लोकप्रिय हो गए. दोनों ही बड़े चालाक हैं. कहते हैं कि साहब, आप सोलह आने सही हैं, आप की गरीबी के पीछे आप का अपना कोई हाथ नहीं, ये तो दूसरी चीजें हैं, जिन के कारण आप गरीब हैं. गरीब को आप रोटी तो दे नहीं सकते, मगर यह प्यारा भुलावा तो दे सकते हैं कि वह जैसा है, जहां है, उस के लिए वह कतई जिम्मेदार नहीं है.

जिस कौम को यह कहनेसुनने और माननेमनवाने की गहरी आदत पड़ जाती है कि उस की बदहाली के लिए कोई अन्य (ईश्वर, भाग्य, पूर्वजन्म या पूंजीपति) जिम्मेदार है, वह कौम अहंकारी हो जाती है. वह या तो किस्मत के नाम पर निठल्ली हो कर पड़ी रहती है या आक्रामक हो कर सफल व्यक्ति पर झपटती है. उस से यह आशा करना मूर्खता होगी कि वह पूंजी के महत्त्व या पूंजी के शोषण में फर्क कर पाएगी.

जो व्यक्ति अपनी गरीबी के पीछे अपनी रूढ़िवादी मान्यताओं का नहीं, अपनी समझ या निठल्लेपन का नहीं, किसी अन्य का हाथ देखता रहता है, वह या तो गरीब ही रहता है या उचक्का हो जाता है. वह उन लोगों को भी बरगलाता है, जो संघर्ष कर के गरीबी से मुक्ति पाने का निश्चय करते हैं. यह भी स्वाभाविक है कि वह गरीबों को बहकाते हुए पूजीपतियों के हाथों की कठपुतली बन जाए.

गैर जिम्मेदार पूंजीपति ही सब से पहले उन लोगों से हाथ मिलाता है, जो बातों और नारों के बल पर अपनी नेतागीरी चमकाना चाहते हैं, जो पूंजीपति गलत तरीकों से रुपया कमाते हैं, उन्हें ही गलत लोगों के दबाव में भी आना पड़ता है. उन्हीं के कारण अधकचरे समाजवादियों के इस प्रचार को बल मिलता है कि गरीब होना शराफत है और अमीर होना बदमाशी. वे मेहनत, बुद्धि, ईमानदारी और प्रतिभा के बजाए समानता और समाजवाद का प्रचार करते हैं. उन के 'सत्य' उन के असत्य की वकालत करते हैं.

जिस समाज में मेहनत और बुद्धि की जगह भाग्य और पोथी ज्ञान की मान्यता हो, उस समाज में गरीबों के साथसाथ तिकड़मी अमीरों को भी 'समाजवाद' बड़ा आकर्षक और न्यायपूर्ण शब्द प्रतीत होता है. शब्द कभी भी बनाए जा सकते हैं, लेकिन पूंजी बनाने में समय लगता है. पूंजी बनाने का मतलब इधर के रुपए उठा कर उधर कर लेना नहीं है, जैसा कि सरकारें करती हैं. पूंजी बनाने का मतलब है उत्पादन करना और उस के बल पर धन अर्जित करना. यह धर्मशास्त्र या समाजवाद के मंत्र पढ़ने वालों के वश का काम नहीं है. इस के लिए प्रतिभा और श्रम के साथ ही प्रबंध कौशल और साहसपूर्ण समर्पण एवं जोखिम चाहिए. यह गंगा का घाट नहीं है कि लोग स्वयं मुंडवाने चले आएंगे.

पूंजीवाद शाब्दिक दर्शन नहीं है. इस में सृजन के बाद अर्जन की सहज यात्रा है, यह धरती से जुड़ा दर्शन है.

किंतु यह भी स्वाभाविक है कि गरीबी से प्रेम करने वाले लोग लक्ष्मी की आरती उतारने के साथ ही सहज संपन्न व्यक्ति से जलें और अपने अभावों का कारण उसे ही मान बैठें. यों भी भारत में औसत व्यक्ति प्रतिदिन उन सभी लोगों को चोर उचक्का बताता है, जिन की बनाई चीजें खरीदे बगैर उस का काम नहीं चलता. यह भारतीय चरित्र 'इंपोर्टेड' (आयातित) नहीं है और न ही इस में विदेशी हाथ है. हम ने इस चरित्र को विकसित करने के लिए न केवल सैकड़ों धर्मग्रंथ रचे हैं, बल्कि कई युगों तक उन सभी ग्रंथों को नष्ट करते रहे हैं, जिन्होंने हमारी मूर्खताओं को समयसमय पर

जब तक गरीब व्यक्ति अपने को भाग्य और आडंबरपूर्ण समाजवाद शब्दों के घेरे में जकड़े निठल्ला बैठा रहेगा तब तक उस का शोषण करने के लिए ये गैर जिम्मेदार पूंजीपति पनपते रहेंगे.

श्रम कर गरीबी से मुक्ति पाने का निश्चय आप को पूंजीपति के हाथों की कठपुतली नहीं बनने देगा.

संवेदनशील और सुलझे हुए समाजवादी लोगों के संघर्ष पर पानी फेरने के लिए छद्म समाजवादियों को प्रश्रय दिया. 'समाजवाद' एक बदनाम शब्द बन कर रह गया क्योंकि अधिकांश लोगों ने इस का इस्तेमाल दो कौड़ी के स्वार्थों के लिए किया.

फटकारा था.

इस की परिणति यह हुई कि हमारे यहां गरीबी को बरगला कर अपना उल्लू सीधा करने वाले अमीरजादे तो अस्तित्व में आए ही, अपने बीच में से पाखंडी और उच्छृंखल समाजवादियों को पैदा करने में भी सफल हुए. ये गैरजिम्मेदार पूंजीपति यह देखदेख कर खुश होते हैं कि पूरा देश एक स्वर से केवल टाटा या बिड़ला को गाली देता है. इन्हीं गैरजिम्मेदार अमीरजादों ने

वास्तव में शब्दों से पहले किसी भी व्यक्ति की संघर्ष यात्रा को देखना आवश्यक है. उसी के बाद यह तय किया जा सकता है कि उस के 'पूंजीवाद' या 'समाजवाद' के क्या मानी हैं? अकसर जब पूंजीपरस्त लोग समाजवाद का नारा लगाने लगते हैं तो समाजवाद कोरा ब्राह्मणवाद बन जाता है. "तुम मुझे वोट दो, मैं तुम्हारी गरीबी दूर करूंगा" और "तुम मुझे गोदान करो, मैं

(शेष पृष्ठ 182 पर)

"झल्ली चाहिए, मां?" इस आवाज में जो [illegible] था कि मैं ठिठक गई. यों तो बंगलौर के रसल बाजार के पास कार रुकी नहीं कि टोकरी वाले आप को घेर कर खड़े हो जाते हैं. इस आशा में कि आप उन को उन की झल्ली (टोकरी) के साथ ले कर ही आगे बढ़ेंगी. वह आप का खरीदा सामान, फल, सब्जी आदि बाजार से अपने सिर पर लाद कर साथसाथ चलेंगे और अंत में आप के वाहन तक पहुंचा कर और अपना तय मेहनताना ले कर ही साथ छोड़ेंगे. वहां स्त्रीपुरुष, बूढ़े बच्चे सभी उम्र के लोग इस कार्य को करते हुए दिखाई दे जाएंगे. इसलिए उस छोटे लड़के ने जब झल्ली चाहिए के बारे में पूछा तो मुझे आश्चर्य नहीं हुआ.

लक्ष्मी

कहानी • उर्मिला तिवारी

उस उम्र के और भी लड़के आसपास इसी काम में लगे थे. पर वह सांवला, दुबलापतला, गोल मुंह वाला लड़का कोई और नहीं, मेरी पूर्व आया लक्ष्मी का बेटा नागार्जुन लग रहा था, बिलकुल अपनी मां से मिलता था. फिर भी तीन वर्ष बाद मैं उसे देख रही थी. इसलिए अपनी शंका का समाधान पूर्ण रूप से उसे अपने पास बुला कर करना चाहती थी. मैं ने आवाज दी, "इधर आओ."

वह भागा हुआ आया. मैं ने उस से उस का नाम पूछा. 'नागार्जुन' सुनते ही मैं प्रसन्न हो उठी.

वह टुकुरटुकुर मेरा मुंह देखता रहा. मैं उस से न जाने कितने प्रश्नों का हल चाहती थी कि वह बोला, "मां, क्या चाहिए, पहले फल या सब्जी?"

मेरे मुंह से निकला, "दोनों."

कायदे से उसे मेरे पीछेपीछे चलना चाहिए था. पर वह आगेआगे चल पड़ा और मैं पीछेपीछे. वह थोड़ी दूर चल कर एक दुकान पर रुक गया.

उस दुकान पर उस की बहन नागम्मा को देख कर मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि वह लड़का वही नागार्जुन है, जिस की मां उस के पिता की हत्या के जुर्म में आजीवन कारावास भोग रही है.

नागम्मा की नजर जैसे ही मुझ पर पड़ी. वह आश्चर्यमिश्रित भाव से बोली, "मां, आप? कब आईं?"

अगले प्रश्न के लिए वह मुंह खोलती, इस से पूर्व उस की दुकान की भीड़ को देख कर मैं ने इतना ही कहा, "नागम्मा, घर आना. हम लोगों का दिल्ली से यहां तबादला हो गया है."

और अपना पता दे कर, कुछ सामान उस की दुकान से ले कर आगे बढ़ गई.

नागार्जुन अब मेरे पीछेपीछे चल रहा था. वह मेरी पूरी खरीदारी में कुछ न बोला. बस, एक आज्ञाकारी बालक की तरह

चलता रहा. सभी सामान कार में रखने के बाद जब मैं ने उसे मजदूरी के पैसे दिए तो उस ने लेने से इनकार कर दिया, मैं ने जबरदस्ती देने का प्रयास किया. तो उस की आंखों में आंसू भर आए थे. हाथ जोड़ कर बोला, "मां, बहन के साथ आप की कोठी पर

सौतेली बेटी नागम्मा की आबरू की रक्षक लक्ष्मी को यद्यपि आजीवन कारावास की सजा मिली पर सच तो यह है कि न्याय की कसौटी पर वह निरपराध थी. समय के थपेड़ों का मुकाबला करती नन्ही नागम्मा ने कैसे मां के सपनों को साकार कर दिखाया?

आऊंगा." और सलाम कर के तुरंत दूसरी कार की ओर चल पड़ा. मैं किंकर्तव्यविमूढ़ सी उसे अपलक देखती रही.

वह सांवला, दुबलापतला, गोल मुंह वाला लड़का मुझे अपनी पूर्व आया लक्ष्मी का लग रहा था. फिर भी शंका समाधान करने के लिए मैं ने उसे आवाज दी, "इधर आओ."

अब से लगभग तीन वर्ष पूर्व की घटना थी. नागम्मा मेरे यहां नौकरानी का काम करती थी. उसे हिंदी नाममात्र को आती थी. मैं ने उसे अपनी पड़ोसिन कर्नल विनोद की पत्नी कुसुम के कहने पर रखा था. नागम्मा की मां लक्ष्मी कर्नल विनोद के घर में काम करती थी.

जब नागम्मा अपनी मां लक्ष्मी के साथ पहली बार मेरे घर आई थी, तब मुझे संदेह हुआ था कि क्या यह छुटकी सी लड़की मेरा सब काम कर पाएगी. पर उस की मां ने आश्वासन दिया था, "मां, मैं इस का हाथ बंटा दूंगी." तब मुझे कुछ राहत मिली थी.

फिर लक्ष्मी बोली थी, "यह दोपहर को स्कूल जाती है. आप को थोड़ी परेशानी तो होगी. फिर भी मैं संभाल लूंगी. आप को कोई दिक्कत नहीं आएगी."

मेरे लिए नौकरानी की समस्या थी. इसलिए सोचा, 'देख लेने में क्या बुराई है? मैं बंगलौर प्रथम बार आई थी. दोनों बच्चे छोटे थे. मुझे तमिल, तेलगू, कन्नड़ भाषा का तनिक ज्ञान न था और लक्ष्मी तथा नागम्मा को काम चलाऊ हिंदी आती थी. इसलिए मुझे उस छोटी लड़की के साथ समझौता करना ही पड़ा.

नागम्मा मेरे पास ही रहती थी. कपड़े धोने एवं बरतन साफ करने के काम उस की मां आ कर उस के साथ मिल कर करती थी.

एक दिन लक्ष्मी बोली, "एक प्रार्थना है, मां, हफ्ते में एक दिन इस को रात का काम खत्म होने के बाद मेरे घर भेज दिया करना. यह मेरे पास रहना चाहती है. मुझ से और अपने भाई से बात करना चाहती है. आप की मरजी नहीं होगी तो नहीं आएगी. बस, आप से हाथ जोड़ के कह दिया."

मैं ने भी मुसकराते हुए हामी भर दी. कारण, अपने वादे के अनुसार मांबेटी ने मुझे कभी शिकायत का मौका नहीं दिया था. लक्ष्मी देखने में सुंदर एवं काफी कम उम्र की लगती थी. नागम्मा उस की बेटी नहीं लगती थी.

लक्ष्मी का पति बड़ी उम्र का बदसूरत मर्द था. मैं अपनी जिज्ञासा को अधिक दिनों तक न रोक सकी. एक दिन पूछने पर ज्ञात हुआ कि लक्ष्मी उस की तीसरी पत्नी है. नागम्मा उस की पहली पत्नी से प्राप्त बेटी थी. पहली पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरी पत्नी कहीं भाग गई थी. लक्ष्मी मात्र 14 वर्ष की थी, जब उस के पिता ने गरीबी और बीमारी से तंग आ कर अपनी बिन मां की बच्ची को उस बूढ़े खूसट से ब्याह दिया था. लक्ष्मी का पति वेंकट किसी बड़े होटल में काम करता था. खानेपीने की सुविधा के साथसाथ तनख्वाह भी ठीक थी.

खैर, यह कोई आश्चर्य की बात भी नहीं थी. आम तौर पर इस तरह के रिश्ते देखने को मिलते हैं.

मेरी और कर्नल विनोद की पत्नी चित्रा की अच्छी दोस्ती थी. हम दोनों का काम मांबेटी मिल कर बखूबी निबटा रही थीं.

एक दिन अचानक आधी रात को दरवाजे की घंटी की आवाज सुन कर मैं और मेरे पति एकसाथ उठे. जा कर खिड़की से झांका तो नागम्मा खड़ी थी. दरवाजा खोला. देखा, नागम्मा के कपड़ों पर खून के छींटें थे. वह बदहवास रोए जा रही थी. पूछने पर पता चला कि उस की मां लक्ष्मी ने उस के बाप का खून कर दिया है. और उस की मां को पुलिस पकड़ कर ले जा रही है. वह हाथ जोड़ कर बारबार विनती कर रही थी, "मां, आप लोग मेरी मां को बचा लो."

हम दोनों पतिपत्नी वहां पहुंचे. कर्नल विनोद के कंपाउंड में काफी भीड़ एकत्र थी. लक्ष्मी उन्हीं के नौकरों वाले क्वार्टर में रहती थी. कानून के आगे सभी नतमस्तक थे. लक्ष्मी ने स्वयं स्वीकार किया था कि उस ने अपने पति की हत्या की है. कर्नल विनोद ने काफी प्रयास एवं मदद की, पर लक्ष्मी को सजा भुगतने के लिए जेल जाना पड़ा

नागम्मा अपने सौतेले भाई नागार्जुन (जो उस समय सातआठ वर्ष का था) के साथ मेरे नौकरों के क्वार्टर में रहने लगी. उसी से मुझे ज्ञात हुआ कि उस का पिता शराब बहुत पीता था. मां को मारता भी था. उस की एक रखैल भी थी. वह उन लोगों को पैसे भी नहीं देता था. वह आखिर में बोली, "मेरी मां मेरी खातिर जेल गई."

दरअसल उस रात का वाकया इस प्रकार था. लक्ष्मी का पति लड़कियां सप्लाई करता था और अच्छी शराब और रकम

लक्ष्मी क्रोध से पागल हो उठी. उस ने पास पड़ी दरांती से उस पर प्रहार कर दिया. नागम्मा भी उस पर टूट पड़ी.

एवज में पाता था. उस रात वह अपनी बेटी नागम्मा का सौदा कर रहा था. इस से पूर्व लक्ष्मी स्वयं उस का शिकार होतेहोते बची थी. वह वेंकट की चाल जानती थी, अतः सदैव सतर्क रहती थी, लक्ष्मी की शिकायत पर कर्नल विनोद ने उसे बहुत फटकारा था और आइंदा आने से मना कर दिया था.

तभी से वेंकट जयनगर में अपनी रखैल के पास रहता था. एक दिन पूर्व वेंकट रात को उपहार एवं मिठाई के साथ उन से मिलने आया था. सब प्रसन्न थे. परंतु आधी रात को जब वेंकट ने जबरदस्ती

नागम्मा को ले जाने का प्रयास किया तो नागम्मा की चीखपुकार पर लक्ष्मी बाहर आ गई.

बाहर खड़ी कार देखते ही वह वेंकट की चाल समझ गई. वह क्रोध से पागल हो उठी. उस ने पास पड़ी दरांती से उस पर प्रहार कर दिया. नागम्मा भी उस पर टूट पड़ी और वेंकट वहीं ढेर हो गया.

कार रात के अंधेरे में विलीन हो गई और लक्ष्मी गुस्से से पागल बदहवास वेंकट पर तब तक प्रहार करती रही, जब तक और लोगों ने आ कर उसे पकड़ नहीं लिया.

नागम्मा के शराबी बाप का अंत हो गया और लक्ष्मी यानी नागम्मा की सौतेली मां कानून की नजरों में कुसूरवार बन गई.

उस दिन रसल बाजार में मिलने के एक सप्ताह बाद इतवार के दिन नागम्मा मुझ से मिलने आई. उस ने बताया, ''अम्मां, आप के दिल्ली तबादले के बाद मुझे काम नहीं मिला. आप जिस के घर में लगवा कर गई थीं, उस बीवी का देवर अच्छा आदमी नहीं था. मैं ने उन का काम छोड़ दिया. मेरी चाची की मां रसल बाजार में थी. मैं उस की दुकान में काम करने लगी. पर बुढ़िया हम दोनों भाईबहन को बहुत दुख देती है.

''मैं नहीं पढ़ पाई तो क्या, नागार्जुन को पढ़ा रही हूं. वह [illegible] के स्कूल में जाता है. मेरा भाई जब पढ़ लेगा, आप उस को फौज में सरकारी नौकरी दिला देना.''

मैं उस को एकटक देख रही थी. छोटी सी उम्र में कितनी बड़ी जिम्मेदारी निभा रही थी वह अपनी सौतेली मां लक्ष्मी की तरह.

मैं ने नागम्मा से पूछा, ''नागम्मा, तुम मेरे यहां काम करोगी?''

उस के चेहरे की चमक से लगा कि वह तैयार एवं प्रसन्न है. बोली, ''अम्मां, कल से आ जाऊं?''

मैं ने कहा, ''कल से क्यों, आज से ही अपना सामान ले कर आ जाओ. और हां, तुम्हें फिर से स्कूल भी जाना होगा, ताकि तुम कुछ समय बाद अपने पैरों पर खड़ी हो सको.

दोनों बहनभाई खुशखुश चले गए अपना सामान लेने. और मुझे याद आ गई उस की मां लक्ष्मी, जो अपनी सौतेली पुत्री की इज्जत बचाने में अपना सर्वनाश कर बैठी थी. काश, कानून ने लक्ष्मी की भावनाओं को समझते हुए उसे आजीवन कारावास का दंड न दिया होता. ●

पासा पलट गया

मेरी दीदी के देवर बहुत मजाकिया स्वभाव के हैं. एक दिन मैं और मेरी छोटी बहन, साइकिल से दीदी के घर गए. जब हम शाम को वापस चलने लगे तो उन लोगों ने हमें वहीं रुकने के लिए कहा. हमारे मना करने पर दीदी के देवर जल्दी से बाहर गए और फिर अंदर आ कर कहने लगे, "मैं ने तुम्हारी साइकिल की हवा निकाल दी है."

मैं हड़बड़ा कर बाहर आई तो देखा, उन्होंने जल्दबाजी में अपनी साइकिल की हवा निकाल दी थी. जब अंदर जा कर मैं ने यह बात बताई तो सब लोग हंसने लगे और दीदी के देवर झेंप कर रह गए.

—उर्मिला पवांर (कलावतीदेवी)

*

मैं अपने भाई की शादी के बाद पहली बार अपनी भाभी के साथ ही उन के घर चला गया था. वहां एक लड़की, जिसे 'आई फ्लू' था, बारबार भाभीजी से मिलने आ रही थी. इस पर भाभीजी ने उसे डांटते हुए कहा, "तुम क्यों हम सब की आंखें खराब करना चाहती हो, अपने घर जा कर बैठो."

तभी मेरे भाईसाहब भाभी को लिवा लाने के लिए वहां आ पहुंचे. 'आई फ्लू' से उन की भी आंखें लाल हो रही थीं.

अब भाभीजी की शक्ल देखने लायक थी और हम सब हंस रहे थे.

—ललितकुमार सोनी

*

एक बार हमारे सूखाग्रस्त गांव में निरीक्षण के लिए कुछ अधिकारी आए. उन लोगों को वहां पहुंचतेपहुंचते दोपहर हो गई थी. रास्ते की थकान और भूख से बेहाल हो कर उन्होंने एक खेत में घुस कर और बिना किसी से पूछे फल और खीरे खाने शुरू कर दिए.

तभी उस खेत का रखवाला भागा हुआ आया और अधिकारियों से प्रार्थना करने लगा कि खेत को मत उजाड़ो, नहीं तो उस का मालिक उसे नौकरी से निकाल देगा. तब अधिकारियों के साथ आए पटवारी ने कहा, "अरे, ये कलक्टर साहब हैं." यह सुन कर वह खुद खेत से खीरे तोड़फोड़ कर उन्हें खिलाने लगा.

खीरे खा लेने के बाद एक अधिकारी ने रखवाले से पूछा, "क्यों, भाई, अब तुम अपने मालिक से क्या कहोगे. इस पर वह हंसते हुए बोला, "हम कह देगें कि जानवर आए थे, वे सारा खेत चर गए," यह सुनते ही सभी अधिकारियों का चेहरा उतर गया.

—सुलोचना 'काजला'

*

मैं और मेरा मित्र दिल्ली घूमने गए. चांदनी चौक में घूमते समय मेरे मित्र को एक शरारत सूझी. उस ने फुटपाथ पर पर्स बेचने वाले एक लड़के से दाम पूछे और उस की नजर बचा कर एक पर्स अपनी जेब में डाल लिया.

उस लड़के द्वारा एक पर्स का मूल्य 30 रुपए बताने पर वह बोला, "अरे, इतने से पर्स के 30 रुपए." इस पर लड़के ने कहा, "क्यों? 15 रुपए जेब वाले पर्स के नहीं देंगे क्या?"

उस का इतना कहना था कि मेरे मित्र की सूरत देखने लायक हो गई. दरअसल उस ने पर्स गिन कर रखे हुए थे और उस के पहले ग्राहक हम ही थे. —संजीवकुमार मिश्र ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 30 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

गरमी के दिनों में सुबह ठंडी हवा के झोंकों से प्रत्येक मनुष्य को एक विचित्र सुख की अनुभूति होती है. और इसी सुख का आनंद प्राप्त कर रहे थे धीरज बाबू.

रविवार का दिन था. घड़ी सुबह के नौ बजा रही थी. धूप सिर पर चढ़ आई थी. लेकिन धीरज बाबू अब भी उठने का नाम नहीं ले रहे थे. छुट्टी का दिन था. सप्ताह भर काम के बाद आराम का एक दिन.

उन की पत्नी ने उन्हें तीन बार जगाने की कोशिश की थी. लेकिन वह हर बार 'हूं हां' कर के सो जाते थे. धीरज बाबू की पत्नी ज्योति अब तक घर का सारा काम निबटा चुकी थी. अब वह नहाने चली गई थी.

तभी फोन की घंटी गूंज उठी. धीरज बाबू कुछ देर आलस्य में पड़े रहे. लेकिन जब किसी ने चोंगा नहीं उठाया तो उन्हें बिस्तर छोड़ने को मजबूर होना पड़ा. उन्होंने फोन [illegible] से देखा. लेकिन उस का उस काले रंग के दैत्य पर कुछ भी असर न पड़ा. वह अपने ढीठपन को कायम रखते हुए बदस्तूर बजता रहा.

धीरज बाबू ने चोंगा कान से लगा कर कर्कश आवाज में फोन करने वाले का नाम पूछा. इस प्रकार कर्कश आवाज में बात करना लाजिमी था क्योंकि आज के युग में जिस व्यक्ति को पत्नी, जिस से वह घबराते थे, न जगा सकी, उस की नींद का सुख छीनने का साहस किया था उस ने. लेकिन उधर से बोलने वाले का नाम सुन कर वह नर्म पड़ गए.

धीरज बाबू एक सप्ताह पूर्व ही एक

व्यंग्य • अशोक थावरानी

सक्रियता

साहस बटोर कर रामदास कुछ कहना चाहते लेकिन इस से पूर्व ही एकाध जबरदस्त घूंसा उन का मुंह वंद कर देता. ▲

समाज सेवा में सक्रिय भूमिका निभाने के उद्देश्य से एक दहेज विरोधी दल के सदस्य बन बैठे धीरज बाबू का अंतर्मन क्या दल की असंगत नीतियों को देख कर चुप बैठ सका?

दहेज विरोधी दल के सदस्य बने थे. उसी दल का अध्यक्ष उस समय उन से बात कर रहा था. उस ने फोन पर धीरज बाबू को जल्दी ही अपने पास आने का आदेश दिया. धीरज बाबू ने तुरंत आदेश का पालन किया.

धीरज बाबू अध्यक्ष महोदय के सामने वाली कुरसी पर बैठे थे. बीच में एक

मेज थी. पेपरवेट को घुमाते हुए अध्यक्ष महोदय ने बताया, "अभीअभी पता चला है कि यहां से 15 किलोमीटर दूर सतनामपुरा क्षेत्र में एक युवती जल कर मरी है. हम ने कुछ सदस्यों को इकट्ठा हो कर जल्दी वहां पहुंचने का आदेश दे दिया है. दूसरे कुछ सदस्यों को थाने का घेराव करने के लिए कहा है. तुम्हें पहले एक दल के साथ दुर्घटनास्थल पर जाना होगा. यदि लाश चिकित्सालय में पहुंचाई गई हो तो वहां पहुंचना होगा. किंतु याद रहे, लाश का अंतिम संस्कार तुम्हारे पहुंचने से पहले न हो जाए."

धीरज बाबू को कुछ भी समझ में नहीं आया. उन्होंने तुरंत सवाल किया, "लेकिन यह तो आत्महत्या का मामला है. इस से हमारे दल का क्या संबंध?"

"आत्महत्या तो नाम दिया जाता है, ताकि ये दहेज के लोभी अपनेआप को कानून से साफ बचा सकें. वैसे वास्तव में होती हत्या ही है," अध्यक्ष महोदय सपाट स्वर में बोले.

"लेकिन हत्या का कोई कारण भी तो होगा?" धीरज बाबू ने पुनः सवाल किया.

"मैं ने बता तो दिया, दहेज ही एक कारण है."

धीरज बाबू अब चुप हो गए. अध्यक्ष महोदय ने उन्हें आदेश दिया, "तुम जल्दी से जल्दी दल के तैयार होते ही पहुंच जाना, नहीं तो वे पुलिस से मिल कर इसे आत्महत्या या दुर्घटना का रूप दे देंगे."

वह पहला अवसर था, जब धीरज बाबू किसी समाज सेवा के उद्देश्य से आंदोलन में सक्रिय हो रहे थे. वह समझ नहीं पा रहे थे कि आंदोलन कहां से आरंभ होगा और कहां समाप्त. उन्होंने इस संबंध में अध्यक्ष से जानकारी चाही तो जवाब मिला कि दल के सदस्य इस कार्य में निपुण हैं. धीरज बाबू चुप रह गए.

देखते ही देखते दल के सभी सदस्य वहां जमा हो गए. दो दल बनाए गए. एक थाने का घेराव करने के लिए और दूसरा दुर्घटनास्थल पर पहुंचने के लिए.

तरहतरह के नारे लिखे हुए प्रदर्शनपट सदस्यों को थमा दिए गए. एक प्रदर्शनपट धीरज बाबू के हाथ में भी दिया गया, जिस पर लिखा था: 'दहेज के लालची हत्यारों को फांसी दो.' जलूस आगे बढ़ गया.

जिस घर में वह वारदात हुई थी, वह रामदास का घर था. धीरज बाबू उन्हें जानते थे, लेकिन थोड़ाबहुत. उन्हें पैसे की कमी भी नहीं थी और न ही इस प्रकार का चरित्र था उन का. फिर हत्या का मामला? यह बात धीरज बाबू के सिर से ऊपर हो कर गुजर रही थी. वह समझ नहीं पा रहे थे कि उन्होंने ऐसा किया होगा या नहीं. इनसान का मन कभी भी बदल सकता है, यह भी उन्होंने सुना था.

वह सदस्य होने के नाते जलूस के साथ चल रहे थे. किंतु हर बढ़ते कदम के साथ उन का मन पीछे की ओर भाग रहा था. वह चुप थे, किंतु अन्य सभी सदस्य नारे लगा रहे थे. रास्ता चलते कुछ तमाशबीन लोग भी जलूस में शामिल हो गए थे, जिस से जलूस काफी बड़ा लग रहा था.

अंत में मंजिल आ ही गई. घर में एक नौकर और रामदास के अतिरिक्त कोई न था. सभी चिकित्सालय गए हुए थे. रामदास भी अभीअभी चिकित्सालय से लौटे थे. उन्हें चिकित्सालय में दोबारा वहां ठहरे घर के सदस्यों का भोजन ले कर जाना था.

दल के कुछ सदस्य घर में घुस गए थे और अन्य बाहर खड़े सदस्यों ने अपने नारे और तेज कर दिए थे. घर के भीतर गए सदस्य जब बाहर आए तो उन के साथ रामदास भी थे. बाहर आते ही सभी सदस्य तथा भीड़ के अन्य व्यक्ति रामदास पर टूट पड़े. तरहतरह की नईपुरानी गालियों से वातावरण गूंज उठा. कोई भी यह नहीं सोच रहा था कि उन की मार रामदास के किस अंग पर पड़ेगी तथा उस का परिणाम क्या होगा. प्रत्येक व्यक्ति अपना हाथ साफ करने की कोशिश में था.

रामदास का सिर किसी तरबूज की भांति चिकना, साफ कर और मुंह पर काला रंग पोत कर दल के सदस्यों ने उन्हें गधे पर बैठा दिया.
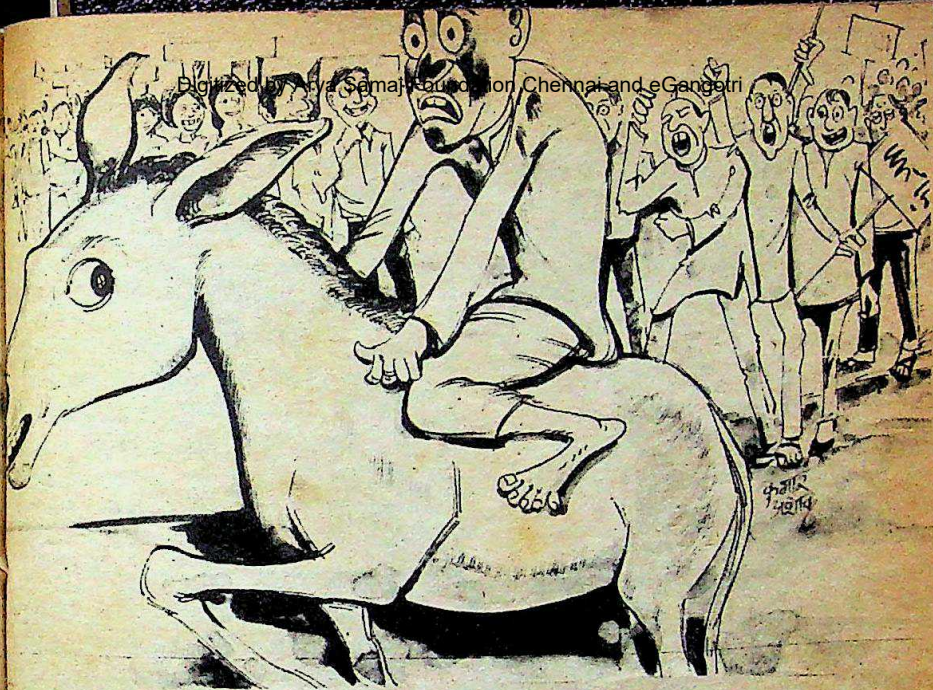
देखते ही देखते रामदास की घड़ी और गले में पड़ी चेन भी गायब हो गई. रामदास चिल्लाते रहे, "मेरी बात तो सुनिए... मेरी बात..."

लेकिन उन की आवाज उस भयंकर शोर में दब जाती थी.

रामदास फिर एक बार साहस बटोर कर पूरी ताकत से चिल्ला उठे, "मेरी बात तो सुनो, वह तो मेरी बेटी..."

लेकिन इस से पहले कि वह अपना वाक्य पूरा करते, एक जबरदस्त घूंसा उन के मुंह पर पड़ा. साथ ही एक व्यक्ति बोला, "हां, अब तो कहोगे कि वह मेरी बेटी जैसी थी."

सदस्यों के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार उन के बाल साफ कर के मुंह काला करना था. फिर गधे पर बिठाना था. इस के लिए सब तैयारी थी. कुछ व्यक्तियों ने उन्हें ठीक उसी तरह दबोच लिया, जैसे किसी बकरे को हलाल करने से पूर्व कोई कसाई पकड़ता है. नाई की मशीन उन के सिर पर चलने लगी.

इस बीच वह कई बार चिल्लाए, "मेरी बात सुनो... मेरी बात..."

लेकिन वह वाक्य पूरा करते इस से पूर्व ही एकाध जबरदस्त घूंसा उन का मुंह बंद कर देता.

रामदास का सिर किसी तरबूज की भांति चिकनासाफ हो गया. फिर जाने किस ने उन के मुंह पर काला रंग पोत दिया और गधे पर बैठा दिया. रामदास के पड़ोसी पहले तो बीचबचाव करने की कोशिश कर रहे थे, पर जब उन को महसूस हुआ कि बात उन के वश की नहीं है तो वे थाने की ओर दौड़ पड़े.

एक अन्य दल द्वारा थाने का घेराव करने का प्रयास किया गया. किंतु पता चला

धुंधलका

धुंधलका ये क्यों है,
साज ये चुप क्यों है,
हम शून्य क्यों होते जा रहे हैं,
हर रात सहर सी,
हर बात जहर सी
कुछ सहे, कुछ पिए जा रहे हैं.
—नीलोफर असगर

कि पुलिस को इस बारे में कोई सूचना नहीं मिली है. जब दल के सदस्य नहीं माने तो कुछ पुलिस कर्मचारी उन के साथ दुर्घटना स्थल की ओर चल पड़े.

अचानक धीरज बाबू की निगाह सड़क पर आती दो महिलाओं पर पड़ी, उन में से एक रामदास की पत्नी व दूसरी बहू थी. धीरज बाबू उन दोनों को शक्ल से पहचानते थे. वे जल्दीजल्दी उसी ओर आ रही थीं. धीरज बाबू का माथा ठनका, उन की नजरें उन दोनों पर जम गईं

अचानक एक जीप आ कर धीरज बाबू के समीप रुकी तो वह चौंक उठे. जीप में कुछ पुलिस कर्मचारी थे. उन को देख कर भीड़ अपनेआप छंटने लगी. एक पुलिस कर्मचारी रामदास के पास चला गया. रामदास से बात कर के वह मुसकरा उठा.

यह बात सभी को अजीब लगी. वातावरण के अनुसार उसे गुस्से से गरम हो जाना चाहिए था. एकदो डंडे या घूंसे रामदास को मारना भी नाजायज नहीं था. इस के विपरीत वह मुसकरा रहा था. यह बात किसी को भी रास नहीं आई.

'क्या इस ने पुलिस से मिल कर ही यह काम किया है?' कुछ शंकालु व्यक्तियों के दिमाग में यह बात भी कुलबुलाने लगी.

तभी वे दोनों महिलाएं भी वहां पहुंच कर विस्मय से रामदास और वहां एकत्र लोगों को देखने लगीं.

पुलिस वाले ने बताया, "रामदास के घर में दुर्घटना घटी है और इस दुर्घटना की शिकार उस की बेटी हुई है. वह झुलस गई है और इस समय खतरे से बाहर है. रामदास की एक ही बहू है और वह आप के सामने खड़ी है."

रामदास उसी हालत में वहां खड़े रहे. हां, वह बिना उतारे ही गधे से स्वयं उतर आए थे. किसी ने भी उन से माफी मांगने या सहानुभूति दरसाने की आवश्यकता नहीं समझी. सभी चुपचाप वापस हो गए.

धीरज बाबू भी वापस हुए. वह चुप नजर आ रहे थे. किंतु उन का अंतर्मन चुप नहीं था. वह बारबार पूछ बैठता था, 'क्या सिर्फ बेटी ही दुर्घटना का शिकार हो सकती है, बहू नहीं? यदि इस दुर्घटना में उन की बहू शिकार होती तो क्या होता? क्या प्रत्येक दुर्घटनाग्रस्त बहू को दहेज के लालच में जला देने की संज्ञा उचित है?'

जिस ने यह खबर दी थी, उसे अध्यक्ष महोदय ने शीघ्र ही अपने पास बुलवाया. फिर उस से प्रश्न होने लगे, "तुम्हें शर्म नहीं आई हमें बेवकूफ बनाते हुए. हम तुम्हें जेल की चक्की पिसवा देंगे."

उस ने जवाब दिया, 'मुझे क्या मालूम था कि कौन जला है. मैं ने यह कभी नहीं कहा था कि उन की बहू जली है. मैं ने तो यह बताया था कि एक युवती जल गई है."

अब दोष किसे दिया जाता?

धीरज बाबू ने अपना त्यागपत्र अध्यक्ष महोदय को सौंप दिया और अपने घर की ओर रवाना हो गए. •

फेफड़े का कैंसर

लेख • डा. सुरेंद्रनाथ गुप्त
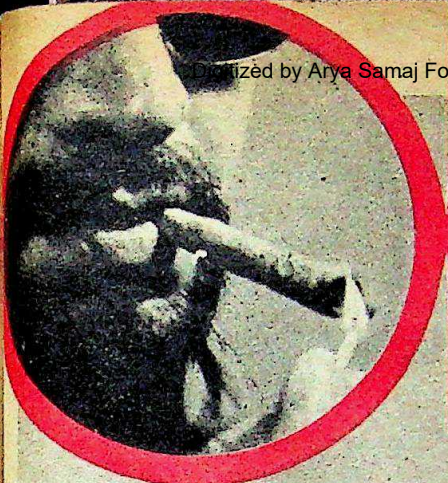
दूसरे सभी अंगों के कैंसर की अपेक्षा फेफड़े का कैंसर ज्यादा खतरनाक होता है. यह अपेक्षाकृत तेजी से बढ़ता है. शरीर में इस का प्रसार भी अधिक व्यापक होता है. इस का इलाज कठिन और कम प्रभावी है. सब से खास बात तो यह है कि इस का निदान जल्दी नहीं हो पाता. जब तक निदान होता है, अकसर इतनी देर हो चुकती है कि फिर इलाज के लिए कुछ कर पाना मुमकिन नहीं रहता. इस खौफनाक माहौल में दो बातें ऐसी भी हैं जो राहत प्रदान कर सकती हैं.

पहली बात तो यह है कि दूसरे सभी अंगों के कैंसर के बारे में आज भी यह स्थिति है कि हम उन के पैदा होने के कारणों को सुनिश्चित रूप से नहीं जानतेसमझते, पर फेफड़े के कैंसर के बारे में अब यह निर्विवाद रूप से तय हो चुका है कि यह लंबे समय तक ज्यादा धूम्रपान करने से होता है. यह कारण

अन्य प्रकार के कैंसर की अपेक्षा कहीं अधिक खतरनाक समझे जाने वाले फेफड़ों के कैंसर से बचाव के लिए जहां धूम्रपान का त्याग अत्यंत आवश्यक है वहीं रोगी तथा चिकित्सक वर्ग की अतिरिक्त जागरूकता से भी काफी रोगियों की जीवन रक्षा हो सकती है.

ऐसा है जिसे दूर कर पाना पूरी तरह हमारे अपने बस की बात है. अतः फेफड़े का कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिस से बचा जा सकता है.

दूसरे, अगर निदान सही वक्त पर हो जाए तो इस के इलाज के लिए सर्जरी की तकनीक इतनी कुशल हो गई है कि फेफड़े को ही काट कर निकाल देना संभव है. तब तक अगर रोग का प्रसार अन्यत्र नहीं हुआ है तो रोगी को पूर्णतः रोगमुक्त किया जा सकता है.

शीघ्र निदान के लिए सब से पहले रोगी को अपने स्तर पर चेतना जरूरी है. अगर रोगी ही देर कर देगा तो फिर आगे की कोई बात बन ही नहीं सकती. अतः उन बातों को जानना जरूरी है जिन के कारण रोगी को समय से इस का एहसास नहीं हो पाता और वह डाक्टर के पास नहीं पहुंचता. प्रश्न यह है ऐसे क्या लक्षण या संकेत हैं जिन के प्रकट होते ही इस ओर तत्काल ध्यान देना जरूरी है.

चिकित्सक के स्तर पर भी अकसर लापरवाही हो जाती है. यह भी ज्ञातव्य है कि ऐसा क्यों होता है. इन बातों की विवेचना करने से पहले फेफड़े के कैंसर के कारण, प्रकार और लक्षणों के बारे में कुछ आधारभूत जानकारी जरूरी है.

कारण

अब यह पूरी तरह तय हो गया है कि इस कैंसर का मुख्य कारण धूम्रपान ही है.

फेफड़ों के कैंसर के 90% रोगी सिगरेट पीने वाले लोग ही होते हैं.

भिन्नभिन्न देशों में इस की व्यापकता सिगरेट की बढ़ती हुई खपत के अनुसार ही बढ़ी है.

धूम्रपान की तादाद और अवधि तथा फेफड़े के कैंसर की उत्पत्ति में आनुपातिक संबंध पाया गया है. जो पुरुष लगातार 20 वर्षों से दो डब्बी सिगरेट रोजाना पी रहे होते हैं उन में धूम्रपान न करने वालों की तुलना में इस रोग से मौत होने का खतरा 60-70 गुना अधिक रहता है. पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में इस की व्यापकता कम है पर सिगरेट पीने वाली औरतों में यह खतरा बढ़ जाता है.

जो लोग सिगरेट पीना बंद कर देते हैं उन में धीरेधीरे इस का खतरा कम होता जाता है.

(कैंसर तंतु ब्रोंकस के भीतर और बाहर दोनों ओर बढ़ रहा है.)

(ब्रोंकस के भीतर पूरी तरह अवरोध हो गया है.)
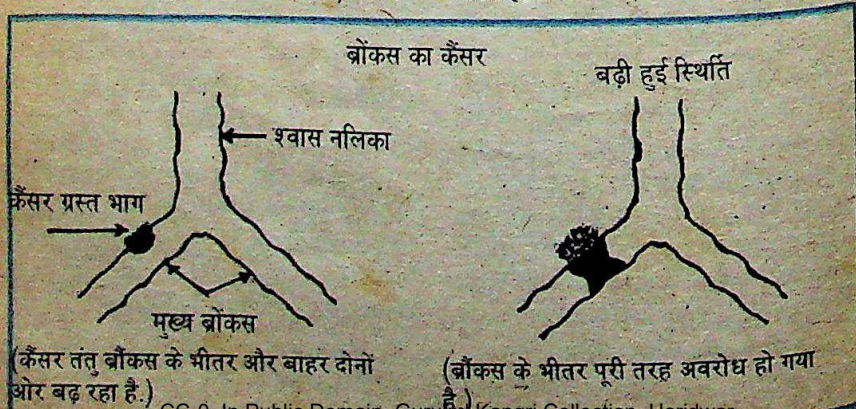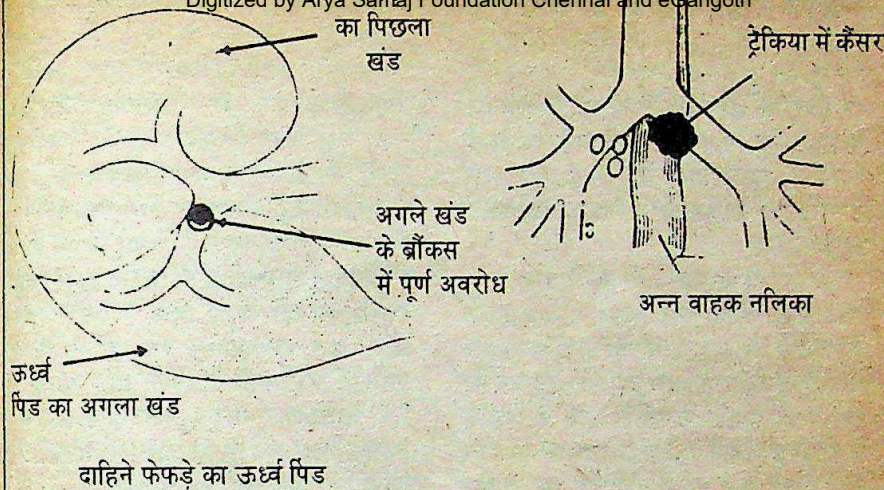
दाहिने फेफड़े का ऊर्ध्व पिंड

पाइप और सिगार पीने वालों में सिगरेट पीने वालों की अपेक्षा इस की व्यापकता कम पाई जाती है. फिल्टर टिप सिगरेट भी कम खतरनाक होती है.

सिगरेट के धुएं में प्रमुख 'कार्सिनोजन' (कैंसर उत्पन्न करने वाला पदार्थ) और 'बेनजोल (ओ) पाईरीन' होता है.

कुछ विशेष उद्योगों में लगे व्यक्तियों में सामान्य लोगों की अपेक्षा इस की व्यापकता अधिक पाई जाती है. ये हैं—आयोनाईजिंग रेडिएशन, यूरेनियम, एस्बेस्टास, क्रोमेट, लौह धातु, आयरन आक्साइड, निकल, बेरीलियम, आर्सनिक तथा हैलो ईथर आदि. सामान्य नागरिक इन से अपेक्षाकृत बहुत कम प्रभावित होते हैं.

औद्योगिक वायुप्रदूषण तथा सड़कों पर पेट्रोलडीजल वाहनों का धुआं भी इस दृष्टि से हानिकारक होते हैं.

श्वास पथ के भीतर लंबे समय तक प्रदाह या जलन की स्थिति रहने से स्थानीय तंतुओं में ऐसे परिवर्तन हो जाते हैं कि इन में कैंसर हो जाने की संभावना बढ़ जाती है.

यह रोग 40 साल की आयु से ऊपर के लोगों में होता है. पर कोई भी अवस्था इस का अपवाद नहीं है. 55-65 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों में यह सब से ज्यादा पाया जाता है.

उपर्युक्त कारणों की उपस्थिति के अनुसार व्यापकता का रूप भिन्न हो सकता है. यह कैंसर अमरीका की अपेक्षा इंगलैंड में दोगुना अधिक होता है. पिछले कुछ दशकों में इस की व्यापकता बराबर बढ़ रही है.

अमरीका में 1982 में 85,000 पुरुषों और 32,000 महिलाओं को फेफड़े का प्रारंभिक कैंसर हुआ था. इन में से अधिकांश एक साल के भीतर ही मर गए थे. अमरीका के पुरुषों में सब प्रकार के कैंसर से होने वाली कुल मौतों में फेफड़े के कैंसर से सब से ज्यादा मौतें होती हैं. महिलाओं में यह दूसरे क्रम पर आता है. भारत के पुरुषों में मुंह का कैंसर सब से ज्यादा होता है और महिलाओं में गर्भाशय ग्रीवा का.

पुरुषों और महिलाओं में फेफड़े के कैंसर से होने वाली मृत्यु में 6 और एक का अनुपात पाया जाता है.

लक्षण

इस रोग के लक्षणों को समझने में निम्नलिखित उदाहरण सहायक होगा.

बरगद का पेड़ उस के बीज से बनता है. बरगद का बीज किस स्थल पर, कहां, कब आ

पड़ा हम नहीं जान पाते. जब वह उगता है तो दूसरे पौधों की तरह नन्हा सा होता है. इस स्थिति में इसे ढूंढ़ कर आसानी से समूल उखाड़ कर फेंका जा सकता है. अगर पड़ा रह जाए तो धीरेधीरे विशालकाय पेड़ बन जाता है. जमीन के भीतर तो जड़ें फैलती ही हैं, बाहर लटकने वाली जड़ें भी इस का प्रसार करने लगती हैं. अब इस से निबट पाना कठिन हो जाता है.

ऐसा ही कुछ कैंसर में भी होता है. कब, कहां कुछ कोशिकाएं किन्हीं ज्ञातअज्ञात कारणों से अपना रूप और वृद्धि का ढंग बदल लेती हैं, इस का एहसास संबंधित व्यक्ति को नहीं होता. वे बढ़ने लगती हैं. शुरू की स्थिति में रोगी को किसी भी तरह इस का आभास नहीं होता. कुछ समय बाद इस का आकार इतना और ऐसा बन जाता है कि वह स्थानीय उत्तेजना और दूसरे प्रभाव पैदा करने लगता है. तभी लक्षण बनने शुरू हो जाते हैं. लक्षण प्रभावित अंग की प्रकृति कार्यव्यवहार और उस के उत्पत्तिस्थल के अनुसार बनते हैं. अतः शुरू होने के वक्त से ले कर लक्षण पैदा करने की स्थिति में आने तक के बीच का समय अलाक्षणिक रहता है.

फेफड़े के कैंसर में यह अलाक्षणिक अवधि इस बात पर भी निर्भर करती है कि कैंसर का बीज फेफड़े के किस भाग में पनप रहा है. फेफड़े के ,अधिकांश कैंसर श्वासनलियों और उन की शाखाओं में पनपते हैं. यहां कैंसर का छोटा सा आकार बनते ही लक्षण शुरू हो जाते हैं. इन्हें 'ब्रौंकोजनिक कार्सिनोमा' कहते हैं. लगभग 90% फेफड़े के कैंसर इस तरह के होते हैं (चित्र सं. 1 और 2).

कुछ कैंसर (लगभग 10%) फेफड़े के चारों ओर के बाहरी भाग में वायु कोष समूहों (एलविओलाई) में बनते हैं. इन्हें 'एलविओलर सेल कार्सिनोमा' कहते हैं. फेफड़े के इस भाग में कोई अनुभूति नहीं होती. इस के कारण यहां खांसी भी नहीं उठती. अतः ये कैंसर ज्यादा समय तक अलाक्षणिक बने रह कर बढ़ते रहते हैं. कभीकभी तो किसी अन्य कारण के लिए छाती का एक्सरे आने पर अचानक और अप्रत्याशित रूप से ही इस (मांसपिंड) की छाया प्लेट पर देखने को मिलती है.

कुछ रोगियों में फेफड़ों के स्थानीय लक्षणों से परे कुछ ऐसे लक्षण पहले बनते हैं जो इस बात का प्रत्यक्ष आभास नहीं देते कि फेफड़े में कहीं कोई खराबी जड़ पकड़ रही है. सामान्य ज्वर, कमजोरी, वजन कम होते जाना, भूख न लगना, स्नायुरोग के लक्षण कुछ मांसपेशियों में ह्रास आदि कुछ ऐसे उदाहरण हैं.

ब्रौंकोजनिक कैंसर

ब्रौंकस (श्वसनतंत्र) में शुरू हुआ यह परिवर्तन जैसे ही अलाक्षणिक सीमा लांघ कर स्थानीय उत्तेजना का कारण होने लगता है तब कुदरत इसे बाहर से आई कोई विजातीय चीज समझ कर बाहर निकाल फेंकने की कोशिश करती है. अब रोगी को खांसी उठने लगती है. पहले ठसकों के रूप में फिर लगातार दौरे की तरह. खांसने पर निकलता

प्ल्यूरा के ऊपर उत्पन्न कैंसर

फेफड़े के कैंसर के प्रसारण स्थल
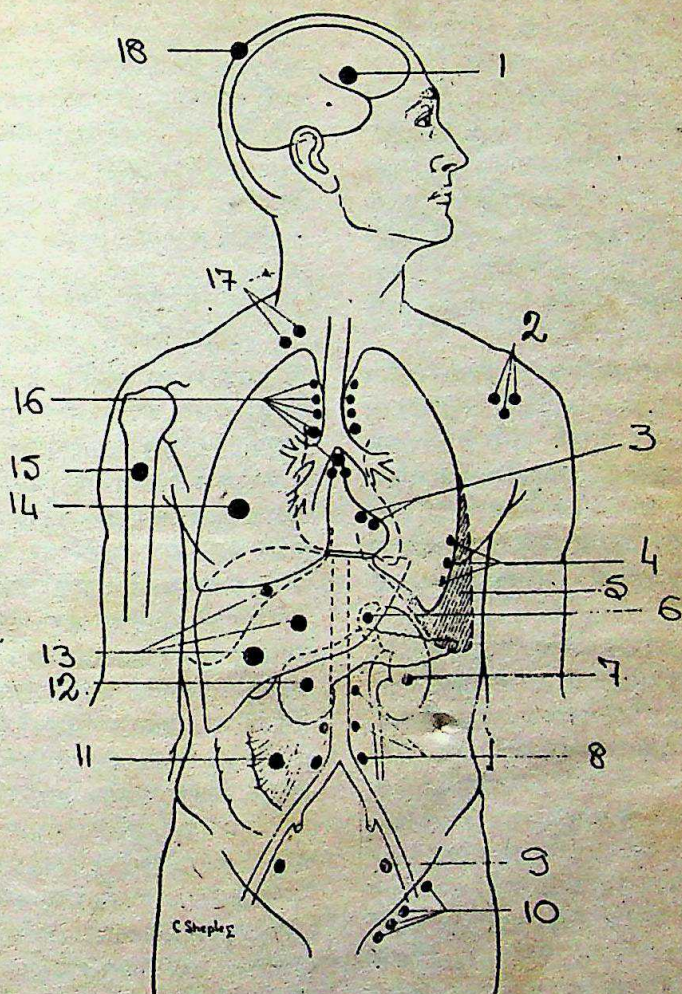
1. मस्तिष्क, 2. त्वचा, 3. हृदयावरण (पैरिकार्डियम), 4. फुफ्फुसावरण (प्ल्यूरा), 5. प्ल्यूरा में द्रव संचय 6. उपवृक्क (सुप्रारीनल), 7. गुरदे, 8. उदर की लसीका ग्रंथियां, 9. वस्ति गह्वर की लसीका ग्रंथियां 10. रान की लसीका ग्रंथियां, 11. आंतों की ग्रंथियां, 12. अग्नाशय (पैनक्रियाज), 13. जिगर (लिवर), 14. फेफड़े, 15. अस्थियां, 16. मध्य वक्ष के भीतर ग्रंथियां, 17. ग्रीवा की ग्रंथियां, 18. कपाल.

कुछ नहीं है. कभीकभी थोड़ा सा पतला कफ आ सकता है. धीरेधीरे कैंसर स्थल पर बन रहा आकार ब्रौंकस के भीतर (एंडोब्रौंकियल) बढ़ता जाता है (देखें चित्र सं. 3). जब यह श्लैष्मिक कला को फोड़ देता है तो खांसी के साथ बाहर निकलने वाले कफ पर खून के छींटे

और लकीरें आने लगती हैं. कभीकभी केवल रक्त भी निकल सकता है. अगर जीवाणुओं का संक्रमण हो जाता है तो गाढ़ा खून मिला बलगम कुछ ज्यादा तादाद में निकलता है.

प्राथमिक ब्रौंकस का आकार छोटी उंगली की मोटाई के बराबर होता है. शाखाएं इस से भी पतली होती हैं. इन के भीतर कैंसर का थोड़ा सा भी आकार बढ़ने पर इन में आंशिक रुकावटें पैदा होने लगती है. (देखें चित्र सं. 3) अब रोगी को एहसास हो सकता है कि सांस लेने पर संबंधित फेफड़ा पूरी तरह नहीं फैलता. सांस भीतर जाने और बाहर निकलने पर एक विशेष प्रकार की आवाज होने लगती है.

यह ध्वनि छाती में एक तरफ, स्थानीय और स्थिर होती है. कभीकभी रोगी खुद भी इसे महसूस कर पाता है. छाती के इस हिस्से पर स्पर्श कर के इसे महसूस किया जा सकता है. चिकित्सक परीक्षा करने पर स्टेथेस्कोप के द्वारा इसे सुन पाता है. इस तरह की ध्वनि का होना फेफड़े के कैंसर की संभावना का महत्त्वपूर्ण संकेत है.

इस आंशिक अवरोध के कारण फेफड़े के संबंधित पिंड अथवा खंड के बाहरी भागों से स्राव बाहर निकल पाने में अड़चन होती है. तब यहां जीवाणु संक्रमण की स्थिति पैदा हो जाती है. अब रोगी को खांसी बढ़ जाती है. ज्वर भी आता है. बलगम आने लगता है.

प्रायः ऐसे रोगी को चिकित्सक ब्रौंकाइटिस, ब्रौंकोन्यूमोनिया, वाइरस न्यूमोनिया अथवा फ्लू मान कर कोई एंटीबायोटिक दे देते हैं. 10-12 दिन में संक्रमण नियंत्रित हो जाने पर उक्त लक्षण भी ठीक हो जाते हैं. रोगी और डाक्टर दोनों ही समझते हैं कि सब कुछ ठीक हो गया. मगर यह कहानी बारबार दोहराई जाती है. मूल संभावना (कैंसर) के प्रति पर्याप्त जागरूकता के अभाव में सही कारण की बात डाक्टर के दिमाग में आती ही नहीं है.

कैंसर का आकार और बढ़ने पर ब्रौंकस के भीतर पूरी तरह रुकावट (देखें चित्र सं. 4) आ जाती है. बेर की गुठली के आकार जैसा कैंसर ऐसा कर सकता है. अब फेफड़े के संबंधित भाग में हवा बिलकुल भी नहीं जा पाती. जो कुछ भीतर होती है वह खत्म हो जाती है. तब फेफड़े का यह खंड अथवा पूरा पिंड बेकार हो जाता है. यह परिवर्तन सहसा नहीं होता. इसलिए लक्षण भी अचानक नहीं बनते. खांसी और बलगम में खून के साथ अब सांस भी फूल सकती है. चिकित्सक द्वारा परीक्षा किए जाने पर संबंधित हिस्से के बेकार हो जाने के सभी चिह्न मिलते हैं. लक्षणों के अनुपात में चिह्न अधिक होते हैं.

ब्रौंकोजनिक कैंसर का बाह्य प्रभाव

इस तरह का पूर्ण अवरोध अगर ब्रौंकस की प्रथम शाखा में होता है तो पूरे पिंड (लोब) का और अगर द्वितीय शाखा में होता है तो संबंधित खंड (सेगमेंट) बेकार हो जाता है. कभीकभी विस्मयकारी चिह्न पाए जाते हैं. अगर फेफड़े के ऊपरी पिंड (अपर लोब) के सामने वाले खंड (एंटीरियर सेगमेंट) के ब्रौंकस में पूर्ण अवरोध हो तो केवल यह खंड बेकार होगा, पिछला खंड (पौस्टीरियर सेगमेंट) ठीक रहेगा. इस दशा में वक्ष के ऊपरी भाग में बेकार होने के चिह्न मिलेंगे, पीछे पीठ पर सामान्य स्थिति होगी (चित्र सं. 5).

फेफड़े के इस तरह प्रभावित भाग में अकसर जीवाणु संक्रमण हो जाता है. तब न्यूमोनिया, ब्रौंकिएक्टेसिस और फेफड़े के फोड़े (लंग एब्सेस) के उपद्रव हो सकते हैं. धीरेधीरे यह संक्रमण जब प्ल्यूरा (फेफड़े के ऊपर के आवरण) तक पहुंचता है तो वक्ष के संबंधित क्षेत्र में पीड़ा होती है. 'प्ल्यूरिसी' (प्ल्यूरा की दोनों परतों के बीच पानी भर जाना) और प्ल्यूरा के भीतर मवाद के उपद्रव खड़े हो जाते हैं.

कैंसर ब्रौंकस के बाहर भी बढ़ता है. मध्य वक्ष (मीडिया स्टाइनम वक्ष के भीतर दोनों फेफड़ों के बीच की जगह) की लसीका ग्रंथियां प्रभावित हो कर बढ़ सकती हैं. तब मध्य वक्ष में उपस्थित अवयवों पर दबाव पड़ने लगता है. इन में कैंसर का प्रत्यक्ष प्रसार भी हो सकता है. तब लक्षण इस तरह प्रभावित हो

संभावित कैंसर : शीघ्र निदान का एक अच्छा उदाहरण ▲

लापरवाही और विलंब का नतीजा ▲

रहे अवयव के अनुसार अलगअलग होते हैं.

अन्य नली के प्रभावित होने पर खाना निगलने में दिक्कत होती है. खाना बीच में अटकता, रुकता है (देखें चित्र सं. 6)

फ्रेनिक तंत्रिका (वक्ष और उदर के बीच की पटलवत मांसपेशी) में उत्तेजना होने पर लगातार हिचकियां आती हैं. बाद में डायाफ्राम का लकवा हो जाता है.

स्वरयंत्र की बाईं 'रिकरेंट लैरिंजियल तंत्रिका' पर असर होने से प्रारंभ में आवाज में भर्राहट और फिर आवाज निकलनी बंद हो जाती है. यहां मौजूद दूसरे अवयव—'सुपीरियर वेनाकेवा' ऊर्ध्व महाशिरा, एजोईगास वेन और थोरेसिक डक्ट आदि भी प्रभावित हो सकते हैं.

फेफड़े का परिधिगत कैंसर

जैसा कि कहा जा चुका है, फेफड़े का यह कैंसर, जिसे डाक्टरी भाषा में एलविओलर सेल कार्सिनोमा कहते हैं, अपेक्षाकृत अधिक समय तक खामोश रह कर बढ़ता रहता है. कभीकभी तो किसी दूसरे संदर्भ में वक्ष का एक्सरे लिए जाने पर फेफड़े में गोल सिक्के के आकार की अपारदर्शक छाया प्लेट पर इस बात का पहला संकेत बन कर प्रकट होती है. प्रबुद्ध पाठकों को स्मरण होगा कि देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी के साथ ऐसा ही हुआ था.

जब यह कैंसर परिधिगत प्ल्यूरा तक पहुंचता है तब वक्ष के संबंधित स्थल पर पीड़ा होने लगती है. प्ल्यूरा में द्रव भर जाता है. (देखें चित्र सं. 7). यह द्रव प्रायः रक्तमिश्रित पाया जाता है. निकाले जाने के बाद दोबारा जल्दी ही भर जाता है. द्रव निकाले जाने के बाद भी पीड़ा कम नहीं होती. किसी भी अधेड़ उम्र के रोगी में प्ल्यूरा के ये लक्षण दिखाई दें तो कैंसर का संदेह कर के व्यापक जांच करानी चाहिए.

कालांतर में इस तरह के कैंसर के बीच के भाग में कोशिकाओं का नाश (नीक्रोसिस) हो जाने पर यह फोड़े का रूप ले लेता है. इसे 'कैविटेटरी कैंसर' कहते हैं.

उपर्युक्त स्थानीय लक्षणों के अलावा, अनियमित ज्वर, खून की कमी, बढ़ती हुई कमजोरी, वजन में कमी, भूख न लगना और खाने में अरुचि के लक्षण भी दिखाई देते हैं. अनेक बार केवल इन में से ही कई लक्षण एक

साथ सब से पहले प्रकट होते हैं. यदि किसी प्रौढ़ व्यक्ति में इस तरह के लक्षण बिना किसी प्रकट कारण के लगातार बने रहें तो शरीर में कहीं न कहीं कैंसर की मौजूदगी का शक करना चाहिए.

फेफड़े के कैंसर का प्रसार पास के तंतुओं और अवयवों में स्थानीय रूप से तो होता ही है, रक्त संचार और लसीका वाहिनियों द्वारा अन्यत्र भी हो जाता है. शरीर का कोई भी ऐसा अवयव नहीं है, जिस में इस का प्रसार न हो सकता हो (देखें चित्र सं. 8).

निदान में विलंब

लक्षणों की उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि इन में से कोई भी लक्षण ऐसा नहीं है जो खास तौर से फेफड़े के कैंसर के ही बारे में विशिष्ट हो. खांसी, बलगम, सांस में दिक्कत, बलगम में खून आना तथा ज्वर आदि लक्षण फेफड़ों की दूसरी सामान्य बीमारियों जैसे ब्रौंकाइटिस, इनफ्लुएंजा, निमोनिया, ब्रौंकोनिमोनिया आदि में इतने व्यापक होते हैं कि इन के अवतरण पर आम आदमी का ध्यान अधिकतर इन्हीं रोगों की ओर जाता है.

फेफड़े के कैंसर के 100 रोगियों में 90 धूम्रपान करने वाले होते हैं. खांसी उन की जिंदगी में रोजमर्रा की सामान्य बात होती है. ऐसी हालत में कब खांसी का लक्षण किसी खतरनाक परिस्थिति का सूचक बन जाए इस बात का एहसास वे नहीं कर पाते.

विलंब का दूसरा कारण चिकित्सक के स्तर पर होता है. चिकित्सक से हमारा अभिप्राय आधुनिक चिकित्सा पद्धति के सामान्य डाक्टरों से है. सामान्यतः कैंसर और विशेषकर फेफड़े के कैंसर की संभावना के प्रति उन की जागरूकता का स्तर इतना कम है कि जब भी मरीज फेफड़े के स्थानीय लक्षणों-खांसी, बलगम, ज्वर आदि की शिकायत ले कर जाता है तब ये प्रायः बिना और कुछ सोचेसमझे उस के लक्षणों का कारण ब्रौंकाइटिस अथवा फेफड़े के किसी दूसरे सामान्य रोग को मान कर उपचार करने लगते हैं. खांसी में खून आने की शिकायत सुन कर ये केवल तपेदिक तक की ही बात सोचते हैं (देखें चित्र सं. 9).

सामान्य डाक्टरों के चारों ओर रोगियों की भीड़ लगी रहती है. इसलिए भी ये कैंसर जैसे रोग के निदान पर पूरा समय नहीं दे पाते.

इन के शिक्षणप्रशिक्षण में भी कमी रहती है. अधिकांश मेडिकल कालिजों में जहां ये पढ़तेसीखते हैं, अभी भी फेफड़े के कैंसर के निदान की जांच प्रक्रियाओं की समुचित व्यवस्था नहीं है. अतः विद्यार्थी जीवन में ये पुस्तकों के माध्यम से उस समय के लिए इस रोग से परिचित भर हो जाते हैं. कुछ अधिक देखनेसुनने के अवसर उन्हें नहीं मिलते, बाद में भूल जाते हैं.

विलंब का तीसरा कारण व्यवस्था से संबंधित है. इस रोग के निदान के लिए जरूरी सुविधाएं केवल कुछेक महानगरों को छोड़ कर और कहीं उपलब्ध नहीं हैं. सब जरूरतमंद लोग इन ठिकानों तक नहीं पहुंच पाते.

कुछ महत्त्वपूर्ण संकेत

अगर मध्य अवस्था के किसी व्यक्ति को (जो अभी तक ठीक रहा हो) सहसा खांसी आने लगे, जांचपड़ताल करने पर भी कोई कारण ज्ञात न हो सके, समुचित चिकित्सा से पर्याप्त अवधि में लाभ न हो तो ऐसी खांसी को 'खतरनाक' मान कर आगे और जांच-पड़ताल करानी चाहिए.

यही बात उन लोगों के बारे में लागू होती है जो सिगरेट पीते हैं. इन्हें सामान्यतः खांसी आती रहती है. इन की खांसी के रूप और ढंग में कोई भी परिवर्तन आ जाए तो शक पैदा होना चाहिए.

पहले स्वस्थ रहे प्रौढ व्यक्ति में अगर बारबार ब्रौंकाइटिस, ब्रौकोन्यूमोनिया, वाइरस न्यूमोनिया, फ्लू आदि के निदान के साथ इलाज की जरूरत बनने लगे, एंटीबायोटिक चिकित्सा से कुछ दिन के लिए स्थिति ठीक रहे, फिर जल्दी ही बिगड़ने लगे तो इन लोगों में भी फेफड़े के कैंसर की संभावना अधिक होती है.

वक्ष में एक ओर स्थानीय और स्थिर ढंग से सांस के साथ कोई असामान्य ध्वनि अथवा अनुभूति हो तो भी शंका की बात है.

किसी व्यक्ति को अनियमित ज्वर, रक्ताल्पता, वजन में कमी, थकान के लक्षण रहने लगें, इन का कोई प्रकट कारण न मिले, इलाज से लाभ न हो तब भी शरीर में किसी स्थल पर कैंसर की मौजूदगी की संभावना तब तक माननी चाहिए जब तक कि जांच से अन्यथा सिद्ध न हो जाए.

प्रौढ व्यक्तियों में फेफड़ों के सभी फोड़े संक्रमणजन्य नहीं होते. इन में से अनेक में कैंसर प्राथमिक कारण होता है.

मध्य अवस्था के लोगों में खांसी, बलगम के साथ खून आने का कारण तपेदिक कम ही होता है. इसे तब तक फेफड़े के कैंसर के कारण ही मानना चाहिए जब तक अन्यथा सिद्ध न हो जाए.

छाती के एक्सरे की प्लेट में. फेफड़े के परिधिगत भाग में गोल सिक्के अठन्नी रुपया आदि के आकार की अपारदर्शक छाया पाए जाने पर इसे कैंसर मान कर सभी जरूरी जांचपड़ताल करानी चाहिए. अनेक बार ये जांच प्रक्रियाएं सही तथ्य का उद्घाटन नहीं कर पातीं. तब वक्ष खोल कर ही सही स्थिति का पता लगाया जा सकता है (चित्र सं.-10).

फेफड़े के कैंसर के निदान के लिए जांचपड़ताल की बहुत सी विशेष प्रक्रियाएं जरूरी होती हैं. इन का प्रयोग सामान्य चिकित्सक के बस की बात नहीं होती. इस के लिए कुशल फिजीशियन, सर्जन, रेडियोलाजिस्ट, कैंसर विशेषज्ञ, पैथोलोजिस्ट और थोरेसिक सर्जन की अनुभवी टीम जरूरी होती है. तभी सही निदान हो पाता है. शक होते ही रोगी को किसी ऐसे संस्थान में जाना चाहिए जहां ये सब सुविधाएं उपलब्ध हों.

उपचार

फेफड़े के कैंसर का उपचार भी विशेषज्ञों का काम है. रोग के उत्पत्तिस्थल, विकास की अवस्था और कोशिका के रूप के अनुसार प्रत्येक रोगी के लिए उपयुक्त चिकित्सा तय की जाती है. उपयुक्त केसों में शल्यक्रिया से भी फेफड़े के संबंधित खंड, पिंड अथवा पूरे फेफड़े को ही निकाल देने से लाभ हो जाता है. रोग की बढ़ी हुई स्थिति में विकिरण चिकित्सा (रेडियोथेरेपी) और रसायन चिकित्सा (कीमोथेरेपी) यानी कुछ विशेष दवाएं जो कैंसर कोशिकाओं को नष्ट कर देती हैं, इस्तेमाल की जाती हैं.

कैंसर जैसे भयानक रोग से बचने के लिए सब से आसान बात यह है कि सिगरेट पीना न सीखें. जो पीते हैं, वे तुरंत बंद कर दें.

सरकार को चाहिए कि वह इस घातक बीमारी के लिए आवश्यक निदान प्रक्रिया और उपचार व्यवस्था सर्वसुलभ कराने के साथसाथ, इसे पैदा करने वाले कारणों पर भी नियंत्रण करे, जो इस रोग की रोकथाम का ज्यादा आसान, सस्ता और बेहतर उपाय है.

दूतावास में पत्रकार की हैसियत से मैं संध्या को एक पार्टी में निमंत्रित था.

दूतावास में एक बहुत बड़े मखमली लान पर जगमगाते रंगीन बल्बों की रोशनी में आमंत्रित अतिथि इधरउधर बिखरे हुए थे. सब के हाथों में गिलास थे. मेरे हाथ में लाल रंग का टमाटर का रस था. आते ही विदेशी अतिथियों से मेरी भेंट कराई गई, जिन से कुछ समय तक बात करने के बाद मैं एकदो जानपहचान वालों के झुंडों में हंसीमजाक करता हुआ अंत में एकांत ढूंढने लगा था.

उसी समय एक युवक लड़खड़ाता हुआ आया और मुझ से टकरा गया. न केवल मैं संभल गया, बल्कि उसे भी गिरने से बचा लिया. उस के गिलास से कुछ पेय छलक गया था.

"क्षमा, कीजिए," युवक ने बड़ी नम्रता से कहा.

"कोई बात नहीं, ऐसा हो जाता है," मैं ने सहज भाव से कहा.

मैं बड़े पसोपेश में पड़ा हुआ था. न जाने क्यों वह युवक मुझे जानापहचाना लग रहा था. अगर छोटी सी दाढ़ी न होती तो शायद

कभी नहीं

कहानी • अश्विनीकुमार भटनागर

पहचान में आ जाता. युवक ने जाने के लिए कदम बढ़ाया.

अचानक मेरे जेहन में एक बिजली सी कौंध गई और मैं ने कहा, "अरे, तुम अभिनव तो नहीं?"

"जी." युवक ठिठक गया.

"लो मैं तो तुम्हारी दाढ़ी से धोखा ही खा गया था."

अभिनव ने मुसकरा कर कहा, "अभी तो बच्ची है."

"यह मेरा बेटा है," अंदर आते अभिनव को देख कर गोपाल ने यों कहा, मानो पहली बार परिचय करा रहा हो.

"कौन?" मैं ने चौंक कर पूछा.

"मेरी दाढ़ी, कुछ ही सप्ताह हुए हैं."

मैं हंस पड़ा, "तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"मैं आमंत्रित हूं. मेरा एक मित्र यहां सांस्कृतिक सचिव का सहायक है. वह अकसर बुला लेता है."

वह गिलास खाली कर चुका था और भूखी निगाहों से घूमते सेवकों को देख रहा था.

"तुम क्या काम कर रहे हो?" मैं ने पूछा.

"मैं भी पास ही दूसरे दूतावास के सूचना विभाग में सहायक हूं." एक सेवक को हाथ से संकेत करते हुए उस ने उत्तर दिया.

"पर पहले तो तुम कहीं और थे. शायद एक मंत्रालय में?"

"वहां से छोड़ दिया. यहां वेतन अच्छा मिलता है."

गोपाल के खानदान में पुराने समय से मदिरापान की रीति चली आई थी. इसी चक्कर में मेरे देखतेदेखते गोपाल और अभिनव के रूप में दो पीढ़ियां बरबाद हो चुकी थीं. आखिर तीसरी पीढ़ी के लिए पारुल ने क्या किया?

"और पीने को भी!" मैं ने व्यंग्य किया.

वह केवल मुसकराया. ट्रे में से गिलास उठाया और एक चुस्की ली.

"तुम ने मुझे पहचाना?"

"जी, मैं ने पहले ही पहचान लिया था. बहुत साल हो गए. मैं ने सोचा आप के सामने पीना ठीक नहीं है, इसलिए बच कर निकल रहा था. पर ठोकर खा गया." वह हंसा.

मैं ने भी हंस कर कहा, "पीने वाला ठोकर खा ही जाता है. कभी गिर जाता है तो कभी संभल जाता है. अच्छा यह बताओ गोपाल कहां है?"

गोपाल अभिनव का पिता था और बचपन में साथ पढ़ा हुआ मेरा अंतरंग घनिष्ठ मित्र. उस ने उत्तर नहीं दिया. एक और सिगरेट ली और गहरी सांस ले कर धुआं बाहर उगला.

मैं ने फिर पूछा, "गोपाल कहां है, तुम ने बताया नहीं?"

"उन की मृत्यु हो गई."

मुझे गहरा धक्का लगा. उस से संपर्क हुए लगभग आठनौ वर्ष हो चुके थे. मेरे पिछले कई पत्रों के उत्तर न आने से मैं ने लिखना छोड़ दिया था.

मैं ने पूछा, "कहां था वह मृत्यु के समय? तुम्हारा घर तो छोड़ दिया था न? एक पत्र से मुझे ऐसा आभास हुआ था."

"वह एक वृद्धाश्रम में चले गए थे."

मैं ने कटुता से कहा, "इसे भी तुम पीढ़ी का अंतर ही मानते होगे?"

"आप पिताजी के मित्र थे. आप मेरी भावनाओं को नहीं समझेंगे. वह मेरे ऊपर एक भार बन गए थे."

मुझे लगा कि जिस पिघली आग ने उस की जबान को लड़खड़ा दिया था, उसी बुराइयों की जननी शराब ने उस की जबान भी खोल दी थी. वह साफसाफ और निस्संकोच कह रहा था, "वह मेरे ऊपर भार बन गए थे. वह मेरी सीमाओं को नहीं समझ रहे थे. आखिर हम दोनों में से एक न एक को तो टूटना ही था.

"उन का मेरे ऊपर कोई ऋण नहीं था. उन्होंने जो कुछ किया, वह एक बाप का कर्तव्य था."

वह एक कड़वा सच था. गोपाल का सारा जीवन मेरी आंखों के आगे घूम गया. उस के पिता पुराने समय के जमींदार थे. स्वतंत्रता के बाद जमींदारी तो टूट गई, पर उन का जमींदारों वाला चलन बदस्तूर कायम रहा. शान से रहते थे और खानेपीने व मदिरामांस में पहले ही की तरह पैसा लुटाते थे. चूंकि मदिरा पान उन के खानदान में पुराने समय से चली आ रही एक रीति थी, इसलिए गोपाल को भी पीने का चाव था, जो धीरेधीरे आदत में बदल गया.

उस के पिता के समय में बड़ों का इतना सम्मान व लिहाज रखा जाता था कि छोटे उन के सामने मदिरा व धूम्रपान तो क्या, पान तक नहीं खाते थे. इस कारण गोपाल भी छिप कर ही शराब पीता रहता था. बी.ए. तक हम लोग साथ पढ़े. उस के बाद मैं एम.ए. कर के पत्रकारिता में आ गया. यह जीवन कई वर्षों तक संघर्षमय रहा, इस कारण गोपाल का साथ छूट गया.

गोपाल ने एम.ए. में प्रवेश लिया, परंतु पिता की मृत्यु के कारण कुछ घरेलू समस्याएं ऐसी आ गईं कि पढ़ना छोड़ दिया. एकदो वर्षों के बाद उस ने एक निजी कंपनी में नौकरी कर ली, जहां वह बहुत तेजी से उन्नति करता चला गया. साथ तो छूट गया था, पर हम लोग पत्रव्यवहार अवश्य करते थे.

अपने पुत्र अभिनव की सोलहवीं वर्षगांठ उस ने बड़ी धूमधाम से मनाई. उस की जिद के कारण मुझे एक आवश्यक खोज को छोड़ कर आना पड़ा. वैसे इतने वर्षों बाद मुझे भी उस से मिलने का बहुत मन कर रहा था. देखते ही गले से लगा लिया. मुझे लगा कि वह कुछ जल्दी ही बूढ़ा हो गया था. बातों से पता लगा कि वह कई बीमारियों से घिरा हुआ है, पर जिंदादिली में अभी भी किसी से कम नहीं था. वही परिचित मुसकराता

"अब घर चलो. बहुत पी चुके," पारुल ने शराब पीने में मस्त अभिनव की बांह थाम कर कहा.

चहरा, वही बातबात पर ठट्ठा कर हंसना.

"लाना जरा एकगिलास", उस ने ठहाका मारते हुए कहा, "हमारे राजा हरीशचंद्र के लिए."

मैं हंस पड़ा. उसे मालूम था कि मैं नहीं पिऊंगा. इस तरह की बहस व मनुहार अब बीती बातें हो चुकी थीं: आए तो दो गिलास थे. पर उस के गिलास में ह्विस्की और मेरे गिलास में ठंडामीठा शरबत वाला दूध था. हम दोनों ने जाम टकराए. एकदूसरे की सेहत के लिए कामना की और एक घूंट पी कर नीचे रख दिए. इस के बाद पुरानी यादों में खो गए.

अचानक गोपाल ने दरवाजे में आ कर खड़े होने वाले अभिनव से कहा, "आओ बरखुरदार, वहां से क्या झांक रहे हो? अरे, तुम्हारी ही तो सालगिरह मना रहे हैं."

अभिनव सहमता हुआ अंदर आया. गोपाल ने उसे पास बैठा लिया और प्यार से उस का सिर सहलाया.

"यह मेरा बेटा है", गोपाल ने यों कहा मानो पहली बार परिचय करा रहा हो. दर असल अब वह सुरूर में था. "आज सोलह साल का गबरू जवान हो गया है," गोपाल ने झूमते हुए कहा, "देखो, हरीशचंद्र, मैं ने जब भी पी अपने बाप से छिपा कर पी. बाद में तो उन्हें पता लग ही गया था, पर कभी टोका नहीं. आखिर यह हमारे खानदान की परंपरा जो है. लेकिन लिहाज के मारे कभी सामने नहीं पी. अब तो जमाना बदल चुका है. नई पीढ़ी का दौर है. हमें उन के साथ मिल कर चलना है."

गोपाल जैसे परंपरावादी के मुंह से यह सुन कर मुझे आश्चर्य तो हुआ, पर मैं

चुपचाप सुनता रहा.

"अब देखो, मैं पीता हूं. पीता हूं न?"

मैं ने स्वीकृति में सिर हिला दिया.

"यह छोकरा अभिनव भी एक दिन पिएगा. पिएगा न?"

मैं चुप रहा. कुछ उत्तर न सूझा.

"अब जब इसे पीना ही है तो छिप कर क्यों पिए? ठीक है न?"

मैं अब भी चुप रहा.

"इसी लिए मैं ने फैसला किया है कि छिप कर क्या पीना. जब पीना है तो सामने पिओ मरदों की तरह पिओ, साथ बैठ कर पिओ. क्या कहते हो? ठीक है न?"

अब मुझे बोलना ही पड़ा, "क्या खाक ठीक है. अरे, बजाए उसे मना करने के और पीना सिखा रहे हो. यह तो मूर्खता है."

"अरे, हरीशचंद्र", गोपाल ने ठट्ठा मार कर हंसते हुए कहा, "रहे वही गोबर गणेश. अरे पीना तो मरदों की शान है. मेरा कहना यही है कि पीना है तो सामने पिओ. चोरीचोरी छिप कर नहीं."

"मैं इस में विश्वास नहीं करता. मैं तो पीने में ही विश्वास नहीं करता."

"रहे मिट्टी के माधो", फिर वह गोद में बैठे अपने बेटे से बोला, "देख, बेटा अभिनव, पहचान ले इन चाचा को. जिंदगी में तेरे से फिर कभी न कभी टकराएंगे. अब ले, एक घूंट पी और मजा चख."

अभिनव ने झिझकते हुए मुंह फेर लिया.

गोपाल ने उस की पीठ पर धौल जमाते हुए कहा, "अबे पी."

अभिनव आशंका से मुझे देख रहा था. मैं चुपचाप यह नाटक देख रहा था. कहना था सो कह चुका था.

अभिनव ने गोपाल के हाथ का गिलास लिया और एक छोटी सी चुस्की ली.

"शाबाश!" गोपाल ने प्रशंसा से कहा.

अभिनव ने मुंह बनाया, "छिः, बहुत कड़वी है."

गोपाल पर नशा हावी हो चुका था. हंसते हुए कहने लगा, "अबे, यह तो अमृत है अमृत कहीं कड़वा होता है?"

उस ने अभिनव को जबरन एक घूंट और पिलाया और तब वह वहां से भाग खड़ा हुआ. गोपाल मस्ती में हंसे जा रहा था.

इस बात को कई वर्ष बीत गए. अभिनव की शादी से पहले गोपाल का पत्र आया था, जिस में गर्व से बेटे की प्रशंसा के पुल बांध दिए थे, "मेरा बेटा अब बराबर का हो गया है. साथ में ही नहीं पीता, बल्कि मुकाबले में पीता है. उस की शादी की तैयारी कर रहा हूं. जरूर आना, अभी से दावतनामा भेज रहा हूं."

दावत तो मिली थी आने की, पर मैं जा नहीं सका था. उस समय एक मामले की जड़ में पहुंचने के लिए मुझे जरमनी जाना था. यह अवसर छोड़ने से मेरे भविष्य को भी खतरा हो सकता था. गोपाल ने क्रोध में आ कर पूरे साल तक कोई पत्र नहीं लिखा था. जब वह सामान्य हुआ तो बहुत देर हो चुकी थी. अब उस के पत्रों में केवल दुख और पश्चात्ताप के सिवा कुछ न था.

अपने पीने के चक्कर में उस ने बेटे को लत लगा दी थी. उधर गोपाल का रक्तचाप इतना बढ़ गया था कि एक दिन वह पक्षाघात का शिकार हो गया था. उसे ठीक होने में पूरा साल लग गया. पूरे साल नौकरी पर न जा सकने का कारण उस की कंपनी ने उस का हिसाब चुकता कर के उसे जबरन सेवानिवृत होने पर मजबूर कर दिया. पेंशन की तो कोई व्यवस्था उस निजी कंपनी में थी नहीं. भविष्य निधि इत्यादि से वह इतना उधार ले चुका था कि बीमारी के चक्कर में नौकरी छूटने के समय मुशकिल से सात हजार रुपए ही मिले.

उसे केवल एक ही आशा थी, एक ही सहारा था—वह था बेटा अभिनव, जो उम्र के हिसाब से ठीक ही वेतन ले रहा था. जब तक गोपाल के पास रुपया रहा, बापबेटे शाम को साथ बैठ कर पीते रहे. इस के बाद शराब का खर्च अभिनव के ऊपर आ पड़ा. कुछ समय तक तो अभिनव अपने खर्च कम कर के

शराब पीने में बाप का साथ देता रहा. पर धीरेधीरे उस का हाथ तंग होने लगा.

उस ने महसूस किया कि पिता उस के ऊपर भार बनता जा रहा है. चूंकि पीने की आदत पड़ चुकी थी, इसलिए उस ने पिता को अलग कर देने में ही अपनी भलाई समझी. गोपाल की हालत दिन पर दिन बिगड़ती गई. न पीने के कारण अब वह अभिनव से रोज झगड़ा करता था. उसे उस के पालनपोषण का पूरा ब्यौरा बता कर कर्ज चुकाने को कहता था. अंत में बात इतनी बढ़ गई कि गोपाल को वृद्धाश्रम में जाना पड़ा.

नशे में झूमते हुए अभिनव ने फिर दोहराया, ''वह मेरे ऊपर भार बन गए थे. उन्होंने मुझ से वह सारा रुपया मांगा, जो मेरे पीने पर व्यय किया था. इसी से तकरार इतनी बढ़ गई कि हमारा शांति से जीना दूभर हो गया.''

मैं ने कहा, ''पर किसी भी अवस्था में पिता को भार नहीं समझना चाहिए.''

बेरुखी से अभिनव ने जवाब दिया, ''आप नहीं समझेंगे, पिता से अलग आखिर मेरा अपना भी तो कोई जीवन था. त्याग और सहने की एक सीमा होती है. उस के बाद''उस ने चुटकी बजा कर समझाया, ''उस के बाद यों टूट जाता है जीवन.''

तभी एक सुंदर सी युवती आई. उसे देख कर अभिनव ने मुंह फेर लिया. दूसरी ओर एक सेवक ट्रे में और गिलास ले कर आ रहा था. अभिनव का गिलास अभी आधा ही खाली हुआ था. उस ने जल्दी से दो घूंट में सारा गिलास पी कर ट्रे में रख दिया और नया गिलास उठा लिया.

''अब चलो'', युवती ने उस की भुजा थाम कर आग्रह किया.

''अभी से?'' अभिनव मुसकराया, ''अभी तो शाम जवान हुई है.''

''इसे बूढ़ी होते देर नहीं लगेगी. चलिए, बहुत हो चुका.''

अभिनव ने उस युवती का मुझ से परिचय कराया, ''यह मेरी...'' उस ने जानबूझ कर वाक्य अधूरा छोड़ दिया.

वादा

फलक के सितारों का
वादा किया था—
पांव के नीचे की जमीं
खींच लोगे
यह कब कहा था?
—निर्मला जौहरी

''ओह, बेटी तुम हो? मैं तो नाम ही भूल गया. यही रचना, अर्चना सा कुछ था न?'' मैं ने हंस कर कहा.

''जी, न रचना न अर्चना, मेरा नाम है पारुल.''

मैं झेंप गया. ''असल में तुम्हारी शादी में मैं नहीं आ सका था. इसलिए गोपाल बहुत नाराज हो गया था.''

''जी आप?'' पारुल ने पूछा.

अभिनव झूमता हुआ बड़बड़ाया, ''इन का परिचय बहुत लंबा है. पिताजी के एकमात्र घनिष्ठ मित्र हैं.

पारुल ने जबरदस्ती उस के हाथ से गिलास ले कर नीचे रख दिया और कहा, ''चलो, बहुत हो गया.''

''कैसे जाओगे?'' मैं ने पूछा.

''बाहर कोई स्कूटर रिकशा मिल जाएगा.''

''मेरे साथ चलो. मेरी कार है. मैं कार में घर छोड़ दूंगा.''

पारुल ने झिझक कर कहा, ''पर आप को कष्ट होगा.''

''कष्ट क्यों होगा?'' मैं ने हंस कर कहा, ''इस बहाने तुम्हारा घर भी देख लूंगा. पेट्रोल का जरूर थोड़ा खर्च होगा, सो उस के बदले में तुम मुझे काफी पिला देना.''

वे लोग मान गए. मैं उन्हें कार में ले कर रवाना हो गया.

कुछ दूर आने के बाद मैं ने पूछा, "पारुल, तुम क्या रोज अभिनव के साथ आती हो, मेरा मतलब ऐसी पार्टियों में?"

"जी नहीं, मुझे बहुत अजीब और उखड़ाउखड़ा लगता है. मुझे महसूस होता है, सब नकली है, सब बनावटी है, सब एक जैसा मुखौटा पहने आते हैं. शुरू में एकदो बार आने के बाद, मैं ने आना छोड़ दिया था."

पारुल ने आगे कहा, "पिछले सप्ताह इन्होंने इतनी पी ली थी कि वो लोग इन्हें छोड़ने घर तक आए थे. आज बहुत झगड़ा कर के आए हैं. मैं ने सोचा कि अच्छा है, इन्हें मैं ले कर आऊं बनिस्बत इस के कि दूसरे लोग लाएं. उस दिन मुझे बहुत शर्म आई थी."

जब तक घर पहुंचे अभिनव लगभग सो गया था. उसे हाथ पकड़ कर बाहर निकाला. पारुल ने दरवाजा खोला और हमें अंदर ले गई. उस ने हमें ड्राइंग रूम में बैठा कर मेरी ओर देखा, "मैं अभी आती हूं. आप जाइएगा नहीं."

"कहां?"

"पास में ही, बच्चे को छोड़ गई थी. उसे ले आऊं"

पारुल चली गई. अभिनव ने आंखें खोलीं. मुझे देख कर मुसकराया, "हमारा घर..."

"अच्छा तो है", मैं ने कहा.

"मैं हाथमुंह धो लूं?"

"हांहां, जरूर जाओ, मैं यहां आराम से बैठा हूं."

मैं ने पास पड़ी एक पत्रिका उठा ली. कुछ देर में अभिनव वापस आ गया.पर उस की आंखों से तनाव झलक रहा था. तब ही पारुल बच्चे को ले कर आ गई. वह पांच साल का होगा. बड़ा प्यारा लग रहा था. मैं ने उसे पास बुलाया.

वह झिझकता हुआ मेरे पास आ गया. मैं ने प्यार से उस के सिर पर हाथ फेरा, "एकदम गोपाल जैसा लगता है. एकदम वैसे ही मुसकराता है. माथा भी उसी की तरह चौड़ा है."

अभिनव खिन्न भाव से मुसकराया.

मैं ने कहा, "क्यों अभिनव, इस के पीने की शुरुआत कब करवाओगे? जमाना तरक्की पर है. गोपाल ने जब तुम्हें पिलाई थी, तब तुम सोलह साल के थे."

पारुल ने बिफर कर कहा, "कभी नहीं."

मैं ने चौंक कर उसे देखा.

"यह परिपाटी अब तोड़नी होगी. जब तक मैं जीवित हूं, इस बच्चे को नहीं पीने दूंगी. पिता का असर इस पर न आए, इसलिए मैं ने अलग रहने का भी फैसला कर लिया है."

"क्या?" मैं ने आश्चर्य से पूछा.

"आप ने बाबा को देखा और उन के बेटे को भी देखा—दो जीवन, दो पीढ़ियां बरबाद हो चुकी हैं. अब मैं इसे कभी नहीं पीने दूंगी."

उस के आत्मविश्वास में जो दृढ़ता थी, उस से मैं बहुत प्रभावित हुआ. इस का उत्तर मैं अभिनव की आंखों में खोज रहा था, जो शायद पहली बार पारुल का निर्णय सुन कर कुछ उलझन में पड़ गया था. ●

पृथ्वीराज ताराबाई

(पृष्ठ 90 का शेषांश)

अंधेरा हो गया. पृथ्वीराज तथा सूरजमल अपनेअपने डेरों को चले गए.

रात्रि के प्रथम पहर में पृथ्वीराज सूरजमल के पास पहुंचा. सूरजमल अपने घावों को जर्राह से सिलवा कर तकिए के सहारे लेटा था. पृथ्वीराज को देख कर वह ऐसे उठा, जैसे उन दोनों में कोई कटुता हो ही नहीं. पृथ्वीराज ने पूछा, "काका, आप के घाव कैसे हैं?"

सूरजमल ने जवाब दिया, "बेटा, तुम्हें देख कर भर गए हैं."

"काका, मैं दीवानजी से अभी तक नहीं मिल पाया. आप से मिलने को भाग आया. मैं बहुत भूखा हूं. कुछ खिलाओ."

दोनों ने एक ही थाल में खाना खाया. चलते समय पृथ्वीराज ने कहा, "कल प्रातः हमारा युद्ध समाप्त हो जाएगा."

"बेटा, जल्दी आना," सूरजमल बोला.

अगले दिन युद्ध में सारंगदेव के 35 घाव आए और पृथ्वीराज के सात.

युद्ध के दौरान पृथ्वीराज ने सूरजमल से कहा, "मैं आप के पास मेवाड़ में सूई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं रहने दूंगा."

"मैं तुम्हें केवल स्वयं के लेटने लायक भूमि लेने दूंगा," सूरजमल बोला.

भयंकर युद्ध के बाद सूरजमल तथा सारंगदेव पराजित हो कर सादड़ी की ओर भाग गए तथा विजयी पृथ्वीराज चित्तौड़गढ़ चला आया.

एक रात को सारंगदेव तथा सूरजमल बटारडा के निकट घने जंगल में डेरा डाले पड़े थे. वे खाना खा कर आग ताप रहे थे कि घोड़ों के हिनहिनाने तथा उन की टापों की आवाजें आईं. सूरजमल बोला, "मेरा भतीजा ही होगा."

इतने में चारों ओर लगी बाढ़ को फांदता हुआ पृथ्वीराज आ गया और सूरजमल पर अप्रत्याशित वार किया. यदि सारंगदेव बीच में नहीं पड़ता तो संभवतः उस वार से सूरजमल मारा जाता. सारंगदेव ने पृथ्वीराज को इस प्रकार आक्रमण करने के लिए लताड़ा. सूरजमल ने पृथ्वीराज से युद्ध रोकने का अनुरोध किया और बोला, "यदि मैं मारा जाऊं तो कुछ नहीं. मेरे पुत्र राजपूत हैं. वे कहीं भी रोटी कमा लेंगे. यदि तुम मारे गए तो चित्तौड़ का क्या होगा? मेरा मुंह सदैव के लिए काला हो जाएगा."

दोनों पक्षों ने तलवारें म्यानों में रख लीं. चाचा तथा भतीजा गले मिले. दूसरे दिन कथित देवी के मंदिर में जाकर भैंसों की बलि देने का कार्यक्रम बना.

अगले दिन सूरजमल घावों के कारण मंदिर नहीं गया. वह सादड़ी चला गया. उस की ओर से सारंगदेव गया. वह तथा पृथ्वीराज एकएक भैंसे की बलि देने लगे. अचानक पृथ्वीराज ने भैंसे के स्थान पर सारंगदेव पर वार कर दिया. भीषण युद्ध में पृथ्वीराज ने सारंगदेव को मार डाला. इस के बाद वह सूरजमल की खबर लेने सादड़ी पहुंचा.

सूरजमल ने सादड़ी के अधिकांश गांव ब्राह्मणों तथा चारणों को दान में दे दिए, ताकि पृथ्वीराज उन पर कभी कब्जा न कर सके. वह सादड़ी छोड़ कर सदैव के लिए जा रहा था कि पृथ्वीराज आ धमका.

चाचाभतीजे खाना खाने बैठे. सूरजमल की पत्नी ने पृथ्वीराज के थाल में रखे कटोरे में विष डाल दिया. इस का ज्ञान होते ही सूरजमल ने वह कटोरा अपने थाल में रख लिया. उस की पत्नी ने तत्काल भाग कर वह कटोरा उठा लिया, जिस से पृथ्वीराज समझ गया कि उस में विष था. चाचा के स्नेह से गदगद हो कर पृथ्वीराज बोला, "काका, मेवाड़ की गद्दी आप की सेवा में अर्पित है."

सूरजमल गद्दी का दावेदार था. इसी लिए वह अनेक अवसरों पर विद्रोह कर चुका था. उसे पृथ्वीराज से स्नेह था तथा वह उस का अनिष्ट नहीं चाहता था. पृथ्वीराज उस का आदर करता था, किंतु उसे निर्भय हो कर नहीं रहने देता था. सादड़ी पहुंचने से पूर्व ही सूरजमल मेवाड़ छोड़ने का निर्णय कर चुका था. अतः उस ने कहा, "गद्दी की बात छोड़ो, मैं तो अब मेवाड़ में पानी भी नहीं पीऊंगा."

वह कांठल प्रदेश की ओर चला गया. वहां के आदिवासियों को पराजित कर के उस ने देवलिया, प्रतापगढ़ राज्य की स्थापना की.

सारंगदेव तथ सूरजमल के अंत से पृथ्वीराज की ख्याति अत्यधिक बढ़ गई. सब उसे ही मेवाड़ का भावी महाराणा मानते थे. वह सांगा का शत्रु था, किंतु वह अपने परिवार की महिलाओं से अत्यधिक स्नेह करता था. उन के अपमान को अपना अपमान समझता था.

महाराणा रायमल की बहन रामाबाई का विवाह गिरनार के राव मांडलिक से हुआ था.

राव अपनी पत्नी को तंग करता था. पृथ्वीराज 200 योद्धाओं के साथ गिरनार इतनी फुरती से पहुंचा कि किसी को उस के पहुंचने का ज्ञान नहीं हो पाया. जब वह महल में घुस कर मांडलिक के सामने खड़ा हो गया तो वह एकदम घबरा गया. मांडलिक के पास 20,000 सैनिक थे, किंतु उस अचानक आक्रमण से वह हतप्रभ रह गया. उस ने पृथ्वीराज से क्षमा मांगी, क्योंकि राव उस का फूफा था. पृथ्वीराज ने उस को क्षमा कर दिया, किंतु दाहिने कान का कोना काट दिया.

सांगा श्रीनगर के कर्मचंद पवार के पास अनेक वर्ष से था, किंतु पृथ्वीराज अथवा महाराणा को यह ज्ञात नहीं था. यह ज्ञात होने पर कि सांगा मेवाड़ का राजकुमार है, कर्मचंद ने अपनी पुत्री का उस के साथ धूमधाम से विवाह कर दिया. पृथ्वीराज को इस की सूचना मिली. उस ने कर्मचंद को दंडित करने का निश्चय किया. उसी समय उसे अपनी बहन आनंदबाई का पत्र मिला कि वह अपने पति के अत्याचारों से अत्यधिक दुखी है. पृथ्वीराज पत्र पढ़ कर अत्यधिक क्रोधित तथा दुखी हुआ. वह उसी समय सिरोही पर चढ़ दौड़ा. अर्धरात्रि को सिरोही पहुंच कर उस ने महल की दीवार फांदी. सोता हुआ राव जगमाल गले पर बरछी की नोक लगने से जाग पड़ा. उस के पूर्व अत्याचारों को भुला कर आनंदबाई ने पृथ्वीराज से उस के प्राणों की भिक्षा मांगी. राव जगमाल ने पृथ्वीराज के पैर पकड़ कर शपथ ली कि वह पत्नी से कभी दुर्व्यवहार नहीं करेगा. पृथ्वीराज के बाध्य करने पर उस ने अपनी पत्नी के पैर छुए, उस से क्षमा याचना की. आनंदबाई के अनुरोध पर पृथ्वीराज ने उसे क्षमा कर के गले लगाया.

दूसरे दिन राव जगमाल ने पृथ्वीराज का सार्वजनिक सम्मान किया. दोनों ने एकसाथ भोजन किया. पृथ्वीराज जब चलने लगा, तब राव जगमाल ने उसे तीन गोलियां दी और कहा, "ये अपूर्व स्फूर्तिदायक हैं."

कुंभलगढ़ के निकट आ कर उस ने एक गोली खा ली. उस की तबीयत एकदम खराब हो गई. वह मामादेवी के मंदिर से आगे नहीं बढ़ सका. उस ने कुंभलगढ़ से ताराबाई को बुलवाया, किंतु तारा के आने से पूर्व ही तेज विष के प्रभाव से उस का प्राणांत हो गया. तारा ने उसी स्थान पर चिता बनवाई और महापराक्रमी योद्धा के मृत शरीर के साथ सती हो गई. उनकी स्मृति में एक छत्री आज भी उस स्थान पर है.

महाराणा रायमल उस की मृत्यु से विचलित हो गए और कुछ ही दिनों बाद सांगा को उत्तराधिकरी घोषित कर के मर गए. हालांकि सांगा जीवट योद्धा तथा महान शासक सिद्ध हुआ, किंतु अधिकांश इतिहासकारों का मत है कि अगर पृथ्वीराज जीवित होता और वह सांगा के स्थान पर बाबर से लड़ा होता तो भारत का इतिहास कुछ और ही होता. ●

विजय पर्व

(पृष्ठ 139 का शेषांश)

पर लिली तो दूसरी ही प्रकार की लड़की थी. कटे बालों, अत्याधुनिक वेशभूषा और नारी स्वतंत्रता की समर्थक लिली आंतरिक रूप में पूर्ण परंपरावादी थी. उस ने मां से साफ कह दिया था, "मां, मैं शादी की बहुत इच्छुक नहीं हूं. फिर भी यदि शादी आवश्यक ही है तो आप और पिताजी जहां चाहें कर दें. मैं अपने से करने वाली नहीं हूं. हां, इतना देख लीजिएगा कि जहां आप मुझे देना चाहें, वहां मैं खप सकूं."

रंजना की समझ में तो खत्री समाज की बारीकियां नहीं आती थीं. अजित ही प्रयास करते रहते थे. एक लड़का मिला भी. वह खरे खत्रियों का था. लड़का इंजीनियर था और अमरीकी सहयोग की किसी कंपनी में कार्यपालक इंजीनियर था.

लिली के साससुर ने लिली की भूरिभूरि प्रशंसा की थी. उसे नेकलेस पहनाया था तो रंजना आश्वस्त हो गई थी. फिर भी उसे अपने सिर पर बहुत बड़ा भार प्रतीत हो रहा था. कैसे वह सब निबटा पाएगी?

उसे ससुराल की ओर से बहुत सहयोग की आशा नहीं थी. पर मांजी एक माह पूर्व ही आ गई थीं. अजित और रंजना को वह सब निर्देश देती रहती थीं कि कैसे क्या करना है. उस समय मांजी उस विवाह को अपनी प्रतिष्ठा का विषय मान बैठी थीं. अपने बेटे के विवाह को ले कर उन्हें समाज में क्या कुछ सुनने को नहीं मिला था. अब वह यह दिखा देना चाहती थीं कि उसी बेटे की बेटी को उन का समाज किस प्रकार सिरआंखों पर उठाने को प्रस्तुत है.

अजित के विवाह और लिली के विवाह के बीच 30 वर्ष का अंतराल था. प्रत्येक कोण से, प्रत्येक वस्तु बदल चुकी थी. मनुष्य के स्तर के अनुरूप ही शायद समाज के नियमकायदे भी निर्धारित होते जाते हैं. तब अजित विश्वविद्यालय के छात्र थे, एक साधारण पिता के बेटे. किराए के मकान में वे चार भाईबहन रहते थे. अजित साइकिल पर आतेजाते थे. उन की परिस्थितियों में सामाजिक नियमबंधन भी बहुत कठोर थे. मध्यवर्गीय मानसिकता के मापदंड दूसरे ही होते थे.

अब स्थिति दूसरी थी. एक कोठी के मालिक अजित, एक बड़ी फर्म में ऊंचे पद पर थे. बेटीबेटा अंगरेजी माध्यम में पढ़ कर सदा पहला स्थान ही पाते आए थे. बेटा इंजीनियर हो जाएगा और बेटी एम. ए. कर रही थी. खुद रंजना महाविद्यालय कालिज में प्रवाचिका हो चुकी थी. उन के बेटे के पास अपना स्कूटर था और अजित ने एक पुरानी फिएट ले ली थी. कुल मिला कर अब वह उच्च वर्ग की सीमा रेखा पर पहुंच गया था.

लिली का विवाह निश्चित हो गया था तो रंजना अपने पिताजी के चित्र के सामने जा कर बोली थी, "पिताजी, आप देख रहे हैं न. आप की बेटी हारीटूटी नहीं है. आप की नाक भी नीची नहीं होने दी है. मैं ने कभी भी जगहंसाई नहीं कराई है," और अब रंजना अपने निर्णय पर गर्व कर रही थी, "पिताजी अजित का वरण कर के मैं ने कोई भूल नहीं की थी न. मैं ने जीवन के हर कांटे को फूल माना था और आज तो मेरी राह में फूल ही फूल हैं. कांटे सब के सब तिरोहित हो गए हैं.

"मेरी बेटी पराए घर जा रही है, जिस प्रकार मैं एक दिन आप के घर से आई थी, पर कितना अंतर है मेरे अपने पिता के घर से विदा होने में और लिली का अपने पिता के घर से विदा होने में."

अब रंजना ने अपने पिताजी के चित्र पर दृष्टि डाली थी तो उसे आभास हुआ था कि वह मुसकरा कर उसे शाबाशी दे रहे हैं. वह आश्वस्त हो गई थी.

ससुराल के सभी संबंधियों ने रंजना को अपना परापरा सहयोग दिया था. ननदें

एक हफ्ता पूर्व ही सपरिवार आ गई थीं. पुणे से उस के देवर 15 दिन की छुट्टी ले कर अपने बालबच्चों के साथ आ गए थे.

सब जानते थे कि रंजना को खत्री समाज के रीतिरिवाजों, आचारव्यवहार की अब भी ज्यादा समझ नहीं हो पाई है. अतः कदमकदम पर उसे सहयोग, सहारे की आवश्यकता पड़नी लाजिमी थी.

सब सुचारु रूप से संपन्न हो गया था. बरात के स्वागतसत्कार में कहीं कोई कमी नहीं रह गई थी. नथ पहन कर रंजना अब भी एकदम नईनई सी लग रही थी. उस ने अपने भाई को सब समझा दिया था. भाई भात ले कर आए थे तो लोग दंग रह गए थे. मंडप के नीचे उन्होंने लिली को नथबिछुए पहनाए थे. हाथी दांत के लाल चूड़े से लिली की बांह जगमगा उठी थी. सजीधजी लिली कितनी मोहक लग रही थी.

अब वही गुड़िया सी लिली पराए घर चली गई थी. रंजना को तो लगता था कि लिली अभी उस के आंचल से खेल रही हो. अभी उसी आंगन में डगमगाते पैरों से चलना सीख रही हो. पलक झपकते ही वह कैसे इतनी बड़ी हो गई.

रंजना को समय का भान ही नहीं रहा था. वह वैसे ही आंखें बंद किए सोफे पर बैठी थी. कहीं से अजित उधर आ गए. उन्होंने रंजना को इस प्रकार बैठे देखा तो भावविह्वल हो गए. मातापिता बेटी को विदा कर के कैसे चुक से जाते हैं. अपने ही हाथों सब आयोजन करते हैं, प्रसन्नता से फूले नहीं समाते हैं. पर बेटी की विदाई की बेला सब को तोड़ कर रख देती है.

अजित ने रंजना की बांह हिलाई तो रंजना वर्तमान में आ गई. देखा, चारों ओर बहुत काम फैला पड़ा था. उस के घर आए मेहमानों को उस की आवश्यकता थी. अजित ने कहा, "रंजना, आज तो हमारा विजय पर्व है. तुम निढाल बैठी हो."

मुसकरा कर आंखों ही आंखों में रंजना ने अजित को निहारा और उठ खड़ी हुई. ●

गैरजिम्मेदार पूंजीपति

(पृष्ठ 151 का शेषांश)

तुम्हारे पाप दूर करूंगा" जैसे वचनों का एक ही मतलब होता है. ब्राह्मण राजा का हितैषी होता था तो समाजवादी सरकार के हितैषी हो जाते हैं. ब्राह्मण कृषकों का अन्न ले जाते थे तो समाजवादी उद्यमियों की पूंजी ले जाते हैं. ब्राह्मण विरोधी प्रबुद्ध और बुद्धिवादी लोगों को बुद्ध के ही नाम से गाली दी जाने लगी, 'बुद्धू' कहा जाने लगा. (अब तो इसे मूर्खों के लिए ही प्रयुक्त किया जाता है) तो समाजवाद के विरोधियों को 'पूंजीवादी' या पूंजीपति' कह कर गाली दी जाने लगी.

गाली तो गरीबी है. गरीबी अभिशाप है और संपन्नता वरदान है. किंतु धूर्त समाजवाद और तिकड़मी पूंजीवाद की मिलीभगत से ईमानदार समाजवाद और प्रतिभावान पूंजीवाद की सदा भर्त्सना की गई. यह मूर्खता आज भी जारी है.

जब तक इस देश में गरीबी के पीछे की बेवकूफियों को दूर नहीं किया जाएगा तब तक गरीबी नहीं हटेगी. तब तक अधिकांश अमीर लोग तिकड़मों से बाज नहीं आएंगे, तब तक वे अपनी कमाई का मोटा हिस्सा धार्मिक मूर्खताओं और सामाजिक या पारिवारिक पाखंडों में लगाते रहेंगे, तब तक गैरजिम्मेदार पूंजीपति पनपते रहेंगे और कोई भी सरकार उन से पिछले दरवाजे से आ कर गले मिलती रहेगी.

और इस सब के रहते उपद्रवी समाजवादी भी पैदा होंगे ही. उपद्रव करने से उन्हें भ्रष्ट पूंजीपतियों और सरकार के साथ मिल कर गरीबों को उल्लू बनाने और समाजोपयोगी पूंजीपतियों को गाली देने का अवसर जो मिलता है. हालांकि इस प्रकार के वातावरण को बनाने वाले लोग स्वयं मूर्ख बनते हैं, आदमी की तरह जीने से वंचित रह जाते हैं. ●

पाठकों की समस्याएं

मैं एक संभ्रांत परिवार की लड़की हूं. मैं ने एक लड़के के वैवाहिक विज्ञापन का जवाब दिया था. सोचा अपनी सहेलियों के साथ जा कर उस से मिल लूं. मिलने पर संतोषजनक नहीं लगा. हम ने जो पत्र व्यवहार किया था वह और मेरा फोटो उस ने नहीं लौटाए. उस के पत्र मेरे पास हैं. उन्हें लौटा दूं या जला दूं, पर वह मेरा फोटो व पत्र नहीं लौटा रहा. क्या वह मुझे बदनाम करेगा? यद्यपि पत्रों का मुद्दा यही था कि एकदूसरे को जाने बिना विवाह का प्रश्न ही नहीं उठता. मैं उस से एक बार सहेलियों के साथ ही मिली थी, पर मुझे वह पसंद नहीं आया, क्या करूं? कहीं मेरे पत्रों के कारण वह मुझे बदनाम न कर दे?

यदि आप के पत्र इतने मर्यादापूर्ण हैं और फोटो भी रिश्ता तय करने के लिए दिया जाने वाला साधारण है तो इतनी चिंता न करें. उस के पत्र आप बेशक जला दीजिए. वह अध्याय ही समाप्त कर दीजिए. घर के बड़ों को मध्यस्थ बना कर पत्र व फोटो वापस लेने की कोशिश कर सकती हैं. विज्ञापनों का उत्तर अकसर अभिभावक देते हैं, आप ने स्वयं यह क़दम क्यों उठाया? यदि कोई खास बात नहीं है तो फुजूल घबराने की कोई जरूरत नहीं है. समय बीततेबीतते सब सामान्य हो जाएगा.

चार महीने पहले मेरा विवाह जिस लड़की से दबाववश हुआ था वह मुझे पसंद नहीं है. मैं उस के साथ रहने से मरना बेहतर समझता हूं. क्या प्रेमविवाह कर लूं?

विवाह के बाद नापसंद करने में गलती आप की है. उस नवविवाहिता का क्या कुसूर है, उस के दृष्टिकोण से देखिए, उसे कैसा पति मिला जो केवल चार माह उस के साथ रह कर कहीं और प्रेमविवाह करना चाह रहा है. उसी पत्नी से निभाइए. उस के गुणों को देखिए. शादीब्याह कोई गुड्डेगुड़िया का खेल नहीं है जो आज रचाया, कल खत्म. विवाहित पुरुष से तो कोई प्रेम करता भी नहीं है

मैं अत्यंत निर्धन युवक हूं. मांबाप, छोटे तीन भाईबहन हैं. सब से बड़ा होने के नाते जिम्मेदारी मेरे ऊपर ही है. नौकरी की तलाश बहुत की, पर नहीं मिली. अब मजदूरी करता हूं. पर घर खर्च नहीं चलता. इसलिए गुरदा बेचना चाहता हूं. कहां संपर्क करूं?

गरीबी से दुखी सभी होते हैं, पर पैसा कमाने के लिए काम किया जाता है, शरीर या कोई अंग नहीं बेचा जाता. यदि आप किसी की सहायता करने के लिए गुरदा दें तो ठीक है. उस के लिए आप को बड़े हस्पतालों से संपर्क करना होगा. शारीरिक रूप से आप ठीक होंगे तभी गुरदा दे सकेंगे. यह कार्य बहत जटिल है.

मैं 20 वर्षीया सुंदर युवती हूं, फिर भी कोई लड़का मुझे पसंद नहीं करता. इस बात को ले कर अब तो मेरा मजाक भी बनने लगा है. क्या करूं?

लगता है आप के व्यवहार या गुणों में कहीं कोई कमी है. सूरत के साथ सीरत भी होनी चाहिए. आप उस पर भी ध्यान दे कर देखें.

मैं 22 वर्षीया एम.ए. पास लड़की हूं. सुंदर हूं पर बेसहारा हूं. कृपया किसी आश्रम का पता बताएं. मैं बहुत स्वाभिमानिनी हूं, कुछ मेहनत कर के नौकरी करना चाहती हूं. क्या करूं?

दिल्ली प्रशासन के समाज कल्याण विभाग द्वारा ऐसे आश्रम चलाए जा रहे हैं. इस के अलावा कई निजी संस्थाएं भी हैं. आप इस पते पर पत्र लिख कर जानकारी ले सकती हैं: बालिका गृह, तिहाड़ जेल के समीप, जेल रोड, नई दिल्ली.

मैं 18 वर्षीय युवक हूं और अपने मांबाप के कड़े अनुशासन से परेशान हूं वे हमेशा मुझे अपने ही कानूनकायदों में बांध कर रखना चाहते हैं, जबकि मैं स्वतंत्र व अलग रहना चाहता हूं.

आप के मांबाप का वास्तव में सब से ऊंचा स्थान है. लगता है, आप को ठीक रखने के लिए वे टोकते हों जो आप को गलत लगता है. याद रखिए, उन की नसीहत आप को अभी बुरी लग रही है पर आगे के जीवन में यही एक दिन आप का भविष्य उज्ज्वल बनाएगी.

मेरी उम्र 19 वर्ष और पति की 49 वर्ष है. मेरी शादी मात्र 14 वर्ष की अवस्था में मेरे पिता ने पैसे के लालच में कर दी थी. अब मेरे दो बच्चे है. पर नजदीक में रह रहे एक युवक से मुझे प्यार हो गया है और शारीरिक संबंध भी. उसी लड़के से मेरी छोटी बहन का रिश्ता हो गया है. क्या आत्महत्या कर लूं?

आप के साथ आप के पिता ने ज्यादती की, पर चलिए, इतना समय गुजर गया. अब अपने इसी पति के साथ गुजारा करना ही श्रेयस्कर है. रहा सवाल उस युवक का, आप ने एकदम अनुचित कार्य किया है. अब आप उस से अपना संबंध भूल जाइए और उस के साथ अपनी बहन के पति के रूप में नया रिश्ता कायम कीजिए और उसे भी पुरानी बात भूलने को कह दीजिए. एकांत में कभी भी उस से मिलने का प्रयास न करें.

मैं 11 वीं कक्षा में पढ़ता हूं. विवाहित पड़ोसिन से प्यार हो गया है. पढ़ाई चौपट होती जा रही है. क्या करूं?

दरअसल आप का प्रश्न ही एकदम बचकाना मूर्खता से भरा है. आप क्या समझते हैं प्रेम को? उस विवाहिता से आप,जैसे एक बच्चे का प्यार मांबेटे या बड़ी बहन के रिश्ते के समान है. पागलपन की बात छोड़ कर पढ़िए और कुछ बन कर दिखाइए. —कंचन ●

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

गुलामी और गरीबी मिटाने के लिए

हिंदू समाज नए ढंग से सोचेविचारे

सरिता में हम समयसमय पर ऐसे लेख प्रकाशित करते रहते हैं जिन में हिंदू समाज और प्राचीन भारतीय संस्कृति के उन पहलुओं की आलोचना की जाती है जो हमें अंधविश्वास, कूपमंडूकता व जहालत की तरफ ले जाते हैं और राष्ट्र की उन्नति में बाधक बने हुए हैं.

इस उद्देश्य में हमें पाठकों के बड़े वर्ग का हार्दिक सहयोग मिल रहा है. कुछ लोग अवश्य सरिता की इस नीति से रुष्ट हैं. उन से हमारा निवेदन है कि हम हिंदू समाज के एक अभिन्न अंग हैं और हमारे मन में उसे एक आधुनिक, शक्तिमान और प्रगतिशील रूप देने की अभिलाषा है.

हम से यह भी अकसर कहा जाता है कि हम अन्य धर्मों और समाजों की आलोचना कर के देखें, हमें कैसा मजा चखाया जाएगा. ये हिंदू ही हैं जो इतने उदार और सहनशील हैं कि अपनी आलोचना सह लेते हैं.

ये दोनों बातें गलत हैं. सरिता में समयसमय पर अन्य सभी भारतीय समाजों में व्याप्त रूढ़ियों और अंधविश्वासों की आलोचना होती रहती है, पर दूसरे समाजों की आलोचना होती है या नहीं, इस से हिंदू समाज को क्या लाभ या हानि होती है?

इस बात में भी कोई सार नहीं है कि हिंदू उदार व सहनशील हैं. सारे इतिहास में धर्माधिकारियों ने कभी भी उन विचारों को पनपनेफलने नहीं दिया जिन से उन की रोजीरोटी पर आंच आती हो या जो पुरानी, परंतु बेकार रूढियों व अंधविश्वासों के विरुद्ध हों. वर्तमान उपलब्ध धार्मिक व दर्शन संबंधी साहित्य में कोई भी ग्रंथ ऐसा नहीं है जो प्रचलित रूढिवादी मान्यताओं का आमूल रूप से विरोधी हो. समाज सुधारकों को तो हमेशा सताया गया, जातिच्युत किया और मार डाला गया है. प्राचीन काल में बौद्धों का जाति संहार और वर्तमान काल में स्वामी दयानंद व महात्मा गांधी को मरवा डालना इस के छोटे से उदाहरण हैं.

जहां तक हमारा संबंध है, शुरू से ही धर्माधिकारियों व उन के भक्तों का हमें भी सर्वथा नष्ट कर देने का प्रयत्न रहा है. कभी संपादक को मार डालने का प्रयत्न किया गया तो कभी सरिता कार्यालय को आग लगाई गई और दंडविधान की धारा 295ए (धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना) के अंतर्गत मुकदमे तो सरकार द्वारा हर समय चलते ही रहते हैं. सरिता का जहां भी संभव हुआ, आर्थिक बहिष्कार किया गया—अभी भी हजारों संस्थाओं में यह ब्लैक लिस्ट में है. इस पर भी सरिता जीवित है और फलफूल रही है. इस का कारण यह है कि अब सरिता की प्रेरणा से हिंदू समाज में एक प्रबुद्ध वर्ग पैदा हो गया है जो अपनी 2,000 वर्ष की लंबी गुलामी और वर्तमान पिछड़ेपन व गरीबी से बहुत खिन्न है और इस के कारणों को खोज कर हिंदू समाज को गतिमान बनाना चाहता है.

यह भी पूछा जाता है कि हम हिंदू समाज के उज्ज्वल पक्ष पर प्रकाश क्यों नहीं डालते. हमारा निवेदन है कि उस की प्रशंसा तो हम हजारों वर्षों से, हर घड़ी निरंतर सुनते रहे हैं. आज भी अखबारों, रेडियो व धार्मिक सभाओं में इस प्रकार के भाषणों और लेखों की तो जैसे बाढ़ आई हुई है. क्या यह आवश्यक है कि हम भी इस नक्कारखाने के शोर को तीव्र करें?

थोथी आत्मप्रशंसा द्वारा अपनेआप को जगद्गुरु व आध्यात्मिक नेता कह कर हम अपने मुंह मियां मिट्ठू बन सकते हैं, पर इस से दूसरों को बेवकूफ नहीं बना सकते. वे देखते हैं कि हिंदू 2,000 वर्षों से गुलाम रहे हैं—और जो धर्म व समाज इतने दिन गुलामी सह सकता है, उस की अपनी महानता की बातों का क्या मूल्य है?

पिछले दो हजार वर्षों में हम ने सिर्फ पतन व गुलामी ही देखी है. हम बराबर यूनानियों, शकों, हूणों, अरबों, तुर्कों, मंगोलों, फारसियों, अंगरेजों और यहां तक कि गिनेचुने अबीसीनियों, गुलामों, हब्शियों व ऐयाशों से ही हारते और रौंदे जाते रहे हैं. अब 2,000 वर्ष बाद जो हम स्वतंत्र हुए हैं तो उस का बहुतकुछ कारण हमारा अपना बल और त्याग नहीं, बल्कि संसार की नई राजनीतिक परिस्थितियां थीं. यह स्वतंत्रता भी देश को बांट देने पर मिली है और फिर 37 वर्षों की आजादी के बाद भी आज हम उन्हीं देशों से सहायता की भीख मांग रहे हैं जिन्होंने हमें सदियों से गुलाम बना कर रखा था.

चूहों जैसी जिंदगी

हिंदू बुद्धि और बाहुबल में संसार की किसी भी जाति से कम नहीं हैं. फिर यह लगातार 2,000 वर्षों की गुलामी क्यों? क्या केवल गुलाम बन कर, चूहों की तरह अपनी संख्या बढ़ा कर ही हम हिंदू जिंदा रह सकते हैं? इस तरह जीवित रहने में कौन सी खूबी है?

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 37 वर्षों की कहानी तो और भी भयानक है. सारे देश में आपाधापी, भ्रष्टाचार, भाईभतीजावाद और बेईमानी का राज्य हो गया. ईमानदार, कर्मनिष्ठ और वफादार व्यक्ति का जिंदा रहना असंभव हो गया. आखिर क्यों?

हमारा विश्वास है कि यह हिंदू समाज की चरित्रहीनता व अनैतिकता का परिणाम हैं और इस का सीधा संबंध धर्मशास्त्रों, दर्शनशास्त्रों, सिद्धांतों, आदर्शों व आकांक्षाओं से है.

पुनर्जन्म व मोक्ष के सिद्धांतों ने हमें परलोकवादी, अकर्मण्य, भाग्य के आसरे जीने वाला व हद दर्जे का स्वार्थी व व्यक्तिवादी बना दिया है. हम जो करते हैं वह केवल अपने व्यक्तिगत निर्वाण, मोक्ष या स्वर्गप्राप्ति के लिए ही करते हैं. बदले में कुछ चाहे बिना समाज या देश के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है, इस की प्रेरणा हमें कहीं नहीं मिलती.

श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन को देश या समाज के हित में लड़ने के लिए प्रेरित नहीं किया बल्कि पृथ्वी पर व्यक्तिगत राज्य स्थापित करने या स्वर्ग प्राप्ति के लिए किया. फिर यह गृहयुद्ध या भाईभाई का युद्ध, जिसे हम धर्मयुद्ध मानते हैं, छलकपट व कूटनीति से जीता गया, धर्म या शौर्य से नहीं. श्रीकृष्ण ने अपनी सारी सेना तो कौरवों को दी और स्वयं निहत्थे पांडवों की ओर रहे, ताकि जो जीते, उन का आभारी रहे! जिस देश, समाज व धर्म में महान व आदर्श पुरुष भी अपने भाइयों से छल, कपट व कूटनीति द्वारा विजयी हों, वहां साधारण व्यक्ति को सदाचार की क्या आवश्यकता है?

इसी प्रकार धर्मशास्त्रों में निहित वर्ण या जाति के सिद्धातों ने हिंदुओं के बीच हजारों दीवारें खड़ी कर के एक हिंदू को दूसरे हिंदू का दुश्मन बना दिया है.

धर्मशास्त्रों ने व्यक्ति को व्यक्ति न कह कर हमेशा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ही कहा है. ईश्वर के पूर्ण अवतार श्रीकृष्ण द्वारा स्त्री, शूद्र और वैश्य को तो पापयोनि वाले घोषित किया गया है (गीता : 9/32). शूद्रों व स्त्रियों पर भयानक अत्याचार भी इन्हीं शास्त्रों की प्रेरणा से हुए हैं. समाज के 90 प्रतिशत समुदाय वैश्य, शूद्र और स्त्री को जानबूझ कर निपट निरक्षर रखा गया. भगवान के अवतार श्री रामचंद्र ने तो शूद्र शंबूक की निर्मम हत्या ही इसी लिए की कि वह पढ़नेलिखने का प्रयत्न करता था!

धर्मगुरुओं व शास्त्रों ने हिंदुओं द्वारा हजारों देवीदेवताओं को चढ़ावा चढ़ाने, रिश्वत देने, उन के नाम पर सेवा करने व अपने कुकर्मों के परिणाम से बचने या सुखऐश्वर्य प्राप्त

करने का विधान कर के भ्रष्टाचार व अकर्मण्यता पर धर्म की मोहर लगा दी जिस के कारण देश में कोई काम बिना स्तुति, खुशामद व रिश्वत के होता ही नहीं और सब अजामिल की तरह केवल रामनाम के सहारे, कीर्तन, हवन व पूजा से जीवन की सारी समस्याएं हल करने का प्रयत्न करते रहते हैं. महमूद गजनवी सोमनाथ के दरवाजे पर आ जाता है, पर धर्मगुरु बजाए उस से लड़ने के पूजाकीर्तन में लगे रहते हैं. और नतीजा?

आलोचना का अधिकार

हम से कहा जाता है कि किसी की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का अधिकार नहीं है, यदि किसी को इन शास्त्रों, इन देवीदेवताओं में विश्वास है तो हमें उस विश्वास को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए. यह तर्क गलत है. यदि समाज का कोई वर्ग ऐसा काम कर रहा है जो समाज की प्रगति में बाधक है तो समाज के हर हितैषी का यह कर्तव्य ही नहीं, अधिकार भी है कि वह उस की आलोचना करे. यदि कुछ लोग अंधश्रद्धा के कारण आज भी सतीप्रथा, नरबलि या बालिका वध में विश्वास करते हैं तो क्या उन्हें रोका नहीं जाएगा? यदि कोई शास्त्रों में विश्वास रखने के कारण छुआछूत का पुजारी है तो क्या उस की आलोचना नहीं की जाएगी?

सरिता के लेख काफी खोज व शोध के बाद धर्मशास्त्रों व अन्य मान्यता प्राप्त ग्रंथों के आधार पर लिखे जाते हैं, पर 99 प्रतिशत हिंदुओं ने इन आधार ग्रंथों को पढ़ने की बात ही क्या, शक्ल भी नहीं देखी है. वेदों में भरे हुए तथाकथित असीमित ज्ञान के गुणगान सुन कर, शहर की रामलीला व कृष्णलीला देख कर, पाठ्य पुस्तकों में संक्षिप्त कहानियां पढ़ कर या कुछ इधरउधर भाषण सुन कर वे समझ लेते हैं कि उन्होंने वेद, पुराण, रामायण व महाभारत आदि सभी धर्मग्रंथ पढ़ लिए हैं.

पर जब इन ग्रंथों में लिखी बातें उन के सामने अविकल रूप में रखी जाती हैं, वे न केवल चौंक जाते हैं, बल्कि बौखला भी उठते हैं, जिस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए, क्योंकि इन ग्रंथों में बहुत सी सामग्री न तर्कसंगत है, न समयानुकूल है. इसी कारण पुरोहित वर्ग ने इन्हें अन्य किसी वर्ग को छूने तक नहीं दिया. जहां ईसाई बाइबिल की करोड़ों प्रतियां सैकड़ों भाषाओं में अनुवाद कर के संसार भर में मुफ्त बांटते हैं और पढ़वाते हैं, वहां हमारे यहां धर्मशास्त्रों में विधान है कि वेद का यदि एक शब्द भी शूद्र (और स्त्री व वैश्य) के कान में पड़ जाए तो उस में गरम सीसा भर दिया जाए. सारे ग्रंथ संस्कृत में हैं और इस तथाकथित देवभाषा संस्कृत को (अंगरेजी के आने से पहले) सिवा कुछ ब्राह्मणों के किसी को भी पढ़ने का अधिकार तक नहीं था.

हमारे साहित्य, हमारे आचारव्यवहार, हमारी सामाजिक प्रथाओं और विचारधारा पर इन ग्रंथों व शास्त्रों का गहरा प्रभाव है. हम सैकड़ों ऐसे काम करते हैं जिन के आधार यही ग्रंथ हैं. इन ग्रंथों के गलत विचारों, मान्यताओं को समाप्त करना ही होगा.

हिंदू समाज द्वारा समय के अनुसार अपनेआप को ढालने की बड़ी आवश्यकता है. वह अपने शाश्वत सनातन विचारों को नई शक्ति भी दे सकता है. यह तभी संभव है जब हम बदलते हुए युग में अपने पुराने घिसेपिटे रूप पर फिर से विचार करें, चाहे भूतकाल में उसे कितनी ही मान्यता दी गई हो और हर ऐसी बात को जो हमें आगे बढ़ने से रोकती है अपने धर्म, अपने जीवनदर्शन, अपने आचारविचार से निकाल दें.

हमें विश्वास है कि हमें हिंदू समाज के पुनर्निर्माण के अभियान में न केवल अपने पाठकों का सहयोग मिलता रहेगा, बल्कि हमारे विरोधी और आलोचक भी हमारा मंतव्य ईमानदारी से समझने का प्रयत्न करेंगे और हिंदू समाज के नवजागरण, नवनिर्माण के प्रयास में हमारा हाथ बंटाएंगे.

—संपादक

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

33, 162 सें.मी., ग्रेजुएट, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, कश्यप राजपूत कन्या हेतु शिक्षित, कार्यरत, शाकाहारी वर चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 438, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 155 सें.मी., बी.ए., बी.एड., मासिक आय 2,000/-, सुंदर, गौरवर्ण, मृदुभाषी, गृहकार्यनिपुण, गुजराती कन्या, अध्यापिका केंद्रीय विद्यालय, बाएं हाथ में साधारण पोलियो, हेतु वर चाहिए. जातीय बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 439, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 22, 155 सें.मी., बी.ए. व नर्सरी टीचर्स कोर्स उत्तीर्ण कन्या हेतु सुशिक्षित एवं सुयोग्य वर अपेक्षित. लिखें: वि.नं. 509, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंसल, 24½, 152 सें.मी., एम.एससी., जुलौजी रिसर्च स्कालर, शोध शीघ्र पूर्ण, गृहकार्यदक्ष, सुशील, गेहुआं रंग, कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 528, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीया, 165 सें.मी., भारतीय फिनीश (अब फिनलैंड की नागरिक) डायवोर्स, दो बच्चों सहित (12-16), शिक्षित, ऊंचे विचारों वाली, उद्यमी, साहसी हिंदीप्रेमी, शारीरिक व मानसिक स्वस्थ को समान विचारक की आवश्यकता जो बच्चों को पिता प्यार भी दे सकें. पत्रव्यवहार आप खुद हिंदी में फोटो व पूर्ण विवरण साथ सहीसही करें. हिंदी, पंजाबी, गुजराती शुद्ध समझने वालों को प्राथमिकता. लिखें: Kaur, Kolanaslinja-11, 00530, Helsinki, 53, Finland.

25, 150 सें.मी., 1,200/-, पंजाबी सारस्वत ब्राह्मण, सरकारी अध्यापिका कन्या हेतु सजातीय, अधिकारी वर चाहिए. शीघ्र, उत्तम शादी. लिखें: वि.नं. 529, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 155 सें.मी., कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम.एससी. (गृहविज्ञान), बी.एड., राजस्थान में अध्यापिका, सुंदर, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. राजस्थान में कार्यरत को प्राथमिकता. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 530, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 170 सें.मी., बी.ए., गेहुआं रंग, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 531, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36, 157 सें.मी., 1,000/-, सांवली, दुबली पतली, स्नातकोत्तर, महाराष्ट्रीयन बौद्ध (महार), शासकीय शिक्षिका हेतु सेवारत वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. म.प्र. निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 532, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., एवं 35 वर्षीया, पीएच.डी., लेक्चरर, उत्तर प्रदेशीय (चमार), सांवली, आकर्षक, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्याओं हेतु उच्च अधिकारी वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 533, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 24 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.एससी. (कृषि), कनिष्ठ वैज्ञानिक (राजपत्रित), गृहकार्यदक्ष, इकलौती कन्या (मातापिता उच्च अधिकारी), हेतु स्वजातीय, संभ्रांत परिवारीय अधिकारी वर्ग, इंजीनियर, डाक्टर, सरकारी सेवारत मध्य प्रदेश निवासी उपयुक्त वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 534, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (सिंघल), 22 वर्षीया, एम.ए., गृहकार्यदक्ष, रंग साफ, आकर्षक, 149 सें.मी., कन्या हेतु दहेज रहित, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 535, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, कहार, सुंदर, आकर्षक, गोरी, एम.ए. कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. पिताभाई उच्चाधिकारी. लिखें: वि.नं. 536, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, आर्कीटेक्चरल ड्राफ्ट्समैन, भारत सरकार नई दिल्ली सेवारत, 25 वर्षीया, गौरवर्ण कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 537, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेशीय अग्रवाल कन्या 27, 158 सें.मी., पीएच. डी., 2,300/-, प्रोफेसर हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 538, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18½, 148 सें.मी., गोरी, स्लिम, सुंदर, बी.ए. (द्वितीय वर्ष), गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित कश्यप राजपूत (धीवर) परिवार की कन्या हेतु सुशिक्षित, सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 539, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, सक्सेना कायस्थ, पीएच. डी., प्रवक्ता, 165 सें.मी., रंग गेहुआं, हेतु इंजीनियर, डाक्टर, प्रवक्ता अथवा अन्य सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 540, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 163 सें.मी., राजपूत, असिस्टेंट प्रोफेसर, शासकीय कन्या महाविद्यालय मध्य प्रदेश, गौरवर्ण कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर, बैंक आफिसर, प्रोफेसर, राजपत्रित अधिकारी वर. मातापिता राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 541, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, गूंगीबहरी, विधवा, रंग साफ कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए. शारीरिक दोषयुक्त वर भी स्वीकार. लिखें: वि.नं. 542, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20, 152 सें.मी., एम.ए., चौहान, सुंदरी हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सरकारी सेवारत, 24 वर्ष, गाजियाबाद, आसपास वर चाहिए. साधारण विवाह.

लिखें: वि.नं. 543, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खरवार (कहार), भिलाई म.प्र., 24, 157 सें.मी., एम.ए., गृहकार्यों में दक्ष, गोरी कन्या हेतु सजातीय, सेवारत/व्यवसायरत, शीघ्र, योग्य वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. विज्ञापन उचित चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 544, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19½ वर्षीया, 155 सें.मी., गौरवर्ण, आकर्षक, बी.एससी., प्रजापति, संभ्रांत परिवार की कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 545, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 27, 158 सें.मी., एम.ए., कानवेंट सोफिया से शिक्षित, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, बैंक आफिसर अथवा उच्च पदाधिकारी, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र व उत्तम विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 546, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, स्लिम, 23, 147 सें.मी. एम.एससी., पंजाबी अरोड़ा, लड़की हेतु वर चाहिए. शीघ्र, उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 547, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21½ वर्षीया, वैश्य, 160 सें.मी., कानवेंट की पढ़ी, एम.ए., (फाइनल अंगरेजी), सुंदर, सुशील कन्या हेतु आर्मी, बैंक आफिसर, इंजीनियर या उच्च-सरकारी नौकरीरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 548, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 27, 160 सें.मी., सुंदर, सदैव प्रथम श्रेणी, मुंसिफ लिखित परीक्षा उत्तीर्ण, कन्या हेतु सेवारत अधिकारी, समान पदीयाधिकारी को वरीयता. लिखें: वि.नं. 549, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, गुप्ता, 157 सें.मी., नवोदय विद्यालय में सेवारत, 1,500/- मासिक, आकर्षक, घरेलू कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 550, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 160 सें.मी., बी.ए., कोहली, सुंदर, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत, खत्री/अरोड़ा वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 551, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22½, 160 सें.मी., एम.ए., बी.एड., माथुर वैश्य, सुंदर, स्लिम, गेहुआं रंग, कन्या हेतु कार्यरत वर. उपजातिबंधन नहीं. अग्रवाल भी स्वीकार्य, उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 552, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत, हरिद्वारवासी, 23, 162 सें.मी., 1600/-, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, एम.एससी., बी.एड. कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 533, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 150 सें.मी., एम.ए., गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, माथुर कायस्थ कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 554, सरिता रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

(कानपुर वासी), 25 वर्षीया, रीढ़ की हड्डी थोड़ी मुड़ी हुई, हिंदू अरोड़ा, सर्वगुण संपन्न, एम.ए. पास, 137 सें.मी. लंबी कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 555, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीया, 157 सें.मी., प्रतिष्ठित जायसवाल परिवारीय, सुंदर, स्लिम, गौरवर्ण, देखने में कम उम्र, धार्मिक, अविवाहित, बी.एससी., एम.ए., एल.टी. अध्ययनरत कन्या हेतु सुयोग्य वैश्य वर, दहेज नहीं. उपजातिबंधन नहीं. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 556, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 153 सें.मी., गृहविज्ञान में स्नातकोत्तर, हिंदू, मध्य प्रदेशवासी, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, कानवेंट शिक्षित लड़की (माता गुजराती ब्राह्मण एवं पिता बंगाली कायस्थ, मध्य प्रदेश शासन में विभागाध्यक्ष) के लिए सुयोग्य, हिंदू, सवर्ण, प्रथम श्रेणी शासकीय सेवारत, या समतुल्य व्यावसायिक सेवारत जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 557, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 24, 153 सें.मी., एम.ए., (कानवेंट शिक्षित), सुंदर, गौरवर्ण, कन्या हेतु योग्य, सजातीय वर चाहिए. डाक्टर, आर्मी आफिसर, अधिकारी, व्यापारी को प्राथमिकता. पिता व सभी भाई अधिकारी. संपूर्ण विवरण के साथ प्रथम बार में ही लिखें: वि.नं. 558, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भोपाल निवासी, मराठी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या 31, 168 सें.मी., आर्कीटेक्ट डिप्लोमा, 1,600/-, सेवारत, हेतु सुयोग्य, सुस्थापित वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 559, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 21 वर्षीया, 158 सें.मी., गोरी, सुंदर, बी.काम., कंपनी सेक्रेटरी (अध्ययनरत), कानवेंट शिक्षित, हमेशा प्रथम श्रेणी कन्या हेतु सजातीय, इंजीनियर, सी.ए. या उपयुक्त शिक्षित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 560, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 158 सें.मी., माहेश्वरी, कपिलांस गोत्र, सुंदर, गौरवर्ण, स्नातक कन्या हेतु उच्च व्यवसायी, मारवाड़ी माहेश्वरी, सुयोग्य, स्वस्थ वर चाहिए. अग्रवाल भी मान्य. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 561, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू, 22, 157 सें.मी., इंटर, कार्यरत कन्या हेतु दहेज विरोधी वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 562, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थान निवासी, 23 वर्षीया, 155 सें.मी., अग्रवाल, गर्ग गोत्र, सुंदर, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियर, 2,400/- आय, मांगलिक कन्या हेतु सजातीय, इंजीनियर, राजपत्रित अधिकारी वर चाहिए. उत्तम विवाह. पिता उच्च सरकारी सेवारत, जन्मकंडली सहित, सविवरण लिखें: वि.नं.

563, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 152 सें.मी., सुंदर, सर्वगुणी, ग्रेजुएट सरकारी कार्यरत, पंजाबी कन्या हेतु वर. पिता राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 564, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश तंबोली, 25 वर्षीया, एम.एससी. कन्या हेतु आफिसर/लेक्चरर वर. प्राथमिकता सजातीय. लिखें: वि.नं. 565, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31, 150 सें.मी., एम.ए., बी.एड., सरकारी कार्यरत, संभ्रांत परिवार की दृष्टिहीन कन्या हेतु सुशिक्षित, दिल्ली स्थित कार्यरत, दृष्टिवान वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 566, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी अरोड़ा, 25, 160 सें.मी., कन्या सुंदर, स्लिम, एम.ए., बी.एड., केंद्रीय विद्यालय कार्यरत, गृहकार्यदक्ष लेकिन संतानोपत्ति असमर्थ के लिए वर की आवश्यकता है. लिखें: वि.नं. 567, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, सुशील, गृहकार्यदक्ष, 23½, 163, 50 कि.ग्रा., बी.काम., सी.एस. (फाइनल), कन्या हेतु सजातीय,सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 568, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुशील, कुशाग्र बुद्धिमती, एम.ए., बी.काम., 22, 158 सें.मी., 48 कि.ग्रा., सुंदर, आकर्षक, गेहुआं वर्ण, गृहकार्य, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई में पारंगत कन्या हेतु क्षत्रिय (ठाकुर), कार्यरत, दहेजविरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 569, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोत्र मित्तल, 22 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.ए. (संस्कृत), रंग गेहुआं, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य वर. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 570, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33, 150 सें.मी., बी.ए., गृहकार्यदक्ष, रंग गेहुआं, परित्यक्ता, महिला हेतु उपयुक्त जीवनसाथी चाहिए. निस्संतान विधुर भी स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 647, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी खत्री, 25, 160 सें.मी., एम.ए. फाइन आर्ट्स, कार्यरत, ब्यूटीशियन (लुधियाना), कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 648, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 22 वर्षीया, शिक्षित परिवार (मध्यम श्रेणी), एम.ए., बी.ए., 154, 154 सें.मी., स्मार्ट, गेहुआं रंग, गृहकार्यों में दक्ष, यादव कन्याओं हेतु स्वावलंबी, सजातीय वर चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 649, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 160 सें.मी., उत्तर प्रदेशीय क्षत्रिय, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, एम.एससी. (अंतिम), छात्रा हेतु सुयोग्य वर की तलाश है. लिखें: वि.नं. 650, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोधी राजपूत, आयुर्वेदिकरत्न, 23 वर्षीया, नर्स कन्या हेतु सजातीय, दहेज रहित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 651, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 160 सें.मी., एम.ए., कंप्यूटर में कार्यरत, नाई परिवार की सुशील, स्लिम, कन्या हेतु सुयोग्य, उच्च सेवारत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. दिल्ली निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भोपाल निवासी, प्रतिष्ठित पंजाबी अरोरा परिवारीय, 26, 155 सें.मी., बी.ए., बी.एड., गोरी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुस्थापित, कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 653, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौतम (गुर्जर गौड़) ब्राह्मण, 23½, 158 सें.मी., एम.काम., जयपुर निवासी, सुंदर, गौरवर्ण, तीक्ष्ण नयननक्श, हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 654, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 150 सें.मी., अग्रवाल सिंघल, एम.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष, हेतु सुशिक्षित, सुयोग्य, व्यवसाय/नौकरी कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 655, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 158 सें.मी., सुंदर, गौरवर्ण, एम.ए. (मनोविज्ञान), गृहकार्यदक्ष, ब्राह्मण कन्या हेतु शाकाहारी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 656, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीय ब्राह्मण, भार्गव गोत्र, 23 वर्षीया, 163 सें.मी., एम.ए. इंगलिश लिटरेचर, आकर्षक व्यक्तित्व, कामकाज में निपुण कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. राजपत्रित अधिकारी, प्रवक्ता, बैंक प्रोबेशनरी आफिसर एवं इंजीनियर को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 657, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 157 सें.मी., ग्रेजुएट, सुंदर, व्यवहारकुशल (पिता भट्ट ब्राह्मण, माता कश्यप राजपूत) कन्यार्थ सुस्थापित वर. नकद, दहेज नहीं, परंतु सुरुचिपूर्ण शादी. लिखें: वि.नं. 658, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 23 वर्षीया, एम.ए. सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. पूर्ण वियरण सहित लिखें: वि.नं. 659, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 157 सें.मी., सुंदर, सुशील, कुलीन, एम.ए., बी.एड., जाट, विधवा हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 660, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 155 सें.मी., बीसा अग्रवाल (गर्ग), एम.ए., गोरी, अतिसुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र विवाह लिखें: वि.नं. 661, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, म.प्र. निवासी, (मूल हरियाणा), 21 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.ए. फाइनल (गृह विज्ञान), गृहकार्य में दक्ष, सुंदर, गोरा रंग, उद्योगरत, संपन्न एवं

प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु निजी व्यवसायी, डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए. या प्रशासनिक सेवारत, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. मध्य प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण संबंध हेतु लिखें: वि.नं. 664, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

30 वर्षीय, 170 सें.मी., 2,000/-, बैंक सेवारत, निस्संतान, कानूनन तलाकशुदा, हेतु वधू. लिखें: वि.नं. 489, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय युवक हेतु 30 वर्षीया या अधिक आयु की ईसाई, कम पढ़ीलिखी या अनपढ़ वधू चाहिए. लिखें: P. C. Suman, Central hospital, P.B. 40435, KUFRA—LIBYA.

अमरीका बसे, प्रोफेशनल, हिंदू अरोड़ा, 30, हेतु जन्मतिथि, फोटो, सविवरण आमंत्रित. Box 550145, Al 35255, U.S.A.

वैश्य 32, 160 सें.मी., 1,600/-, बी.काम., राज्य सरकार में इन्वेस्टीगेटर, हेतु कार्यरत, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 500, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित परिवार माहेश्वरी, 23, 174 सें.मी., अच्छी परसनालिटी, सुंदर, पोस्ट ग्रेजुएट युवक के लिए सुंदर, गौरवर्णीय, कम से कम ग्रेजुएट, सुशील, सजातीय वधू चाहिए. पारिवारिक विवरण सहित लिखें: वि.नं. 501, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 165 सें.मी., एम.ए., निजी व्यवसाय, स्वस्थ, प्रतिष्ठित, बीसा अग्रवाल, परिवार के युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 502, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, विधुर, देखने में 28 वर्षीय, 162 सें.मी., मासिक आय 2,000/-, इंटरमीडिएट, (आर.एम.पी.). डाक्टर, दिल्लीवासी, अपना मकान, क्लीनिक, तीन बच्चे दो लड़के (14 और 11 वर्षीय) एक लड़की 13 वर्ष पूर्ण, पतित्व प्यार, सम्मान, बच्चों को मां की ममता, घर संभालने हेतु कोई भी, किसी भी परिस्थिति की जिम्मेवार, जरूरतमंद, गरीब, असहाय, दुखी, घरेलू, जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं. केवल तीन कपड़ों में स्वीकार्य. शीघ्र, साधारण विवाह मंदिर में. लिखें वि.नं. 503, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½ वर्षीय, एम. ए., निजी व्यवसायी, कुर्मि क्षत्रिय, उत्तर प्रदेश निवासी व अब राजस्थान में रह रहे नवयुवक हेतु पतली, लंबी, गोरी, आकर्षक, सुशील, ग्रेजुएट, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. शीघ्र विवाह के लिए प्रथम पत्र में ही पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 571, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, 165 सें. मी., मासिक आय चार अंकों में, अनुसूचित जाति, विधुर हेतु 25-35 वर्ष तक की, शिक्षित, सुंदर, नौकरीशुदा, स्वतंत्र विचारों वाली, निस्संतान विधवा, तलाकशुदा, बांझ, संतान की अनिच्छुक, बच्चों में रुचि रखने वाली, जरूरतमंद, सजातीय, जीवनसंगिनी चाहिए. लड़की स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती है. दिल्ली, हरियाणा, राजस्थानवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 572, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, 175 सें.मी., इकहरा, गेहुआं, अकेला, सामान्य युवक हेतु इज्जतदार जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 573, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (मारवाड़ी), गर्ग, 25, 162 सें.मी., एम. एससी., गौरवर्ण, निजी व्यवसाय, पांच अंकीय मासिक आय, हेतु सजातीय, शिक्षित, गौरवर्ण, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 574, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, अग्रवाल गुप्ता, गौरवर्ण, स्मार्ट, कद 175 सें.मी., असिस्टेंट मैनेजर, आय 17,000/- मासिक, (आठ साल से सपरिवार अमरीका में रह रहा है), युवक के लिए सुंदर, सुशील, शिक्षित वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. निस्संकोच लिखें: वि.नं. 634 Wyandot St. Findlay ohio-45840, U. S. A.

विकलांग, 26 वर्षीय, अग्रवाल, मध्य प्रदेश शासन में अध्यापक, आय 1,250/-, उपजातिबंधन नहीं. निस्संतान विधवा, मामूली विकलांग मान्य. लिखें: वि.नं. 575, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, राजपूत युवक (असिस्टेंट इंजी.) हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 576, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (फूलमाली), 25, 170 सें.मी., 7,000/-, ग्रेजुएट, व्यवसायी युवक (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) हेतु सुंदर, शिक्षित, गोरी वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 577, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी युवक, 23½, 173 सें.मी., स्मार्ट, हायर सेकेंडरी, कपड़ा व्यापारी हेतु सिंधी, खूबसूरत, स्मार्ट, शांत स्वभाव व गुणवान वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 578, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा ओसवाल जैन, उच्च शिक्षा प्राप्त, इंजीनियर, 26, 175 सें.मी., निजी प्रैक्टिस, 6,000/- मासिक, हेतु सुशील, सुंदर, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. उच्च चयनार्थ विज्ञापित. लिखें वि.नं. 579, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीकानेर से 37 वर्षीय, बी. ए., तलाकशुदा, एक संतान 7 वर्षीया (लड़की), दुकान से मासिक आय 1,500/- रु., हेतु तलाकशुदा, विधवा, बेसहारा, स्वावलंबी लड़की चाहिए. लिखें: वि.नं. 580, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोत्र सिंघल, 26 वर्षीय, 160 सें.मी., 50 कि. ग्रा., स्वस्थ, सुंदर, गौरवर्ण ग्रेजुएट, निर्व्यसनी, मूल निवास पंजाब, मध्य प्रदेश में व्यवसाय,

व्यक्तिगत वार्षिक आय40,000/- से अधिक, पिता गजटेड अधिकारी, युवक हेतु स्पष्ट गौरवर्ण, अतिसुंदर, सुशिक्षित, कदकाठी, वरयोग्य गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक संस्कार व चरित्र, अग्रवाल वैश्य वधू चाहिए. दहेज रहित विवाह. कृपया वधू गुण सर्वमान्य होने की स्थिति में ही (संपूर्ण विवरण सहित) लिखें: वि.नं. 581, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बरेली निवासी, 26 वर्षीय, कुर्मी क्षत्रिय, एम. बी. बी. एस., नौकरीशुदा डाक्टर हेतु एम. बी. बी. एस. कन्या चाहिए. जाति एवं दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 582, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, ग्रामीण बैंक अधिकारी (हरियाणा), 26, 2,300/-, 172 सें.मी., हेतु सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 583, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कनौजिया (धोबी), 27, 170 सें.मी., एम. बी. ए., सेवारत, प्रतिष्ठित परिवार हेतु, सुंदर, गौरवर्ण, सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 584, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25½ वर्षीय, माहेश्वरी, कद 161 सें.मी., एम. सी. ए. (कंप्यूटर सोफ्टवियर प्रोफेशनल), बैंक अधिकारी, मासिक आय रु. 3,500/-; पिता वरिष्ठ अभियंता, पश्चिम रेलवे, लड़के हेतु सजातीय, शिक्षित एवं संपन्न परिवारीय सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 585, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी खत्री, विधुर, 57 वर्ष, स्वस्थ, केंद्रीय सेवारत, 3,000/- मासिक, हेतु सजातीय, विधवा, बांझ जीवनसंगिनी चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें: वि.नं. 586, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42, 3,000/-, केंद्रीय कार्यरत, विधि स्नातक, तलाकशुदा (एक 15 वर्षीय पुत्र साथ), शाकाहारी, हेतु वधू चाहिए. सीधीसादी, मृदुभाषी शाकाहारी, आत्मविश्वासी, विधवा, तलाकशुदा, शिक्षित, बेसहारा, स्वयं निर्णायिका को प्राथमिकता. जाति, प्रांत, दहेजबंधन नहीं. बिना खर्चे की शादी. लिखें: वि.नं. 587, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, संपन्न, सनाढ्य ब्राह्मण, 25, 163 सें.मी., बी. ई. कंप्यूटर इंजीनियर हेतु उच्चशिक्षित, मेधावी, वास्तविक सुंदर, उच्चस्तरीय सनाढ्य/गौड़ ब्राह्मण कन्या चाहिए. छोटे दो भाई इंजीनियर, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 588, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, चमार, बैंक प्रबंधक, 162 सें.मी., हेतु सुंदर कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. कोर्ट मैरिज. स्वयं सविवरण शीघ्र लिखें: वि.नं. 589, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, अग्रवाल गर्ग, 28, 175 सें.मी., बी. काम., 1,500/-, दिल्ली निवासी हेतु संदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 590, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 173 सें.मी., अग्रवाल, स्नातक, बिजनैसमैन हेतु सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 591, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू, 26 वर्षीय, 180 सें.मी., उच्च व्यवसायी, आकर्षक व्यक्तित्व, निजी आवास, हेतु गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, 157 सें मी. से अधिक, लंबी कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. प्रथम बार में सविवरण लिखें: वि.नं. 592, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24½ वर्षीय, 173 सें.मी., मारवाड़ी बंसल गोत्र, बी. काम., चुस्त, स्मार्ट, व्यवसायरत, सुप्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु गोरी, लंबी, आकर्षक, स्मार्ट, पढ़ीलिखी, सजातीय वधू चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण के साथ लिखें. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 593, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28-35, चार, कार्यरत स्वर्णकार बंधुओं के लिए घरेलू वधुओं की आवश्यकता है. शीघ्र विवाह हेतु संपर्क करें. लिखें: वि.नं. 594, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 153 सें.मी., 1,000/-, मैट्रिक, स्मार्ट, क्लीनशेव सिख, निर्धन, बेसहारा हेतु वधू. घर दामाद बनाने वाले को प्राथमिकता. विधवा, तलाकशुदा विकलांग स्वीकार्य. जातिबंधन नहीं. स्वयं निर्णायक लड़की खुद लिखें: वि.नं. 595, सरिता, नई दिल्ली-110055.

निस्संतान, कानूनी तलाकशुदा, वैश्य, बी. एससी., 173 सें.मी., 34, भारत सरकार उपक्रम में कार्यरत, मासिक 2,500/-, को वास्तविक सुंदर, अधिकतम 25 वर्षीया, घरेलू वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 596, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 165 सें.मी., विश्वकर्मा, बी. काम., सरकारी सेवारत, आय चार अंकीय, दुखने के कारण एक आंख में सफेदी, हेतु कन्या चाहिए. दहेज रहित शीघ्र विवाह हेतु लिखें: वि.नं. 597, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 23 वर्षीय, 165 सें.मी., बी. काम., ग्वालियर में अपना व्यवसाय आय चार अंकों में, निजी मकान, हेतु सिंधी, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 598, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 172 सें.मी., संभ्रांत माहेश्वरी परिवारीय, कार्यरत, चार्टर्ड एकाउंटेंट, हेतु संदर, सुयोग्य, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 599, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी ब्राह्मण, 27, 166 सें.मी., 2,500/-, केंद्रीय सेवारत, दिल्ली सुस्थापित हेतु सुनियोजित, कुलीन, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 600, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संतानोत्पत्ति एवं दोनों पैरों से अक्षम, 30 वर्षीय, बिहारवासी, स्वावलंबी, सुंदर, सभ्य, शिक्षित युवक जीवनसाथी की खोज में. विधवा या परित्यक्ता को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 601, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खूबसूरत, व्यवसायी परिवारीय, 34, 180 सें.मी., अमरीका में शिक्षित, रजिस्टेड प्रथम श्रेणी हेतु अतिसुंदर, शाकाहारी, परंपरागत, लगभग 165 सें.मी., 29 से कम, कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 602, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, स्मार्ट, गौड़ ब्राह्मण, 24, 174 सें.मी., 3,350/-, एम. एस., OPTHALMOLOGY अध्ययनरत युवक हेतु मेडिको/नानमेडिको वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 603, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित जायसवाल परिवारीय, सुंदर, स्मार्ट, 26, 181 सें.मी., डिवीजनल फारेस्ट आफिसर (आई. एफ. एस.) हेतु अतिसुंदर, स्लिम, गोरी, लंबी, सुशिक्षित, संभ्रांत, वैश्य परिवारीय वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. प्रथम बार में जन्मपत्री व संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 604, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 162 सें.मी., एम.डी. (मेडिसिन), सारस्वत ब्राह्मण वर हेतु मेडिको, इंजीनियर, आकर्षक, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 605, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाउंनी ब्राह्मण, 26 वर्षीय, 172 सें.मी., आर्मी कैप्टन, हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 606, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, क्रिश्चियन, एयरफोर्स टेक्नीशियन, 1,600/-, हेतु सेवारत अथवा बी. एड. वधू चाहिए. धर्म, भाषा, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 607, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 175 सें.मी., 2,500/-, सरयूपारीण ब्राह्मण, जू. इंजीनियर, आकर्षक, निर्व्यसनी हेतु वधू. लिखें: वि.नं. 608, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहौर कोली, 26, 172 सें.मी., स्नातकोत्तर, भारत सरकार के उपक्रम में कार्यरत, 2,500/- मासिक, दिल्ली में फ्लैट, हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 609, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली स्थित, सिख खत्री, 25, 172 सें.मी., बी. ए., 2,000/-, संतानोत्पत्ति में असमर्थ युवक हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 610, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीय, राजपूत, डाक्टर, एम. डी., हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. डाक्टर को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 611, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिसार निवासी, 25, 161 सें.मी., 51 कि. ग्रा., 23, 163 सें.मी., 50 कि.ग्रा., 25,000/-, मध्यमवर्गीय, मैट्रिकुलेट, गुड्स ट्रांसपोर्ट कोयला व्यवसाय, मूसापेट हैदराबाद, रेंटेड हाउसेज, गोडाउन ओपेनिंग शार्टली, अहमदाबाद, निर्व्यसनी, निरोग, अति मेहनती, पेरेंट्स, छः भाई, दो बहन, बड़ा भ्राता, बहन विवाहित हेतु अतिसुंदर, स्मार्ट, सुयोग्य, सुदक्ष, सुसभ्य, सुशील, सोसायबल, एडजेस्टेबल, ससंस्कृत, स्लिम, सदगुणी, सच्चरित्र, शिक्षित, नानगर्ग अग्रवाल, सुकन्याएं. लिखें: वि.नं. 612, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, तलाकशुदा, 32, 156 सें.मी., 4,000/-, दहेज विरोधी, एडवोकेट हेतु गरीब, विधवा, तलाकशुदा, परित्यक्ता, निस्संतान वधू चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 613, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 27½, 173 सें.मी., राष्ट्रीयकृत बैंक नियोजित, प्रतिष्ठित परिवारीय, हेतु सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 614, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 168 सें.मी., 2,000/-, (सर्विस), दहेज, जाति विरोधी, उच्च जाति के, जिम्मेदारी रहित युवक हेतु कन्या. लिखें: वि.नं. 615, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 27, 168 सें.मी., बैंक कर्मचारी, खूबसूरत, निर्व्यसनी युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 616, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेहर, 165 सें.मी., 35, एम. बी. बी. एस., पारा मिलिट्री सेवारत हेतु मेडिको कन्या. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 617, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्वेतांबर जैन, 26 वर्षीय, 163 सें.मी., मध्य प्रदेश निवासी, ला ग्रेजुएट, स्मार्ट, उच्च व्यवसाय हेतु अतिसुंदर, सुशील, स्लिम, ग्रेजुएट, प्रतिष्ठित परिवारीय, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 618, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, तीन सगे भाई, 32, 25 एवं 23 वर्षीय, अमरीका में उच्च शिक्षा प्राप्त कर अमरीका गवर्नमेंट में उच्च पदों पर कार्यरत, तीनों लंबे, स्वस्थ, आकर्षक, नम्र, सुंदर, अच्छे आचरण के स्वावलंबी, सक्षम, परिश्रमी (जो 1989 की गरमी में विवाह हेतु भारत आ रहे हैं) युवकों हेतु सुंदर, सहज, सौम्य, शिक्षित, आकर्षक, मधुर भारतीय परंपरायुक्त कन्याओं के मातापिता से पत्राचार आमंत्रित. कन्याओं के शिक्षा, गुण व स्वरूप को ही वरीयता दी जाएगी. लिखें: वि.नं. 619, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोत्र मित्तल, 28 वर्षीय, 175 सें.मी., बी. ए., एलएल. बी., रंग गेहुआं, रेलवे में कार्यरत, वर हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 620, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन अग्रवाल (गर्ग गोत्र), 29, 167 सें.मी., बी. काम., वर प्रतिष्ठित परिवार, आय छः अंकों में सुस्थापित कारोबार हेतु सुंदर, सुशील कन्या वांछित. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 625, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 26 वर्षीय, बी. ए. एम. एस., व्यवसायी परिवारीय, आकर्षक व्यक्तित्व वाले युवक

हेतु मेडिको या घरेलू जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 626, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, नेत्रहीन, राजकीय सेवारत, 1,500/- पाने वाले युवक हेतु विधवा, विकलांग, परित्यक्ता पत्नी चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 627, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 29, 178 सें.मी., 2,000/-, एम. ए. एडमिनिस्ट्रेशन, केंद्रीय सेवारत, पिता रिटायर्ड राजपत्रित अधिकारी, निजी मकान, जमीन, सुंदर युवा हेतु वधू. सविवरण लिखें: वि.नं. 628, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोष्टी, 24 वर्षीय, 158 सें.मी., एम. काम. अध्ययनरत, स्वस्थ, सुंदर, स्मार्ट, प्राइवेट कन्सर्न में कार्यरत, आय चार अंकों में, हेतु सुंदर, स्लिम, शिक्षित वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 629, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50 वर्षीय, विधुर, कायस्थ, रेलवे में कार्यरत, वेतन 5,000/-, साथ में दो पुत्रियां, एक पुत्र, हेतु सपंन्न परिवार से जीवनसाथी चाहिए. कायस्थ, संपन्न परिवारीय, विधवा या तलाकशुदा मान्य. लिखें: वि. नं. 630, सरिता, नई दिल्ली -110055.

रस्तोगी वैश्य, निजी व्यवसाय एवं सरकारी सेवारत युवकों क्रमशः 28, 27, 26 वर्षीय हेतु वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. इच्छुक व्यक्ति पूर्ण विवरण सहित शीघ्र लिखें: वि. नं. 631, सरिता, नई दिल्ली -110055.

29 वर्षीय, अविवाहित, गुप्ता, इंटरमीडिएट 1,400/- मासिक, एक आंख खराब, हेतु निर्धन कन्या . जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 632, सरिता, नई दिल्ली -110055.

25 वर्षीय, 177 सें.मी., 125 कि.ग्रा., वार्ष्णेय, एम.बी.ए., दिल्ली में सेवारत, आय 4,000/- मासिक, अपना मकान, शाकाहारी, धूम्रपान व मद्यपान रहित, शिक्षित एवं छोटा परिवार, युवक हेतु सुंदर गौरवर्ण व सुशिक्षित वधू चाहिए, जो देशविदेश में साथ रह सके. वैश्य परिवारों को वरीयता. जन्मपत्री सहित लिखें: वि. नं. 633, सरिता, नई दिल्ली -110055.

चौरसिया, 26, 176 सें.मी., एम.बी.बी.एस., सुंदर व्यक्तित्व, हेतु सुंदर वधू चाहिए. मेडिको प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 634, सरिता, नई दिल्ली -110055.

माहेश्वरी, 26 वर्षीय, 168 सें.मी., म.प्र. में सबइंजीनियर, हेतु स्वजातीय, शिक्षित, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 635, सरिता, नई दिल्ली -110055.

38, 167 सें.मी., अग्रवाल, विधुर, इंजीनियर, लघु उद्यमी, मासिक आय पांच अंकों में, दो पुत्र 12, 10 हेतु सुंदर, सुशील, स्नातक, दहेज रहित वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 636, सरिता, नई दिल्ली -110055.

दिल्ली प्रेस पत्रिकाओं के वितरण/बिक्री केंद्र

अहमदाबाद

दिल्ली प्रकाशन, 503, नारायण चैंबर्स,
आश्रम रोड, फोन: 77845

बंगलौर

दिल्ली प्रकाशन, 302--बी, क्वींस
कार्नर अपार्टमैंट्स,
3 क्वींस रोड, फोन: 258091

कलकत्ता

दिल्ली प्रकाशन
113, पार्क स्ट्रीट,
फोन: 298981

मद्रास

दिल्ली प्रकाशन
14, पहली मंजिल, सीसंस कंप्लैक्स,
150-82, मांटीअथ रोड
फोन: 868138

26 वर्षीय, 175 सें.मी., अग्रवाल, गर्ग, अपना व्यवसाय, सुंदर, स्वस्थ, गोरा रंग, आकर्षक युवक हेतु शीघ्र सजातीय, सुंदर, सुशील वधू चाहिए. बिहार, उत्तर प्रदेश को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 637, सरिता, नई दिल्ली -110055.

39½ वर्षीय, 3,000/-, पंजाबी, विधुर, दो पुत्र, एक पुत्री, परिवार नियोजन, सैल्समैन, हेतु 30-35 वर्षीया, संतान अनिच्छुक, संतानोत्पत्ति असमर्थ, बांझ, विधवा जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि. नं. 638, सरिता, नई दिल्ली -110055.

27, 164 सें.मी., स्नातक, बिहार निवासी, खत्री, उच्च स्तरीय व्यवसाय, अच्छी आय वाले युवक हेतु सजातीय वधू चाहिए. पिता उच्च अधिकारी. दहेज बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 639, सरिता, नई दिल्ली -110055.

गर्ग 47, 161 सें.मी., विधुर, दो पुत्रियां विवाहित, होस्टलर, निजी कार, कोठी, केमिकल फैक्ट्रीज, अच्छी आय, पश्चिमी उत्तर प्रदेशीय, हेतु 30-40, सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 640, सरिता, नई दिल्ली -110055.

30, 165 सें.मी., हिंदू, संपन्न, एम.बी.बी.एस. डाक्टर हेतु अत्यंत सुंदर, सर्वगुण, सपंन्न, घरेलू वधू. जाति, दहेजबंधन नहीं. अत्यंत स्नेहयुक्त भविष्य की

इच्छुक कन्या स्वयं भी लिखें: वि. नं. 641, सरिता, नई दिल्ली -110055.

अग्रवाल वर, आयु 27 वर्ष, ऊंचाई 183 सें.मी., बी.काम., एम.बी.ए., गौरवर्ण व्यवसायी, संपन्न परिवार, हेतु गोरी, सुंदर कन्या हेतु विवरण सहित लिखें: वि. नं. 642, सरिता, नई दिल्ली -110055.

24 वर्षीय, गर्ग, ठेकेदार हेतु सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 643, सरिता, नई दिल्ली -110055.

कलकत्तावासी, धनी, अग्रवाल परिवार, 27,169 सें.मी., स्मार्ट, सुंदर, ग्रेजुएट, निजी व्यवसाय, मासिक आय पांच अंकों में, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 644, सरिता, नई दिल्ली -110055.

कायस्थ, 47½, 180 सें.मी., 3,000/- मासिक, ग्रेजुएट, केंद्रीय सेवारत, गजटेड आफिसर, विधुर, स्वस्थ किंतु शरीर पर सफेद दाग, दो संतान साथ, हेतु स्वस्थ, शिक्षित, साधारण जीवनसंगिनी वधू चाहिए. अविवाहिता, विधवा वैधानिक परित्यक्ता एवं संतान अयोग्य स्वीकार्य. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 645, सरिता, नई दिल्ली -110055.

46, 155 सें.मी., 2,450/-, बी.काम., श्यामवर्ण, तलाकशुदा, एक पुत्री 17, दो पुत्र 16 एवं 10 वर्ष के साथ, हेतु वधू चाहिए. निस्संतान, विधवा, तलाकशुदा, बेसहारा को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 646, सरिता, नई दिल्ली -110055.

35 वर्षीय, 170 सें.मी., बीसा अग्रवाल (गर्ग), बी.एससी., निजी व्यवसाय, सुंदर युवक हेतु सजातीय, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 662, सरिता, नई दिल्ली -110055.

सैनी, म.प्र. निवासी (मूल हरियाणा), 29 वर्षीय, 175 सें.मी., मैट्रिक, आकर्षक, व्यक्तित्व, निजी उद्योगरत, संपन्न, प्रतिष्ठित संयुक्त परिवार के युवक हेतु सजातीय, सुयोग्य, शिक्षित एवं पारिवारिक विचार वाली कन्या चाहिए. मध्य प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण संबंध हेतु लिखें: वि. नं. 663, सरिता, नई दिल्ली -110055.

गौड़ ब्राह्मण, अविवाहित, 31, 172 सें.मी., 2,100/-, नान कमीशंड आफिसर एअरफोर्स, हेतु सुशील, सेवी, सुदर्शना, केंद्रीय सरकार कार्यरत, इंगलिश सहित उच्च श्रेणी उत्तीर्ण, अध्ययनरत कन्या लिखें: वि. नं. 665, सरिता, नई दिल्ली -110055.

अच्छे, उच्च पदाधिकारी, 60 वर्षीय, निस्संतान, वार्ष्णेय विधुर के लिए वैश्य जाति की विधवा परित्यक्ता या कुंआरी जीवनसाथी चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 666, सरिता, नई दिल्ली -110055.

वरवधू चाहिए

गढ़वाली, अविवाहित ब्राह्मण, 43, 165 सें.मी., 3,660/- मासिक, एम.ए., पीएच.डी. तथा इंटर पढ़ी बहन, 33, हेतु सजातीय सुयोग्य जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि. नं. 493, सरिता, नई दिल्ली -110055.

विश्वकर्मा लोहार, 23, 153 सें.मी., एम.ए., सिलाई, कढ़ाई, गृहकार्यदक्ष, गौरवर्ण, सुंदर, स्लिम कन्या हेतु एवं 26, 170 सें.मी., निजी व्यवसाय, बी.ए., हेतु वरवधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 621, सरिता, नई दिल्ली -110055.

29, 155 सें.मी., कुरील, चिकित्साधिकारी, 3,100/-, हेतु वधू (प्राथमिकता मेडिको) एवं 20, 145 सें.मी., मैट्रिक, घरेलू, सुंदर, हेतु वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. सविवरण लिखें: वि. नं. 622, सरिता, नई दिल्ली -110055.

19½, 160 सें.मी., 50 कि.ग्रा., 1,590/-, वैश्य विश्नोई, आकर्षक, टैक्सटाइल अध्यापिका एवं 30, 170 सें.मी., 60 कि.ग्रा., 3,000/- आकर्षक युवक हेतु वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 623, सरिता, नई दिल्ली -110055.

25 वर्षीय, 155 सें.मी., माथुर कायस्थ, बी.ए., एलएल.बी., सुशील, गृहकार्य में दक्ष, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या एवं 28 वर्षीय, 165 सें.मी., शासकीय सेवारत, मासिक आय चार अंकों में, माथुर लड़के हेतु वरवधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 624, सरिता, नई दिल्ली -110055.

शिक्षा

स्कूल विद्यार्थियो! ट्यूटर उपलब्ध! आवश्यकता है. (आसपास इंद्रपुरी, दक्षिण दिल्ली). दूरभाष: 7110559, 7112643.

व्यवसाय

कृपया कासमेटिक सर्जरी के लिए संपर्क करें: कासमेटिक सर्जरी सेंटर, 11-ए 6, पुराना राजेंद्र नगर, नई दिल्ली. दूरभाष: 585802